# मिथिलाक इतिहास

# मिथिलाक इतिहास

राधाकृष्ण चौधरी



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-28-0

मूल्य: भा. रु.300/-

पहिल संस्करण : 2010



**श्रुति प्रकाशन**

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

टाइप सेट- आशीष चौधरी

***Distributor :*** *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 9572450405, 9931654742

*Mithilak Itihas: History of Mithila in Maithili by Late Prof. Radhakrishna Chaudhary*

# भूमिका

मिथिला भारतवर्षक एकटा अतिप्राचीन सांस्कृतिक इकाइ रहल अछि। कतेक शताब्दी धरि एहिठाम अपन स्वतंत्र राजतंत्र सेहो रहल। जनक कालीन प्राचीन मिथिलाक वैभव आ उपनिषदकालीन चिंतनमे ओकर योगदान जगजाहिर अछि। मध्ययुगमे तँ ई क्षेत्र नव न्यायक केन्द्रक रूपमे सम्पूर्ण भारतमे विख्यात छल। भारतीय मोनक निर्माणमे मिथिलाक विलक्षण अवदानकेँ केओ उपेक्षा नहि कऽ सकैत अछि, तथापि अद्यावधि मिथिलाक एकटा सर्वांगीण इतिहासक अभाव बनले अछि। ई पोथी एहि अभावक पूर्त्ति करबामे एकटा महत्वपूर्ण योगदान मानल जा सकैछ।

स्व. राधाकृष्ण चौधरीक नामसँ मिथिलाबासी लोकनि पहिनेसँ परिचित छथि। ओ इतिहासक एकटा अत्यंत लोकप्रिय शिक्षक तँ छलाहे, संगहि सुविख्यात पुरातत्वविद्, मुद्राशास्त्री, अभिलेखशास्त्री आ पुराणशास्त्री सेहो छलाह। ई पोथी लिखबामे ओ एहि सभ साधनक उपयोग कएने छथि आर मिथिलाक सर्वांगीण इतिहास ठाढ़ करबाक हुनक ई स्तुत्य प्रयासक कोनो दोसर उदाहरण देखबामे नहि अबैए।

मिथिलाक इतिहासक एहेन कतेको प्रसंग अछि जकरापर निस्तुकी रूपें किछु कहब अखनि धरि संभव नहि। एहि सभ प्रसंगपर स्व. चौधरी अपन मत रखबाक संगहि संग आन आन विद्वान सबहक मतो उद्धृत कएने छथि। एहिसँ मिथिलाक इतिहासक कतेको ओझराएल प्रसंग सभपर पाठक लोकनिकेँ अपन मत बनेबामे मदति भेटतन्हि। ई पोथी प्रत्येक मिथिलावासीक लेल एकटा जरूरी ग्रंथ प्रमाणित होएत ई हमर विश्वास अछि।

ई पोथी स्व. राधाकृष्ण चौधरीक मैथिलीमे लिखल अंतिम महत्वपूर्ण कृति अछि। कहू तँ तीस बरख पहिने लिखल एहि पोथीमे जहिना सामान्य पाठक लोकनि प्राचीन कालसँ लऽ कए अद्यावधि मिथिलाक इतिहासक रसास्वादन करताह तहिना शोधार्थी लोकनिकेँ अपन शोधक लेल कतेक रास सामग्री एक्के ठाम सुलभ भऽ जेतन्हि।

एहि पोथीक मूल पाण्डुलिपि टाइप कएल पुरान पातक पृष्ठ भागपर हाथसँ लिखल गेल छल। ताइपर ओ सत्ताइस बरखसँ फाइलमे बंद पड़ल छल। एहि पाण्डुलिपिक उद्धार कए पुस्तकक रूपमे प्रकाशित करएबाक श्रेय श्रीयुत् गजेन्द्र ठाकुरजी कँे छन्हि। हुनका प्रति आ हुनक समस्त सहयोगीक प्रति हम अपन हार्दिक आभार प्रकट करैत छी। कदाचित् कोनो त्रुटि रहि गेल हो तँ तकर सम्पूर्ण उत्तरदायित्व हमरहि बूझल जाए।

आशा अछि ई पोथी विद्वान, शोधार्थी आ सामान्य पाठक लोकनिक बीच समादृत होएत।

गुरू पूर्णिमा
२५ जुलाई, २०१०

प्रभात कुमार चौधरी
शांति निवास
बम्पास टाउन
देवघर ८१४११४
(झारखण्ड)।

# अनुक्रम

## परिशिष्ट

अध्याय–१

# मिथिलाक इतिहास

## भूमिका

**वैदिक युगक भूमिका**:- प्राचीन वैदिक साहित्यमे अंग मगध आ मिथिलाक कोनो स्पष्ट उल्लेख नहि भेटइत अछि। ऋग्वेद संहितामे उपरोक्त तीनू खण्डमे सँ कोनो खण्डक नाम उल्लिखित नहि अछि। ऋग्वेदक तेसर अष्टकक ५३म सूक्तक चौदहम ऋचामे **'कीकट'**क उल्लेख अछि आ ओहिठामक राजा **'प्रमगन्द'**क सम्बन्धमे बहुत रास निन्दनीय बात सेहो। यास्कक अनुसार **'कीकट'** देशमे अनार्य लोकनिक निवास छल। सायणाचार्य एहि मतसँ सहमत होइतहुँ आगाँ कहैत छथि जे **'कीकट'**क निवासी नास्तिक छलाह आ योग, दान, होम इत्यादिपर हुनका लोकनिकेँ एक्को रत्ती विश्वास नहि छलन्हि। ओ लोकनि इहलोकिक छलाह आ परलोकमे हुनका लोकनिकेँ कोनो प्रकारक विश्वास नहि छलन्हि। ओ लोकनि भौतिकवादी छलाह। वायुपुराणक गया माहात्म्य मे कहल गेल अछि—

"*कीकटेषु गया पुण्या नदी पुण्या पुन: पुन:,*
*च्यवनस्या श्रमं पुण्यं पुण्यं राजगृहं वनम्*" ।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे '**कीकट**' दक्षिण विहारमे छल आ ओहिठामक निवासी भौतिकवादी दर्शनमे विश्वास रखैत छलाह। '**कीकट**'क सम्बन्धमे वैदिक विद्वान लोकनिक मध्य मतभेद अखनो बनल अछि आ आहि विवादमे पड़ब हमरा लोकनिक हेतु एतए आवश्यक नहि बुझना जाइछ।

एहन मानल जाइत अछि जे संहिता कालमे आर्य-सभ्यताक प्रधान केन्द्र सरस्वती आ हृषद्वती नदीक मध्यमे छल आ ओहि स्थानकेँ मनु ब्रह्मावर्त्त कहने छथि। ब्राह्मण कालमे आहि संस्कृतिक केन्द्र छल कुरू–पाँचाल जकरा मनु ब्रह्मर्षि देश कहने छथि। **शतपथ ब्राह्मण**मे कुरू पाँचाल देशक विशेष प्रशंसा भेल, अछि आ **ऐतरेय ब्राह्मण**मे आर्य देशक हेतु अस्याँ श्रुवायां प्रतिष्ठायां विशेषणक प्रयोग भेल अछि। सदानीरा नदी (गण्डक) पार ककए जखन आर्य लोकनि मिथिलाक क्षेत्रमे उतरलाह तखन अत्यंत दूतगतिसँ आर्य संस्कृतिक प्रसार अहि क्षेत्रमे भेल आ मिथिला विदेह समस्त पूर्वी भारतमे आर्य सभ्यताक प्रसार-प्रचारक एकटा प्रधान केन्द्र बनि गेल।

कोनो संहितामे स्पष्ट रूपे विदेहक उल्लेख नहि भेटइत अछि। तैत्तिरीय आ काठक संहितामे **"वैदेह्य"**, **"वैदेही"** एवँ **"वैदेह"** शब्दक प्रयोग भैटेत अछि परञ्च आहि सभहिक व्यवहार गाय आ बरदक हेतु भेल अछि। ऐतरेय ब्राह्मणमे जाहिठाम आर्य देशक चर्चा भेलो अछि ताहुठाम **"विदेह"** शब्दक पृथक उल्लेख नहि भेटइत अछि। काशी, कोशल, मगध, अंग, आदि शब्द संग **'विदेहो'**केँ प्राच्य देशमे साटि देल गेल अछि। **'विदेहक'** पृथक उल्लेख स्पष्ट रूपें **शतपथ ब्राह्मण**मे भेटइत अछि। ओहिठाम इ कहल गेल अछि जे **विदेघ माथव** अपन पुरोहित गौतम राहूगणक संग

वैश्वानर अग्निक अनुशरण करैत-करैत सरस्वती नदीक तीरसँ सदानीराक तीर धरि पहुँचलाह। एहिसँ पूर्व आर्य लोकनि सदानीराक पारकए पूब दिसि नहि गेल छलाह तै तँ इ एक महत्वपूर्ण घटना मानल जाइत अछि। वैश्वानर **विदेघ माथव**कें सदानीरा टपबाक आदेश देलथिन्ह। विदेघ अपन पुरोहितक संग ओकरा पार केलन्हि आ तखनेसँ ओ देश **'विदेह'** कहबे लागल। सदानीरा विदेह आ कोशलक बीचक सीमा रेखा बनल।

ताहि दिनसँ विदेह आर्य सभ्यताक प्रधान केन्द्र बनि गेल। **शतपथ बाह्मण**क शेष अध्यायमे जनकक दरबारक कथा सुरक्षित अछि। मिथिलाक राजा जनक अपना ओहिठाम देशक विभिन्न भागसँ ब्रह्मज्ञानी लोकनिकें आमंत्रित कऽ कए बजबैत छलाह, आ हुनक दरबारमे तँ कुरू पाँचालसँ बरोबरि ऋषि-मुनि लोकनि आबिते रहैत छलाह। ऋषि याज्ञवल्क्य विदेहमे रहैत छलाह आ ताहु हेतु मिथिलाक प्रसिद्धि समस्त आर्यावर्तमे छल। जनक याज्ञवल्क्य तँ बुझु जेना आर्य संस्कृतिक द्योतक बुझल जाइत छलाह आ ब्रह्मज्ञानक क्षेत्रमे हिनका लोकनिक कोनो ककरोसँ तुलना ताहि दिनमे नहि छल। कुरु पाँचालक ऋषिगणक कुटियामे शिक्षित रहितहुँ याज्ञवल्क्य जखन जनकक ओहिठाम शास्त्रार्थमे पहुँचलाह तखन ओ ओहिठाम उपस्थित कुरू पाँचालक ऋषिगणकें शास्त्रार्थमे पराजित केलन्हि आ अपन विद्वताक प्रकाश सेहो। हुनक वचन मात्र अध्यात्म विधेटामे नञ अपितु वैदिक क्रियाकलापमे सेहो सर्वथा प्रामाणिक मानल जाइत छल। परम्परामे हिनका शुक्ल यजुर्वेदक प्रवर्तक मानल गेल अछि। **शतपथ ब्राह्मण** एवँ **बृहदारण्यकोपनिषद**क अनेकानेक स्थल पर जनक–याज्ञवल्क्यक ब्रह्मज्ञानक विवेचनाक वर्णन अछि आ ठाम-ठाम विभिन्न ऋषि लोकनिक शास्त्रार्थक सेहो। ब्रह्मज्ञानक हेतु तैतिरीय ब्राह्मणमे सेहो राजा जनकक प्रशंसा कैल गेल अछि। जनक ब्रह्मज्ञानक हेतु केहेन प्रसिद्ध रहल हेताह तकर एकटा सामान्य संकेत हमरा लोकनिकें **कौशीतकी उपनिषद**क एक कथामे भेटइत अछि जाहिमे कहल गेल अछि कि गर्गवंशक **'बालाकि'** नामक एक ब्रह्मज्ञानी काशीराज अजातशुत्रक ओतए ब्रह्मज्ञानक निरूपणकें जखन पहुँचलाह तँ राजा हुनकासँ प्रसन्न भए एक हजार गाय देलथिन्ह आ कहलथिन्ह जे देखु तइयो लोक सब **"जनक-जनक"** चिकैरि रहल अछि। वैदिक युगमे ब्रह्मज्ञानक चरम उत्कर्ष विदेहमे भेल छल। ब्रह्मज्ञान आर्य संस्कृतिक चरम उत्कर्ष बुझल जाइत छल–वैदिक मंत्रक उत्थान ब्रह्मावर्तमे, क्रिया कलापक विकास ब्रह्मर्षि देशमे एवँ **"ब्रह्मविद्या"**क विवेचन विदेहमे भेल। एहि हेतु ताहि दिनसँ समस्त आर्यावर्तक लोककें विदेह आवए पड़इत छलन्हि। विदेह पूर्वी भारतमे वैदिक कालमे आर्य सभ्यताक प्रधान केन्द्र छल। एहिठाम क्षत्रिय सेहो वेदवत्ता होइत छलाह।

संस्कृत साहित्य मध्य मिथिला, विदेह एवँ तीरभुक्तिक वर्णनः

लकाण्ड (बाल्मीकि)मे मिथिलाक वर्णन एवँ प्रकारे अछि-

*रामायण (बालकाण्ड, सर्ग४८)-*

*"रामोऽपि परमांपूजाँ गौतमस्य महामन:"*
*सकाशाद् विधिवत् प्राप्य जगाम **मिथिलाँतत**:"* ॥

*अनर्घ राघवमे (अंक २)*

*"श्रृणोषि **विदेहेषु मिथिलां** नाम नगरीम्"*

*जयदेव-प्रसन्नराघव-(अंक २)*
"*तदिह मिथिलायां पंचरात्र निवासेन श्रमोपऽनेतव्य।*
*प्रसंगादयं च राजा जनको द्रष्टव्यः।*"
*रघुवंश-(सर्ग– ११)*

"*संन्यमन्चयन सम्भृतक्रतु हेतु **मैथिलः***
*स मिथिलां व्रजन् वशी*" ।
***नैषधीयचरित**-(सर्ग– १२)*

"*अपीयमेनं मिथिला पुरन्दरं निपीय दृष्टिः शिथिला स्तुते वरम्।*"
"***रामायण चम्पू***" *(बालकाण्ड)*
"*अथ मिथिलां प्रतिप्रस्थितः*
*कौशिकस्तमित्थम कथयत्*"
***दशकुमारचरित** (उत्तरपीठिका– ३ उच्छ्वास)*
"*एषोब्रऽह्मास्मि पर्य्यटने कदा गतो*
*विदेहेषु मिथिलाम प्रविश्यैव*"
***कथासरितसागर** (जम्बक ३, तरंग– ५)*
"*ददो **वैदेह** देशे च राज्यं गोपालकार्यसः।*
*सत्कार हेतोर्नृपतिः श्वशुर्यायानुगच्छतेः॥*
***भृंगदूत** (गंगानंद झा)-१७म शताब्दी–*
"*गंगातीरावधिरधि गता यद् भुवोभृंगभुक्ति*
*नीम्नासैव त्रिभुवनतले विश्रुता तीरभुक्तिः॥*
*भृंगदूतमे दरभंगाक वर्णन एवँ प्रकारे अछि–*
*नस्यापाथः परमाविमणं सन्निपियाभिरामा–*
*गारांकामायुध दरभंगा राजधानीमुपेयाः॥*
*रघुवीर कवि– "**लक्ष्मीश्वरोपायना**" मे–*
"*देशाः संतु सहस्त्रोऽपि ममतु स्वाभाविक प्रीतये,*
*श्रेयान् देश विशेष एषं **मिथिलानामा** क्षमामंडले*" ।
*बदरी नाथ झा- '**गुणेश्वर चरित चम्पू**'*
"*अस्तिस्वस्ति समस्त भूमिबल श्रेय प्रशस्तिश्रिता*
*प्रत्यर्थिस्मयमन्थनाप्त **मिथिला** नामाऽभिरामाकृतिः।*
*प्रेक्षाशालिविपश्चिदालिललितोत्संगाऽभिषंगार्दिनी,*
*नीवृद्-वृन्दम चर्चिकाऽर्चिततरश्रीस्तीरभुक्तिः सदा*" ।

गंगा गण्डकी संगमसँ पश्चिम सुप्रसिद्ध सोनपुर टीसनक समीप जे हरिहर क्षेत्र अछि तकरो उल्लेख भृंगदूतमे भेटइत अछि। एहि भृंगदूतमे गाण्डवीश्वर स्थान, ब्रह्मपुर, वाग्वती (वाग्मती) एवँ कमला नदीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। कहबी छैक जे गाण्डवीश्वर महादेव राजा जनकक दक्षिणक द्वारपाल रहथिन्ह आ ओ स्थान सम्प्रति जोगिआरा टीसनक समीप अछि। ओना मिथिला नामसँ प्राचीन जनक राजक

राजधानीक बोध होइछ परञ्च एतए स्मरण राखबि आवश्यक जे मिथिला, तीरभुक्ति, विदेह, आदि शब्द एक एहन भौगोलिक इकाईक द्योतक थिक जे गंगाक उत्तरमे छल आ विभिन्न छोट-छोट गणराज्यमे बटल छल। प्राचीन कालक बिहारमे गंगाक दक्षिणमे छल अंग आ मगध आ उत्तरमे छल मिथिला जकरा अंतर्गत कैकटा छोट–छीन राज्य सब छल। जातक कथा आ जैन साहित्यक अतिरिक्त वृहद विष्णुपुराणक मिथिला महात्म्यमे मिथिलाक जे वर्णन अछि ताहिसँ एकर महत्व एवँ जनप्रियताक पता लगइयै। एहि मिथिलाक अंतर्गत छल तँ प्राचीन कालक वैशाली जकर विस्तृत विवरण रामायण, रामायण चम्पू एवँ भृंगदूतमे भेटइत अछि। प्राचीन **'विशाला'** नगरिये बौद्ध कालक वैशाली थिक। विशालाक नामक बोध अद्यतन **"बिसारा"** परगनासँ होइत अछि। एहि क्षेत्रमे एकटा भैरव स्थान सेहो छल जकर चर्च भृंगदूतमे भेल अछि। बाल्मिकीय रामायणक बालकाण्डमे गौतमाश्रम अहल्यास्थानक उल्लेख भेल अछि। अहियारी गाँव (कमतौल टीसन)सँ अधुना एकर बोध होइछ। भृंगदूतमे **"सरिसव"** ग्राम आ कोटिश्वर महादेवक उल्लेख सेहो भेटइत अछि।

**iii. नाम एवं मिथिलाक भौगोलिक सीमा:- शतपथ ब्राह्मण**क अनुसार नदीक बहुलताक कारणे मिथिलाक भूमि दलदल जकाँ छल। कहल जाएछ जे अग्निदेवक आज्ञासँ माथव विदेघ आ गोतम राहुगण सदानीरा (गण्डकी)क पूबमे जाकऽ बसलाह आ उएह क्षेत्र इतिहासमे मिथिला, विदेह, तीरभुक्ति एवँ तिरहुतक नामसँ प्रसिद्ध भेल। दलदल भूमिकेँ अग्निदेव सुखाकेँ कठोर बनौलन्हि आ जंगलकेँ जराकेँ एहि पूर्वी भूमिकेँ रहबा योग्य स्थान सेहो। आर्य ऋषि लोकनि ओहिठाम अगणित यज्ञक आयोजन केलन्हि आ असंख्य यज्ञ आ होम होयबाक कारणे ओहिठामक भूमि रहबा योग्य बनि सकल। नदीक बाहुल्यक कारणे संभव जे एहि क्षेत्रकेँ तीरभुक्ति कहल गेल छल। प्राचीन कालमे तीरभुक्ति समस्त उत्तरी बिहारक द्योतक छल आ एकर सीमा पश्चिममे श्रावस्तीभुक्ति आ पूबमे पुण्ड्रवर्धनभुक्तिसँ मिलैत–जुलैत छल आ एकर एहि विशालताक परिचय हमरा आयनी–अकबरीमे वर्णित तिरहुत सरकारक महालक नाम सभसँ सेहो भेटइत अछि।

परंपरागत साधनमे मिथिलाक जे विवरण उपलब्ध अछि तकर सिंहावलोकन करब अपेक्षित। ओहि वर्णनमे ऐतिहासिकताक पुट कतबा दूर धरि अछि से नहि कहि सकैत छी तथापि पौराणिक आख्यानक महत्व तँ ऐतिहासिक दृष्टिये अछिये एहिमे संदेहक कोनो गुंजाइश नहि।

भविष्य पुराणक अनुसार अयोध्याक महाराज मनुक पुत्र निमि एहि यज्ञ भूमिमे आवि अपनाकेँ कृत्य–कृत्य बुझलन्हि आ ओहिठामक ऋषि लोकनिक तप आ यज्ञसँ लाभान्वित भेलाह। निमिक पुत्र **'मिथि'** एक शक्तिशाली शासक भेलाह आ ओ अपन पराक्रमक प्रदशनार्थ एहिठाम एकटा नगरक निर्माण केलन्हि जे **'मिथिला'**क नामसँ प्रसिद्ध भेल। एहिमे कहलगेल अछि जे पुरी निर्माता होएबाक कारणे **'मिथिला'**क दोसर नाम 'जनक' पड़ल।

**भविष्य पुराण:-**

*निमेः पुत्रस्तु तत्रैव मिथिर्नाम महान स्मृतः।*
*प्रथमं भुजबलैर्येन तैरहूतस्थ पार्श्वतः॥*
*निर्म्मितस्वीयनाम्ना च मिथिलापुरमुनमम्।*
*पुरीजनन सामर्थ्याज्जनकः सच कीर्तितः॥*

**वाल्मीकीय रामायण:-** राजाऽभूतिषु लोकेषु विश्रुतः स्वेनकर्मणा निमिः परमधर्मात्मा सर्वतत्व वतांवरः। तस्य पुत्रो मिथिर्नाम जनको मिथिपुत्रक कथन अछि जे जखन वशिष्ठ यज्ञाभिलाषी निमिक निमंत्रण अस्वीकार कए इन्द्रक पुरोहिताइ करबाक हेतु स्वर्ग गेलाह तखन वशिष्ठक अनुपस्थितिमे भृगु आदि अन्यान्य ऋषि मुनि लोकनिक साहाय्यसँ निमि अपन यज्ञाक संपादन केलन्हि। वशिष्ठ स्वर्गसँ घुरलापर जखन यज्ञाकेँ सम्पादन भेल देखलन्हि तखन क्रुद्ध भए ओ राजा निमिकेँ **"विदेह"** भजेबाक श्राप देलन्हि। वशिष्ठक एहि श्रापसँ चारूकात हाहाकार मचि गेल। प्रजा लोकनि घबरा उठलाह। अराजकताक स्थिति देखि उपस्थित ऋषिगण निमिक मृत शरीरकेँ मथेऽ लगलाह आ मथला उत्तर जे शरीर उत्पन्न भेल तकरे **"मिथिला"** अथवा **"विदेह"**क संज्ञा देल गेल। इ लोकनि **"जनक"** नामसँ सेहो प्रसिद्ध भेलाह।

**श्रीमदभागवत:-**

*जन्मना जनकः सोऽभूद्वैदेहस्तुः विदेहजः।*
*मिथिलोमथनाज्जातो **मिथिला** येन निर्म्मिता॥*

**देवी भागवत**सँ ज्ञात होइछ जे निमिक उन्नैसम पीढ़ीमे राजर्षि सीरध्वज जनक भेल छलाह (आर) श्रीमदभागवतसँ इ बुझल जाइत अछि जे जनक वंशक शासक लोकनि एहेन वातावरण बना देने छलाह जे हुनक पार्श्ववर्ती गृहस्थ सेहो सुख दुःखसँ मुक्त भऽ गेल छलाह। **'विदेह'** जे कि महत्वपूर्ण कल्पना छल आ जकर प्राप्तिक हेतु लोग ललायत रहैत छल से ओहि देशक नामक संकेत सेहो दैत अछि जाहिठाम जनक वंशक लोग अपन राज्यक स्थापना कएने छलाह। शुकदेव जी (व्यासक पुत्र) जखन अपन पितासँ तपचर्याक हेतु आज्ञा माँगलन्हि तखन हुनका योगिराज जनकक दृष्टांत दैत इ कहल गेलन्हि जे ओ घरोमे रहिकेँ तपस्या कऽ सकैत छथि। शुकदेवजीकेँ असंतुष्ट देखि व्यास हुनका राजर्षि जनकक ओतए पठा देलथिन्ह।

**देवी भागवत–**

*वंशेऽस्मिन्येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकास्तथा।*
*विख्याता ज्ञानिनः सर्वे वेदेहाः परिकीर्तिताः॥*
*वर्षद्वयेन मेरूंच समुल्लङ्घ्य महामतिः।*
*हिमालये च वर्षेण जगाम मिथिलां पति॥*
*प्रविष्टो मिथिलांमध्ये पश्यंसर्वर्द्धिमुतम्।*
*प्रजाश्चः सुखिता सर्वाः सदाचाराः मुखंस्थिताः॥*

**श्रीमद् भागवत–**

*एते वै **मैथिला** राजन्नात्म विद्याविशारदाः*
*योगेश्वरं प्रसादेन द्वन्दैमुक्ता गृहष्वेपि॥*
*मिथिलाक सीमाक सबंधमे देवी भागवतमे निम्नांकित विवरण अछि।*
*एवं निमिसुतो राजा प्राथतोजनकोऽभवत्।*
*नगरी निर्मिता तेन गंगातीरे मनोहरा।*
***मिथिलेति** सुविख्याता गोपुराट्टाल संयुता*
*धनधान्य समायुक्ताः हर्हेशाला विराजिता॥*

**शक्तिसंगम तंत्र:**

*गण्डकी तीरमारभ्य चम्पारण्यांतंग शिवे।*
*विदेहभूः समाख्याता तीरभुक्त्यमिधः सतु॥*

**स्कन्द पुराण:-**

*गण्डकी कौशिकी चैव तयोमध्ये वरस्थलम्।*

**बृहद् विष्णुपुराण:**

*कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमधिगम्यवै।*
*योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्त्तितः॥*
*गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतंवनम्।*
*विस्तारः षोडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन।*
*मिथिलानाम नगरी तत्रास्ते लोक विश्रुता॥*

**अगस्त्य रामायण:**

*वैदेहोपवनस्यांते दिश्यैशान्यां मनोहरम्।*
*विशालं सरसस्तीरे गौरीमंदिरमुत्तमम्॥*
*वैदेही वाटिका तत्र नाना पुष्प सुगुम्फिता।*
*रक्षितमालिकन्याभिः सर्वतु सुखदा शुभा॥*

मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूबमे कौशिकी आ पश्चिममे गण्डकी अछि।

**चन्दा झा:**

*गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि,*
*पूर्व कौशिकी धारा*
*पश्चिम बहथि गण्डकी,*
*उत्तर हिमवत बल विस्तारा।*

प्राचीन मिथिलामे आधुनिक दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, (दरद–गण्डकी देश), सहरसा, पुर्णियाँ, बेगूसराय, कटिहार, विहपुर, एवँ नेपालक दक्षिणी भाग सम्मिलित छल। नदीक प्रधानता हेवाक कारणे मिथिलाकेँ तीरभुक्ति सेहो कहल गेल छैक–

**वृहद् विष्णु पुराण:-**

*गंगा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्च दशांतरे।*
*तैरभुक्तिरिति ख्यातो देशः परम पावनः॥*

तीरभुक्ति नाम होएबाक निम्नलिखित कारण बताओल गेल अछि।

**i**) *शाम्भकी, सुवर्ण एवँ तपोवनसँ भुक्तमान*
*होएबाक कारणे इ तीरभुक्ति कहाओल।*

**ii**) *कौशिकी, गंगा आ गण्डकीक तीरधरि*
*एकर सीमा छलैक तैं एकरा तीरभुक्तिक संज्ञा देल गेलैक।*

iii) *ऋक्, यजु आ साम तीन्हुक वेद सभसँ*
*आहुति देवऽबला ब्राह्मण समूहक निवाससँ*

त्रि–आहुति अर्थात तिरहुतक नामसँ

**इ स्थान प्रख्यात भेल।**

१६–१७म शताब्दीक तिब्बती यात्री लामा तारनाथक विवरणमे तिरहुतकें **"तिराहुति"** कहल गेल अछि। आ आयनी अकबरीमे तँ सहजहि एक विस्तृत विवरण भेटिते अछि। ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ भुक्ति शब्द प्रयोग गुप्त युगसँ प्रारंभ भेल आ शिलालेखमे एकर उल्लेख भेटइत अछि। वैशालीसँ प्राप्त कैकटा मोहरपर **तीरभुक्ति** शब्दक उल्लेख अछि आ संगहि कटरासँ प्राप्त अभिलेख, नारायण पालक भागलपुर अभिलेख, वनगाँव ताम्रपत्र अभिलेख आदिसँ **'तीरभुक्ति'**पर प्रकाश पड़इयै आ इ बुझि पड़इयै जे ताहि दिनमे **तीरभुक्ति** समस्त उत्तर बिहारक द्योतक छल जकरा पश्चिममे छल आधुनिक उत्तर प्रदेश और पूबमे बंगाल। महानंदाक पश्चिम आ गण्डकीक पूबक समस्त भूमि **तीरभुक्ति** कहबैत छल, एहिमे कोनो संदेह नहि। जातकमे मिथिलाक क्षेत्र जे वर्णन अछि आ आयनी अकम्बरीमे वर्णित तिरहुत सरकारक विवरण हमर उपरोक्त मतक समर्थन करइयै। देशक भूगोल आ सीमा राजनैतिक उथल-पुथलक कारणे बदलैत रहैत छैक आ मिथिलाक राजनैतिक इतिहासमे सेहो एहेन कतेक परिवर्तन भेल छैक तथापि एकर जे एकटा साँस्कृतिक स्वरूप अछि से आविच्छिन्न रूपें चलि आवि रहल अछि आ उएह रूप एकर भौगोलिक सीमाक स्पष्ट आभास दैत अछि। प्राचीन साहित्यमे मिथिला आ जनकपुर नाम भेटैछ परञ्च गुप्तयुगसँ **तीरभुक्ति** नाम प्रशस्त भऽ गेल।

____ "*प्राग्ज्योतिषः कामरूपे तीरभुक्तिस्तु निच्छविः*
*विदेहाश्चाय कश्मीरे*"

**लिंग पुराण:**

"***तीरभुक्ति** प्रदेशेतु हलावर्त्ते हलेश्वरः*"

प्राचीन मिथिलाक पुरातात्विक विश्लेषण एवँ अध्ययन अखनोधरि अपेक्षिते अछि। नेपालक सीमा जे सम्प्रति जनकपुर अछि तकरे प्राचीन विदेह मानल गेल अछि। **सुरूचि** आ **गाँधार जातक**मे विदेह एवँ मिथिलाक भौगोलिक सीमाक विवरण भेटइत अछि। विदेहक चारू मुख्य फाटकपर चारिटा बाजार छल। **महाजनक जातक**मे तँ विदेहक राजधानी **'मिथिला'**क भव्य वर्णन अछि–मिथिलाक नगरीक सोभा, बाजार आ राज दरबारक शोभा, सामान्य लोगक पहिरब–ओढ़ब, खान–पान, रहन–सहन, सैनिक–संगठन, रथ, हाथी, घोड़ा, आदि एहेन कोनो अंश छुट्‌ल नहि अछि जकर वर्णन ओहिमे नहि भेटइत हो। अयोध्यासँ मिथिला पहुँचबामे विश्वामित्रकें चारि दिन लागल छलन्हि परञ्च राजा दशरथक ओतए जनक जाहि दूतकें पठौने छलाह तकरा मात्र तीन दिन लगलैक। दशरथ चारि दिनमे अयोध्यासँ मिथिला पहुँचल छलाह। महावीर एवँ बुद्धक समयमे विदेहक सीमा एवँ प्रकारे छल–

____ लम्बाइमे कौशिकीसँ गण्डक धरि २४ योजन।
____ चौड़ाइमे हिमालयसँ गंगा धरि १६ योजन।

____ मिथिलासँ वैशाली ३५ मील उत्तर पश्चिम दिसि छल।

____ जातकक अनुसार विदेह राज्यक सीमा **३००० लीग** छल आ राजधानी मिथिलाक ७ लीग।

____ मिथिला जम्बुद्वीपक एकटा प्रधान नगर छल।

____ सदानीरा नदी बुढ़ी गण्डकक द्योतक छल।

____ तीरभुक्ति नामक संदर्भमे भृंगदूतमे कहल गेल अछि–

"*गंगा तीरावधिरधिगता यदभुओ*

*भृङ्गभूक्तिर्नामा सैव त्रिभुवन तले विश्रुताः तीरभुक्ति*"

आ **शक्तिसंगम तंत्रमे–**

*गण्डकीतीरमारभ्य चम्पारण्यांतकं*
*शिवे विदेहभूः समाख्याता तीरभुक्तिमिधोर्मनुः।*

**'भुक्ति'** शब्दसँ प्रान्तक बोध होइछ आ गुप्त युगमे समस्त मिथिला **तीरभुक्ति** नामसँ प्रसिद्ध छल आ एहिसँ समस्त उत्तर बिहारक बोध होइत छल। भोगौलिक दृष्टिये मिथिलाक निम्नलिखित नाम सेहो महत्वपूर्ण अछि**– विदेह, तीरभुक्ति, तपोभूमि, शाम्भवी, सुवर्णकानन, मन्तिली, वैजयंती, जनकपुर** इत्यादि परञ्च एहि सभमे **विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति** आ **तिरहुत** विशेष प्रचलित अछि। चारिम शताब्दीमे **तीरभुक्ति** नाम प्रसिद्ध भऽ चुकल छल। त्रिकाण्डशेष, गुप्त अभिलेख आ बारहम शताब्दीक एकटा अभिलेख एवँ अन्यान्य अभिलेख सभमे **'तीरभुक्ति'**क नाम भेटइत अछि।

**iv. मिथिला भूमि**:- सम्प्रति जे मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ, बेगूसराय, आदि क्षेत्र अछि सैह प्राचीनकालमे मिथिला, विदेह, तीरभुक्ति, कहबैत छल आ वैशाली एकर अंतर्गत छल। गण्डकीसँ महानंदा आ हिमालयसँ गंगाधरिक क्षेत्रक अंतर्गत मिथिला छल। मिथिलाक सीमा लगभग २५००० वर्ग मील छल। हियुएन संग जे **'पूरा भारत'**क वर्णन कैने छथि ताहिमे मिथिलोक उल्लेख अछि। मिथिलाक नाम उत्पत्तिक सम्बन्धमे निम्नलिखित श्लोक प्रसिद्ध अछि**–**

"*निमिः पुत्रस्तु तत्रैव (मिथिर्नाम) महान स्मृतः*
*प्रथमं भुजबलेर्येन त्रैहूतस्य पार्श्वतः।*
*निर्म्मितंस्वीय नाम्नाच **मिथिलापुर**मुत्तम्*
*पुरीजनन सामर्थ्यात् जनकः सच कीर्तितः॥*

(**शब्दकल्पद्रूम**-iii.७२३)

वृहद विष्णुपुराणक **मिथिला महात्म्य खण्ड–**

*मिथिला नाम नगरी नमास्ते लोक विश्रुता*
*पंचभिः कारणैः पुण्या विख्याताजगतीत्रये॥*

**पाणिनिः**

*मन्थते शत्रवोयस्यां=मथ+"**मिथिलादयश्च**"*
*इतिदूलच अकारस्येत्वं निपात्यते स्वनाम*

*ख्यातनगरी। सातु जनकराज पुरायथा। विदेहा*
*मिथिलाप्रोक्ता। इति हलायुधः-*

मिथिला भूमिक विशेषता इ अछि जे एहिठाम नदीक बाहुल्यक कारणे जमीन उपजाउ अछि आ सभ प्रकारक अन्नक खेती एतए होइत अछि। एहिठामक जनसंख्याक विशेष भाग अहुखन खेतीपर निर्भर करैत अछि। प्रतिवर्ष एहिठाम नदीक बाढ़ि अबैत अछि, गाम घर दहा जाइत अछि, लोग वेलल्ला भऽ जाइत अछि तथापि अपन माँटि-पानिक प्रति एहिठामक लोककेँ ततेक प्रेम आ आसक्ति छैक जे ओ एकरा तैयो छोड़वा लेल तैयार नहि अछि आ ओहि माँटि-पानिसँ सटिकेँ रहब अपन जीवनक सार बुझैत अछि। गण्डक, वाग्मती, बलान, लखनदेइ, कमला, करेह, जीवछ, कोशी, तिलयुगा, गंगाक मारि मिथिलाक लोग जन्म-जन्मांतरसँ सहैत आबि रहल अछि। नदीक बिना मिथिलाक भूमिक कल्पने नहि भऽ सकइयै। नदीक कारणे तँ मिथिलाक नामो **तीरभुक्ति** पड़ल छल कहियो। नदीमे **सप्तगण्डकी** आ **सप्तकौशिकी**क उल्लेख अछि आ एकर स्रोत नेपालमे अछि। आब दुनू नदीकेँ नियंत्रित करबाक हेतु कोशी आ गंडक योजना बनल अछि आ आन-आन नदीकेँ पालतु बनेबाक प्रयास भऽ रहल अछि।

मिथिला भूमिक बनावट एकरा कैक अर्थमे सुरक्षा प्रदान करैत छैक। एक दिसि हिमालय पर्वत छैक तँ तीन दिसि नदी आ तैं एहिठामक लोक किछु विशेष स्वभावक होइत छथि जकर संकेत विद्यापतिक **पुरूष परीक्षा**मे अछि। नदीक पूजा एहिठाम ओहिना होइछ जेना कोनो देवी देवताक आ सभ नदीक पूजाक गीत सेहो उपलब्ध अछि। पावनि तिहारपर नदीमे स्नान करब आवश्यक बुझना जाइत अछि। अक्षय-तृतीया (वैशाख शुक्ल)क दिन नदीमे स्नान करबाक परम धार्मिक मानल गेल अछि। मिथिलाक लोग अपन देश, संस्कृति, भाषा आ संस्कारक प्रति बड़ड कट्टर होइत छथि। भौगोलिक दृष्टिये मिथिलाक क्षेत्र एकटा राजनैतिक इकाइक रूपमे प्राचीन कालहिंसँ बनल रहल अछि आ तैं एकर सांस्कृतिक वैशिष्टय अखनो बाँचल छैक।

**v. मिथिलाक निवासीः-** जे केओ मिथिला अथवा मैथिल संस्कृतिसँ अपरिचित छथि हुनका **'मिथिला'**सँ मात्र मैथिल ब्राह्मणक बोध होइत छन्हि परञ्च इ बोध हैव भ्रामक थिक, कारण मिथिला एकटा भौगोलिक सीमाक द्योतक थिक आ ओहि सीमाक अंतर्गत रहनिहार प्रत्येक ओहि भौगोलिक इकाइक अंग भेलाह चाहे हुनक जाति, वर्ण, अथवा वर्ग जे हो। मिथिलाक रहनिहार प्रत्येक व्यक्ति मैथिल कहौता एहिमे कोनो संदेह नहि रहबाक चाही। धार्मिक क्षेत्रक प्रधान आ आध्यात्मिक रूपें प्रभुत्व रहलाक कारणें ब्राह्मणक प्रधानता रहलन्हि आ लगातार ७००–८०० वर्ष ब्राह्मण राजवंशक शासन रहबाक कारणें ब्राह्मणक राजनैतिक महत्व सेहो बनल रहल। इ फराक कथा जे सामान्य ब्राह्मण गरीब छथि परञ्च इ बातां सांच जे ब्राह्मणक राज्य रहलासँ राजनीतिमे ब्राह्मणकेँ विशेष प्राधिकार भेटलन्हि आ ओ लोकनि सामंतवादी युगसँ अद्यावधि सभ क्षेत्रमे नेतृत्व केलन्हि। स्मरणीय जे आनवर्णक तुलनामे मिथिलामे ब्राह्मणक जनसंख्या बहुत कम अछि।

ब्राह्मणक अतिरिक्त मिथिलामे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र (सभ प्रकार), कायस्थ, मुसलमान, इसाइ आदि सब वर्णक लोग रहैत छथि। मिथिलाक विशाल क्षेत्रमे सूरी, तेली, कलवार, यादव, राजपूत, वर्णसँ कम धनी आ शक्तिशाली नहि छथि। मिथिलामे कतेक वर्णक लोग मध्य युगमे रहैत छलाह तकर विश्लेषण ज्योतिरिश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकरसँ भेटैछ। मुसलमानोमे सैयद, पाठान, मोमिन, शेख, आदि शाखा सम्प्रदायक

लोगक वास छन्हि। जमीन्दारमे ब्राह्मणक अतिरिक्त, भूमिहार ब्राह्मण, राजपूत, आ यादव लोकनि एक्को पैसा कम नहि छथि। यत्र-तत्र कायस्थ लोकनिकेँ सेहो जमीन्दारी छलन्हि मुदा ओ लोकनि आब विशेषतः कलमफरोसीमे रहि गेल छथि। मिथिला क्षेत्रमे मुसलमानो जमीन्दार कैकटा छलाह।

वर्गक हिसाबे मिथिलामे मूलरूपेण दूटा वर्ग अछि–गरीबक वर्ग आ धनिकक वर्ग। जे केओ धनमान छथि (चाहे जाति कोनो होहि) ओ धनी वर्गमे छथि–आ गरीब गरीबक वर्ग। दुनू वर्गक बीच संघर्ष चलि रहल अछि। जमीन्दारी उठलाक उपरांत इ संघर्ष आ तीव्र भऽ गेल अछि कारण आर्थिक हिसाबें मिथिला तुलनात्मक दृष्टिये विशेष शोषित आ पीड़ित अछि। उत्तर भारतक अन्नागारक पदवीसँ विभूषित रहितहुँ मिथिलाक सामान्य लोगकेँ अहुँखन पावभरिक अन्न आ पाँच हाथक वस्त्र नहि भेटइत छैक आ ओ अपन पेट भरबाक लेल चारू कात बौआइत रहैत अछि। मिथिलाक निम्नवर्गक सामाजिक श्रृखंला करीब-करीब टुटि चुकल अछि आ ओ शोषण यंत्रमे नीक जकाँ पीसा रहल अछि। इ स्थिति आब क्रांतिक आह्वान जहिया करे।

मिथिलाक उत्तरी आ उत्तर-पूर्वी सीमापर **इण्डो-मंगोलाइड** जातिक लोग सेहो बसैत छथि जे थारू कहबैत छथि। हुनका लोकनिकेँ रहन-सहन अहुँखन पुराने छन्हि यद्यपि ओ लोकनि परिश्रम करबामे ककरोसँ कम नहि छथि। शूद्रमे शुद्ध आ अशुद्ध (अछूत) दुनू तरहक लोग अबैत छथि। डोम, चमार, दुसाध, मुशहर, हलालखोर, धानुक, अमार्त, केओट, कुरमी, कहार, कोइरी आदि सेहो पर्याप्त संख्यामे मिथिलामे बसैत छथि। जनसंख्याक हिसाबे यादव सभसँ आगाँ छथि। दुसाध, कोइरी, चमार, कुरमी आदिक जनसंख्या जोड़ि देलासँ तथाकथित पिछड़ावर्गक जनसंख्या तथाकथित अगुआवर्गक जनसंख्यासँ बेसी अछि। जनगणनाक आधारपर निम्नलिखित जातिक ज्ञान होइछ–

गोप (यादव), ब्राह्मण, राजपूत, दुसाध, कोइरी, चमार, शेख, भूमिहार, कुर्मी, मल्लाह, जोलहा, तेली, कान्दु (कानू), नोनिया, धानुख, मुशहर, तांती, कायस्थ, कमार, हजाम, धुनिया, कुम्हार, धोबी, कलवार, केओट, सोनार, कहार, कुँजरा, सुनरी, पठान, हलवाइ, तमौली, इत्यादि।

अध्याय–२

# मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक साधन

भारतीय इतिहासक अध्ययनक हेतु जतवा जे स्त्रोत उपलब्ध अछि तकर शतांशो मिथिलाक इतिहासक हेतु नहि अछि। मिथिलाक दुर्भाग्य इहो जे पुरातत्ववेत्ता लोकनिक ध्यान आर्य सभ्यताक पूर्वी सीमाक प्राचीनतम केन्द्र दिसि अद्यावधि नहि गेल छन्हि। पता नहि जेतैन्ह अथवा नहि। मिथिलाक प्राचीन भौगोलिक सीमा, जाहिमे जनकपुर आ सिमराँवगढ सेहो सम्मिलित अछि, क विशेष भाग सम्प्रति नेपाल तराइमे पड़इत अछि आ ओतए सरकारक दिसिसँ एहि क्षेत्रक प्राचीन ऐतिहासिक तत्वक पता लगेबाक हेतु अखन धरि कोनो सशक्त प्रयास नहि भेल अछि। मोतिहारी, वैशाली, गोरहोघाट, पुर्णियाँ, आदि क्षेत्रक यदा–कदा पुरातत्वक खोज भेला उत्तरो एहि दिसि ध्यान नहि देल गेल अछि। आ तैं मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक जे एकटा महत्वपूर्ण स्त्रोत होएबाक चाही से सम्प्रति अपूर्णे अछि।

आन–आन क्षेत्रक हेतु जतबो साधन उपलब्ध भेल छैक ततओ मिथिलाक हेतु नहि भऽ सकल अछि कारण एहि दिसि मैथिल-अमैथिल इतिहासकारक ध्यान नीक जकाँ आकृष्ट नहि कैल गेल अछि। मिथिलाक प्राचीन गौरव आ साँस्कृतिक देनक अध्ययनक हेतु हमरा लोकनि अहुँखन मात्र साहित्यिक साधनेपर निर्भर करए पड़इत अछि जकर नतीजा इ होइयै जे कोनो प्राचीन प्रश्नपर हमरा लोकनि एकटा निर्णयात्मक मत नहि दऽ सकैत छी। प्रत्येक प्रश्न विवादास्पद अछि आ निर्विवाद रूपें हम अखनो इ कहबाक स्थितिमे नहि छी जे अमूक बात किंवा घटना अमूक समयमे घटित भेले हैत। इ अनिश्चितताक स्थिति अखन मिथिलाक इतिहासमे बहुत दिन धरि बनले रहत।

यूनान जकाँ हमरा ओतए नञि कोनो हिरोडोटस आ थुसीडाइड्स भेल छथि आ नञि मुसलमान शासकक इतिहासकार जकाँ कोनो इतिहासकारे। विदेशी यात्रियो लोकनि जे विवरण एहि क्षेत्रक देने छथि से मात्र सामान्ये कहल जा सकइयै आ ओहिसँ स्थितिमे कोनो परिवर्तन नहि अवइयै। एहना स्थितिमे एहि प्राचीन क्षेत्रक इतिहासक निर्माण करब एकटा जटिल समस्या बनल अछि आ ओहि समस्या मध्य हमरा लोकनिकेँ ऐतिहासिक साधन खोजिकेँ संकलित करबाक अछि।

मिथिलामे पैघसँ पैघ दार्शनिक एवँ तात्विक विषयपर ग्रंथक रचना भेल अछि जाहिसँ इ प्रमाणित होइछ जे एहिठामक लोग विज्ञ एवँ विद्वान छलाह परञ्च अपना संबंधमे किछु लिखबाक क्रममे ओ लोकनि राजर्षि जनकक विदेह नीतिये अपनौलन्हि अछि एहिमे कोनो सन्देह नहि। **'मैथिल'** शब्द **"वैदिक"** युगसँ व्यवहृत होइत आएल अछि आ एहिसँ इ स्पष्ट होइत अछि जे ताहि दिनसँ मिथिलाक भौगोलिक इकाइ स्वीकृत अछि आ एहि भौगोलिक क्षेत्रमे रहनिहार **मैथिल** कहबैत छलाह–बिहारमे एतेक प्राचीन गौरव आर कोनो क्षेत्रकेँ प्राप्त नहि छैक तथापि एकर इतिहास अखनो एतेक संदिग्ध आ अनिर्णयात्मक स्थितिमे अछि से एकटा विचारणीय विषय।

प्राचीन मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक हेतु मुख्य साधन अछि **वेद, उपनिषद्, ब्राह्म साहित्य, अरण्यक, महाभारत, रामायण, पुराण, स्मृति, पाणिनि, पतञ्जलि,** आदिक रचना एवँ तत्कालीन बौद्ध आ जैन साहित्य। मिथिलाक सम्बन्धमे सूचना हमरा लोकनिकेँ यजुर्वेद एवँ अथर्ववेदसँ भेटए लगैत अछि यथापि अप्रत्यक्ष रूपें मिथिलाक ऐतिहासिक घटनाक विवरण ऋग्वेदमे सेहो देखल जा सकइयै। **शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, पंचविंश ब्राह्मण, बृहदारण्यकोपनिषद्,** एवँ **छन्दोग्योपनिषद्**मे मिथिलाक तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, एवँ धार्मिक अवस्थाक विस्तृत विवरण भेटइत अछि। एहिमे सभसँ महत्वपूर्ण विवरण **शतपथ ब्राह्मण**क अछि जाहिमे जनककेँ **सम्राट** कहल गेल अछि आ संगहि याज्ञवल्क्यक संरक्षक सेहो। साँस्कृतिक स्थितिक अध्ययनक हेतु तँ उपरोक्त साधन अद्वितीय अछि आ एहि बातकेँ विदेशी विद्वान सेहो मानैत छथि। एहिमे संदेह नहि जे एहि युगमे ब्राह्मण वर्गक प्रधानता छल तथापि परीक्षितक बादसँ जनक वंशक इतिहासक हेतु उपरोक्त साधनक अध्ययन अत्यावश्यक मानल जाइत अछि। **एतरेय ब्राह्मण**सँ तत्कालीन अवस्थाक विवरण भेटइत अछि आ उपनिषद् तँ सहजहि दार्शनिक विचार-विमर्शक खान अछियें। ओहिमे जाहि ढंगे वाद–विवाद अछि से सर्वथा अद्वितीय कहल जा सकइयै। **पाणिनि, पतञ्जलि** एवँ **अर्थशास्त्र** (**कौटिल्यक**)सँ सेहो प्राचीन मिथिलाक इतिहासक विभिन्न अंशपर प्रकाश पड़इत अछि।

बौद्ध आ जैन साहित्यक संबंधमे इ साँचि कहल गेल अछि जे जखन कोनो आन साधन मिथिलाक इतिहासक हेतु नहि प्राप्त होइत अछि तखन बौद्ध आ जैन साधन हमरा लोकनिक साहाय्यक हेतु प्रस्तुत होइत अछि। **दीपवंश, महावंश, अशोकविद्वान, अश्वघोषक, बुद्धचरित, बुद्धघोषक** रचना सभऽ, **धम्मपद्दठ कथा, असंग, वसुवन्धु, दिगनाग, धर्मकीर्ति,** आदिक रचनासँ मिथिलाक सांस्कृतिक एवँ दार्शनिक इतिहासक निर्माणमे बहु साहाय्य भेटइत अछि। बौद्ध दार्शनिक लोकनिकेँ कहबाक क्रममे मिथिलामे नव–न्यायक जन्म भेल छल आ तैं ७–८ शताब्दीसँ १५–१६म शताब्दी धरि जे बौद्ध एवँ मैथिल दार्शनिकक मध्य वाद–विवाद भेल अछि से मिथिलाक साँस्कृतिक इतिहासक अध्ययनक हेतु परमावश्यक मानल जाइत अछि। वाचस्पति मिश्र (वृद्ध)सँ लऽ कऽ शंकर मिश्र धरिक समस्त ग्रंथ आ नालंदा विक्रमशिलाक महान पंडित लोकनिक रचित ग्रंथक अध्ययन एहि हेतु सर्वथा अपेक्षित।

ओना बौद्धकालीन मिथिलाक सर्वांगीन इतिहासक हेतु समस्त **जातक**क अध्ययन आवश्यक बुझना जाइछ। **महापदानक जातक, गाँधार जातक, सुरूचि जातक, महाजनक जातक, निमि जातक, महानारदकस्सप जातक** इत्यादि सँ तत्कालीन मिथिलाक राजनैतिक समाजिक एवँ साँस्कृतिक इतिहासपर वृहत् प्रकाश पड़इयै– जाहिसँ सामान्य लोकक दैनन्दिनीक ज्ञान सेहो होइत अछि। जातकमे जे राजनैतिक श्रृंखला बताओल गेल अछि ताहिसँ पुराण वर्णित अवस्थामे काफी मतभेद अछि तैं राजनैतिक इतिहासक निर्माणमे जातकक अध्ययनमे सतर्कताक आवश्यकता अछि। सामाजिक–साँस्कृतिक–आर्थिक अवस्थाक अध्ययनक हेतु **जातक** प्रमुख साधन मानल गेल अछि। जैन स्त्रोतमे सेहो मिथिलाक विभिन्न स्थितिक विशद् विश्लेषण भेटइत अछि आ ओहि दृष्टिकोणसँ **उतराध्यायनसूत्र, उवासगदसाओ, कल्पसूत्र, स्थविरावलीचरित्र (परिशिष्ट पर्वन)** एवँ **त्रिशस्तिशलाकापुरूष** आदि ग्रंथक अध्ययन अपेक्षित अछि। कखनो कखनो जैन एवँ बौद्ध उपाख्यानमे समता सेहो देखबामे अवइयै। जैन–बौद्ध साहित्य आ अन्यान्य साधन मिथिलाक सामाजिक–आर्थिक

इतिहासक अध्ययनक हेतु बहु लाभदायक मानल गेल अछि कारण ओहि सभ विवरणमे सामान्य लोकक जीवनपर सेहो प्रकाश पड़इत अछि। जातक आदिसँ इहो ज्ञात होइछ जे कोना ताहि दिनक मैथिल अपन घर दुआर छोड़िकेँ व्यापार–व्यवसायक हेतु देश–विदेश जाइत छलाह आ ओहिमे बहुत गोटए ओहिठाम बैसिओ जाइत छलाह। ओ लोकनि वेस उद्यमी आ परिश्रमी होइत छलाह आ समुद्र यात्राक हेतु कोनो संकीर्णता हुनका लोकनिमे नहि छलन्हि।

**महाभारत, रामायण,** आ **पुराण**मे मिथिलाक सबंधमे प्रचुर सामग्री अछि परञ्च एहि तीनूमे वैज्ञानिकताक हिसाबें कतहु कोनो साम्य नहि छैक। पुराणक विभिन्न खण्डमे जतवा जे नामावली अथवा राजाक सूची भेटइत अछि ताहिमे एकरूपता नहि देखबामे अवइयै आ एहि विरोधाभाससँ इतिहासक सामान्य विद्यार्थी अगुताकेँ घबरा जाइत अछि। ब्रिटिश विद्वान पारजीटर महोदय आ बंगाली विद्वान प्रधान महोदय बड़ड परिश्रम कए **पुराण रूपी** जंगलसँ मिथिलाक राजवंशक इतिहासक एकटा रूपरेखा प्रस्तुत करबामे समर्थ भेल छथि तथापि ओकरा सर्वसम्मत अखनो नहि मानल जाइत छैक। प्राचीन–कालमे **इतिहास–पुराण** एकटा अध्ययनक महत्वपूर्ण विषय छल आ अध्ययनक दृष्टिकोणसँ एकरा **पंचमवेद** सेहो कहल गेल छैक तथापि एकरा अध्ययनमे जे एकटा वस्तुनिष्ठताक अपेक्षा छल से प्राचीन विद्वान लोकनि नहि राखि सकलाह आ **पुराण**मे ततेक  रास एम्हर–ओम्हरक बात घुसिया गेल जे एकर ऐतिहासिकतामे लोगकेँ संदेह होमए लगलैक। एहिठाम एतवा स्मरणीय जे एतवा भेला **उत्तरो पुराण**, **रामायण** आ **महाभारत**क एतिहासिक महत्वकेँ काटल नहि जा सकइयै। परंपरागत इतिहासक जे अपन महत्व छैक ताहि हिसाबे उपरोक्त साधनक अध्ययन कऽ कए हमरा लोकनि मिथिलाक इतिहासक निर्माणमे एहिसँ साहाय्य लऽ सकैत छी।

मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक हेतु **लिगिट मैनुस्कृप्ट** सेहो आवश्यक बुझना जाइत अछि। एहिसँ मिथिला आ वैशाली दुनूक इतिहासपर प्रकाश पड़इत अछि। एहिमे कहल गेल अछि जे जखन वैशालीमे गणराज्य छल तखन मिथिलामे राजतंत्र आ मिथिलामे ताहि दिनमे एकटा प्रधानमंत्री छलाह जिनक नाम **खण्ड** छलन्हि आ हुनका अधीनमे ५०० अमात्य रहथिन्ह।

संस्कृत साहित्यक विभिन्न अंशसँ मिथिलाक इतिहासक अध्ययनमे सहायता भेटइत अछि। **कालिदास, भवभूति, दण्डिन, राजशेखर,** आदिक रचनासँ मिथिलाक इतिहासक विभिन्न पक्षपर प्रकाश पड़इयै। लक्ष्मीधरक **कृत्यकल्पतरू**, श्रीनिवासक **भट्टीकाव्यटीका**, जयसिंहक **लिंगवार्त्तिक**, श्रीधर ठक्कुरक **काव्यप्रकाशविवेक**, नारायणक **छांदोग्यपरिशिष्ट** एवँ मिथिला आ भारतक अन्य भागसँ प्राप्त मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि आदिसँ मिथिलाक इतिहासक निर्माणमे सहायता भेटइत अछि। विल्हणक **विक्रमाँकदेवचरित**, विद्यापतिक समस्त रचना, वर्धमानक **दण्डविवेक**, अभिनव वाचस्पति मिश्रक समस्त रचना, गणेश्वरक **सुगति सोपान**, चण्डेश्वरक **आठो रत्नाकर**, ज्योतिरीश्वर ठाकुरक **वर्णरत्नाकर** आदि ग्रंथ मिथिलाक इतिहासक निर्माणमे उपादेय सिद्ध भेल अछि। बिहार रिसर्च सोसायटी द्वारा प्रकाशित **"कैटलोग आफ मिथिला मैनुस्कृप्ट"** (४ भाग), हरिप्रसाद शास्त्री द्वारा संपादित **"कैटलोग आफ नेपाल दरबार मैनुस्कृप्ट"** इत्यादिसँ सेहो मिथिलाक इतिहासक सभ पक्षपर विशेष प्रकाश पड़इयै। मिथिलामे सुरक्षित तालपत्रपर ब्राह्मण आ कायस्थक पाञ्जि सेहो मिथिलाक सामाजिक इतिहासक एकटा मूलि स्त्रोत मानल गेल अछि।

ओना पुरातात्विक साधनक अभाव तँ मिथिलामे अछि तथापि मोतिहारीसँ बंगालक सीमा धरि जे विभिन्न पुरातात्विक महत्वक स्थान अछि तकर सर्वेक्षणसँ मिथिलाक इतिहासक निर्माणमे सहायता भेटत। मिथिलाक प्रमुख क्षेत्रक उत्खनन अखनो नहि भेल अछि तैं ओहिठामसँ पर्याप्त मात्रामे शिलालेख, सिक्का, आदि नहि भेटल अछि। एम्हर मोतिहारीसँ कैकटा ताम्रलेख प्रकाशित भेल अछि, मुजफ्फरपुरक कटरा थानासँ जीवगुप्तक एकटा अभिलेख भेटल अछि जाहिसँ पता लगैत अछि जे तीरभुक्तिमे **चामुण्डा** नामक एकटा विषय छल। इमादपुरसँ पाल कालीन अभिलेख भेटल अछि जाहिसँ इ सिद्ध होइछ जे पाल लोकनिक शासन मिथिलापर छल। नौलागढ (बेगूसराय)सँ दूटा पालकालीन अभिलेख भेटल अछि– जाहिमे एकटा क्रिमिला विषयक आ दोसरमे एकटा बिहारक उल्लेख अछि। एहिठाम इहो स्मरणीय जे एहि क्षेत्रसँ गुप्तकालीन मोहर एवँ **'रक्षमुक्त विषय'**क एकटा गुप्तकालीन मोहर सेहो भेटल अछि जाहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे मिथिलाक इ क्षेत्र शासनक प्रधान केन्द्र छल। बनगाँव (सहरसा)क गोरहोघाट, पटुआहा, आदि स्थानसँ पंचमार्क्ड सिक्का तँ बहुत पूर्वहिं भेटल छल आ एम्हर विग्रहपाल तृतीयक एकटा प्रमुख ताम्रलेख बहरायल अछि जाहिमे इ कहल गेल अछि जे **तीरभुक्ति**क अंतर्गत **हौद्रेय** नामक एकटा विषय छल। इएह **हौद्रेय** आधुनिक **हरदी** थिक। एहिसँ पूर्व हमरा लोकनिकँ तीरभुक्तिमे मात्र एक्केटा विषयक ज्ञान छल आ ओ छल **'कक्ष'** विषय जकर उल्लेख नारायण पालक भागलपुर ताम्रलेखमे भेल अछि। इ **कक्ष विषय**क सम्बन्धमे अखनो धरि इतिहासकार एकमत नहि भेल छथि मुदा हमर अपन विचार इ अछि जे इ **'कक्ष'** विषय प्राचीन अंगुतरापमे छल आ **महाभारत**मे वर्णित **'कौशिकी कक्ष'**क प्रतीक छल। नारायण पालक ताम्रलेखमे एहि **कक्ष** विषयक विवरण भेटइत अछि। **चामुण्डा** विषय पश्चिममे, **हौद्रेय** केन्द्रमे आ **कक्ष** विषय **तीरभुक्ति**क पूर्वी सीमाक संकेत छल। एकर अतिरिक्त पंचोभसँ प्राप्त ताम्रपत्र सेहो मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक हेतु अत्यावश्यक। अन्धराठाढ़ीसँ प्राप्त **श्रीधर**क अभिलेख, कन्दाहासँ **नरसिंह देव ओइनवार**क अभिलेख, भगीरथपुरसँ प्राप्त **ओइनवार कालीन** अभिलेख, **मुहम्मद तुगलक**क अभिलेख, **वेदीवन**क तुगलक कालीन अभिलेख, **इब्राहिम शाह शर्की**क अभिलेख, **शिवसिंह**क सिक्का, ओइनवार शासक **भैरव सिंह देव**क चाँदीक सिक्का आदिसँ मिथिलाक इतिहासक विभिन्न पक्षपर प्रकाश पड़इत अछि। नेपाल वंशावली आ नेपालसँ प्राप्त अभिलेख जाहिमे सिमराँवगढ स्थित नान्यदेवक तथाकथित अभिलेख एवँ प्रताप मल्लक शिलालेख महत्वपूर्ण अछि। एम्हर आबिकँ वैशाली, बलिराजगढ, करिऔन आदि स्थानक उत्खननसँ जे सामग्री प्राप्त भेल अछि सेहो मिथिलाक इतिहासक निर्माणमे सहायक सिद्ध भेल अछि। महेशवारा (बेगूसराय)सँ प्राप्त रूकनुद्दिन कैकशक अभिलेख तँ अन्यान्य दृष्टिकोणसँ महत्वपूर्ण अछि। मिथिलाक विभिन्न भागसँ मुसलमानी सिक्का पर्याप्त मात्रामे भेटल अछि जाहिसँ राजनैतिक इतिहासक निर्माणमे सहायता भेटइत अछि। मटिहानी (बेगूसराय)सँ बंगालक सुल्तान नसरत शाहक अभिलेख सेहो भेटल छल आ कहल जाइत अछि जे बेगूसरायक समीप नूरपुर गाँवमे मीरजाफरक पुत्रक एकटा अभिलेख अछि।

विदेशी यात्री लोकनि सेहो मिथिलामे आएल छलाह आ एहिमे चीनसँ आयल यात्री लोकनिक विशेष महत्व अछि कारण ओ लोकनि एतए बौद्धधर्मक अध्ययनार्थ अबैत छलाह। फाहियान, हियुएनसंग, सूंगयुन, इंसिंग आदि यात्रीक नाम उल्लेखनीय अछि। इ लोकनि मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रक भ्रमण कएने छलाह आ ओ लोकनि जे अपन

विवरण लिखने छथि ताहिसँ एहि क्षेत्रपर विशेष प्रकाश पड़इयै। वृज्जी, लिच्छवी एवँ तीरभुक्तिक प्रसंग हिनका लोकनिक लेख उपादेय अछि। विदेशी यात्रीमे सर्वप्रमुख व्यक्ति, जे मिथिलाक हेतु सर्वतोभावेन महत्वपूर्ण कहल जा सकैत छथि, भेलाह तिब्बती यात्री **धर्मस्वामी** जे १३म शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मिथिला होइत नालंदा गेल छलाह। तखन मिथिला राजगद्दीपर कर्णाटवंशीय रामसिंह देव विराजमान छलाह। धर्मस्वामी मिथिलाक संबंधमे बहुत रास बात लिखने छथि। बहुत दिनधरि ओ रामसिंहक दरबारमे सेहो रहल छलाह आ रामसिंह हुनका अपन पुरोहित बनबाक हेतु आग्रहो केने छलथिन्ह परञ्च ओकरा ओ स्वीकार नहि केलन्हि। ताहि दिनमे मिथिलापर मुसलमानी आक्रमण प्रारंभ भऽ चुकल छल तकर विवरण ओ दैत छथि कारण जखन वैशाली बाटे जाइत छलाह तखन ओ अपना आँखिये इ सभ घटना देखलन्हि। धर्मस्वामी मिथिलाक इतिहासक हेतु एकटा आवश्यक स्त्रोत भेला।

एकटा दोसर महत्वपूर्ण साधन भेल **वसातिलुनउंस** जकर लेखक छलाह **मुहम्मद सद्र उला अहमद हसन दाबिर इदुसी** (उर्फ **ताज**) आ ओ **इखतिसान उद देहलवी**क नामे सेहो विख्यात छलाह। ओ गयासुद्दीन तुगलकक संगे बंगाल आक्रमणमे गेल छलाह आ घुरती कालमे मिथिला पर गयासुद्दीन तुगलकक आक्रमणक समयमे हुनके संग छलाह। तैं इहो एकटा आँखि देखल साधन भेल आ ओहि हिसाबे महत्वपूर्ण सेहो। **फोलियो १२** (एकर सम्पूर्ण पटनाक काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थानमे सुरक्षित अछि आ ४टा फोलियो जकर संबंध मिथिलाक इतिहाससँ छैक, हमर **हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत**मे छपल अछि)पर लिखल अछि जे हरिसिंह देव ककरो कोनो सलाह नहि सुनलन्हि आ पराकेँ पहाड़ दिसि चलि गेलाह। गयासुद्दीन तुगलकक तिरहुत आक्रमणक संबंधमे एहिसँ प्रामाणिक दोसर कोनो साधन उपलब्ध नहि अछि। तिरहुत ताहि दिन विस्तृत आ सुखी संपन्न राज्य छल आ अखन धरि ककरो अधीन नहि छल तैं गयासुद्दीन बंगालसँ घुरबा काल अपना अधीनमे करबाक प्रयास केलक। इसामी अपन **फुतुह–सालातीन**मे लिखने छथि जे गयासुद्दीन तिरहुतक कर्णाटवंशक अंतिम राजापर आक्रमण कँलन्हि आ ओ बिना कोनो प्रकारक विरोध केने पहाड़–जंगल दिसि भागि गेलाह। सुल्तान तीन दिन धरि ओतए ठहरलाह आ जंगलकेँ काटिकेँ सम्पूर्ण क्षेत्रकेँ साफ करौलन्हि। तेसर दिन ओ मिथिला राज्यक विशाल किला जकर दिवाल गगनचुम्बी छल आ जे सात टा गहिर खाधिसँ चारू कातसँ घेरल छल, पर आक्रमण कँलन्हि आ ओहिपर विजय प्राप्त केला उत्तर ओहि किलामे दू या तीन सप्ताह रूकला आ चारू दिसक विरोधकेँ दबैलन्हि आ एवँ प्रकारें मिथिलापर अपन प्रभुत्व स्थापित केलन्हि। जेबासँ पूर्व ओ तवलिघाक पुत्र धर्मात्मा अहमदकेँ तिरहुतक प्रधान बनौलन्हि। एवँ प्रकारे एक–दू मासक बाद गयासुद्दीन अपन राजधानी दिसि चलि गेलाह। फरिस्ता आ मुल्लातकिया जे राजाक गिरफ्तारीक गप्प लिखैत छथि से गलती बुझि पड़इयै। **वसातिनुलउंस**क अनुसार तिरहुतक राजा समृद्धशाली छलाह, आ हुनका सैनिकक कोनो अभाव नहि छलन्हि। विराट राजभवन छलन्हि आ सभ तरहें ओ सुखी आ सम्पन्न छलाह। अपन अजेय दूर्ग–किलाबंदी आ सेनापर अटूट विश्वास छलन्हि आ आइ धरि कतहु हुनक माथ झुकल नहि छलन्हि। गयासुद्दीनक पहुँचबाक समाचार सुनितहिं ओ एतेक भयभीत भऽ गेलाह जे हुनक सब घमण्ड धूल–धूसरित भऽ गेल। अपन प्रतिष्ठा बचेबाक हेतु ओ अपन तेज घोड़ापर चढ़िकेँ भागि गेलाह। **वसातिनुलउंस**क लेखकक विचार अछि जे जँ राजा मेलसँ

चाहतैथ तँ गयासुद्दीन हुनका संग बढ़िया व्यवहार करितथिन मुदा ओ बिनु कोनो प्रकारक वार्ता कएने भागि गेला। अपन स्वतंत्रताक रक्षाक हेतु ओ पहाड़क कोरामे नुका रहलाह। गयासुद्दीन ओहिठाम थोड़ेक दिन ठहरि समस्त राज्यक शासनक व्यवस्था अपने निर्देशनमे केलन्हि। ग्राम मुखिया (मकोद्दम) लोकनिक संग नीक व्यवहार दर्शौलन्हि आ तकर बाद सब प्रबंध केला उत्तर ओहिठामसँ अपन राजधानी दिसि बढ़लाह।

एकर अतिरिक्त एकटा आर महत्वपूर्ण साधन अछि मुल्ला तकियाक वयाज। मुल्ला तकियाक वयाज पटनाक मासिक (पटना–१९४६)मे छपल अछि आ **'मिथिला'** साप्ताहिकमे सेहो एकर मुख्य साराँश मैथिलीमे छपल छल बहुत दिन पूर्वहिं जे आब उपलब्ध नहि अछि। मुल्ला तकिया मुगल कालीन रइस छलाह। आसाम जेबाक क्रममे मिथिला होइत गेल छलाह आ ताहि दिनमे एहिठाम जत्तेक जे किछु छल तकर विस्तृत विवरण संकलित कए ओ मिथिलाक एकटा व्योरेवार इतिहास बनौने छलाह। एकर अतिरिक्त फरिता, अलवदाओनी, अबुल फजल, अब्दुल सलिम आ गुलाम होसेन हुसेनक पोथी सभसँ सेहो मिथिलाक इतिहासपर पर्याप्त प्रकाश पड़इत अछि।

मुसलमानी साधनक अतिरिक्त इस्ट इण्डिया कम्पनीक रेकार्डस, कलक्टरेटक कागज पत्र, अंग्रेज कर्मचारी लोकनिक मध्य भेल पत्राचार, जमीन्दारीक कागज आ दरभंगा राजक सचिवालय एवँ रेकार्डस रूममे सुरक्षित पुरान कागज सभ सेहो मिथिलाक इतिहासक निर्माणक हेतु सहायक सिद्ध होएत। मिथिलामे जे बहुत रास जमीन्दारी छल ओहि सभ जमीन्दारक ओतए विभिन्न प्रकारक सरकारी गैर सरकारी कागज उपलब्ध अछि आ ओहि सभसँ मिथिलाक आधुनिक इतिहासक निर्माणमे काफी सहायता भेट सकइयै। एहि सभ कऽ संकलन एवँ प्रकाशन आवश्यक अछि– दरभंगा राज्यक इतिहासक निर्माणमे एहिसँ बड़ड सहायता भेटल अछि। दरभंगा, बनैली, नरहन, बेतिया, सुरसंड, गंधवरिया, चक्रवार आदि राजवंशक वृहद एवँ वैज्ञानिक इतिहास नहि लिखल जा सकल अछि। दरभंगा राजक अतिरिक्त बाँकी राज सभहक संबंध हमरा लोकनिकेँ पूर्ण जानकारियो नहि अछि कारण साधनक अभाव अछि।

एहि सभ साधनक वैज्ञानिक अध्ययन केलासँ मिथिलाक प्रामाणिक इतिहासक निर्माण भऽ सकइयै। सब साधनक समीचीन व्याख्या केला उत्तरे हमरा लोकनि मिथिलाक समीक्षात्मक सर्वेक्षण कऽ सकैत छी। ओना आन प्रांतक तुलना एहिठाम साधनक सर्वथा अभावे कहल जाएत तथापि जतवा जे उपलब्ध अछि ताहिपर वैज्ञानिक रूपें अध्ययन करब आवश्यक। मिथिलाक हेतु मैथिली साधनपर विशेष निर्भर करए पड़त। एहि प्रसंगमे एकटा उदाहरण देव अप्रासंगिक नहि होइत। विद्यापति कवि होइतहुँ इतिहासक नीक ज्ञाता छलाह जकर प्रमाण हमरा हुनक ग्रंथ सभसँ भेटइत अछि। **पुरूष परीक्षा** जाहि सिल–सिलेवार ढंगसँ ओ ऐतिहासिक व्यक्तित्वक विवेचन कएने छथि ताहिसँ हुनक ऐतिहासिक बोध एवँ वस्तुनिष्ठताक पता लगइयै। (एहि सबंधमे द्रष्टव्य–हमर लेख–**विद्यापतिज पुरूष परीक्षा**–जे हमर **'हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत'**क परिशिष्टमे छपल अछि।) ज्ञातव्य जे **पुरूष परीक्षा**क अध्ययन केला उपरांत स्वर्गीय चन्दा झा मिथिलाक इतिहासक अध्ययन दिसि आकृष्ट भेल छलाह आ ओहि संबंधमे बहुत रास सामग्री सेहो जमा केने छलाह। **कीर्तिलता, कीर्तिपताका, लिखनावली** आदि ग्रंथ सेहो ओतवे महत्वपूर्ण अछि।

मिथिलाक इतिहासक लेल मैथिली साधनक हेतु खोज करए पड़त कारण एकर एकटा अविच्छिन्न प्रवाह वैदिक कालसँ अद्यावधि बनल अछि। यशस्तिलकचम्पूमे तिरहुत रेजिमेंटक विवरण मिथिलाक स्वतंत्र व्यक्तित्वकेँ स्पष्ट करइत अछि जकर स्पष्टोक्ति विद्यापतिमे भेल अछि। मिथिलाक इतिहासक निर्माणक हेतु उपरोक्त सभ साधनक वैज्ञानिक अध्ययन एवं ओकर समीक्षात्मक विश्लेषण अपेक्षित अछि।

अध्याय–३

# जनकवंशक इतिहास

कुरू–पाँचालमे कुरूवंशक अंत भेला उत्तर भारतक जे सर्व प्रसिद्ध राजवंश छल तकरे हमरा लोकनि जनक वंशक नामसँ जनैत छी। एहि वंशक सर्वश्रेष्ठ एवँ सर्व प्रसिद्ध राजा छलाह जनक जनिक दरबार दर्शनक प्रसिद्ध केन्द्र छल आ ओहि हेतु मिथिलामे जनक वंशक एतेक प्रसिद्धियो अछि। कुरू लोकनिक अवसानक कालमे पूर्वी भारतमे जनक वंश उत्थानक पथपर छल। एकर सभसँ पैघ प्रमाण इ अछि जे ब्राह्मण साहित्यमे ताहि दिनमे कुरू राजकुमार लोकनिकेँ **'राजन'**क संज्ञासँ सम्बोधित कैल जाइत छलन्हि आ जनक राजवंशक लोककेँ **'सम्राट'**क संज्ञासँ। **शतपथ ब्राह्मण**मे सम्राटकेँ राजनसँ पैघ मानल गेल अछि।

पौराणिक चाकरायन आ निचक्षुक समयमे कुरू लोकनिक पतन भेल छलन्हि। राजा परीक्षितक अवसान भऽ चुकल छल परञ्च हुनक स्मृति अखनो लोकक मध्य विराजमान छल आ मिथिलाक राजदरबारमे ओ अहुँखन श्रद्धाक संग चर्चित छलाह। जनकक सभामे जे दार्शनिक विचार–विमर्श एवँ चिंतनक क्रम चलैत छल ताहुठाम राजा परीक्षित एकटा विचारणीय विषय बनल छलाह जेना कि भुज्यु लाह्यायनि एवँ याज्ञवल्क्यक विवादसँ स्पष्ट होइछ। सम्प्रति हमरा लोकनिक समक्ष जे साधन मिलल अछि ताहि आधार इ कहब कठिन अछि जे जनमेजय आ जनक वंशक मध्य कोनो प्रकारक सम्पर्क छल अथवा नहि। **पुराण** एवँ **महाकाव्य**मे जनक आ परीक्षित वंशकेँ सम–सामयिक कहल गेल छैक। जनककेँ उद्दालक आरूणि आ याज्ञवल्क्यक सम–सामयिक कहल गेल छैक। महाभारतमे वर्णित अछि जे जनमेजयक सर्पसत्रमे उद्दालक आरूणि एवँ हुनक पुत्र श्वेतकेतु उपस्थित छलाह। विष्णुपुराणमे तँ एतवा धरि कहल गेल अछि जे जनमेजयक पुत्र एवँ अधिकारी शतानीक याज्ञवल्क्यसँ वेदक शिक्षा ग्रहण केलन्हि।

उपरोक्त कथनकेँ प्रामाणिक मानव असंभव कारण वैदिक साहित्य, पुराण आ महाकाव्यक मध्य तिथि निर्धारण एवँ राजवंशक साक्ष्यक सम्बन्धमे एकटा विरोधाभास अछि आ तैं अद्यावधि एहि सभ शासक लोकनिक काल निर्धारण एकटा समस्ये बनल अछि। देश–विदेशमे एहि प्रश्नपर वेस विवाद भेल अछि परञ्च तइयो प्रामाणिकताक लेशमात्र कतहु देखबामे नहि अवइयै। **शतपथ ब्राह्मणक अनुसार** दैवापशौनक जनमेजयक सम–सामयिक छलाह। **जैमिनी उपनिषद** एवँ **वंश ब्राह्मण**क अनुसार दैवाप शौनकक शिष्य छलाह दृति एन्द्रोत आ एन्द्रोतक शिष्य छलाह पुलुष प्राचीन योग्य। पुलुषक शिष्य छलाह पौलुषी सत्ययज्ञ। **छान्दोग्य उपनिषद**क अनुसार सत्ययज्ञ उद्दालक आरूणि एवँ बुडिल आश्वतराश्वीक समकालीन छलाह आ एहि हिसाबे तँ ओ जनकक समकालीन सेहो रहल हेताह। एहिसँ स्पष्ट होइछ जे एन्द्रोत जनमेजयक समकालीन रहल हेताह आ सातयज्ञि जनकक। जनक जनमेजयसँ पाँच–छह पीढ़ी बादमे भेल होथि से संभव।

विदेह राजक सर्वप्रथम उल्लेख हमरा लोकनिकेँ यजुर्वेदक संहितामे भेटइत अछि। वाल्मीकि रामायणक अनुसार एहि राजवंशक मूल संस्थापक छलाह राजा निमि। हुनके पुत्र छलाह मिथि आ मिथिक पुत्र जनक प्रथम। ओहि वंशक जे सीताक पिता छलाह उएह भेलाह जनक द्वितीय आ हुनक भ्राता कुशध्वज साँकास्यक शासक छलाह। वायु एवँ विष्णुपुराणमे निमिकेँ इक्ष्वाकुक पुत्र कहल गेल अछि आ ओहि निमिकेँ विदेहक संज्ञा सेहो देल गेल अछि। ओहि **'विदेह'**सँ ओहि क्षेत्रक नाम विदेह सेहो पड़ल। **वायुपुराण**मे वशिष्ठक जाहि श्रापक उल्लेख अछि तकर वर्णन हमरा लोकनिकेँ बृहद्देवतामे सेहो भेटइत अछि। उपरोक्त दुनू पुराणक अनुसार निमिक पुत्र **'मिथि'**केँ जनक प्रथम सेहो मानल जाइत अछि आ ओहि क्रममे सीताक पिताक नाम सीरध्वज जनक सेहो भेटइत अछि। इएह सीरध्वज संभवतः रामायणक द्वितीय जनक भऽ सकैत छथि। पुराणक अनुसार एहिवंशक अंतिम राजा कृति छलाह। रामायण, महाभारत आ पुराणक अध्ययनसँ इ स्पष्ट होइछ जे जनक, व्यक्ति विशेषक नामक अतिरिक्त, वंशक नाम सेहो छल। एहि प्रसंगमे इ स्मरण राखब आवश्यक जे एहि वंशक क्रममे जनकानाम, जनकै आदि शब्दक जे प्रयोग भेल अछि ताहुसँ उपरोक्त कथन प्रमाणित होइत अछि।

वैदिक साहित्यमे नमिसाप्य नामक एकटा विदेहक राजाक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। मुदा एहिठाम इ स्मरणीय जे नमिसाप्य कतहु कोनोठाम मिथिलाक राजवंशक संस्थापकक रूप नहि उपस्थित कैल गेल अछि। **शतपथ ब्राह्मण**क कथासँ एतवा धरि स्पष्ट अछि जे विदेघ माथव मिथिलाक राजवंशक ऐतिहासिक संस्थापक छलाह। ओ सरस्वती नदीक तटसँ सदानीरा (गण्डकी)केँ तट धरि आएल छलाह। हुनका संग हुनक पुरोहित गोतम राहुगण। सरस्वतीक तटसँ जंगलकेँ जरबैत ओ लोकनि मिथिला धरि पहुँचलाह। एहिसँ पूर्व कोनो ब्राह्मण एम्हर एतए दूर धरि नहि आएल छलाह कारण ताधरि एहि क्षेत्रकेँ अग्नि वैश्वानर द्वारा जराओल नहि गेल छल। एम्हुरका जमीन दल–दल छल आ किछु उपजा वारी नहि होइत छल। अग्निदेव जखन एहि भूमिकेँ जराकेँ पवित्र केलन्हि तखन माथव हुनकासँ पूछलथिन्ह जें हम आब कोम्हर जाइ ताहिपर अग्निदेव कहलथिन्ह जे अहाँ पूर्व दिस जाउ आ ओतहि अपन वास स्थापित करू तदुपरांत माथव विदेघ अथवा मिथि विदेह ओहिना काज केलन्हि आ उत्तर पूर्वी भारतमे एकमात्र आर्य राज्यक स्थापना संभव भेल। जँ हमरा लोकनि **शतपथ ब्राह्मण**क एहि कथाक ऐतिहासिकताकेँ स्वीकार करैत छी तखन तँ इ स्पष्ट भऽ जाइछ जे **'निमि साप्य'** मिथिलाक संस्थापक नहि छलाह आ नञि हुनका इ प्रतिष्ठे देल जा सकैत छन्हि। **मज्झिम निकाय** आ **निमि जातक**मे मखादेवकेँ मिथिलाक राजवंशक संस्थापक कहल गेल छैक। जनक वंशक सम्बन्धमे एवँ प्रकारे ततेक रास नञि मतभेद अछि जे ओहि प्रसंगमे कोनो निर्णयात्मक उत्तर देव असंभव। बृहद्देवतामे उल्लेख अछि जे विदेह लोकनि सरस्वती तटसँ मिथिला पहुँचला उपरांतो अपन वंशसँ सरस्वती नदी संबंध बहुत दिन धरि बनौने रहलाह आ एहि बातक पुष्टि तखन आर होइछ जखन हमरा लोकनि **पंचविंश ब्राह्मण**क निमि साप्य प्रकरणपर दृष्टिपात करैत छी। बौद्ध साहित्यमे मिथिलामे निमिकेँ प्रथम शासक नहि मानि बादक शासक मानल गेल अछि। मिथिलाक राजवंशकेँ सामान्यतः जनक वंश कहल गेल अछि तैं कोन जनक **'महान जनक'** छलाह जनिक पुत्री सीता छलथिन्ह अथवा जनिक दरबारमे विद्वदजनक गोष्ठी भेल छल से कहब असंभव। ओकर प्रामाणिकता सिद्ध करब सेहो असंभव।

विभिन्न स्त्रोतसँ उपलब्ध सामग्रीक अध्ययन केला संता हमरा लोकनि एहि निष्कर्षपर पहुँचैत छी जे सीताक पिताक नाम छल सीरध्वज जनक। पुराणमे जनक राजवंशक जे सूची अछि ताहि आधारपर हमरा लोकनि उपरोक्त निर्णयपर पहुँचैत छी। अयोध्याक भरतक माम छलथिन्ह केकेयीक राजा अश्वपति आ सीरध्वज जनक हुनके समकालीन छलाह। उद्दालक आरूणि आ बुडिल एहि दुनू राजाक दरबारमे बरोबरि जाइत छलाह। भवभूति सेहो एहिमतक समर्थक छथि जे सीरध्वज जनक सीताक पिता छलाह। जातक नं ५३९मे जाहि महाजनकक चर्च अछि सैह संभवतः सीरध्वज जनक छलाह आ हुनके दरबार विद्वानक हेतु विश्वविख्यात छल। एहि महाजनकक सम्बन्धमे कहबी अछि–

"*मिथिलायाम् प्रदिप्तायाम्*
*न मे दहयति किञ्चन्।*
*अपिच भऽवति मैथिलेन गीतम्*
*नगरम् उपाहितम् अग्निनाभिविक्ष्य,*
*न खलु मम हि दह्यतेत्र किञ्चित्*
*स्वयमिदमाह किलस्म भूमिपालः*"
एहिसँ तँ स्पष्ट रूपे जनक विदेहक बोध होइछ।

**महाभारत, शतपथ ब्राह्मण** एवँ **वृहदारण्यकोपनिषद**मे जनककेँ सम्राटक संज्ञा देल गेल छैक। सम्राट जनकक महानताक द्योतक कहल जा सकइयै कारण बिनु वाजपेय यज्ञ केने केओ सम्राट नहि कहा सकैत छल। आश्वलायन स्त्रोत सूत्रमे जनककेँ महान यज्ञकर्ताक रूपमे वर्णन कैल गेल छन्हि। सम्राटक हिसाबें कम आ चिंतक एवँ दार्शनिक हिसाबें बेसी इ महान जनक इतिहासमे विशेष प्रसिद्ध छथि आ मिथिलाक अहुना जतवा जे सांस्कृतिक प्रतिष्ठा अछि ओकर जड़िमे छथि इएह राजा जनक आ हुनक राजदरबार। ताहि दिनमे मिथिलाक राजदरबार संस्कृति आ दर्शनक प्रधान केन्द्र छल आ एहिठाम विजय प्राप्त करबाक अर्थ होइत छल समस्त भारतमे यश प्राप्त करब। कुरू पाँचाल, मद्र, कौशल आदि स्थानक विद्वान लोकनि जनकक दरबारकेँ सुशोभित करैत छलाह। किछु प्रसिद्ध विद्वानक नाम एवँ प्रकार छन्हि–अश्वल, जारतकारव आर्तभाग, भुज्यु लाहयायनि, उषस्त चाकरायण, कहोड़ (कहोल) कौषीतकेय, गार्गी वाचक्रवी, उद्दालक आरूणि, आ विदग्ध शाकल्य इत्यादि। कुरू–पाँचालक ब्राह्मण संग जनकक सम्बन्ध विलक्षण छलन्हि आ ओहिठामसँ तरह–तरहक विद्वानकेँ ओ अपना ओतए बजबैत छलाह। राजा जनकक संबंधमे ऐतिहासिकताक जतवा जे अभाव हो मुदा ओकर साँस्कृतिक महत्वक सम्बन्धमे ककरो कोनो प्रकारक सन्देह नहि छन्हि।

जेना कि उपर कहल जा चुकल अछि जनक वंशक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करब एकटा कठिन समस्या अहुँखन बनले अछि आ सम्प्रति एकर कोनो निदानो देखबामे नहि अवइयै। जाहि **'कृत'**केँ कृतक्षणसँ तुलना कैल गेल अछि से संभवतः कराल जनक रहल हेताह कारण ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ हमरा लोकनि जनैत छी जे कराल जनक अजातशत्रुक समकालीन छलाह आ हुनके शासन कालमे जनक वंशक अंत भेल। इहो संभव जे **'कृति'** आ **'कराल'** दुनू जनक वंशक अंतिम शासक होथि।

वैदिक साहित्यमे माथव आ जनकक अतिरिक्त दू आ विदेह वंशक उल्लेख भेटइत अछि–निमि साप्य आ पर आहलारक। किछु विद्वान पर आहलारकें कोशलक शासक पर आतणारसँ मिलबैत छथि। **पंचविंश ब्राह्मण**मे निमि साप्यकेँ एक महान यज्ञकर्ता कहल गेल अछि आ तैं किछु गोटए हुनका जनकसँ मिलबैत छथि। वैदिक निमि साप्यक तुलना **उतराध्यायन सूत्र**क राजा निमिसँ। विष्णुपुराणक नेमीसँ, **मज्झिम निकाय**क **मखादेव सुत्त**क निमिसँ तथा कुम्भकार एवँ निमिजातकमे वर्णित ओहि नामक राजासँ करैत छथि। एकर प्रत्यक्षीकरण अखनो एकटा ऐतिहासिक समस्या बनल अछि। **निमिजातक**क अनुसार ओ मैथिल राजवंशक अंतिम शासक छलाह आ संगहि पाँचालक राजा **द्विमुख, गाँधारक नग्गति** आ **कलिंगक करण्डु**क समकालीन सेहो। **मज्झिम निकाय**क उपरोक्त सुत्तमे **कराल(कलार)** जनककेँ निमिक पुत्र कहल गेल अछि। कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे एहि कराल जनककेँ **'वैदेह'** कहल गेल अछि। एहि राजाक संग **'वैदेह'** वंशक अंत भेल। वैदेह वंशक अंत होइतहि एहिठाम कुलीनतंत्री गणतंत्रक स्थापना भेल आ इ वैशाली कुलीनतंत्र अथवा वृज्जिसंघक एकटा प्रमुख अंग बनि गेल। प्राचीन परंपरासँ एहिबातक सबूत भेटइत अछि जे विदेहक पतनमे काशीक हाथ सेहो छल। अजातशत्रु विदेह राज्यक यश–प्रतिष्ठाकेँ देखि इर्ष्या करैत छलाह। काशी आ विदेहमे बरोबरि संघर्ष होइत रहैत छलैक। **महाभारत**क अनुसार काशीक प्रतरदन आ विदेहक जनकक मध्य संघर्ष भेल छल। **परमथ्थजोतिक** नामक बौद्ध ग्रंथमे कहल गेल अछि जे जनक वंशक अंत भेलापर उत्तर बिहार अथवा मिथिलामे लिच्छवी लोकनिक शक्तिशाली शासन प्रारंभ भेल। लिच्छवीक सम्बन्ध सेहो काशीसँ बताओल जाइत अछि। किछु स्त्रोत सभ मे एहि बातक दिसि संकेत कैल गेल अछि जे वैशाली विदेहपर अप्रत्यक्ष वा प्रत्यक्ष रूपें काशीक प्रभाव छल।

यजुर्वेद संहिताक अध्ययनसँ ज्ञात होइछ जे ब्राह्मण युगमे विदेहक राजनैतिक आ साँस्कृतिक महत्व एक्के रंग छल। ताहि दिनमे विदेहक गाय समस्त उत्तरी भारतमे प्रसिद्ध छल। पश्चिममे जे स्थान कुरू–पाँचाल लोकनिक छलन्हि से पूर्वमे कोशल–विदेह लोकनिक। कोशल आ विदेहक निवासी विदेघ माथवकेँ अपन पूर्वज अथवा संस्थापक मनैत छथि। एहिठाम इ स्मरण रखबाक अछि जे विदेघ माथव (विदेह माधव) अपना मुँहमे अग्निवैश्वानरकेँ लऽ कऽ चलल छलाह। एहिसँ इ स्पष्ट अछि जे पूर्वी भारतक इ समस्त हिस्सा जंगल आ दलदल छल आ अग्नि वैश्वानरक प्रतापें ओहि जंगलकेँ जराकेँ विदेघ माथव एकरा रहबा योग्य भूमि बनौलन्हि। विदेह आर्यक प्रसारक पूर्वी सीमारेखा बनल। एकटा प्राचीन परंपरामे तँ इहो कहल गेल अछि जे विदेहक आर्यीकरण भेलाक पछाति **शतपथ ब्राह्मण**क रचना विदेहेमे भेल। एहि सम्बन्धमे विद्वानक मध्य काफी मतभेद अछि। एतवा धरि निश्चित एवँ निर्विवाद रूपें कहल जा सकइयै जे विदेहक साँस्कृतिक मान्यता समस्त उत्तर भारतमे छल। उपनिषदक युग विदेहक ब्राह्मणक प्रतिष्ठा कुरू–पाँचालक ब्राह्मणसँ विशेष छल। विदेहक महत्व एतेक छल जे बादोमे एकर चर्च विभिन्न साहित्य इत्यादिमे होइत रहल। **जातक, बौद्ध साहित्य, अध्यात्म रामायण, रामायण** आदि ग्रंथ सबमे विदेहक वैशिष्ट्यक विश्लेषण भेटइत अछि।

अपन दिग्विजयक क्रममे भीम विदेहक राजाकेँ पराजित कएने छलाह। विदेहक राजधानी मिथिलापर कर्ण अपन दिग्विजयक क्रममे अपन आधिपत्य स्थापित कएने छलाह। **शांति पर्व**मे एक स्थलपर जनक–याज्ञवल्क्यक वार्तालापक प्रसंग आएल

अछि। एकर अतिरिक्त **महाभारत**मे विदेह राज जनकक प्रसंगमे निम्नलिखित बातक उल्लेख भेटइयै–

________ i) जनकक आध्यात्मिकताक विवरण;
________ ii) पंचशिख आ शुलभाक संग जनकक वार्तालाप;
________ iii) शुककेँ जनक द्वारा शिक्षा देबाक प्रसंग;

भीम आ अर्जुनक संग जखन कृष्ण इन्द्रप्रस्थसँ राजगीर जाइत छलाह तखन ओ मिथिला सेहो आएल छलाह आ एहेन बुझि पड़इयै जे ताहि दिनमे राजगीर जेबाक बाट मिथिले दऽ कए छल। **भीष्म पर्व**मे विदेह लोकनिक विश्लेषण अछि। भीष्म पर्वक एक स्थान पर विदेह लोकनिक उल्लेख एक बेर मगध लोकनिक संग आ दोसर बेर ताम्रलिप्तक लोकनिक संग भेल अछि। **'विदेह'** शब्दक उत्पत्तिक विवरण विशद् रूपेण **विष्णु पुराण**मे भेटइत अछि। विदेह निमिसँ उत्पन्न मिथि जे नगर बसौलन्हि सैह मिथिला कहाओल। दीघनिकायक महागोविन्द सुत्तांतमे कहल गेल अछि जे गोविन्द नामक एक व्यक्ति मिथिलाक संस्थापक छलाह। विभिन्न स्त्रोतसँ विदेहक विभिन्न राजा लोकनिक नाम भेटइत अछि–सागर देव, भरत, अंगीरस, रूचि, सुरूचि, पताप, महापताल, सुदश्शन, नेरू, महासम्मत, मुचल, महामुचल, कल्यानद्वय, सतधनु, मखादेव, साधीन इत्यादि। स्वप्नवासवादत्तम् (अंक–६)मे सेहो उदयनकेँ **'वैदेहीपुत्र'** कहल गेल छन्हि। बिम्बिसारक पत्नी वासवी (अजातशत्रुक माय) सेहो **'विदेहपुत्री'** छलीहे। वर्धमान महावीर विदेहपुत्री विदेहदत्ताक पुत्र छलाह आ ओ स्वयं बहुत दिनधरि मिथिला–विदेहमे रहल छलाह। छह टा वर्षावास ओ विदेहमे बितौने छलाह। महावीर आ बुद्धक समयमे जे वृज्जि संघ छल तकर दूटा प्रमुख सदस्य छलाह लिच्छवी आ विदेह लोकनि। एहि वृज्जि संघकेँ कौटिल्य **राजशब्दोपजीवी संघ** कहने छथि।

विदेहक वन सम्पत्ति महत्वपूर्ण छल आ एहिठामक प्राकृतिक साधन सेहो समृद्ध छल। धन, जन, पशुक कतहु कोनो अभाव नहि छल। **जातक**क अनुसार विदेहमे १६००० गाँव छल आ १६००० नाचैवाली छौड़ी। रथ, घोड़ा, हाथी, बरद, गाय, माल आदिक तैं कथेऽ नञ। चीनी यात्री लोकनि सेहो मिथिला–विदेह आ वृज्जीक विवरण उपस्थित कएने छथि आ ओहि आधारपर किछु विद्वान मिथिलाक राजधानी जनकपुरकेँ मानैत छथि। जातकमे एवँ जैन ग्रंथ सभमे विदेह संबंधी असंख्य कथा सभ सुरक्षित अछि। एक कथामे कहल गेल अछि जे विदेहक राजाकेँ गान्धार राज वोधिसत्वक संग मित्रताक सम्बन्ध छलन्हि। दुनू अपन राजकेँ छोड़ि तपस्या करबाक हेतु हिमालय गेल छलाह। मखादेव, साधीन, सुरूचि आदिक सम्बन्धमे सेहो कैक प्रकारक कथा **जातक**मे सुरक्षित अछि। साधीन एक पवित्र आत्मा छलाह जनिक न्यायप्रियतासँ इश्वर लोकनि सेहो प्रभावित छलाह। सुरूचिक पत्नीक नाम सुमेधा छलन्हि आ उहो दुनू गोटए परम धर्मात्मा छलाह।

वैदिक युगमे काशी, कोशल आ विदेह प्रधान आर्य केन्द्र छल। मगध आ अंगक निवासीकेँ व्रात्य बुझल जाइत छलैक आ व्रात्य अर्थ होइत छल **'पतित'**। प्राच्यक सबटा आर्य केन्द्र सभमे विदेह सर्व प्रधान छल। गौतम, याज्ञवल्क्य, भृगु, वामदेव, कण्व, अगस्त, भार्गव, भारद्वाज, इत्यादि ऋषिगण विदेहमे एकत्र भेल छलाह आ सत्प्रयाससँ ओ निमिकेँ जीवित कँलन्हि। मिथिला–विदेहक शासक लोकनि जनक आ **"वैदेह"** पदवीसँ विभूषित होइत छलाह। राजा जनक **'ब्रह्मज्ञान'**क अंवेषणार्थ कुरू पाँचालसँ बहुत रास ब्राह्मणकेँ बजौलन्हि आ ओहिक्रम ओ याज्ञवल्क्यसँ ब्रह्मविद्याक

उपदेश पऔलनि। याज्ञवल्क्य जनकक राजगुरू बनलाह आ विदेहमे ब्रह्मविद्याक केन्द्र स्थापित भेल। विदेह आ अयोध्यामे वैवाहिक संबंध स्थापित भेल। महाभारत युद्धमे मिथिलाक राजा क्षेमधूर्त्ति दुर्योधनक पक्षमे छलाह किएक तँ पाण्डुवंश एक बेर मिथिलापर आक्रमण कएने छलाह।

दुर्योधन मिथिलेमे बलभद्रक ओतए गदा सिखने छलाह आ तखनहिसँ मिथिलेश आ दुर्योधनमे बेस मित्रता भऽ गेल छलन्हि। महाभारत युद्धक समयमे मिथिलामे विराट नामक एकटा शासक छलाह। दरभंगा जिलाक बराटपुर आ सहरसा जिलाक बराटपुर दुनू एहि राजाक राजधानी कहल जाइयै। सहरसाक वराटपुरसँ साबिकक वस्तु सेहो प्राप्त भेल अछि ओ जाहिमे मध्य युगक एकटा शिलालेख सेहो अछि। नेपाल क्षेत्रमे सेहो एकटा विराटनगर छैक। मिथिला स्थित विराटनगरमे युधिष्ठिर राजा विराटक ओतए बहुत दिन धरि अज्ञातवासमे रहल छलाह। कहल जाइछ जे वराटपुर आ कीचकगढ़ प्रांत सहरसा जिलाक धर्मपुर परगनामे छल आ पचपड़रिया ग्राममे पाण्डव लोकनि अपन अज्ञातवासक समय बितौने छलाह।

विदेहक सम्बन्धमे जे सामग्री उपलब्ध अछि ताहि आधारपर निर्णयात्मक इतिहासक निर्माण करब असंभव अछि। प्राच्यमे रहनिहार काशी, कोशल, मगध, आ विदेहक लोगमे विदेह वासीकेँ विशिष्ट स्थान देल गेल छैक। मनुस्मृतिमे वैश्य पिता आ ब्राह्मण मातासँ उत्पन्न व्यक्तिकेँ **"वैदेह"** कहल गेल छैक। मनुस्मृति मे ब्रह्मर्षि देशकेँ विशेष महत्व देल गेल छैक जतए भरत लोकनि रहैत छलाह। एकर अर्थ इ भेल जे मनु पूर्वी क्षेत्रकेँ बहुत पवित्र नहि मानैत छलाह। लिच्छविक संग ओ विदेह लोकनिकेँ सेहो व्रात्यक कोटिमे रखने छथि। मनु चाहे एहि क्षेत्रकेँ जाहि हिसाबे देखने होथि, महाभारतमे मिथिलाकेँ विशेष प्रतिष्ठा देल गेल अछि। शुखदेव तँ जनकसँ ब्रह्मविद्या सिखबाक हेतु मिथिला आएल छलाह। **'जनक'** पदवीक प्रारंभ राजा मिथिक समयसँ भेल छल।

**I. जनक वंशक राजाक नामावली**

_____ निमि (विदेह)
_____ मिथि
_____ अरिष्टनेमि
_____ सीरध्वज–(जनक द्वितीय), सीताक पिता (छोट भ्राता कुशध्वज-हिनका सँकाश्य जीतलापर सीरध्वज ओतुका राजा बना देलन्हि।)
_____ भानुमंत
_____ सतद्युम्न– (प्रद्युम्न)
_____ शुचि (मुनि)
_____ उर्जवह
_____ सुतध्वज (सत्वध्वज, सनध्वज)
_____ शकुनी (कुणी)-(एहिठामसँ जनक वंश दू भागमे बँटि गेल)

**II. (पुराणक अनुसार बनाओल सूची)**

_____ निमि
_____ मिथि

_____ उदावसु
_____ नन्दिवर्धन
_____ सुकेतु
_____ देवराट्
_____ बृहद्रथ (बृहदुक्त)
_____ महावीर
_____ सुधृति
_____ धृष्टकेतु
_____ हरयाश्व
_____ मरू
_____ प्रतिन्धक
_____ कीर्तिरथ
_____ देवमिढ़
_____ विबुद्ध
_____ महिधक्र
_____ कीर्तिराट
_____ महारोमा
_____ स्वर्णरोमा
_____ हृस्वरोमा
_____ सीरध्वज जनक (जनक द्वितीय)

III. **(सीरध्वजक वंशज)**

_____ कृतिजनक (अपना समयक महान शासक आ चिंतक) (बहुलाश्वक पुत्र)
_____ उग्रायुध

IV. **साँकाश्यमे**

_____ कुशध्वज–(भरत आ शत्रुघ्नक ससूर)
_____ धर्मध्वज
_____ कृतध्वज आ
_____ मितध्वज
_____ खाण्डिक्य–(हिनका केँशीध्वजसँ युद्ध भेल छलैन्ह)
_____ पुराणमे साँकाश्यक जनक वंशक अंत एहिठाम भऽ जाइत अछि।

पार्जिटर महोदय अपन **डायनस्टीज आफ द कलि एज**मे लिखने छथि

कलिंगाश्चैव द्वात्रिंशद् अश्मकाः पंचविंशतिः

कुरवश्चापि षट्–त्रिशद् अष्टाविंशति मैथिलाः॥

महापद्मनन्द मैथिल राज्यकेँ पराजित कएने छलाह–ताहि दिन पुराणक अनुसार २४टा इक्ष्वाकु, २७टा पाँचाल, २४टा काशी, ३६टा कुरू आ २८टा मैथिल शासक क्षत्रिय वंशमे शासन कऽ चुकल छलाह।

V. **जातक सूची:-**

सुरूचि
सुरूचि कुमार
महापणाद
**संदिग्ध:-**
विदेह
महाजनक
अरित्थ जनक, पोल जनक
महाजनक द्वितीय
दिघावु कुमार

VI. **अन्यान्य राजाक नाम–(जातकसँ)**

_ कलार अथवा कराल जनक
_ अंगति
_ साधीन
_ पर अहलार

VII. **विदेह राजतंत्रक अवसान**

अर्थशास्त्र मे**–**

*दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद*
*ब्राह्मणकान्यामभिमन्यमानः*
*सुबन्धुराष्ट्रो विनाशकरालश्च वैदेहः।*

एहिसँ स्पष्ट अछि जे कराल जनकक समयमे मिथिलाक राजतंत्रक अंत भेल। राजा कराल व्यभिचारी छलाह आ अपन चरित्रक चलते हुनका राजगद्दीसँ हाथ धोमए पड़लन्हि। अश्वघोष अपन **बुद्धचरित**मे सेहो एहि प्रसंगमे लिखने छथि**–**

"*कराल जनकश्चैव हृत्वा ब्राह्मणकन्यकाम्*
*अवापभ्रंशमप्येवं न तु से जे न मन्मथम्*"

कहल जाइत अछि जे कराल जनकक प्रजा राजाक दुर्व्यहारसँ तंग आबि विद्रोह केलन्हि आ राजाकेँ मारिओ देलन्हि आ विदेह राजतंत्रक ओहि दिनसँ अंत भऽ गेल। विदेह राजतंत्रक अवसानमे भीतरे–भीतर काशीक हाथ सेहो रहल होएत एहन अन्दाज

लगाओल जा सकइयै। **सुरूचि जातक**क अनुसार काशीक राजा ब्रह्मदत्त अपन पुत्री सुमेधाक विवाह विदेहक राजकुमारसँ करेबा लेल तैयार नहि भेला आ तकरा चलते विदेह राज काशीपर खिसिया गेलाह। आरो बहुत रास बात लऽ कए काशी मिथिलाक उन्नति नहि देखए चाहैत छल आ तरे–तर मिथिलाकेँ नष्ट करबाक कुचक्र करैत रहैत छल। काशीक अतिरिक्त कुरू–पाँचालसँ सेहो मिथिलाकेँ मतभेद रहैत छलैक। कुरू–पाँचालक महत्व घटलाक बाद मिथिलाक प्रगतिसँ कुरू–पाँचालकेँ इर्ष्या होइत छलैक। कुरू–पाँचालसँ पैघ विद्वानोंकेँ एहिठाम बजाओत जाइत छलैक। **महाउमग्ग जातक**सँ ज्ञात होइछ जे उत्तर पाँचालक राजा ब्रह्मदत्तसँ मिथिलाक राजाकेँ लड़ाइ भेल छलैक आ एहि सभसँ दिनानुदिन मिथिलापर परेशानी बढ़ले जाइत छलैक।

मिथिलाक राज्यमे सेहो आपसी संघर्ष होइते रहैत छलैक जाहिसँ ओहिठाम चारूकात असंतोष पसरल छल। इएह कारण छल जे खण्ड सन सुयोग्य महामंत्री विदेह छोड़िकेँ वैशाली चलि गेल छलाह आ ओहिठाम सम्मानित भेल छलाह।

बुद्धघोषक अनुसारे जनक वंशक शासनक अंत भेला उपरांत लिच्छवी लोकनि ओकर उत्तराधिकारी भेलाह परञ्च एहि प्रश्नकेँ लऽ कए विद्वानक बीच अखनो मतभेद बनल अछि। पौराणिक आधारपर कहल जाइये जे वैशालीमे इक्ष्वाकु वंशक अंत भेलापर वैशाली मिथिलामे मिलगेल परञ्च अहुपर विद्वान लोकनि एकमत नहि छथि।

विदेह वृज्जीगणराज्यक (जाहिमे आठ गणराज्य सम्मिलित छल) एक प्रमुख सदस्यक रूपमे छल। संघक रूपमे पतञ्जलि विदेहक वर्णन केने छथि– **"संघान्माभूत् पंचालानाम पत्यम् विदेहा नामपत्यमिति"**। विदेह आ वैशालीमे इ.पू. ६ठम शताब्दी गणराज्य छल से मानल जाइत अछि। कराल जनकक बाद संभवतः मिथिलामे गणराज्यक स्थापना भेला उत्तरो ओहिठाम शासककेँ राजा कहल जाइत होन्हि से संभव। उवासगद साओ (५म शताब्दीक)मे मिथिलाक वर्णन अछि। १२म शताब्दीक **अभिधानप्पदीपिका**मे २४ प्रसिद्ध नगरक नाममे मिथिला आ वैशालीक नाम अछि। जैन आ बौद्ध साहित्यमे मिथिलाकेँ गणराज्यक रूपमे वर्णन कैल गेल छैक आ ओहिसँ ओकर प्रसिद्धि छलैक से स्पष्ट अछि। वैशाली समेत जे दशटा गणराज्यक उल्लेख पालि साहित्यमे अछि ताहिमे मिथिलोक स्थान छल जाहिसँ बुझना जाइत अछि जे कराल जनकक पतनक बाद वैशाली समेत विदेहमे गणराज्यक स्थापना भऽ गेल। बुद्धक समयमे विदेहक गणना गणराज्यक रूपमे कैल गेल अछि। अजातशत्रुक आक्रमणसँ वैशालीक अंत भेल आ महापद्मनन्दक आक्रमणसँ मिथिलाक। वैशालीक पतनक बादो लगभग २५० वर्ष धरि मिथिला अपनाकेँ मगध साम्राज्यवादक चाङुरसँ मुक्त रखबामे सफल रहल छल। नंदवंशक बाद भारतमे मौर्यक तत्वावधानमे एकटा अखिल भारतीय साम्राज्यक स्थापना भेल आ मिथिला ओकरे अंग भऽ गेल।

अध्याय–४

# वैशालीक इतिहास

i) **भौगोलिक विश्लेषण:-** अति प्राचीन कालमे भौगोलिक क्षेत्रक हिसाबे वैशाली विदेह राज्यक अंतर्गत छल, आ विदेह जकाँ वैशालीमे सेहो पहिने राजतंत्र छल आ तत्पश्चात् गणतंत्र भेल। वैशाली गण्डकसँ पूर्व अछि आ एकर आर्यीकरण विदेहक संग भेल छल। प्राचीन उत्तर बिहारक वैशाली आ विदेह दुनू महत्वपूर्ण राज्य छल आ दुनूक अपन अलग–अलग ऐतिहासिक महत्व छैक। अति प्राचीन विदेहक अंग होइतहुँ, वैशालीक सेहो अपन एकटा निर्धारित क्षेत्र छैक। प्राचीन वैशालीक अंतर्गत चम्पारण आ मुजफ्फरपुर जिलाक विशेष भाग छल आ विदेहक अंतर्गत छल दरभंगा, कटिहार, समस्तीपुर, मधुबनी, सहरसा, पूर्णियाँ, अररिया, बेगूसराय, मूँगेरक उत्तरी भाग, भागलपुरक उत्तरी भाग आ नेपालक तराइ सेहो विदेह वैशालीक अंश छल।

विदेह शब्दक अर्थ ताहि दिनमे वेस व्यापक छल–विदेह एकटा जातिक नामक संकेत सेहो दैत छल। विदेह एकटा भौगोलिक सीमाक प्रतीक छल एवँ विदेह एकटा राज्य छल जकरा अंतर्गत ताहि दिनमे गण्डकीक पूवसँ महानंदा धरिक समस्त क्षेत्र सम्मिलित छल। आधुनिक उत्तर बिहारक द्योतक छल विदेह। इएह कारण थिक जे एहि व्यापकताक कारणे महावीरक जन्मस्थान कुण्डग्रामकेँ विदेहमे मानल गेल अछि, अजातशत्रुकेँ वैदेही पुत्र कहल गेल अछि। विदेहक व्यापकताक प्रभाव पाछाँ धरि बनल रहल कारण हम देखैत छी जे **'ललित विस्तर'**मे विदेहक संगहि पूर्व विदेहक वर्णन सेहो अछि।

**शक्ति संगम तंत्र**मे जे मिथिला क्षेत्रक वर्णन भेल अछि ताहिमे कहल गेल अछि गण्डकीक तीरसँ चम्पाक जंगल धरिक जे क्षेत्र अछि उएह क्षेत्र विदेह अथवा तैरभुक्ति कहबैत अछि। चम्पाक जंगलसँ एहिठाम बहुत गोटए चम्पारणक उत्तरी जंगली भागक अर्थ लैत छथि मुदा जखन हम एकर सीमाक विश्लेषण आन ठाम देखैत छी तखन हमरा इ बुझि पड़इयै जे इ विश्लेषण समीचीन नहि अछि कारण विदेहक सीमा एतबेटा नहि भऽ सकइयै। चम्पाक जंगल धरिक अर्थ भेल ओ क्षेत्र जे चम्पाक उत्तरी भागमे छल आ जकरा बौद्ध साहित्यमे अंगुतराप कहल गेल अछि। चम्पा आ विदेहक सीमा कोनो एक खास बिन्दु पर मिलैत छल एहिमे संदेह नहि।

पुरूषोत्तम देव अपन **त्रिकाण्डशेष**मे एवं वामन अपन **लिंगावुशासन**मे विदेह आ तीरभुक्तिकेँ पर्यायवाची शब्द मानने छथि। बारहम शताब्दीक एकटा शिलालेखमे वैशालीकेँ तीरभुक्तिक अंतर्गत बताओल गेल अछि। जीनप्रभासूरी अपन **विविध तीर्थकल्प**मे सेहो किछु एहि प्रकारक संकेत दैत तीरभुक्तिक विवरण देने छथि। **शक्ति संगम तंत्र**मे सेहो विदेह आ तीरभुक्तिकेँ पर्यायवाची शब्द मानल गेल अछि। बौद्ध लोकनि विदेह आ वैशालीकेँ दू अलग–अलग राज्यक रूपमे वर्णन कएने छथि। बौद्ध साहित्यमे वैशाली आ वृज्जिकेँ पर्यायवाची मानल गेल अछि।

मूँगेर आ भागलपुरक उत्तरी भागकेँ बौद्ध साहित्यमे अंगुतराप कहल गेल अछि जकर सीमा कोनो समयमे लिच्छवीक राज्यसँ मिलैत छल। अंगुतरापक सीमा

कमला–कोशीक बीच छल। प्राचीन अंगक उत्तरी सीमा छल कोशी आ पश्चिममे एकर क्षेत्र बेगूसरायक गण्डकी धरि पसरल छल। वैशालीक लिच्छवी लोकनिक अधिकार कमला नदी धरि बढ़ि गेल छलन्हि आ तकर बाद मिथिलाक राज्य शुरू होइत छल जाहिमे ताहि दिनक अंगुतराप आ पुण्ड्रवर्धनभुक्तिक किछु अंश समाहित छल। तैं हमरा बुझने **शक्ति संगम तंत्र**मे जे चम्पाक जंगल धरिक गप्प अछि तकरासँ चम्पारण नहि बुझि अंगुतराप एवँ ओकर ओहि क्षेत्रक बोध होइछ जाहिठाम ताहिठाम खाली जंगले–जंगल छल आ जमीन सेहो दलदले छल। गण्डकीसँ अंगक जंगलक सीमा धरि विदेहक राज्य पसरल होएत इ वेसी तर्कसंगत बुझि पड़इयै आ तैं अखनो इ परिभाषा एकटा विचारणीय विषय बनल अछि।

ii) **ऐतिहासिक विवरण (राजतंत्र धरि)**:- विदेहक प्राचीन इतिहास जकाँ वैशालीक प्राचीन इतिहास ओझरैले अछि। यद्यपि पौराणिक स्त्रोतसँ वैशालीक विवरण भेटइत अछि परञ्च वैदिक साहित्यमे वैशालीक कोनो श्रृंखलाबद्ध विवरण उपस्थित नहि अछि। यत्र–तत्र एहन एकाधटा नाम वैदिक साहित्य अथवा वेदमे भेटइत अछि जकर सम्पर्क वैशालीसँ रहल हो परञ्च एहि आधारपर वैशालीक कोनो इतिहास निर्माण करब असंभव। **अथर्ववेद**मे तक्षक वैशालेयक उल्लेख अछि आ हुनका विशालान्मज विराजक पुत्र कहल गेल छन्हि। **पंचविंश ब्राह्मण**मे हुनके (वैशालेय)कैँ एकटा सर्पयज्ञक पुरोहितक रूपमे वर्णन कैल गेल अछि।

पुराणमे वैशालीक इतिहासक सम्बन्धमे बहुत रास सामग्री अछि परंतु ओहिमे ततेक नञि विरोधाभास अछि जे ओहिमे सँ कोनो ठोस सत्यक निर्माण करब एकटा कठिन कार्य। मार्कण्डेपुराणमे मनु आ हुनक पुत्र प्रियव्रत तथा उत्तानपादक कथा अछि। प्रियव्रतक संतानक घनिष्ठ सम्बन्ध वैशाली एवँ हिमालय क्षेत्रसँ छलन्हि। वृद्धावस्थामे अग्निध्र (प्रियव्रतक पुत्र)गण्डकीपर अवस्थित शालग्राम (हिमालय) गेल छलाह। हुनक पुत्र नाभि तपस्याक हेतु वैशाली आएल छलाह। ताहि दिनमे वैशाली विशालाक नामसँ प्रसिद्ध छल। नाभिक पुत्र छलाह ऋषभ (संभवतः प्रथम जैन तीर्थकर इएह छलाह) आ हुनक पुत्र भेला भरत जिनका नामपर एहि देशक नाम अछि। भारतवर्षक पूर्वक नाम छल हिमवर्ष। भरत अपन राज्य सुमतिकैँ दए तपस्यामे चलि गेलाह। **मार्कण्डे, भागवत्, विष्णु** आदि **पुराण**मे वैशालीक इतिहास जे विवरण अवइयै ताहिमे तत्तेक नञि संशयात्मक बात सभ अछि जे हमरा लोकनि कोनो एकटा निर्णयात्मक सत्यपर नहि पहुँचि सकैत छी तथापि ओहि स्त्रोतक आधारपर एकटा वैज्ञानिक इतिहासक रूपरेखा ठाढ़ करबाक प्रयास कैल गेल अछि।

गजेन्द्र मोक्षक प्रसंग सेहो वैशालीक इतिहासक प्रसंगमे अवइयै। गज–ग्राहक संघर्ष वैशालीक गण्डकी क्षेत्रमे भेल छल आ कहल गेल अछि जे विष्णु गजकैँ ग्राहक चाङ्गुरसँ बचाकैँ एहि क्षेत्रकैँ एकटा तीर्थक स्थान बना देलन्हि। इ घटना गंगा–गण्डकक संगमपर भेल छ्ल आ तैं एकरा गजेन्द्र मोक्ष तीर्थ, हरिहर क्षेत्र, हरि क्षेत्र कहल गेल अछि आ **पुराण**मे एहि स्थानकैँ विशाला क्षेत्रक अधीन राखल गेल अछि। दितिक तपस्याक क्षेत्र सेहो वैशाली छल। दितिक पुत्र मरूत लोकनि जे समुद्रमंथनक कार्य कएने छलाह ताहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे अति प्राचीन कालहिसँ वैशालीक लोक समुद्रसँ परिचित छलाह। हिन्दू, जैन आ बौद्ध धर्मक दृष्टिये सेहो वैशालीक इतिहास महत्वपूर्ण मानल जाइयै।

विदेह–वैशालीक प्राक्–इतिहासक सम्बन्धमे हमरा लोकनिक ज्ञान एकदम स्वल्पोसँ कम अछि तथापि जे किछु हम जानतो छी से रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रंथक आधारपर। ओहु सभ साधनमे सभमे अलग–अलग विवरण अछि। विदेहक आर्यीकरणसँ वैशालीक इतिहास प्रारंभ होइत अछि आ प्राचीन ग्रंथक आधार इ बुझना जाइत अछि जे मनुवैवस्वतकेँ ९टा पुत्र छलथिन्ह आ एकटा पुत्री जिनक नाम छलन्हि इला। नओ पुत्रक नाम अछि–इक्ष्वाकु, नाभाग (नृग), धृष्ट, शरयाति, नरिष्यंत, प्रांशु, नाभानेदिष्ठ, कारूष आ पृषधर। मनु भारतकेँ १० भागमे बटलन्हि। एहि ९ओ पुत्रमे नाभानेदिष्ठ वैशाली राज्यक संस्थापक भेलाह। हिनका वंशमे ३४टा शासक भेलथिन्ह जाहिमे सबसँ अंतिम छलाह सुमति। सुमति अयोध्याक दशरथ आ विदेहक सीरध्वज जनकक समकालीन छलाह।

नाभानेदिष्ठक सम्बन्धमे सेहो प्राचीन साहित्यमे एकमत नहि छैक। रामायण महाभारत एहि नामपर गुम्म छथि। एहन बुझि पड़इयै जे पाछाँ चलिकेँ लोग एहि नामकेँ बिसैर गेल छल। राजा विशालकेँ वैशालीक संस्थापक मानल गेल छन्हि। रामायणमे वैशालीक राजा सुमतिक शासन क्षेत्र सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे हुनक शासन गण्डकसँ पूर्व आ विदेहसँ दक्षिण पश्चिम दिसि छल। एहिसँ स्पष्ट अछि जे नाभानेदिष्ठ जाहि राज्यक स्थापना वैशालीमे केने छलाह तकर सीमा ताहि दिनमे बड़ड छोट छल। हुनक पुत्र भेला नाभाग, जे वैश्य कन्यासँ विवाह केलाक कारणे, गद्दीसँ वंचित रहलाह। कृषि आ व्यवसायमे ओ वेसी रत रहए लगलाह आ हुनका भाइ सभसँ सेहो नहि पटलाक कारणे बरोबरि टंट–घंट लगले रहैत छलन्हि। नाभाग अपनि पत्नी प्रेमक चलते राजगद्दीकेँ त्यागलन्हि आ क्षत्रियत्व छोड़ि वैश्यत्व ग्रहण केलन्हि। हुनका तीनटा पुत्र छलथिन्ह जाहिमे एकटाक नाम भालचंद छलन्हि आ दू भाइ ब्राह्मणत्व प्राप्त कएने छलाह। नाभागक अथक परिश्रमक कारणे वैशाली क्षेत्रमे कृषि आ व्यवसायकेँ प्रोत्साहन भेटलैक आ अति प्राचीन कालहिसँ वैशाली कृषि एवँ उद्योगक प्रधान केन्द्र बनि गेल। एक विद्वानक तँ इहो मत छन्हि जे नाभागक वैश्यत्व ग्रहण करब वैशालीक नामक उत्पत्तिसँ सम्बन्ध रखइयै। नगरक हिसाबें नाभाग अपना क्षेत्रकेँ वैश्य लोकनिक हेतु सभसँ प्रमुख नगर बनैलन्हि आ उएह नगर बादमे **'वास्यु लोकनिक नगर'** अथवा वैशालीक नामसँ प्रसिद्ध भेल। विदेह ब्रह्मविद्या आ आर्य संस्कृतिक केन्द्र बनल आ वैशाली कृषि, उद्योग, वेद–विरोधी धर्म आ कुलीनतंत्र शासन पद्धतिक केन्द्र। ओहि युगमे मात्र पत्नीक हेतु राजगद्दीक त्याग करब एवँ ब्राह्मण व्यवस्थाक परित्याग कए वैश्यत्व ग्रहण करब एक महानक्रांतिकारी कदम छल। एहि विवाहक एकटा दोसरो असर पड़ल सामाजिक व्यवस्थापर जकरा चलते वैशालीमे बादक राजा सबकेँ **"आयोगव"** कहल गेल अछि। एहिसँ एक एहेन जातिक बोध होइछ जकर माय वैश्य आ पिता शूद्र रहल हो। **शतपथ ब्राह्मण**मे राजा मरुत्तकेँ **आयोगव** कहल गेल अछि। नाभागक वैश्य पत्नीक नाम सुप्रभा छलन्हि।

सुप्रभासँ उत्पन्न पुत्रक नाम छल भलंदन। ओ राजर्षि निप (काम्पिल्त)सँ सहायता लय अपन पैत्रिक राज्यकेँ प्राप्त करबाक प्रयत्न केलन्हि आ एहि क्रम ओ सफल भेलाह आ अपन सर संबन्धीकेँ पराजित कए ओ राज्य प्राप्त केलन्हि आ राजमुकुट अपना पिताक देलन्हि मुदा पिता ओ ग्रहण करबासँ अस्वीकार केलथिन्ह। तखन भलंदन स्वयं शासक भऽ गेलाह। न्यायपूर्वक ढंगसँ ओ शासन केलन्हि आ अपन कर्तव्य पथपर चलैत रहलाह। हुनका वत्सप्रि नामक एकटा योग्य पुत्र छलथिन्ह। वत्सप्रिक पत्नीक नाम छल मुदावती (सुनंदा)। अपना पिताक बाद वत्सप्रि शासक

भेलाह। हुनक दोसर नाम अजवाहन सेहो छलन्हि। ओ मालवाक राजाक संग वैवाहिक सम्बन्धक कारणें ओ एक पुश्तधरि मालवापर सेहो शासन केलन्हि। हुनक शासन काल शांतिप्रिय छल आ ओ अपन उदारता एवँ महानताक हेतु प्रसिद्ध छलाह। सुनन्दा (मुदावती)सँ १२टा पुत्र छलथिन्ह–प्रांशु, प्रचीर, सूर, सुचक्र, विक्रम, क्रम, बालीन, बलाक, चण्ड, प्रचण्ड, सुविक्रम, स्वरूप। पौराणिक स्रोतसँ इहो ज्ञात होइछ जे वेदक तीनटा वैश्य मंत्रकर्त्ता लोकनि वैशालियेक शासक छलाह जनिक नाम छलैन भलंदन, वत्सप्रि (वाशव) आ संकील।

प्रांशु अपन पिताक पछाति वैशालीक शासक भेलाह। ओ एकटा सशक्त शासक छलाह। ओकर बाद प्रजानि, (प्रजापति, प्रमति) हुनक पुत्र, शासक भेलाह। एहि समयमे वैशाली राज्यमे किछु आपसी संघर्ष शुरू भेल। प्रजानिक पाँच पुत्रमे खनित्र महत्वपूर्ण भेलाह आ अपन पिताक बाद शासक सेहो। ओ बहुत वीर आ बुधियार छलाह। अपना प्रजाक हेतु ओ सभ किछु करबाक लेल प्रस्तुत रहैत छलाह। अपना भाइ सबहिक प्रति ओ दयावान आ विचारवान छलाह। ओ अपन सभ भाइकेँ अपना अधीनमे छोट–छोट राजा बना देने छलाह। अंतमे हुनके एकटा छोट भाइ हुनका विरोधमे विद्रोह कए राज्यक शांतिकेँ नष्ट कए देल। खनित्रक पछाति हुनक पुत्र क्षुप शासक भेलाह। हुनका चाक्षुश सेहो कहल जाइत छन्हि। ओ ब्राह्मण लोकनिकेँ प्रचुर दान दए यशक भागी बनलाह। हुनका बाद हुनक पुत्र **विंश** राजा भेलाह। हुनक दोसर नाम वीर छल। तीर चलेबामे ओ बड़ड निपुण छलाह आ संगहि ओ एक शक्तिशाली शासक सेहो छलाह। हुनका बाद हुनक पुत्र **विविंश** शासक भेलाह। हुनका समयमे जनसंख्याक वृद्धिक कारण अन्याय बढ़ि गेल छल। स्थितिक सुधारक हेतु ओ कैक प्रकारक यज्ञ सेहो केलन्हि। **विविंश**केँ १५टा पुत्र छलथिन्ह जाहिमे सबसँ पैघक नाम छलन्हि **खनीनेत्र**। हुनका पुराणमे धार्मिक शासक कहल गेल छन्हि। ओ ब्राह्मणकेँ उदारतापूर्वक दान दैत छलाह। हुनका पुत्र नहि छलन्हि तँ पुत्र प्राप्तिक हेतु ओ पशुयज्ञक त्याग केलन्हि। गोमतीक तटपर पापहारिणी यज्ञक आयोजन केलन्हि। एकर फलस्वरूप हुनका एकटा पुत्र भेलन्हि जकर नाम **बलाश्व** छल। वैशालीक इक्ष्वाकु–मानव क्षेत्रमे **बलाश्व**क राज्यारोहणसँ ऐतिहासिक स्तरपर आर्यक तत्वक विस्तार भेल। एहि राजाकेँ **बलाश्व–करनधम** सेहो कहल जाइत अछि। खनीनेत्र आ करनधमक बीचमे एकटा विभूति राजाक उल्लेख सेहो भेटइत अछि।

करनधम वैशालीक एकटा महत्वपूर्ण शासक छलाह। ओ बहुत रास क्षेत्रकेँ जीतलन्हि आ अपन राज्यक अंतर्गत केलन्हि। नव–नव प्रकारक **कर** पराजित राज्यपर लगौलन्हि। वीरा नामक कन्यासँ स्वयंवरक माध्यमे हुनक विवाह भेल छलन्हि आ ओहिसँ उत्पन्न पुत्रक नाम छल **अविक्षित**। अविक्षित एतेक निपुण एवँ योग्य छलाह जे सात ठाम स्वयंवरमे हुनके जयमाल पड़लन्हि। जयमाल पहिरौनिहार कन्याक नाम एवँ प्रकार अछि–

_____ i) हेमधर्मक पुत्री **वरा**
_____ ii) सुदेवक पुत्री **गौरी** (काशी)
_____ iii) बालिनक पुत्री **सुभद्रा** (अंग–वंग)
_____ iv) वीरक पुत्री **लीलावती** (अविक्षितक मायक बहिन)
_____ v) वीरभद्रक पुत्री **अनिभा** (ऐजन)

_____ vi) भीमक पुत्री **मान्यवती** (विदर्भ)

_____ vii.) दम्भक पुत्री **कुमुदवती** (मालवा)

उपरोक्त सूची एहिबातक द्योतक अछि जे वैशालीक सम्पर्क ताहि दिनमे सभ प्रसिद्ध राज्य सभसँ छल आ एहिसँ वैशाली राज्यक महत्वक संकेत भेटइत अछि। अंग, वंग, विदर्भ, मालवा आदि राज्यक संग सम्पर्क तत्कालीन अंतर राज्य सम्बन्धक प्रतीक मानल जा सकइयै। ताहि दिन हैहेय राज्यक शासक लोकनि विदेह एवँ वैशालीपर आक्रमणक सूरसारमे लागल रहैत छलाह परञ्च हुनका लोकनिकेँ एहिमे कोनो सफलता नहि भेटलन्हि कारण करनधम, अविक्षित, एवँ मरुत्त सन्–सन् शासक वैशालीक राजगद्दीपर छलाह। करनधम अपना युगक एकटा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व छलाह जे वैशाली एवँ समस्त उत्तर भारतक इतिहासपर एकटा अमिट छाप छोड़ने छथि। महाभारतमे जे पाँचटा तीर्थक वर्णन अछि ताहिमे **कारन्धमतीर्थ**क महत्वपूर्ण स्थान अछि। आन तीर्थक नाम अछि **अगस्त्य**, **सौभद्र**, **पौलोम** एवँ **भारद्वाजीय**। **महाभारत**मे करन्धमकेँ एकटा प्राचीन धर्मात्मा राजाक रूपमे वर्णन कैल गेल छैक। **स्कन्धपुराण**मे करन्धमकेँ राजर्षि कहल गेल छैक। करन्धम एक महान शासक छलाह आ अपना राज्यक सभ विद्रोही तत्वकेँ दबाकेँ एक सशक्त राज्यक स्थापना कएने छलाह आ बहुत दिन धरि तक शासन कएने छलाह। वैशालीक साम्राज्यवादी परंपराक जन्मदाता करन्धमकेँ मानल जाइत अछि। हुनक पुरोहित छलथिन्ह अंगीरस। हुनके शासन कालसँ वैशालीक राजदरबारमे अंगीरस पुरोहित लोकनिक प्रभाव बढ़लन्हि।

करन्धमक बाद हुनक पुत्र अविक्षित शासक भेला। ओ हैहेय आक्रमणकेँ रोकबामे समर्थ भेलाह। विदिशाक संग सेहो हुनका किछु खटपट भेल छलन्हि। तकर बाद हुनक पुत्र मरुत्त शासक भेला। पुराणमे मरुत्तकेँ चक्रवर्त्तीक संज्ञा देल गेल छैक। महाभारतमे मरुत्तकेँ भारतक १६ राजामे सँ एक प्रमुख राजा मानल गेल छैक। मरुत्तक तुलना विष्णु, वासव आ प्रजापतिसँ सेहो कैल गेल छैक। **महाभारत**मे मरुत्तक हेतु सम्राट शब्दक व्यवहार भेल छैक। एक किंवदंती छैक जे न्यायक तरूआरि मुचुकुन्दसँ लकए मरुत्त रैवतकेँ देलथिन्ह आ एहिसँ इ ज्ञात होइत अछि जे ओ एक न्याय–प्रिय शासक छलाह। हुनक अंगिरस पुरोहितक नाम छल सम्वर्त। ओ बड़ड पैघ–पैघ यज्ञ कएने छलाह आ धर्मप्रिय शासकमे हुनक नाम अग्रगण्य छन्हि। मरुत्त अपन पुत्रीक विवाह संवर्तक संग केलन्हि। हिनका शासन कालमे **'एन्द्रमहाभिषेक'**क आयोजनक उल्लेख भेटइयै आ अश्वमेध यज्ञक श्रेय हुनका देल जाइत छन्हि। विभिन्न स्थानपर पैघ–पैघ यज्ञ करबाक आ करेबाक श्रेय सेहो हिनका देल जाइत छन्हि। स्कन्द पुराणक अनुसार गण्डकी उपत्यकाक राजा मरुत्त यज्ञ करबाक हेतु एक बेर जय आ विजयकेँ आमंत्रित कएने छलाह आ हुनका लोकनिकेँ प्रचूर दक्षिणा देने छलाह। कोनो अघटित घटनाक चलते हिनका दुनू गोटएकेँ श्राप पड़लन्हि आ इएह दुनू गोटए गज आ ग्राहमे एहि क्षेत्रमे परिवर्त्तित भऽ गेलाह आ बादमे इएह स्थान हरिहर क्षेत्रक नामसँ प्रसिद्ध भेल। मरुत्त नाग आ हैहेय लोकनिकेँ सेहो पराजित केलन्हि। मरुत्तकेँ सात टा पत्नी छलथिन्ह–

_____ i.) विदर्भ राजक पुत्री **प्रभावती**

_____ ii.) सौवी राजक पुत्री–**सुवीग**

_____ iii.) मागधकेतुवीर्यक पुत्री–**सुकेशी** (अंग–वंगक आनव वंशक)

_____ iv.) मद्रराजासिन्धुवीर्यक पुत्री–**केकयी**
_____ v.) केकयी राजक पुत्री–**सैरन्ध्री**
_____ vi.) सिन्धुक आनवराजक पुत्री–**वपुषमती**
_____ vii.) चेदी राज्यक पुत्री–**सुशोभना**

एहि वैवाहिक सम्बन्धसँ वैशालीक स्थिति सुदृढ़ छल आ भारतक विभिन्न राज्यक संग एकर सम्बन्ध सेहो नीक छल। मरुत्तक अठारह पुत्रमे ज्येष्ठ पुत्रक नाम छल **नरिष्यंत**।

नरिष्यंत एक प्रमुख शासक छलाह आ उहो वैवाहिक सम्बन्धक माध्यमे अपन ताकत बढ़ौलन्हि। ओकर बाद हुनक पुत्र **दम** शासक भेलाह। दमक बाद **राज्यवर्द्धन** आ ओ दक्षिणापथसँ अपन वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित केलन्हि। एकर बाद पुनः वैशालीक इतिहास अंधकारपूर्ण अछि आ तृणबिन्दुक राज्यारोहणसँ पुनः हमरा लोकनि एकटा लीखपर पहुँचैत छी।

तृणबिन्दुक सम्बन्धमे कोनो विशेष जानकारी हमरा लोकनिकेँ नहि अछि। संभव जे ओ कोनो स्थानीय शासक रहल होथि आ राजनैतिक अस्थायित्वक स्थितिसँ लाभ उठा कए एकटा सशक्त राज्यक स्थापनामे समर्थ भेल होथि। पुराण सभमे तृणबिन्दु महिपति आ राजर्षि दुनू कहल गेल छैक। हिनक पत्नीक नाम छल अलभवुषा आ हिनका लोकनिककेँ तीनटा पुत्र छलैन्ह–विशाल, शून्यबंधु आ धूम्रकेतु। विशाल वैशाली नगरक संस्थापक मानल जाइत छथि। हिनक पुत्री इलाविलाक विवाह पुलस्त्य (दक्षिणक राक्षसवंश)सँ भेल छल। एवँ प्रकारे एहि बेर क्षत्रिय कन्याक विवाह ब्राह्मणसँ भेल। बुझि पड़इयै जे वैशालीक शासक लोकनि विवाहक मामलामे उदार छलाह। एहिसँ उत्पन्न पुत्र विश्रवस मुनिक आश्रम नर्मदा तटपर छल। दक्षिणक **पौलस्त्य** वंशक उत्पत्ति वैशालीक राजवंशसँ भेल छल।

तृणबिन्दुक पुत्र विशाल प्राचीन भारतीय इतिहासक प्रसिद्ध मील स्तंभ मानल जाइत छथि। ओ अपना नामपर अपन राजधानीक नाम विशाला रखलन्हि जे कालक्रमेण वैशालीक नामसँ प्रसिद्ध भेल। **मार्कण्डेपुराण**मे सेहो एकटा **विशालग्राम**क उल्लेख भेटइत अछि आ **अथर्ववेद**मे वर्णित तक्षक वैशालेयक उल्लेख तँ हम पूर्वहिं कऽ चुकल छी। राजा विशालकेँ विशालाक प्रभु, आ विशालापुरीक संस्थापकक रूप से बताओल गेल अछि। ओहि समयमे गया आ वैशालीक बीच घनिष्ठ सम्पर्क छल। राजा विशाल **पितृपूजा** आ **पिण्डदान**क समर्थक छलाह आ ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ हुनका पिण्डदानक प्रवर्त्तको कहल जा सकइयै। **ब्रह्माण्डपुराण**मे राजा विशालकेँ धर्मात्मा पुरूष कहल गेल अछि। **मार्कण्डेपुराण**मे विशाल नामक एकटा ब्राह्मण आ हुनक पुत्र **वैशाली**क उल्लेख भेटइत अछि। वैशालीमे एकटा महावन छल जे गौतमबुद्धक समय धरि विराजमान छल। विशाल बहादुरीक द्योतक सेहो बुझल जाइत अछि। आ संभवतः अहु अर्थमे **'वैशाली'** शब्दक उद्भव भेल हो। सम्प्रति **'राजा विशालक गढ'** प्राचीन वैशालीक खण्डहरक रूपमे विराजमान अछि जकर उत्खननसँ ताहि दिनक बहुत रास सामग्री उपलब्ध भेल अछि। विशालक बाद हेमचन्द्र शासक भेलाह, तखन क्रमिक रूपें सुचन्द्र, धूम्राश्व, श्रृंजय, सहदेव, कृशाश्व, सोमदत्त, जनमेजय, आ सुमति। वैशालीक इतिहासमे सुमतिक शासन बड़ड महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। अपनावंशक ओ सभसँ अंतिम राजा मानल गेल छथि। विश्वामित्र जखन राम लक्ष्मणक संग वैशाली पहुँचल छलाह तखन एहिठाम सुमति शासन करैत छलाह।

वैशालीकेँ **'उत्तमपुरी'** कहल गेल अछि। देखबामे ओ एतेक सुन्दर एवँ स्वर्गीय छल जे सामान्य लोगकेँ बुझि पड़इत होइक जे जेना इ स्वर्गे हो। सुमति आदरपूर्वक विश्वामित्र, राम एवँ लक्ष्मणक ठहरबाक प्रबंध केलथिन्ह आ यथायोग्य स्वागत सेहो। ओहिठामसँ मिथिला पहुँचबाक बीचमे ओ लोकनि गौतमाश्रम सेहो रूकल छलाह। सुमतिक बाद वैशालीक इतिहास पुनः अंधकारपूर्ण भऽ गेल आ एकर जे स्थिति रहल तकर कोनो ज्ञान हमरा लोकनिकेँ नहि अछि। राजतंत्रक अंत आ कुलीनतंत्रक प्रगति जे कोना एहि क्षेत्रमे भेल तकरा संबन्धमे अखनो विशेष बात संदिग्ध एवँ अनिश्चिते अछि।

**iii) सुमतिक पछाति आ वज्जीकुलीनतंत्रक स्थापना धरिक इतिहास:-** सुमतिक शासनक अंत भेला पर लगभग ६०० वर्षक पछाति वैशालीमे कुलीनतंत्रीय शासनक विकास भेल आ क्रमेण वृज्जीसंघ सेहो। एहि ६०० वर्षकेँ वैशालीक इतिहासमे अन्धकार युग कहल गेल अछि। साहित्य एवँ पौराणिक परंपरामे सुमतिक बाद कोनो राजाक नामक संकेत नहि अछि। महाभारत युद्धक समयमे विदेह, कोशल एवँ मल्लराष्ट्रक विवरण तँ भेटइत अछि परञ्च वैशालीक सम्बन्धमे कोनो सूचना उपलब्ध नहि होइछ। एहेन बुझि पड़इयै जे सुमतिक अवसानक पछाति विदेहक पराक्रम बढ़ि गेल छल आ वैशालीक विशेष भागपर संभवतः विदेहक आधिपत्य भऽ गेल छल। उत्तर बिहारक विदेह आ मल्लक उल्लेख महाभारत युद्धक प्रसंगमे अबैत अछि तँ संभव जे वैशालीक विशेष भागपर विदेहक आधिपत्य (वैशालीपर विदेह राज्यक आधिपत्य) भऽ गेल हो आ किछु अंशपर मल्ल लोकनिक। वैशालीक स्वतंत्र सत्ता समाप्त रहलाक कारणे वैशालीक स्वतंत्र उल्लेख नहि भेटल स्वाभाविके बुझि पड़इत अछि। किछु विद्वानक मत छन्हि जे राजा सुमतिक पछाति वैशालीपर किछु दिनक हेतु कोशलक आधिपत्य भऽ गेल छल। कोशलक कमजोर भेलापर विदेह राज्य ओहि परिस्थितिसँ लाभ उठाकेँ वैशालीकेँ अपना अधीन कऽ लेलन्हि। ताहि दिनमे रामक सार भानुमंत मिथिलामे शासक छलाह। वैशालीक प्रभुत्व घटि चुकल छल। विदेहक आधिपत्य भेला संता वैशालीक अपन जे स्वतंत्र संबन्ध यादव अथवा पाण्डव लोकनिसँ रहल हेतन्हि सेहो गौण भऽ गेल हेतन्हि आ इ लोकनि अपन अधीनस्थ स्थितिक कारणें गुम–सुम भए अपन समय कटइत हेताह। भऽ सकइयै जे विदेहक राजतंत्रक अंत भेने दुनू ठाम एक्के बेर कुलीनतंत्रीय गणतंत्रक स्थापना भेल हो।

सुमतिक पछाति मिथिलाक इतिहासक जे क्रम उपलब्ध अछि ताहि आधार पर इ उचित बुझना जाइत अछि जे मिथिला अपन साम्राज्यवादी प्रसारक क्रममे वैशालीकेँ पराजित कए अपना अधीन कऽ लेने होएत। साम्राज्यवादी प्रवृतिक प्रारंभ सीरध्वज जनक धरि जीवित छल आ ओ साँकास्य धरि अपन राज्यक सीमाक विस्तार कएने छलाह। महाभारत युद्धक पश्चात जे एकटा अनिश्चितताक स्थिति उत्पन्न भेल ताहिसँ लाभ उठाके जनकवंशक शासक गण, उग्रसेन, जनदेव, धर्मध्वज, तथा आयुस्थन, अपन साम्राज्यवादी परंपराकेँ आगाँ बढ़ौलन्हि आ करीब बारह पुस्त धरि एकरा जारी रखलन्हि। अयोध्याक राज्यक छिन्न–भिन्न भेल उत्तरो मिथिलाक राज्यक विस्तार होइते रहल। कोशल–काशीमे बरोबरि खटपट होइत रहल। वैशालीक वस्तुस्थितिक सम्बन्धमे कोनो ठोस ज्ञान हमरा लोकनिकेँ एहि समयमे नहि अछि।

महाभारतमे प्राचीन भारतीय गणतंत्र एवँ विभिन्न जातिक विवरण भेटइत अछि परञ्च ओहु सूचीमे वैशाली अथवा ओहिठामक गणतंत्रक कोनो उल्लेख नहि अछि।

एकमात्र उल्लेख जे वैशालीक सम्बन्धमे अछि से विशालाक पुत्री भद्रा–वैशाली–जाहि राजकुमारीक हेतु द्वारावतीक वासुदेव, वेदिक शिशुपाल, एवँ कारूषक शासक लालायित रहैत छलाह। वैशालीमे नाग प्रधानक उल्लेख सेहो भेटइत अछि आ कहल जाइत अछि इ लोकनि अर्जुनक साहायता कएने छलथिन्ह। वैशालीमे नाग लोकनिक प्रधानताक विवरण दीर्घनिकाय आ महावंशमे सेहो भेटइत अछि। अथर्ववेदमे तक्षक वैशालेयक उल्लेख तँ हम पूर्वहिं कऽ चुकल छी। वैशालीसँ गुप्तकालीन अवशेषमे बहुत रास सर्प मूर्ति भेटल अछि जाहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे एहिक्षेत्र नाग लोकनिक प्रधानता रहल हेतन्हि।

कहल जाइत अछि जे भीमसेन अपन दिग्विजयक क्रममे गण्डक लोकनिकेँ पराजित कएने छलाह। अहुँठाम वैशाली नाम नहि दए गण्डक लोकनिक (गण्डकक समीप रहनिहार) नाम अछि आ अहुँसँ बुझि पड़इयै जे वैशालीक राजनैतिक महत्व ताहि दिन धरि समाप्त भऽ चुकल छल। ओहि दिग्विजयक क्रमक जे सूची अछि ताहिमे विदेहक पूर्वहि गण्डक लोकनिक विवरण अछि। भीमसेन उत्तरी कोशल, मल्ल, जलोद्भव, जनक वैदेह, शक, वर्बर, एवँ सातटा किरात प्रधानकेँ पराजित कएने छलाह आ शरमक, वर्मक आ गोपालकक्ष लोकनिकेँ सेहो। किछु गोटएक मत छन्हि जे इ तीनू वर्ग वैशालीक निवासी छलाह आ ओतहिक ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्यक द्योतक सेहो। मुदा ठोस साधनक अभावमे इ सब एकटा अंदाज मात्र थिक आ तैं एहिपर पूर्ण विश्वास करब असंभव। सुमतिक बादसँ लिच्छविक उत्थान धरिक इतिहास अंधकार पूर्ण अछि आ ओहिमे जे कोनो एकटा मान्य तथ्य अछियो तँ से मात्र इएह एहि ६०० वर्षक अभ्यंतरमे वैशाली कैक टुकड़ामे बटि गेल छल आ मुख्य रूपसँ विदेह एवँ मल्ल लोकनि एकर विशेष भागपर अपन आधिपत्य स्थापित कऽ लेने छल।

iv) **मिथिलामे गणराज्यक स्थापनाक इतिहास:-** अन्धकार युगसँ जखन वैशाली अवतीर्ण होइछ तखन हम देखैत छी जे वैशालीक नेतृत्वमे समस्त उत्तर बिहारमे एकटा कुलीनतंत्रीय गणराज्यक परंपराक स्थापना होइत अछि। इ.पू. छठी शताब्दी समस्त विश्वक इतिहासमे अपन एकटा महत्वपूर्ण स्थान रखइयै आ भारतमे तँ सहजहि इ युग एकटा युगांतकारी युग छल–राजनैतिक आ साँस्कृतिक दृष्टियें। मिथिलाक इतिहास दृष्टियें सेहो इ युग युगांतकारी कहल जा सकइयै। राजनीतिमे राजतंत्रक उत्तराधिकारी गणतंत्र भेल आ विचारक क्षेत्रमे वर्धमान महावीर आ गौतमबुद्ध एकटा नव कीर्तिमान स्थापित केलन्हि। वैशालीमे कहिया आ कोना गणराज्यक स्थापना भेल एकर ठीक–ठीक पता हमरा लोकनिकेँ नहि अछि मुदा एतवा हम सब जनैत छी जे महावीर आ बुद्धक समयमे वैशालीमे कुलीनतंत्रीय गणराज्यक प्रभुत्व छल। बुद्ध जाहि शब्दमे वैशालीक गणराज्यक प्रशंसा कएने छथि ताहिसँ बुझना जाइत अछि जे बुद्धसँ १००–२०० वर्ष पूर्वहिंसँ इ गणराज्य रहल हो। कराल जनकक अत्याचारी शासनसँ तंग आबि जखन प्रजा विद्रोह कए विदेह राज्यमे क्रांति मचौलक तखन ओहिठाम राजतंत्रक अवसान भेल आ गणराज्यक स्थापना। कहल जाइत अछि जे एहि घटनाक फलस्वरूपें समस्त उत्तर बिहारमे गणराज्यक परंपरा प्रारंभ भेल आ चूँकि वैशाली विदेहक अंग छल तै वैशालियोमे गणराज्यक स्थापना भेल। कराल जनक विदेहक जनक वंशक अंतिम राजा छलाह आ हुनक अवसानक पछातियेसँ मिथिलामे गणतंत्रक स्थापना मानल जाइत अछि। कहल जाइत अछि महाभारत युद्धक २२

पुस्त कऽ बाद बौद्ध धर्मक उत्थान भेल आ एहि बीचमे मिथिलामे गणतंत्रक स्थापना भेल होएत। पुराणमे एहि बीच २८ मैथिल राजाक उल्लेख भेटइत अछि।

बौद्ध धर्मक उत्थानक बहुत पूर्वहिं मिथिलामे गणतंत्रक स्थापना भेल होएत तकर संकेत हम उपर दए चुकल छी। पुराणमे २८ मैथिल राजाक विवरण अछि आ **जातक**मे मात्र १५ राजाक २८ मे सँ जे १५ घटा देल जाइक तें १३ राजा बचि जाइत छथि आ महाभारत युद्ध आ गणराज्यक स्थापनाक बीच संभवतः इएह १३ राजा मिथिलामे राज्य कएने होएताह। एहि १३मे अंतिम राजा **कराल जनक** रहल हेताह। **जातक**मे मखादेवकेँ मिथिलाक राजतंत्रक संस्थापक मानल गेल अछि। मिथिलामे **जातक** सूचीक अनुसार राजाक नाम एवँ प्रकारे अछि–

_____ सुरूचि प्रथम, सुरूचि द्वितीय, सुरूचि तृतीय, महापनाद
**(जातक नं-४८९+२६४)**

_____ महाजनक प्रथम, औफअरिट्ठजनक, पोलजनक, महाजनक द्वितीय, दिघावु
**(जातक नं–५३९ )**

_____ साधीन, नारद
**(जातक नं-४९४)**

_____ निमि, कलार
**(जातक नं–९, ४०८, ५४१)**

_____ मखादेव
**(जातक नं–९, ५४१)**

_____ अंगति
**(जातक नं-५४४)**

वर्द्धमान महावीरसँ २५० वर्ष पूर्व मिथिलामे निमि नामक एकटा शासक भेल छलाह जे जैन धर्म ग्रहण कएने छलाह। इ. पू. ७५० क आसपास मिथिलामे जनक वंशक अंतिम शासकक राज्यक अवसान भेल आ तकराबादे ओहिठाम गणतंत्रक स्थापना भेल। मिथिलामे गणराज्यक स्थापनाक संगहि वज्जी गणराज्यक स्थापना सेहो भेल। मिथिलामे राजतंत्रक पश्चात गणतंत्रक स्थापना एकटा महत्त्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि। कौटिल्यक अनुसार वज्जी (वृज्जी) आ लिच्छवी अलग–अलग छल। **महापरिनिवान्नसुत**मे बुद्ध वज्जी लोकनिक गुणगाथा कएने छथि आ पाणिनि सेहो वृज्जी लोकनिक विवरण देने छथि। वज्जी गणराज्यक संदर्भमे **अष्टकुलक**क उल्लेखसँ ज्ञात होइत अछि जे एहिमे आठकुलक लोग संगठित रहल होइत। तथापि एहिठाम लिच्छवियेक प्रधानता रहल होइत। लिच्छवी लोकनि वैशालीक रहनिहार छलाह आ अष्टकुलकक सर्वशक्तिमान सदस्य सेहो। **ज्ञात्रिक** नामक जाति सेहो वज्जी गणराज्यमे प्रसिद्ध छल। एहि कुलमे वर्धमान महावीरक जन्म भेल छलन्हि। **सूत्रकृतांग**मे **ज्ञात्रिक**क सम्पर्क उग्र, भोज, इक्ष्वाकु, कौरव, लिच्छवी आदिसँ बताओल गेल अछि। एहिसँ बुझि पड़इत अछि जे इ सब एक दोसराक समीपे रहैत छलाह आ उत्तर बिहारक विभिन्न क्षेत्रपर हिनका लोकनिक अधिकार छलन्हि। इ सब गणराज्यक सदस्य छलाह अथवा नहि से कहब असंभव। मिथिलामे जे वज्जी गणराज्य छल तकर दूटा प्रमुख महारथी रहैथ वैशाली आ विदेह।

**v) गणराज्यक सदस्य जाति:-** लिच्छवी वज्जी गणराज्यक सर्वश्रेष्ठ अंग रहैथ। बौद्ध साहित्यमे लिच्छवीक विशद विश्लेषण भेल अछि। हुनका लोकनिक प्रधान केन्द्र छल वैशाली आ राजनैतिक रूपे ओ वैशाली आ नेपालपर अपन अधिकार स्थापित कएने छलाह। चारिम शताब्दीमे जे गुप्त साम्राज्यक स्थापना मगधमे भेल छल ताहुमे लिच्छवी लोकनिक विशेष हाथ छलन्हि। लगभग ८०० वर्ष धरि बिहार आ नेपाल इतिहासकेँ लिच्छवी लोकनि प्रभावित कएने छलाह।

लिच्छवी जातिक उत्पत्तिक सम्बन्धमे अद्यतन विद्वान लोकनिक बीच मतभेद बनले अछि। लिच्छवि, निच्छवि, लिच्चिकि, लेच्छवी, लेच्छाइ, लेच्छकी, आदि शब्द लिच्छविक द्योतक मानल जाइत अछि। पालि साहित्य, सिक्का, अभिलेख, आ अन्यान्य साधन सबमे **लिच्छवी** शब्दक प्रयोग भेटइत अछि जाहिसँ इ ज्ञात होइछ जे इयैह शब्द इतिहासमे जनप्रिय भए स्वीकृत भऽ गेल। कौटिल्य, मेधातिथी, गोविन्दराज आदि लिच्छवी शब्दक व्यवहार कएने छथि।

बहुत रास विद्वानक कहब छैन्ह जे लिच्छवी लोकनि विदेशी छलाह–आ हुनक सम्बन्ध तिब्बत, कोलारियन, सिथियन, तथा फारससँ छलन्हि। किछु विद्वानक मत छैन्ह जे लिच्छवीक सम्बन्ध यूची जातिसँ छलन्हि। तिब्बती उत्पत्तिपर विशेष जोर देल जाइत अछि। लिच्छवीक आचार–विचार आ सामाजिक नियम आदिक आधार इ कहल गेल अछि जे हुनका लोकनिक उत्पत्ति तिब्बती स्त्रोतसँ भेल होएत। एहिमतक समर्थकक विचार छन्हि जे प्रागैतिहासिक कालमे किछु मंगोलियन–तिब्बती जाति एहि क्षेत्रमे आबिकेँ बसल हेताह आ ओहिसँ लिच्छवी लोकनिक उत्पत्ति भेल होएतैन्ह। भारतीय विद्वान लोकनि लिच्छवीकेँ भारतीय मनैत छथि परञ्च अपनहु सबमे किछु एहनो विद्वान छथि जनिक विचार छन्हि जे लिच्छवी लोकनिक उत्पत्ति परसिया (फारस)सँ भेल होएत। निच्छवि शब्दक उत्पत्ति फारसक **'निसि विस'** नगरसँ भेल अछि आ ओहिसँ लिच्छवीक उत्पत्ति सेहो। फारसक इतिहास विवरणमे कतहु एहेन उल्लेख नहि भेटइत अछि जाहि आधारपर इ कहल जाए जे फारसक लोग पूर्वी भारतमे आबिकेँ कहियो बसल छलाह अथवा पूर्वी भारतसँ कहियो हुनका लोकनिकेँ कोनो प्रकारक सम्पर्क रहल होन्हि।

प्राचीन भारतीय साहित्यमे लिच्छवी लोकनिकेँ क्षत्रियक रूपमे वर्णन भेल छैक। **महापरिनिव्वाणसुत**सँ ज्ञात होइछ जे ओ लोकनि क्षत्रियक हिसाबे बुद्धक शवक अवशेष प्राप्त करबा लेल इच्छुक छलाह। **सिगालजातक**मे लिच्छवी कन्याकेँ क्षत्रिय कहल गेल छैक। महाली नामक लिच्छवी अपनाकेँ बुद्ध जकाँ क्षत्रिय घोषित करैत अछि। **जैनकल्प सूत्र**मे वैशालीक लिच्छवी नेता चेतकक बहिन त्रिशलाकेँ क्षत्रियाणी कहल गेल छैक। लिच्छवीक उत्पत्तिक सम्बन्धमे बुद्धघोषक मत छन्हि जे ओ लोकनि क्षत्रिय छलाह। नेपाल वंशावलीमे लिच्छवी सूर्यवंशी क्षत्रिय कहल गेल छैक। मनु लिच्छवीकेँ व्रात्य–क्षत्रिय कहैत छथि। वज्जि आ लिच्छवीक मध्य कोन सम्बन्ध छल अथवा दुनूक बीच कोनो सीमा रेखा छल अथवा नहि से कहब असंभव। वृज्जी–वज्जी गणराज्यक सर्वश्रेष्ठ सदस्य लिच्छवियेे लोकनि छलाह। बुद्ध लिच्छवीक तुलना तावतिंशदेवसँ कएने छथि। वृज्जि (वज्जिका) आ लिच्छवी दुनू दू शब्द छल परञ्च लिच्छवीक प्रधानताक कारणे वज्जीसँ लिच्छवीक बोध होइत छल।

नेपाल अभिलेखमे **लिच्छवीकुलकेतु, लिच्छवीकुलांबरपूर्णचन्द्र, लिच्छवीकुलानंदकार, लिच्छवीकुलतिलको** आदि शब्दक व्यवहार भेल अछि। चीनी आ तिब्बती स्त्रोतसँ ज्ञात होइछ जे इ लोकनि लिच्छवीक नामसँ प्रसिद्ध छलाह। एक परंपराक अनुसार

तिब्बतक राजवंश लिच्छवीक वंशज छलाह। प्राचीन कालमे संभव जे नेपालक बाटे तिब्बत आ मिथिलाक सम्बन्ध घनिष्ठ रहल हो आ राजनैतिक–साँस्कृतिक आदान–प्रदान होइत हो। हिमालयक तराइमे किरात लोकनिक वास छल आ इ लोकनि बरोबरि पहाड़क आर पार जाइत आवैत छलाह आ दुनू दिससँ हिनका लोकनिकँ सम्पर्क छलन्हि। एहि क्रम तिब्बत आ मिथिलाक संपर्क घनिष्ठ भेल हो से संभव आ दुनूक बीच साँस्कृतिक आदान–प्रदान सेहो। लिच्छवी लोकनि विचारसँ प्रगतिशील छलाह आ तै जँ हिनक विचार तिब्बती विचारधाराकँ ताहि दिनमे प्रभावित केने हो तँ कोनो आश्चर्यक गप्प नहि। एहिठामक संस्कृतिसँ प्रभावित होएब हुनका लोकनिक लेल स्वाभाविक छल कारण मिथिला तिब्बती नेपाली व्यापारीक बाटपर पड़इत छल।

लिच्छवीकँ विदेशी नहि कहल जा सकइयै। लिच्छवी आ विदेह दुनू क्षत्रिय छलाह आ हुनका लोकनिकँ कोनो जातिगत विभिन्नता देखबामे नहि अवइयै। अहुयुगमे वैशालीकँ विदेहक अंगे बुझल जाइत छल आ तैं तँ त्रिशलाकँ वैदेही कहल गेल अछि। लिच्छवी लोकनि देखबा सुनबामे सुन्दर होइत छलाह आ हुनकर पहिरब ओढ़ब अत्यंत सुन्दर होइत छलन्हि। **अंगुत्तर निकाय**मे आन क्षत्रिय शासक जकाँ लिच्छवी लोकनिकँ अभिषिक्त मानल गेल छन्हि। हियुएनसंग लिच्छवीकँ क्षत्रिय कहने छथि। लिच्छवी लोकनि ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय, वासुकी, लक्ष्मी आ विजयश्रीक पूजा करइत छलाह आ अहुसँ इ स्पष्ट अछि जे ओ विदेशी नहि छलाह। वैशालीमे जैन, बौद्ध आ ब्राह्मण धर्मक प्रधानता छल आ नेपालमे सेहो इ लोकनि ओहि सब धर्मक पालन करइत छलाह। लिच्छवीक अतिरिक्त आ कैकटा जाति वैशालीमे रहैत छलाह जकर विवरण निम्नांकित अछि।

ज्ञात्रिक जाति ओहिमे सबसँ प्रसिद्ध छल आ एहि कुलमे जैनधर्मक संस्थापक वर्द्धमान महावीरक जन्म भेल छलन्हि। ज्ञात्रिक लोकनिक प्रधान केन्द्र छल **कुन्द ग्राम** आ **कोलाग्ग**। बौद्ध साहित्यमे महावीरकँ नात (नाट) पुत्र कहल गेल छन्हि। इ लोकनि काश्यप गोत्रक छलाह। वज्जी गणराज्यक विकासमे हिनका लोकनिक विशेष योगदान छलन्हि। राहुल साँकृत्यायनक अनुसार आजक जथरिया भूमिहार ब्राह्मण एहि ज्ञात्रिकक वंशज छथि। राहुलजीक एहि मतकँ सब केओ नहि मानैत छथि।

उग्र लोकनि सेहो एक प्रसिद्ध जाति छलाह। वैशालीसँ हिनका लोकनिकँ घनिष्ठ सम्पर्क छलन्हि। **'हत्थीगाम'**क समीप इ सब रहैथ होथि से संभव। **बृहदारण्यकोपनिषद** एवँ **धम्मपद्दठीका**मे उग्र लोकनिक विवरण भेटइत अछि मुदा ओ लोकनि इएह उग्र छलाह अथवा नहि से कहब असंभव। विदेह आ काशीमे उग्र लोकनिक प्रभुता आ सैन्यबलक चर्च भेटइत अछि। बुद्ध सेहो उग्र लोकनिक शहरमे गेल छलाह। **सूत्रकृतांग**मे उग्रकँ बड़ड पैघ स्थान देल गेल छन्हि आ **ललितविस्तर**मे जे ६४ लिपिक विवरण अछि ताहिमे एकटा उग्र लिपिक विवरण सेहो अछि। ओहि ६४ मे एकटा पूर्व विदेहक लिपिक वर्णन सेहो भेटइत अछि। उग्रकँ मिश्रित जाति सेहो कहल गेल अछि।

जैन साहित्यमे उग्र जकाँ **भोग**कँ सेहो क्षत्रिय कहल गेल छैक। इ लोकनि प्रथम जैन तीर्थकंर ऋषभक वंशज छलाह **महापरिनिव्वानसुत्त**सँ ज्ञात अछि जे वैशालीसँ पावा जेवाक रास्तामे भोगनगर, जम्बुगाम, अम्बगाम, हत्थिगाम, भण्डगाम आदि भेटइत छल आ एहि सबसँ भोग लोकनिक घनिष्ठ सम्पर्क छलन्हि।

**सूत्रकृतांग**मे इक्ष्वाकु लोकनिक विवरण अछि आ इहो लोकनि वज्जी क्षेत्र रहैत छलाह। संभवतः इ लोकनि सुमतिक वंशज होथि। चूँकि विदेह लोकनि इक्ष्वाकुक

पुत्र निमिक वंशज छलाह तैं इहो संभव अछि जे इहो लोकनि अपनाकेँ इक्ष्वाकु कहैत होथि। इहो संभव जे अयोध्याक इक्ष्वाकु एम्हर आबिकेँ बसि गेल होथि।

वज्जी संघमे कौरव लोकनिक उपस्थिति एकटा समस्याक प्रश्न बनि गेल अछि। एहि सम्बन्धमे निम्नलिखित तथ्यकेँ स्मरण राखब आवश्यक। महाभारतक अनुसार पाण्डु मिथिला जाकए विदेहकेँ पराजित कएने छलाह। भीम गण्डक लोकनिकेँ पराजित केला उत्तर वैदेहक जनककेँ पराजित केलन्हि। ओ विदेहपर आधिपत्य स्थापित कए ओहिठाम अपन खुट्टा गारि अपन साम्राज्यवादी अभियानकेँ आगाँ बढ़ौलन्हि आ कौशिकी कच्छक राजाकेँ पराजित केलन्हि। इ क्षेत्र सम्प्रति विहपुर–पूर्णियाँ क्षेत्रक संकेत दैत अछि। कौशिकी क्षेत्र आ एहिसँ पूर्वक क्षेत्रपर एकटा कौरव राजकुमारकेँ लादि देल गेल। एम्हर विदेहमे जे कौरव बचि गेलाह से एहिठामक वासी बनिकेँ रहि गेला। हस्तिनापुरक अंत भेलापर सेहो कौरव लोकनि एहि क्षेत्रमे आबिकेँ बसलाह। राजा जनक दरबारमे तँ प्रारंभहिसँ कुरू पाँचालक ब्राह्मण लोकनिक अबरजात बनले छल।

वज्जी गणराज्यक अंतर्गत बहुत तरहकेँ लोग रहल होएत एहिमे संदेह नहि। **त्रिकाण्डशेष**मे लिच्छवी, वैदेह आ तैरभुक्तकेँ पर्यायवाची शब्द मानल गेल छैक आ वज्जी संघक अगुआ इएह सब छलाह। कुछ विद्वानक कथन अछि जे कराल जनकक मृत्युक पश्चातो विदेहमे राजतंत्र बनल रहल आ महापद्म नंद जखन मिथिलाकेँ जीतलैन्ह तकर बादे मिथिलामे गणराज्य भेल मुदा हमरा इ बात मान्य नहि बुझि पड़इयै कारण कराल जनकक मृत्यु भेला उपरांत मिथिलामे विद्रोहक आगि भभकि उठल आ ओतए राजतंत्रकेँ समाप्त कऽ कए गणतंत्रक स्थापना कैल गेल। बुद्धक समयमे विदेह एकटा गणतांत्रिक राज्य छल। अजातशत्रुक वैशाली आक्रमणक पछाति एहि क्षेत्रक सूर्यास्तक संकेत भेटए लागल। पतंजलि एहि बातक साक्षी छथि जे विदेहमे गणराज्य छल। एहिमे आठ कुलक संघ छल। मल्ल, विदेह, उग्र, भोग, इक्ष्वाकु, ज्ञात्रि, कौरव एवँ लिच्छवीकेँ मिलाकेँ एकटा शासन छल–जकरा हमरा लोकनि लिच्छवी, विदेह अथवा वज्जीसंघक नामसँ जनैत छी।

**vi.) बौद्ध साधन आ मिथिलाक इतिहास:-** अंगुत्तर निकायमे वज्जी संघक विवरण अछि मुदा विदेहक नाम नहि अछि। इहो संभव जे वज्जी संघक सदस्य रहलाक कारणे एहिमे एकर नाम नहि देल गेल हो। **दीपवंश**मे वर्णित परंपराक अनुसार कराल जनकक पुत्र छलाह समङ्कर आ हुनका बाद राजा भेलाह अशोक। ओहि परंपरामे इहो कथा अछि जे चम्पानगरक राजा नागदेवक वंशज कैक पुस्त धरि मिथिलापर शासन केलन्हि। एहिमे सबसँ अंतिम राजा भेलाह बुद्धदत्त। दीपवंशक कथासँ इ सिद्ध होइत अछि जे कराल जनकक बादो मिथिलामे राजा द्वारा शासन होइत रहल आ मिथिला नगरमे २५ टा राजा तकर बादो शासन केलन्हि जाहिमे बुद्धदत्त अंतिम छलाह। तकर बाद राज्य मगधक अंतर्गत चल गेल। एकर अतिरिक्त मिथिलामे अंगति, सुमित्र आ विरूधक नाम सेहो भेटइत अछि। अंगतिक शिक्षक छलाह **गुणकस्सप**।**गुणकस्सपक** विचार **पुराणकस्सप** आ **मखलि गोसाल्लक** विचारसँ मिलैत–जुलैत अछि आ इ सब बुद्धक समकालीन छलाह। राजा सुमित्रक सम्बन्धमे **ललितविस्तर**मे वर्णन भेटइत अछि। **ललितविस्तर**मे मिथिलाक सौन्दर्यक वर्णन अछि–आ ओहिमे इहो कहल गेल अछि जे सुमित्रकेँ हाथी, घोडा, रथ आ पैदल सेनाक कोनो अभाव नहि छलन्हि। सबतरहे सुखी सम्पन्न रहैतहुँ राजा बड़ड बूढ़ छलाह आ शासन क्षमता हुनक घटि चुकल छलन्हि। विदेहक तुलनामे **ललितविस्तर**मे वैशालीक

गणराज्यक विशेष प्रशंसा अछि। इहो सूचना भेटइत अछि जे राजा विरूधक मंत्री सकलकेँ विदेह छोड़िकेँ वैशाली भागे पड़ल छलिन्ह कारण विदेह राज दरबारमे तरह–तरहकेँ षडयंत्र चलि रहल छल। आन मंत्री सब हिनकासँ ईर्ष्या करैत छलाह। सकल वैशालीमे आबिकेँ प्रख्यात भेलाह आ एहिठाम नायकक पदपर निर्वाचित भऽ गेलाह। **गिलगिट मैन्युसक्रिप्ट**मे सेहो मिथिलाक कोनो एक अनामा राजाक प्रधानमंत्री खण्डक उल्लेख भेटइत अछि। खण्ड ५०० अमात्यक प्रधान छलाह। हुनक जनप्रियतासँ आन–आन मंत्री घबड़ा उठलाह आ हुनका समाप्त करबाक प्रयास करे लगलाह। ओ लोकनि राजाकेँ इ कहिकेँ भरकावे लगलाह जे **'खण्ड'** अपनाकेँ राजा बुझि रहल छथि आ तदनुसार काज कऽ रहल छथि। खण्ड एहि सबसँ तंग आबि वैशाली (जे कि गणराज्य छल) चल गेलाह जाहिठाम लिच्छवी लोकनि हुनक स्वागत केलथिन्ह।

एहि सबसँ स्पष्ट होइत अछि जे वैशाली विदेहसँ पूर्वहि गणराज्य भऽ चुकल होएत।

**vii) वज्जी गणराज्यक राजनैतिक सम्बन्धः-** इ. पू. छठी शताब्दीक १६ महाजनपदमे वज्जीक विवरणकेँ सम्मिलित करब एहि बातक द्योतक थिक जे ताहि काल तक एकर राजनैतिक प्रतिष्ठा स्थापित भऽ चुकल छल। **अंगुत्तर निकाय**मे सेहो एकर विवरण अछि। वज्जीसंघक स्थापना ताहि दिनमे भेल छल जखन ने तँ काशीपर कोशलक अधिकार भेल छल आ ने अंगपर मगधक। वज्जीसंघ आ बिम्बिसारक राज्यक सीमा मिलैत–जुलैत छल। दुनूक बीच युद्ध भेल छल तकरो उल्लेख यदा कदा भेटइत अछि। दुनूक बीच युद्धक कारण कि छल से कहब असंभव अछि। संभव अछि जे मगध जखन अंगपर आक्रमण केलक तखन मगधक नजरि अंगक उत्तरी भाग अंगुतरापपर सेहो छलैक। अंगुतरापक सीमा वज्जीसंघक सीमासँ मिलैत–जुलैत छलैक आ तै वज्जीसंघकेँ सतर्क रहब आवश्यक छलैक। एहि अंगुतराप प्रश्न लऽ कए दुनूक बीच मतभेदक संभावना भऽ सकैत छैक। अंगुतराप एक महत्वपूर्ण जनपद छल आ बौद्ध धर्मक केन्द्र सेहो। एहिठाम बुद्ध कैक बेर गेल छलाह आ आपण ग्राममे एकाध मास रहलो छलाह। अंग जीतलाक बाद बिम्बिसार अंगुतरापपर अपन आधिपत्य स्थापित करए चाहैत हेताह जकर विरोध करब वैशालीक हेतु स्वाभाविक छल। एहि क्रममे जे संघर्ष भेल होएत ताहिमे संभवतः लिच्छवी लोकनि अंगुतराप क्षेत्रपर अधिकार कऽ लेने हेताह जे बिम्बिसार मानबा लेल तैयार नहि भेल हेताह आ एहि कारणे दुनूमे युद्ध भेल हेतन्हि। झगड़ाक एकटा आओर कारण अम्बपाली सेहो छल। बिम्बिसार चुपेचाप वैशालीमे आबिकेँ एकाध सप्ताह रहल छलाह आ अम्बपालीसँ बिम्बिसारकेँ एकटा पुत्रो छलन्हि जकर नाम छल अभय। संघर्षक चाहे जे कारण अथवा स्वरूप रहल हो परञ्च अंतमे जा कए वैशालीक संग बिम्बिसार वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित केलन्हि आ एकर फलस्वरूप दुनू राज्यक बीच युद्धक अंत भेल। तखनसँ मगधक संग वैशालीक सम्बन्ध अजातशत्रुक आक्रमणक समय धरि ठीके रहल।

मल्ल आ लिच्छवीक बीचक सम्बन्ध सेहो बढ़िया छल। दुनूक ओतए गणराज्यक व्यवस्था छल आ दुनूकेँ जैन आ बौद्ध धर्मक प्रति आस्था छलन्हि। मनु दुनूक वर्णन व्रात्य कहिकेँ केने छथि। अजातशत्रुक आक्रमणक समयमे दुनू सम्मिलित रूपें हिनक विरोध कएने छलाह। महावीरक मृत्युक अवसरपर सेहो ओ लोकनि सम्मिलित रुपें

काज कएने छलाह। कोशल राजाक सेनापति बन्धुल मल्ल रहथिन। कोशल राज्यक संग सेहो लिच्छवी लोकनिक सम्बन्ध बढ़िये छलन्हि। लिच्छवी महाली आ राजकुमार प्रसेनजित तक्षशिलामे संगे पढ़ैत छलाह। दुनूमे खूब दोस्ती छलन्हि। वत्सक संग सेहो वैशालीक वैवाहिक सम्बन्ध छल। वत्सराज सतानिकक विवाह चेतकक पुत्री मृगावतीसँ भेल छल। उद्यन ओहि दुआरे वैदेही पुत्र कहबैत छथि।

अध्याय–५

# मिथिलाक राजनैतिक इतिहास
# (ई. पू. छठी शताब्दीसँ ई. स. ३२० धरिक)

ई. पू. छठी शताब्दीमे भारतमे केन्द्रीय सत्ताक अभाव छल आ समस्त उत्तरी भारत सोलह महाजनपदमे बटल छल। एहिमे बिहारमे अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, प्रसिद्ध छलाह। एहि महाजनपद सबमे किछु राजतंत्रात्मक आ किछु गणतंत्रात्मक छल–बौद्ध साहित्यमे जे गणराज्यक उल्लेख भेटैछ ताहिमे बिहारमे वैशालीक लिच्छवी एवँ अन्य गणराज्यक संग मिथिलाक विदेह गणराज्यक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। उत्तर बिहारक महाजनपदकेँ सम्मिलित रूपें वृज्जि – मल्ल सेहो कहल जाइत छल। वृज्जि गणराज्य आठ राज्यक एकटा संघ छल जाहिमे लिच्छवी, विदेह, ज्ञात्रिक प्रसिद्ध छलाह। संघक राजधानी वैशालीमे छल आ एकर स्वरुप कुलीनतांत्रिक छल। वृज्जि शासनमे प्रत्येक गाँवक राजाकेँ सरदार कहल जाइत छल। राज्यक सामूहिक कार्यक विचार एक परिषद होइत छल जकर ओ राजा लोकनि सदस्य होइत छलाह। किछु मल्ल लोकनि सेहो उत्तर बिहारमे रहैत छलाह।

ताहि दिनमे जे दू प्रकारक राजनैतिक व्यवस्था छल आ ताहुपर जे केन्द्रीय सत्ताक अभाव छल तकरा चलते दुनू राजनैतिक पद्धतिक मध्य बरोबरि संघर्ष होइत रहैत छलैक आ एम्हर मगध अपन हाथ–पैर पसारि रहल छल। मगध, कोशल, वत्स, अवंती एहि चारू राज्यक मध्य आधिपत्यक हेतु संघर्ष चलि रहल छल आ ओ सब अपन–अपन क्षेत्रमे अपन–अपन प्रसारमे लागल छलाह। उपरोक्त चारू राज्यक तुलनामे मगधकेँ विशेष सफलता भेटलैक आ तकर मूलकारण इएह छैक जे मगध ताहि दिनमे आर्थिक दृष्टिये सफल आ सबल छल। राजनैतिक संगठनक वास्तविक पृष्ठाधार आर्थिक आ सामाजिक होइत अछि। मगध खनिज पदार्थक हेतु प्रसिद्ध छल आ लोहा एकर सबसँ पैघ उपलब्धि छल। लोहापर आधिपत्य रहबाक कारणे मगध सब समकालीन राज्यकेँ पराजित करबामे सफल भेल। नदी तटपर अवस्थित एवँ राजगीर एवँ अन्य पहाड़सँ घेरल बंधल मगधकेँ प्रकृति जेना एकटा प्राकृत सुरक्षा प्रदान केने होइक तेहने बुझल जाइत छल आ ताहिपर सँ मगधसँ तक्षशिला तक व्यापारिक मार्ग एवँ लोहापर ओकर एकाधिपत्य ओकरा सर्वतोभावेन साम्राज्यवादी बनेबामे समर्थ सिद्ध भेलैक– एहि बातकेँ हमरा लोकनि एतिहासिक विश्लेषणसँ हँटा नहि सकैत छी। आर्थिक तत्वक संगठनात्मक आधारक जे रूपरेखा हमरा लोकनिकेँ कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे भेटइत अछि ओहिसँ स्पष्ट अछि जे मगधमे सुनियोजित व्यवस्थाक स्थापनामे कैक शताब्दीक परिश्रम रहल होएत।

बिम्बिसारक नेतृत्वमे मगध साम्राज्यवादक श्रीगणेश भेल आ ओ अंगकेँ पराजित कए जखन अंगुतराप आ कौशिकी कक्ष दिसि बढ़लाह तखन हुनका वैशालीक लिच्छवी लोकनिसँ संघर्ष भेलन्हि आ से खटपट दुनू राज्यक बीच बादोमे बनल रहल। अंगुतराप आ वैशाली विदेहक सीमा कमला नदीक इर्द–गिर्द मिलैत छल। बादमे

लिच्छवी चेटकक पुत्रीसँ विवाह कए ओ वैशालीक संग मित्रता स्थापित केलन्हि आ वैशालीक सुप्रसिद्ध गणिका अम्बपालीसँ सेहो हुनका एकटा पुत्र भेलन्हि। वैवाहिक सम्बन्धक माध्यमे ओ मगध राज्यक सम्बन्धक विस्तार केलन्हि। मगध साम्राज्य प्रसारक अट्टालिका एहि सम्बन्धपर ठाढ़ छल।

अजातशत्रु अपन पिताक साम्राज्यवादी नीतिकेँ चालू रखलन्हि। ओ इ बात जनैत छलाह जे जाधरि वृज्जि संघक नाश नहि होएत ताधरि मगध साम्राज्यक एकाधिपत्य नहि संभव होएत तैं राज्यारोहणक बादसँ ओ एहि जोगारमे लागि गेलाह जे येन–केन प्रकारेण वृज्जिसंघकेँ मटियामेट कैल जाए। ओ एहि हेतु असंख्य बहाना खोजलन्हि। पिताक समय सेहो एहि दुनू राज्यक बीच खटपट भेल छल परञ्च अजातशत्रुक समयमे इ सामान्य खटपट अपन चरमोत्कर्षपर पहुँच गेल। हिनक मंत्री छलाह वर्षकार जनिका कौटिल्यक अगुआ कहल जाइत छन्हि। वर्षकार एहि सम्बन्धमे बुद्धसँ परामर्श करए गृद्धकूट पर्वतपर गेला। एहि प्रसंगपर बुद्ध जे वर्षकारकेँ उत्तर देलथिन्ह तकरा **सत–अपरिहाणि–धम्म** कहल जाइत छैक जकर विश्लेषण हम पाछाँ करब। वर्षकार एहिसँ अपन सुराग बाहर केलन्हि आ वज्जि संघमे फूट अनबाक प्रयासमे लागि गेलाह। अजातशत्रु आ वृज्जि संघक बीच युद्धक मुख्य कारण छल राजाक साम्राज्यवादी नीति। राजा एहि गणराज्यकेँ नष्ट कए मगधक अधीन करए चाहैत छलाह। जैन साधनसँ पता लगइयै जे लिच्छवी राजकुमारी चेलनासँ बिम्बिसारकेँ दूटा पुत्र छलन्हि–हल्ल आ वेहल्ल। बिम्बिसार हिनका दुनू भाइकेँ बहुत रास वस्तु उपहारमे देने छलथिन्ह परञ्च अजातशत्रु जखन अपन पिताकेँ मारिकेँ राजगद्दीपर बैसलाह तखन ओ हिनका दुनू भाइसँ ओ सब वस्तु वापस मंगलथिन्ह। ओ लोकनि देवासँ नकारि गेलथिन्ह। अपन रक्षार्थ ओ लोकनि अपन नाना (वैशाली)क ओहिठाम चल गेलाह आ अजातशत्रु खिसियाकेँ वैशालीपर आक्रमण कऽ देलन्हि। बौद्ध साधनक अनुसार मगध आ वैशालीक बीच गंगा नदी बहैत छल आ तकर एक कातमे एकटा कोनो प्रसिद्ध खान छल आ ओकरा सटले एकटा बन्दरगाह सेहो। एहि खान आ बन्दरगाहपर आधा–आधा हिस्सा दुनू राज्यक छल। वज्जि लोकनि शक्तिशाली होएबाक कारणे मगध लोकनिकेँ ओहि अधिकारक उपयोग नहि करए दैत छलथिन्ह तै अजातशत्रु शस्त्र द्वारा एहि प्रश्नक निबटारा करए चाहैत छलाह। अजातशत्रु सब दिसिसँ दारूण अस्त्रक संचय केलन्हि आ वर्षकारक साम्राज्यवादी सल्लाहक अनुकरण करैत ओ वृज्जिसंघपर आक्रमण केलन्हि। वृज्जिसंघ तत्त्कालीन मिथिलाक विशेष भागक प्रतिनिधित्व करैत छल।

भयंकर युद्धक अगुआ भेलाह साम्राज्यवादी अजातशत्रु। लड़ाइ बहुत दिनधरि चलैत रहल। काशी आ अंग पछाति वैशाली विजय मगध साम्राज्यक स्थापनाक तेसर चरण छल। **तिरयावली सूत्र**क अनुसार लिच्छवी राज चेटक अठारह गणराज्यकेँ सहायताक हेतु अपील केलन्हि आ अजातशत्रुसँ लड़बाक हेतु एकटा संयुक्त मोर्चाक निर्माण केलन्हि। एहि युद्धमे अजातशत्रु महाशील कंटक आ रथमूशल सन सन युद्ध यंत्रक प्रयोग कएने छलाह। एहि दुनू राज्यक बीच लगभग १६ वर्ष धरि युद्ध चलैत रहल। आजीविक सम्प्रदायक प्रधान मखली गोस्साल सेहो एहि युद्धमे मारल गेलाह। मगध एहि युद्धमे सब प्रकारक कूटनीतिक प्रयोग केलक। अंततोगत्वा अजातशत्रु विजयी भेलाह आ वैशालीक गणराज्यक प्रभुताक अवसान भेल आ मगध साम्राज्य एहिपर अपन आधिपत्य स्थापित केलक।

वैशालीपर विजय प्राप्त करब मगध साम्राज्यक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानल जाइत अछि आर अजातशत्रुक समयमे इ उपलब्धि प्राप्त भेल। तकर बाद जे राजा लोकनिक भेलाह से मगध साम्राज्यक उपलब्धि आ बढ़ौलन्हि आ एकर उत्कर्ष नन्दवंशक अधीनमे सर्वाधिक भेल। नन्दवंश शासक महापद्मकेँ पुराणमे **अखिलक्षत्रांतकारी, सर्वक्षत्रांतक** आ **एकराट्** कहल गेल छैक। महापद्म मैथिलकेँ सेहो पराजित कएने छलाह। एकर तात्पर्य इ भेल जे वैशालीक पराभव भेला उत्तर विदेहक मैथिल लोकनि संभवतः अपन स्वतंत्रता बचाकेँ रखबामे समर्थ भेल छलाह। मिथिलाक क्षत्रिय शासककेँ इ श्रेय छलन्हि परञ्च क्षत्रिय हंता महापद्म सब क्षत्रिय राज्यकेँ समाप्त करबाक क्रममे मैथिल लोकनिकेँ सेहो पराजित कए हुनका अपना राज्यक अंतर्गत कऽ लेलन्हि। एहि घटनाक बादहिसँ पाटलिपुत्र अखिल भारतीय साम्राज्यक केन्द्र भऽ गेल आ स्वतंत्र वैशाली विदेहक परंपरा समाप्त भऽ गेल। इ दुनू राज्य नन्दवंशक पछाति मौर्य साम्राज्यक अंग बनि गेल। एहि घटनाक बादसँ कर्णाटवंशक उत्थान धरि मिथिला मगधक अंग बनल रहल परञ्च साँस्कृतिक दृष्टिकोणसँ मिथिला अहु स्थितिमे अपन साँस्कृतिक परंपराकेँ आ वैशाली अपन गणतांत्रिक पद्धतिकेँ जोगौने रहल।

ओहि प्राचीन कालहुँमे मिथिला वासी सुवर्ण भूमि आ पूर्वी द्वीप समूहसँ अपन सम्बन्ध बनौने रहल छलाह जकर प्रमाण हमरा लोकनिकेँ **जातक**सँ भेटइत अछि। एक कथासँ ज्ञात होइछ जे एक बेर विदेहक गद्दीक हेतु दु राजकुमारक मध्य संघर्ष भेलन्हि आ ओहिमे एक भाए मारल गेलाह। गर्भवती हुनक मैथिल विधवा मिथिलासँ पड़ाय गेलि आ चम्पा (भागलपुर)मे एकटा ब्राह्मणक ओतए शरणार्थी बनिकेँ रहलीह। ओहि विधवाक पुत्र महाजनक पैघ भेलापर अपन पूर्वस्थितिक ज्ञान प्राप्त कए अपन राज्य वापस करबाक हेतु दृढ़ संकल्प भेलाह। एहि हेतु धनक आवश्यकता छलन्हि तैं धनोपार्जनक हेतु ओ सुवर्ण भूमि दिसि गेलाह। बंगालक खाढ़ीमे हुनक जहाज टुटि गेलन्हि तखन खाढ़ीक अधिष्ठातृ देवी मणिमेखला हुनका अपन कोरामे उठा कए मिथिलापुरी पहुँचा देलन्हि। कम्बुजदेश नामक पोथीमे रमेश मजुमदार लिखने छथि जे प्राचीनकालमे चीनक युनान राज्य विदेह प्रांत कहबैत छल आ ओकर राजधानीक नाम मिथिला छलैक। कखनो कखनो एकरा मिथिला राष्ट्र सेहो कहल जाइत छलैक। चीनी परंपरामे जकरा नानचाओ कहल गेल छैक ओकरे एहि परंपरामे मिथिला राष्ट्र सेहो कहल गेल छैक। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे प्राचीन मिथिलाक लोक सब दक्षिण पूर्वी एशिया एवँ चीनक युनान प्रांत धरि व्यापारक हेतु जाइत छलाह आ अपना संगे अपन स्मृतिक रक्षार्थ अपन साँस्कृतिक परंपराकेँ सेहो उगौहने जाइत छलाह। वैशालीसँ सेहो लोग सब व्यापारक हेतु भारतसँ बाहर जाइत छलाह जकर सबसँ पैघ प्रमाण इ अछि जे बर्मामे एखनो **"वेत्थाली"** (वैशाली) नामक एकटा प्रसिद्ध स्थान विराजमान अछि।

अजातशत्रुक हाथे जखन लिच्छवी लोकनि पराजित भेलाह तकर पश्चात विदेह वैशालीक गौरव लुप्त भऽ गेल आ मगध साम्राज्य अपन उत्कर्षपर पहुँचबाक सरंजाममे आओर तत्पर भऽ गेल। उदायिनक समय धरि लिच्छवी लोकनि अपन प्रतिष्ठाकेँ सुरक्षित रखबाक यथेष्ट प्रयत्न कएने छलाह। उदायिन साम्राज्यक दृष्टिकेँ ध्यानमे राखि राजगृहक परित्याग केलन्हि आ पाटलिपुत्रमे अपन राजधानी बनौलन्हि। एहिसँ गंगापारक विदेह आ लिच्छवीपर नियंत्रण रखबामे सुविधा भेटलन्हि। उदायिनक उत्तराधिकारीक समयमे सेहो लिच्छवी–मगधक संघर्ष चलिते रहल परञ्च नंदवंशक

शासन काल धरि अबैत–अबैत उत्तर बिहार अथवा मिथिला–विदेह–वैशालीक प्राचीन परंपरा लुप्तप्राय भऽ गेल आ एहि समस्त क्षेत्रपर मगधक आधिपत्य भऽ गेलैक। नन्दवंशक शासन कालमे राजनैतिक पराभवक वावजूदो विदेह–वैशालीक सांस्कृतिक गरिमा बनल रहलैक आ अपन शासन सुविधाकेँ ध्यानमे रखैत साम्राज्यवादी नंदवंश शासक लोकनि मिथिलाक गणराज्यक परंपरामे हेर–फेर नहि केलन्हि आ वैशालीक प्रधानता सेहो बनल रहल। वृज्जिसंघक गणराज्यक स्वरूप यथावत छल आ ओहिमे कोनो प्रकार हेर–फेर नहि भेल छल, एकर सबसँ पैघ प्रमाण इ अछि जे कौटिल्य अपन अर्थशास्त्रमे लिच्छवी सबकेँ **"राजशब्दोपजीवितः गणराजानः"** कहने छथि। एकर अर्थ इ भेल जे राजनैतिक हिसाबे मैथिल लोकनि मगधक प्रभुत्वकेँ स्वीकार कऽ लेने होएताह आ आंतरिक रूपें ओ लोकनि अपन वैधानिक परंपराकेँ बचाकेँ रखने हेताह। एकर आठ सौ वर्ष बाद धरि वैशालीक महत्व बनल रहल छलसँ तँ गुप्तकालीन इतिहासक अध्ययनसँ स्पष्ट होइछ।

ई. पू. छठम शताब्दीसँ जे एकटा राजनैतिक एकता एवँ धार्मिक विद्रोहक प्रभावक प्रादूर्भाव भेल छल ताहिसँ मिथिला बाँचल कोना रहि सकैत छल। वर्द्धमान महावीर आ गौतम बुद्ध, जैन आ बौद्ध धर्मक प्रणेता लोकनिक सम्बन्ध एहि क्षेत्रसँ बड़ड घनिष्ठ छलन्हि आ दुनू व्यक्ति बरोबरि एहि क्षेत्रक सीमाक अंतर्गत अपन वर्षावास करैत छलाह। महावीर अर्हत् (पूज्य), जिन (विजेता), निग्रंथ (बन्धनहीन) सेहो कहबैत छलाह आ ओ कोशल, मगध, विदेह इत्यादि स्थानक भ्रमण कएने छलाह। वैशाली तँ हुनक जन्मस्थाने छलन्हि। मगधराज बिम्बिसारक रानी चेलना महावीरक बहिन छलथिन्ह। धार्मिक पक्षपर विवेचन हमरा लोकनिक साँस्कृतिक खण्डमे करब। बौद्ध धर्मक प्रभाव सेहो मिथिलापर बड़ड छल। हम उपर लिखि आएल छी जे संभवतः अंगुतरापपर आक्रमण करबाक क्रममे मगध राज बिम्बिसारक खटपट लिच्छवी लोकनिसँ भेल होएतन्हि। अंगुतरापक आपण गाँवमे बुद्ध एकाध मास रहल छलाह आ ओतुका ब्राह्मण लोकनि हुनक विशेष आदर भाव कएने छलथिन्ह। सप्तरी, भाला परगना, बुद्धग्राम, रत्नपुर, ब्रह्मपुर, विसारा, बेतिया, चम्पारण, आदि बौद्ध धर्मक प्रधान केन्द्र छल। नन्दक शासन कालमे जँ पाणिनि पाटलिपुत्र आएल छलाह तँ ओहि आस पासमे वैशालीमे दोसर बौद्धसंगीति भेल छल जे धार्मिक दृष्टिकोणसँ मानल गेल अछि। वैशाली मौर्ययुगमे पटना आ हिमालय राज्य नेपालक बाटमे पड़इत छल। वैशालीमे अशोक एकटा स्तंभ सेहो बनौने छलाह आ एकटा स्तूप सेहो जाहिमे ओ बुद्धकेँ अवशेषकेँ सुरक्षित रखबौने छलाह। बुद्धक अवशेष एम्हुरका जे उत्खनन भेल अछि ताहिसँ प्राप्त भेल अछि। वैशाली व्यापारोक प्रधान केन्द्र छल। मिथिला आ नेपालक सम्बन्ध सेहो मधुर छल। तराइ क्षेत्रमे किरात लोकनि बसैत छलाह आ मैथिल सांस्कृतिक निर्माणमे किरातक योगदान ककरोसँ कम नहि छन्हि।

मौर्य युगक अवशेष ततेक ने प्रचुर मात्रामे मिथिलाक चारु कातसँ भेटइत अछि जे इ निश्चित भऽ जाइत अछि जे मौर्ययुगमे समस्त मिथिला पूर्णरूपेण मगध साम्राज्यक एकटा प्रमुख अंग बनि गेल छल। पूर्णियाँ, वनगाम–महिषी, पटुआहा, बहेड़ा, हाजीपुर, वैशाली, आदि क्षेत्रसँ पंचमार्क्ड सिक्का विशेष मात्रामे प्राप्त भेल छैक आ मौर्य युगीन मॉटिक मुरूत, खेलौना इत्यादि तँ सहजहि मिथिलाक कोन–कोनमे भेटइत छैक। मृण्मूर्ति तँ एहेन कोनो क्षेत्र नहि अछि जाहि ठामसँ नहि भेटल हो। भऽ सकैछ जे एहि क्षेत्रमे एकर कैकटा केन्द्र सेहो रहल हो। एकर अतिरिक्त मिथिलाक विभिन्न क्षेत्र सबसँ नादर्नब्लैक पॉलिश्ड वेयर (**N.B.P**) सेहो भेटइत अछि

आ एहि सब सम्मिलित साधनक आधारपर इ निर्विवाद रूपें कहल जा सकइयै जे मिथिला क्षेत्र पूर्णतोभावेन पाटलिपुत्रक अधीन रहल छल।

मिथिलाक इतिहासकार डॉक्टर उपेन्द्र ठाकुर ई.पू.३२६सँ १०९७ ई. धरिकँ मिथिलापर जे शासन छल तकरा ओ विदेशी शासनक संज्ञा देने छथि मुदा हुनक इ तर्क युक्तिसंगत नहि बुझि पड़इयै कारण मिथिला (जे कि भारतक एकटा अंग थिक) क संदर्भमे हम मगधकँ विदेशी कोना मानि सकैत छियैक। दोसर गप्प इहो जे जँ मौर्य, गुप्त, पाल, प्रतिहार आदि मिथिलाक हेतु विदेशी बुझल जाइथ तखन तँ इहो स्मरण राखेक चाही जे कर्णाट लोकनि तँ आर दक्षिणसँ आएल छलाह तँ ओ लोकनि देशी कोना भऽ गेलाह। एक समय एहनो छल जखन मिथिलाक प्रभुत्व छल आ समस्त वैशाली आ नेपालक तराइपर मिथिलाक प्रभुत्व छल तँ कि एकरा वैशालीपर विदेशी शासन कहल जेतैक? ओहिना जखन वैशालीक प्रभुत्व बढ़ल तखन मिथिला वैशालीक अंग भऽ गेल तँ ओहिकालकँ मिथिलाक हेतु विदेशी शासन कियैक नहि मानल गेलैक? अजातशत्रु वैशालीकँ आ नंद लोकनि मिथिलाकँ पराजित कए मगध साम्राज्यक उत्कर्ष केलन्हि आ मगधक तत्वावधानमे समस्त उत्तर भारतक नहि अपितु समस्त भारतक राजनैतिक एकीकरण भेल तैं हेतु मिथिलाक इतिहासक संदर्भमे एहिकालमे मिथिलाक हेतु विदेशी शासनक काल कहब युक्ति संगत नहि बुझना जाइत अछि। दोसर बात इ जे मगध साम्राज्यक उत्कर्ष भेला उत्तरो वैशाली एवँ विदेहक आंतरिक स्वायत्ता बनले रहलैक आ ओहिमे कोनो प्रकारक हस्तक्षेपक उदाहरण नहि भेटइत अछि। लिच्छवी लोकनि अपन नियमपर चलिते रहलाह। पतंजलि सेहो जनपदक रूपमे मिथिलाक उल्लेख कएने छथिये। तत्कालीन साहित्यक प्रमाणकँ जँ साक्ष्य मानल जाए तँ इ निर्विवाद रूपें कहल जा सकइयै जे एतावता मिथिला राजनैतिक रूपें मगध साम्राज्यक अधीन रहितहुँ अपना आपमे स्वतंत्र छल। मगधक तत्वावधानमे अखिल भारतीय एकता एकटा ऐतिहासिक क्रम छल जकरा फले लगभग हजार वर्ष धरि मगधक इतिहास भारतवर्षक इतिहास बनल रहल आ मगधक अवसानक पछाति पुनः देशमे छोट–छोट राज्यक जेना उजाटि उठि गेल हो तहिना बुझना जाइत छल।

मौर्य साम्राज्यक स्थापना भारतीय इतिहासमे एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि। एकर विवरण पुराणमे एवँ प्रकारे अछि–

*"उद्धरिष्यति तान् सर्वान्*
*कौटिल्यो वै द्विजर्षभः*
*कौटिल्यश्चन्द्रगुप्तं तु*
*ततो राज्येभिषेक्ष्यति"*

**मुद्राराक्षस**क अनुसार चन्द्रगुप्त हिमालयसँ दक्षिणार्णव धरि अपन राज्य सीमाकँ विस्तृत केलन्हि। वैशाली आ मिथिला मौर्य साम्राज्यक प्रान्त छल आ एहिठाम जे अखनो गणराज्य वर्त्तमान छल तकर सबसँ पैघ प्रमाण अछि कौटिल्यक अर्थशास्त्र। अशोकक स्तम्भ लेख लौरियानन्दन आ रामपुरबा तथा स्तंभ चम्पारण, वैशालीसँ भेटल छैक आ ओम्हर पूबमे धरहरा (बनमनखी–पूर्णियाँ)क समीप सिकलीगढ दिसि सेहो अशोक स्तंभक होएबाक किछु प्रमाण भेटल छैक जाहिसँ इ पुष्ट होइछ जे अशोक काल धरि मिथिलापर मौर्य साम्राज्य अक्षुण्ण भावें बनल रहल। नेपाल आ तराइक विशिष्ट भागपर सेहो अशोकक राज्य छल। वैशालीक प्रभुत्व तखनो बनल छल और

अशोक मिथिले बाटे नेपाल गेल छलाह–पाटलिपुत्रसँ विदा भऽ कए ताहि दिनमे लोक पहिने वैशाली पहुँचैत छल आ तब केसरिया, लौरियाए अरेराज, बेतिया, लौरिया नंदनगढ, जानकीगढ आ रामपुरबा होइत भीखनाठोरी लग पहुँचैत छल आ ओहिठामसँ नेपाल जाइत छल। अशोक एहि बाटे नेपाल गेल छलाह आ नेपालकेँ अपना राज्यमे मिलौने छलाह। लिच्छवी, किरात, मल्ल, विदेह आदि जाति सबमे ताहि दिनमे वेस मेलजोल छल आ हिनको लोकनिक संपर्क नेपालसँ घनिष्ठ छलन्हि। वैशाली उत्खननसँ प्राप्त एकटा मुहर पर लिखल अछि–**"**वैशाली अनुसम्यानक टकार**"**–जाहिसँ इ बुझि पड़इयै जे वैशाली मौर्य कालमे शासनक एकटा प्रधान कैंन्द्र छल आ खासकर अशोकक समय एकर प्रधानता आओर बढ़ि गेल छलैक। अशोकक समय बहुत रास व्यक्ति बौद्ध धर्मक प्रचार करबाक हेतु तिब्बतो गेल रहैथ।

मौर्य साम्राज्यक पतनक पछाति शूंगवंशक स्थापना भेल। इ ब्राह्मवंश छल। ब्राह्मण धर्मक प्रभुत्व बढ़ल परञ्च संगहि विकेन्द्रीकरणक प्रवृत्तिकेँ सेहो बढ़ावा भेटलैक। शूंग कालहुमे मिथिलापर पाटलिपुत्रक प्रभाव बनले रहलैक। शूंगकालीन स्तंभ गण्डक तीरपर काली मंदिरक समीप सोनपुरमे भेटल छैक आ जयमंगला गढ़ (बेगूसराय)सँ प्राप्त लकड़ीक पुलक संगहि शूंगकालीन मृण्मूर्तिक आविष्कार एकटा पैघ पुरातात्विक घटना मानल गेल अछि। पटना (कुम्हरार) आ नौलागढ़ (बेगूसराय)सँ शूंगकालीन मॉटिक मुरूत आ साज श्रृंगारक सामान सेहो भेटल अछि। नेपालमे किरात लोकनिक महत्व बनल छल आ उहो लोकनि संभवतः शूंग लोकनिक आधिपत्य स्वीकार केने छलाह। रैमा गाममे एक पुरान पोखरि छैक जकरा लोग क ओहिठाम सुनगाही पोखरि कहैत छैक। ओहिमे सँ बहुत रास प्राचीन सामग्री भेटल छैक आ ओहिठामक लोग विश्वास छन्हि जे इ पोखरि शूंगकालीन थिक। शूंगकालहु धरि अंगमे ब्राह्मण धर्मक प्रचार–प्रसार विशेष रूपें नहि भेल छल परञ्च मिथिलामे ब्राह्मण–धर्मक पुनुरूत्थान एहि युगमे विशेष रूपें भेल छल। विदेह आ अंगक बीचमे एकटा प्रसिद्ध स्थान छल **कालकवन**। शूंगक पछाति कण्व लोकनिक शासन रहल। हुनका लोकनिक समयमे मिथिला–वैशाली क्षेत्रपर पाटलिपुत्रक प्रभाव घटि गेल छल। एहि स्थितिसँ लाभ उठाकेँ लिच्छवी लोकनि शनैः शनैः अपन सत्ता बढ़ौने जा रहल छलाह। दक्षिणमे आन्ध्र–सातवाहन, पूर्वमे कलिंगक खरवेल आ पश्चिममे शक् क्षत्रप लोकनि अपन प्रभाव बढ़ा रहल छलाह। दू–दू बेर कलिंग राज खरवेल मगधपर आक्रमण कऽ चुकल छलाह परञ्च मिथिलापर हुनक आधिपत्य भेलन्हि अथवा नहि से कहब कठिन।

मिथिलामे एखनहुँ पुरातात्विक ढँगक उत्खनन नहि भेल छैक तैं जनक राजवंशसँ लकए कर्णाट राजवंश धरिक इतिहासकेँ अन्धकारपूर्ण कहल जा सकइयै यद्यपि साँस्कृतिक दृष्टिकोणसँ एहि युगक विशेष महत्व अछि। कुषाण लोकनि कनिष्कक नेतृत्वमे वैशाली धरि आएल छलाह से संभव। कहल जाइत छैक जे कनिष्क वैशालीसँ बुद्धक भिक्षाटन बला बाटी उठाकेँ गान्धार लऽ गेल छलाह।

वैशालीसँ शक क्षत्रप रूद्रसेनक बहिन महादेवी प्रभुदामाक एक गोट लिखल मोहर पाओल गेल छैक[1] जाहिसँ इ अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे शक क्षत्रप

---

[1] राज्ञो महाक्षत्रपस्य स्वामी रूद्रारुद्रसिंहस्य दुहितु राज्ञो महाक्षत्रपस्य स्वामी रूद्रसेनस्य भगिन्या महादेव्या प्रभुदामायाह॥

सबहिक संग ताहि दिनमे एहि क्षेत्रक संपर्क छलैक। एहि सम्बन्धक वास्तविक स्वरूपक ठेकान लगाएब अखनो कठिन अछि। एहि क्षेत्र सबसँ बहुत क्षत्रप आ कुषाण मुद्रा तथा सिक्का भेटल अछि। मनुस्मृतिमे लिच्छवी, विदेह, मल्ल जाति सबकेँ व्रात्य कहल गेल छैक जकर कारण इएह थिक जे इ सब वैदिक कर्मकाण्डक कोनो परवाहि नहि करैत छलाह। मौर्योत्तर कालमे प्रकार–प्रकारक लोगक उल्लेख भेटैछ आ ओकर सम्बन्ध वैशाली मिथिला क्षेत्रसँ बताओल जाइत अछि। एहि प्रसंगक विशेष रूप हम अपन लेखमे **"कम्प्रीहेनसिम हिस्ट्री आफ बिहार"**मे प्रस्तुत कएने छी आ एहिठाम मात्र ओकर संकेत धरि दैत छी।

टालेमी (भूगोलवेत्ता) अपन पुस्तकमे कहने छथि जे गण्डकसँ महानंदा धरि **"मरूण्डाइ"** नामक एक गोट जातिक आधिपत्य छलन्हि। एहि जातिक प्रभाव एहि क्षेत्रपर छल। मौर्योत्तर कालमे मिथिलामे सेहो एक प्रकारक अस्तव्यस्तता छल आ एकर नतीजा इ होइत छल जे चारू कातक महत्वाकाँक्षी लोक सब एकर लाभ उठा लैत छलाह। **'मरूण्डाइ'** जातिक विवरण कैक साधनसँ प्राप्त होइत अछि परञ्च वस्तुस्थिति कि छल ताहि सम्बन्धमे ठीक–ठीक निर्णय देव अंसभव। टालेमी निश्चय कोनो आधारपर अपन मंतव्य देने हेताह जे आधार आब हमरा लोकनिकेँ उपलब्ध नहि अछि। '**मरूण्डाइ**'क अतिरिक्त आरो एक गोट जाति छलैक जकर राज्य उत्तरी बिहारमे छलैक। ओहि जातिक नाम छल **'भर'** (भर राजपूतोकेँ कहल जाइत छैक)। भर लोकनिक अवशेष सहरसा आ बेगूसरायमे अछि। सिहेंश्वर स्थानमे रायभीर नामक एकटा स्थान छैक जकरा भर लोकनिकेँ राजधानी कहल जाइत छैक। बेगूसरायमे तप्पा सरौंजा सेहो भर लोकनिक प्रधान केन्द्र छल। भर लोकनिकेँ विश्वास छैन्ह जे ओ सब **भारशिव–नाग वंश**क उत्तराधिकारी छथि। जँ इ कथन सत्य हो तँ इ मानल जा सकैत अछि जे **भारशिव नाग वंश**क आधिपत्य सेहो मिथिलापर छल। भर लोकनिक अनेक किंवदंती एखनो मधेपुरामे पाओल जाइत छैक। **मरूण्डाइ, भर, किरात** आदि जाति सबहिक प्रभुत्व मिथिलाक किछु खास–खास अंसेपर रहल हेतैक। एहेन अनुमान लगाओल जाइत छैक जे मौर्य लोकनिक पतनक पछाति लिच्छवी लोकनि अपन अस्तित्वक पुनर्स्थापन लागि गेल हेताह–कुषाण लोकनिक प्रभुत्वसँ हुनका लोकनिकेँ धक्का पहुँचल हेतन्हि आ ओहि अनिश्चितताक अवस्थासँ लाभ उठाकेँ **भारशिव नाग वंश**क लोग मिथिलाक क्षेत्रमे अपन सत्ता स्थापित कएने होएताह। कुषाणक प्रभावक वृद्धि भेलापर लिच्छवी लोकनि ओतएसँ हँटिकेँ जे नेपाल गेलाह से अपन प्रभुत्व कायम केलन्हि आ तहियासँ करीब ७०० वर्ष धरि ओतए शासन करैत रहि गेलाह। ओहि लिच्छवी लोकनिक सम्बन्ध पाटलिपुत्रसँ सेहो छल। एक परंपरामे तँ इहो सुरक्षित अछि जे लिच्छवी लोकनि पाटलिपुत्रपर सेहो शासन करैत छलाह आ नेपाली शिलालेखक अनुसार **'सुपुष्प'** लिच्छवीक जन्म पाटलिपुत्रमे भेल छलन्हि।

**लिच्छवीक अंत:-** अजातशत्रुक पछाति लिच्छवी लोकनिक इतिहास संदिग्ध भऽ जाइछ। कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे गणराज्यक रूपमे हुनका लोकनिक उल्लेख अछि मुदा कोनो प्रामाणिक इतिहास हुनका लोकनिक अद्यावधि नहि भेटल अछि। लिच्छवी जाति एवँ राष्ट्रक रूपमे जीवित रहलाह आ आठ सौ वर्ष बाद पुनः बिहारक इतिहासमे अपन उचित भूमिकाक निर्वाह करैत लगभग ७०० वर्ष धरि नेपालपर सेहो शासन केलन्हि मुदा तइयो कोनो एकटा प्रामाणिक इतिहास हुनका लोकनिक नहि भेटइयै। हितनारायण झाक शोध प्रबन्ध जे लिच्छवीपर छन्हि ताहुमे कोनो विशेष नव बात देखबामे नहि अवइयै आ ने कोनो नव तथ्यक उद्घाटने भेल अछि। नेपालक

लिच्छवीकेँ सूर्यवंशी लिच्छवी कहल गेल छन्हि। तिब्बती परंपराक अनुसार तिब्बतक प्रारंभिक शासककेँ **'लि–च–व्य'** कहल जाइत छलैक आ हुनका लोकनिककेँ विदेशी बुझल जाइत छलन्हि। एहिसँ इ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे लिच्छवीक एक शाखा नेपालमे बसल आ दोसर शाखा तिब्बतमे। नेपालमे लिच्छवी लोकनि राजतंत्रात्मक प्रणालीक समर्थक बनलाह। संभवतः अपन वैशालीक अनुभव हुनका राजतंत्रात्मक पद्धति केँ अपनेबापर बाध्य केने होन्हि से एकटा विचारणीय विषय। तिब्बतमे सेहो इ लोकनि राजतंत्रात्मक सत्ताक समर्थक बनि गेलाह। सब किछु होइतहुँ तिब्बत नेपाल आ वैशालीक लिच्छवीक मध्य एक प्रकारक सम्बन्ध बनले रहल आ हुनका लोकनिक आप अपनौती सेहो बनल रहलैन्ह। नेपालक लिच्छवी लोकनि ब्राह्मण आ बौद्ध धर्मक समर्थक रहलाह आ हुनके लोकनिक समयमे शैव आ शाक्तक प्रधानता सेहो बढ़ल।

जयदेव द्वितीय (नेपाल)क शिलालेखक अनुसार लिच्छवी लोकनि किछु दिन धरि मगधक शासक सेहो छलाह। हुनक पूर्वज सुपुष्पक जन्म पाटलिपुत्रमे भेल छलन्हि। सुपुष्पक जन्म संभवतः प्रथम शताब्दीमे भेल छलन्हि आ तखन कुषाण लोकनिक प्रधानता रहल होएत। इ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे ओ लोकनि कुषाणक सत्ताकेँ स्वीकार कए अपन अस्तित्वक रक्षा कएने होएताह। एहिमे सँ जे विशेष स्वाभिमानी रहल होएताह से अपन स्वतंत्रताक रक्षार्थ नेपाल दिसि बढ़ि गेल हेताह। कनिष्कक परोक्ष भेलापर पुनः लिच्छवी लोकनि अपन स्वतंत्रताक स्थापना करबामे संभव भेल होएताह। नेपालमे जाकए ओ लोकनि राजतंत्रात्मक पद्धतिकेँ अपनौलन्हि आ तैं संभवतः समुद्रगुप्त हुनका लोकनिकेँ जीति अपन राज्यक अंतर्गत कएने होएताह।

लिच्छवी राजकुमारीक विवाह एक महत्वाकाँक्षी साम्राज्यवादी राजकुमारक संग हैब एकटा आश्चर्यक बात बुझि पड़इयै। लिच्छवी लोकनि तखन स्वयं गणराज्यक सिद्धांतमे विश्वास करैत छलाह अथवा नहि से एकटा विचारणीय विषय। दोसर बात इ ओ लोकनि सेहो पाटलिपुत्रकेँ जीतकेँ ओहिपर राज्य करैत छलाह जाहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे लोकनि अपन पुरान आदर्शवादी गणराज्यक सिद्धांतक परित्याग कऽ चुकल छलाह। इहो संभव अछि जे जखन अजातशत्रुक हाथे ओ पराजित भेलाह तखन वैशालीक पुरान प्रतिष्ठा लुप्त भऽ चुकल छल आ ओहि मध्य जे महत्वाकाँक्षी राजनेता छलाह से समय पाबि मौर्य साम्राज्यक पराभव देखि मगधपर आक्रमण कए अपन हारक बदला चुकौलनि आ पाटलिपुत्रपर अपन शासन स्थापित केलन्हि। गणराज्यक सिद्धांतक प्रति हुनक सहानुभूति भने रहल होन्ह परञ्च वास्तविकता इ अछि जे गुप्त साम्राज्यक पूर्व उहो अप्रत्यक्ष रूपें राजतंत्रात्मक पद्धतिक समर्थक भऽ गेल छलाह आ चन्द्रगुप्त प्रथमकेँ होनहार देखि अपन पुत्रीसँ हुनक विवाह कराओल। मगध साम्राज्यक उत्कर्ष मे लिच्छवीक एहि योगदानसँ सहायता भेटलैक आ गुप्त साम्राज्यक शासन कालमे गणराज्य परम्पराक बचल खुचल अवशेष समाप्त भेल। इ एक एहेन विषय अछि जाहि दिसि विद्वानक ध्यान आकृष्ट नहि भेल छन्हि आ जाहिपर नीक जकाँ सोचल नहि गेल अछि। मिथिलाक इतिहासक दृष्टिकोणे इ एकटा अत्यंत महत्वपूर्ण शोधक विषय थिक।

कौमुदी महोत्सव नाटक एहि पक्षपर विशेष प्रकाश दैत अछि। एहि ग्रंथक आधारपर हम जनैत छी कल्याणवर्मनक पिता सुन्दरवर्मनक मृत्यु पाटलिपुत्रक रक्षा करैत भेलन्हि। ओहि समयमे पाटलिपुत्रपर चन्डसेन आ लिच्छवी घेरा डालने छलाह।

सुन्दरवर्मन क्षत्रिय पाटलिपुत्रक शासक छलाह। सुन्दरवर्मनक वंशकेँ मगध वंश (कोटकुल) कहल गेल छैक। सुन्दरवर्मन चण्डसेनकेँ अपन कृतक पुत्रक रूपमे ग्रहण केने छलाह। लिच्छवी लोकनि एहि मगध कुलक विरोधी छलाह तथापि चण्डसेन लिच्छवी राजकुमारीसँ विवाह केलन्हि परञ्च ताहि बीच बुढ़ारीमे सुन्दरवर्मनकेँ एकटा पुत्र उत्पन्न भेलन्हि जाहि दुआरे राजगद्दीपर चण्डसेनक अधिकारपर प्रश्नसूचक चेन्ह लागि गेलन्हि। मगधकुल होइतहुँ चण्डसेन पाटलिपुत्रपर अपन घेरा डललन्हि आ राजधानी कुसुमपुरकेँ चारूकातसँ घेर लेलन्हि। एहिकाजमे हुनका अपन सासुरक लोग (लिच्छवी) सबसँ बड़ड साहाय्य भेटलन्हि आ ओ विजयी भऽ मगधपर अपन राज्यक स्थापना केलन्हि। सुन्दरवर्मनक अपन पुत्र कल्याणवर्मन अपन प्रधानमंत्री मंत्रगुप्त आ सेनापति कुँजरक संग मिलि मगध राज्यकेँ बचेबाक अथक प्रयत्न केलन्हि। एहि बीच मगध राज्यक सीमापर सबर आ पुलिन्द जातिक लोग विद्रोह कऽ देलन्हि आ चण्डसेन हुनका लोकनिकेँ नियंत्रणमे अनबाक हेतु पाटलिपुत्र छोड़िकेँ बहरेला। इ विद्रोह मंत्रगुप्तक मंत्रणाक फल छल। चण्डसेनक अनुपस्थितिमे मंत्रगुप्त नगर परिषदक सदस्यक संग मंत्रणा केलन्हि आ कल्याणवर्मनक हेतु मार्ग प्रशस्त सेहो। कल्याणवर्मन तुरंत पाटलिपुत्र बजाओल गेल आ हुनका राजगद्दीपर बैसाओल गेल। सुरसेन आ मथुरा तथा यादवक संग मित्रताक सम्बन्ध स्थापित भेल। मथुराक राजकुमारी कीर्त्तिमतिसँ कल्याणवर्मनक विवाह भेल।

स्वर्गीय काशी प्रसाद जायसवालक कथन छन्हि जे इएह चण्डसेन चन्द्रगुप्त प्रथम छलाह आ लिच्छवीक संग हुनक विवाह भेल छलन्हि। वनस्फर (कनिष्कक राज्यपाल)क समयमे लिच्छवी लोकनि वैशाली दिसि चल आएल छलाह परञ्च कनिष्कक अवसान भेलापर ओ पुनः पाटलिपुत्रक सीमा धरि अपन अधिकार बढ़ा लेने छलाह। लिच्छवी लोकनिक प्रोत्साहनेपर चण्डसेन अपन कृत्रिम पिताक विरूद्धमे विरोध कएने छलाह। लिच्छवी लोकनिकेँ इ पसिन्न नहि छलन्हि जे कल्याणवर्मन मगधक गद्दीपर रहैथ। कल्याणवर्मनकेँ भगेबाक प्रयास भेल–कल्याणवर्मन जे मगधमे बजाकेँ गद्दीपर बैसाओल गेल छलाह ताहि उत्सवक हेतु ओ कौमुदी महोत्सव मनौने छलहि आ ओहि घटनासँ प्रेरित भऽ कवियित्र **किशोरिका वज्जिका कौमुदी महोत्सव** नामक नाटकक रचना केलन्हि। एहिमे लिच्छवीकेँ म्लेच्छ आ चण्डसेनकेँ कारस्कर कहल गेल छैक। चण्डसेनक विवाह लिच्छवीसँ भेला उत्तर ओ कल्याणवर्मनकेँ पराजित करबामे एवँ पुलिन्द एवँ शवर लोकनिक विद्रोहकेँ दबेबामे समर्थ भेलाह आ पाटलिपुत्रमे एक नव राजवंशक स्थापनामे सेहो। प्रयाग प्रशस्तिक **कोटकुल**केँ जायसवाल एहि मगध कुलसँ मिलबैत छथि।

**कौमुदी महोत्सव**क घटनाक प्रामाणिकताक लऽ कए विद्वान लोकनिमे बड़ड विभेद छन्हि। चन्द्रगुप्तक पिता घटोतकचगुप्त स्वयं राजा छलाह परञ्च **कौमुदी महोत्सव**मे चण्डसेनकेँ हटेबाक उल्लेख अछि। दोसर गप्प इहो अछि जे ओहि कालमे मगधपर लिच्छवीक प्रधानता छल। जखन गुप्तवंशक उत्थान होइत छलैक तखन पाटलिपुत्र धरि लिच्छवी लोकनि अपन प्रसार कऽ चुकल छलाह। ताहि कालमे कहल जाइत अछि जे मगधमे कोनो क्षत्रिय वंशक शासन छल जकरा उखाड़बाक लेल दक्षिण–पश्चिमसँ गुप्त लोकनि बढ़ल अबैत छलाह आ एम्हर पूव–उत्तर दिसिसँ लिच्छवी लोकनि। एवँ प्रकारे राजनैतिक दृष्टियें गुप्त आ लिच्छवी दुनूक सम्मिलित उद्देश्य छल मगधक क्षत्रिय राजवंशकेँ अंत करबाक। एहना स्थितिमे दुनूक बीच वैवाहिक सम्बन्धक स्थापना तत्कालीन मान्य राजनैतिक परिकल्पनाक प्रमुख अंग छल आ तैं इ

कोनो अस्वाभाविक बात नहि बुझाइत अछि। गुप्तक पूर्वक स्थिति पाटलिपुत्रमे कि छल से निश्चित रूपे कहब अंसभव। किछु गोट एक मत छन्हि जे प्राक्–गुप्त कालमे मगधमे शक–सीथियन लोकनिक शासन छल परञ्च जायसवाल एहि बातकेँ नहि मानैत छथि आ हुनक विश्वास छन्हि जे वर्मन लोकनिक शासन ताहि दिन (**कौमुदी महोत्सवक अनुसार**)मे मगधमे छलन्हि। वर्मन लोकनिकेँ किछु गोटए आन्ध्रक वंशज सेहो मनैत छथि।

लिच्छवीक संग गुप्तक वैवाहिक सम्बन्ध प्राचीन भारतीय इतिहासक एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि आ एकरे फले गुप्त साम्राज्यक उत्कर्ष संभव भेल। लिच्छवी आ मगधक एहि सम्बन्धसँ दू राज्यक मिलन भेलैक आ गुप्त साम्राज्यक नींव पड़लैक। गुप्त अभिलेखमे जाहि ढ़ँगे लिच्छवीकेँ महत्व देल गेल छैक ताहिसँ प्रामाणित होइत अछि जे तखन धरि लिच्छवीक महत्व घटल नहि छलैक। इ ठीक जे एहि वैवाहिक सम्बन्धक बाद आ गुप्त साम्राज्यक स्थापनाक संगहि गणराज्यक अवसान भऽ गेलैक मुदा लिच्छवी आ वैशाली तइयो इतिहासमे जीवित रहल। गुप्त साम्राज्यक पतन पछाति विदेह–वैशालीक प्राचीन गणराज्यक गौरव समाप्त भऽ गेल आ परञ्च दुनूक नाम इतिहासमे अमर रहल। फाहियान, हियुएन संग, इत्सिंग, सूंगयुन आदि चीनी यात्री लोकनि एतए एलाह आ एहिठामक वैभवकेँ देखि आश्चर्य चकित भऽ गेलाह। ६३५मे जखन हियुएन संग एते आएल छलाह तखन वैशाली पतनोन्मुख छल। प्राचीन अवशेष मात्र लोकक मोनमे सुरक्षित छल। एतेक बादो वैशालीक प्रतिष्ठा विदेशोमे बनल छल तकर सबसँ पैघ प्रमाण इ अछि ७८९ ई.मे अराकान (बर्मा)क चन्द्रवंशक शासक ओतए वैशाली नामक एकटा नगर बसौने छलाह। करीब २०० वर्ष धरि इ बौद्ध धर्मक एकटा प्रधान केन्द्र बनल छल। इएह स्थान आब **वेत्थाली** नामे प्रसिद्ध अछि। इ अखन अम्याब जिलामे अछि। बर्मा परम्परामे एकटा कथा सुरक्षित अछि जाहिमे कहल गेल अछि जे बर्माक राजा अनिरूद्ध (१०४४–१०७७) वैशालीक एकटा राजकुमारीसँ विवाह केने छल आ ओकर पुत्र जे बर्माक राजा भेलैक से बड्ड नामी आ प्रतापी भेलैक।

**चीनी यात्री आ वैशाली:-** फाहियानक यात्रा विवरणसँ वैशालीक महत्वक पता लगइयै। वैशाली बौद्ध धर्मक प्रधान केन्द्र छल आ तैं चीनी यात्री एते अबैत छलाह। एहिठाम बुद्ध अपन परिनिर्वाणक घोषणा कएने छलाह। षष्ठम शताब्दीमे दोसर चीनी यात्री वांग–हियुएन सी दुइ बेर वैशाली आएल छलाह आ ओ अपन दोसर यात्रामे बौद्ध महात्मा सबकेँ ओढ़न–पहिरन दानमे देने छलथिन्ह। ओहि शताब्दी तेसर चीनी यात्री सुंग–युन सेहो आएल छलाह। हुनका द्वारा वर्णित बातमे ४० टा देश सबहिक नाम अछि जाहिमे टी एल. लो **(Tiel–Lo)** नामक एक स्थान छैक जकरा किछु गोटए तिरहुत मनैत छथि। सुंग–युनक अनुसारे एहि प्रदेशपर हूण लोकनिक आधिपत्य छल। सुंग–युनक एहि विवरणक समर्थन आन कोनो साधनसँ नहि होइछ आ तिरहुतपर हूण साम्राज्यक प्रभावक कोनो टा प्रमाण एखन धरि नहि भेटल अछि तैं **Tiel–Lo**केँ मानबामे संदेहक गुंजाइश बनल अछि। हियुएन संग सेहो तिरहुत आएल छलाह। ओ अशोक द्वारा निर्मित्त स्तूपक उल्लेख कएने छथि। हुनक विवरणसँ इहो ज्ञात होइछ जे हुनका समय तिरहुतपर हर्षवर्धनक आधिपत्य छल आ हुनक **'पाँच भारत'**मे तिरहुतकेँ एकटा प्रमुख स्थान प्राप्त छलैक।

हर्षक मृत्युक पछाति वांग–हियुएन–सी नामक एकटा शिष्टमंडलक नेता बनिकेँ आएल छलाह आ हुनका तिरहुतक गवर्नर अरूणाश्वसँ युद्ध भेल छलैन्ह जकर विवरण

यथास्थान देल जाएत। सातम शताब्दीमे **इत्सिंग** नामक एकटा आर चीनी यात्री तिरहुत आएल छलाह। चीनी यात्री लोकनिक लेखसँ इ स्पष्ट होइछ जे उत्तर विहारमे किछु एहेन महत्वपूर्ण धार्मिक केन्द्र छल जतए चीनी यात्री लोकनि अपन श्रद्धा प्रदर्शित करबाक हेतु जाइत छलाह। एहि सब सिन्–चे मंदिर सर्वाधिक महत्वपूर्ण केँन्द्र छल जाहिठाम निम्नलिखित यात्री आएल छलाह–

i) ह्वेन–चिउ(प्रकाशमति) **'सिनचे'**मे बहुत दिन धरि रहि नेपाल आ तिब्बत बाटे घुरल छलाह।
ii) ताओ–हि (श्री देव) कोशी प्रांतमे रहैत छलाह।
iii) सिन–चिउ (चरित वर्मा) **सिन्–चे** मंदिरमे रहैत छलाह।
iv) चिंग–हिंग (प्रज्ञादेव) **सिन्–चे** मंदिरक निरीक्षण केने छलाह।
v) **ताँग ने**–वैशाली आ कोशी देशक यात्रा के ने छलाह।
vi) **ह्वीन–लुन** (प्रज्ञावर्मा) **सिन्–चे** मंदिरमे आएल छलाह।

**सिन्–चे** मंदिरक वास्तविक स्थलक जानकारी अद्यावधि प्राप्त नहि अछि। परञ्च इ मंदिर छल कतहु तिरहुतमे–वैशाली आ कोशी प्रदेशक मध्य। इ निश्चय एकटा प्रसिद्ध बौद्ध केन्द्र रहल होएत। सुदुर पूर्वक यात्री लोकनि एहिठाम एकत्रित होएत छलाह आ धार्मिक उद्देश्यक पूर्तिक हेतु एतए रहितो छलाह। प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्रक हिसाबे सेहो इ स्थान प्रसिद्ध रहल होएत।

अध्याय–६

# ३२० ई.सँ १०९७ ई. धरिक मिथिलाक राजनैतिक इतिहास

गुप्तवंशक उत्थान भारतीय इतिहासमे एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि। मिथिलाक हेतु एकर महत्व एहि लेल बढ़ि जाइत छैक कि मिथिलाक वैशालीक राजकुमारीक संग विवाह भेला उत्तरे चन्द्रगुप्त प्रथम साम्राज्य निर्माण करबामे सफल भेलाह। दोसर बात इहो जे एहि वैवाहिक सम्बन्धक बाद वैशालीक प्राचीन गणराज्यक परम्परा सेहो संभवतः समाप्त भऽ गेल आ वैशाली आब पूर्णरूपेण मगध साम्राज्य एकटा प्रमुख अंग बनि गेल। लिच्छवीक सम्बन्ध जतवा जे परिकल्पना भऽ सकइयै तकर विवेचन हमरा लोकनि पूर्वहिं कऽ चुकल छी आ ओहिसँ इहो स्पष्ट भेल अछि जे कोनो ने कोनो प्रकारे गुप्त साम्राज्यक उत्कर्षक पूर्वहिंसँ लिच्छवी आ पाटलिपुत्रक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध छल। जँ लिच्छवीक कोनो महत्व नहि रहैत तँ चन्द्रगुप्त प्रथम हुनका सब संग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापिते किएक करितैथि। गुप्त लोकनिक जे साम्राज्य विजयक सूची भेटइत अछि ताहिमे वैशालीक नाम नहि अछि यद्यपि नेपालक नाम अछि आ तैं आधारपर इ अनुमान लगायब युक्तिसंगत बुझि पड़इयै जे वैशाली तँ प्रारंभहिंसँ हुनका लोकनिक साम्राज्यक अंग छल। वैशालीक शक्ति हुनका लोकनिक साम्राज्य निर्माणमे सहायक भेलन्हि। पुराणमे वर्णित क्षेत्रमे वैशालीक नाम नहि अछि–

> "*अनु–गंगा–प्रयागंच साकेतम् मगधिस्तथा*
> *एतान जनपदान सर्व्वान् भोक्ष्यंते गुप्तवंशजाः॥*

पतंजलिक एहि प्रकार एकटा वाक्य तुलना करबाक योग्य अछि–

> "*अनु गंगं–हस्तिनापुरम्–*
> *अनुगंगं वाराणसी;*
> *अनु शोणम् पाटलिपुत्रम्*"–

समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्तिमे सेहो वैशालीक उल्लेख नहि रहब एहि तथ्यक समर्थन करैत अछि जे वैशालीक विजय करबाक आवश्यकता गुप्त लोकनिक हेतु आवश्यक नहि छल कारण इ तँ गुप्त लोकनिक अपन छलन्हि आ कुमार देवीक जे महत्व सिक्का आदिमे भेटल छन्हि सेहो एहि बातकेँ पुष्ट करइयै। समुद्रगुप्तकेँ **'सर्व राजोच्छेत्ता'** कहल गेल छन्हि।

वैशालीक प्रधानताक प्रमुख कारण इएह छल जे कुमार देवीसँ विवाह केला उत्तरे गुप्त लोकनि लिच्छवीक सहायतासँ पाटलिपुत्रपर अधिकार करबामे समर्थ भेल छलाह। कुमार देवीक दिसिसँ हुनका लोकनिकेँ वैशाली राज्य भेटल छलन्हि। समस्त तिरहुत गुप्त साम्राज्यक एकटा प्रमुख केन्द्र छल आ वैशाली ओहि प्रांतीय राज्यक राजधानी। वैशालीक महत्व तँ अहुसँ सिद्ध होइछ जे एहिठामक राज्यपाल युवराजे

होइत छलाह आ गोविन्द गुप्त युवराज एहिठामक राज्यपाल छलाह तकर प्रमाण अछि वैशालीसँ प्राप्त अभिलेख। गुप्तलेखमे एहि क्षेत्र तीरभुक्ति कहल गेल छैक। **'लिच्छवी दौहित्र'** कहिकेँ अपनाकेँ गौरवान्वित बुझनिहार समुद्रगुप्तक उक्तिसँ एतवा धरि स्पष्ट अछि जे ताहि दिनमे लिच्छवीक प्रतिष्ठा आ प्रभुत्व दुनू बनल हेतैन्ह आ वैवाहिक सम्बन्धक कारणे इ दुनू चीज गुप्त लोकनिकेँ स्वयंमेव उपलब्ध भेल होएतन्हि। मौर्य साम्राज्यक पछाति जे विकेन्द्रीकरणक प्रवृत्ति बढ़ल आ मगधपर बरोबरि आक्रमणक ताँता लागल रहल ताहिसँ लाभ उठाए लिच्छवी लोकनि अपन पुरान गौरवकेँ पुर्नस्थापित करबामे सफल भेलाह आ अपन सीमाकेँ नेपालसँ तिब्बत धरि बढ़ौलन्हि आ क्रमेण पाटलिपुत्रक सीमा धरि सेहो। जँ से बात नहि रहैत तँ चन्द्रगुप्त प्रथम अपन रानीक नामे सिक्का किएक बनावतैथ अथवा समुद्रगुप्त अपनाकेँ लिच्छवी दौहित्र कहबा किएक गौरवान्वित बुझितैथ। वैशालीक उत्खननसँ प्राप्त एकटा मोहरपर लिखल अछि—"महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त पत्नी महादेवी श्री ध्रुवस्वामिनी"—

ओहिसँ प्राप्त सामग्रीक आधारपर इ बुझबामे अवइयै जे तिरहुत प्रांतीय शासनक एकटा प्रमुख केन्द्र छल आ से तीरभुक्तिक विषयमे अनेक सामग्री भेटल अछि जाहिसँ ओत्तुका तत्कालीन शासन पद्धति एवँ समाजक व्यवस्थाक सम्बन्धमे ज्ञान प्राप्त होइछ। प्रांतीय आ नगर शासनक एहेन सुन्दर चित्रण आनठाम भेटब अंसभव। चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्यक समयमे एहिठामक राज्यपाल छलाह युवराज गोविन्दगुप्त। गुप्तयुगमे मिथिलाक सीमा पश्चिममे श्रावस्ती भुक्तिसँ मिलैत छल आ पूवमे पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तिक किछु अंश सेहो मिथिलाक अंतर्गत रहल होएत जतए करण कायस्थ लोकनि **"दत्त"** पदवीधारी कैक पुस्त धरि राज्यपालक पदपर रहला आ जनिक अभिलेख सम्प्रति उपलब्ध अछि। मिथिलाक सीमा ताहि दिनमे पश्चिममे श्रावस्ती भुक्ति, उत्तरमे नेपाल, दक्षिणमे श्रीनगर भुक्ति आ पूवमे पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तिक सीमासँ मिलैत जुलैत छल आ इ गुप्त शासनक एकटा प्रधान केन्द्र छल आ एकर महत्व एतेक छलैक जे राज्यवंशक लोक स्वयं एकरा अपना चार्जमे रखैत छलाह। गुप्त साम्राज्यक शासन पद्धतिक अध्ययन बसाढ़क उत्खननसँ प्राप्त सामग्रीक बिनु संभव नहि छल। अखनो ओहिमे कतेक रास एहनो शब्द अछि जकर अर्थ स्पष्ट नहि भऽ रहल अछि।

निम्नलिखित प्रशासनिक शब्दावली ओहिठामसँ प्राप्त अछि—

i) उपरिक
ii) कुमारामात्य
iii) महाप्रतिहार
iv) तलवर
v) महादण्डनायक
vi) विनय स्थिति स्थापक
vii) भट्टाश्वपति
viii) युवराजपादीय कुमारामात्याधिकरण
ix) रणभाण्डागाराधिकरण
x) बलाधिकरण
xi) दण्डपाशाधिकरण
xii) तीरभुक्तौ विनयस्थिति स्थापकाधिकरण
xiii) वैशाल्याधिष्ठानाधिकरण

xiv) श्री परमभट्टारक पादीय कुमारामात्याधिकरण
xv) तीरभुक्त्युपरिकाधिकरण–

वैशालीसँ प्राप्त अवशेष सबहिक आधारपर इ प्रामाणिक रूपें कहल जा सकइयै जे गुप्तयुगमे एहि क्षेत्रमे एकटा सुसंगठित शासन प्रणाली छल आ एकरे आदर्श मानि गुप्त साम्राज्यमे प्रांतीय आ स्थानीय शासन प्रणालीक स्थापना भेल छल। दामोदरपुरसँ प्राप्त ताम्रलेख एहिबातक साक्षी अछि। भुक्ति ताहि दिनमे प्रांत अथवा प्रमण्डलक द्योतक छल। **अधिकरण** शब्द सचिवालयक द्योतक थिक आ प्रत्येक विभागकेँ अपन–अपन अधिकरण होइत छलैक जेना कि उपरोक्त विवरणसँ स्पष्ट अछि। प्रांतमे प्रसिद्ध होइत छलाह राज्यपाल, सेनापति, प्रतिहार आ अन्यान्य पदाधिकारी। युवराजक अधीन सेहो मंत्री लोकनि रहैत छलथिन्ह आ कोषाध्यक्ष, युद्धविभाग, न्याय विभाग, नियंत्रण विभाग आदिक पदाधिकारी एवँ कर्मचारी लोकनि सेहो प्रांतीय सचिवालयमे रहैत छलाह। स्थानीय शासनक दृष्टिकोणे वैशालीक अपन अलग अधिष्ठान स्थल आ ओकर सचिवालय–कार्यालय सेहो फराके रहैत छल। साम्राज्यक शासन यंत्रक अपन मुख्यालय होइत छलैक जे प्रांतीय कार्यालय कहबैत छल आ स्थानीय शासनक अलग कार्यालय होइत छलैक। स्थानीय कार्यालय होएब अहुलेल आवश्यक छल कि ओहि संस्थाकेँ स्थानीय मामलापर विचार करए पड़इत छलैक। वैशाली एकटा प्रसिद्ध व्यापारक केन्द्र सेहो छल आ व्यापारी लोकनिक सेहो अपन संगठन छलन्हि जे **"श्रेष्ठी–सार्थवाह–कुलिक–निगम"** शब्दसँ ज्ञात होइछ। प्रांतीय शासन विभागक अतिरिक्त एहिठामक स्थानीय शासन सेहो वेस संगठित छल जेना कि उपयुक्त सूचीसँ ज्ञात होइछ। वैशालीक नगर शासन व्यवस्था सुन्दर छल।

उदानकूप परिषदक उल्लेखसँ स्थानीय शासनक बोध होइछ। वैशालीक व्यावसायिक संगठन, निगम, श्रेणी, सार्थवाह, कुलिक आदि सेहो अपन मोहर रखैत छलाह। बैंक प्रणाली नीक जकाँ वैशालीमे संगठित छल–**'कुलिक'** शब्द एकर संकेत थिक। **'प्रथम कुलिक'**क उल्लेख सेहो कैकटा मोहरपर भेटइत अछि। वसाढ़, भीठ, बंगाल आदि स्थानक उत्खननसँ प्राप्त सामग्रीक आधारपर इ कहल जा सकइयै जे गुप्तकालीन शासन–व्यवस्थाक स्वरूपमे एकरूपता छल आ एकर श्रेय गुप्त सम्राट लोकनिकेँ छलन्हि। ओना वैशाली तँ अतिप्राचीन कालसँ प्रशासनक प्रधान केन्द्र बनल आ ओहिठाम गणतांत्रिक परम्पराक प्रभाव गुप्तयुगक शासन संगठनमे सेहो देखल जा सकइयै। समुन्नत आर्थिक जीवनक हेतु सुगठित शासन प्रणाली आवश्यक बुझल जाइत अछि आ वैशालीकेँ जे बैंकक प्रणाली सेहो संगठित छल से उपरोक्त कथनकेँ आर समर्थन दैत अछि। **श्रेष्ठी, कुलिक, निगम** आदिक अलग–अलग सभापति होइत छलैक आ ओहिमे जे श्रेष्ठ होइत छलहि हुनका **"प्रथम"**क विशेषसँ विभूषित कैल जाइत छलन्हि। व्यापारी आ बैंकर लोकनि अपन पत्राचार आ कारोबारमे अपन–अपन मोहरक व्यवहार करैत छलाह। ओहिठाम बहुत मुद्रापर श्रेष्ठी निगमस्य सेहो उल्लिखित अछि आ बहुतो गोटएक नाम सेहो ओहि मुद्रा सबसँ भेटइत अछि। जेना उदाहरणार्थ निम्नलिखित नाम देल जा सकइयै– हरि, उमाभटट, नागसिंह, सालिभद्र, धनहरि, उमापलित, वर्ग्ग, उग्रसेन, कृष्णदत्त, सुखित, नागदत्त, गोण्ड, नन्द, वर्म्म, गौरिदास–इ सब केओ कुलिक छलाह। सार्थवाहमे डोड़डकक नाम आओर श्रेष्ठीमे षष्ठिदत्त, आ श्रीदासक नामक उल्लेख अछि। एहने एक मुद्रा बेगूसरायसँ प्राप्त भेल अछि जाहिपर **"सुहमाकस्य"** आ **"श्री समुद्र"** लिखल अछि। पुण्ड्रवर्धन भुक्तिक ओहि क्षेत्रमे जे

तीरभुक्तिक भौगोलिक सीमाक समीप पड़इत छल ताहिपर कैक पुस्त धरि जे **'दत्त'** करण (कायस्थ लोकनि) राज्यपाल छलाह तकर प्रमाण गुप्त अभिलेखसँ भेटइत अछि। चिरातदत्त, जयदत्त, ब्रह्मदत्त, स्थाणुदत्त, जीवदत्त, आदिक नाम गुप्त अभिलेखमे अछि। चिरातदत्त उपरिक छलाह। प्रांतीय शासनक हेतु जे बोर्ड होइत छल ताहिमे श्रेष्ठी, निगम, कुलिक, सार्थवाहक एक एकटा प्रतिनिधिक अतिरिक्त ओहिमे प्रथम कायस्थ सेहो रहैत छलाह। उपरिकक पदक वंशानुगत हैव एहि बातक संकेत दैत अछि जे ताहि दिनमे सामंतवादी प्रवृत्तिक विकास भऽ चुकल छल। पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तिक सीमा हिमालयमे वाराह क्षेत्र धरि पसरल छल आ ओहिठाम कोकामुख स्वामी नामक एकटा प्रधान तीर्थ सेहो छल– तैं एहि क्षेत्रकेँ मिथिलाक क्षेत्र मानव स्वाभाविके कारण इ मिथिलाक भौगोलिक सीमामे पड़इयै। गुप्तयुग धरि मिथिला गुप्त साम्राज्यक एकटा प्रमुख अंग बनल रहल।

गुप्त साम्राज्यक अंतिम दिनमे मिथिलाक इतिहासमे पुनः एकटा अनिश्चितताक स्थिति आबि गेल। गुप्त लोकनिक एकटा प्रांतीय राज्यपाल यशोधर्मन एहि स्थितिसँ लाभ उठाए अपन अधिकारक विस्तारमे लागि गेलाह आ लौहित्य (असम) धरिक क्षेत्रकेँ जीतकेँ अपना अधीनमे केलन्हि। एहि क्रममे ओ पुण्ड्रवर्द्धनक उपरिक दत्त लोकनिकेँ पराजित कए ओहु क्षेत्रपर अपन अधिकार बढ़ौलन्हि आ दत्त लोकनिक पुस्तैनी गवर्नरी एकर बाद समाप्त भऽ गेलैन्ह। एहि आधारपर हम इ अनुमान लगा सकैत छी जे किछु दिनक हेतु यशोधर्मनक प्रभुत्व मिथिलोमे अवश्य रहल हेतैन्ह। ५३३क मंदसोर अभिलेखसँ हमरा लोकनिकेँ उपरोक्त बातक ज्ञान होइछ। यशोधर्मन हूण लोकनिकेँ पराजित कए यशक अर्जन कएने छलाह आ तैं भारतमे ताहि दिनमे हुनक प्रतिष्ठा विशेष छलन्हि। परञ्च हुनक विजयाभियान बहुत दिन धरि नहि टिकलन्हि आ शीघ्रहिं हुनक राज्य समाप्त भऽ गेलैन्ह। मिथिलाक हेतु अनिश्चितताक अवस्था बनले रहल।

यशोधर्मन ओम्हर अपन डफली बजा रहल छलाह आ एम्हर पूबमे उत्तर गुप्त लोकनि गुप्त साम्राज्यक पतन (५५४ इ.)सँ लाभ उठाए अपन अस्तित्वकेँ सुरक्षित करबामे एवँ मजबूत करबामे लागि गेल छलाह। बिहारमे ओहि युगमे मौखरी लोकनि सेहो अपन अधिकार जमेबाक चेष्टामे लागल छलाह। एहि अनिश्चितताक स्थितिसँ तँ सब केओ लाभ उठबे चाहिते छलाह आ तैं चालूक्य कीर्त्तिवर्मन सेहो अंग, मगध, आ वंगपर आक्रमण केलन्हि। उत्तरगुप्त, मौखरी आ अन्यान्य शासकक बीच ताहि दिन आधिपत्यक हेतु संघर्ष चलि रहल छल। जीवित गुप्त अपन प्रयासमे सफल भेल होएताह से अन्दाज लगाओल जा सकइयै। मगधक शासक महासेन गुप्त असम धरि अपन अधिकार क्षेत्रक विकास केलन्हि आ तैं इ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे ओ मिथिलापर सेहो अपन आधिपत्य कायम केने हेताह। ताहि दिनक स्थिति इ छल कि जहाँ कोनो एक राज्य कमजोर भेल कि दोसर ओकरापर टुटि पड़इत छल आ ओकरा अपना अधीन कऽ लैत छल। संभव अछि जे मौखरी लोकनि अपन साम्राज्य विकासक क्रममे मिथिलोकेँ अपना अधीनमे कऽ लेने होथि। कटरा (मुजफ्फरपुर)सँ जीवगुप्तक एकटा अभिलेख भेटल अछि परञ्च ओहिसँ राजनैतिक इतिहासपर तत्काल कोनो आलोक नहि पड़ि रहल अछि। कामरूपक वर्मन वंशक शासक लोकनि सेहो मिथिलाक पूर्वी क्षेत्र पूर्णियाँपर कैक पुस्तसँ अधिकार जमा लेने छलाह। गुप्त साम्राज्यक पतनक बाद मिथिलाक इतिहास अंधकारमय भऽ जाइत अछि आ कोनो संगठित एवँ नियोजित इतिहासक संकेत कतहुसँ नहि भेटइत अछि। चारूकात जे

राज्य विस्तारक संघर्ष चलि रहल छल ताहिमे मिथिला एकटा प्रमुख शिकार छल आ विभिन्न महत्वाकाँक्षी राजा लोकनि शिकारीक काज करैत छलाह।

हर्षवर्द्धनक अमलमे मिथिला हुनक साम्राज्यक अंश छल एहिमे कोनो सन्देह नहि। हर्षक समय धरि अबैत–अबैत राजनीतिक क्षेत्रमे पाटलिपुत्रक स्थान कन्नौज लऽ लेने छल आ पाटलिपुत्रक महिमा घटि चुकल छल। हर्षक राजधानी छल कन्नौज जकरा महोदय श्री सेहो कहल जाइत छलैक आ जकर महिमाक विवरण चीनी यात्री हियुएन सांग प्रस्तुत कएने छथि। हर्षक पूर्व शशाँक मिथिलापर शासन केने होथि से संभव कारण ताहि दिनमे शंशाँक पश्चिममे अपन आधिपत्य बढ़ेबाक हेतु सब तरहे प्रयत्नशील छलाह। प्रभाकर वर्द्धनक पुत्र राज्यवर्द्धनक हत्या बंगालक शशाँकक हाथे भेल छलन्हि।

शासक भेला उत्तर हर्ष अपन राज्यवर्द्धनक मृत्युक बदला लेबाक हेतु कटिबद्ध छलाह आ ओहि उद्देश्यसँ प्रेरित भऽ ओ अपन सैनिक अभियानक श्री गणेश केलन्हि। शशाँक पराजित भेलाह आ अपना सन मुँह बनाकेँ अपन पराजयक घूंट पीबैत रहलाह। हर्ष लगातार ६ वर्ष धरि अपन अभियान जारी रखलन्हि आ उत्तर भारतक विशिष्ट भागपर अपन अधिकार जमौलन्हि। चीनी यात्रीक अनुसार ओ **'पाँचो भारत'** (जाहिमे मिथिला सेहो सम्मिलित छल) जीति कए उत्तर भारतमे स्थायित्व अनलन्हि– **'पाँचो भारत'** भेल स्वराष्ट्र (पंजाब), कान्यकुब्ज, मिथिला, गौड़, तथा उत्कल। ६४१ इ.मे ओ मगधपर सेहो अपन आधिपत्य कायम केलन्हि आ भारतक चारूकातक राजाकेँ सैतलन्हि। गुप्त साम्राज्यक पतन भेलापर जे एकटा अनिश्चितताक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल छल तकरा हर्ष समाप्त केलन्हि आ समस्त उत्तर भारतपर एकटा स्थायी शासनक रूपरेखा प्रस्तुत केलन्हि। ओ समस्त भारतकेँ पुनः एकछत्र शासनक अधीन करए चाहैत छलाह आ हुनक दुश्मन पुलकेशिन द्वितीय हुनका **"सकलोतरापथस्वामी"** कहने छथिन्ह। हर्षक शासन तँ बहुत दिन धरि नहि रहल तथापि हर्षक महत्व एहि लेल अछि जे हर्ष अपना समयमे एकटा स्थायित्वक रूपरेखा प्रस्तुत कएने छलाह जे हुनका परोक्ष भेलापर समाप्त भऽ गेल।

हर्षक समयमे भारतमे सामंतवादक पूर्ण विकास भऽ गेल छल आ हर्षक शासन प्रणालीपर सेहो एकर प्रभाव देखबामे अवइयै। हियुएन सांग सेहो एहि बातक साक्षी छथि। हर्ष स्वयं घुमि–घुमिकेँ अपन शासनक निरीक्षण करैत छलाह आ जागीरक रूपमे अपन कर्मचारी आ सैनिककेँ वेतन दैत छलाह। शासन संगठनमे ओ मौर्य आ गुप्तसँ प्रभावित छलाह आ हुनक साम्राज्य प्रांत, भुक्ति आ विषयमे विभाजित छल। तीरभुक्ति शासनक एकटा प्रधान केन्द्र छल आ हर्षक समयमे ओहिठाम अर्जुन अथवा अरूणाश्व नामक एक महत्वाकाँक्षी व्यक्ति राज्यपाल छलाह। हर्षक देहावसान भेलापर पुनः राज्यमे अराजकता पसरि गेल आ महत्वाकाँक्षी अर्जुन ओहिसँ लाभ उठाकेँ राज्यकेँ हड़पि लेलन्हि आ स्वयं शासक बनिकेँ बैसि गेलाह। एकर अर्थ इ होइछ जे हर्षक समयमे तीरभुक्ति एक महत्वपूर्ण प्रांत छल आ एहिठामक राज्यपालक शक्ति आन राज्यक अपेक्षा विशेष छलैक। अर्जुन (अरूणाश्व) महात्वाकाँक्षी होइतो योग्य सैनिक एवँ संगठन कर्त्ता सेहो रहल होएत आ परिस्थिति अनुकूल भेला उत्तर ओहिसँ लाभ उठौने होएत।

**तिब्बती आक्रमण:-** हर्ष अपन मृत्युक पूर्वहिं चीनक सम्राटक ओतए एकटा शिष्टमण्डल (दूत मण्डल) पठौने छलाह आ ओकरे उत्तरमे चीनक सम्राट सेहो एकटा दूतमण्डल हर्षवर्द्धनक दरबार पठौने छलाह आ ओहि दूतमण्डलक नेता छलाह वाँग–

हियुएन–सी। वाँगक नेतृत्वमे जखन चीनी दूतमण्डल भारत पहुँचल तखन हर्षक मृत्यु भऽ चुकल छल आ अरूणाश्व समस्त राज्यकेँ हड़पिकेँ शासक बनि चुकल छलाह। ओहि दूतमण्डलक संग हुनक व्यवहार तँ अशोभनीय भेवे केलन्हि आ संगहि ओ दूतमण्डलकेँ बेइज्जत सेहो केलन्हि। वाँग भागिकेँ नेपाल चलि गेलाह आ ओतएसँ तिब्बत सेहो। तिब्बतमे ताहि दिनमे शासक छलाह प्रसिद्ध श्रौंग–सान–गंपो। श्रौंग, वाँगकेँ १२०० चुनल तिब्बती सैनिक देलथिन्ह आ नेपालसँ सेहो हुनका ७००० सेना भेटलन्हि। तिब्बती–नेपाली सहयोगसँ वाँग अरूणाश्वकेँ पराजित कए उत्तरी बिहार अथवा तिरहुतपर अपन प्रभाव जमौलन्हि। अर्जुनक विद्रोहकेँ दबाओल गेल आ ओ भागबाक प्रयास केलन्हि मुदा हुनका गिरफ्तार कऽ लेल गेल आ चीनक सम्राटक ओतए बंदीक रूपमे उपस्थित कैल गेल। कहल जाइत अछि– जे वाँगक एहि प्रयासमे कामरूपक भास्करवर्मन सेहो सहायक भेल छलथिन्ह।

इ घटना तँ ओना देखलासँ सामान्य बुझि पड़इयै परञ्च ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ इ एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि जकर संक्षिप्त विवेचन आवश्यक बुझना जाइत अछि। अर्जुन अथवा अरूणाश्वक सम्बन्धमे पूर्ण जानकारी नहि अछि परञ्च ओ तीरभुक्तिक राज्यपाल छलाह से निश्चित अछि आ हर्षक परोक्ष भेलापर ओहि साम्राज्यक अधिकारी सेहो भऽ गेला। वाँगक संग एहि प्रकारक व्यवहार ओ किएक केलन्हि से बुझबामे नहि अवइयै। वाँग स्वयं सब मिलाकेँ चारि बेर कूटनीतिक काजक प्रसंग भारत आएल छलाह आ भारत विवरणक सम्बन्धमे हुनक एकटा पोथी सेहो उपलब्ध अछि। पोथीक मूल तँ लुप्त भऽ गेल अछि मुदा ओकर अंशकेँ संकलित कए ताओचेन नामक एक व्यक्ति ओकरा सुरक्षित रखने छथि। ताँग वंशक इतिहासमे भारतपर वाँगक आक्रमणक विवरण भेटइयै जाहिमे इ कहल गेल अछि जे वाँगक दूतमण्डल पहुँचबाक किछुऐ पूर्व शिलादित्य (हर्ष) मरि चुकल छलाह आ समस्त देशमे अराजकता पसरल छल। नाफुती (तीरभुक्ति)क अरूणाश्व (ओलानाशुएन) राजगद्दी हड़पि चुकल छलाह। वाँगक दूतमण्डलकेँ भगेबा गेबाक प्रयासमे ओ लागल छलाह। दूतमण्डलक संग मात्र ३०टा घोड़सवार छल। वाँग कोहुना भागिकेँ बचलाह। तिब्बत आ नेपालसँ सेना आनि दूतमण्डलक दोसर प्रमुख पदाधिकारी, सियांग-चेन-जेनक नेतृत्वमे तीन दिन धरि युद्ध भेल आ अंतमे अरूणाश्व पराजित भेलाह। वाँग जखन बन्दीक रूपमे अरूणाश्वकेँ लऽ कए चीन पहुँचलाह तखन वाँगकेँ प्रोन्नत कओल गेलन्हि। उपरोक्त विवरण ताँग वंशक पुरना इतिहासमे भेटइत अछि।

ताँग वंशक नवका इतिहासमे सेहो एहि घटनाक विवरण एवँ प्रकारे भेटइत अछि। ६४८मे वाँगकेँ जखन भारत दूतमण्डलक नेता बनाके पठाओल गेलन्हि तखन हर्षक अवसान भऽ चुकल छल आ अरूणाश्व राज्यक अधिकारी भऽ चुकल छलाह। ओ तीरभुक्तिक शासक छलाह। तिब्बत आ नेपालसँ सहायता लऽ वाँग अपन वेइज्जतीक बदला लेबाक हेतु तिरहुतपर आक्रमण केलन्हि। ओ अपन सेनाकेँ कैक भागमे विभक्त कए अपन तेसर दिन **चा-पुओ-हो-लो** नामक स्थानपर पहुँचलाह आ ओहिपर अपन आधिपत्य कायम केलन्हि। एहिक्रममे ३००० व्यक्तिक हत्या भेल आ १०००० व्यक्तिकेँ नदीमे डुबाओल गेल। अर्जुन भागिकेँ पुनः अपन शक्ति संचय केलन्हि आ फेर वाँगक संग युद्ध शुरू केलन्हि मुदा हुनका कोनो सफलता नहि भेटलन्हि। राजाक जनानखानाक प्रधान दुश्मनक बाट रोकबाक हेतु किएन-तो-वाइ नामक नदीक मार्ग अवरूद्ध कए देलन्हि तथापि चीनी दूतमण्डल हिनका लोकनिकेँ पराजित केलन्हि आ अरूणाश्वक पत्नी समूह एवँ पुत्रादिकेँ गिरफ्त कए माल असवाब

सब लूटि लेलन्हि। चीनी सेना नायक उपरोक्त चेन-जेनक समक्ष ५८०टा नगर आत्म समर्पण केलक। पूर्वी भारतक राजा **ची-कीउ-मो** (श्री कुमार) अथवा भास्करवर्मन चीनी दूतमण्डलक बड़ड सहायता केलथिन्ह आ हुनका लोकनिकैं घोड़ा, बड़द, अस्त्र, शस्त्र, तीर धनुष आदि बहुत रास सामान उपहारमे देलथिन्ह। चीनी सम्राटक हेतु ओ एकटा भारतक मानचित्र सेहो उपहारमे देलथिन्ह। दूतमण्डलसँ ओ आग्रह केलथिन्ह जे ओतएसँ ओ **लाओ-जे**क एकटा चित्र पठा दैथ। अरूणाश्व बन्दीक रूप चीनमे रहलाह आ ओतहि हुनक मृत्यु भेलैन्ह।

**मात्वलिन** सेहो एहि घटनाक विवरण उपस्थित कएने छथि आ हुनक विवरण ताँग वंशक नवका इतिहाससँ मिलैत–जुलैत अछि। **मात्वलिन**क अनुसार चीनी सम्राट ६४६ ई.मे मगध सम्राटक ओतए एकटा दूतमण्डल पठौने छलाह। अर्जुन अथवा अरूणाश्वकेँ चीनी स्त्रोतमे तिरहुतक शासक मानल गेल छैक आ दुनूक बीच जे युद्ध भेलैक से कतहु एहि क्षेत्रमे भेल हेतैक। वाँग कन्नौज धरि गेल होएताह ओहिमे संदेह बुझना जाइत अछि। तिरहुतक राज्यपाल अरूणाश्व हर्षक परोक्ष भेलापर तिरहुतहिसँ अपनाकेँ साम्राज्यक अधिकारी घोषित कएने होथि से संभव। चीनमे जाहिठाम अर्जुनक शव अछि ताहिठाम एकटा जे स्मारकपर लेख छैक ताहिमे लिखल छैक **"तीरभुक्तिक हिन्दूराजा अरूणाश्व"**। अहुँसँ इ स्पष्ट होइछ जे अर्जुन अथवा अरूणाश्व तीरभुक्तिक शासक छलाह आ वाँगक युद्ध तीरभुक्तिक सीमे धरि सीमित रहल होएत। एहि घटनाक विवरण चीनक करीब २५टा सँ बेसी ग्रंथमे भेटइत आ आधुनिक शोध एवँ एहि २५सो ग्रंथक उपयुक्त अंशक अनुवादक अध्ययनसँ एतवा धरि स्पष्ट होइत अछि जे हर्षक परोक्ष भेलापर अर्जुन तीरभुक्तिक शासक छलाह। चीनी दूतमण्डल आ हुनका बीच संघर्ष भेल छल जाहिमे ओ पराजित भेल छलाह आ एहि युद्धक कार्यस्थल छल गण्डकी, वाग्मती, बलान आ गंगाक बीचक भूमि। युद्धक वास्तविक स्थान कोन छल से निर्णय करब अद्यतन कठिन समस्या बनल अछि। वृज्जि क्षेत्रसँ अंगुतराप क्षेत्रक वीच इ लड़ाइ भेल छल से धरि निश्चित आ वाँगक शक्तिशाली सैनिकक समक्ष जँ तत्काल छोट-पैघ शहर सब आत्मसमर्पण क देने हुए तँ एहिमे कोनो आश्चर्यक गप्प नहि।

किछु दृष्टिदोष अथवा विचार दोषसँ इ आक्रमण भेल हुए सेहो संभव। वाँगकेँ अर्जुन दुश्मन बुझि विरोध केने हेथिन्ह आ ओ जखन सहायतार्थ तिब्बत पहुँचलाह तखन ओहिठामक शासक श्रौंग सेहो एकटा महत्वाकाँक्षी व्यक्ति रहैथ आ विचारसँ साम्राज्यवादी सेहो। ओ एहि अवसरकेँ अपन साम्राज्य विस्तारक अवसरक रूपमे देखने होथि तँ कोनो आश्चर्य नहि कारण ताहि दिनमे हुनक प्रभुत्वक धाख चीन आ नेपाल धरि पसरल छलन्हि। वाँगक माध्यमसँ ओ तिब्बती प्रभाव भारतपर बढ़बे चाहैत छलाह परञ्च से संभव नहि भऽ सकलन्हि कारण इ युद्ध तिरहुत धरि सीमित रहि गेल आ ४०–५० वर्षक बाद ओहि विदेशी सत्ता उखारिकेँ फेक देल गेल। एकर कोनो स्थायी प्रभाव भारतक इतिहासपर नहि पड़ल। अहुमे संदेह अछि जे श्रौंग स्वयं भारतपर आक्रमण केने होथि कारण श्रौंगक विजयक विवरण जाहि तिब्बती परम्परामे सुरक्षित अछि ताहिमे कतहु भारतक नाम नहि अछि। केवल **मात्वलिन** एहि बातक उल्लेख केने छथि। दोसर बात जे महत्व रखैत अछि से भेल इ जे नेपाली परम्परामे एहि घटनाक विधिवत उल्लेख कतहु नहि अवइयै। पूर्वी भारतपर हर्षक शासन ६४१मे भेल छल। चीनी परम्परामे अर्जुनकेँ पूर्वी भारतक शासक (तीरभुक्तिक) कहल गेल छैक आ तैं संभव जे हर्षक परोक्ष भेलापर ओ (पूर्वी भारत)

पुनः अपनाकेँ कन्नौजक नियंत्रणसँ मुक्त कऽ लेने हो आ अर्जुन गवर्नरक हिसाबे ओहिपर अपन अधिकार कऽ लेने होथि। एहि घटनाक एतेक विस्तारसँ चीनी परम्परामे वर्णन कैल गेल हो से संभव। एतवा धरि तँ निश्चित रूपे माने पड़त जे अर्जुन आ चीनी दूत वाँगक वीच खटपट अवश्य भेलैक आ एहि क्रममे तीरभुक्तिपर आक्रमण सेहो। एकर स्थान एवँ अन्यान्य बातक विश्लेषण अखन आर शोधक अपेक्षा रखइयै।

हम पहिने कहि चुकल छी जे कामरूपक भास्करवर्मनक पूर्वजक समयमे बहुत रास मैथिल साम्प्रदायिक ब्राह्मण कामरूप गेल रहैथ आ ओतुका शासकक अनुग्रह प्राप्त केने रहैथ। हर्षक पूर्वहिं निर्धनपुर ताम्रलेखसँ इ ज्ञात होइछ जे वर्मन वंशक सीमा पुर्णियाँक कोशी धरि छलन्हि आ तकर पश्चिममे तिरहुतक राज्य छल जाहिपर हर्षक अधिकार छल। जाधरि हर्ष जीवित रहलाह ताधरि कामरूपक शासक हुनक मित्र बनल रहलथिन्ह मुदा हर्षक परोक्ष भेला उत्तर भास्करवर्मन चीनी दूतमण्डलक सहायता केने छलथिन्ह से उपरोक्त विवरणसँ स्पष्ट अछि— एकर कि कारण से नहि कहि। संभवतः अर्जुनक प्रभुत्व देखि आ तीरभुक्ति राज्यक विस्तारसँ ओ घबड़ा कए चीनी दूतमण्डलक समर्थन केने होथि से संभव। दोसर बात इहो भऽ सकइयै जे चीनक डरसँ ओ एना केने होथि। ऐहनो बुझि पड़इयै जे जखन वाँगक आक्रमणक समयमे मौखरी, उत्तर गुप्त आ नेपालक लिच्छवी शासकक वीच संभवतः कोनो प्रकारक समझौता भेल छल आ ओ लोकनि तिब्बती साम्राज्यवादी प्रसारक विरोधमे संगठित छलाह। अदु शक्तिशाली संगठनसँ भयभीत भऽ भास्करवर्मन वाँगक सहायता केने होथि तँ कोनो आश्चर्यक गप्प नहि। भास्करवर्मन सेहो महत्वाकाँक्षी छलाह आ तैं हुनक आंतरिक इच्छा इ अवश्य रहल हेतैन्ह जो कामरूप राज्यक प्रसार हो। कामरूप आ मिथिलाक सीमा सेहो मिलैत जुलैत छल। हर्षक मृत्युक उपरांत ओ कन्नौजसँ अपन सम्बन्ध विच्छेद कए कर्ण सुवर्णकेँ अपना राज्यमे मिला लेने छलाह आ अपन चारूकातक छोट छीन क्षेत्र सबकेँ सेहो। निर्धनपुर ताम्रलेखक आधार इ कहल जा सकइयै जे ओ मिथिलाक पूर्वी भागक किछु हिस्सापर अपन अधिकार जमा लेने छलाह आ ओतहिसँ संभवतः ओ वाँगक सहायता केने छलाह।

६४८सँ ७०३ ई. धरि मिथिलापर तिब्बती आधिपत्य बनल रहल। एहि बीचक इतिहास अंधकारमय अछि। मिथिलापर बहुत दिन धरि तिब्बती प्रभाव नहि रहि सकलैक आ उत्तरगुप्त शासक लोकनि अपन परिश्रमसँ पुनः सम्पूर्ण बिहारकेँ जीति अपना अधीन केलन्हि आ मिथिलाकेँ तिब्बती आक्रमणसँ मुक्त सेहो। कटरा (मुजफ्फरपुर)सँ प्राप्त अभिलेख (ताम्रलेख)सँ ज्ञात होइछ जे जीवगुप्त नामक कोनो व्यक्ति ओहि क्षेत्रपर शासन करैत छलाह। तिथिक अभावमे किछु कहब असंभव अछि मुदा अंदाजन इएह कहल जा सकइयै जे इ संभवतः उत्तरगुप्त वंशक केयो रहल हेताह आ तिब्बती आक्रमणसँ मुक्त भेलापर एहि क्षेत्रक शासनाधिकारी भेल होएताह। गुप्तवंशक परम्पराक पुनर्स्थापनामे व्यस्त जे सर्व प्रसिद्ध व्यक्ति भेलाह एहि वंशमे हुनक नाम छलन्हि आदित्य सेन। महासेन गुप्तक शासन कालहिसँ मिथिलापर हिनका लोकनिक प्रभुत्व छलन्हि आ आदित्यसेनक समय धरि तँ उत्तरगुप्त लोकनि पूर्वी भारतक एकटा प्रसिद्ध राजवंश घोषित भऽ चुकल छलाह। अफशड़, मंदार आ शाहपुरसँ प्राप्त अभिलेखक आधार इ निश्चित रूपें कहल जा सकइत अछि जे आदित्यसेन समस्त बिहारपर अपन आधिपत्य कायम केलन्हि आ वृहत्तर मगध राज्यक संस्थापकक नामसँ बहु चर्चित भेलाह। हुनका परमभट्टारक-महाराजाधिराजक पदवी

छलन्हि आ ओ गंगा सागर धरि अपन राज्य बढ़ा अश्वमेध यज्ञ सेहो केने छलाह। ताँग वंशक इतिहाससँ हमरा इ ज्ञात होइत अछि जे मिथिला आ नेपाल ७०३ धरि विदेशी नियंत्रणसँ मुक्त भऽ गेल छल। सिल्वोंलेवीक अनुसार ७०२मे मिथिलामे उत्तर गुप्तक शासनक स्थापना एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि। नेपाली अभिलेखमे सेहो आदित्य सेनकँ मगधक महत्वपूर्ण शासकक रूपमे वर्णन कैल गेल छैक। नेपालक शिवदेव मौखरी भोगवर्मनक जमाय छलाह आ भोगवर्मन आदित्य सेनक बेटीसँ विवाह केने छलाह। एवँ प्रकारे तीनू राज्य एक दोसरासँ सम्बन्धित छल। आदित्य सेनक बादो हुनका लोकनिककँ प्रभाव बनल रहल आ जीवित गुप्त द्वितीय धरि ओ लोकनि उतरापथनाथ कहबैत रहलाह।

मिथिलाक इतिहासमे बुझु जे बारी-बारी कऽ कए उत्तर भारतक सब छोट-छीन राज्य कोनो ने कोनो रूपे राज्य केलन्हि आ मिथिलामे कोनो स्थायी राज्यक स्थापना १०९४ क पूर्व नहि भऽ सकल। उत्तर गुप्तक बाद मिथिलाक इतिहासक जे स्थिति छल से ठीकसँ हमरा लोकनिकँ ज्ञातव्य नहि अछि। उत्तरगुप्तक राज्यक अंत केलन्हि कन्नौजक यशोवर्मन। **गौड़वही**क कवि वाक्पतिक अनुसार यशोवर्मन गुप्त लोकनिकँ पराजित केलन्हि आ हिमालय प्रदेशकँ जीति अपना राज्यमे मिलौलन्हि। आ एहि क्रममे जँ ओ तिरहुतकँ जीतने होथि तँ कोनो असंभव बात नहि। कश्मीर सेहो अपन प्रभाव बढ़ा रहल छल आ पूर्वमे सेहो पूण्ड्रवर्द्धन भुक्तिक दिसि कश्मीरक प्रभावक वृद्धि देखबामे आबे लगैत अछि। ललितादित्य मुक्तपीड़ एहि क्षेत्रमे यशोवर्मनकँ पराजित कए अपन प्रभाव क्षेत्र बढ़ा लेने छलाह। लामा तारनाथक अनुसार मिथिलामे चन्द्रवंशक शासन छल जकर सम्बन्ध पश्चिममे राजा भतृहरिसँ छलैक। चन्द्रवंशक राज्य वर्मा आ पूर्वी बंगालमे सेहो छलैक। वर्माक चन्द्रवंशक शासक लोकनि '**वेथाली**' (वैशाली) नामक एक गोट शहर बसौने छलाह। चन्द्रवंशक पछाति मिथिलामे पालवंशक स्थापना भेल छल। उत्तरपूर्वी भारतक विभिन्न प्रदेशक कोनो श्रृंखलाबद्ध एवँ साधनयुक्त इतिहास नहि अछि। आ मिथिलाक जहाँधरि प्रश्न अछि से तँ सर्वथा अपूर्ण अछि। लामा तारनाथ जकर वर्णन कएने छथि तकर समर्थन कोनो आन साधनसँ नहि भऽ रहल अछि तैं एकरा अखन संदिग्धे मानल जाएत। चन्द्रवंशक प्रश्न विवादास्पद अछि। जँ एहि वंशक राज्य रहलो हैत तँ पूर्वी मिथिलेपर रहल होएत कारण उएह स्थान वंगक समीप अछि।

किछु गोटए अहुमतक छथि जे यशोवर्मनक आक्रमणक उपरांते तिब्बती प्रभाव तीरभुक्ति क्षेत्र परसँ घटल होएत। यशोवर्मन मालदह, राजशाही आ पुर्णियाँ धरि बढ़ल छलाह आ तत्पश्चात कश्मीरक शासक सेहो **"पंच गौड़"** (मिथिला जकर एकटा प्रमुख अंश छल) पर अपन विजय प्राप्त केने छलाह। हियुएन-सांग द्वारा वर्णित **"पाँच भारत"** बादमे **"पंच गौड़"**क नामसँ प्रसिद्ध भेल आ पाल कालमे एहि **'पंच गौड़'**कँ विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त भेलैक। तारनाथक अनुसार एहि **'पंच गौड़'**मे चन्द्रवंशक पछाति अराजकता पसरि गेल छल आ ओहि क्षेत्रमे कोनो प्रकारक राज्य नहि रहि गेल छल। चारूकात मत्स्यन्यायक प्रधानता छल आ कोनो व्यवस्था नहि रहि गेल छल। चन्द्रवंश (सिंह चन्द्रक पुत्र)क बलिचन्द्रकँ भंगलसँ भगा देल गेल छलन्हि। लिच्छवी पंचमसिंह (जनिक राज्य ताहि दिनमे तिब्बतसँ त्रिलिङ्ग आ बनारससँ समुद्र धरि रहैन्ह) बलिचन्द्रकँ पराजित केने रहथिन्ह आ ओ भंगलसँ भागिकँ तिरहुतमे आबिकँ राज्य शुरू केने छलाह। बलिचन्द्रक पुत्र विमल चन्द्र अपन पिताक पराजयक बदला लेलन्हि आ अपन राज्यक विस्तार बंगाल आ असम धरि केलन्हि। हुनक पुत्र छलाह

गोविन्द्रचन्द्र आ गोविन्द्रचन्द्रक पुत्र भेलाह ललितचन्द्र। इ दुनू गोटए सिद्धि प्राप्त कए राज्यसँ विमुख भऽ गेलाह आ तत्पश्चात् राज्यमे अराजकता पसरि गेल आ मत्स्यन्यायक स्थिति उत्पन्न भेल।

**पाल वंश:-** एहि मत्स्यन्यायक स्थितिसँ उबारबाक हेतु ओहिठामक लोग गोपाल नामक एक व्यक्तिकेँ अपन शासक चुनलक आ उएह पाल वंशक संस्थापक भेलाह। मत्स्यन्याय आ अराजकताक स्थिति समाप्त कए गोपाल चन्द्रवंशक समस्त राज्य क्षेत्र व्यवस्थाक स्थापना केलन्हि आ तखन लऽ कए (७५०–१०००) लगभग २५० वर्ष धरि समस्त पूर्वी भारतमे एक प्रकारक शांति बनल रहल। पाल युगक इतिहास भारतीय इतिहासमे महत्वपूर्ण स्थान रखइयै आ मिथिलाक इतिहासक हेतु सेहो इ काल महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। गोपाल चूंकि चन्द्रवंशक उत्तराधिकारीक रूपमे शासक भेल छलाह तैं इ अनुमान लगाएब स्वाभाविक जे ओ तीरभुक्तिक शासक सेहो अवश्य रहल होएताह कारण तीरभुक्तियोपर चन्द्रवंशक शासन रहल छल।

गोपालक बाद हुनक पुत्र धर्मपाल शासक भेलाह। पाल साम्राज्यक वास्तविक संस्थापक धर्मपाले छलाह एहिमे संदेह नहि। उत्तर भारतपर आ खास कऽ कए कन्नौजपर आधिपत्य प्राप्त करबाक हेतु हुनका राष्ट्रकूट आ प्रतिहार वंशसँ युद्ध मोल लेबए पड़लन्हि जे हुनका बादो चलैत रहलैन्ह। खलीमपुर अभिलेख एवँ तारनाथक विवरणसँ ज्ञात होइछ जे तिरहुत हुनक राज्यक अंतर्गत छल आ पूवमे कामरूप धरि अपन राज्यक सीमा बढ़ौने छलाह। मूंगेरक समीप ओ प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीयकेँ हरौने छलाह। राज्यक प्रसारक क्रममे ओ हिमालय धरि गेल छलाह आ वागमती नदीपर अवस्थित गोकर्ण धरि अपन राज्यकेँ बढ़ौने छलाह। गोकर्ण एकटा प्रसिद्ध धार्मिक स्थल छल तैं संभव जे ओतए धरि ओ धर्म करबाक हेतु गेल होथि मुदा वास्तविक कारण इ छल जे ओहि क्षेत्रमे किरातक राज्य छल आ तैं हिनका डर छलन्हि जे किरात लोकनि तिरहुतक क्षेत्रमे किछु उत्पात मचा सकैत छथि तैं हेतु किरात लोकनिकेँ पराजित करब आवश्यक छल। पशुपतिनाथ मंदिरकेँ उत्तर पूबमे गोकर्णक जंगलमे किरात लोकनिककेँ राजधानी छलन्हि आ तैं ओ ओतए दूर धरि जाकए किरात लोकनिकेँ पराजित केलन्हि। स्वयंभु पुराणमे कहल गेल अछि जे धर्मपाल नेपालक राजगद्दीपर अधिकार प्राप्त केलन्हि। इ गप्प संभवतः गोकर्णपर धर्मपालक आक्रमणकेँ प्रमाणित करैत अछि। नेपालपर हुनक अधिकार भेल हो अथवा नहि परञ्च किरातकेँ दबाबे राखब मिथिलाकेँ संदर्भमे आवश्यक छल आ धर्मपाल एहिबातकेँ साम्राज्यवादी हिसाबें नीक जकाँ बुझैत छलाह। मूंगेर ताम्रलेखमे **'गंगा समेतं बुद्धि'**क जे उल्लेख अछि से गोकर्णसँ सर्वथा भिन्न स्थान भेल आ तैं दुनूकेँ मिलाएब उचित नहि बुझना जाइत अछि। मूंगेर ताम्रलेखोसँ इ ज्ञात होइत अछि जे धर्मपाल हिमालयक तराइमे आक्रमण कएने छलाह। मूंगेरमे जे लड़ाइ भेल छल ताहुमे तीरभुक्तिक योगदान रहल होएत से निश्चिते।

धर्मपाल समस्त उत्तरी भारतमे अपन धाख जमौने छलाह एकर प्रमाण हमरा कैकटा स्त्रोतसँ भेटइत अछि:- **केशव प्रशस्ति, खलिमपुर अभिलेख** एवँ **भागलपुर ताम्रलेख**। गुजराती कवि सोढ्ढल अपन उदय सुन्दरी कथामे देवपालकेँ उत्तरा पथ स्वामी कहने छथि। **'पंच गौड़'** हुनक साम्राज्य सीमाक बोध दैत अछि। **'पंच गौड़'** शब्दकेँ प्रसिद्ध केनिहार भेलाह कल्हण जे अपन **राज तरंगिणी**मे एकर विवरण देने छथि मुदा एकर राजनैतिक स्वरूपक वास्तविक जन्मदाता धर्मपाले रहल हेताह जनिक साम्राज्य पंजाबसँ बंगाल आ हिमालयसँ मध्य भारत धरि पसरल छल। मिथिला

नेपालपर सेहो हुनक प्रभुत्व छल। धर्मपालक पछाति हुनक पुत्र देवपाल राजा भेलाह आ हुनक साम्राज्य हिमालयसँ विन्ध्य पर्वत धरि पसरल छल। उहो प्रतिहार राजा मिहिर भोजकँ हरौलन्हि। हुनकहि समयमे पाल साम्राज्य अपन चरमोत्कर्षपर पहुँचल।

**वाचस्पति आ राजा नृग:-** एहिठाम एक प्रश्नपर विचार कऽ लेब आवश्यक बुझना जाइत अछि। स्वर्गीय महामहोपाध्याय उमेश मिश्र राजा नृगक चर्च कए एकटा समस्या उपस्थित कऽ देने छथि जाहि लऽ कए इतिहासकारमे विवाद हैव स्वाभाविके। नृग नामक एक राजाक नामक उल्लेख पुराणमे अछि मुदा ओहिसँ वाचस्पति कालीन नृगक तुलना नहि भऽ सकइयै। वाचस्पति (९म शताब्दी) अपन भामतीमे नृग नामक महत्वपूर्ण राजाक उल्लेख कएने छथि। उमेश्र मिश्रक अनुसार नृग किरात लोकनिक राजा छलाह ओ अपन भामती एहि राजाक ओतए बैसि कए लिखने छलाह। नृग वाचस्पतिकेँ सम्मानित केने छथिन्ह। **'नव-न्यायक इतिहास'**क रचयिता एहि नृगकेँ बंगालक **आदिसूर**सँ मिलबैत छथि। एहिठाम स्मरणीय जे वाचस्पति अपन **न्याय कणिका**मे सेहो आदिसूरक फराकेँ वर्णन कएने छथि।
नृगक सम्बन्धमे वाचस्पति अपन **भामती**क अंतमे लिखैत छथि–

"*नृपांतराणां मनसाप्यगम्यां*
*भ्रूक्षेपमात्रेण चकार कीर्तिम्,*
*कार्त्तस्वरासारसुपूरितार्थ सार्थः*
*स्वयं शास्त्रविचक्षणश्च,*
*नरेश्वरा यच्चरितानुकारमिच्छंति*
*कर्त्तुं न च पारयंति*
*तस्मिन्महीपे महनीय कीर्तौ*
***श्रीमन्नृगेऽकारि** मया निबन्धः॥*

दोसर स्थानपर एवँ प्रकारे वर्णन अछि–

*"न चायापि न दृश्यंते लीलामात्र*
*विनिर्मितानि महाप्रसाद प्रमदवनानि*
*श्रीमन्नृगनरेन्द्राणामन्येशां*
*मनसापि दुष्करानि नरेश्वराणाम्"॥*

**'नृग'**क **'महीप'** एवँ नरेन्द्र कहल गेल छन्हि आ एहिसँ इ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे ओ मिथिलाक कोनो भागमे ताहि दिनमे राज्य करइत हेताह। **'नृग'** आ **"आदिसूर"** दुनू दू व्यक्ति छलाह एहिमे सेहो कोनो सन्देह नहि। **'नृग'** किरात लोकनिक शासक होथि से संभव कारण ताहि दिनमे किरात आ पाल लोकनिक बीच बरोबरि खटपट होइत रहन्हि आ एकर उल्लेख हम धर्मपालक समयमे कऽ आएल छी। आदिसूर पूर्वी मिथिलाक शासक छलाह जकर सीमा बंगालसँ मिलैत छल आ वाचस्पति सन विद्वानकेँ दुनू राजाक दरबारसँ सम्बन्ध हैव कोनो आश्चर्यक विषय नहि। नृगसँ **'नरवाहन'**क बोध सेहो होइयै आ किरात लोकनिक बीच इ बेश प्रचलित छल–अहु किरात लोकनिक क्षेत्र मिथिलाक उत्तरी पूर्वी भागमे छल।

**'नृग'** एकटा समस्या मूलक नाम भऽ गेल अछि। एहिठाम अमलानंद सरस्वती अपन भामतीक टीका **वेदांत कल्पतरू**मे लिखने छथि–

*"तथाविधःसार्थोयस्यप्रकृतत्वेनवर्त्ततेस*
*नृगस्तथेत्यपरः। नृग इति राज्ञ आख्या..."*

**'नृग'** एकटा परम्पराक द्योतक सेहो मानल गेल छथि आ ओ परम्परा भेल दयालु हैव, दानी हेव आ सब तरहें परोपकारी हैव। एहि परम्पराक एकटा उल्लेख गुप्तकालीन अभिलेखोमे अछि–

*"भूमि प्रदानान्न परं प्रदानं*
*दानाद्विशिष्टं परिपालनञ्च।*
*सर्वेऽतिसृष्टा परिपाल्य भूमिं*
*नृपा नृगाधास्त्रिदियं प्रपन्नाः॥*

एहि अभिलेखमे महाराज संक्षोभ्यक तुलना परम्परागत दानी नृगसँ कैल गेल अछि। अमलानंद सरस्वती सेहो अपन टीकामे ताहिकालक शासकक तुलना राजा नृगसँ करबाक चेष्टा कएने छथि। जेना कि हम उपर कहि चुकल छी राजा नृग पौराणिक राजा नृगक संकेत मात्र छथि आ ओ दानशीलता आ जनप्रियताक हेतु प्रसिद्ध छथि। १४ शताब्दीक सारंगधरक रचनामे सेहो नृगक उल्लेख भेटइयै। अहुठाम परम्परागत रूपेमे। उपेन्द्र ठाकुर सब तथ्यक परीक्षण केला उत्तर इ निर्णय दैत छथि जे **'नृग'** शब्दसँ एहिठाम पाल राजा देवपालक तुलना कैल गेल अछि आ वाचस्पति अपन **भामती**मे देवपालकेँ नृग कहलन्हि अछि। तिथि सम्बन्धी जे झंझटि अछि ताहि संदर्भमे अखन अहुमतकेँ संदिग्धे कहल जाएत। उमेश मिश्रक अनुसार नृग कर्णाटसँ आबि मिथिलामे राज्य स्थापित केने छलाह परञ्च इ मत तर्कपूर्ण नहि अछि किएक नान्यदेवसँ पूर्व एकर कोनो प्रमाण नहि भेटइयै।

हमरा बुझने **'नृग'** आ **आदिसूर** दुनू दू व्यक्ति छलाह आ मिथिला प्रांतक उत्तरी पूर्वी एवँ पूर्वी भागक क्रमशः शासक छलाह। वाचस्पतिक समय धरि मिथिला आ उत्तर भारतमे सामंतवादी प्रथाक विकास भऽ चुकल छल आ अभिलेख, साहित्य एवँ विदेशी यात्रीक विवरण एहिबातकेँ पुष्ट करैत अछि। पालवंशक स्थापनाक संगहि उत्तर पूर्वी भारतमे एकटा स्थायित्व एलैक आ पाल साम्राज्यक विस्तारसँ नेपाल धरिक क्षेत्र तक एकटा सुव्यवस्थित राज्यक स्थापना भेलैक। ताहि दिनमे आवागमन एवँ यातायातक सुविधाक अभाव रहलाक कारणे इ शासक लोकनि विभिन्न क्षेत्रकेँ जीतिकेँ ओहिठाम अधिकारीकेँ सुपुर्द करैत छलाह आ हुनका सामंतक स्थितिमे राखि अपन शासन सुव्यवस्थाकेँ चलबैत छलाह। जँ वाचस्पति मिश्र देवपालक ओतए अपन **भामती** ग्रंथ लिखतैथ तँ ओ देवपालक नामक स्थानपर **'नृग'**क नाम किएक लिखतैथ? देवपाल अपने बड्ड पैघ लोक छलाह आ वाचस्पति सन विद्वानक हाथे अपन नाम उल्लिखित करेबामे अपनाकेँ गौरवान्वित बुझितैथ। वाचस्पतियोकेँ एहिमे कोनो आपत्ति नहि होइतैन्ह कारण देवपालक शासन धरि एकटा व्यवस्थित व्यवस्थाक स्थापना भऽ चुकल छल। दोसर बात इहो जे वाचस्पति जहिना आदिसूरक नामक उल्लेख केने छथि ठीक तहिना नृगक नाम। तैं इ माने पड़त जे इ दुनू व्यक्ति अलग अलग राजा छलाह आ दुनूक दरबारमे रहिकेँ ओ दुनू ग्रंथक निर्माण केने छलाह। प्रथम किरात सामंत छलाह आ दोसर पूर्वी मिथिलाक सामंत– जे दुनू पालेक अंतर्गत हेताह। जाधरि आर साधन उपलब्ध नहि होइयै ताधरि नृगक समस्या एहिना बनल रहत। नृग राजा सहरसा जिलांतर्गत बड़गामक रहनिहार छलाह। एहनो एकटा मत अछि।

देवपालक बाद पाल साम्राज्यक स्थितिमे डावाँडोल शुरू भेल आ चारूकातसँ पुनः आक्रमण–प्रत्याक्रमण होमए लागल। नारायणपालक भागलपुर अभिलेखसँ इ ज्ञात होइत अछि जे तीरभुक्तिक कक्ष विषय (जकर तुलना कौशिकी कक्षसँ कैल जा सकइयै)मे पाल शासक पशुपताचार्य परिषद एवँ शिवभट्टारक लोकनिक हेतु किछु दान देने छलाह। ८६६ ई. क आसपास राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष अंग, वंग आ मगध धरि अपन अधिकार बढ़ा लेने छलाह। कृष्ण द्वितीय राष्ट्रकूटक समक्ष सैह स्थिति छल। ओम्हरसँ प्रतिहार भोज आ महेन्द्रपाल सेहो पाल साम्राज्यक सीमामे अपन अधिकार बढ़ा चुकल छलाह। प्रतिहार लोकनि तिरहुत धरि अपन अधिकार बढ़ौने छलाह। महेन्द्रपाल प्रतिहार तँ बंगालमे पहाड़पुर धरि पहुँचि गेल छलाह। पाल साम्राज्य बिहारक किछु भाग धरि सीमित रहि गेल छल। मिथिला पाल–प्रतिहार साम्राज्यक बीचमे बत्तीस दाँतक बीचमे जीभक स्थितिमे छल– कखनो प्रतिहार लोकनि बढ़ैथ आ कखनो पाल लोकनि। एहि काल मिथिलाक कोनो प्रामाणिक इतिहास भेटतो नहि अछि आ हम देखैत इएह छी जे पश्चिम आ पूब दुनू दिसिसँ जे आक्रमण होइत छल, मिथिला ओकर शिकार भऽ जाइत छल। पाल लोकनि कोनो रूपें अपन अस्तित्वकेँ ढ़ोने जाइत छलाह एहिमे संदेह नहि यद्यपि हुनक प्रभुत्व बहुत घटि गेल छलन्हि।

९५३–५४ ई.मे जेजाभुक्तिक चन्देल लोकनि मिथिलापर आक्रमण केलन्हि। यशोवर्मन आ हुनक पुत्र धंग मिथिलापर आक्रमण केलन्हि आ गुर्जर प्रतिहारक नियंत्रणसँ ओकरा मुक्त कए अपना अधीनमे केलन्हि मुदा ओ लोकनि बहुत दिन धरि एहि क्षेत्रपर राज्य नहि कऽ सकलाह। चन्देल आक्रमणसँ समस्त उत्तरी भारत पराजित भेल आ आक्रान्त सेहो आ पाल साम्राज्यकेँ एहिसँ बेस धक्का लगलैक। एहिसँ पूर्वहिं प्रतिहार आ राष्ट्रकूट लोकनिक आक्रमणसँ पाल साम्राज्य शिथिल भइयै चुकल छल आ चन्देल आक्रमण ओकरा आर तहस नहस कऽ देलकै। नवम–दशम शताब्दीमे गण्डक आ शोण नदी सब प्रतिहार आ पाल राज्यक सीमा छलैक। चन्देलक प्रभाव पूर्णियाँ धरि पसरल छल आ ओहि कालमे चारूकात अस्तव्यस्तता बढ़ि गेल छल।

महिपाल प्रथम एक बेर पुनः पाल साम्राज्यकेँ श्रृंखलाबद्ध करबाक प्रयास केलन्हि आ पाल साम्राज्य फेर संगठित भऽ अपना पैरपर ठाढ़ भेल। महिपाल प्रथमक अभिलेख मुजफ्फरपुर जिलाक इमादपुर गाममे भेटल अछि आ एहिसँ इ सिद्ध होइत अछि जे महिपाल उत्तर आ दक्षिण दुनू बिहारक शासक छलाह। हुनक राज्यक सीमा बनारस धरि छलन्हि। परञ्च हुनको शासन काल सुखद एवँ शांतिपूर्ण नहि रहलन्हि। विभिन्न साधन इ ज्ञात होइछ जे चेदि–कलचुरी लोकनि सेहो मिथिलापर अपन जाल फेरने छलाह आ हाथ पैर पसारने छलाह। महिपाल आ कलचुरीमे संघर्ष भेल छलन्हि अथवा नहि से ज्ञातव्य नहि अछि तखन एतवा जरूर अछि ११ म शताब्दीमे चोल लोकनिक संग दक्षिणसँ बहुत रास कर्णाट लोकनि एम्हर आबिकेँ बैसि गेल छलाह। प्राकृतपैंगलमसँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे ताहि दिनमे चम्पारण बाटे सेहो ओम्हर गोरखपुर दिसि किछु आक्रमण भेल छल। मिथिलाक इतिहासक कोनो स्पष्ट तस्वीर हमरा लोकनिककेँ एहि युगक उपलब्ध नहि होइत अछि।

पाल लोकनि येन केन प्रकारेण अपन अस्तित्व बनौने रखलन्हि आ बिहार–बंगालक विभिन्न भागपर छिटपुट ढ़ंगे शासन करैत रहलाह। नौलागढ़ आ वनगाँवसँ जे विग्रहपाल तृतीयक अभिलेख भेटत अछि ताहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे पाल लोकनि अपन अंतिम कालमे तीरभुक्तिमे अपनाकेँ बचौलन्हि कारण ताहि दिनमे कलचुरी

कर्णक आक्रमणसँ बंगाल आक्रांत छल और विग्रहपाल तृतीय आ कलचुरीक वीच जे मनमुटाव चल अबैत छल तकरा अतीश दीपंकरक प्रयासे मेटाओल गेल आ दुनूक वीच एकटा वैवाहिक संधि भेल। विग्रहपाल तृतीय यौवनश्रीसँ विवाह केलन्हि आ हुनका दुनूक वीच जे संधि भेलन्हि तकरा **कपाल संधि** कहल गेल अछि। नौलागढ़ आ वनगामक अभिलेखकँ देखलासँ इ प्रतीत होइछ जे मिथिला कलचुरीक आक्रमणसँ बचल छल आ मिथिलापर पाल लोकनिक शासन चल अबैत छल। अपन ह्रासकालमे पाल लोकनि तीरभुक्तिकँ अपन राजधानी बनौलन्हि आ ओहिठामसँ शासन केनाइ प्रारंभ केलन्हि।

विग्रहपाल तृतीयक समयमे पालवंशक सूर्यास्त भऽ रहल छलैक। प्राकृतपैंगलम् आ अन्य साधन सबसँ इ ज्ञात होइछ जे गण्डक क्षेत्र धरि कलचुरी वंशक लोक अपन प्रभुत्व बढ़ा लेने छलाह। पाल लोकनिसँ हुनक संघर्ष बढ़ि रहल छलन्हि। संध्याकर नन्दीक **'राम चरित'**मे ताहि दिनक राजनैतिक स्थितिक बढ़िया विवरण अछि। नेपालक हस्तलिखित पोथीमे रामायणक एक गोट पोथी उपलब्ध भेल अछि जकरा अनुसार संवत १०७६मे तीरभुक्तिमे एकटा सोमवंशोद्भव महाराजाधिराज गाँगेयदेवक शासन छल। ओहि रामायणक किष्किन्धा काण्डकँ अंतमे लिखल अछि– "*सम्वत् १०७६ आषाढ़ वदी४ महाराजाधिराज पुण्यावलोक सोमवंशोद्भव गौड़ध्वज श्रीमद् गांगेयदेव भुज्यमान तीरभुक्तौ कल्याण विजयराज्ये नेपालदेशीय श्री भंक्षुशालिक श्री आनन्दास्य पाटकावस्थित (कायस्थ) पंडित श्रीकुरस्यात्मज गोपतिना लेखिदम्*"– १९४०मे एकर दोसर प्रति भेटलैक जाहिमे **"गौड़ध्वज"**क स्थानपर **"गरूड़ध्वज"** छैक। एहि पुष्पिकाक अध्ययनसँ मिथिलाक इतिहासक वस्तुस्थितिपर विद्वानक बीच पूर्ण मतभेद छन्हि। किछु गोटए एकरा कलचुरी गंगेयदेव मनैत छथि आ किछु गोटए कर्णाट गंगेयदेव। हमरा बुझने इ कर्णाट गंगेयदेव छलाह। एकर कारण इ अछि जे मिथिलामे अद्यावधि कलचुरी शासनक प्रमाण उपलब्ध नहि। दोसर बात इ जे कलचुरी शासकक संग विग्रहपाल तृतीय **कपाल संधि** आ **वैवाहिक संधि** कए अपन अस्तित्वकँ सुरक्षित रखने छलाह। तेसर बात इ जे कोनो उल्लेख नहि पाओल जाइत अछि आ ने अप्रत्यक्षे रूपसँ एकर कोनो विवरण कलचुरी साधनमे भेटइयै। चारिमबात इ जे महिपालक ४८म वर्ष धरि तिरहुत हुनका अधीनमे छलन्हि तखन ओहिठाम गंगेयदेव कलचुरीक राज्य कोना भऽ सकइयै। महिपालक बादो रामपाल धरि मिथिलामे पालवंशक राज्य बनल रहल आ पालवंशक अंत भेलापर कर्णाट लोकनिक शासन प्रारंभ भऽ गेल। मिथिलाक समस्त क्षेत्रमे पालकालीन अवशेष भेटइत अछि जखन कि एम्हर कलचुरीक कोनोटा अवशेष मिथिलामे नहि भेटइछ। एहि प्रश्नपर विस्तृत रूपें विचार हमरा लोकनि कर्णाट कालक अध्ययन क्रममे करब। जखन पालवंशक सूर्यास्त भऽ रहल छल तखन दक्षिणक षष्ठम विक्रमादित्य उत्तरमे अपन भाग्य अजमेबाक हेतु आगाँ बढ़ि रहल छलाह।

# कर्णाटवंशक इतिहास

ग्यारहम शताब्दीक अंतिम चरणमे मिथिलाक अवस्था अत्यंत दयनीय आ सोचनीय भऽ गेल छल कारण एहिठाम कोनो प्रकारक केन्द्रीय सत्ता नहि रहि गेल छल आ चारूकातसँ महत्वाकाँक्षी शासक लोकनि एहिपर अपन गिद्ध-दृष्टि लगौने छलाह। पाल लोकनिक शासन डगमगा गेल छल। कलचुरी लोकनि पश्चिमसँ हिनका सबके ठेलैत–ठेलैत मिथिलाक एक कोनमे पहुँचा देने छल। १०७७ एवँ १०७९क बीच कलचुरी शोढ़देव गण्डकीमे स्नान कए दान कएने छलाह तकर प्रमाण एकटा शिलालेखसँ भेटइत अछि। एहिसँ इ नहि बुझबाक अछि जे कलचुरी लोकनिक शासन स्थायी रूपे मिथिलापर छल। एहिसँ तात्पर्य एतबे बहराइत अछि जे मिथिलाक दुर्बल राजनैतिक स्थितिसँ लाभ उठा कए विभिन्न राज्य एहिपर अपन सत्ता स्थापित करए चाहैत छलाह। सन्ध्याकर नन्दीक **रामचरित**मे तत्कालीन राजनीतिक विशद विश्लेषण अछि आ ओहिसँ इहो ज्ञात होइछ जे विग्रहपाल तृतीय कर्णकेँ हरौने छलाह। हुनक नौलागढ़ आ बनगामक शिलालेखक उल्लेख हम पूर्वहिं कऽ चुकल छी। पाल लोकनि सेहो एहिकालमे सबठामसँ सिकुरिकेँ मिथिलेमे आबि गेल छलाह। **कुब्जिकामतम**क एकटा तालपत्र पोथीमे इ लिखल अछि जे रामपालदेव नेपालक शासक छलाह जाहिसँ स्पष्ट होइछ जे विग्रहपाल तृतीयसँ रामपाल धरि मिथिला आ नेपाल पाल साम्राज्यक मुख्य केन्द्र छल।

एहि अनिश्चित स्थितिसँ जखन सब दिशक महत्वाकाँक्षी शासक लाभान्वित होइत छलाह तखन दक्षिणक महत्वाकाँक्षी लोकनि किएक मुँह तकैत रहितैथ? हमरा लोकनिकेँ विल्हणक **विक्रमाँकदेवचरित**सँ ज्ञात होइछ जे चालुक्य सोमेश्वर (१०४०–१०६९) मालवाक परमारक राजधानी धारकेँ जीतलैन्ह आ भोजक भोजकेँ ओतएसँ पड़ाए पड़लन्हि आ डाहलक राजा कलचुरि कर्णक शक्तिकेँ सेहो नष्ट केलन्हि। हुनक पुत्र विक्रमादित्य षष्ठम अपन बापोसँ एक डेग आगाँ बढ़लाह आ गौड़ कामरूपपर दू बेर विजय प्राप्त केलन्हि। बाप–बेटाक लगातार उत्तर भारतीय विजयक फलस्वरूप उत्तर बिहार, बंगाल आ कन्नौजक राजनीतिमे क्रांतिकारी परिवर्त्तन भेल। ओ लोकनि नेपाल धरि आक्रमण केने छलाह। विक्रमादित्य षष्ठमक पुत्र सोमेश्वर तृतीय अपन एक शिलालेखमे कहने छथि जे आन्ध्र, द्रविड़, मगध आ नेपालक शासक लोकनि हुनका पैरपर अपन माथ टेकने छलाह।

चालुक्य आक्रमण एहि बातकेँ सिद्ध करइयै जे उत्तर भारतमे ताधरि परमार आ कलचुरि वंशक पतन प्रारंभ भऽ गेल होएत। जँ से नहि होएत तँ एक्के बेर चालुक्य लोकनि आन्हर बिहाड़ि जँका समस्त उत्तर भारत एवँ नेपालकेँ कोना आक्रांत केने रहितैथ? विरोधक संभावना नहि रहला संता ओ लोकनि प्रोत्साहित भए एहि सब क्षेत्रपर अपन प्रभुत्व जमौने हेताह। हिनकहि सब संग दक्षिणसँ बहुत रास कर्णाट सेनापति लोकनि उत्तर भारतमे अवतरित भेलाह आ एक्कहि संग उत्तर भारतमे मिथिला–नेपालमे कर्णाट नान्यदेवक, बंगालमे विजय सेनक आ कन्नौजमे चन्द्रदेव

गहढ़वालक उत्थान संभव भेल। गहढ़वाल लोकनि बढ़ैत–बढ़ैत गंगाक दक्षिणमे मूंगेर धरि पहुँच चुकल छलाह।

**कर्णाट लोकनिक उत्पत्ति:-** जनक वंशक परोक्ष भेलापर मिथिलाक अपन कोनो राजवंशक राज्य मिथिलामे नहि भेल छलैक। १०९७मे मिथिलामे कर्णाट वंशक स्थापना ताहि हिसाबे एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल जा सकइयै। मुदा इ कर्णाट लोकनि कें छलाह आ कोना मिथिलामे आबिकें बसलाह आ शासक भेलाह से पूर्ण रूपेण अखनो धरि ज्ञात नहि अछि आ हमरा लोकनि निश्चित रूपे इ नहि कहि सकैछी जे कर्णाट लोकनि अमूक आ अमूक छलाह। जेना कि हम पहिने देखि चुकल छी कि ग्यारहम शताब्दीक अंतिम चरणमे मिथिला, कन्नौज आ बंगालमे करीब करीब एक्के समय तीनटा स्वतंत्र राज्यक स्थापना भेल छल आ ओ तीनू राज्य तत्कालीन राजनीतिमे महत्वपूर्ण भूमिका अदा केने छल। मिथिलाक व्यक्तित्वक पूर्ण विकास एहिवंशक शासन कालमे भेल आ तहियेसँ मिथिलाक प्रसिद्धि बढ़लैक।

कर्णाट लोकनि अपनाकेँ कर्णाट क्षत्रिय कहैत छलाह। सेनवंश शासक सेहो अपनाकेँ कर्णाट क्षत्रिय कहैत छलाह। हिनका लोकनिक सम्बन्धमे विद्वानक बीचमे पूर्ण मतभेद अछि। इ लोकनि कर्णाट छलाह एतवा धरि निश्चित अछि कारण नान्यदेव अपनाकेँ **कर्णाट कुलभूषण** कहने छथि आ सामंत सेन अपनाकेँ कर्णाट क्षत्रियक कुल शिरोमणि। हेमचन्द्र राय चौधरीक मत छन्हि जे देवपालक मूंगेर ताम्रलेखमे जाहि कर्णाट लोकनिक उल्लेख अछि सम्भवतः उएह कर्णाट लोकनि बादमे चलिके अलग–अलग राज्यक स्थापना केलन्हि। एहिमतक समर्थन केनिहार एक गोटएक कथन इ अछि जे जखन मगध– मिथिलामे पालवंशक ह्रास प्रारंभ भेल तखन उएह कर्णाट लोकनि (जे अखन धरि एहि क्षेत्रमे चुप्पी साधने छलाह) ओहि स्थितिसँ लाभ उठाके विस्तार केलन्हि आ कर्णाट सत्ताक स्थापना सेहो। एकमत इहो अछि जे राजेन्द्र चोलक आक्रमणक समयमे बहुत रास कर्णाट सैनिक एम्हर आएल छलाह आ राजेन्द्र चोलक घुरि जेबाक वाद एहिठाम रहि गेलाह आ एम्हुरका राजनीतिमे सक्रिय भाग लेबए लगलाह। राजेन्द्र चोल अपनाक **गंगाइकोण्ड** सेहो कहने छथि जाहिसँ प्रमाणित होइछ जे विजयाभियानक क्रममे इ गंगा धरि आएल छलाह। परंतु सब साधनक सामान्य अध्ययन केला उत्तर इ प्रतीत होइछ जे राजेन्द्र चोलक अभियानक विशेष प्रभाव तत्कालीन उत्तर भारतक राजनीतिपर नहि पड़ल छल। तैं इ कहब जे हुनका संगे आएल कर्णाट लोकनि एतए बसलाह से वैज्ञानिककेँ नहि बुझि पड़इयै। देवपालसँ मदनपाल धरि जतवा जे पाल अभिलेख अछि ताहि सबमे गौड़, मालव, खस, हूण, कुलिक, कर्णाट, लाट, चाट, भाट, आदि शब्दक मात्र औपचारिक व्यवहार अछि आ एहि शब्दसँ मिथिला अथवा बंगालक कर्णाटकेँ जोड़ब समीचीन नहि बुझाइत अछि।

कर्णाट शासक लोकनि कर्णाटसँ आबि मिथिलामे बसल छलाह इ सर्व सम्मतिसँ स्वीकृत अछि– विवाद एतवे अछि जे ओ लोकनि कखन, कहिआ आ कोना एतए आबिकेँ रहलाह आ कोन रूपे सत्ता हथिऔलन्हि। नेपाली परम्परा आ वंशावलिमे सेहो मिथिलाक नान्यदेवक वंशकेँ कर्णाट क्षत्रिय कहल गेल छैक। नान्यदेव भरतक नाट्यशास्त्रपर एकटा टीका लिखने छलाह जे सर्व प्रसिद्ध अछि आ ओहिक्रममे ओ अपना सम्बन्धमे निम्नलिखित पदवी सबहिक प्रयोग कएने छथि–नान्यपति, नान्य, महासामंताधिपति धर्मावलोक, धर्माधारभूपति, मिथिलेश, एवँ कर्णाट कुलभूषण। नान्य शब्दक व्यवहार हमरा लोकनि अन्हराठाढ़ी अभिलेखमे सेहो भेटइत अछि। नान्य शब्दक उत्पत्ति द्रविड़ शब्द **'नन्नीय'**सँ भेल अछि। नान्यदेव अपन टीकामे जतवा देशी

रागक उल्लेख केने छथि से सब कर्णाट शैलीक राग थिक आ ओहुसँ इ सिद्ध होइत अछि जे नान्यदेव कर्णाटकक रहल होएताह अथवा कर्णाटकसँ हुनक सम्बन्ध कोनो ने कोनो रूपे अवश्य रहल हेतन्हि। चाहे कारण जे भी रहल हो, एतवा धरि निश्चित अछि जे ग्यारहम शताब्दीक अंतिम चरणमे कर्णाट लोकनि उत्तर भारतक राजनीतिमे सक्रिय रूपसँ भाग लेमए लागल छलाह।

एक मत इहो अछि जे कलचुरि गंगेयदेवक संग जे कर्णाट लोकनि सैनिकक रूपमे एतए आएल छलाह उएह सब बादमे चलिकँ शासक भऽ गेलाह परञ्च इहो मत ने सर्वमान्य भऽ सकइयै। एहिठाम केवल एतवे स्मरण राखब आवश्यक अछि जे जँ गंगेय देवक आक्रमण मिथिलापर भेवे कैल होन्हि तँ से नान्यदेवक प्रादूर्भावसँ ६०–७० वर्ष पूर्वे भेल हेतैन्ह आ ओहना स्थिति हुनक (गंगेयदेव) सैनिक मिथिलापर अधिपत्य स्थापित केने हेथिन्ह से संभव नहि बुझाइत अछि। तैं एहि तर्ककेँ मानब असंभव।

रामकृष्ण कविक अनुसार राष्ट्रकूट लोकनि सेहो कर्णाट कहबैत छलाह आ जखन दक्षिणमे हुनक अवसान समीप एलन्हि तखन ओ लोकनि ओहिठामसँ हँटि उत्तर दिसि बढ़लाह आ कन्नौज, मिथिला आ बंगालमे अपन शासन स्थापित केलन्हि। एहि कथनक कोनो शुद्ध ऐतिहासिक अथवा परम्परागत आधार नहि अछि। राष्ट्रकूट इतिहासक मर्मज्ञ स्वर्गीय सदाशिव अनंत अल्तेकरसँ हम एहि सम्बन्ध जखन विचार विमर्श कैल तखन ओ कहने छलाह जे मिथिलामे कहियो कोनो रूपे राष्ट्रकूट लोकनिक शासन ने छल आ ने ओकर कोनो प्रमाणे अछि। तैं राष्ट्रकूटकेँ एहिठाम कर्णाटसँ मिलाएब उचित नहि बुझना जाइत अछि।

सुप्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान सिल्वाँ लेवीक अनुसार मिथिलामे कर्णाट वंशक उत्पत्तिक सम्बन्ध सोमेश्वर चालुक्य एवँ ओकर वंशजक उत्तर भारतपर आक्रमणसँ छैक आ इएह सबसँ समीचीन तर्क बुझियो पड़इत अछि। विल्हणक **विक्रमाँकदेव चरित**मे एहि आक्रमणक विवरण भेटइयै आ पिता–पुत्र–पौत्रक अभियानक समय सेहो एहन अछि जे मिथिलाक तत्कालीन राजनैतिक स्थितिसँ मिलैत–जुलैत अछि। एहि आक्रमणक फलस्वरूपे बहुत रास कर्णाट वीर, सैनिक एवँ सामान्य लोक सब एम्हर आबिकेँ मिथिला, मगध, वंग, कन्नौज आदि स्थानमे बसि गेल छलाह। एहि आक्रमणक फले उत्तर भारतक परमार आ कलचुरि राजवंशक पराभव सेहो भेल छल। क्षेमेश्वरक **चण्डकौशिक**मे एकटा कथा अछि जाहिसँ भान (ज्ञात) होइछ जे पालवंशक महिपाल कोनो कर्णाटराजकेँ हरौने छलाह–

*"य संश्रित्य प्रकृति गहनामार्य्या चाणक्यनीति*
*हत्वानंदान् कुसुमनगरं चन्द्रगुप्तो जिणाय*
*कर्णाटत्वं ध्रुवमुपगतानत्व तानेव हंतुं*
*दादैपोघः स पुनरभवत् श्री महीपाल देवः"॥*

आब इ कर्णाट राज कँ छलाह से अखुनका स्थितिमे कहब कठिन। संभवतः कर्णाटकेन्दु विक्रमादित्य षष्ठम गौड़पर आक्रमण केने होथि। विक्रमादित्यक **नागपुर प्रशस्ति**सँ त एतवा स्पष्ट अछि जे कर्णाट लोकनिक सम्पर्क चेदिराज कर्णसँ सेहो छलन्हि आ ओ हिनके लोकनिक मदतिसँ मालवाकेँ पराजित केने छलाह। मुदा इ कहब एहि सहयोगक फले मिथिलामे कर्णाट नान्यदेवकेँ राज्य स्थापित करबामे सुविधा भेलैन्ह से तर्क संगत नहि बुझि पड़इयै कारण एहि दुनू घटनामे तिथिक जे अंतर अछि से ततेक व्यापक जे दुनूकेँ जोड़ब असंभव। सोमेश्वर एवँ विक्रमादित्य षष्ठमक

आक्रमणक फले जे कर्णाट सैनिक एवँ सेनापति लोकनि एम्हर एलाह सैह राज्यक स्थापनामे समर्थ भेल छलाह कारण एम्हर आएल सेनापति लोकनि एम्हुरका स्थिति देखि एम्हरे रहि जाएब उचित बुझलन्हि कारण एम्हर रहबामे दुनू हाथमे लड्डुये–लड्डु छल। सेन वंशक संस्थापक अपनाकेँ कर्णाट कुललक्ष्मीक संरक्षक कहने छथि। विक्रमादित्य षष्ठम आ सोमेश्वर तृतीय अपन प्रभाव नेपाल धरि बढ़ौने छलाह। एकर बादसँ विभिन्न भारतीय राजा लोकनि नेपालपर अपन प्रभाव बढ़ेबाक प्रयास केलन्हि।

पाल लोकनि जखन कलचुरिक संग लटपटाएल छलाह तखने चालुक्य लोकनिक आक्रमणकेँ फले उत्तर भारतक कैक स्थानपर कर्णाट लोकनि पसरि चुकल छलाह आ ओहिठामक राजनीतिमे हस्तक्षेप करब शुरू कऽ देने छलाह। एहि तथ्यक प्रमाण हमरा **विक्रमाँकदेव चरित**सँ भेटइत अछि। १०५३ ई. क आसपाससँ चालुक्य लोकनि एम्हर सक्रिय रूपें हुलकी–बुलकी देमए लागल छलाह। १०५३ कऽ केलावाड़ी अभिलेखसँ इ ज्ञात होइछ जे सेनानायक भोगरस वंगकेँ जीति लेने छलाह। इ सोमेश्वर प्रथमक सेनानायक छलाह। चालुक्यक एकटा सामंत, जकर नाम आच छलैक, सेहो विक्रमादित्य षष्ठमक समयमे वंग धरि आक्रमण केने छलाह। एहि दुनू घटनासँ इ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे हिनके लोकनिक संग आएल सेनापति, सेनानायक, सामन्त, सिपाही आदि व्यक्ति एम्हुरका स्थिति देखि एम्हरे रहि जाइ जाएत गेलाह। नान्य अथवा हुनक पूर्वज एहने एकटा सामंत–सेनापति रहल हेताह जे नेपालक तलहट्टी मिथिलाकेँ उपयुक्त बुझि ओहिठाम बसि गेल हेताह आ चालुक्य वंशक वापस भेलाह अपन स्वतंत्र सत्ता घोषित कए मिथिला आ नेपालक शासक बनि गेल हेताह। शासक भेला उत्तरो ओ अपनाकेँ **महा सामंताधिपति** कहैत रहलाह से एहिबातक द्योतक थिक जे राजा हेबाक पूर्व हुनक कि स्थिति छल।

**नान्यदेव (१०९७–११४७)**:- हम उपर देखि चुकल छी जे चालुक्य आक्रमणक समयसँ चालुक्य सेनाक विशेष भाग मिथिला आ बंगालमे बसि गेल छल। नान्यदेव मिथिलामे कर्णाट वंशक संस्थापक भेलाह। एहिठाम इ स्मरण राखब आवश्यक जे एहि वंशक तत्वावधानमे समस्त पूर्वी भारत मिथिले एक गोट एहेन राज्य छल जाहिठाम २२७ वर्ष धरि (१०९७–१३२४) मुसलमान लोकनिक कोनो राजनीतिक प्रभाव नहि जमि सकलैक। राजनीतिक एवँ साँस्कृतिक दृष्टिकोणसँ नान्यदेवक शासन काल तँ महत्वपूर्ण अछिये परञ्च कर्णाटवंशक शासनकेँ स्वर्णयुग कहल गेल छैक किएक तँ एहि युगमे मिथिलामे लगभग १४००–१५०० वर्षक बाद स्वतंत्र संगठित राज्य एवँ शासन प्रणालीक स्थापना भेलैक आ कला, साहित्यक संगहि संग मैथिली भाषाक विकास सेहो भेलैक। नान्यदेव अपन दीर्घ राजकालमे पाल, कलचुरि, सेन आ गहढ़वालक पारस्परिक संघर्षक मध्य अपन दूरदर्शिता, नीतिकुशलता, एवँ वीरतासँ अपन राज्यक स्थापना केलन्हि आ उत्तरोत्तर ओकरा शक्तिशाली बनौलन्हि। ओ अपना वंशक संस्थापक संगहि संग एकटा सर्वश्रेष्ठ शासक सेहो छलाह जनिक स्थान तत्कालीन भारतीय राजा सबहिक मध्य महत्वपूर्ण छल। नान्यदेव १०९७ इ.मे सिमरौनगढ़मे राजगद्दीपर बैसलाह आ कर्णाट वंशक स्थापना केलन्हि। निम्नलिखित श्लोकसँ उपरोक्त तिथिक भान होइयै आ कहल गेल अछि जे इ लेख सिमरौनगढ़ (जे सम्प्रति नेपालमे अछि)सँ प्राप्त भेल अछि।

*"नन्देन्दु विन्दु विधु सम्मितशाकवर्षे*
*सच्छ्रविणे सितदले मुनिसिद्धितिथ्याम्।*
*स्वा(ती) तौ शनैश्चर दिन करिवैर लग्ने*
*श्री नान्यदेव नृपतिर्व्यदधीत वास्तुम्"*

शक् १०१९ (=१०९७ ई.)क स्वाती नक्षत्रमे शनि दिन(श्रावण सप्तमी)कैं नान्यदेव राजा भेला–याने मिथिला राज्यक स्थापना केलन्हि।

१६२८ ई. भतगाँवक राजा जगज्योतिमल्ल रचित **मुदितकुवलयाश्व**सँ सेहो ज्ञात होइछ जे नान्यदेवक १८ जुलाइ १०९७कैं मिथिला राज्यक स्थापना केलन्हि। मिथिला राज्यक स्थापनाक क्रममे नान्यदेवक स्थान सर्वप्रथम छन्हि आ तकर प्रमाण हमरा नेपालक परम्परा एवँ वंशावली आ शिलालेखसँ भेटइत अछि। प्रतापमल्लक शिलालेखमे सेहो एहि क्रमे नाम अछि। नान्यदेव मिथिला राज्यक स्थापना मिथिला–नेपालक सिमानपर सिमरौनगढ़मे केने छलाह आ ओहिठामसँ चारूकात पसरल छलाह।

मैथिल परम्परामे एकटा कथा सुरक्षित अछि जे एवँ प्रकारे अछि। कहल गेल अछि जे प्रारंभमे नान्यदेव नीलगिरी प्रांत (दक्षिण भारत)मे राज्य करैत छलाह आ ओतहिसँ ओ मिथिला प्रांत आएल छलाह। घुमैत–फिरैत ओ सीतामढ़ी जिलांतर्गत नान्यपुर परगन्नास्थ पुपरी ग्रामक समीप कोइली ग्राममे विश्राम केलन्हि। एकदिन ओ अपन खेमाक कातसँ एकटा विषधर सर्पकैं जाइत देखलन्हि जाहिपर निम्नलिखित श्लोक लिखल छल–

*"रामोवेत्ति नलोकेत्ति वेत्ति राजा पुरूखाः*
*अलर्कस्य धनं प्राप्य नान्यो राजाभविष्यति"।*

परम्परा के हटा जँ देखल जाइक तँ एहिसँ इएह सिद्ध होइछ जे अलक्षित धनक प्राप्ति कए नान्यदेव मिथिलाक राजा हेताह। कहल जाइत अछि जे हुनका एहेन धन प्राप्त भेल छलन्हि जाहिसँ हुनका राज्यशक्ति अर्जन करबामे सहायता भेटल छलन्हि। ओ दक्षिणमे नीलगिरीमे राजा छलाह अथवा नहि से कहब तँ कठिन अछि मुदा एतबा धरि ज्ञातव्य जे मिथिला पहुँचलाहपर हुनका किछु अलक्षित धनक लाभ अवश्य भेलन्हि आ ओ ओहिसँ लाभान्वित भए मिथिला राज्य प्राप्त करबामे अग्रसर भेलाह। तखन मिथिलामे कोनो प्रकारक विरोधक संभावना नहि रहि गेल छल।

नान्यदेवकैं कामरूपक धर्मपालक समकालीन कहल गेल छन्हि। धर्मपालक शासनकालमे **कालिका पुराण**क संकलन भेल छल आ ओहि **कालिका पुराण**मे सबसँ प्राचीन उल्लेख **भरत भाष्य**क अछि जकर लेखक नान्यदेव छलाह। ओहि कालमे मिथिलासँ बासतरिया ब्राह्म लोकनिक परिवार असम गेल छल। मिथिला ताहि दिन धरि तंत्रक प्रमुख केन्द्र बनि चुकल छल आ **कालिका पुराण**क संकलनक मूल उद्देश्य छल मिथिला आ असमक बीच एक प्रकारक साँस्कृतिक सम्पर्क स्थापित करब। नान्यदेव, जे कि अभिनव गुप्तक नामे सेहो प्रसिद्ध छलाह, क प्रसंग के.सी.पाण्डेयक विचार छन्हि जे ओ १०१४–१५ इ.मे भेल होएताह मुदा से कोनो रूपे मान्य नहि भऽ सकइयै आ एहि प्रसंगक तर्क हम आनठाम उपस्थित कऽ चुकल छी (द्रष्टव्य–काशी प्रसाद जायसवाल संस्थान द्वारा प्रकाशित **बिहारक बृहत् इतिहास**–अंग्रेजीमे)।

सिमरौनगढ़ शिलालेखमे नान्यदेवक तिथि स्पष्ट अछि जकर संकेत हम पूर्वहिं दऽ चुकल छी। नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दासक एकटा बिनु तिथिक शिलालेख, जे अन्हराठाढ़ी गाममे अछि, क पाठ निम्नलिखित अछि–

*"ॐ श्रीमन्नान्य पतिर्जेता गुणरत्न महार्णवः*
*यत्कीर्त्यां जनितम् विश्वे द्वितीय क्षीर सागर।*
*मंत्रिणा तस्यनान्यस्य क्षत्र वंशाब्ज भानुना*
*दवोयकारित श्रीधरः श्रीधरेणच*
*यस्यास्य बाल्मीकेर विजयो प्रबन्ध जलधौ*
*व्यासस्य चात्यद् भुत्ते वाद्यैरण वद्य गद्य*
*चतुरैन्यैश्च विस्तारिते अस्माकम्*
*क्वर्पुनग्गिरामवसरः*
*कोवाकारोत्यादर यद्बालबचोप्य"।*

१६४८क प्रताप मल्लक शिलालेखमे नान्यदेवक वंशक क्रम एवँ प्रकारे अछि–

*"आसीत् श्री सूर्यवंशे रघुकुल नृपजो रामचन्द्रो*
*नृपेशः तद्वंशो **नान्यदेवो**ऽवनि पतिरभवत सुतः*
***गंगदेवः**। तत्पुत्रोऽ**भून्नृसिंहो** नरपतिरतुलस्तत्सुतो*
***रामसिंहः** तज्जः श्री **शक्तिसिंहो** धरणिपतिरभत्*
*भूप **भूपालसिंह** तस्मात्कर्णाट चूड़ामणि*
***विहरियुत्सिंह** देवौस्यवंशे"।*

ओहिकाल राजनीतिक परिस्थितिक अध्ययनसँ हमरा लोकनि नान्यदेवक उचित मूल्याँकन कऽ सकैत छी। बंगालमे सेन वंशक स्थापना भऽ चुकल छल आ कन्नौजमे गहढ़वाल राज्य सेहो जमि रहल छल। मूंगेरक क्षेत्र पाल लोकनि सिमैटिकँ आबि गेल छलाह। जखन पाल, सेन आ गहढ़वाल अपने–अपनेमे बाँझल छलाह तखन नान्यदेव मिथिलासँ नेपालपर आक्रमण केलन्हि आ ओकरा अपन राज्यमे मिला लेलन्हि। सेन सबकेँ हरेबाक हेतु नान्यदेव गहढ़वालसँ बढ़िया सम्बन्ध रखैत छलाह आ एकर प्रमाण हमरा विद्यापतिक **पुरूष परीक्षा**सँ सेहो भेटइत अछि जाहिमे लिखल अछि नान्यदेवक पुत्र मल्लदेव राजा जयचन्द्रक ओतए सम्मानित भावें रहैत छलाह। विजयसेनक देवपाड़ा शिलालेखसँ इ ज्ञात होइछ जे नान्यकेँ पराजित कए विजयसेन गिरफ्तार कऽ लेने छलन्हि। सेन आ कर्णाट वंशक वीच बरोबरि खटपट होइते रहैत छल आ पूर्वी मिथिला (सहरसा–पूर्णियाँ)क क्षेत्रमे दुनूकँ कोनो ने कोनो रूपें झंझटि चलिते रहन्हि। एहि हेतु नान्यदेव गहढ़वाल लोकनिक संग नीक सम्बन्ध रखैत छलाह। नान्यदेव मिथिलामे मात्र कर्णाटवंशक स्थापनेटा धरि नहि केलन्हि अपितु एकरा दृढ़ सेहो केलन्हि आ समस्त मिथिलापर अपन एकक्षत्र शासन कायम केलन्हि। गण्डकीसँ कौशिकी धरि आ हिमालयसँ गंगाधरि अपन राज्यक विस्तार करबामे ओ सक्षम भेला। मिथिलाक इतिहासक संदर्भमे नान्यदेवकँ उएह स्थान प्राप्त छन्हि जे समस्त भारतक इतिहासक संदर्भमे चन्द्रगुप्त मौर्यकँ। जनक वंशक पश्चात् एहन प्रशस्त राज्य मिथिलामे आ कहिओ नहि बनल। ओहि समयमे मिथिलाक जे राजनैतिक स्थिति छलैक ताहिमे नान्यदेव एहिसँ बेसी किछु कइयो नहि सकइत छलाह। राज्यक

स्थापनाक संगहि संग ओकरा सुदृढ़ बनेबाक हेतु ओ संगठित शासन विधानक जन्म सेहो देलन्हि।

नान्य अपनाकेँ **श्रीमहासामंताधिपति, श्रीमन्नान्यपति, कर्णाटकुलभूषण, धर्माधर भूपति, राजनारायण, नृपमल्ल, मोहन, मुरारी, प्रत्ययग्रवानिपति, मिथिलेश्वर, सामंतधिपति** आदि–कहने छथि। अन्हराठाढ़ी अभिलेखमे हुनका **'श्रीमान'** कहल गेल छन्हि। एहि सबसँ हुनक पूर्वक स्थितिक भान होइयै आ बुझि पड़इयै ओ पूर्वमे सामंत रहल होएताह आ बादमे शासक भेल होएताह। ताहि दिनक अनिश्चित राजनैतिक स्थितिमे ओ मिथिलाक व्यक्तित्वक विकास केलन्हि आ मिथिलाकेँ एकटा रूप देलन्हि। मिथिलाक चौहद्दीक परिभाषा जे हमरा लोकनि देखइत छी तकरा राज्यक रूपमे चरितार्थ उएह केलन्हि आ तैं ओ प्रशंसनीय छथि। ओ स्वयं एक पैघ कूटनीतिज्ञ एवँ सफल योद्धा छलाह। चम्पारणमे राजधानीक स्थापना करब (सिमरौनगढ़) हुनक कूटनीतिज्ञताक परिचय देने छथि। ताहि दिनमे दरद–गण्डकी क्षेत्र धरि पश्चिमक राज्य छल आ मिथिलाक सीमा ओहि राज्यसँ मिलैत छल आ ओम्हर यशः कर्णक नजरि सेहो एहि दिसि लगले छल। तैं नान्यदेव ओहि खतरासँ अपन राज्यक रक्षार्थ ओम्हरे अपन राजधानी बनौलन्हि जाहिसँ पश्चिम आ उत्तर दुनूक सुरक्षा हो। एहि विचारसँ ओ अपन राज्यक राजनीतिकेँ सेहो संचालित करैत छलाह।

नान्य जे टीका लिखने छथि ताहिमे ओ अपनाकेँ सौवीर आ मालवक विजेता घोषित कएने छथि–

*"जित* ***सौवीर*** *वीरेण सौवीरक उदहृतः"*
*"लुप्त**मालव** भूपाल कीर्तिर्मालव पञ्चमीम्"*
***"बाँगलि*** *केति कथिता* ***मिथिलेश्वरेण"*** *।*
*"श्री रागस्यैक भूमिर्ललित मधुर वाग्भिंत*
***बंगाल–गौड़,*** *प्रौढ़ प्राग्भारसारः*
*कुकुभमुभयथासाधयन्विश्रमुच्चैः ।*
*संग्रामे भैरवोयः प्रबिलसति*
*मुहुर्धूर्जरीयस्य कण्ठे,* ***सौवीरो***
*ध्यायमोनं व्यधितकृतमतिः भूपतिः नान्यदेवः"॥*

सौवीर, मालवा, बंगाल आ गौड़केँ पराजित करबाक श्रेय ओ अपनापर लैत छथि–सौवीर, मालवापर संभवतः ओ मिथिलेश्वर होएबाक पूर्वहिं विजय प्राप्त केने होएताह। बंगालक प्रश्न लऽ कए हुनका सेन वंशसँ झंझटि भेलन्हि तकर वर्णन उपर कऽ चुकल छी आ संभव जे अंततोगत्वा हुनका बंगाल–गौड़पर विजय प्राप्त भेल होन्हि। बंगाल आ गौड़क प्रश्नपर नान्यदेव आ विजयसेनक वीच मनोमालिन्य भेल होन्हि अथवा रहैत होन्हि से संभव। दिनेश चन्द्र सरकार सेनवंश आ कर्णाटवंशक सब तथ्यक अध्ययन केलाक पछाति एहि निर्णयपर पहुँचल छथि जे विजयसेनकेँ नान्यदेवक विरूद्ध कोनो खास सफलता नहि भेटल छलन्हि। गिरीन्द्र मोहन सरकार सेहो एहिबातसँ हमरा लोकनिकेँ अवगत करौने छथि जे सेनक मिथिलामे शासन अथवा राज्य हेबाक कोनो ठोस प्रमाण नहि अछि। देवपाड़ा शिलालेखक अध्ययनसँ एतबे प्रमाणित होइछ जे विजयसेन नान्यदेव आ राघवक घमण्डकेँ चूर केलन्हि।

मिथिलामे अपन अस्तित्वकेँ सुदृढ़ कए आ अपन चारूकात विस्तारक कोनो आशा नहि देखि नान्यदेव नेपाल दिसि अपन ध्यान लगौलन्हि। ताहि दिनमे नेपालोमे

कैक गोट राज्य छल आ ओहिमे आपसमे आधिपत्यक हेतु संघर्ष होइत रहैत छल। नान्यदेव एहि स्थितिसँ लाभ उठौलन्हि आ नेपालक राजनीतिमे हस्तक्षेप करब प्रारंभ केलन्हि। नेपाली परम्पराक अनुसार ओ समस्त नेपालकँ अपना अधीनमे केलन्हि आ नेपालक स्थानीय शासक, पाटन आ काठमाण्डुक जयदेव मल्ल आ भात गाँवक आनंद मल्लकँ गद्दीसँ उतारलन्हि। नेपाली परंपराक अनुसार नेपालक राजवंशकँ नान्यदेव समाप्त नहि केलन्हि–बुझि पड़इयै जे जखन ओ लोकनि नान्यदेवक सत्ताकँ स्वीकार कऽ लेलथिन्ह तखन नान्यदेव हुनका लोकनिकँ अपन अधीनस्थ शासक बनाकँ छोड़ि देलथिन्ह। सामंतवादी व्यवस्थाक इ एकटा प्रमुख बात छल। नेपालक इतिहासकार दिली रमण रेगमीक अनुसार नान्यदेव सम्पूर्ण नेपालकँ नहि जीतने छलाह आ हुनका ११४१मे फेर दोसर बेर नेपालपर आक्रमण करए पड़ल छलन्हि। नान्यक परोक्ष भेलापर पुनः ठाकुरी वंशक लोग अपन आधिपत्य बना लेने छलाह। नेपालपर नान्यदेव जे कर्णाट वंशक स्थापना केलन्हि तकरा हुनक वंशज हरिसिंह देव बादमे सुदृढ़ केलथिन्ह।

विजेता, राज्यनिर्माता, कुशल प्रशासक एवँ संगठन कर्त्ताक अतिरिक्त नान्यदेव स्वयं एक बहुत पैघ विद्वान छलाह आ भरतक **नाट्यशास्त्र**पर एक गोट टीका सेहो लिखने छलाह। श्रीधर दास एवँ रत्नदेव नान्यदेवक प्रधानमंत्री छलथिन्ह। श्रीधर दासक पिता बटुदास सेनक महासामंत छलाह आ श्रीधर दास सेहो महामाण्डलिक छलाह। हिनक मूल राजधानी सिमरौनगढ़ (नेपाल)मे छलन्हि आ दोसर राजधानी नान्यपुरमे। नान्यदेव ५० वर्ष धरि राज्य केलन्हि आ सब किछु सफलतापूर्वक उपलब्ध कए मिथिला राज्यकँ एकटा स्वरूप प्रदान केलथि। मिथिला तहियासँ आइ धरि संस्कृतिक एकटा प्रधान केन्द्र बनल अछि। राजनैतिक इतिहासक महत्वक लोप भेलो उत्तर सांस्कृतिक दृष्टिकोणसँ नान्यदेवक शासनक अपन अलग महत्व अछि।

**मल्ल देव**:- विद्यापति अपन **पुरूष परीक्षा**मे मल्लदेवकँ युवराज कहने छथि परञ्च मिथिलामे कर्णाट वंशक शासन श्रृंखलामे नान्यदेवक बाद गंगदेवक नाम अवइयै तैं मल्लदेवक युवराजक संज्ञा एकटा समस्या बनि गेल अछि। सभ साधनक अध्ययन केलापर इ प्रतीत होइछ जे नान्यदेवक बाद मिथिला राज्य संभवतः दुनू भाइमे बटि गेल छल आ दुनू गोटए अपन–अपन क्षेत्रपर शासन करैत हेताह। **पुरूष परीक्षा**क अनुसार नान्यदेवक पुत्र मल्लदेव बड़ड साहसी आ स्वाभिमानी छलाह। ओ किछु दिन धरि कन्नौजक जयचन्द्रक ओतए छलाह आ फेर ओहिठामसँ चिक्कौर राजाक ओतए आबिकँ रहला। मैथिली अनुश्रति इ कहल जाइत अछि जे दुनू भाएमे पटइत नहि छलन्हि आ तैं जखन गंगदेव नेपाल एवँ वंगक संग बाझल छलाह तखन मल्लदेव हुनक मदति नहि केने छलथिन्ह। जयचन्द्र मल्लदेवक वीरतासँ बड़ड प्रभावित छलाह। सहरसा जिलामे मलडीहा आ मल्हनी गोपाल मल्लदेवक नामपर बसल अछि। भीठ भगवानपुरमे मंदिरमे एकटा अभिलेख अछि जाहिमे लिखल अछि– ***"ॐ श्री मल्लदेवस्य"***। किंवदंती अछि जे भीठ भगवानपुर मल्लदेवक राजधानी छल। भीठ भगवानपुर गंधवरिया राजपूतक केन्द्र सेहो मानल गेल अछि आ गंधवरिया परम्परामे सेहो एकटा मल्लदेवक नाम अवइयै। तैं इ कोन मल्लदेवक शिलालेख थिक से कहब असंभव।

विभिन्न तथ्यक परीक्षणक बाद हम एहि निर्णयपर पहुँचल छी जे नान्यदेवक पछाति मिथिला राज्यक विभाजन भेलैक आ ओकर पूर्वी भागपर मल्लदेवक आधिपत्य रहलैक। पश्चात मल्लदेवक वंशज सेहो एहि क्षेत्रपर शासन केलन्हि जकर अप्रत्यक्ष

रूपें कतेको प्रमाण भेटइत अछि। राज्यक बटबारा भऽ गेलसँ कर्णाट वंशक प्रभाव किछु घटि अवश्य गेल होएतैक आ तैं नान्यदेवक पछाति हमरा लोकनिकेँ कर्णाट राज्यक विशेष विस्तार देखबामे नहि अवइयै।

स्वर्गीय कालिकारज्जन कानूनगोय एकठाम लिखने छथि जे १२१३–१२२७क बीच मिथिलामे कोनो कर्णाट अरिमल्लदेवक शासन छल मुदा एहिठाम स्मरणीय जे एहि नामक कोनो शासक मिथिलामे नहि भेल छथि। नेपालमे एहि नामक शासक भेलहि अवश्य परञ्च ओ कर्णाटवंशक नहि छलाह आ ने ताहि दिनमे नेपालक कोनो प्रभाव मिथिलाक कोनो भागपर छल। इहो संभव अछि जे कानूनगोय महोदय मल्लदेवकेँ अरिमल्लदेव बुझि लेने होथि। एकर कारण हमरा बुझने इ अछि जे मिथिला परम्परामे कहल गेल छैक जे नान्यक एकटा पुत्र नेपालमे शासन करैत रहथिन्ह आ चूंकि नान्यक एकटा पुत्रक नाम मल्लदेव छलन्हि तैं कानूनगोय साहेब ओहि नामकेँ अरिमल्लदेवक संगे मिझ्झर क देने होथि। तैं हम अपन एक लेखमे (जे आनठाम प्रकाशित अछि) मल्लदेवकेँ मिथिलाक एकटा विसरल राजाक संज्ञा देने छी। मल्लदेव पूर्वी मिथिलापर तँ राज्य करिते छलाहे आ संगहि नेपालक किछु भागपर सेहो। भीठ भगवानपुर एकटा केन्द्रीय स्थल छल तैं ओकरा ओ अपन राजधानी बनौलन्हि कारण ओहिठामसँ ओ अपन शासन बढ़िया जकाँ दुनूठाम चला सकैत छलाह। कहल जाइत अछि जे हुनके दरबारमे स्मृतिकार वर्द्धमान उपाध्याय सेहो रहैत छलाह जनिक एकटा शिलालेख आसी (मटिआरी) (हाटी परगन्ना)सँ उपलब्ध अछि। ओ मल्लदेवक समयमे धर्माधिकरणक पदपर नियुक्त छलाह। शिलालेख एवँ प्रकारे अछि–

*"जातो वंशे बिल्व पंचाभिधाने*
*धमाध्यक्षो वर्द्धमानो भवेशात्।*
*देवस्याग्रे देवयष्टि ध्वजाग्रा*
*रूढ़ कृत्वाऽस्थापद्वैन तेयम्"॥*

भीठ भगवानपुरक मंदिर आ पोखरिसँ बहराएल बहुत रास बस्तुजात एहि बातकेँ प्रमाणित करैत अछि जे प्राचीन कालमे इ एकटा महत्वपूर्ण स्थान रहल होएत। कलात्मक वस्तुजात जे कर्णाटकालीन बुझि पड़इत अछि से ओतए प्रचुर मात्रामे बहराएल अछि आ किछु वस्तु तँ एहनो अछि जकरा अपूर्व कहल जा सकइयै। एकर विस्तृत विवरण कतेक ठाम हम कैल अछि। कर्णाट कालीन पुरातात्विक महत्वक बहुत रास वस्तु बहेड़ासँ सेहो बाहर भेल अछि। भगवानपुरक डीह–डाबर, पोखरि आ मंदिर विस्तारसँ देखलासँ आ सामरिक दृष्टिकोणसँ ओहिगामक चौहद्दीक अध्ययन केलासँ इ बुझना जाइत अछि जे मल्लदेव ओहि स्थानकेँ अपन राजधानी बनौने हेताह आ ओतहिसँ ओ नेपाल आ सहरसा–पूर्णियाँ क्षेत्र धरि अपन राज्यक नियंत्रण करैत हेताह। प्राचीन कालमे सहरसा–पूर्णियाँ जेबाक रास्ता, बाट–घाट, सबटा एहि दऽ कऽ छल आ नेपालो जेबामे हुनका एहिठामसँ सुभीता होइत हेतन्हि। ओहि स्थानक उत्खनन भेलासँ ओहिपर आर प्रकाश पड़बाक संभावना अछि। जाधरि आर कोनो नवीन तथ्य हमरा लोकनिक समक्ष नहि अवइयै ताधरि मल्लदेवक ऐतिहासिकता संदिग्धे मानल जाएत। मल्लदेवक सम्बन्ध अखन आर शोधक अपेक्षा अछि।

**गंगदेव:-** ११४७ ई.मे नान्यदेवक मृत्युक उपरांत आ पारिवारिक कलह एवँ उपरोक्तक पछाति गंगदेव मिथिलाक राजगद्दीपर आसीन भेलाह। ओ बंगालक वल्लालसेनक समकालीन छलाह आ स्वयं एक महत्वाकाँक्षी शासक सेहो। विजय

सेनक हाथे अपन पिता नान्यदेवक बेइज्जतीक बात ओ बिसरल नहि छलाह आ ओ अवसरक खोजमे छलाह जाहिसँ एकर बदला लऽ सकैथ। गंगदेव आ गाँगेयदेवक प्रश्नपर इतिहासकारक मध्य जे एकटा विवाद चलि रहल अछि ताहि दिस हम पाठकक ध्यान पूर्वहिं आकृष्ट कए चुकल छी। रामायणक पुष्पिकामे जे एकटा गाँगेयदेवक विश्लेषण भेल अछि ताहि प्रसंगमे मिथिलाक इतिहासकार उपेन्द्र ठाकुरक विचार छन्हि जे ओ गाँगेयदेव कलचुरि वंशक छलाह आ हुनका महिपालसँ संघर्ष भेल छलन्हि। परञ्च हमरा एहिठाम एहि प्रश्नपर विचार करबाक हेतु निम्नलिखित बातकेँ ध्यानमे राखए पड़त।

रामायणक एक पोथीमे छैक–**'गौड़ध्वज'** श्रीमद गांगेयदेव–एहिमे पुण्याव लोक शब्दक व्यवहार अछि आ विनु कोनो संकेत संवत् १०७६क। दोसर पाठमे **'गौड़ध्वज'**क स्थानपर **"गरूड़ध्वज"** छैक। उपेन्द्र ठाकुर महामहोपाध्याय मिराशीक मतसँ सहमति प्रगट कएने छथि। मुदा एहिठाम विचारणीय विषय इ अछि जे १०७६ शक छल अथवा विक्रम आ दोसर बात इ जे महिपाल प्रथमक समयमे पाल वंशक पुनरूद्धार भेल छल आ तैं ओहि कालमे कलचुरि लोकनिकेँ **'गौड़ध्वज'**क उपाधिसँ विभूषित हेबाक कोनो संभावना नहि बुझाइत अछि। महिपाल प्रथम अपन साम्राज्यक सीमा बनारस धरि बढ़ौने रहैथ आ जँ कलचुरि गांगेयदेवकेँ से शक्ति रहितन्हि तँ ओ अवश्ये बंगालक महिपालक प्रगतिकेँ रोकितैथ परञ्च से कहाँ हमरा लोकनिक देखबामे अवइयै। दोसर बात इहो जे मिथिलासँ महिपालक काल अभिलेखो भेटल अछि। संवतक संकेत नहि रहब सेहो एकटा दिग्भ्रमक जन्म दैत अछि। पोथी लिखनिहार श्रीकरक आत्मज कायस्थ मिथिलाक नरंगवाली मूलक एकटा प्रमुख व्यक्ति छलाह आ अहुँसँ इ प्रमाणित होइछ जे अपन तीरभुक्तिक महाराजाधिराज पुण्यावलोक श्री गंगदेवक प्रसंगहिमे लिखने हेताह।

तत्कालीन राजनैतिक अवस्थाकेँ ध्यानमे राखि जखन हम एहि साधनक अध्ययन करैत छी तखन इ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे बारहम शताब्दी उतरार्द्धमे बंगालमे पालवंशक ह्रास भऽ रहल छल आ बंगालक सेनवंश आ मिथिलाक कर्णाट लोकनि ओहि पाल साम्राज्यपर अपन गिद्ध दृष्टि लगौने छलाह। एहेन बुझि पड़इयै जे प्रारंभमे मिथिलाक कर्णाट आ बंगालक सेन संगहि मिलि पालकेँ परास्त कए ओतएसँ भगौलन्हि आ जखन आपसी बटबाराक प्रश्न उठल तखन दुनूमे संभवतः विवाद भेलन्हि आ सेन आ कर्णाट वंशमे झगड़ा भेल। पाल लोकनिकेँ पराजित करबाक श्रेयक कारणें मिथिलाक गाँगेयदेव **"गौड़ध्वज"**क उपाधिसँ विभूषित भेलाह। तैं रामायणक पुष्पिकामे उल्लिखित **'गांगेयदेव'** मिथिलाक गंगदेव थिकाह जे मिथिलासँ बंगाल धरि अपन शासनक प्रसार केने छलाह आ बल्लालसेन मिथिलाक बढ़ैत शक्तिसँ सशंकित भऽ भागलपुर धरि गंगाक दक्षिणमे अपन सत्ता बढ़ा लेने छलाह।

बल्लालसेनक एकटा अभिलेख धातु सनोखर (भागलपुर)सँ प्राप्त भेल अछि जे एहिबातकेँ सिद्ध करइयै। बल्लाल चरितमे कहल गेल अछि जे बल्लालसेन **पंचगौड़** (वंग, वागड़ी, वरेन्द्र, राढ़ आ मिथिला)क शासक छलाह परञ्च हमरा बुझने पहिल चारिपर हुनक शासन छलन्हि आ पाँचमकेँ ओ अपन बापक अमलक प्रतिष्ठाक रूपमे जोड़ने छलाह। पूर्वहिं इ देखाओल जा चुकल अछि कि मिथिलापर सेन राज्यक कोनो स्पष्ट प्रमाण नहि छल तैं आब इ निर्विवाद रूपें कहल जा सकइयै जे गंगदेवक शासन कालमे मिथिला पूर्णरूपेण स्वतंत्र छल आ कर्णाट लोकनि अक्षुण्ण भावें एहिठाम राज्य करैत छलाह। दुनू राज्यक सीमा मिलैत जुलैत छल तैं यदा कदा टंट–घंट

भऽ जाएब स्वाभाविके छल। लक्ष्मण संवत् प्रचलनक साक्ष्य दऽ कैं इ कहब जे मिथिलामे सेन वंशक राज्य छल से समीचीन प्रतीत नहि होइछ आ ने एकरा सिद्ध करबाक हेतु कोनो ठोस प्रमाणे अछि।

गंगदेव अपन मंत्री श्रीधर दासक सहायतासँ उत्तमोत्तम रीतिसँ अपन राज काज चलबैत रहलाह। हुनका समयमे कर्णाट शासन प्रणालीकैं दृढ़ बनाओल गेलैक। राजस्व प्रशासनकैं वैज्ञानिक ढ़ंगपर चलेबाक हेतु ओ अपन राज्यकैं परगन्नामे विभाजित केलन्हि आ प्रत्येक परगन्नामे मुखिया अथवा प्रधान नियुक्त भेलाह जे **'चौधरी'** कहबैत गेलाह। न्याय प्रशासनक हेतु पंचायती व्यवस्थाक स्थापना भेल। जन कल्याण आ कृषिक उन्नतिक हेतु ओ अपना राज्यमे अनेकानेक पोखरि एवँ जलाशयक व्यवस्था केलन्हि। अपन राज्यकैं ओ अपना शासन कालमे सुरक्षित रखबामे समर्थ भेलाह। पश्चिममे गहढ़वाल, पूर्वमे सेन आ दक्षिणमे पाल लोकनिसँ अपन साम्राज्यक सुरक्षा रखैत ओ नेपालोपर अपन अधिकारक दावी देनहि रहलाह आ एवँ प्रकारे नान्यदेव द्वारा स्थापित राज्यकैं गंगदेव आर दृढ़ बनौलन्हि जाहिसँ मिथिलाक प्रतिष्ठा चारूकात बढ़ल। गंगदेवक समयमे मिथिलामे शांति आ सुव्यवस्था बनल रहल आ कोम्हरोसँ कोनो आक्रमण नहि भेल। इएह कारण छल जे ओ शासन संगठन आ प्रशासनिक सुधार दिसि अपन ध्यान देबामे समर्थ भेलाह। नान्यदेव तँ विजय प्राप्त कैक राज्यक जन्म देलन्हि आ गंगदेव ओकरा संगठित केलन्हि आ शांति प्रदान केलन्हि। इ एकटा अजीव संयोग थिक जे पिता पुत्र दुनू एक्के रंग कूटनीतिज्ञ, दूरदर्शी आ कुशल विजेता आ प्रशासक बहरेलाह।

बारहम शताब्दीक श्रीवल्लभाचार्य (**न्याय–लीलावती**क लेखक) निम्नलिखित वाक्य एकटा तत्कालीन कर्णाट शासक उल्लेख करैत छथि–

> *"यदि च गगनमात्मावान्यधर्मणान्यमवच्छिन्द्यात्*
> *काश्मीर वर्त्तिना कुङ्कुम रागेण* ***कर्णाट चक्रवर्त्ति*** *(ललना)*
> *करकमवच्छिन्द्यात्–"*

आब इ **कर्णाट चक्रवर्त्ति** (ललना)कैं छलाह से कहब असंभव। नान्यदेव, मल्लदेव आ गंगदेव–सब भऽ सकैत छथि। **'ललना'** शब्द मैथिलीमे छोट बच्चाक हेतु प्रयोग होइत छैक तैं हमरा बुझने एहिसँ नान्यदेवक कोनो पुत्रक संकेत होइयै, आब ओ मल्लदेव हेताह अथवा गाँगदेव से कहब कठिन।

**श्री वल्लवभाचार्य**–एकटा शासन करैत राजाक नाम सेहो लिखैत छथि–**"श्री शालि वाहनो नृपति"–** अहु राजाक पहचान असंभव अछि। मिथिलासँ प्राप्त मैथिलीक पाण्डुलिपि सब से एहेन बहुत रास राजा सबहक नाम भेटइत अछि जकरा कोनो राजवंशसँ मिलाएब अथवा जोड़ब असंभव भऽ जाइत अछि। मिथिलाक इतिहासक साधनो अखन धरि इएह सब रहल अछि तैं एकरा तिरस्कारो करब असंभव।

**नरसिंह देव–(११८७–१२२७)–** गंगदेवक परोक्ष भेलापर मिथिलाक राजगद्दीपर नरसिंह देव बैसलाह। हुनका समयमे मिथिला आ नेपालक मध्य किछु खट–पट भेल छल आ एकर नतीजा इ भेल जे नेपाल मिथिलासँ फराक भऽ गेल। रामदत्त अपन दान पद्धतिमे नरसिंह देवकैं **कर्णाटान्वय भूषणः**- कहने छथि। रामदत्त हुनक मंत्री छलाह आ रामदत्तक अनुसार नरसिंह देव मिथिलाक अक्षुण्ण शासक छलाह। विद्यापतिक **पुरूष परीक्षा**सँ ज्ञात होइछ जे नरसिंह देव अपन पिता मल्लदेवक संग कन्नौज गेल छलैथ। ओतएसँ ओ दिल्ली सेहो गेल छलाह आ शहाबुद्दीन गोरीक सेनामे

सेनानायकक काज कएने छलाह जाहिसँ गोरी हिनकासँ प्रसन्न भऽ हिनका मिथिलामे अक्षुण्ण करबाक हेतु छोड़ि देबाक आश्वासन देने रहथिन्ह। इ चाचिक देव चौहानक परम मित्र छलाह। कहल जाइत जे इहो एक कुशल शासक छलाह मुदा राजनैतिक दृष्टिकोणसँ हम देखैत छी जे हिनका राज्यमे नेपाल हिनका हाथसँ बाहर भऽ गेल आ ताधरि बाहर रहल जाधरि हरिसिंह देव पुनः ओकरा नहि जीतलन्हि। दोसर बात इहो जे मुसलमान लोकनि पश्चिम आ पूबसँ मिथिला राज्यकेँ दबबे लागल छलाह आ आक्रमण श्री गणेश सेहो हिनके समयमे प्रारंभ भऽ गेल छल। मिथिला राज्यकेँ मुसलमान लोकनि अपन आँखिमे काँट जकाँ बुझैत छलाह आ तैं ओ लोकनि एम्हर–ओम्हरसँ हुलकी–बुलकी देव आरंभ कऽ देने छलाह। नरसिंह देव अपना भरि मिथिला राज्यकेँ चारूकातसँ सुरक्षित रखबाक यथेष्ट प्रयास केलन्हि आ एहि क्रममे हुनका बहुत किछु सफलता भेटलन्हि।

**रामसिंह देव–(१२२७–१२८५)–** रामसिंह देव कर्णाट वंशक एक सफल आ कुशल शासक छलाह जनिक महिमाक गुनगान तिब्बती यात्री धर्मस्वामी सेहो कएने छथि। कर्मादित्य ठाकुर रामसिंह देवक मंत्री छलथिन्ह आ कर्मादित्यक एकटा अभिलेख ल.सं.२१२क सेहो उपलब्ध अछि। हिनका समयमे समस्त उत्तर भारतमे मुसलमानी सत्ताक प्रसार भऽ चुकल छल आ मिथिलाक चारूकात मुसलमानी आक्रमणक संभावना बढ़ि गेल छल। वैशालीमे मुसलमानी आक्रमणक स्वरूपक विवरण धर्मस्वामी उपस्थित कएने छथि। लखनौतीक हिसामुद्दिनइवाज मिथिलोसँ कर प्राप्त केने छल आ तिरहुतमे पूर्व–पश्चिम दुनू दिसिसँ आक्रमण होइत रहैत छल। रामसिंह देवक पदवीमे **'भुजबलभीम'** आ **'भीमपराक्रम'**क विशेष महत्व रखइयै। हिनकसान्धि विग्रहिक छलाह देवादित्य ठाकुर जिनका वंशमे बड़ड पैघ–पैघ विद्वान आ पराक्रमी लोक सब भेल छलाह। धनवान होएबाक कारणे ओ लोकनि महत्तक (महथा) सेहो कहबैत छलाह।

रामसिंह देव विद्या आ धर्मक समर्थक आ प्रवर्त्तक छलाह। हुनके समयमे मिथिलामे वैदिक टीका लिखल गेलैक। ओहिकालमे सामाजिक एवँ धार्मिक नियमक प्रतिपादन भेल आ शासन विधानमे सेहो बेस सुधार भेलैक। प्रत्येक गामक हेतु कोतवालक नियुक्ति भेल। गामक प्रत्येक समाचार चौधरी कोतवालकेँ दैत छलैक आ ओहि ठामसँ ओ समाचार राजा धरि पहुँचैत छल। ओहि समयमे पटवारी प्रथाक विकास भेल। रामसिंह देव पैघ विद्या प्रेमी छलाह आ हुनके समयमे श्रीधर आचार्य **अमरकोश**पर अपन टीका लिखलन्हि।

रामसिंह देवक समयमे प्रसिद्ध तिब्बती यात्री धर्मस्वामी एम्हर आएल छलाह आ रामसिंह देवक संग हुनक सम्बन्ध मधुर छलन्हि। ओ आती–जाती दुनू बेर रामसिंह देवक संगे रहलो छलाह। ओहि समयमे मिथिलामे मुसलमान लोकनिक प्रकोप बढ़ल जाइत छल। रामसिंह राजधानी **''प'ट''** (सिमरौनगढ़)क सुन्दर विश्लेषण धर्मस्वामी कएने छथि। **''प'ट''** बड़ड पैघ आ उन्नत नगर छल आ चारूकातसँ दुर्ग आ खाधिसँ घेरल–बेढ़ल छल। सब तरहे एकर सुरक्षाक प्रबंध कैल गेल छल। इ नगर उत्तरमे छल। एहिठाम ओ ज्वरसँ पीड़ित सेहो भेल छलाह। नेपालसँ एहिठाम एबामे हुनका तीन मास लागल छलन्हि। रोगसँ मुक्त भेलापर जखन ओ अपन देश जेबाक हेतु तैयार भेला तखन रामसिंह हुनका किछु दिन आ रहबाक हेतु आग्रह केलथिन्ह। एतबे नहि रामसिंह हुनका अपन प्रधान पुरोहितक पदपर नियुक्त करबाक आश्वासन सेहो देलथिन्ह मुदा तइयो ओ एतए रहबा लेल तैयार नहि भेलाह आ घुरबाक हेतु तत्पर

भऽ गेलाह। रामसिंह हुनका बहुत रास वस्तुजात उपहारमे देलथिन्ह। धर्मस्वामीक विवरण इ स्पष्ट होइछ जे मुसलमान लोकनिक प्रभाव बड़ड बढ़ि गेल छल आ रामसिंह किलाबंदीपर विशेष बल देने छलाह। रामसिंहक अपन राजभवन सात गोट भीत आ २१ गोट खाधिसँ घेरल छल। वैशालीक निवासी लोकनि मुसलमानी आक्रमणसँ हड़कम्पित छलाह। वैशालीमे एकटा प्रसिद्ध ताराक मूर्त्ति छल।

धर्मस्वामीक मुसलमानी आक्रमण सम्बन्धी मतक समर्थन परम्परागत साहित्य एवँ साधनसँ सेहो होइत अछि जाहिमे इ कहल गेल अछि जे रामसिंहकेँ मुसलमानसँ लड़ए पड़ल छलन्हि। मुसलमान लोकनि गंगाक दक्षिणमे मूंगेर, भागलपुर, पटना, आदि स्थानमे पसरि चुकल छलाह आ ओम्हर बंगालक शासक सेहो पश्चिम दिसि अपन शक्तिकेँ बढ़ेबामे लागल छलाह। ओहि दुनूमे बरोबरि संघर्ष चलैत रहन्हि आ मिथिलाक शासक अपन **'वेतसिवृति'**क पालन कए अपन स्वतंत्रताकेँ सुरक्षित रखबामे व्यस्त छलाह। रामसिंह देव एहि हेतु कत्तेक प्रयत्नशील छलाह तकर प्रमाण तँ एतवे अछि जे ओ जँ अपन राज्यक विस्तार नहि केलन्हि तँ हुनका समयमे हुनक राज्य एक्को इंच घटल नहि आ साँस्कृतिक एवँ सामाजिक दृष्टिकोण ओ जे समाज रचनाक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बनौलन्हि तकरे आधारपर बादमे हरिसिंह देवी पंजी प्रथा ठाढ़ भेल।

**शक्ति सिंह:-(शक्र सिंह)–(1285–95)–?–** रामसिंहक पछाति शक्तिसिंह अथवा शक्रसिंह मिथिलाक राजा भेलाह। ओ महा पंडित, प्रतापी एवँ पराक्रमी शासक छलाह आ दिल्लीक शासकक संग हुनक सम्बन्ध बरोबरि बनल रहलन्हि–इ सम्बन्ध विरोध आ मित्रता दुनूक छलन्हि। हम्मीरक विरूद्धक अभियान शक्तिसिंह अलाउद्दीन खलजीक संग रहैथ आ हुनका संग हुनक मंत्री देवादित्य आ हुनक आत्मज वीरेश्वर सेहो रहथिन्ह। अपन मंत्रीक स्वामीद्रोहक कारणे (रायमल्ल आ रामपाल) हम्मीर पराजित भेलाह। अलाउद्दीन देवादित्यकेँ **'मंत्रिरत्नाकर'** पदवीसँ विभूषित केलथिन्ह। शक्तिसिंहक संग खलजी सम्राटक मित्रता बनल रहल आ मिथिलाक स्वतंत्रता सेहो बाँचल रहल।

शक्तिसिंह अत्याचारी शासक छलाह। हुनक निरंकुश शासनकेँ रोकबाक हेतु वृद्ध सब सातटा प्रमुख वृद्धकेँ चुनिकेँ एकटा **'वृद्ध–परिषद'**क निर्माण कएने छलाह। हुनक अत्याचारी शासनसँ हुनक दरबारी आ मंत्री लोकनि कूपित भऽ गेल छलाह। राजाक निरंकुशताक विरोधमे सर्वप्रथम अवाज उठौलनि चण्डेश्वर ठाकुर जे अपना युगक एकटा प्रसिद्ध विद्वान आ राजनीतिज्ञ छलाह। हुनके प्रयासे राजाक निरंकुशतापर रोक लागि सकल। दरभंगाक आनंदवागक पश्चिम **'सुखीदिग्घी'** पोखरि हिनके खुनाओल थिक आ आधुनिक सकुरीक बसौनिहार शक्तिसिंहें थिकाह। शक्तिसिंहक बाद एकटा भूपाल सिंहक नाम भेटइयै मुदा ओ शासक भेलाह अथवा नहि से कहब असंभव।

**हरिसिंह देव:-(१२९५–१३२४-?)–** नान्यदेवक पश्चात् कर्णाटवंशक सबसँ प्रसिद्ध एवँ महान शासक हरिसिंह देव भेलाह जे मिथिला आ नेपालक इतिहासमे कैक दृष्टिये विख्यात छथि आ जनिक शासन काल पूर्वी भारतक इतिहासमे महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। हिनक जन्म, राज्यारोहण, मृत्यु इत्यादिक वास्तविकताक सम्बन्धमे हमरा लोकनिक ज्ञान अपूर्ण अछि अथवा इहो कहि सकैत छी जे हिनका सम्बन्ध सबटा एतिहासिक तथ्य अद्यावधि अनिश्चितता एवँ सन्दिग्धक गर्भेमे अछि। एकर मूल कारण इ अछि जे मिथिलाक एहिकालक इतिहासक अध्ययनक हेतु जे प्रामाणिक साधन

चाही तकर सर्वथा अभाव अछि। तथापि जतवे जे साधन उपलब्ध अछि ताहि आधारपर हमरा लोकनि हरिसिंह देवक शासन एकटा वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत करबाक प्रयास करब। ने राजनीतिक इतिहासक हिसाबे आ साँस्कृतिक इतिहासक हिसाबे हरिसिंह देवकेँ विसरल जा सकइयै। जँ नान्यदेव एहिवंशक संस्थापकक हिसाबे स्मरणीय छथि तँ हरिसिंह अपन नेपाल विजय एवँ पंजी–प्रथाक संस्थापकक रूपें मिथिलाक इतिहासमे अमर छथि। एम्हर आबिकेँ आब मिथिलाक इतिहासक महत्व दिसि पौवात्य–पाश्चात्य विद्वानक ध्यान आकृष्ट भेल छन्हि आ एकर प्रमाण भेल लुसिआनो पेतेकक **'मिडिभल हिस्ट्री आफ नेपाल'** तथा भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रकाशित **"दिल्ली सल्तनत"** (खण्ड–6)मे विवेचित मिथिलाक इतिहासक अंश। आब मिथिलाक इतिहासक एहिकालकेँ उपेक्षित करब कठिन अछि कारण एहि सम्बन्धमे जे अद्यावधि एकटा भ्रांति पसरल छल से दूर भऽ गेल अछि आ सामाजिक इतिहासक अध्ययनार्थ हरिसिंह देवक पंजी प्रथा एकटा प्रमुख विषय बनल अछि।

कहिआ, कोना आ कोन रूपें ओ मिथिलाक शासन भार ग्रहण केलन्हि तकर कोनो ठोस प्रमाण हमरा लग नहि अछि मुदा हुनका सम्बन्धमे प्रचलित किंवा व्यवहृत शब्दावली एहि बातक प्रमाण अछि जे ओ शक्तिशाली शासक छलाह। अपना काल धरि ओ कहियो ककरो समक्ष ने अपन माथ झुकौने छलाह आ ने टेकने छलाह। अपनाकेँ स्वाभिमानी स्वतंत्र आ निर्भीक बुझैत छलाह आ एहिबातक प्रमाण हमरा **वसातिनुलउन्स**सँ भेटइत अछि। **पुरूष परीक्षा**मे विद्यापति हुनका **'कर्णाट–कुल–सम्भव'** कहने छथिन्ह; चण्डेश्वरक **कृत्यरत्नाकर**मे हुनका **'कर्णाट वंशोद्भव'** कहल गेल छन्हि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक **धूर्त समागम**मे **कर्णाट चूडामणि**क संज्ञा हिनका देल गेल छन्हि।

कर्णाटवंशोद्भव शत्रुजेता हरिसिंह देव मिथिलामे अपन एकटा नव कीर्तिमान स्थापित केने छलाह। हुनक सान्धिविग्रहिक मंत्री देवादित्य ठाकुर छलथिन्ह। देवादित्य यशस्वी, बुद्धिमान एवँ दानी छलाह। हुनक पश्चात् हुनक पुत्र वीरेश्वर ठाकुर मंत्री भेलाह। उहो महा दानी छलाह आ समुद्र सन गहिर पोखरि दहिभत गाममे खुनौने छलाह। ओ श्रौतकर्मानुष्ठाता ब्राह्मण लोकनिकेँ उदारता पूर्वक दान देने छलाह आ गामक गाम दानमे सेहो हुनका लोकनिकेँ देने छलाह। उहो एकटा पोखरि खुनौने छलाह जकर नाम छल **'वीरसागर'** आ ओहिसँ गामक नाम **'विरसागर'** पड़ल। वीरेश्वर ठाकुरकेँ **'महावर्तिक नैबन्धिक'** सेहो कहल जाइत छलन्हि। वीरेश्वर ठाकुरक बाद हुनक पुत्र चण्डेश्वर ठाकुर महामत्तक सांधिविग्रहिक भेलाह। उहो प्रतापी, साहसी, उदार एवँ दानी छलाह आ हरिसिंह देवक मित्र, सलाहकार एवँ दार्शनिक सेहो छलाह। हरिसिंह देव हिनक समयमे वयस्क भऽ चुकल छलाह आ राज काज सम्हारि लेने छलाह। इहो हावी परगन्नाक सिमराम ग्राममे एकटा पोखरि खुनौने छलाह जे **"सुरवय"** कहबैत अछि। नाबालिक अवस्थामे राजगद्दीपर बैसलाक कारणे हरिसिंहक देखरेख सुयोग्य मंत्रिगणक हाथमे छल आ राजाक दिसि इएह मंत्री लोकनि सब काज करैत छलाह। हरिसिंह देव जखन जवान भेलाह तखन चण्डेश्वर ठाकुर हुनक मंत्री छलथिन्ह। ब्राह्मणक एकवंशसँ कर्णाट राजदरबारमे तीन पीढ़ी धरि बरोबरि मंत्री होइत रहलाह–ताहिसँ इ सिद्ध होइत जे एहि कालमे सामंतवादी व्यवस्थाक विकासक कारणे मंत्रीपद वंशानुगत भऽ चुकल छल आ राजापर हुनका लोकनिक विशेष नियंत्रण रहैत छलन्हि। हम उपर देखि चुकल छी जे शक्ति सिंह जखन निरकुंश बनबाक चेष्टा केलन्हि तखन इएह सामंत लोकनि हुनक ओहि चेष्टाकेँ विफल कैल आ हरिसिंह देवक नाबालिग रहबाक कारणे हुनका लोकनिक अधिकारमे अत्यधिक वृद्धि भेल।

विद्यापतिक **पुरूष परीक्षा**सँ इहो ज्ञान होइछ जे हरिसिंह देव यादव राजा देवगिरिक रामदेवक समकालीन छलाह आ गोरखपुरक राज दरबारमे हुनक कला–प्रेमी होएबाक चर्च बरोबरि होइत छलन्हि। हरिसिंह देवक नामसँ समकालीन राजा लोकनि नीक जकाँ परिचित छलाह। हरिसिंह देवक मंत्री चण्डेश्वर अपना कालक प्रसिद्ध विद्वान छलाह आ तैं हिनक नामसँ मिथिला राज्योक नामक प्रसार होइत छल।

हरिसिंह देवक समयमे चण्डेश्वर ठाकुर नेपाल अभियानक नेतृत्व केलन्हि। ओतए इ किरात राजा सबकें एवँ सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा गणकें पराजित कए सम्पूर्ण नेपाल राज्यपर मिथिलाक आधिपत्य जमौलन्हि। एहिसँ इ तँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे नरसिंह देवक समयमे नेपालसँ खट–पट भेलाक बाद नेपाल अपनाकें मिथिलाक नियंत्रणसँ मुक्त कऽ लेने छल कारण जँ से बात नहि रहैत तँ चण्डेश्वर ठाकुरकें हरिसिंह देवक शासन कालमे पुनः नेपालपर आक्रमण करबाक आवश्यकता कियैक भेलैन्ह। दोसर बात इहो जे हरिसिंह देवक प्रभाव जखन नेपालपर पुनः स्थापित भेल तँ मिथिलाक प्रतिष्ठा सेहो बढ़ल आ एहि हिसाबे हरिसिंह देवक शासनकाल महत्वपूर्ण मानल जा सकइयै। हरिसिंह देव तुगलकसँ पराजित भेलाक बाद भागिकें नेपाले गेल छलाह। चण्डेश्वर ठाकुर वाग्मतीक नदीक तटपर **स्वर्ण तुलापुरूष** महादान कयने छलाह आ उएह प्रथम व्यक्ति छलाह जे पशुपति नाथ धरि पहुँचल छलाह। चण्डेश्वर ठाकुर अधीन हरिब्रह्म नामक एक सामंतक चर्च **प्राकृत–पैंगलम**मे भेल अछि।

हरिसिंह देवक समयमे मिथिलाक राज्य सुरक्षित रहल यद्यपि ताहि समय तक पश्चिमी आ पूर्वी राज्यसँ मिथिलापर बरोबरि प्रहार भऽ रहल छल। नेपाल धरि अपन राज्यक सीमाकें पुनः बढ़ेबाक श्रेय हरिसिंह देवकें छन्हि। नेहरामे हरिसिंह देव सेहो अपन एकटा मुख्यालय रखने छलाह आ ओहिठाम एकटा गढ़ सेहो छल। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक **'धूर्त समागम नाटक'**सँ ज्ञात होइछ जे हरिसिंह देवकें कोनो सुरत्राणसँ झगड़ा भेल छलन्हि जकर परिणाम अनिर्णीत बुझना जाइत अछि। हरिसिंह देवक पादपद्मपर कतेको प्रतापी राजा अपन–अपन माथ नमवैत छलाह।

*"नानायोध निरूद्ध निर्जित सुरत्राणात्र सद्वाहिनी*
*नृत्यद्भीमकबन्धमेलक दलद् भुमि भ्रमद् मुधरः॥*
*अस्ति श्री हरिसिंह देव नृपतिः कर्णाट् चूड़ामणिः*
*दृप्यत्पार्थिव सार्थ मौलिमुकुटन्यस्ताङघ्र पंकेरूहः"॥*

उमापतिक **पारिजातहरण**सँ सेहो इ स्पष्ट होइछ जे हरिसिंह देव आ कोनो मुसलमान शासकक बीच संघर्ष भेल छल मुदा ज्योतिरीश्वर आ उमापतिक विवरणमे कोनो मुसलमान शासकक नाम नहि रहलासँ कठिनताक अनुभव हैव स्वाभाविके। ओहि सबसँ केवल एतवे ज्ञान होइछ जे हरिसिंह देवकें बरोबरि मुसलमान शासक लोकनिसँ टंटा होइत रहन्हि आ ओहि सभहिक वावजूदो ओ मिथिलाकें राज्य सुरक्षित रखैत अपन प्रजाक कल्याणमे लागल रहैथ। हमरा बुझि पड़इयै जे मिथिलाक राज्यक भविष्यक सम्बन्ध हुनका पूर्वाभास भऽ गेल छलन्हि आ तैं ओ नेपालपर पुनः अपन आधिपत्य कायम करबाक प्रयासमे लागल छलाह। मिथिलामे चारूकातसँ तंगी देखि ओ अपना हेतु नेपाल राज्यकें सुरक्षित राखए चाहैत जाहिसँ किओ मुसलमानी आक्रमणसँ आक्रांत भेलापर ओतए जाएकें रहि सकैथ। इएह कारण थिक जे हुनक मंत्री नेपालपर पूर्ण आधिपत्य कायम केने छलाह। तुगलक आक्रमणक बाद ओ भागिकें

ओम्हरे गेओ केलाह। कहल जाइत अछि जे मिथिला छोड़बाक पूर्व ओ नेहरा पोखरिपर विश्वचक्र महादान यज्ञ कयने छलाह।

१३२३–२४ ई.मे मिथिलापर गियासुद्दीन तुगलकक आक्रमण भेल। कहल जाइत अछि जे बंगाल आ मिथिलाक शासकक संग एक प्रकार गुप्त समझौता छल आ दुनू अपन–अपन स्वतंत्रताकेँ सुरक्षित रखबाक लेल प्रयत्नशील छलाह। गियासुद्दीन तुगलक एहि दुनू राज्यकेँ अपना आँखिक काँट बुझैत छल आ तैं बंगालपर आक्रमण केलाक बाद ओ मिथिले बाटे घुरल आ एहिठाम शासककेँ अपना अधीन करबाक प्रयास केलक। फरिस्ताक अनुसार तिरहुतक राजा संघर्षक हेतु आगाँ बढ़लाह परञ्च हुनका खेहारिकेँ जंगलमे ठेल देल गेलन्हि। तुगलक राजा जंगलकेँ अपने हाथसँ कटलन्हि आ जखन जंगल साफ भेल तखन ओ देखलन्हि जे तिरहुत राजाक एकटा बड़का किला अछि जे चारूकात बड़का–बड़का खाधिसँ घेरल अछि। उच्च उच्च भीति आ सातटा खाधिसँ घेरल किला देखि तुगलक शासक थोड़ेक कालक हेतु धतमतेलाह आ तत्पश्चात् सातोटा खाधिकेँ भरि ओ किलाक भीत आ देवालकेँ नष्ट केलन्हि। एहि सब काजमे हुनका तीन हफ्ता लगलन्हि। राजा सपरिवार गिरफ्त भेलाह आ तिरहुतक शासन भार मलिक तबलिगाक पुत्र अहमद खाँक हाथमे देल गेल। तकर बाद तुगलक राजा दिल्ली दिसि प्रस्थान केलन्हि। वरनीक अनुसार जखन गियासुद्दीन तुगलक तिरहुत पहुँचलाह तखन सब राजा लोकनि आत्म समर्पणकेँ देलन्हि। **वसातिनुलउंस**क अनुसार तिरहुतक राजा पड़ाकेँ नेपाल चल गेलाह आ तिरहुतपर तुगलक शासन स्थापित भऽ गेल। (विशद् विश्लेषणक हेतु देखु हमर लिखल पोथी–**"हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत"**)।

चण्डेश्वर ठाकुरक **दान रत्नाकर** आ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक **धूर्तसमागम नाटक** तथा उमापतिक **पारिजातहरण नाटक**सँ एतवा धरि स्पष्ट होइयै जे **i**) हरिसिंह देव म्लेच्छसँ आप्लावित पृथ्वीकेँ मुक्त कएने छलाह आ, **ii**) ओ कोनो सुरत्राणकेँ पराजित कएने छलाह आ **iii**) पृथ्वीपर जे म्लेच्छ लोकनि भार स्वरूप छथि तकरासँ ओ पृथ्वीकेँ हलुक केने छलाह। फरिस्ताक कथन जे हरिसिंह देव सपरिवार गिरफ्त भेलाह से मान्य नहि अछि कारण आँखिक देखल हाल लिखनिहार वसातिनुलउंसमे एकर समर्थन नहि केने छथि। ओहिमे इ स्पष्ट लिखल अछि जे राजा भागिकेँ नेपाल चल गेलाह आ ओतहि बसि गेलाह। परिस्थितिसँ वाध्य भऽ भागि जेबाक कथा आ पहाड़मे घुसिया जेबाक बात मैथिली परम्परामे निम्नलिखित श्लोकमे सुरक्षित अछि।

*"वाणाब्धि बाहु सम्मित शाकवर्षे*
*पौषस्य शुक्ल दशमी क्षितिसूनुवारे*
*त्यक्त्वा स्व–पट्टन पुरी हरिसिंह देवो*
*दुर्दैव देशित पथे गिरिमाविवेश"–*

मिथिलासँ निराश्रित भेलापर हरिसिंह देव पड़ाकेँ नेपाल गेला जतए १० वर्ष पूर्व चण्डेश्वर ठाकुर किरात आ क्षत्रिय शासक लोकनिकेँ हराके मिथिलाक प्रभुत्व स्थापित कएने छलाह। हरिसिंह देव नेपाल पहुँचि सूर्यवंशी राज्यक स्थापना केलन्हि से कहल जाइत अछि। ओ भातगाँवमे अपन केन्द्र बनौलन्हि। नेपालपर मिथिलाक आक्रमणक तिथि लऽ कए इतिहासकारमे मतभेद छन्हि। दिली रमण रेग्मी १३१४ (चण्डेश्वर द्वारा आक्रमणक तिथि)केँ नेपालपर आक्रमणक तिथि मनैत छथि परञ्च भगवान लाल इन्द्र जी आ राइट महोदय १३२४ ई.केँ (जखन हरिसिंह देव मिथिलासँ पड़ाय ओतए

पहुँचलाह)। एहि दुनू तिथिमे कोनो संघर्षक गुंजाइश नहि अछि यदि हमरा लोकनि एकरा एहि ढ़ँगे देखी—चण्डेश्वर मिथिला राज्यक मंत्री हिसाबे नेपालकेँ जीतने छलाह आ तहियासँ पुनः नेपाल मिथिलाक अधीन भऽ गेल छल। हरिसिंह देव जखन ओतए पहुँचलाह तखन ओ विधिवत अपनाकेँ ओतुका शासक घोषित केलन्हि आ भातगाँवमे अपन प्रधान कार्यालयक स्थापना केलन्हि। एहि दुनूमे विशेष साम्य अछि। १३१४सँ १३२४ धरि ओ मिथिलासँ नेपालपर राज्य करैत छलाह मुदा १३२४क पछाति मुख्यरूपेण नेपालक एकमात्र शासक भऽ गेलाह। १३१४क बादहिसँ नेपालमे मैथिल लोकनिक आवागमन शुरू भऽ गेलन्हि। मिथिलामे मुसलमानक प्रकोप बढ़ल आ नेपालमे मल्ल लोकनिक मुदा हरिसिंह देव बड्ड चतुर व्यक्ति छलाह आ ओ ओतुक्का मल्ल लोकनिक संग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कऽ लेलन्हि।

नेपालक **वंशावली** आ **शिलालेख** एहिबातक सबूत अछि जे हरिसिंह देव नेपालमे जा कए नीक जकाँ जमि गेल छलाह आ हुनक प्रभुत्व ओहिठाम नीक जकाँ स्वीकृत भऽ गेल छलन्हि। काठमाण्डुक एकटा शिलालेखमे हरिसिंह देवकेँ **कर्णाट वंशोद्भव** आ **कर्णाट चूड़ामणि** कहल गेल छन्हि।-

*"जातः श्री हरिसिंह देव नृपतिः प्रौढ़ प्रतापोदयः*
*तद्वंशे विमले महारिपुहरे गाम्भीर्य रत्नाकरः*
*कर्त्तायः सरसामूपेत्य मिथिलां संलक्ष्य लक्ष्मप्रियो*
*नेपाले पुनराद्यवैभवंयुते स्थैर्यः चिरम्विद्यते"।*

हरिसिंह देवक उत्तराधिकारीकेँ चीनी सम्राट नेपालक कानूनी शासक मानैत रहथिन्ह।

**कर्णाट वंशक पतन:-** हरिसिंह देवक बाद मिथिलामे कर्णाट वंशक पतन भऽ गेल। बहुत रास साहित्यिक साधनक अध्ययन केला संता एवँ पाण्डुलिपिक पुष्पिका सबकेँ देखलासँ इ प्रतीत होइछ जे हरिसिंह देवक नेपाल पड़ैला उत्तरो मिथिलामे बचल कर्णाट लोकनि मिथिलाक स्वतंत्रताक हेतु संघर्ष करैत रहलाह आ मुसलमान लोकनिक पैरकेँ नहि जमे देल गेल। कर्णाट वंशक अंतो भेलापर मिथिलाक किछु क्षेत्र सबमे कर्णाट शासन विद्यमान छल आ एकर प्रमाण भेटइत अछि। श्रीवल्लभाचार्य कर्णाट राजवंशक उल्लेख कएने छथि। ओ अपन कर्णाट राजाकेँ नृपति कहने छथि। एहि सम्बन्धमे सबसँ महत्वपूर्ण अछि मधुसूदन ठाकुरक **'कण्टकोद्धार'** पुस्तकक पुष्पिका। मधुसूदन ठाकुर कर्णाट चक्रवती महाराजाधिराज रामराजक अधीन रहिकेँ लिखने छलाह। पुष्पिकामे लिखल अछि— **"***इति महाराजाधिराज कर्णाट चक्रवर्ती भुजबल भीम सम्मस्त दिग्विजयार्जित सम्मत संतोष निखिल भूमण्डल श्री रामराज कारितायां महामहोपाध्याय सद्ठक्कुर श्री मधुसूदन कृता वनुमान। लोक कण्टकोद्धारः सम्पूर्ण मिति। लं.सं.५२९ फाल्गुन शुक्लाष्टम्याँमध्ययन शालिना श्री भवदेवशर्मणा भौरग्रामेऽपूरीय मिति***"**। एहिसँ स्पष्ट होइछ जे कर्णाटवंशक किछु लोकनि हरिसिंह देवक बादो मिथिलामे शासन करैत रहलाह भने हुनक क्षेत्र सीमित आ छोट रहल हो। ओइनवार वंशक बादो ओ लोकनि मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे शासन करिते रहि गेला। ओइनवार वंशक समाप्त भेलोपर जे अराजकताक स्थिति उत्पन्न भेल छल ताहुसँ लाभ उठाकए कर्णाट रामराज अपन प्रभाव क्षेत्रक विस्तार केने होथि से संभव। सकरपुरा ड्योढ़ी (राजपुतक जमीन्दारी) सेहो नान्यदेवक वंशजक अंग छथि

आ मिथिलाक राजपुत लोकनि सेहो कर्णाट कुलसँ अपन सम्बन्ध जोड़बामे गौरवान्वित बुझैत छथि।

मुसलमानी आक्रमणक चलते मिथिलामे कर्णाट वंशक अंत भेल। हरिसिंह देवक बाद केओ योग्य शासक नहि रहि गेलाह जे एहिठाम कर्णाटवंशकेँ दृढ़ करितैथ आ ओम्हर तुगलक लोकनि जखन एहिठामक शासन भार अपना हाथमे लेलन्हि आ देखलन्हि जे चलाएब असंभव अछि तखन ओ लोकनि एहेन व्यक्तिक खोज करए लगलाह जिनकापर हुनका विश्वास होन्हि। कर्णाट लोकनिपर हुनक विश्वास हिल चुकल छलन्हि तैं ओ लोकनि सुगौनाक राजपंडित कामेश्वरक वंशजकेँ अपन प्रतिनिधि चुनलन्हि आ मिथिलाक शासन बागडोर हुनके लोकनिक हाथमे देलन्हि। फिरोजशाह शाह तुगलक भोगीश्वरकेँ प्रियसरवा कहिकेँ संबोधित कयने छथि। १०९७सँ १३२५ धरि कर्णाट लोकनि मिथिलापर शासन कए एकटा अमिट छाप छोड़ने छथि जाहिसँ मिथिलाक निजी व्यक्तित्वक विकास भेल आ मैथिली संस्कृतिक पृष्ट पोषण सेहो। परञ्च ऐतिहासिक नियमक अनुसार सामंतवादी व्यवस्थाक गुण–दोषक चलते जेना सब राज्यक पराभव भेल छैक तहिना मिथिलाक कर्णाट राज्य अपन अवधिक पूर्ण कए लुप्तप्राय भेल आ मिथिलामे मुसलमानी शक्तिक प्रादुर्भावक संगहि ओइनवारक स्थापना कर्णाट वंशक अवशेषपर भेल।

**परिशिष्ट–**

*चण्डेश्वर ठाकुरक **कृत्य रत्नाकर**क किछु आवश्यक श्लोक–*

*अस्ति श्री हरिसिंह देव नृपतिर्निः शेष विद्वोषिणां*
*निर्माथी मिथिलां प्रशासदखिलाँ कर्णाटवंशोद्भवः।*
*आशाः सिञ्चति यो यशोभिरमलैः पीयूष धारा द्रवैर्देवः*
*सारद शर्वरी पतिरिवाशेष प्रियंभावुकः॥*
*आस्मिन्दिग्विजयोद्यते बलभरात्कुब्जी भवद्भिः फणै*
*रन्योन्यं निविड़ं मिलद्भिरभितः शेषः सहस्त्रेणसः।*
*गच्छत्यम्बुजबान्धवे दिन पतौ प्रत्यक् पयोधेरधः*
*सद्यः सङ्कुचदब्जकोरक वपुः सादृश्यमालम्बते॥*
*मा माखेदं भजध्वं जलधिमुपगतेबान्धवे पंकजाना*
*मंतः पञ्चेपुरोष व्यसन भयजुषाश्चक्रवाकावराकाः।*
*श्रीमत्कर्णाट भूमीपति मुकुट मणिः प्रीणयन्नद्य लोका–*
*नेष प्रौढ़ प्रतापद्युमणिरूदयिनी संपदं संतनोति॥*
*एतस्याद्भुत संधि विग्रह धुरां ओढ़ापविवीकृत–*
*क्ष्मालोका शरदिन्दु सुन्दर यशः संदोदृगंगाम्बुभिः॥*
*आसीन्मंत्रमयद्युति प्रतिहता मित्रान्धकारोदयो*
***देवादित्य** इतिप्रसन्नहृदयो देवद्रुमोजङ्गमः॥*

*यः संधि विग्रह विधौ विविधानुभावः*
*शौर्योदयेन मिथिलाधिपराज्यभारम्।*
*निर्मत्सरं सुनयसञ्चित कोषजातम्*
*सप्तांग संघटन सम्मृतमेव चक्रे॥*

*प्रज्ञावताँ सदसि संसरि वाक्पटूनां*
*राज्ञांसभासु परिषत्स्वपि मंत्र भाजाम् ।*
*चितेऽर्विनाञ्च कविताश्वपिसत्कवीनां*
***वीरेश्वरः** स्फुरति विश्वविलासि कीर्तिः*
*श्रीमान्मुष्यतनयो नवचन्द्र चारू*
*राचारवन्द्य नव कलतरु प्ररोहः ।*
*सत्सन्धिविग्रह धुरोण पदालम्ब*
***श्चण्डेश्वरो** विजयते सचिचावतंसः ।*

*उन्मूल्याद्रि नितम्बमम्बर मणिं कृत्वापताकाऽवृतं,*
*सेनोद्धू तरजोभरेरेनिभृतं भित्वा महाकर्दमम् ।*
*दुर्गसत्पथ मातनोद् दृढ़मथो निर्मायदुर्गपुन–*
*र्नेपाल क्षितिपालवर्गमनयद् दुर्ग समंतादयम् ।*
*आलीनं गिरिकन्दरासु विपनेष्वंतर्हितं निझरे,*
*गंभीरे चिरंमग्नमद्रि शिखर प्राग् भारमाप्य स्थितम् ॥*
*नेपाले विजिते बलेन सुतरां भीतात्मभिर्भूमिपै–,*
*र्विस्मृत्यद्युमणेः कुले भगवतः स्वंजन्मतत्ततकृतम् ॥*

*एषमैथिल मही भुजा भुज द्वन्दवारित समस्त वैरिणा*
*श्री विधायिनि कुलक्रमागते संधिविग्रह पदेनियोजितः ॥*

*गणेश्वर ठाकुरक **सुगति सोपान**क आरंभक श्लोक–*
*अभूद्देवादित्यः सचिव तिलको मैथिलपते–*
*र्निज प्रज्ञा ज्योतिर्द्दलित रिपु चक्रान्ध तमसः ।,*
*समंताद श्रांतोल्लसित सुहृदकेपिल ममौ*
*समुद् भुते यस्मिन द्विज कुल सरोजैर्विकसितम् ।*
*अस्मान्महादान तड़ागयाग भूदान देवालय पूत विश्वः ।*
*वीरेश्वरोऽजायत मंत्रिराजः क्ष्मापालचूड़ामणि चुम्बितांड़घ्रः ।*
*लसन्महीपाल किरीट रत्न रोचिच्छयरज्जतपाद पद्मः ।*
*अस्यानुजन्मा गुणगौरवेण गणेश्वरो मंत्रिमणिश्चकास्ति ।*
*संशोषयन्ननिशमौर्व (मैर्ष) निभ प्रतापै–*
*गौंड़ावनी परिवृढ़ं सुरतान सिन्धुम्*
*धर्मावलम्बनकरः करूणार्द्रचेता–*
*यस्तीर भुक्ति मतुलामतुलः प्रशास्ति ॥*
*श्रीमान्नेषु महामत्तक महाराजाधिराजोमहा–*
*सामंतधिपतिर्विक स्वर यशः पुष्पस्यकल्पद्रुमः ।*
*चक्रे मैथिलनाथ भूमि पतिभिः सप्तांग राज्यास्थिति–*
*प्रौढ़ानेक वशव्वंदैहक हृदयो दोः स्तम्भ सम्भावितः ॥*

*वेदस्मृति पुराणादि दृष्ट्वा लोकहितैषिणा*
*कृतं सुगति सोपानं श्रीगणेश्वर मंत्रिणा॥*

*गणेश्वरक पुत्र रामदत्त*–
*संधि विग्रह मंत्रीन्द्र देवादित्य ननुद्भवः।*
*भूमिपाल शिरोरत्न रज्जिताङ्घ्रिसरोरूहः।*
*सान्धि विग्रहिकः श्रीमद्वीरेश्वर सहोदरः*
*महामत्तकः श्रीमान विराजति गणेश्वरः।*
*श्रीमता रामदत्तेन मंत्रिणा तस्य सुनुना।*
*पद्दतिः क्रियते रम्या धर्म्या वाजसनेयियाम्॥*

उपर्युक्त श्लोक सबसँ कर्णाटकालीन मिथिलाक इतिहासक विविधपक्षपर यथेष्ट प्रकाश पड़इयै तैं एहिठाम ओहिसबकेँ परिशिष्टक रूपमे जोड़ि देल अछि। तिथि आ तथ्यक सम्बन्ध अद्यपर्यंत विवाद बनले अछि तैं ओहि सम्बन्धमे कोनो निर्णय देव असंभव। (विशेष विवरणक हेतु देखू हमर निबन्ध– **'द कर्णाट्ज आफ मिथिला'**)

अध्याय–८

# ओइनवार वंशक इतिहास

कर्णाट वंशक परोक्ष भेलापर मिथिलामे ओइनवार वंशक राज्य प्रारंभ भेल। ओइनवार वंशकेँ **'कामेश्वर वंश'** तथा **'सुगौना वंश'** सेहो कहल गेल छैक। **'कामेश्वर वंश'** एहि कारणे कि राज पंडित कामेश्वर एहि वंशक संस्थापक छलाह और **'सुगौना वंश'** एहि कारणे कि सुगौनामे एहि वंशक राजधानी छल। ओइनवार लोकनि **'खौआड़े जगत्पुर'** मूलक काश्यप गोत्र मैथिल ब्राह्मण रहैथ। हिनक पूर्वजमे जयपति, हुनक पुत्र हिङ्गु आ हुनक पुत्र ओएन ठाकुर छलाह। ओ अत्यंत विद्वान आ परम तपस्वी छलाह आ हुनके कोनो कर्णाट राजासँ **'ओइनि'** गाम दानमे भेटल छलन्हि। एहि कारणे एहि वंशक नाम ओइनवार वंश पड़ल। ओएन ठाकुरक पुत्र भेला अतिरूप, अतिरूपक पुत्र विश्वरूप, हुनक पुत्र गोविन्द, हुनक पुत्र लक्ष्मण आ लक्ष्मण ठाकुरक छटा पुत्र छलथिन्ह–यथा

१. राज पण्डित कामेश्वर,
२. हर्षण,
३. त्रिपुरे,
४. तेवाड़ी,
५. सलखन,
६. गौड़

ठाम–ठाम एकटा सातम पुत्रक उल्लेख अवइयै जकर नाम रामेश्वर छल। एहि छःमेसँ एक गोटएक वंश अहुखन मालदह जिलामे विराजमान छथि।

एहेन बुझना जाइत अछि जे कर्णाट शासक हरिसिंह देवक पड़ैलाक बाद मिथिलामे कर्णाट लोकनिक सत्ताक ह्रास भेल आ शासनक उलट–फेर बरोबरि होइत रहल। गयासुद्दीन तुगलक शासनक हेतु अपन प्रबन्ध केलन्हि आ हुनक पुत्र मुहम्मद तुगलकक समयमे मिथिला तुगलक साम्राज्यक एकटा प्रांत बनि चुकल छल आ एकरा तुगलकपुर अथवा तिरहूत सेहो कहल जाइत छलैक। १३२३–२४सँ करीब ३० वर्ष धरि एक प्रकारक अव्यवस्था बनल रहलैक। कर्णाट लोकनि अपन सत्ताकेँ पुनः स्थापित करबाक हेतु प्रयत्नशील एवँ संघर्षशील बनल रहलाह मुदा हुनका लोकनिकेँ कोनो सफलता हाथ नहि लगलन्हि आ छिट–पुट भऽ एम्हर–ओम्हरमे बिखैर गेलाह आ यत्र तत्र अपन क्षेत्र बनाकेँ रहए लगलाह। ओम्हर दिल्लीसँ तिरहूतक शासन करब कोनो आसान काज नहि छल कारण पूवसँ बंगालक गिद्ध दृष्टि सेहो मिथिलापर लगले रहैत छलैक आ जहाँ दिल्लीक दिसिसँ कनिओ ढ़िलाइ भेलैक कि बंगाल बाला सब धर मिथिलापर चढ़ि बैसैत छल। इ एकटा एहेन कटु सत्य छल जकरा दिल्ली नकारि नहि सकैत छल। दिल्लीक हकमे मिथिला दिल्लीक अंग बनल रहब सामरिक दृष्टियें महत्वपूर्ण छलैक कारण तखन दिल्ली मिथिलाकेँ अड्डा बनाए बंगालक मुकाबला कऽ सकैत छल। बंगालक हकमे मिथिलाकेँ बंगालक पक्षमे रहब उचित

बुझना जाइत छलैक आ तैं बंगाल आ दिल्ली तथा पश्चिमक आन राज्य एहि दृष्टियें मिथिलाकेँ देखैत छल। मिथिलाक शासक लोकनि एहि अवसरसँ लाभ उठाए अपन स्वतंत्रताक सुरक्षार्थ ताकमे रहैथ छलाह परञ्च ओइनवार वंशमे कर्णाट शासक नान्यदेव अथवा हरिसिंह देव सन केओ योग्य आ कुशल शासक नहि भेला तैं एहि मौकाक लाभ उठेबामे असमर्थ रहलाह। शिवसिंह सबसँ योग्य, कर्मठ, एवँ स्वतंत्र प्रेमी व्यक्ति छलाह आ मिथिलाक स्वतंत्रताक रक्षार्थ अपन प्राणक बाजी लगौलन्हि। ओइनवार वंशमे शिवसिंह आ भैरवसिंहक नाम चिर स्मरणीय रहल कारण ओ दुनू गोटए अपना–अपना ढ़ँगे मिथिलाक स्वतंत्रताक रक्षार्थ किछु उठानहि रखने छलाह।

१३२४ आ १३५५क मध्य मिथिलाक श्रृंखलावद्ध इतिहासक अभाव अछि। तुगलक कालमे मिथिला दिल्लीक प्रांत छल आ एकर उल्लेख हम पूर्वहिं कऽ चुकल छी। बंगालकेँ इ बात पसिन्न नहि छलैक आ बंगालक शासक हाजी इलियास शाह सेहो एकटा महत्वाकाँक्षी शासक छल। तिरहूतपर आक्रमण करबाक ओकर मूल उद्देश्य इ छलैक जे ओहि बाटे ओ नेपाल धरि जाए चाहैत छल आ तैं जखन दिल्लीक ढ़िलाई एम्हर देखलक तखन मिथिलापर आक्रमण कए हाजीपुर धरि पहुँचि गेल आ हाजीपुरक स्थापना अपना नामपर केलक आ पुनः नेपालपर आक्रमण केलक जकर प्रमाण नेपालसँ प्राप्त एकटा शिलालेख अछि। तुगलक लोकनिकेँ इ बात सहय नहि भेलन्हि आ फिरोज तुगलक तुरंत एकर बदला लेबाक हेतु मिथिला बाटे बंगालपर आक्रमणक योजना बनौलन्हि। बरनीक विवरणसँ स्पष्ट अछि जे फिरोज गोरखपुर, खरोसा आ तिरहूतक बाटे बंगाल दिसि गेल छलाह आ संभवतः राजविराज लग कोशी नदीकेँ टपने छलाह। मधुबनी जिलामे अखनो एकटा पिरूजगढ़ नामक स्थान अछि जे फिरोज तुगलकक बाटक संकेत दइयै। १३५५क आसपास इ घटना घटल छल। फिरोज शाह सब स्थितिकेँ देखि एहि निर्णयपर पहुँचल हेताह जे मिथिलाक आंतिरिक स्वतंत्रताकेँ सुरक्षित राखियेकेँ ओ मिथिलाकेँ दिल्लीक मित्र बनाकेँ राखि सकैत छथि। एहि तथ्यकेँ स्वीकार कए ओ एकटा दूरदर्शिता आ कूटनीतिज्ञताक परिचय देलन्हि। मिथिलाक स्वतंत्रताक स्वीकृति दए ओ ओइनवार लोकनिक अधीन मिथिलाक शासन भार छोड़लन्हि आ ओहि क्रम ओ ओइनवार वंशीय **'भोगिसराय'**केँ अपन प्रियसखा कहिकेँ संबोधित केलन्हि। मिथिला पुनः स्वतंत्र रूपें अपन शासन प्रारंभ केलक परञ्च ताहि दिनक समय एहेन छल कि चारूकात दिन राति खट–पट होइते रहैत छल। मैथिली परम्पराक अनुसार फिरोज तुगलक राज पण्डित कामेश्वरकेँ मिथिलाक राज्य देने छलाह आ हुनक पुत्र भोगीश्वरकेँ **'प्रियसखा'** कहि सम्मान केलन्हि। राजपण्डित कामेश्वर ठाकुर **'ठाकुर'** कहबैत छलाह तैं किछु गोटए एहिवंशकेँ **'ठाकुर वंश'** सेहो कहैत छथि। वर्धमानक गंगकृत्य विवेकमे कहल गेल अछि **"कामेशो मिथिला मासत"**। कामेश्वर स्वयं सिद्धपुरूष एवँ योगी होएबाक कारणे मिथिलाक राज्य गछवा लेल तैयार नहि छलाह तथापि भोगीश्वरक आग्रह ओ गछलन्हि आ किछु दिन शासन केलन्हि। कामेश्वरकेँ **'राय'** आ **'राजपण्डित'** दुनू कहल गेल छन्हि। कामेश्वरक बाद भोगीश्वर राजा भेलाह। हुनको **'राय'** कहल जाइत छलन्हि आ कीर्तिलतासँ ज्ञात होइछ जे ओ फिरोज शाहक परम मित्र छलाह। भोगीश्वरक बाद गणेश्वर शासक भेलाह। हुनक समयमे ओइनवार वंशमे बटवारा हेतु संघर्ष भेल जाहिमे लोग दू दलमे बटि गेलाह–एक दल भोगीश्वरक छोट भाइ भवसिंहक समर्थक छल आ दोसर दल गणेश्वरक। जे भेल हो मुदा हम देखैत छी जे गणेश्वर राजा भेलाह। भवेशक पुत्र द्वय कुमर हरसिंह आ कुमर त्रिपुर सिंहकेँ इ बात अप्रिय बुझि पड़लन्हि

आ ओ लोकनि अर्जुन राय आ कुमार रत्नाकरक मदतिसँ गणेश्वरक वध केलन्हि। तत्पश्चात भवेश राजा भेलाह। भवेशक दरबारेमे चण्डेश्वर ठाकुर अपन **'रत्नाकर'–**विशेष कए **राजनीति रत्नाकर**क रचना केने छलाह।

विद्यापतिक **कीर्तिलता**मे एहि घटनाक विवरण दोसरा ढ़ंगे अछि। विद्यापतिक अनुसार गणेश्वरक हत्या अर्सलान नामक एक मुसलमानक हाथें भेल छल जे मिथिलाक तत्कालीन अराजक स्थितिसँ लाभ उठाकेँ मिथिलाक राज्यकेँ हथिया लेने छल। मैथिली परम्परामे सेहो एहि प्रश्नपर मतैक्य नहि अछि मुदा सब साधनक वैज्ञानिक अध्ययन केला संता इ स्पष्ट होइछ जे मिथिलामे ताहि दिनमे गद्दीक हेतु गृहयुद्धक स्थिति विराजमान छल। गणेश्वरक दुनू पुत्र कीर्तिसिंह आ वीरसिंह बालिग भेलापर अपन पितामह भ्राता भवसिंहसँ राज्यक हेतु प्रार्थना केलन्हि परञ्च से नहि भेटलन्हि। अपन पिताक हत्याक प्रतिशोध लेबाक हेतु इ दुनू भाइ जौनपुर राजा इब्राहिम शाहक ओतए साहाय्यक हेतु पहुँचलाह। महामहोपाध्याय परमेश्वर झा लिखैत छथि जे कीर्तिसिंह वीरसिंह फिरोज शाहक ओतए नालिस कएल आ फिरोज शाह मिथिलापर चढ़ाइ कए हरसिंह त्रिपुर सिंहकेँ मारि राज्य कीर्तिसिंहकेँ फिरौलन्हि। मुदा विद्यापतिक कीर्तिलतासँ एहि बातक समर्थन नहि होइछ।

बापक वैरिकेँ कीर्तिसिंह सधौलन्हि से बात ठीक अछि मुदा एहि हेतु फिरोजशाह मिथिला पर आक्रमण केने छलाह तकर कोनो प्रमाण नहि आछि। एहि गृहयुद्धक क्रममे दुनू पक्ष तत्कालीन मुसलमानी प्रतिनिधिसँ साहाय्यक अपेक्षा रखने होथि तँ कोनो आश्चर्यक बात नहि आ एहिक्रममे गणेश्वरकेँ अपनेसँ नहि मारि कोनो मुसलमानक हाथे मरबौने होथि सेहो संभव कारण जखन लोक ज्ञान आ तर्ककेँ स्वार्थ वश तिलांजलि दैत अछि तखन ओ कोनो प्रकारक काज (नैतिक–अनैतिक)क बैसइयै। भैय्यारीमे जखन एहि प्रकारक झगड़ा होइत तखन तँ दुश्मन लाभ उठवे करइयै। विद्यापति ओइनवार वंशसँ एत्तेक घनिष्ट छलाह कि ओ एहि घिनौना बातकेँ दाबि देलन्हि आ एकर कतहु चर्चो धरि नहि केलन्हि आ गणेश्वरक हत्याक उत्तरदायित्व अर्सलानपर देलन्हि। मुदा विद्यापतिक विवरणसँ एतवा धरि तैं स्पष्ट अछिये जे ताहि दिनमे मिथिलामे चारूकात अराजकता पसरल छल आ केओ ककरो कहबमे नहि छल। **'अर्सलान'** अर्थ होइछ **'वीर' 'बहादुर', 'जमामर्द'** इत्यादि। वीर अफगान नामक पदाधिकारी ताहि दिन तिरहूतमे छल आ इहो संभव अछि जे गृहयुद्धक स्थितिकेँ देखि ओ एक पक्षक भऽ गेल हुए आ स्वयं मिथिलाक राज्य हथिया लेने हुए। गणेश्वरक मृत्युक कारण अखनो धरि मिथिलाक इतिहासमे एकटा समस्यामूलक प्रश्न बनल अछि आ विद्यापति ओकरा झँपबाक हेतु सब प्रयास कएने छथि कारण गणेश्वरक पुत्रक प्रति विद्यापति सहानुभूति रखैत छलाह आ हुनक अधिकारक स्थापनाक हेतु हुनका लऽ कए जौनपुर सेहो गेल छलाह। ओ कीर्तिसिंहकेँ **'पुरूष श्रेष्ठ'**क कोटिमे रखने छथि आ मैथिल कवि दामोदर मिश्र अपन छन्द ग्रंथ **"वाणी भूषण"**मे सेहो कीर्ति सिंहक सम्बन्धमे निम्नलिखित उद्‌गार प्रगट केने छथि।

*"कीर्ति सिंह नृपजीव यावद मृत द्युति–तरणी"*
*"त्वयि चलति चलति वसुधा वसुधाधिप कीर्तिसिंह धरणी रमणे"।*

**कीर्तिलता** मध्यक विवरण एतवा धरि अवश्य स्पष्ट कऽ दैत अछि जे तत्कालीन स्थिति गंभीर छल आ जौनपुरक शासक मिथिलाक राजकुमारक सहायता केने छलथिन्ह। उपेन्द्र ठाकुरक मत छन्हि जे गणेश्वरक समयमे मिथिलाक बटबारा भऽ

गेल छल आ ओइनवार वंश दू भागमे बटिकैं शासन करैत छल। भवसिंहक शासक हैव तैं चण्डेश्वरक राजनीति रत्नाकरसँ प्रमाणित अछि। परञ्च गणेश्वरक पुत्रक स्थिति कि छल से कहब असंभव। उपेन्द्र ठाकुर मिथिलाकैं जौनपुरक सामंत राज्य हौएबाक बात कहने छथि मुदा एकर कोनो प्रमाण ओ नहि देने छथि आ कीर्ति सिंहक सम्बन्धमे जे तिथि देल गेल अछि सेहो गलती अछि। भवेशक शासनकाल (भवसिंह) संभवतः मिथिलाक दुर्दशाकैं देखि समस्त मिथिलाकैं एक रखबाक ओ यथेष्ट प्रयास केने छलाह। कन्दाहा अभिलेखमे हुनका **'पृथ्वीपति द्विजवरो'** भवसिंह कहल गेल छन्हि आ विद्यापति अपन **शैव सर्वस्वसार**मे हुनक वैभवक वर्णन करैत लिखैत छथि—

*"गंगोहुंग तरंगिता मललसत् कीर्तिच्छटांक्षालित*
*क्षोणिक्ष्मातल सर्वपर्वत वरो वीरत्रतालंकृत...."*

भवसिंह एतेक प्रतापी शासक छलाह जे छोट—छोट सामंत शासक हुनका डरे थर—थर कंपैत छल। ओ सब सतत अपन माथ हिनका पैर टेकने रहैत छल। भवसिंह प्रतापी राजा छलाह आ दानी सेहो। वाग्मतीक तटपर ओ अपन पार्थिव शरीरकैं त्यागलन्हि आ ओहिठाम हुनक दुनू पत्नी सेहो सती भेलथिन्ह।

भवसिंहक बाद देवसिंह राजा भेलाह। परमेश्वर झाक अनुसार ओइनिमे कीर्ति सिंहक राज्य भेने राति दिन खट पट होइतन्हि तैं महाराज भवसिंह अपन अंतिम समयमे ओहि स्थानकैं त्यागि दरभंगासँ दक्षिण वाग्मती तटपर अपन स्कन्धावार बनौने छलाह। देवसिंह जखन राजा भेलाह देकुलीमे अपन राजधानी बनौलन्हि जाहिठाम अखनो स्मार्त निबन्धकर्त्ता धर्माधिकारी अभिनव वर्धमान उपाध्यायक स्थापित **"वर्धमानेश्वर"** नामक महादेवक मंदिर अछि। देवसिंहक विरूद **'गरूड़नारायण'** छलन्हि। हुनक पत्नीक नाम छलन्हि हासिनी देवी। **पुरूष परीक्षा** आ **शैवसर्वस्वसार**क अनुसार देवसिंह एक कुशल प्रशासक आ सफल विजेता छलाह। मिथिलाक एक उदारशासकक रूपमे ओ सेहो प्रसिद्ध छथि कारण ओ **'तुला पुरूषदान'** सेहो करौने छलाह। कृषि आ जनकल्याणक हेतु ओ अपना राज्यमे बड़ड पैघ—पैघ पोखरि सेहो खुनौने छलाह। एक पोखरिक नाम **देवसागर** छल आ ओहिसँ सटल बस्तीक नाम **सगरपुर** छल। ओ विद्या आ संस्कृतिक समर्थक सेहो छलाह आ विद्यापतिक अनुसार ओ **"वीरेषु मान्याः सुधियाँ वरेण्योः"** छलाह। हुनके कहलापर विद्यापति **"भूपरिक्रमा"** लिखने छलाह जाहिमे नैमिष्य जंगलसँ मिथिला धरिक बलदेवक यात्रा विवरणक उल्लेख अछि। संगहि एहिमे नीतिपरक कथा सेहो कहल गेल अछि। देवसिंहक अनुमतिसँ श्रीदत्त एकाग्निदान पद्धतिक रचना केलन्हि। हुनके समयमे मुरारिक पितामह हरिहर प्रधान न्यायाधीश छलाह। हिनके दरबारमे स्मृति तत्वामृतक रचयिता अभिनव वर्द्धमान रहैत छलाह आ ओ धर्माधिकारी सेहो छलाह।

देवसिंहक समयमे आबिकैं मिथिलाक दुर्व्यवस्थामे थोड़—बहुत सुधार भेल आ आब ओ लोकनि एहि बातकैं बुझए लगलाह जे जाधरि ओइनवार वंश पुनः एकजूट भऽ प्रयत्नशील नहि रहत ताधरि मिथिलाक दुर्व्यवस्था बनले रहतैक। देवसिंह एहि दिशामे विशेष प्रयास केने छलाह आ अपना चारूकातक क्षेत्रपर अपन प्रभावकैं दृढ़ करबामे किछु उठा नहि रखने छलाह। कीर्तिसिंहक ओहिठामसँ देवसिंहक दरबारमे विद्यापतिक आएब एकटा विचारणीय विषय अछि। विद्यापति ओइनवार कुलक सब किछु छलाह आ ओइनवारक नेतृत्वमे मिथिलाक स्वतंत्रताकैं सुरक्षित देखए चाहैत छलाह। तैं जखन देवसिंहक प्रयाससँ विद्यापतिकैं इ विश्वास भेलैन्ह जे इ समस्त मिथिलाक

एकता एवँ स्वतंत्रताक हेतु प्रयत्नशील छथि तखन ओ कीर्तिसिंहक संग छोड़ि देवसिंहक ओतए आबि गेलाह आ तहियासँ यावज्जीवन हुनके वंशजक संग रहलाह। जे विद्यापति गणेश्वरक हत्याक वाद कीर्तिसिंहक हकक हेतु सब किछु केने रहैथ सैह विद्यापति जखन देखलन्हि जे कीर्तिसिंहक नेतृत्वमे मिथिलाक एकता संभव नहि होएत आ मिथिलाक स्वतंत्रता सेहो नहि वाँचत तखन ओ अपन निर्णय बदलि देलन्हि आ देवसिंहक प्रयासमे सहयोग देलन्हि। **'घर फुटे गँवार लूटे'**क कहावत मिथिलामे चरितार्थ भऽ चुकल छल आ एकर कि परिणाम होइछ से विद्यापति देखि चुकल छलाह तैं ओ देवसिंहक वंशजक संग अपन भाग्यकैं सटा देलन्हि आ तहियासँ अपन मृत्यु धरि ओ मिथिलाक एकता एवँ स्वतंत्रताक हेतु तल्लीन रहलाह आ स्वयं युद्ध एवँ शांतिमे एक रंग बहादुर जकाँ ठाढ़ रहलाह। देवसिंहक ज्येष्ठ पुत्र शिवसिंह विद्यापतिक अभिन्न छलथिन्ह आ शिवसिंह मिथिलाक इतिहासपर जे अमिट छाप छोड़ने छथि तकरा विद्यापति अपन लेखनीसँ आर अमर बना देने छलथिन्ह।

**शिवसिंह:-** ओइनवार वंशक सर्वश्रेष्ठ, सर्वप्रसिद्ध आ एतिहासिक दृष्टिकोणसँ सबसँ महत्वपूर्ण शासक छलाह शिवसिंह। हिनक विरूद्ध छलन्हि रूपनारायण। इ दुनू भाइ छलाह अपने आ पद्मसिंह। बाल्य कालहिसँ इ राजदरबारमे रहैत छलाह आ बालिग भेलापर अपन पिताक सबटा राज्यक कार्य करैत छलाह। इ बड़ड तीक्ष्ण बुद्धिक लोक छलाह आ राजनीतिमे सर्वथा निपुण सेहो। योग्य राजकुमार बनेबाक विचारे हिनक पिता देवसिंह हिनका विद्यापतिक संग लगौने रहथिन्ह आ नीतिमे निपुणता प्राप्त करेबाक हेतु विद्यापति शिवसिंहक आदेशानुसार **'पुरूष परीक्षा'**क रचना केने छलाह। विद्यापतिक गीतमे १२९ पदमे (११२+१७) शिवसिंहक नाम अछि।

१५ वर्षक अवस्थहिंसँ इ राज्यक प्रशासनमे हाथ बटबैत छलाह। जखन ओ राजा भेलाह तखन ओ देकुली (देवकुली)सँ अपन राजधानी हटाकैं गजरथपुर अनलन्हि। ओकरा शिवसिंहपुर सेहो कहल जाइत छैक। एहिठाम गजरथपुरसँ शिवसिंह विद्यापतिकैं दान देने छलथिन्ह। राज्य प्रशासनमे हाथ बटेबा काल हुनका अपन परम मित्र एवँ अभिन्न विद्यापतिसँ सेहो सहयोग भेटइत रहन्हि। शिवसिंह परम विद्वान, उदार, सुन्दर, तथा प्रतापी छलाह। हुनक खुनाओल पोखरि वारि भड़ौरामे रजोखरि नामसँ प्रसिद्ध अछि आ हुनक बनाओल सड़क सब रजबान्ह (राजबन्ध) शिवसिंहपुरसँ राजवाड़ा घोड़ दौड़ धरि हुनक गजरथक सड़क अत्यंत सुदृढ़ आ चाकर अछि। पोखरि आ सड़क ओ प्रजाक कल्याणार्थ बनौने छलाह। एहि प्रसंगमे हुनका सम्बन्धमे एकटा लोकोक्ति निम्नांकित अछि–

*"पोखरि रजोखरि आ सब पोखरा, राजा शिवसिंह आ सब छोकड़ा।*
*तालते भूपाल ताल आरो सब तलैया, राजा ते शिवसिंह आरो सब रजैया"॥*

शिवसिंहक समयमे तिरहूतक राज्य शक्तिशाली भऽ गेल छल। अपना चारूकातक परिस्थितिकैं ध्यानमे राखि ओ अपन राजधानी गजरथपुरमे अनने छलाह आ राज्यक विभिन्न भागसँ सड़क द्वारा ओकरा जोड़ने छलाह। गौड़ आ गज्जनक विरूद्ध ओ संघर्ष केने छलाह जकर प्रमाण हमरा **पुरूष परीक्षा**सँ भेटइयै। देवसिंहक समयमे सेहो मिथिलामे मुसलमानी प्रकोप छल। परम्पराक अनुसार अपन पिताक शासनकालमे मुसलमानी सेनासँ लड़बाक हेतु ओ पठाओल गेल छलाह आ ओहिमे पराजित भेलाक कारणे गिरफ्त भेल छलाह। हुनके छोड़ेबाक हेतु विद्यापति गेल छलथिन्ह आ मुसलमानी शासक विद्यापतिक काव्य प्रतिभासँ प्रभावित भए शिवसिंहकैं

छोड़ि देने रहैन्ह आ विद्यापतिक बहुत सम्मान केने रहैन्ह। राजा भेलाह शिवसिंह एहि अपमानकेँ बिसरल नहि छलाह आ तैं अपन स्वाभिमान आ मिथिलाक स्वतंत्रताक रक्षार्थ हुनका कतेको मुसलमान शासकसँ संघर्ष करए पड़लन्हि।

जेना कि हम पूर्वहिं कहि चुकल छी जे मध्य युगमे मिथिलापर पश्चिम आ पूब दुनू दिसिसँ दबाब पड़इत छल आ मिथिला **'वेत्तसिवृत्ति'**क नियम पालन करैत छल। दिल्ली, जौनपुर, बंगाल, सभहिक नजरि मिथिलापर छलैक। शिवसिंहक पूर्ण इच्छा छलन्हि जे मिथिलाकेँ पूर्णरूपेण स्वतंत्र राज्यक रूपमे राखल जाए आ ताहि प्रयासमे ओ कोनो कसैरि उठा नहि रखलन्हि। अपन कम दिनक शासनमे ओ जाहि निपुणताक परिचय देने छथि से कोनो देशक राजाक हेतु एकटा गौरवक विषय। शिवसिंहकेँ **पँचगौड़ेश्वर** सेहो कहल गेल छन्हि। बंगालोमे मिथिला जकाँ अराजक स्थिति छल आ ओतहु शिवसिंह जकाँ राजा गणेश ओहि स्थितिसँ लाभ उठाकेँ ओतए अपन शासन स्थापित कऽ लेने छलाह। हुनक पुत्र जदुसेन मुसलमान भऽ गेलाह आ जलालुद्दीनक नामे ओतुका राजा बनलाह। ओ शिवसिंहक समकालीन छलाह। शिवसिंह हिनका विरूद्ध अभियान शुरू केलन्हि आ हिनका पराजित केलन्हि आ हिनक राज्यक किछु अंशकेँ अपना राज्यमे मिलौलन्हि। बंगालपर विजय प्राप्त करबाक हेतु इ **पंचगौड़ेश्वर** कहाओल गेल हेताह से संभव। ताहि कालमे पश्चिममे जौनपुरक इब्राहिम शर्कीक बड़ड प्रभाव छलैक आ बंगालमे जखन मुसलमानी शासनक पराभव भेल तखन ओतए गणेशक उत्थान भेल। मिथिलामे शिवसिंह आ बंगालमे गणेशक प्रादुर्भावसँ पश्चिमक मुसलमान शासनक कान ठाढ़ भेल आ बंगालक मुसलमान संत लोकनि इब्राहिम शर्कीकेँ एहि बातक हेतु चेतौलन्हि। बंगालक निमंत्रण पर इब्राहिम शर्की बढ़लाह जाहिसँ ओहिठाम पुनः मुसलमानी शासनक पुनर्स्थापित भऽ सकए।

एहिक्रममे मिथिलामे हुनका शिवसिंहसँ झंझट हैव स्वाभाविक कियैक तँ शिवसिंह बंगालक जलालुद्दीनकेँ पराजित कए ओतए धरि अपन राज्यक विस्तार कऽ लेने छलाह आ संगहि मिथिलाकेँ पूर्णरूपेण स्वतंत्र सेहो। इब्राहिमकेँ एहि दूमेसँ कोनो बात पसिन्न नहिये पड़ल होएतन्हि आ तैं मिथिलापर आक्रमण करब हुनक बंगाल नीतिक एकटा प्रमुख अंग रहल होएत। शर्की कालीन अभिलेख तिरहूतमे मुल्ला तकिया देखने छलाह आ ताहिसँ इ बुझना जाइत अछि जे शिवसिंहकेँ परास्त करबाक हेतु अथवा बदला लेबाक हेतु इब्राहिम शाह तिरहूतपर आक्रमण केने हेताह। हुनक समर्थक कीर्तिसिंहक प्रताप आब मिथिलामे नहि छलैक आ स्वाभिमानी एवँ स्वतंत्रता प्रेमी शिवसिंहक शासन पूब–पश्चिम दुनूकेँ चैलेंज कऽ रहल छलैक। एहना स्थितिमे इब्राहिम शर्की चुप्प बैसनिहार नहि छलाह। दुनूक बीच संघर्ष भेल जकर परिणाम हमरा लोकनिकेँ ज्ञात नहि अछि आ एकर बादे ओ वंगाल दिसि बढ़ल होएताह। एहो संभव जे बंगालसँ घुरबो काल (जतए ओ शिवसिंहक महत्वाकाँक्षाक विषयमे सुनने होथि) ओ मिथिलापर आक्रमण कए गेल होथि। मुदा तत्कालीन साधनक आधारपर एहि सम्बन्धमे कोनो ठोस निर्णय देव असंभव अछि।

शिवसिंह स्वतंत्र रूपें लगभग ३–४ वर्ष धरि शासन केलन्हि परञ्च कहियो ओ निश्चिंत भऽ सुति नहि सकलाह कारण सब दिन हुनका कोनो ने कोनो समस्या लगले रहैन्ह। दिल्ली आ जौनपुर हुनका बरोबरि तंग करैत रहैन्ह जो ओ पसिन्न नहि करैत छलाह। मुसलमान शासककेँ जे तिरहूतसँ कर भेटइत रहैक से देव ओ वंद कऽ देलैन्ह आ ओ अपनाकेँ पूर्णरूपेण स्वतंत्र घोषित कऽ देलैन्ह। इ शासककेँ छलाह से सम्प्रति कहब असंभव मुदा कर बन्द केलाक बाद ओ खिसिया गेलाह आ शिवसिंहक

संगहि युद्ध बजरब स्वाभाविक भऽ गेल। एतवे नहि अपन स्वतंत्रताकेँ व्यापक बनेबाक हेतु शिवसिंह अपना नामे सोनाक सिक्का बहार केलन्हि आ एहिक्रममे ओ इ सिद्ध कऽ देलैन्ह जे मिथिलाक कोनो दोसर महाप्रभु शिवसिंह छोड़िकेँ आ केओ नहि छल। एहिसँ मिथिलाक गौरवमे वृद्धि भेल आ शिवसिंह नान्यदेवक परम्परामे आबि गेला। शिवसिंहक एहि काजसँ तत्कालीन छोट–छोट राजाकेँ प्रेरणा भेटलैक आ शिवसिंहक शासन काल धरि मिथिलाक स्वतंत्रता सेहो अक्षुण्ण रहलैक। इ मिथिलाक इतिहासक हेतु एकटा गौरवक विषय मानल जाइत अछि।

मुसलमान सुल्तान शिवसिंहक एहेन विद्रोही रूप देखि आश्चर्यचकित भऽ गेलाह। शिवसिंह सेहो अपन गिरफ्त होएबाक अपमानकेँ बिसरने नहि छलाह। दुनू अपन–अपन जिद्दपर छलाह जकर नतीजा इ भेल जे दुनूक बीच युद्ध अवश्यम्भावी भऽ गेल। एहि युद्धक परिणाम तँ बुझल नहि अछि परञ्च एकर बाद शिवसिंह हारि गेला, अथवा मारल गेलाह या लापता भऽ गेलाह से बुझल नहि अछि। मारलो गेल होथि से असंभव बात नहि। किछु गोटएक मत छन्हि जे शिवसिंह नेपालक जंगलमे भागि गेलाह अथवा ओम्हरे लापता भऽ गेलाह। एकर अर्थ किछु लेल जा सकइयै। एहि पराजयक बाद लखिमा देवी विद्यापतिक संगे द्रोणवार राजा पुरादित्यक ओतए सप्तरी परगन्नामे चल गेला। नेपालमे सेहो एकटा शिवराजगढ़ अछि जकरा लोक शिवसिंहसँ जोड़ैत अछि आ किछु गोटएक विचार छन्हि जे रानी लखिमा अपन पतिक स्मारक स्वरूप एहि गढ़क निर्माण करौने छलीह। विद्यापति एहि युद्धक वर्णन जाहि रूपें केने छथि ताहिसँ बुझना जाइत अछि इ भयंकर युद्ध छल। विद्यापति सेहो शिवसिंहक संगे युद्धमे शरीक भेल छलाह। युद्धक स्वरूप विद्यापतिक निम्नलिखित कवितासँ स्पष्ट होएतः–

"*दूर दुग्गमदमसि भज्जे,*
*ओ गाढ़ गड़ गूठीअ गण्जेओ।*
*पातिसाह ससीम सीमा समदरसे ओरे।*
*ढोल तरल निसान सद्दहि भेरि काटल संख नद्दहि।*
*तीन भूअन निकेत के तकि सनभरि ओरे॥*
*कोहे नीरे पयान चलियो वायुमध्य सयगरूओ।*
*तरणि तेअ तुलाधार परताप गहि ओरे॥*
*मेरू कनक सुभेरू कम्पिय धरणि पूरिय गगन झम्पिय।*
*हाति तुरय पदाति पयभर कमन सहि ओरे॥*
*तरल तर तखारि रङ्गे विज्जुदाम छटा तरंगे,*
*घोरघन संघात वारिस काल दरस ओरे॥*
*तुरय कोटी चाप चूरिय चारदिस चौविदिशपूरिय।*
*विषम सार असारधारा धोरनी भरि ओरे॥*
*अन्धकुअ कबन्ध लाइअ फेखी फफफरिस्स गाइअ।*
*रूहिरमत्त परेत भूत वेताल विछलि ओरे॥*
*पारभइ परिपन्थ गज्जिय भूमि मण्डल मुण्डे मण्डिअ।*
*चारू चन्द्रकलेब कीर्तिसुकेत की तुलि ओरे।*
*रामरूपे स्वधरम राखिअ दान दप्पे दधीचि खीखिअ।*
*सुकवि नव जयदेव भनि ओरे॥*

*देवसिंह नरेन्द्र नन्दन शत्रु नखइ कुल निकन्दन, सिंह*
*समशिवसिंह मया सकल गुणक निधान गणि ओरे"॥*

शिवसिंह मात्र एक विजेतेटा नहि अपितु कला, संस्कृति आ साहित्यक संरक्षक सेहो छलाह। हुनक दरबार विद्वान, पण्डित, कवि, दार्शनिक एवँ चिंतक लोकनिसँ भरल रहैत छल आ एहि मानेमे ओ राजा विक्रमादित्य आ भोजसँ एक्को पाइ कम नहि छलाह। विद्यापति, वाचस्पति, अमृतकर, जयंत, लखिमा आदिक नामसँ सब केओ परिचित छथिओ। विद्यापति तँ हुनक सब किछु छलथिन्ह आ पदावलीक रचना शिवसिंहक राज दरबारमे भेल। शिवसिंहक मंत्रीगण छलाह अच्युत, महेश (महेश्वर) आ रतिधर। शंकर नामक एकटा प्रमुख अधिकारी सेहो हुनका दरबारमे रहैत छलाह। तरौनीक एक पोखरिक अंगनइमे शिवसिंह कालीन एतिहासिक अवशेष सब सुरक्षित अछि। ओहि समयक एकटा पोखरि **'भटोखरि'**क नामसँ प्रसिद्ध अछि। मिथिलामे ओ प्रथम राजा छलाह जे स्वर्ण मुद्राक प्रचलन चलौने छलाह आ जकर दूटा अवशेष अखनो प्राप्य अछि। शिवसिंहक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे ओ अपना समयक समकालीन राजा सभहिक मध्य एकटा अद्वितीय प्रतिभाक व्यक्ति छलाह जे एतवे कम दिनमे समस्त उत्तरी भारतमे अपन धाक जमा लेने छलाह। परञ्च सबहिक दिन सबखन एक्के रंग नहि रहैत अछि तैं शिवसिंह एकर अपवाद कोना होइतैथ।

शिवसिंहक परोक्ष भेलाहपर पद्मसिंह मिथिलाक शासक भेला आ मैथिल परम्पराक अनुसार ओ दिल्ली सुल्तानकेँ कर देब स्वीकार केलन्हि। हुनका समएमे विद्यापति हुनक सलाहकार छलथिन्ह। ताहि कालमे विद्यापति ठाकुरकेँ मंत्री सेहो कहल गेल छन्हि। ओ पद्मा, पद्मौलि आदिक स्थापना केलन्हि आ चम्पारणमे पद्मकेलि नामक स्थानक सेहो। विद्यापति हिनका नृपति पद्मसिंह कहिकेँ उल्लेख केने छथि। विद्यापतिक अनुसार पद्मसिंह भीम जकाँ बहादुर छलाह आ दानीक हिसाबे कल्पवृक्षे बुझल जाइछ। **शैवसर्वस्वसार**मे विद्यापति लिखने छथि– **"संग्रामांगन सीम भीम सदृश....दाने स्वल्पित कल्पवृक्ष"**।

पद्मसिंहकेँ कोनो पुत्र नहि छलन्हि। पद्मसिंहक बाद महारानी लखिमा मिथिला राज्यक भार अपना हाथमे लेलन्हि। उपेन्द्र ठाकुर लिखने छथि जे शिवसिंहक पछाति लखिमा उत्तराधिकारिणी भेलीह मुदा से बात विश्वास करबा योग्य नहि अछि कारण हम देखि चुकल छी जे विद्यापतिक संग लखिमा द्रोणवार पुरादित्यक दरबारमे चल गेल छलीहे आ मिथिलामे बचि गेल छलाह पद्मसिंह जे मुसलमानी महाप्रभुकेँ कर देबाक वचन दए मिथिला राज्यक आंतरिक स्वतंत्रता सुरक्षित रखबामे समर्थ भेल छलाह। मैथिली परम्परामे एकटा कथा सुरक्षित अछि जाहिसँ एहि बातपर प्रकाश पड़इयै। शिवसिंहक लापता भेलापर कायस्थ चन्द्रकरक पुत्र एवँ शिवसिंहक मंत्री अमृतकर पटना गेला आ ओतए जाए सुल्तानक प्रतिनिधिसँ भेट कए मिथिलाक स्वतंत्रताक भीख मंगलन्हि। तखन जे समझौता भेल तदनुसार पद्मसिंह राजगद्दीपर बैसलाह। पद्मसिंह बछौर परगन्नामे पदुमा नामक स्थानपर अपन राजधानी बनौलन्हि। एहि परम्पराकेँ ध्यानमे राखिक स्पष्ट होइछ जे शिवसिंहक बाद मिथिलाक गद्दीपर पद्मसिंह बैसलाह आ तत्पश्चात लखिमा रानी।

लखिमा रानीकेँ गद्दीपर बैसबाक मूल कारण इ छल जे पद्मसिंह सेहो अपुत्रे मरल छलाह। बारह वर्ष धरि ओ शिवसिंहक प्रतीक्षा नियमानुसार केलन्हि आ तदुपरांत शिवसिंहक श्राद्धादि कए विद्यापतिक विचारसँ ओ राजगद्दीपर बैसलीह। लखिमा देवी नीति, धर्मनिष्ठा, उदारता, एवँ विद्वता आदिमे निपुण छलीहे आ विद्यापतिक सहयोगसँ

नीक जकाँ करीब नौ वर्ष धरि राज्य केलन्हि। एकर बाद पद्मसिंहक पत्नी विश्वास देवीक शासन भेलन्हि। ओ विसौली गाममे अपन राजधानी बनौलनि आ बहुत रास धार्मिक कृत्य केलन्हि। विद्यापति हिनका समयमे बहुत रास पोथी लिखलन्हि।

देवसिंहक वंशजक अंत एहिठाम भऽ गेल आ तत्पश्चात हुनक वैमात्रैय भाए कुमर हरसिंहक शाखाक शासन पुनः प्रारंभ भेल। इ बहुत कम दिन धरि शासन केलन्हि आ हिनका समयमे कोनो खास घटनो नहि घटल। विभागसार (विद्यापति), कृत महार्णव एवँ महादान निर्णय (वाचस्पति), विवाद चन्द्र (मिसारुमिश्र) तथा गंगकृत्य विवेक (वर्द्धमान) आदि पोथी सबमे हिनक नामक उल्लेख भेटइयै। कन्दाहा अभिलेखमे सेहो हिनक उल्लेख अछि। ओ विद्वान उदार एवँ योद्धा छलाह।

हिनक बाद हिनक पुत्र रत्न सिंह प्रसिद्ध नरसिंह दर्पनारायण राजगद्दीपर बैसलाह। नरसिंह अत्यंत प्रतापी राजा छलाह आ तैं हिनका दर्पनारायणक विरूद मंत्री लोकनि देने रहथिन्ह। कहल जाइत अछि जे ओ अपने मंत्री विद्यापति ठाकुरसँ **विभागसागर** नामक कानूनी ग्रंथक निर्माण करौने छलाह आ तदनुसार न्यायालयमे कार्य करबाक आज्ञा देने छलाह। कन्दाहा (सहरसा)क सूर्य मन्दिर पर एखनो हिनक लिखाओल उपलब्ध अछि आ ओकर तिथि देल अछि शक १३७५ (१४५३–५४ ई.) ओहि शिलालेखक पाठ एवँ प्रकारे अछि–

*"पृथ्वीपति द्विजवरो भव (सिंह) आसी दाशी विषेन्द्र वपुरूज्जवल कीर्तिराशिः।*
*तस्यात्मजः सकल कृत्य विचार धीरो वीरो वभूव वि (हरसिंह देवः)॥*
*(दोः ?) स्तंभद्वय निर्जिनाहिततप श्रेणी किरीटोपल ज्योत्सनावर्द्धित पाद पल्लव नख श्रेणी मयुखावलिः॥*
*दातातनयोमयोक्त विधिना भूमण्डलं पालयत् धीरः श्री नरसिंह भूपतिलकः कांतोधुना राजते।*
*विदेशतोस्यायतनं खेरिदम चीकरत्। विल्व पंचकुलोदभुतः श्रमदवंशधरे कृती...."॥*

एहिलेखमे नरसिंहक पूर्वज उल्लेख अछि आ इहो कहल गेल अछि जे ओ अपन दुनू शक्तिशाली भुजासँ अपन दुश्मनकेँ दबौने छलाह आ सब हुनके पैरपर लोट पोट करैत छल। कामन्दकीय नीतिसारक अनुसार ओ अपन राज्यकेँ रक्षा करैत छलाह। एहिमे हुनका **'भूपति तिलक'** सेहो कहल गेल छन्हि। **दुर्गा भक्ति तरंगिनी**मे विद्यापति हिनका योद्धा कहने छथिन्ह। इ अपने आ हिनक पत्नी धीरमति एक्के रंग उदार छलाह। कहल जाइत अछि जे धीरमतिक आदेशानुसार काशीमे एकटा वापी खुनाओल गेल छल आ धर्मात्माक हेतु एकटा धर्मशालाक निर्माण सेहो कैल गेल छल। हिनके आदेशपर विद्यापति **दानवाम्यावली** ग्रंथक निर्माण कएने छलाह। एहिमे नरसिंह देवक हेतु निम्नलिखित वाक्यक प्रयोग भेल अछि।

*"श्री कामेश्वर राज पण्डित कुलालंकार सारः श्रिया*
*मावासो नरसिंह देव मिथिला भूमण्डलाखण्डलः।*
*दृव्यद् दुर्धरवैरिदर्पदलनोऽभूद्दर्पनारायणो।*
*विख्यातः शरदिन्दु कुन्द धवल भ्राम्यद्यशो मण्डलः।*
*तस्योदार गुणाश्रस्य मिथिला क्ष्मापाल चूड़ामणेः॥*

हिनके समयमे विद्यापति **व्याढ़िभक्तितरंगिणी** सेहो बनौने छलाह। **व्याढ़िभक्तितरंगिणी** आ **विभागसार**क मूल अपन पोथी **'मिथिला इन द एज ऑफ**

**विद्यापति'**क परिशिष्टमे छपने छी। हिनका समयमे बहुत रास विभिन्न **विषयक ग्रंथक** रचना सेहो भेल।

नरसिंहक बाद धीरसिंह राजा भेलाह। नरसिंहकेँ चारिटा पुत्र छलथिन्ह–

| | |
|---|---|
| धीरसिंह हृदय नारायण | (प्रथम पत्नीसँ) |
| भैरवसिंह रूपनारायण | |
| चन्द्र सिंह | (द्वितीय पत्नीसँ) |
| दुर्लभ सिंह (रण सिंह) | |

धीरसिंह अपने पिता जकाँ एकटा योग्य शासक छलाह। ई. १४६० क आसपास गद्दीपर बैसलाह आ विद्यापति हिनको हेतु प्रशंसाक पुल बान्हने छथि। मर्यादा, पराक्रम आ प्रज्ञा तीनुमे इ अपूर्व छलाह। हिनको दरबारमे बहुत रास विद्वान रहैथ छलथिन्ह। हिनके छोट भाए **चन्द्रसिंह चनौर** (चन्द्रपुर)क निर्माता छलाह। चन्द्र सिंहक आदेशपर कृष्ण मिश्रक **प्रबोध चन्द्रोदय** नाटकपर रूचि शर्मा अपन टीका लिखने छलाह। धीरसिंहक कंसनारायण सेहो कहल जाइत छलन्हि।

**भैरवसिंह देव:-** मिथिलामे शिवसिंहक बाद ओइनवार वंशमे सबसँ प्रसिद्ध शासक भेलाह भैरव सिंह देव जे पुनः एक बेर शिवसिंह जकाँ समस्त मिथिलाक एकीकरण केलन्हि आ मिथिलाकेँ पूर्ण स्वतंत्र घोषित केलन्हि। उहो शिवसिंह जकाँ अपन चानीक सिक्का चलौने छलाह आ ओहि सिक्काक आधारपर इ निर्विवाद रूपें कहल जाइत अछि जे ओ १४७५ ई. मिथिलाक गद्दीपर बैसलाह। हुनक स्त्री जयाक अनुरोधपर वाचस्पति मिश्र द्वैत निर्णयक रचना कएने छलाह। शिवसिंह जकाँ इहो **पंचगौड़ेश्वर**क उपाधिसँ विभूषित छलाह। हिनका सम्बन्धमे निम्नलिखित शब्दावली ध्यान देबाक योग्य अछि।

**विद्यापति:**

*शौयावर्जित पंचगौड़धरणी नाथोप नम्रीकृता–*
*नेर्को तुङ्ग तुरंग संग सहितच्छत्राभि रामोदयः*
*श्रीमद भैरव सिंह देव नृपतिर्यस्यानुजन्मा जय*
*त्याचन्द्रार्कमखण्डकीर्ति सहितः श्री रूपनारायणः।*

**रूचि शर्मा** (प्रबोधचन्दोदयक टीकामे):-

*न्यायेनावति तीरभुक्ति वसुधां श्री धीरसिंह नृपे*
*श्रीमद भैरव सिंह भूमिपतिना भ्रात्रानुजेनांविते।*

**वर्द्धमान** (दण्डविवेक):-

*गौड़ेश्वर प्रतिसरीरमति प्रतापः*
*केदारराय मवगच्छति दारतुत्यम्॥*

संभवतः शिवसिंह जकाँ भैरवसिंह सेहो अपन पिताक समयसँ शासनमे हाथ बटबैत छलाह। हिनका समयक सबसँ मुख्य घटना इ अछि जे इ बंगाल सुल्तान द्वारा कैल गेल मिथिलाक अप्राकृतिक बटवाराकेँ तोड़लन्हि आ पुनः समस्त मिथिलाकेँ

एक कए ओहिपर अपन एक क्षत्र राज्यक स्थापना केलन्हि। बछौड़ परगन्नाक बरूआर ग्राममे ओ अपन राजधानी बनौलन्हि कारण इएह सबसँ सुरक्षित स्थान हिनका बुझि पड़लन्हि।

एतए इ स्मरण रखबाक अछि जे हाजी इलियास १३४६ ई.मे मिथिलापर आक्रमणक क्रममे हाजीपुर तक बढ़ल छल आ मिथिलाक ओइनवार राजाकेँ पराजित कऽ कए मिथिलाकेँ दू भागमे बाँटि देने छल। गंडकक उत्तरी भागमे ओ ओइनवार लोकनिकेँ शासन करैत छोड़ि देलकन्हि आ गण्डकक दक्षिणी भाग समस्तीपुर, बेगूसराय, बछवाड़ा, महनार, हाजीपुर आदि क्षेत्रकेँ ओ अपना अधीन रखलक। गण्डकपर अपना दिसि ओ समस्तीपुर (शमसुद्दीनपुर) नामक नगरक स्थापना केलक। तिरहूतक ओइनवार शासककेँ इ सब दिन खटकैत रहैन्ह। एहि आप्राकृतिक बटबाराकेँ किछु दिनक हेतु शिवसिंह नष्ट कए समस्त मिथिलाक एकीकरण कएने छलाह परंतु शिवसिंहक परोक्ष भेलापर पुनः यथास्थितिक स्थापना भेल आ केओ मैथिल शासक एहि दिसि ध्यान नहि देलन्हि। भैरव सिंह एक महत्वाकाँक्षी व्यक्ति छलाह आ मिथिलाक अप्राकृतिक बटवारा हुनका बरोबरि खटकैत रहैन्ह तैं ओ राजगद्दीपर एला उत्तर सबसँ पहिने एहि दिसि ध्यान देलन्हि आ एहिमे सफल सेहो भेला।

धीरसिंहक समयसँ बंगालसँ खटपट होइत छल आ इ बात भैरवसिंह देखैत छलाह। बेर–कुबेरमे हुनके बंगालक विरूद्ध अभियानमे जाइयो पड़इत छलन्हि तैं जखन ओ शासक भेलाह तखन ओ एहि दिसि अपन ध्यान देलन्हि। हुनका समय बंगाल सुल्तानक प्रतिनिधि केदार राय हाजीपुरमे रहैत छल। भैरव सिंह केदार रायकेँ पराजित कए ओहि क्षेत्रपर अपन आधिपत्य स्थापित केलन्हि आ समस्त मिथिलाक एकीकरण करबामे समर्थ भेला।

ओ सौसँ उपर पोखरि खुनौलन्हि। एहिमे जरहटिया गामक पोखरि सबसँ पैघ छल। हिनका दरबारमे चौहान केसरी सिंह आ संग्राम सिंह प्रसिद्ध सिपाही छलथिन्ह आ परम्परागत कथाक अनुसार ओ एहि दुनू सिपाही लंका पठौने छलाह। जरहटिया पोखरिक यज्ञोत्सव बड़ड पैघ भेल छल आ ओहिमे तत्कालीन राजा महाराजा आ विद्वान लोकनिकेँ आमंत्रित कैल गेल छलन्हि। ओहि क्रममे उपरोक्त दुनू दूतकेँ लंको पठाओल गेल छलन्हि। ताहि दिनमे बंगाली विद्वान रघुनाथ शिरोमणि सेहो एहिठाम पढ़ि रहल छलाह आ एहि यज्ञमे नुकाकेँ सब किछु देखैत छलाह। यज्ञमे गलती मंत्र पढ़ल जा रहल छल आ से हुनका नहि रहल गेलन्हि तो ओ बाजि उठलाह–**"साखती कथिता कर्विता पण्डितराज (रत्न) शिरोमणिना"**– एहिसँ लोग हुनका चिन्ह लेलक।

पोखरिक अतिरिक्त भैरवसिंहक समयमे बहुत रास नगर पट्टनक स्थापना सेहो भेल छल। **'तुलापुरूषदान'**क चर्च सेहो भेटइत अछि। संस्कृत साहित्यमे बहुत रास ग्रंथक रचना एहि कालमे भेल। विद्यापति, वाचस्पति, पक्षधर आदि सन धुरन्धर विद्वान हुनका दरबारमे छलथिन्ह आ राजा स्वयं संस्कृत साहित्यक बड़ड पैघ पृष्टपोषक छलाह। हुनका दरबारमे वाचस्पति **'परिषद'** रहथिन्ह, आ वर्द्धमान **धर्माधिकरणि**क रहथिन्ह। हिनक विरूद छलन्हि **'रूपनारायण'।**

भैरवसिंहक वाद रामभद्र शासक भेला आ हिनको विरूद रूपनारायणे छलन्हि। इहो अपन राजधानी रामभद्रपुर नामक गाममे बनौलन्हि। कहल जाइत अछि जे हिनका पटनामे सिकन्दर लोदी संगे भेट भेल छलन्हि आ दुनूमे बेस दोस्ती सेहो छलन्हि। इ हुनका संग शतरंज इत्यादि सेहो खेलाइत छलाह। सुल्तान रहस्य नृत्य देखबा काल हुनकहुँ अपना समीपमे स्थान देथिन्ह। गौड़, बंगाल, मालदह, मुर्शिदाबाद

आदि स्थानकेँ ओ जीतने छलाह। सिकन्दर लोदी बंगालकेँ ध्यानमे राखि मिथिलाक शासककेँ अपना दिसि पटियाकेँ रखने होथि से संभव। विभाकर **द्वैतविवेक** नामक ग्रंथसँ निम्नलिखित वाक्य स्पष्ट अछि।

*"सिकन्दर पुरन्दरो गुरूदुरोदरक्रीड़या*
*दिनं गमयति ध्रुवं विविध नागरी विभ्रमैः।*
*पचण्ड रिपुमण्डली मुकुट कोटि प्रभा।*
*समजित पदाम्बुजं यमिह मित्र भावंनयन्॥*
*येना खानि समुद्रखात सदृशं वापीगतं निजेले।*
*येनादायि च तानि तान्यथ महादानानि पुण्यत्मना।*
*जागेत्येद्बुत विक्रमः संजगती कन्याकर ग्राहको।*
*गौड़ोवीवलयेन्द्रदविदहनः श्री रामभद्रो नृपः॥*

रामभद्र अत्यंत विद्याप्रिय छलाह। वाचस्पति हिनको समयमे जीवित छलाह। सिकन्दर लोदीकेँ रामभद्रपर बड़ड विश्वास छलन्हि आ तैं आवश्यकता पड़लापर हिनक बजाहटि होइत रहैन्ह। रामभद्र उदार, दानी आ विद्याप्रेमी छलाह आ ओइनवार परम्पराक अनुसार इहो बहुत रास पोखरि इत्यादि खुनौने छलाह। हिनका समयमे भट्ट श्री राम नामक एक यात्री गयासँ तीरभुक्ति तीर्थ करबाक हेतु आयल छलाह आ ओ रामभद्रक दानप्रियता एवँ उदारतासँ बड़ड प्रभावित भेल छलाह। मिथिला होइत ओ प्रयाग घुरल छलाह। ओ तीरभुक्तिक विद्वत समाजसँ एत्तेक प्रभावित भेल छलाह जे एहि बातक उल्लेख ओ अपन पोथी **'विद्वत प्रबोधिनी'**मे सेहो केने छथि–

*"गयाया निर्गता रामस्तीर्भूक्त्याख्यदेशपम्।*
*रूपनारायणं विप्रं संतुष्टं स्वागिराकरोत्॥*
*रूपनारायणाद् भूपादाज्ञां प्राप्य सुतान्वितः।*
*तीरभूक्त्याख्यदेशाश्च प्रयागं समुपागतः"॥*

एहिवंशक सबसँ अंतिम शासक छलाह लक्ष्मी नाथ देव कंस नारायण जनिका समयक अभिलेख भगीरथपुरसँ प्राप्त भेल अछि। १५१३ ई.मे इ मिथिलामे शासन करैत छलाह। १५१० ई.मे गद्दीपर बैसल होथि से संभव कारण ओहि वर्षमे हिनके शासन कालमे **देवी माहात्म्य**क एकटा पाण्डुलिपि तैयार भेल छल।

भगीरथपुर अभिलेखमे हिनका **'राजाधिराज'** कहल गेल छन्हि– **"यवनपति भयाधायकस्तीरभुक्तौ राजा राजाधिराजः समर–सः कंसनारायणो सौ"**। हिनका डरे यवन लोकनि थर–थर कंपैत छलाह। कहल जाइयै जे हिनक चरित्र संदेहास्पद छल आ इ अपन कोनो मंत्री श्री धरक पत्नीसँ सम्बन्ध रखैत छलाह। हिनका समयमे मिथिलापर मुसलमानी आक्रमण भेल। १५२६ ई.मे हिनक मृत्यु भेल जेना कि निम्नलिखित श्लोकसँ स्पष्ट अछि– **"अंकाब्धिवेदशशि (१४४९) सम्मित शाकवर्षे, भाद्रेसिते, प्रतिपदिं क्षिति सुनुवारे हा हा निहात्य इव कंसनारायणौऽसौ, त्याज्य देवसरसीनिकटे शरीरम्"**– १४४९ शाक अथवा १५२६ ई.मे अपन पार्थिव शरीर त्यागलन्हि। संभवतः बंगालक नशरत शाहक हाथे इ पराजित भेल छलाह किएक तँ नशरत शाहक एकटा अभिलेख बेगूसरायक मटिहानी अंचलसँ प्राप्त भेल अछि। नशरत दिल्लीक सुल्तान संग भेल संधिकेँ नहि मानि मिथिलापर आक्रमण केलन्हि आ

लक्ष्मीनाथ कंसनारायणकेँ पराजित कए अपन जमाए अलाउद्दीनकेँ एहिठामक राज्यपाल नियुक्त केलन्हि।

एकर बादक इतिहास पूर्णरूपेण ज्ञात नहि अछि। ओइनवारक शक्तिक ह्रास भऽ गेलैक। तथापि ओइनवार वंशक लोग यत्र तत्र मिथिलामे राज्य करैत रहलाह आ एम्हर अराजकता सेहो बढ़े लागल। केन्द्रीय सत्ता टुटि गेलासँ चारूकातक राजा–सामंत अपन स्वतंत्रता घोषित कऽ लेलन्हि आ मुसलमान लोकनि सेहो एहि क्षेत्रमे अपन अधिकार बढ़ेबामे प्रयत्नशील भऽ गेलाह। ओइनवार वंशक एकटा इन्द्रसेन (शालिहोत्रसारसंग्रहक लेखक)क नाम भेटइत अछि जकरा सम्बन्धमे हमरा लोकनिकेँ कोनो विशेष ज्ञान नहि अछि। १४३४–३५मे चम्पारणमे राजा पृथ्वीनारायण सिंह देवक राज्य छल (महाराज पृथ्वीनारायण सिंह देव भुज्यमान राज्ये चम्पकारण्यनगरे)। हिनक उत्तराधिकारी छलथिन्ह शक्तिसिंह आ तकर बाद हुनक पुत्र मदन सिंह। मदन सिंह, **मदन–रत्न–प्रदीप**क लेखक छलाह। इ सब राजा अपन सिक्का सेहो चलौने रहैथ जाहिपर लिखल अछि**– "गोविन्द चरण प्रणत–श्री चम्पकारण्ये"।** हिनक मुद्रा हिमालय तराइसँ दिल्ली धरि भेटइत अछि। मदन सिंहक राज्य गोरखपुर धरि छलन्हि। नरसिंह पुराणक पाण्डुलिपिक पुष्पिकामे एकर प्रमाण अछि**– "....महाराजाधिराज श्रीमन्मदन सिंह देवानाम् विजयिनाम् शासति गोरक्षपुरे....."**। चम्पारणक लौरिया नंदनगढ़मे अशोकक स्तंभपर एकटा लेख अछि**– "नृपनारायण सुत नृप अमरसिंह"**। इ केँ छलाह आ कतुका राजा छलाह से कहब असंभव।

महाराज लक्ष्मीनाथ अपुत्र छलाह तैं हुनक बाद हुनक कायस्थ मंत्री केशव मजूमदार राजक भार सम्हारलन्हि आ उएह राजा भेला। ओइनवारक परंपराक निर्वाह करैत उहो जन–कल्याणक हेतु पोखरि खुनौलन्हि आ दानादिक नीक व्यवस्था केलन्हि। मजलिश खाँ नामक व्यक्ति सेहो एहि स्थितिसँ लाभ उठाए किछु दिन मिथिलापर शासन केलन्हि। केशव मजूमदार कुशल व्यक्ति छलाह आ ओइनवार शासनक सब बातसँ अवगत रहबाक कारणे ओ मिथिलाकेँ अपना शासन कालमे यथासाध्य स्वतंत्र रखलन्हि आ मैथिल परम्परा निर्वाह करैत जन कल्याणार्थ बहुत किछु केलन्हि। ओइनवार वंश आपसी कलह आ बटवारासँ खण्डित भऽ चुकल छल। राजकुलक सम्बन्धसँ ओइनवार मूलक ब्राह्मण लोकनि **"कुमार"** पदवी धारण करए लगलाह आ **'कुमार'** पदवी धारी ओइनवार ब्राह्मण लोकनिक एक शाखा अहुखन मालदह जिलाक अराइदंगा गाममे छथिन्ह। ओइनवार वंशक अनेक शिलालेख आ किछु मुद्रा सेहो अछि जाहिपर हमरा सब इ कहि सकैत छी जे ओइनवार लोकनि कर्णाट वंश जकाँ मिथिलाक स्वतंत्रताक सुरक्षाक हेतु किछु उठा नहि रखलन्हि आ हुनका शासन काल मैथिलक प्रसार चारूकात भेल। एहि वंशक तत्वाधानमे साहित्य, कला, व्याकरण, स्मृति, निबंध, दर्शन, इत्यादिक विकास भेल। महाकवि विद्यापति देवसिंहक समयसँ भैरव सिंहक शासन काल धरि ओइनवार राजनीतिक एकटा प्रमुख स्तंभ छलाह। राजकाजमे एतवा व्यस्त रहितो ओ अपन लिखब–पढ़ब नहि छोड़लन्हि आ मातृभाषाकेँ सेहो नहि बिसरलाह। एहिवंशक समयमे गोनू झा सेहो भेल छलाह। एहिवंशक परोक्ष भेलापर मिथिलामे मुसलमानी प्रभावक वृद्धि भेल। (एहि प्रसंगमे हमर **"हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहूत"** देखल जा सकइयै आ देखु हमर निबन्ध– **"द ओइनवारज ऑफ मिथिला"**)

अध्याय–९

# खण्डवला वंशक इतिहास

ओइनवार वंशक अंत भेलापर मिथिलामे केशव मजुमदार आ मजलिश खाँक शासन रहल। केन्द्रीय सत्ताक समाप्त भऽ गेलापर आ मुसलमान लोकनिककेँ लगातार आक्रमणसँ मिथिला छिन्न भिन्न भऽ गेल छल आ चारूकात अराजकता पसैरि गेल छल। जे जेम्हरे पेलक से तेम्हरे अपन आधिपत्य कायम कऽ लेलक आ एहियुगमे मिथिलामे बेसी बावू बवुआन लोकनिक बढ़ती भेलैन्ह। किछु राजपूत लोकनि सेहो एहिसँ लाभ उठौलन्हि आ कैक ठाम अपन स्वतंत्र राज्य कायम करबामे सफल भेलाह। समस्त मिथिलामे हाजीपुरसँ बंगालक सीमा धरि मुसलमानी प्रभाव बढ़ि चुकल छल आ मुगल साम्राज्यक स्थापना धरि करीब–करीब इएह स्थिति बनल रहल। एहिठाम मुगल साम्राज्यक स्थापना हम बाबरक समयसँ नहि लऽ कए १५५६ यानि अकबरक समयसँ लैत छी कारण बाबर द्वारा स्थापित राज्य तँ राज्ये मात्र रहल आ हुनक पुत्र ओहि राज्यकेँ जोगा नहि सकलाह। नतीजा भेल जे बिहारेक शेरशाह मुगल साम्राज्यकेँ नस्तनाबूद केलन्हि आ अपन सत्ता स्थापित करबामे समर्थ भेलाह। शेरशाहक एकटा उत्तराधिकारी सिक्का तिरहूत भेटल अछि आ एकटा मैथिली लिपिक अभिलेख सूर्यगढ़ा (मूंगेर)सँ। अकबरक शासन भेलाक बाद जे परिवर्त्तन भेल तकर प्रभाव मिथिलापर स्वाभाविक रूपें पड़ल।

खण्डवला वंशक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे हिनका लोकनिकेँ मुगल सम्राट अकबरसँ समस्त मिथिलाक राज्य भेटल छलन्हि। दरभंगा राजक इतिहास विस्तृत रूपे डॉ. जटाशंकर झा शोध कएने छथि आ एहि दृष्टिकोणें हुनक **"हिस्ट्री ऑफ दरभंगा राज"** आ **"महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह"** पठनीय ग्रंथ अछि। खण्डवला वंशक संस्थापक छलाह महामहोपाध्याय महेश ठाकुर। हिनक पूर्वज मिथिलेक रहथिन्ह आ ओहिमे एक गोटए शंकर्शन उपाध्यायकेँ किछु दान खण्डवामे भेटबाक बाद ओम्हरे जाके बसि गेल छलाह। महेश ठाकुर हुनके वंशज छलाह (दशम पीढ़ी) आ जमीन जायदाद वाला रहबाक कारणे इ लोकनि उपाध्यायसँ ठाकुर (सामंती पदवी) कहबे लागल छलाह। १६म शताब्दीमे इ लोकनि मण्डला (गढ़ मण्डल–वस्तर)सँ पुनः एलाह। हिनक पितामह श्रीपति ठाकुर भर राजपुतकेँ किछु दान दऽ कए भौर गाम बसौने छलथिन्ह। एहिठाम स्मरणीय जे ओइनवार वंशक पतनक बाद जे अराजक स्थिति शुरू भेल छल ताहिसँ लाभ उठाकेँ भर राजपूत लोकनि सेहो अपन स्वतंत्र राज्य स्थापित कऽ लेने छलाह। भौरमे आबिकेँ बसला कारणे खण्डवला लोकनि **'खरौरे भौर'** कहौलथि। एहिवंशमे विद्वानक जे एकटा परम्परा चलि आबि रहल छल तकरा अनुरूपें इ लोकनि भौरमे एकटा संस्कृत विद्या केन्द्रक स्थापना केने छलाह जत्ते देशक विभिन्न भागसँ विद्यार्थी लोकनि पढ़बालेल अबैत छलाह। महेश ठाकुरक ज्येष्ठ भाए भगीरथक कारणे भौरक प्रतिष्ठा बड़ड बढ़ि गेल छल–

"*पद्म पत्रमपि यत्र दुर्लभम्,*
*रन्धनं भवति नेन्धनं बिना।*

*श्री भगीरथ गुणेन केवलम्,*
*भौर गौरव कथा गरीयसी'* ॥

**गढ़ेश–नृप–वर्णन–संग्रह श्लोकक** पाण्डुलिपिक अध्ययनसँ मैथिल विद्वानक जे विवरण भेटइत अछि ताहिमे महेश ठाकुरक प्रशंसनीय उल्लेख अछि। रूपनाथ मैथिलक पाण्डुलिपि **गढ़ेश–नृप–वर्णनम्** कऽ उपरोक्त पाण्डुलिपि पूरक थिक आ ओहि पाण्डुलिपिमे गढ़मण्डल राज्यक विवरण भेटइत अछि। रूपनाथक अनुसार महेश ठाकुर भौर ठक्कुर लोकनिक वंशजक रूपमे वर्णित छथि आ संगहि यादोरायक धार्मिक गुरूक रूपमे सेहो। महेश दलपत शाह आ रानी दुर्गावतीक समकालीन छलाह। खण्डवा, मण्डला, रतनपुर आ वस्तरमे हिनक बेस इज्जति रहैन्ह। महेश ठाकुर दुर्गावतीकेँ पुराण सुनबैत छलाह। एक दिन कोनो कारणे ओ ओतए अपन प्रिय शिष्य रघुनंदनकेँ पठौलन्हि परञ्च रघुनन्दनकेँ ओतए किछु खटपट भऽ गेलैन्ह आ ओतहिसँ गुरू शिष्य दुनू गोटए दिल्ली दिस बिदा भेलाह। ओहिठाम मुगल दरबारमे इ लोकनि अपन विद्वतासँ सम्राटकेँ प्रभावित केलन्हि आ रघुनन्दन जे फरमान प्राप्त केलन्हि से दक्षिणा स्वरूप अपन गुरूदेव महेश ठाकुरकेँ दऽ देलन्हि। महेश ठाकुरक आर तीनू भाइ दिल्लीसँ घुरिकेँ वस्तर, रतनपुर आ मण्डला दिसि चल गेला किएक तँ ओहिठाम हुनका लोकनिकेँ जागीर छलन्हि आ महेश ठाकुर असगरे फरमानक संग घुरला। मण्डला अखनो धरि महेशपुर आ तिरहूतिया टोल अछि। मैथिल परम्परामे सेहो महेश ठाकुरक राज्य प्राप्तिक उल्लेख भेटइत अछि–

*"नवग्रह वेद वसुन्धरा शकमे अकबर शाह*
*पंडित सुबुध महेश को किन्हो मिथिलानाह"* ॥
*"आसीत पण्डित मण्डलाग्र गणिता भूमण्डला खण्डला।*
*जाता खण्डवाल कुले गिरि सुता भक्तो महेशः कृति।*
*शाकेरण्ध्र तुरंग श्रुतिमही (१४४८=??) लक्षिते*
*हविनेवाग्देवी कृप्या सुयेन मिथिलादेशः समस्तोऽर्जितः"* ॥
*"अति पवित्र मंगल करण राम जनमकेँ दिन।*
*अकबर तुषित महेश को तिरहुति राजा करेन॥*

जेना कि पूर्वहिं कहल जा चुकल अछि जे महेश ठाकुर जखन फरमान लऽ कए मिथिलामे राज्य करबाक हेतु पहुँचलाह तखन हुनका विरोधक सामना करए पड़लन्हि कारण एहिठामक स्वतंत्र राजपूत राजा लोकनि ताधरि स्वतंत्रताक स्वाद लऽ लेने छलाह। ओइनवारक बाद जे स्थिति उत्पन्न भेलैक तकर विवरण हम प्रस्तुत कऽ चुकल छी आ इहो कहि चुकल छी जे राजपूत लोकनि अपन प्रभाव बढ़ा लेने छलाह। तथा सरौंजा आ परसीमे पहिने हिन्दू राजा चुनचुनक राज्य छल परञ्च चुनचुनक परोक्ष भेलापर लक्ष्मी सिंह नामक एकटा राजपुत राजा ओहि क्षेत्रपर शासन करए लगलाह। ओइनवारक बबुआन लोकनि सेहो ठाम–ठाम अपन अधिकार जमौने छलाह आ १७म शताब्दीमे औरंगजेबक शासन काल धरि मिथिलामे एकटा ओइनवार शासकक विवरण (तलवार–अभिलेख–जे **मिथिला भारती**मे प्रकाशित भेल अछि) भेटल अछि। एहिसँ तँ सामान्यतः इएह स्पष्ट होइछ जे महेश ठाकुरकेँ प्रारंभमे काफी मुश्किल भेल होएतन्हि। ताहि दिनमे मिथिला छोट–छोट खण्डमे बटल छल। भौर

प्रधान प्रशासनिक केन्द्र छल। महेश ठाकुरक समय मिथिलाक स्थितिक वर्णन निम्नांकित अछि–

*"रहै भौर क्षत्री प्रबल, वसत भौर निज ठौर*
*सूर समर विजयी बड़े, सब क्षत्री सिरमौर॥*
*अच्युतमेघ गोपाल मिलि, मारौ क्षत्री राज*
*निज सुत लै भागी तबै रानी नैहर राज*
*बहुत दिवसकेँ बाद सौं सजि आये पम्मार*
*युद्ध करण मिथिलेशसँ सेना अपरंपार"॥*

महेश ठाकुर सब प्रकारक विरोधकेँ दबेबामे सफल भेला। एहिठाम प्रश्न इ उठइयै जे राज्य गुरू दक्षिणामे भेटल छलन्हि अथवा ओ स्वयं ओकरा प्राप्त केने छलाह। एहिपर विद्वानक बीच मतभेद अछि आ एक सिद्धांत इहो अछि जे ओ अपन विद्वतासँ मानसिंहकेँ प्रभावित कए राज्य प्राप्त केने छलाह। अकबर सेहो एहि पक्षमे छल जे कहुना चारूकात शांति बनल रहए जाहिसँ ओ अपन राज्य विस्तार कऽ सके आ तैं मिथिलाक भार महेश ठाकुरकेँ सुपुर्द कए ओ निश्चिंत होमए चाहैत छल। तिरहूतक कलक्टरक १७८९क एक पत्रसँ इ ज्ञात होइछ जे महेश ठाकुर ओइनवार वंशक पुरोहित छलाह आ ओइनवार वंशक अंत भेलापर ओ स्वयं दिल्ली जाए ओतुक्का शासककेँ सब स्थितिसँ अवगत कराए अपना हेतु राज्य प्राप्त कऽ कैँ अनलन्हि। एक आर किंवदंती बुकानन पुर्णियाँ रिपोर्टमे सुरक्षित अछि। प्रिंसेपक अनुसार खण्डवला वंश मुगल साम्राज्यक अंतर्गत एक स्वायत्त राज्य छल आ ओहि राज्यक अधीन कतैको सामंत लोकनि रहैत छलाह। गोपाल ठाकुरक देल अकबरक फरमानसँ इ स्पष्ट अछि जे आंतरिक मामला मिथिला पूर्णरूपेण स्वतंत्र छल–चौधराइ आ कानूनगोय समस्त तिरहूतक हिनका लोकनिकेँ प्राप्त छलन्हि। १६५२ ई.क मजहरनामासँ सेहो स्पष्ट होइछ जे महेश ठाकुर एहिवंशक संस्थापक छलाह। औरंगजेबक समयमे एहिवंशकेँ बिहार आ बंगालक ११० परगन्ना दानस्वरूप भेटल रहैक आ संगहि **खिलत** आ **महिमरेतिव** (माँछक चेन्ह–जे दरभंगा राज्यक राजकीय चेन्ह छल)। एहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे समस्त तिरहूतपर एहिवंशक प्रभाव महेश ठाकुरक समयसँ चलल अबैत छल।

महेश ठाकुर मिथिलामे खण्डवला कुलक संस्थापक छलाह एहिमे आब सन्देह नहि रहि गेल अछि। अपन राजा हेबाक अवसरकेँ चिरस्मरणीय बनेबाक हेतु ओ **धौत परीक्षा**क प्रथा चलौलन्हि। महेश ठाकुर मात्र एक शासकेटा नहि अपितु एक पैघ विद्वानो छलाह आ बहुत रास पोथी सेहो लिखने छलाह। कहल जाइत अछि जे मिथिलामे राज्य प्राप्त भेलाक बाद ओ गढ़ मण्डलासँ अपन देवी (कंकाली देवी)केँ सेहो ओतएसँ अनलन्हि। ओ **अकबरनामा**क एकटा संक्षिप्त संस्कृत संस्करण बाहर केलन्हि जे **सर्वदेश वृतांत संग्रह**क नामसँ प्रसिद्ध अछि। कहल जाइत अछि जे महेश ठाकुर अकबरक शासनक ३४म वर्ष एहि ग्रंथक अनुवाद कएने छलाह। बीरबलक आदेशपर इ अनुवाद भेल छल। किनको–किनको इहो मत छन्हि जे एहि अनुवादक बाद महेश ठाकुरकेँ मिथिलाक राज भेटलन्हि। सुभद्र झाक संपादकत्वमे इ पोथी प्रकाशित अछि। एहि ग्रंथसँ इ ज्ञात होइत अछि जे हिमायुँ नरहन आएल छलाह आ तिरहूत आ पूर्णियाँमे ओ जागीर सेहो देने छलथिन्ह। इ दुनू स्थानक जागीर ओ अपन भाए हिन्दालकेँ देने छलाह आ हुनका अपन जागीर ठीक कऽ कए बंगाल दिसि

बढ़बाक आदेश देने छलाह। मैथिली शब्दक सेहो एहि संस्कृत पोथीमे बेस व्यवहार अछि। उदाहरणार्थ–

i) सम्यक्तया
ii) गल्ली
iii) असुस्थ
iv) तरवारि
v) सुस्थ
vi) ढ़व्य=ढ़ौआ
vii) विचीय–विचीय (बीछि–बीछि)
viii) वस्तु जातानि–
ix) हत्था जोरी–

आ एहेन बहुत शब्द ओहि संकलनमे अछि।

महेश ठाकुरक बाद हुनक द्वितीय पुत्र गोपाल ठाकुर गद्दीपर बैसलाह। कहल जाइत अछि जे ओ विद्रोही राजपूत प्रधान लोकनिकेँ दबौलन्हि। हिनके समयमे टोडरमलक राजस्व व्यवस्था लागू भेल छल। हिनका समयमे भेटल फरमानक उल्लेख हम पूर्वहिं कऽ चुकल छी। मिथिलाक आंतरिक झंझटमे इ ततेक बाझल छलाह जे जखन दिल्लीसँ हिनका बजाहटि एलन्हि तँ अपने नहि जा कए ओ अपन पुत्र हेमांगद ठाकुरकेँ पठौलन्हि जे ओतए कोनो कारणवश गिरफ्त भऽ गेलाह आ ओहि गिरफ्तावस्थामे अपन सुप्रसिद्ध एवँ अद्वितीय ज्योतिष शास्त्रक पोथी लिखलन्हि। कागज कलमक अभावमे ओतए ओ माँटिपर लिखैत छलाह आ जखन राजाकेँ एकर सूचना भेटलन्हि तँ राजाक पूछलापर ओ कहल थिन्ह जे एक हजार वर्ष धरि कहिया–कहिया ग्रहण लागत तकरे हिसाब ओ लिखि रहल छथि। **'राहू पराग पंजी'** नामे इ ग्रंथ प्रचलित अछि, आ ओहिमे लिखल अछि–

*"खण्डवला कुल तरणेर्गोपालादापयं गौरी*
*हेमाङ्गद सतनुते पंजी (!) राहू परागस्य"।*

राजा हिनकासँ प्रसन्न भऽ हिनका मुक्त कए देल आ तिरहूत राज्यक जे बकिऔता छल सेहो माफ कऽ देलक। हेमाङ्गद तकर बादसँ पढ़वे–लिखबेमे अपन समय व्यतीत करे लगलाह। गोपालक बाद शुभंकर ठाकुर शासक भेलाह।

शुभंकर ठाकुरक नामपर दरभंगा लग अखनो शुभकंरपुर अछि। इ एक पैघ विद्वान आ लेखक सेहो छलाह। ओ भौरमे अपन राजधानी स्थापित केलन्हि किएक तँ एहिठाम पहिने भर राजपूत लोकनिक प्रधानता छल। हुनका बाद हुनक पुत्र पुरूषोत्तम ठाकुर शासक भेला। हिनक बजाहटि मुगल राजस्व पदाधिकारीक ओहिठाम भेल छलन्हि आ राजस्व पदाधिकारी दरभंगाक किला घाटमे ठहरल छलाह। ओहि पदाधिकारीकेँ मुगलशासकक हाथे सजा भेटलैकि। हिनकहि शासनकालमे तिरहूतक दूटा ब्राह्मणकेँ मुगल दरबारमे पुरष्कार भेटल छलैक। पुरूषोत्तमक बाद हुनक सतभाय नारायण ठाकुर राजा भेलाह। नारायण ठाकुरक समयमे दू फरमान भेटल छलैक जाहिसँ दूटा गामक न ननकार प्राप्त भेल छलन्हि–सरसो (परगन्ना भौर) आ बिजिलपुर (परगन्ना वेराय)। भखारा परगन्नाक स्थितिकेँ सुधारबामे हिनक विशेष हाथ छलन्हि आ १६४५ तक ओ राज्य करैत रहलाह। तकर बाद सुन्दर ठाकुर राजा भेलाह।

राज्यक बटबाराक संकेत भेटइत अछि। एहिकालमे शाहजहाँक शासन छल आ हकीकत अली नामक एक व्यक्ति दरभंगाक नवाब छलाह।

*"ल सं ५०९ श्रावणवदि १४ खौ पुनः परमभट्टारकाश्व*
*पति गजपति नरपति राज्य त्रयाधिपति*
*सुरत्राण शासत शाहजहाँ सम्मानित नओवाव*
*हकीकत खाण संभुज्यमान तीरभुक्त्यंतरित, स्स्*
*तीसाठतया संलग्न झोरिया ग्रामे.... ।*

हिनके शासन कालमे मैथिल रघुदेव शाहजहाँक **विरूदावली** बनौने छलाह। सुन्दर ठाकुरक बाद महिनाथ ठाकुर राजा भेलाह। ओ पलामू आ मोरंगमे मुगल सम्राटक सहायता केने छलथिन्ह जकर सबूत उपलब्ध अछि। सुन्दर ठाकुर सुन्दरपुर मोहल्ला बसौलन्हि आ भालपट्टीमे सुन्दर सागर पोखरि खुनौलन्हि। एहि पोखरिक नाम रामकविक आनन्द विजय नाटिकामे भेटइत अछि। सुन्दर ठाकुर देखबामे बड़ड सुन्दर छलाह–

*"अरविन्द विनन्दित सुन्दर लोचन*
*सुन्दर ठक्कुर सुन्दरता।*
*मदनेन समं विधिना तुलिता*
*कलिता मिथिलैक पुरन्दरता।*
*तव खण्डवला कुल मण्डन भूप।*
*सदा मतिरस्तु मुकुन्द रता*
*नैने नगरे निले कमलापर*
*वारिधि मंथन मन्दरता"–*

महिनाथ ठाकुरक समयक एकटा औरंगजेबक फरमान सेहो उपलब्ध अछि। महिनाथ ठाकुरक काजसँ प्रसन्न भऽ मुगल सम्राट हिनका आर राज्य देलथिन्ह–

सदर जमीन्दारी सरकार **तिरहूत (तराइक संग)–१०२ परगन्ना**
परगन्ना धरमपुरक जमीन्दारी
सरकार मूंगेर–एक परगन्ना–
बंगालसँ सेहो निम्नलिखित इलाका भेटलन्हि– माछक निसानी सेहो–
सरकार पूर्णियाँ–५ परगन्ना–
सरकार ताजपुर–२ परगन्ना–

महिनाथ ठाकुरकेँ बेतियाक राजा गजसिंहसँ सेहो झंझटि भेलन्हि। मिरजा, फिदाइ आ जीवन हिनका समयमे तिरहूतमे मुगल फौजदार छल। महिनाथ ठाकुरक शासन कालमे खण्डवला कुल अपन चरमोत्कर्षपर पहुँचल छल। महिनाथ ठाकुर बेतिया (सिमरॉव)क राजा गजसिंहकेँ पछाड़लन्हि जे सुगौना पहुँचिकेँ सुगौना किलामे आराम करैत छलाह।

*"धाय मिथिलाकेँ महिनाथ सिंह महाराज*
*बाजकेँ झपटते सुगाओंपर चढ़ि गयौ।*
*घेराकरि दौड़ि दरवाजेमे दरेरा लगे धरव,*
*लागै मुचित्यौं आगे आग सी लहरि गयो।*

*दौड़–दौड़ पैदल कंगुरनमे चढ़ि लागै।*
*लेहुकी लहरि सो सोति ताल भरि गयौ।*
*कहु ढ़ाल कहु तरकस तलवार डारि तौलौ।*
*गज सिंह खोलि खिड़की दै निकल गयो।*

महिनाथ ठाकुर मैथिली साहित्यक सेहो संरक्षक छलाह। हिनके समयमे लोचनक **राजतंरगिणी** आ **नैषध काव्य**क रचना भेल छल। हिनकहि समयमे इहो निर्णय भेल जे दरभंगा राज्य भविष्यमे बटत नहि आ ओहि हिसाबे उत्तराधिकारक नियम सेहो बना देल गेल।

एकर बाद नरपति ठाकुर शासक भेलाह। दुनू भाए (महिनाथ आ नरपति)क सम्बन्ध केहेन छल से निम्नलिखित काव्यसँ स्पष्ट होएत। कालीक पूजक छलाह–

*"वदन भयान कानशब कुण्डल विकट दशन धन पाँती।*
*फूजल केश वेश तुअकँ कहजनि नवजलधर काँती॥*
*काटल माथ हाथ अति शोभित तीक्ष्ण खड्ग कर लाइ।*
*भय निर्भय वर दहिन हाथ कए रहिअ दिगम्बर माइ॥*
*पीन पयोधर उपर राजित रूधिर स्त्रवित मुण्ड हारा।*
*कटि किङ्किणि शब कर करू मंडित सृक बहु शोणित धारा॥*
*वसिअ मशान ध्यान शब उपर योगिनि गणरहु साथे।*
*नरपति पति राखिअ जग इश्वरि करू महिनाथ सतार्थ॥*

नरपति ठाकुर कुशल योद्धा छलाह आ तलवार भजबामे बेस कुशल। पलामू आ मोरंगमे जे महिनाथ ठाकुर मुगलक सहाय्यक हेतु सेना पठौने छलाह ताहिमे ओ ओहि सेनाक नेतृत्व नरपति ठाकुरक हाथमे देने छलथिन्ह। हुनक बहादुरीसँ सम्राट सेहो बड़ड प्रसन्न छलाह। एकर विवरण कतेको ठाम भेटइत अछि। उपरला पदसँ सेहो एकर भान होइयै। नेपाल तराइमे एकटा मकवानपुर राज्य छल। ओइनवार वंशक अंत भेला इ राजा लोकनि तिरहूत राज्यक किछु हिस्साकँ हड़पि लेने छलाह। नरपति ठाकुर हिनका विरूद्ध पटनाक सूबेदारक ओहिठाम शिकायत केलन्हि आ ओहिठाम सूबेदारक आश्वासन भेटलापर ओ आन जमीन्दार लोकनिकँ संग लए शिकार खेलबाक बहानासँ मकवानपुर राज्यपर आक्रमण केलन्हि आ ओतुका राजाकँ गिरफ्तार कऽ लेलन्हि। ओहि राजाकँ पकड़िकँ दरभंगाक फौजदारक ओतए आनल गेल। ओ मिथिलाक राजाकँ सलाना १२०० टाका आ हाथी नजराना देव स्वीकार कैल। मुगल सम्राटक संग हिनक सम्बन्ध बढ़िया छलन्हि आ तैं हिनका समयमे खण्डवला कुलक प्रतिष्ठा बढ़ल।

नरपति ठाकुरक बाद हुनक पुत्र राघव सिंह राजा भेला। **'ठाकुर'**क स्थान ओ **'सिंह'** पदवी लेलन्हि। उहो अपन पिता जकाँ एकटा प्रतापी शासक छलाह आ हुनका मिथिला पति सेहो कहल गेल छन्हि। बेतियाक राजा ध्रुवसिंहसँ हुनका खटपट भेलैन्ह आ संघर्ष सेहो–

*"नगहु खड्ग ध्रुवसिंह तोहि उपर यम चढ़ौ।*
*मिथिलापति सौवेर दिन–दिन तोहि बढ़ौ॥*
*तेकयत कुलवधिक एतो राघव नृप राजा।*
*एहि दल दलन सम्मथ भीम भारत जिमि गाजा॥*

*कवि कहत रामरे मूढ़ सुनु जेहि दल प्रचण्ड भैरो रहत।*
*ठहरे न फौज जाथ इति कोन जब सरदार खाँ तेगा गहत"॥*

प्रसिद्ध अफगान लड़ाकू सरदार खाँ हिनका दरबारमे छल। बिहारी लाल अपन **'आयनी तिरहूत'**मे लिखने छथि जे औरंगजेब हिनको राजाक उपाधि देने छलन्हि। किछु गोटएक मत छन्हि जे इ पदवी हुनका अलीवर्दीसँ भेटल छलन्हि। एक लाख टाका जमाक हिसाब इ तिरहूत राज्यक मुकर्ररी लेने छलाह। नवावक दिवान धरणिधरकँ सेहो ५०,००० टाका नजराना दैत छलथिन्ह। मकवानीक राजा जखन वार्षिक नजराना देव बन्द कऽ देलन्हि तखन हुनका मकवानपुरक खिलाफ सेहो आक्रमण करए पड़लन्हि। युद्धक घोषणा होइतहुँ मकवानीक राजा हिनकासँ मेल मिलाप कऽ लेलथिन्ह आ बेसी नजराना देवाक प्रतिज्ञा केलथिन्ह। हिनका समयमे एक आर प्रसिद्ध घटना भेल। बीरू कुरमी जे पहिन हिनका ओतए रहैन्ह तकरा ओ राजस्व पदाधिकारी बनाकँ धर्मपुर परगन्ना पठौलन्हि। बीरू ओतए अपन एकटा किला बना लेलक आ ओहिसँ राजकँ राजस्व पठाएब बन्द कऽ देलक। ओकरा विरूद्ध सेना पठाओल गेल आ ओहिमे वीरूक बेटा मारल गेल आ वीरू पराजित भेल। ओकरा सम्बन्धमे निम्नलिखित कहावत अछि–

*"वीरनगर वीर साह का बसे कौशिका तीर*
*का पति राखे कौशिका का राखे रघुवीर"।*

बुकाननक पुर्णियाँ रिपोर्टमे लिखल अछि जे वीरूक हाल सुनि सरमस्त अली खाँक नेतृत्वमे दिल्लीसँ सेना पठाओल गेल। पहिल बेर तँ ओ सेना पराजित भऽ गेल मुदा दोसर बेर राघव सिंहक मदतिसँ वीरू पराजित भेल। राघव सिंहक अधिकार पुनः समस्त परगन्नापर भेलैन्ह परञ्च नाथपुर आ गोराड़ी हुनकासँ लकए पुर्णियाँक राजाकँ दऽ देल गेलैन्ह। राघव सिंह दानी आ उदार व्यक्ति छलाह आ बहुत रास मन्दिर इत्यादिक निर्माण सेहो करौने छलाह। हुनक दूटा शिलालेख उपलब्ध अछि–

*मधुरवाणीश्वर (परगन्ना हाटी)क शिलालेख–ॐ नमः शिवाय।*
*आसीन्नासीर दासी भवदरि निवह(:) क्ष्माभृतॉंकोऽपि धन्यः*
*पुण्य(:) श्री शालिखण्डोरय (मल) कव रसमाहुति वंशाग्रगण्यः॥*
*समस्तो यावदात स्फुरदमलयशोरा सिरस्वती कृतान्य–*
*स्त्रीकः श्रीकण्ठ भक्तिस्फुट घटितमतिस्तीरभुक्तिश्वरोयः॥*
*तस्य श्रीमन्नरपतिसिंहस्यासन् सुताः फलतपसः*
*श्रीमद् राघव सिंहो येषां ज्यायान्महाराजः॥*
*श्रीनन्द नन्दन इति प्रथितः पृथिव्यां।*
*सवस्वदोऽस्य नृपतेरभवतकनीयन्।*
*श्री भानुदग्र गुण ठाकुर सिंह नामा।*
*कामारिसक्त हृदयोऽवरजस्तदीयः॥*
*एतेषांतु विशेषज्ञा प्रज्ञावज्ञातधीरधीः।*
*स्वसामधुरवाणीति नामतोऽप्यर्थतोऽप्यभूतः॥*
*नखन वंशकवीर श्रीमद्धरिजीव शर्मणः कृतिनः।*
*कल्पमहीरूहदान प्रभृति महादान यायिनी दयिता॥*
*शाके लोचन वाण (१६५२) भूपति मते मास शुभे माघवे।*

*पक्षे स्वच्छ तरेऽधि पंचभि तिथौवाचस्पतेवसिरे॥*
*उन्मीलन्मदगण्ड मण्डलवलद्वेतण्ड वृन्देश्वरे।*
*श्रीमद् राघव सिंह नाम्नि मिथिला नाथे महीशासति॥*
*हुनकर दोसर शिलालेख लोहना गामसँ भेटल अछि–*
*ॐ स्वस्ति। श्रीमद् राघव सिंह वाहु विलंसज्जेत्रास्तविक्षोभित–*
*प्रोधद्धरै महीप संभव यशः शुभ्रीभवद् भुतले।*

*प्राज्ञ श्री बलभद्र वलितो यत्नेन शम्योरिदं गर्भागारम कारयद् दृढ़तरं निर्वाण संप्राप्तये॥ शाके वारण वेदराज कमिते राकेश्वरे भास्वरे पौषे मासि विलासि मोद रचिते कामान्वितायांति थौ।* शाके १६४८

राघव सिंहक बाद विष्णु सिंह शासक भेलाह। आ चार वर्ष धरि शासन कए ओ मरि गेलाह। हुनका बाद राजा नरेन्द्र सिंह राजा भेलाह। नरेन्द्र सिंहक शासन काल मिथिलामे बड़ड महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। ओ बड़ड वीर छलाह। हुनका सम्बन्धमे चन्दा झा लिखने छथि–

"*नृपति नरेन्द्र सिंह भेल जखन।*
*अरिधर कानन पसरल तखन॥*
*ताकि ताकि शत्रुक संघार।*
*कैलन्हि बहुत छात्र व्यवहार॥*
*कतहु जुद्धि नहि एला हारि।*
*अतिशय तेज तनिक तरूआरि*"॥

मुसलमानसँ जखन हिनका संघर्ष भेल छलन्हि तखन नरहनक बबुआन हिनका मदति केने छलथिन्ह। नरेन्द्र सिंह आ नरहनक बबुआनक बहादुरी देखि नवाव आश्चर्यचकित रहि गेल छलाह जकर स्पष्टीकरण निम्नलिखित पद्यसँ होइछ–

*"ऐसो महाघोर जोर जंग सुल्तानी*
*बीच झुकत बबरजंग संगर करीन्द्र हैं।*
*औलिया नवाव नामदार पूछै बार–बार।*
*ये दोनो कौन लड़त अरिवारण परीन्द्र हैं।*
*साहेब सुजान जैनुद्दिन अहमद खाँ सामनेयय*
*अजेकरत कहत कवि चन्द्र हैं।*
*ये तो द्रोणवारकैंशो साह के अजीत साह*
*आगे राघो सिंह जी के नवल नरेन्द्र हैं।*

हुनका समयमे बछौर परगन्ना लऽ कए पुनः झंझट ठाढ़ भेल। बछौरक रूपनारायण इ झंझट केने छलाह। नरेन्द्र सिंह नवाव महावत जंगक ओतए जाय मुर्शिदाबादमे अपन दावी रखलन्हि परञ्च नवाव हुनकासँ अनुरोध केलथिन्ह जे ओ बछौर परगन्ना रूपनारायणकेँ दऽ देथुन्ह। राजमहल धरि सब गोटए संगहि अबैत गेलाह आ ओतए पुनः नवाव हुनकासँ आग्रह केलथिन्ह तखन नरेन्द्र सिंह एहि शर्त्तपर देबा लेल तैयार भेलाह जे ओ हुनका (नरेन्द्र सिंहक) प्रति राजभक्त रहताह आ करहिया, चिचरी आ जयनगरपर ओ कोनो प्रकारक दावा नहि करताह कारण इ सब तिरहूत राजाक सम्पत्ति छल। राजा आ नवावमे बढ़िया सम्बन्ध छलन्हि। नरेन्द्र

सिंहकेँ जे सुविधा सरकार द्वारा भेटलैक तकर विवरण कम्पनीक कागज सबमे सेहो भेटइत अछि। कन्दर्पी घाटक लड़ाइक विवरण जे लाल कवि कएने छथि ताहिसँ ताहि दिनक मिथिला दरबारक ज्ञान होइछ। नरेन्द्र सिंह अपन पिताक स्मारककेँ चिरस्थायी बनेबाक कारणे सहरसा जिलामे राघवपुर (राघोपुर) नामक स्थानक स्थापना केलन्हि। मठक स्थापनाक हेतु कैक व्यक्तिकेँ दान देलन्हि। हुनक एकटा पत्नी महिषिक छलथिन्ह आ तिनके आग्रहपर ओ महिषिमे उग्रताराक मन्दिरक जीर्णोद्धार केलन्हि। हुनक दरबार विद्वानक हेतु एकटा बड़का आश्रय छल।

नरेन्द्र सिंहक पछाति प्रताप सिंह राजा भेलाह। ओ भनवारासँ राजधानी हटाके झंझारपुर अनलन्हि आ फेर ओतएसँ दरभंगा। स्थानीय परम्परामे हुनका **"मिथिलेश"** कहल गेल छन्हि। ताहि कालमे तिरहूतसँ बंगाल धरि चोर–डकैतक प्रभाव बढ़ि गेल छल आ कम्पनीक रेकार्डमे कहल गेल अछि जे प्रताप सिंह हिनका लोकनिकेँ मदति करैत छलाह। हिनका सजा देबाक बातपर सेहो विचार कैल गेल छल। दान देबामे इहो बड़ड उदार छलाह आ हिनक दानक कैकटा कागज सेहो भेटल अछि। हिनका समयमे फ्रान्सिस ग्रांड दरभंगा (तिरहूत)क कलक्टर छलाह। १७७४मे तिरहूतकेँ पटना प्रोविनसिअल कौंसिलक अंतर्गत कऽ देल गेल।

१७७१मे नेपालक पृथ्वीसिंह जे भारत सरकारसँ समझौता कए कर देबाक प्रतिज्ञा केलन्हि से कर भारत सरकारकेँ राजा प्रताप सिंहक माध्यमे पठाओल जाइत छलन्हि। १७७०मे राजा प्रताप सिंहकेँ वंसीटार्ट आ राजा सितावरायसँ तिरहूतक राज्य मुकर्ररी पट्टापर भेटल छलन्हि। ओहि वर्ष तिरहूतक हेतु इस्ट इण्डिया कम्पनी एकटा सुपरभाइजर सेहो बहाल केने छल। कर देबामे विलंब भेलाक कारण हिनका झंझटक सामना करए पड़लन्हि। खेआली राम आ हिम्मत अलीकेँ तिरहूतक आर्थिक हालत जाँच करबाक हेतु पठाओल गेलन्हि।

दरभंगाक राजधानी अनबाक सम्बन्धमे निम्नलिखित काव्य उल्लेखनीय अछि–

**दोहा–**

*"नृत्यत फणिन फणानंपर खंजन पाँखि पसारि*
*सो लाखि सब पूछत भऽये अद्भुत बात निहारि॥*
*पूछत भये नेरश तब सुनु सोति सब लोग*
*खंजन फणि पर शोभहिं थाको कौन संयोग"॥*

**कवित्त–**

कहत लगे है तब मंत्री प्रबल लोग सुनियं मिथिलेश जो ज्योतिषमे प्रमाण है। सरस है भूमि याको जीति न सकत कोउ वास करिबेकेँ यह विधिकेँ निशानि है॥ सुनिकेँ आनन्द उर उमगे उछाह बढ़िकेँ बोले महाराज ने सरस भरि वाणी है। हुकुम हमारी यह जाहिर जहान करो भौरा को छाड़ि यहाँ दरभंगा राजधानी है।

**दोहा–**

*राजधानी दरभंगा भऽ सकल गुणान खानि भौरा छाड़ि भूप तब सम्मत सबके जानि"॥*

विद्या प्रेमी हेबाक कारणे महाराज प्रताप सिंह आलापुर परगन्नाक जगतपुर ग्राम ओ पंडित भवानी नाथ शर्माकेँ दानमे दऽ देलैन्ह जाहिसँ ओ आन आर विद्यार्थीक खर्च चला सकैथ।

*"महाराजाधिराज श्रीमत प्रताप बहादुरः–*
*वंग देशाटनांतराभेक भूपाले दत्तानेक*
*वृत्तितरा स्वीकारक स्मार्ता धर्मज्ञ तर्क*
*मीमाँसा वेदांतालंकार कानन पञ्चानन*
*धर्मधीर श्री भवानीनाथ शर्मषु वृत्तिपत्रम*
*ददाति सकल छात्राध्ययन निर्वाहाय*
*सूर्य बिहार सरकार पटनाभ्यांतर्गत*
*तीरभुक्त देशांतर्गत परगन्ना आलापुर*
*अंतर्गत जगतपुर सारैण्यक ससीमक*
*सकाननक ग्रामस्य श्री विष्णु प्रीति*
*सम्पादनायच यवनायवन साधारण*
*स्वसपथपूर्वक वृत्ति रक्षणामेव करिष्यिति..."*

हुनका बाद राजा माधव सिंह गद्दीपर बैसलाह। ओ स्थायी रूपेण दरभंगाकेँ अपन राजधानी बनौलन्हि। १७८५सँ अद्यावधि हिनका लोकनिक राजधानी दरभंगा रहल अछि। खण्डवला कुलक इतिहासमे माधव सिंहक शासनकेँ बड़ड महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। ओ अपन प्राचीन परम्पराक अनुसार समस्त तिरहूतपर प्रभुत्वक माँग अंग्रेजक समक्ष रखने छलाह आ चिरस्थायी बन्दोबस्तकेँ मनबा लेल तैयार नहि छलाह। एहि हेतु ओ सम्राट शाह आलम द्वितीयक दरबारमे सेहो दरखास्त देने छलाह आ शाह आलमसँ १८०० ई.मे एकर स्वीकृति सेहो भेट गेल छलन्हि। परञ्च कम्पनीक अधिकारी लोकनि हिनक बात नहि सुनलकैन्ह आ नहि शाह आलमक स्वीकृतियेकेँ मानलकैन्ह आ हिनका लोकनिकेँ जमीन्दारक दर्जा दऽ देलकैन्ह आ तहिये इ राजा दरभंगाक जमीन्दारी कहबे लागल जे १९४७ तक रहल।

१७८१ खेआली राम राजा कल्याण सिंहक डिप्टी बहाल भेलाह। राजा कल्याण सिंहसँ राजा माधव सिंहकेँ सेहो मतभेद भेल छलन्हि। एम्हर जखन कल्याण सिंह से झंझटि चलिते छलन्हि कि तामे हुनका दरभंगा सदर दिवानीक अदालतक हाकिमसँ सेहो मतभेद शुरू भऽ गेलन्हि। हुनक आदमी सबकेँ गिरफ्तार कऽ लेल गेलन्हि। राय मोहन लाल आ माधव सिंहक बीच तँ झंझट चलिये रहल छलन्हि। १७८३मे डनकनक हस्तक्षेप हिनक मामला सरियेलन्हि। दोसर एकटा झंझट आ हुनका शासन कालमे उत्पन्न भेल। सरदार खान अफगानक बेटा कराम अली अपन मृत्युसँ पूर्व अपन सब सम्पत्ति राजा माधव सिंहकेँ दानमे लिखि देने छलथिन्ह। १७९५मे दरभंगाक कलक्टर, दरभंगाक तहसिलदारकेँ आदेश देलथिन्ह जे ओ कराम अलीक सम्पत्तिकेँ जप्त कऽ लौथ। राजा माधव सिंह एकर विरोध केलन्हि आ ओम्हर कराम अलीक भगिना सेहो एकटा दरखास्त देलक जे कराम अलीक दानपत्र जाली थिक। अंतमे माधव सिंहक जीत भेल आ ओ सम्पत्ति हुनका भेटलन्हि। माधव सिंह उदार आ दानी छलाहे आ बहुत रास मन्दिरक निर्माता सेहो।

१८म शताब्दीक उत्तरार्द्धमे समस्त पूर्वी भारतक स्थिति चिंतनीय भऽ गेल छल आ समस्त क्षेत्रमे सन्यासी फकीरक बगे बनाकेँ चौर–डकैत चारूकात उपद्रव करैत छलाह। हिनका सबकेँ संरक्षण आ प्रोत्साहन मोरंगक राजासँ भेटइत छलन्हि। मोरंग आ तिरहूतक सीमा मिलैत–जुलैत छल। सन्यासी–फकीरक नेता छलाह खुर्रम शाह

आ ओ ताहि दिन नेपालसँ मुक्त भऽ मोरंगक एकटा गाम मटिहानीमे रहैत छलाह। तिरहूतक सीमापर इ लोकनि आतंक मचौने छलाह।

१८०४मे परगन्ना छै आ फरकीयाक तिरहूतसँ अलग कऽ कए भागलपुरमे मिला देल गेलैक। माधव सिंहक समय धरि तिरहूत एक स्वायत्त हिन्दू राज्य छल जकर अपन न्यायालय छलैक आ अपन न्यायाधीश होइत छलैक। एकर सबसँ पैघ प्रमाण इ अछि १७९४ ई.क एकटा न्यायाधीशक निर्णय संस्कृतिमे भेटल अछि जाहिमे गुलामकन्याक उपर स्वत्वाधिकारक प्रश्नपर निर्णय अछि। एहि निर्णयकेँ बड़ा महत्वपूर्ण मानल गेल आ अठारहम शताब्दीक अन्तिम चरण धरि न्यायालयक निर्णय संस्कृतमे लिखल जाइत छल तकर इ प्रमाण थिक आ गुलामक स्थितिपर सेहो प्रकाश पड़इत अछि।

माधव सिंहक समयसँ दरभंगा राजक स्थिति पूर्णरूपेण जमीन्दारक स्थितिमे परिवर्त्तित भऽ गेल। माधव सिंहक पछाति छत्रसिंह महाराज भेलाह। १८१२क बाद जखन अंग्रेजकेँ नेपाल संग झंझटि भेलन्हि तखन ओ लोकनि बेतिया, पुर्णियाँ आ दरभंगाक राजा लोकनिकेँ आदेश देलन्हि जे अपन–अपन सीमाक सुरक्षार्थ ओ लोकनि प्रयत्नशील रहौथ। एहि अवसरपर छत्रसिंह अंग्रेज लोकनिकेँ साहाय्य देने छलथिन्ह। एकर कारण इ छल जे नेपाली सब तिरहूत क्षेत्रमे सेहो हुलकी–बुलकी दैत छल आ एम्हर–आम्हरसँ लूट पाट सेहो करैत छल। १८१५मे हुनका महाराज बहादुरक पदवी भेटलन्हि। छत्रसिंहक समयमे बेतिया राज आ तिरहूत राजक बीचक सम्बन्ध बढ़िया भऽ गेल छल। दुनू गोटेकेँ पटनाक पाटन देवीक मन्दिरमे भेट भेलापर स्थितिमे सुधार भेलैक। सौराठक मन्दिरकेँ छत्र सिंह पूरा करौलन्हि आ ओहिमे माधवेश्वर महादेवक स्थापना सेहो। सौराठमे ओ एकटा धर्मशाला सेहो बनबौलन्हि।

हुनका बाद महाराज रूद्र सिंह गद्दीपर बैसलाह। हुनका बाद राजा महेश्वर सिंह गद्दीपर बैसलाह। हुनके समयमे सिपाही विद्रोह भेल छल। अंग्रेजकेँ बरोबरि हिनकापर शक बनल रहैत छलन्हि। अंग्रेजक निगरानी हिनकापर रहैत रहैन्ह। नाथपुर आ पुर्णियाँक बीच डाकक व्यवस्थाक हेतु इ अंग्रेजी सरकारकेँ १६टा घोड़सवार सेहो देने रहैथ। संताल विद्रोहकेँ दबेबामे सेहो इ अंग्रेजक मदति केने रहैथ मुदा तैइयो अंग्रेजकेँ हिनकापर विश्वास नहि होइत छलन्हि। १८६०मे हिनका मरलाक बाद दरभंगा १८७८ धरि कोर्ट आफ वार्डसक अधीन रहल। ओकर बाद महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह राजगद्दीपर बैसलाह। ओ एक सफल शासक, कुशल प्रशासक, विद्या प्रेमी, विधायक आ राजनीतिज्ञ छलाह। हुनका समयमे दरभंगा राज्यक उत्तरोत्तर विकास भेल। दरभंगामे लेडी डफरिन अस्पतालक स्थापना आ खड़गपुर (मूंगेर)मे सेहो एकटा अस्पतालक स्थापना केलन्हि। काँग्रेसकेँ बरोबरि चन्दा दैत रहलाह। कलकत्ता विश्वविद्यालयकेँ ओ हृदय खोलिकेँ दान देलन्हि आ दरभंगामे राज स्कूलक स्थापना केँलन्हि। ताहि दिनमे ऐहेन कोनो शिक्षण संस्था नहि छल जहिमे मांगलापर अथवा बिनु मंगनो इ सहायता नहि देने होथि। १८८८मे काँग्रेसकेँ अधिवेशन करबा लेल इ **'लाउपर कास्त्ल'** प्रयागमे कीनिकेँ देने छलथिन्ह आ सालाना १०,००० टाका चंदा तँ दैते रहथिन्ह। महात्मा गाँधीसँ सेहो हिनका पत्राचार छलन्हि।

ताहि दिनक प्रधान व्यक्ति के. एम. बनर्जी, नरेन्द्र नाथ सेन, आनन्द मोहन वोस, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, आदिसँ हिनका व्यक्तिगत सम्बन्ध छलन्हि। लेजिसलेटिभ कौंसिलक सेहो इ एकटा प्रमुख सदस्य छलाह आ ओहिमे सक्रिय भाग लैत छलाह। ओ बिहार जमीन्दार सभक सभापति छलाह। ओ एक पैघ पुस्तक प्रेमी सेहो छलाह।

हुनका बाद महाराज रामेश्वर सिंह गद्दीपर बैसलाह। ओ बहुत पैघ विद्वान छलाह आ किछु दिनक हेतु मैजिस्ट्रेटक पदपर सेहो नियुक्त भेल छलाह। दरभंगा, छपरा आ भागलपुरमे ओ मैजिस्ट्रेट रहल छलाह। पाछाँ ओहिसँ त्यागपत्र दए ओ लेजिस लेटिभ कौंसिलक सदस्य बनलाह। लक्ष्मीश्वर सिंहक अमल ओ राजनगरमे रहैत छलाह। ओ सरकारक खैरखाह छलाह आ अंग्रेजक संग हिनक सम्बन्ध बढ़िया छलन्हि। सनातन धर्म सभाक ओ सर्वेसर्वा छलाह। ओ बिहार जमीन्दार सभाक आजीवन सभापति रहलाह। ओ एक धार्मिक व्यक्ति छलाह। हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनामे हुनक विशेष योगदान छलन्हि। हिनके प्रयासे बिहारमे संस्कृत एशोसियेसनक स्थापना भेल छल।

हिनका बाद १९२९मे महाराज कामेश्वर सिंह गद्दीपर बैसलाह। गद्दीपर बैसितहि ओ राजनगर अपन छोट भाए कुमार साहेबकेँ दऽ देलन्हि। इ राउण्ड टेबिल कंफ्रेंसमे भाग लेने छलाह। जमीन्दार सभाक सभापति इहो बनल रहलाह। १९४७मे जमीन्दार उन्मूलन भेलाक बाद आन जमीन्दारी जकाँ दरभंगा राज्यक जमीन्दारी सेहो समाप्त भऽ गेल। पटना विश्वविद्यालयमे रामेश्वर सिंह मैथिली चेयरक हेतु इ १,२०,००० टाका दान देने छलाह। संस्कृत एशोसियेसनक सभापति इ बनल रहलाह आ अंतमे अपन **"आनन्दवाग पैलेस"**केँ संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु दानमे देलन्हि। संस्कृत एशोसियेसनकेँ **"मिथिलेश महेश" लेक्चररशिप**क हेतु सेहो दान देने छलाह। दरभंगामे **मिथिला रिसर्च इंस्टीच्युट**क स्थापना हिनके दानस्वरूप सम्भव भेल। विभिन्न विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आ स्कूलकेँ दान देवाक अतिरिक्त, इ पटनामे **'इंडियन नेशन, 'आर्यावर्त्त'** आ **'मिथिला मिहिर'** पत्र–पत्रिकाक स्थापना सेहो केलन्हि। राज कम्पाउंडक आधुनिकीकरण हिनके समएमे भेल। **'दरभंगा इम्प्रूभमेंट ट्रस्ट'**क स्थापना हिनके प्रयासे भेल छल। आधुनिकीकरण १, १९६२केँ हिनक मृत्यु भेलन्हि आ खण्डक्टवला कुलक परम्पराक सूर्यास्त ओहि दिन भेल। हुनकासँ तीन वर्ष पूर्वहिं हुनक छोट भाए (कुमार साहेब)क मृत्यु भऽ चुकल छलन्हि जाहिसँ ओ बड़ड दुखी रहैत छलाह। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहकेँ कोनो संतान नहि छलन्हि आ तैं ओ अपना मरबासँ पूर्व एकटा **"विल"** बना देने छलाह जकर एक्जीक्युटर भेला पटना उच्च न्यायालयक भूतपूर्व न्यायाधीश पंडित लक्ष्मीकांत झा जे सम्प्रति काज कऽ रहल छथि। राजा बहादुर विशेश्वर सिंह (कुमार साहेब)क तीनटा पुत्र छथिन्ह कुमार जीवेश्वर सिंह, कुमार यज्ञेश्वर सिंह आ कुमार शुभेश्वर सिंह। अहिमे कुमार शुभेश्वर सिंह अपन पित्तीक परम्पराक निर्वाह करबाक प्रयासमे प्रयत्नशील छथि आ सभ तरहे सामाजिक आ सांस्कृतिक कार्यमे भाग लैत छथि। महेश ठाकुरक स्थापित खण्डवला कुलक इतिहास मिथिलामे ओतवे महत्वपूर्ण जतवा कर्णाट वंशक आ ओइनवार वंशक। अहि तीनू वंशमे सभसँ बेसी दिन शासन केलन्हि खण्डवला कुलक लोग। (*खण्डवलाक इतिहासक हेतु देखु हमर निबन्ध*– ***"द खण्डवलाज आफ मिथिला" जाहिमे माधव सिंह धरि पूर्ण विवरण उपलब्ध अछि।***)

अध्याय–१०

# मिथिला आ नेपाल

नेपाल शब्दक उद्‌गम एखन धरि रहस्यमय अछि। अति प्राचीन कालसँ नेपालक इतिहास मिथिलाक इतिहास संग निकटतम रूपें संबंधित अछि। मिथिला एहेन स्थान रहल अछि जाहिठाम नाना प्रकारक धार्मिक आन्दोलन एवँ दर्शनक उत्पत्ति भेल छैक आ नेपाल ओहि आन्दोलन सबकेँ उर्वरा शक्ति देलकै जाहिसँ वो आन्दोलन सब पुष्पित वो फलदायक भेल। नेपालमे आर्यत्वक विकास मिथिले बाटे भेलैक। एहिठाम हम मिथिला आ नेपालक मात्र राजनैतिक सम्बन्धक चर्चा करब।

**किरातः-** भूतकालक कुहेसक मध्य नेपालक प्रारंभिक इतिहासक विषयमे किछु विशेष ज्ञात नहि अछि। ई.पू. ५९०सँ ११०ई. धरि नेपाल किरात संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल। किरातक वर्णन शुक्ल यजुर्वेदमे आएल छैक। इहो कहल जाइत छैक जे अति प्राचीन कालसँ किरात लोकनि पूर्वी नेपालमे रहैत जाइत छलाह। **'किराते'** शब्द जंगली अनार्य जातिकेँ सूचित करैछ जे पहाड़पर एवँ भारतक उत्तरपूर्वी भागमे रहैत छलाह। सिल्वाँ लेवीक विचार छन्हि जे किरातक उत्पत्ति मंगोलसँ भेल छल आ दुनू एक्के छलाह। महाभारतसँ ज्ञात होइछ जे जखन अर्जुन हिमालयमे तपस्या करैत छलाह तखन महादेव किरातक भेषमे अर्जुनक परीक्षा लेने छलाह। महाभारतक वनपर्वमे एकटा किरातपर्व सेहो अछि आ यजुर्वेद शतरूद्रीयसँ सेहो एहिपर प्रकाश पड़इयै। भारतक उत्तरी पूर्वी सीमा सेहो किरात संस्कृतिसँ सम्बन्धित छल। ओ सब पूर्वी हिमालयक वासी छलाह। अपन दिग्विजयक क्रममे भीमकेँ विदेह देश छोड़लाक पश्चात किरात सबसँ भेंट भेल छलन्हि। किरात लोकनि पीअर रंगक होइत छलाह। लेवीक अनुसार किरातक सम्पर्क चीन आ म्लेच्छसँ सेहो छलन्हि। रामायणसँ सेहो प्रमाणित अछि जे किरात लोकनि पीअर रंगक होइत छलाह। **विष्णु पुराण** एवँ **मार्कण्डे पुराण**सँ ज्ञात होइछ जे इ लोकनि पूर्वी भारतमे रहैत छलाह। वो हिमालयक दक्षिणी मार्गपर सम्पूर्ण उत्तर–पूर्वी भारतमे, नेपालसँ सटले उत्तरी बिहारमे आ गंगाक उत्तरी भागमे बसि गेल छलाह। इ उएह प्रदेश छल जाहि मध्यसँ चीनक व्यापार भारतक गंगावर्ती धरातलसँ होइत छलैक। नेपाल–मिथिलाक संस्कृतिक इतिहासमे हिनका लोकनिक महत्वपूर्ण स्थान छैक। प्रारंभमे संभवतः किरात लोकनि नेपालक स्थानीय राजवंशी छलाह।

नेपालपर किरात लोकनिक राज्य बहुत दिन धरि छलन्हि। वो लोकनि ई.पू. ६००सँ संभवतः नेपालपर राज्य करैत छलाह। हिन्दू संस्कृतिक विकासमे वो नेपालमे भारतीय मंगोलियनक प्रमुखताक हेतु सब पृष्ठाधार बनौलन्हि। प्रायः ई.पू.३१२मे जखन संभूत विजय मरि गेला तखन जैन धर्मावम्बीमे विभाजन भेल आ तकर पश्चात उत्तर भारतमे बारह वर्ष धरि अकाल रहलैक। भद्रवाहु नामक एक जैन साधु अकाल भेलापर दक्षिण दिसि चल गेला आ अकाल समाप्त भेलापर घुरला। जैन धर्मसँ छुटकारा लए ओ अपन शेष जीवन व्यतीत करबाक हेतु नेपाल चल गेला। जैनी सबहक जुटान पटनामे भेल आ हुनका तकबाक हेतु स्थूलभद्र नेपाल गेला आ ओतए

हुनकासँ चौदह पर्व पओलन्हि। गौतम बुद्धक जन्म तँ नेपाल क्षेत्रमे भेल परञ्च ओ नेपाल भ्रमण केने छलाह अथवा नहि से कहब कठिन। अशोकक प्रयाससँ नेपालमे बौद्ध धर्मक प्रसार भेल। कहल जाइछ जे कौटिल्यकेँ सेहो नेपालक पूर्ण ज्ञान छलन्हि। अशोकक समकालीन नेपालमे छलाह स्थुमिको। नेपाल उनक हेतु विशेष प्रसिद्ध छल। लुम्बिनीमे अशोक ४८ गोट स्तूपक निर्माण करौने छलाह आ स्थुमिकोक शासन कालमे वो स्वयं नेपालो गेल छलाह। अशोकक समयमे नेपालक शासन किरात लोकनिक हाथमे छलैक। अशोकक पुत्री आ जमाय नेपालमे छलाह। अशोकक बादो दशरथक प्रभाव नेपालमे बनल छलैक। नेपाल आ मिथिलाक सम्पर्क मौर्य साम्राज्यक ह्रासक समय धरि बनल छलैक। शूंग कालक मुद्रा पश्चिमी नेपालसँ प्राप्त भेल अछि जाहि आधारपर इ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे शुंग लोकनिक एक प्रकारक दुर्बल नियंत्रण नेपालपर छलन्हि। कुषाण लोकनिक शासन चम्पारण धरि छल आ तिरहूतोपर हुनका लोकनिक प्रभाव छलन्हि। नेपालपर कुषाण शासन हेबाक समर्थन स्वर्गीय जायसवाल महोदय केने छथि। कुषाण मुद्राक पता काठमाण्डु लग सेहो लगलैक अछि तैं जायसवाल महोदयक विचारकेँ मान्यता भेटइत छैक। **'रधिया'** नामक ग्रामसँ सेहो कतेक रास ताँमाक मुद्रा विम कैडफिसेज आ कनिष्कक भेटल छैक आ जँ एहि प्रमाणपर किछुओ विश्वास कैल जाइक तँ कुषाण शासनक प्रमाण सिद्ध होइत छैक।

कैक शताब्दी धरि नेपालपर शासन करैत काल किरात सबकेँ जखन–तखन अनायास विड़रो सबसँ संघर्ष करए पड़लन्हि। राजनैतिक अस्थायित्वक रहितहुँ ओ सांस्कृतिक जीवन आ राजनीतिक नियमक स्थापनामे बहुत किछु केलन्हि। किछु विद्वानक मत छन्हि जे **इण्डो मंगोलाइड** सब सर्वप्रथम भारतपर शासन केलन्हि आ तब नेपाल गेला। सुसंस्कृत **इण्डो मंगोलाइड**क रूपमे नेपालक नेवारक उल्लेख भेल छैक। नेवार लोकनि प्रायः ई.पू. तेसर शताब्दीमे एला। ताधरि अशोक पाटनमे बहुत रास बौद्ध चैत्यक निर्माण कऽ चुकल छलाह। तहियासँ ओहि क्षेत्रमे बौद्ध धर्मक प्रसार बनले रहल आ बादमे महायान सम्प्रदायक पद्धति ओ विचार सेहो बिहारेसँ ओतए गेल। ओहिठामक शैव, शक्ति आ वैष्णव धर्मक सम्बन्धमे सेहो इएह कहल जा सकैत अछि। इ सभ आंशिक रूपमे उत्तरी बिहारक आरंभक मंगोलाइडक प्रतिक्रिया स्वरूप छल। आर्यीकरणक पूर्व मिथिला सेहो किरात संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल। **इण्डो मंगोलाइड** एकटा सामूहिक संस्कृतिक विकासमे पैघ योगदान देलन्हि।

११०ई.क आसपास किरात वंशक अंत नेपालमे भेल आ तखनसँ लऽ कए २०५ ई. धरि नेपालक इतिहास अन्धकारपूर्ण अछि। एहि बीच कोनो लिखित प्रमाण नहि भेटइयै। गुणाढ्यक **'बृहत्कथा'**मे नेपाल देशक शिव नामक नगरमे राजा यशकेतुक शासन करबाक उल्लेख भेटइयै। कखन आ कोन प्रकारे किरात लोकनिक ह्रास भेल से हमरा लोकनि नहि जनैत छी आ ने तकर कोनो ठोस सबुते भेटइत अछि। इहो कहल जाइत अछि जे **'निमिष'** नामक एक गोट राजा नेपालमे विजय प्राप्त केने छलाह आ निमिष राजवंश करीब १४५ वर्ष धरि ओतए शासन केने छलाह आ एहि वंशमे पाँच गोट राजा भेल छलाह– निमिष मनाक्ष, काकवर्मन, पशुप्रेक्ष देव, आ भास्कर वर्मन। एहि राजवंशक समयमे आर्य लोकनिकेँ नेपालमे शरण भेटलन्हि। पशुप्रेक्ष देव नेपालमे पशुपतिनाथक मन्दिरक स्थापना केलन्हि आ भारतसँ आर्यसबकेँ अनलन्हि। एकर बाद नेपालमे लिच्छवी वंशक शासन शुरू होइत अछि।

**लिच्छवी वंशक इतिहास**:- लिच्छवीक सम्बन्ध मनु लिखैत छथि–

*"द्विजातयः सर्वणासु जनयन्त्य व्रतांस्तुयान्।*
*तांसावित्री परिभ्रष्टान् व्रात्यानितिविनिर्हिशेत्॥*
*व्रात्यातु जायते विप्रात्पापात्मा भूजकण्टकः।*
*आवंत्यवाट धानौच पुष्पधः शैख एवचः॥*
*झल्लोमल्लश्च राजन्यांद व्रात्यन्निच्छिविरेवच।*
*नरश्य करणश्चैव खसौं द्रविड़ एवच"॥*

(एहि सम्बन्धमे देखु हमर **"व्रात्यज इन एंसियेंट इण्डिया"**)

लिच्छवी लोकनिक सम्बन्ध नेपालसँ बड़ड घनिष्ठ छलैक। किछु विद्वानक विचार छन्हि जे इहो लोकनि मंगोलाइडसँ उद्‌भूत छलाह। नेपालक मल्ल, खस आदिक कोटिमे मनु लिच्छवी (निच्छवी)कँ रखने छथि। लिच्छवी लोकनिक प्रभाव मिथिलामे अत्यधिक विकसित छलैक आ ओतहिसँ इ लोकनि नेपाल धरि अपन शक्तिक प्रसार केलन्हि। नेपालमे किरात शासनक अवसान भेलापर सोमवंशी एवँ सूर्यवंशी लोकनिक शासनक संदिग्ध प्रमाण अछि। **निमिष वंश**कँ सोमवंशी कहल गेल अछि आ ओकर बादे सूर्यवंशी राज्यक स्थापना भेल।

लिच्छवी लोकनि निमिष वंशकँ उखाड़ि फेकलन्हि आ तकर बाद लगभग ५००वर्ष धरि नेपालपर शासन केलन्हि। नेपाली संवत जे ११११ई.सँ आरंभ छैक सैह संभवतः लिच्छवी लोकनिक राज्यारोहणक संकेत दैत अछि। ओहुना अखन इएह मान्य अछि जे लिच्छवी लोकनि नेपालमे इस्वी सन् प्रथम शताब्दीक समीप अपन साम्राज्यक स्थापना केने छलाह आ अपन संवतक प्रारंभ सेहो। सूर्यवंशी शासनक स्थापनाक पश्चाते नेपालमे यथार्थ एतिहासिक कालक प्रारंभ मानल जाइत अछि। दुनू राजवंश मिथिलासँ आएल छल एहि सब राजवंशक समयमे नेपाल आ मिथिला नियमित रूपें राजनैतिक आ साँस्कृतिक सन्दर्भ बनल रहलैक। प्रथम ऐतिहासिक राजा भेलाह जयदेव। हुनका आ जयदेव द्वितीयक बीचमे 33टा राजा भेल छलाह।

समुद्रगुप्तक समयमे नेपाल गुप्त साम्राज्यक चाङ्गुरमे पड़ल छल। प्रयाग प्रशस्तिसँ एकर स्पष्टीकरण होइछ– नेपालक सीमांत शासकक सेवा प्राप्त करबाक संदर्भ अछि। सूर्यवंशी लिच्छवी कोनो शासक नेपालमे तखन रहल होएताह जनिका हेतु **"प्रत्यन्त नेपाल नृपति"** शब्दक व्यवहार कैल गेल अछि। मिथिलासँ नेपाल धरि तखन लिच्छवी लोकनिक विस्तार छलन्हि आ समुद्रगुप्त लिच्छवी दौहित्र छलाह तैं एहि घटनाकँ मात्र घरेलु घटना मानल जा सकइयै। एहि युगमे नेपालमे वैष्णववादक प्रवेश भेल। मान देवक चंगुनारायण मन्दिरक शिलालेख एवँ आन–आन शिलालेखसँ इ ज्ञात होइछ जे लिच्छवी राजा लोकनि बौद्ध धर्म, ब्राह्मण धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म, शाक्त आदि सबकँ प्रोत्साहन दैत छलाह। नरेन्द्र देवक शासन कालमे मत्स्येन्द्र नाथ नामक संप्रदायक प्रचलन भेल। लिच्छवीक समयमे महायान शाखा सेहो अपन आकार ग्रहण केलक। लिच्छवी लोकनि ३५०सँ ८९९ धरि शासन केलन्हि–बीचमे मात्र अंशुवर्मन आ जिश्नुगुप्त छोड़िकँ जे स्वतंत्र शासन केने छलाह।

**अंशुवर्मन**:- महासामंत अंशुवर्मन सातम शताब्दीक पूर्वार्द्धक एकटा महत्वपूर्ण शासक भेल छथि। वो अपनाकँ महासामंत कहने छथि। वो बेश शक्तिशाली शासक छलाह आ तराइ राज्यक विशिष्ट भागकँ अपना राज्यमे मिला लेने छलाह। अपन राज्यक विस्तार ओ बेतिया धरि कऽ लेने छलाह जतए हुनक साम्राज्यक सीमा हर्षक

साम्राज्यसँ मिलैत छल। प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य चन्द्रवर्मन एवँ नालन्दा विश्वविद्यालयक प्रसिद्ध शिक्षक अंशुवर्मनक दरबारक शोभा बढ़ौने रहथिन्ह। अंशुवर्मन जाहि नेपाल राज्यक स्थापना केलन्हि ताहि परम्पराकेँ जिश्नुगुप्त रखलन्हि आ बढ़ौलन्हि। ६४३मे अंशुवर्मनक मृत्युक पश्चात नरेन्द्र देवक नेतृत्वमे नेपालमे लिच्छवी शासनक पुनर्जन्म भेलैक।

लिच्छवी शासन नेपालमे किछु अवधि धरि रहलैक एकर प्रमाण हमरा **मंजूश्री मूलकल्प**सँ भेटइत अछि–

*"भविष्यति तदाकाले उत्तरां दिशिमाश्रृतः।*
*नेपाल मण्डले ख्याते हिमाद्रे कुक्षिमाश्रिते॥*
*राजा **मानवेन्द्रस्तु** लिच्छवीनां कुलोद्भवः।*
*सोऽपि मंत्रार्थ सिद्धस्तु महाभोगी भविष्यति॥*

**पतनक कारण–**

*"उदयः जिहनुनोह्यंते म्लेच्छानां विविधास्तथा।*
*अभ्योधे भ्रष्ट मर्यादा बहिः प्राज्ञोपभोजिनः॥*
*शस्त्र सम्पात विध्वस्ता नेपालाधिपतिस्तदा।*
*विद्या लुप्ता लुप्तराजानो म्लेच्छ तस्कर सेविनः"॥*

(राहुलजी द्वारा सम्पादित)

मानदेव लिच्छवी छलाह आ तकर बादो कैकटा लिच्छवी शासक भेलाह। लिच्छवी शासनक प्रसंगक उल्लेख हियुएन संग सेहो केने छथि। अंशुवर्मन **'महासामंत'** कहबै छथि जाहिसँ मान होइयै जे जो ६३३ई.धरि लिच्छवी राजाक प्रभुत्वक स्वीकार करैत छलाह। नेपालक वैवाहिक सम्बन्ध सेहो बिहारसँ चलैत छल। सोमदेवक विवाह मौखरी भोगवर्मनक पुत्री ओ आदित्य सेनक प्रपौत्री वत्स देवीसँ भेल छलन्हि।

**अहीर:- मंजूश्री मूलकल्प**मे मानदेव द्वितीयक पश्चात राज विप्लवक वर्णन भेटइयै जाहिसँ ज्ञात होइछ जे नेपालमे गोलमाल भेल छल। अहीर लोकनिक आक्रमणसँ नेपाल आक्रांत छल। वंशावलीक अनुसार वो लोकनि भारतक समतलसँ आएल अहीर छलाह। हिनका लोकनि अहीरगुप्त सेहो कहल गेल छन्हि। ५००सँ ५९०क बीच एहिमे पाँचटा शासक भेलाह जाहिमे परमगुप्त पराक्रमी छलाह आ ओ लिच्छवी लोकनिकेँ शिकस्त केने छलाह। हुनक एकटा पौत्र सिमरौनगढ़मे शासन करैत छलाह। ओहि राजवंशक दोसर शाखा तराइमे शासन करैत छल। जयगुप्त द्वितीयक मुद्रा चम्पारण आ मगधमे भेटल अछि।

६४३–४४मे जिश्नुगुप्तक पश्चात अहीरवंश दू भागमे बटि गेल छल आ लिच्छवी लोकनि पुनः अपन राज्यकक स्थापना कऽ लेने छलाह। तकर बाद नेपालकेँ तिब्बतमे मिलि जेबाक संभावना बुझि पड़इयै आ **मंजूश्री मूलकल्प**मे एकर अप्रत्यक्ष प्रमाण अछि। इ उएह समय छल जखन तिब्बती राजा चीनी राजदूतकेँ तिरहूतपर आक्रमण करबाक हेतु साहाय्य देने रहथिन्ह आ संभव जे ओहिक्रममे नेपालपर तिब्बती प्रभाव बढ़ि गेल हो। **मंजूश्री मूलकल्प**सँ ज्ञात होइत अछि नेपाल शासन अन्यायी म्लेच्छपर निर्भर रहए लागल छल तथा राज्यक प्रथा समाप्त भऽ गेल छलैक। तिब्बती शासक श्रॉंगक विवाह अंशुवर्मनक बेटीसँ भेल छलैक। ७०३क बाद नेपाल विदेशी शासनसँ

मुक्ति पेवाक हेतु माथ उठौलक। धर्मदेवक पुत्र मानदेव तृतीय विजयक चारिटा स्तंभ निर्मित केने छलाह। लिच्छवी लोकनिक पुनरागमनसँ नेपालक सवतोमुखी विकास भेल। ७०५ ई. मानदेव तृतीयक चंगुनारायण अभिलेखसँ ज्ञात होइछ जे ओ मल्ल सबहिक संग युद्ध कएने छलाह आ गण्डक धरि पहुँचि गेल छलाह। स्वंयभुनाथ शिलालेखसँ तत्कालीन संविधानपर सेहो प्रकाश पड़इत अछि। एहिठाम इ स्मरणीय थिक जे नेपालक लिच्छवी बरोबरि मिथिलासँ सम्पर्क बनौने रखैत छलाह। शिवदेवक विवाह आदित्यसेनक पौत्रीसँ छलन्हि। शिवदेवक पश्चात जयदेव गद्दीपर बैसलाह आ हुनक पदवी छलन्हि **'परचक्रकाम'**। जयदेव शक्तिशाली शासक छलाह। शिवदेव अपना शिलालेखमे अपनाकेँ–**"भट्टारक महाराज लिच्छवी कुलकेतु"** कहने छथि। जयदेवकेँ कश्मीर धरि विजयक श्रेय देल जाइत छन्हि। जयदेव मिथिलाक सीमा धरि अपन राज्यक विस्तार केने छलाह आ हुनक सम्पर्क पाटलिपुत्र आ गौड़सँ सेहो बढ़िया छलन्हि। ८७९–८८०मे राघव देव नेपालक संवत चलौलन्हि मुदा हिनका जयदेवसँ कोन सम्बन्ध छलन्हि से हमरा लोकनि नहि जनैत छी।

लिच्छवीक पश्चात नेपालक ठाकुरी राजवंशक सम्पर्क अपना सबहिक क्षेत्रसँ बढ़िया छलैक। नेपालमे महायानक प्रधानता छल आ ओहिठामक विद्यार्थी नालंदा (आ बादमे विक्रमशिला)मे पढ़बाक हेतु अबैत छलाह। पालवंशक समयमे इ सम्बन्ध आ घनिष्ट भऽ गेल। रमेश चन्द्र मजुमदारक मत छन्हि जे इमादपुर (मुजफ्फरपुर)मे जे पाल अभिलेख भेटल अछि ताहिपर जे संवत ४८ पढ़ल गेल अछि से भ्रामक अछि आ ओकरा नेपाली (नेवारी) संवत–१४८ बुझबाक थिक जे १०४८ई.क बरोबरि होइत अछि आ जखन मिथिलापर महिपाल प्रथम शासन करैत छलाह। सब तथ्यक स्पष्ट अध्ययन केला उत्तर हुनक मंतव्य छन्हि जे मूर्तिक समर्पित केनिहार व्यक्ति नेपाल वासी रहल होएताह आ तैं ओ नेवारी संवतक व्यवहार कएने छथि। १०३८मे नेपाली लोकनि मिथिला बाटे विक्रमशिला गेल छलाह आ ओतएसँ अतीश दीपंकरकेँ लऽ कए तिब्बत घुरल छलाह। अतीशक नेपाल पहुँचलाक बाद नेपाली महायानमे तंत्रक प्रवेश भेलैक। एग्यारहम शताब्दीमे नेपाल आंतरिक रूपें बटि गेल तीन राज्यमे–पाटन, काठमाण्डु आ भातगाँव आ ओहिठाम केन्द्रीय सत्ताक सर्वथा अभाव भऽ गेल आ एहिसँ लाभ उठाकेँ विभिन्न राज्यक आक्रमण नेपालपर शुरू भऽ गेलैक। चालूक्य, कलचुरी, यादव, जैतुंगी आदिक शिलालेखसँ ज्ञात होइछ जे इ सब नेपालपर आक्रमण कएने छलाह। एहि स्थितिसँ लाभ उठाए नान्यदेव सेहो नेपालपर आक्रमण केलन्हि। नान्यदेव नेपालपर मिथिलाक आधिपत्य स्थापित करबामे समर्थ भेलाह। राजकरैत शासक सबकेँ पदच्युत कऽ ओ अपन राजधानी भातगाँवमे बनौलन्हि। नेपाली परम्पराक अनुसार वो काठमाण्डुक जगदेव मल्ल एवँ पाटन–भातगाँवक आनंद मल्लकेँ बन्दी बनौलन्हि आ जे सब हिनक प्रभुत्व स्वीकार केलन्हि हुनका इ माफ कऽ देलथिन्ह। नेपालमे नान्यदेवकेँ कहियो चैन नहि भेटलन्हि आ बरोबरि किछु ने किछु खटपट होइते रहलैन्ह। एकमत इहो अछि जे नान्यदेवकेँ पुनः दोसर बेर (११४१मे) नेपालपर आक्रमण करए पड़लन्हि। नान्यदेवक प्रभुत्व तँ नेपालपर बनल रहलैन्ह मुदा हुनक उत्तराधिकारी लोकनि ओकरा रखबामे समर्थ भेलाह कि नहि से एकटा संदिग्ध विषय। परम्परानुसार नान्यदेवक एकटा पुत्र नेपालपर शासन करैत छलाह। संभवतः मल्लदेव एहिठामक शासक छलाह आ भीठ भगवानपुर धरि हिनक राज्यक प्रसार छल। नरसिंह देवक समयमे मिथिला आ नेपालमे फेर खटपट भेलैक आ दुनू राज्य अलग भऽ गेल। मिथिलासँ नेपाल पृथक भऽ गेल। नान्यदेवक बादहिसँ नेपालमे

कर्णाट शासन दुर्बल भऽ गेल छलैक आ नेपालमे कर्णाट शासनकेँ ठाकुरी राजा लोकनि उखाड़ि फेकने छलाह। एहि आस पासमे नेपालमे मल्ल लोकनिक उत्थान सेहो देखबामे अवइयै। इ वंश अरि मल्लदेवसँ शुरू होइछ। नीलग्रीव स्तंभ अभिलेखसँ ज्ञात होइछ जे धर्ममल्ल आ रूपमल्ल नेपालक मल्ल लोकनिक पूर्वज छलाह। एहि वंशक प्रमुख शासक छलाह अरि मल्लदेव।

मल्ल लोकनिक प्रभुत्वक कालमे मिथिलाक मंत्री चण्डेश्वर नेपालपर आक्रमण केलन्हि आ नेपालक राजाकेँ पराजित केलन्हि। चण्डेश्वरक **'कृत्य रत्नाकर'**मे सेहो एकर विवरण अछि। वाग्मतीक तटपर एहि उपलक्ष्यमे तुलापुरूष दानक उल्लेख सेहो अछि। १३१४मे नेपालपर दक्षिणसँ (मिथिला) चढ़ाइक प्रमाण स्पष्ट अछि। हरिसिंह देव पराजित भेला उत्तर नेपाल गेला आ नेपाली शासक बिना प्रतिरोध आत्मसमर्पण कऽ देलकन्हि। हरिसिंह देव भातगाँवमे सूर्यवंशी राजवंशक परिपाटी स्थापित केलन्हि। ओ अपन शक्तिकेँ नेपालमे पुनः संगठित केलन्हि आ कर्णाट प्रभुत्वक स्थापना सेहो। भातगाँवसँ ओ शासन करैत छलाह आ ओतहि ओ तुलजादेवीक मन्दिरक स्थापना केलन्हि। नेपालमे हुनक सार्वभौम होएबाक निम्नलिखित अभिलेखसँ स्पष्ट अछि–

*"जातः श्रीहरिसिंह देव नृपति प्रौढ़ प्रतापोरयः।*
*तद्वंर्श विमले महारिपुहरे गाम्भीर्यरत्नाकरः॥*
*कर्त्तायिः सरसामुपेत्य मिथिलां संलक्ष्य लक्षप्रियो।*
*नेपाले पुनरोद्य वैभवयुते स्थैर्यं विधते चिरम्॥*

हरिसिंह देवक नेपाल आक्रमणक प्रश्नपर इतिहासकारक मध्य काफी मतभेद अछि। लुसिआनो पेतेकक विचार छन्हि जे मल्ल लोकनि स्वतंत्र छलाह आ अपनाकेँ महाराजिधराज परमेश्वर परमभट्टारक कहैत छलाह जाहिसँ इ भान होइछ जे हुनका लोकनिपर कोनो विदेशी सत्ताक शासन नहि छलन्हि। मिथिलापर चण्डेश्वर द्वारा आक्रमणक बातकेँ ओ मनैत छथि परञ्च ओ इहो कहैत छथि जे ओहि आक्रमणक फले मिथिलाक आधिपत्य नेपालपर नहि भेलैक। मिथिलासँ भागलापर ओ नेपालमे अपन राज्य बनौलन्हि तकरा वो नहि मनैत छथि। एकटा वंशावली पोथीक आधारपर इहो सिद्ध कएने छथि जे हरिसिंह देव नेपाल पहुँचलाक बाद मरि गेला आ रजगाँवक माँझी भारो हुनक पुत्रकेँ गिरफ्तार कए बंदी बना लेलकन्हि आ धन–वित्त छीनि लेलकन्हि। एवँ प्रकारे हरिसिंह देवक वंश एहिठाम समाप्त भऽ गेलैन्ह।

लुसिआनो पेतेकक मतकेँ हम ओहिना राखि देने छी जेना वो लिखने छथि। इहो कहल जाइत अछि जे ओहि समयमे पश्चिमी नेपालसँ आदित्यमल्लक आक्रमण सेहो भेल छल। तिरहुतिया जगतसिंह सेहो किछु दिनक हेतु नेपालमे राज्य केने छलाह। एक विद्वानक अनुसार हरिसिंह देवक परिवार एवँ हुनक उत्तराधिकारी हुनका बादो नेपालपर शासन केलक। उत्तराधिकारी लोकनिक नाम एवँप्रकारे अछि–

**i. मतिसिंह–(१३१५–६९)–** सिमरौनगढ़क राजगद्दीपर सेहो राज्य केलन्हि आ नेपालपर सेहो। चीनक सम्राट सिमरौनगढ़ शासककेँ मान्यता दैत छलथिन्ह। शमशुद्दीन इलियास जखन नेपालपर आक्रमण करबाक हेतु बढ़लाह तखन ओ सिमरौन गढ़क शासककेँ सेहो परास्त केलन्हि आ ओहि बाटे नेपाल गेलाह। मतिसिंहक नामपर मोतिहारी अछि।

**ii. शक्ति सिंह**

**iii. श्यामसिंह–** हिनका कोनो पुत्र नहि भेल आ हुनक पुत्रीक विवाह मल्लवंशक राजकुमारसँ भेल। मतिसिंहक ओतए चीनक दूत आएल छल। चीनक सम्राटक ओहिठामसँ एकटा मोहर सेहो आएल छलैक आ शक्तिसिंहक ओहिठाम सेहो एकटा चीनी सम्राटक मोहर आ पत्र आएल छलैक। श्यामसिंहक राज्यारोहणक चीनी सम्राटक हाथे भेल छल। एहि तथ्य सबसँ प्रत्यक्ष अछि चीनी सम्राट एहि कर्णाटवंशीकेँ नेपालक सार्वभौम राजा बुझैत छलाह। अहु सम्बन्धमे पेतेकक मत अछि जे इ सब बात गलत थिक। १३८२ ई. क इथाम बहाल अभिलेखसँ स्पष्ट होइयै जे मदन रामक पुत्र शक्तिसिंह नेपाली अनेक रामक वंशज छलाह ने कि कर्णाट वंशीय। नेपालक इतिहासमे अहुखन कतेको मतभेद अछि आ रहत।

रज्जलदेवीक पति जयार्जुनक शासनकालमे जयस्थिति मल्ल द्वारा राज्य शासनमे नियम विरूद्ध विप्लव कैल गेल। जयस्थितिकेँ सिमरौनक हरिसिंह देवक वंशज कहल गेल अछि। नायक देवी आ जगतसिंहक पुत्री रज्जलादेवीसँ जयस्थिति विवाह केलन्हि। जयस्थिति जयार्जुनकेँ पराजित कए नेपालक राजा भेलाह। ओ सूर्यवंशी कर्णाटक योग्य प्रतिनिधि सिद्ध भेलाह। पृथ्वीसिंहक आधिपत्य स्थापित होयबाक समय धरि हुनक वंश शासन करैत रहल। जयस्थितिमल्लक संग रज्जल्ला देवीक विवाह भेलासँ तीनटा शक्तिशाली शासक परिवार–ठाकुरी, कर्णाट ओ मल्ल संयुक्त भऽ गेल। जयस्थितिमल्ल शक्तिशाली शासक छलाह। हुनक उत्तराधिकारी यक्षमल्ल अपन अधिकार मिथिला धरि बढ़ौलन्हि। ओ अपन प्रतिद्वन्दीकेँ हराय राज्यकेँ चारि भागमे विभक्त केलन्हि।

i) भातगाँव– अपन ज्येष्ठ पुत्र राज्यमल्लकेँ
ii) बनेपा– रणमल्लकेँ
iii) काठमाण्डु– रत्नमल्लकेँ
iv) पाटन– अपन पुत्रीकेँ।

एकर परिणाम भेल नेपालक सर्वनाश। सत्रहम शताब्दीमे नेपाल अनेकानेक जागीरमे बँटि गेल। सबसँ पूबमे किरात प्रदेश छल जाहिमे दूध कोशीक समतल, ओकर शाखा तथा सून कोशीक पूबमे तराइक किछु भाग सेहो छलैक।

**मुसलमानी आक्रमणः-** ऐतिहासिक सम्पर्क पकड़बाक हेतु पुनः इस्वीसन् चौदहम शताब्दीक चर्चा करए पड़इत अछि। कहल जाइछ जे अलाउद्दीन खलजी सेहो अपन प्रभाव नेपाल धरि बढ़ौने छलाह यद्यपि एकर कोनो ठोस प्रमाण हमरा लोकनिकेँ उपलब्ध नहि अछि। १३४६–४७मे बंगालक शासक शमसुद्दीन हाजी इलियास नेपालपर आक्रमण केलन्हि आ एहिबातक उल्लेख स्वयंभूनाथक अभिलेखमे अछि। एहि शिलालेखक अनुसार हाजी इलियास काठमाण्डुकेँ घेर लेलक, शहरमे आगि लगादेलक, लूट पाट मचौलक एवँ मूर्त्ति सबकेँ ध्वस्त केलक। शिलालेखक तिथि अछि नेवारी ४९२=१३७१–७२इ.।मन्दिर पुनः निर्मित भेलैक आ स्तूप पुनर्स्थापित भेल आ ओकर समारोह मनाओल गेल। एहि शिलालेखक संपादन के.पी.जायसवाल केने छथि। तकर बादसँ पुनः कोनो आक्रमणक उल्लेख नहि भेटइत अछि।

मल्लक शासनः- जयस्थितिक चर्च हमर पूर्वहि कचुकल छी। हुनक उत्तराधिकारी छलाह जगज्योतिमल्ल। ओ मैथिल वंशमणिक मिलिकेँ **'संगीत भास्कर'** नामक पुस्तकक रचना केने छलाह। हुनक उत्तराधिकारी ज्योतिमल्ल भेला आ हुनक यक्षमल्ल। यक्षमल्ल अपन अधिकारक विस्तार समतल भूमि दिसि सेहो केलन्हि।

यक्षमल्लक तृतीय पुत्र रत्नमल्ल मैथिल ब्राह्मणक प्रभावक अधीन छलाह। रत्नमल्लक उत्तराधिकारी छलाह अमरमल्ल आ हुनक महेन्द्रमल्ल जे चानीक मुद्राक व्यवहार शुरू केलन्हि। ओ तिरहूतसँ चानी मंगवैत छलाह।

एम्हर आबि मिथिला आ नेपालक बीचक सम्बन्ध खूब बढ़िया नहि रहल। खण्डवला कुलक राजा महिनाथ ठाकुर अपन राज्य विस्तारक क्रममे मोरंगकेँ जीति लेलन्हि। मिथिला तिरहूति गीतक प्रचार एहि राजाक समयमे भेल छल। नेपाल तराइक लोग सब खटपट करैत छल आ तै मोरंगक जमीन्दार सबकेँ दबेबाक हेतु औरंगजेब गोरखपुरक फौजदार आ मिथिलाक फौजदारकेँ पठौलन्हि। सत्रहम शताब्दीमे मिथिला आ नेपालमे खटपट होएबाक एकटा कारण मकवानी राज्य छल जे तराइ वो घाटीक उपहिमालय मार्गक सटले दक्षिण आ दक्षिण–पश्चिममे रहैक। एहिठाम एकटा प्रमुख शासक छलाह राजा हरिहर जे बड़ड महत्वाकाँक्षी छलाह। राघवसिंह जखन मिथिलाक राजा भेलाह तखन फेर एहि राज्यकेँ लऽ कए नेपालसँ खटपट शुरू भेल। नेपाल तराइक पंचमहलाक राजा भूपसिंहकेँ युद्धमे हरौलन्हि आ भूपसिंह ओहिमे मारल गेला। दरभंगाक खण्डवला राज्यक सीमा मकवानी राज्य धरि पहुँचल। मोरंग राजाक ओतए सेहो मिथिलाक धाख बनल। बंजर सब सेहो तराइक क्षेत्रमे शरणलेने छलाह आ अलीवर्दी हुनका सबहिक विरूद्ध उचित कारवाइ केने छलाह। बंजर लोकनि भपटिआही टीसनसँ मकवानी राज्यक सीमा धरि पसरल छल।

१७६५मे नेपालमे गोरखा लोकनि शक्तिशाली भऽ गेलाह। १८०२ई.सँ नेपालक सम्पर्क इस्ट इण्डिया कम्पनीक अधिकारीसँ भेल जखन कि नेपाली लोकनि हुनकासँ भेंट करबाक हेतु पटना अबैत गेल। नेपाल आ इस्ट इण्डिया कम्पनीक सम्बन्ध मधुर नहि भऽ सकल आ दिनानुदिन झंझट बढ़िते गेल। अंग्रेज आ नेपालीक बीच युद्ध भइयैकेँ रहल आ ओ युद्ध भेल मिथिला भूमिपर। युद्धमे नेपाली लोकनि अपन अधिकारक विस्तार तराइमे छपरा (सारन) धरि क चुकल छलाह। चारूकात लड़ाइ प्रारंभऽ छल। सारनसँ कोशी धरि आ वीचमे मकवानी होइत अंग्रेजक एकटा टुकड़ी नेपालक राजधानी दिसि बढ़ल। लड़ाइक भीषण रूप देखि गजराज मिश्र शांतिक वार्त्ता चलौलन्हि। १८१५मे एक समझौताक अनुसार इ निश्चित भेलैक जे नेपालकेँ ओहिभूमि पर अधिकार छोड़ि देवाक चाही जाहिपर ब्रिटिशक कब्जा भऽ गेल छलैक। एहि संधिसँ कोनो संतोषजनक परिणाम नहि बहरेलैक। १८१६मे पुनः मकवानीपुर लग फेर भिड़ंत भेलैक आ गोरखा पराजित भेल। १८१४ई.२८ नवम्बरक सुगौलीक संधिकेँ जखन गोरखा लोकनि बिना कोनो शर्त्त स्वीकार केलन्हि तखनहि अंग्रेज युद्धबंदीक घोषणा १८१६मे केलन्हि। एवँ प्रकारे अंग्रेज आ नेपालक बीच संघर्षक मुख्य स्थल मिथिले रहल आ सुगौलीक सन्धिक पश्चात दुनू राज्यक बीचक सम्बन्ध सुधरल।

अध्याय–११

# मुल्ला तकियाक वयाजक अनुसार मिथिलाक इतिहास

मुल्ला तकिया अकबरक समकालीन छलाह आ ओ अपन असमक भ्रमणक क्रममे मिथिला बाटे गेल छलाह। ओ मिथिलामे जे देखलन्हि–सुनलन्हि से आ अन्यान्य साधनकेँ आधार अपन एकटा **'वयाज'** (डायरी) लिखलन्हि जे मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक हेतु सर्वथा अपेक्षित अछि। एहि वयाजपर आधारित एकटा विस्तृत निबन्ध पटनाक मासिर पत्रिकामे १९४६मे छपल छल आ दरभंगासँ प्रकाशित डॉ. लक्ष्मण झा द्वारा संपादित साप्ताहिक मैथिली **"मिथिला"** (२ फरवरी, ९ फरवरी आ १९ फरवरी १९५३क अंक सब)मे सेहो एकरापर आधारित किछु अंश प्रकाशित अछि। मिथिलाक इतिहासक हेतु इ एकटा अपूर्व साधन मानल जा सकइयै आ एकर उपयोग हम अपन **'हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहूत'**मे सेहो कैल अछि। मैथिली पाठकक हेतु हम एहिठाम मुल्ला तकियाक वयाजक सारांश उपस्थित कऽ रहल छी। मिथिलापर मुसलमानी राज्यक विस्तारक अध्ययन क्रममे सेहो एकर विवरण भेटत।

वयाजक अनुसार राजा लक्ष्मणसेनपर आक्रमणक पूर्व बख्तियार खलजी मिथिलाक किछु भागपर आक्रमण कएने छलाह। मिथिलाक राजा नरसिंह देव बंगालक राजा लक्ष्मण सेनक अधीन शासन करैत छलाह। पाछाँ ओ मुसलमान राजाक अधीनता स्वीकार केलन्हि आ तखनसँ ओ मुसलमान शासक गियासुद्दीन इवाजक समय धरि कर दैत रहलाह। १२२५मे जखन इल्तुतमिश बंगालपर आक्रमण केलन्हि तखन गियासुद्दीन इवाज हुनकासँ मेल कऽ लेलन्हि। बिहारकेँ बंगालसँ फराक कए फुटे प्रांत बना देल गेल आ मल्लिक अलाउद्दीन जानीकेँ ओहिठामक राज्यपाल नियुक्त कैल गेल। इल्तुतमिसक घुरलापर गियासुद्दीन नरसिंह देवक मदतिसँ पुनः बिहारपर आधिपत्य स्थापित कऽ लेलन्हि। बदला लेबाक विचारसँ सुल्तानक पुत्र बंगालपर आक्रमण केलन्हि आ गियासुद्दीन मारल गेला। नरसिंह देव हुनकासँ माँफी माँगिकेँ अपनाकेँ छोड़ोलन्हि आ कर देबाक वचन देलन्हि। रजिया बेगमक शासन कालमे बंगाल पुनः दिल्लीक नियंत्रणसँ मुक्त भऽ गेल। राजा नरसिंह देव सेहो विद्रोह कऽ देलन्हि। तुगलक तुगान खाँ मिथिला विद्रोहकेँ दबेबाक हेतु पठाओल गेलन्हि आ ओ ओहि राज्यपर अपन सत्ता स्थापित कए बहुत रास वस्तुजात लूटिकेँ लऽ गेलाह। मिथिलाक राजा बहुत दिन धरि नजरबन्द रहलाह। १२४४मे ओ चंगेज खाँक आक्रमणक समयमे ओ अपन बहादुरी देखौलन्हि आ तकर पुरस्कार स्वरूप हुनका सुल्तान अलाउद्दीन मसूद प्रसन्न भऽ तिरहूत राज्य घुरा देलथिन्ह आ हुनका एकटा सम्मानित राजा घोषित कए बिदा केलथिन्ह। मिथिलाकेँ सूबेदारक मातहदीसँ हटा देल गेल आ एकरा सोझे दिल्लीक अधीन कऽ लेल गेल। आब इ अपन कर दिल्लीकेँ देबए लगला। **'तबाकते नासिरी'**मे एहि आक्रमणक वर्णन अछि। विद्यापति सेहो अपन **'पुरूष परीक्षा'**मे नरसिंह देवक दिल्ली प्रवासक चर्चा कएने छथि। हिनक पुत्र रामसिंह

देवक समयमे सेहो किछु संघर्ष भेल छल। हिनके समयमे दरभंगामे राम चौक नाम मोहल्लाक स्थापना भेल।

अलाउद्दीनक समयमे मिथिला पर पुनः मुसलमानी आक्रमणक चर्च भेटइत अछि। इतिहासमे एकर उल्लेख आनठाम नहि भेटइत अछि मुदा मुल्लाक वयाजमे एकर विस्तृत विवरण अछि। एहि आक्रमणक अंतर्गत मखदून ताज मोहम्मद फकीहक पुत्र शेख मुहम्मद इस्माइलक नेतृत्वमे तीन बेर युद्ध भेल छल। पहिल एवँ दोसर बेर शाही सेना पराजित भऽ गेल छलाह आ मिथिलाक जीत भेल छल। प्रथम लड़ाइक स्थान दरभंगामे अखनो **"मुकबेश"** नामसँ प्रसिद्ध अछि। शेख मुहमद इस्माइल जखन राजापर दोसर बेर आक्रमण करबाक विचार केलक तखन सेना पठेबाक हेतु बादशाहसँ निवेदन केलक। रजीउल मुल्क मलिक महमूदक सेनापतित्वमे शाही फौज मिथिलाक धरतीपर उतरल। अहुबेर हुनका अपने सन मुँह लऽ कए पराजित भऽ कए घुरे पड़लन्हि। इ लड़ाइ जाहि स्थानपर भेल छल ताहि स्थानपर राजा अपन राजधानी दरभंगासँ उठाकँ लऽ गेला। शक्रसिंहक नामपर ओ स्थान सम्प्रति सकरी नामसँ विख्यात अछि। तेसर बेर पुनः युद्ध भेल जाहिमे मिथिलाक पराजय भेल आ राजा अपन मंत्री सबहिक संग पकड़ल गेला। गिरफ्त भेला उत्तर राजा क्षमा याचना केलन्हि आ आजीवन कर देबाक वचन देलन्हि। एहिशर्त्तपर अलाउद्दीन हुनका राज्य घुरा देलथिन्ह। बादमे शक्तिसिंह (शक्रसिंह) अलाउद्दीनक हिन्दू फौजक सेनापति सेहो नियुक्त भेला।

जखन अलाउद्दीनकँ हम्मीर देवसँ युद्ध भेलन्हि तखन शक्रसिंह अलाउद्दीनक आर्थिक आ सैनिक सहायता देलन्हि। शक्रसिंह स्वयं रणक्षेत्रमे उतरलाह आ एहिसँ अलाउद्दीनकँ बड़ड बल भेटलन्हि। शक्रसिंह एवँ प्रकारे मिथिलाक स्वतंत्रताकँ सुरक्षित रखबामे समर्थ भेलाह। दरभंगाक **'सुखी दिग्घी'** अखनो शक्रसिंहक स्मारक स्वरूप अछि।

हरिसिंह देव कर्णाट वंशक अंतिम राजा छलाह आ हरिसिंहपुर सेहो अपन राजधानी बनौने छलाह। गियासुद्दीन तुगलक जखन बंगालक विद्रोहकँ दबाकँ घुरलाह तखन ओ तिरहूतपर ध्यान देलन्हि। तिरहूतक राज्य ओ दखल केलन्हि। कहल जाइत अछि जे तिरहूतक राजा बंगालक मदतिमे छलाह। हरिसिंह देव अपन मजबूत किला, कठिन रास्ता ओ दुरूह जंगल आदिक बलें पहिने तँ गियासुद्दीनक विरोध केलन्हि परञ्च बादमे पराजित भऽ पकड़ल गेलाह। सुल्तान हुनका पकड़िकँ दिल्ली लऽ गेला आ मिथिलाक शासन भार अहमद खाँक हाथमे देलन्हि। गियासुद्दीनक बाद मुहम्मद तुगलक दिल्लीक शासक भेलाह। राज्याभिषेकक अवसर ओ हरिसिंह देवकँ मुक्त कऽ देलैन्ह। हरिसिंह देव कर देबाक बचन देलन्हि तखन हुनका राज्य घुरा देल गेलैन्ह आ ओ प्रमुख सेनापतिक पदपर सेहो नियुक्त भेलाह। इ सब भेलाक बाद सुल्तानकँ बुझबामे एलन्हि जे राजाक मंत्री वीरेश्वर ठाकुरक संग एक विचित्र पाथर छन्हि जकर संसर्गसँ सब प्रकारक धातु सोना भऽ जाइत अछि। इ पाथर अलाउद्दीन खलजीकँ नहि देल गेल छल। सुल्तान आदेश बहार केलन्हि वाजाप्ता एक फरमान द्वारा जो ओहि पाथरकँ शाही खजानामे जमा कऽ देल जाइक। वीरेश्वर जखन पाथरक बदलामे हीरा उपस्थित केलन्हि तखन सुल्तान ओकरा लेबासँ अस्वीकार केलन्हि। तकर बाद वीरेश्वर बजलाह जे काशीमे गंगा स्नान केलाक उत्तर ओ ओहि पाथरकँ शाही खजानामे जमा करताह। शाही सरंक्षणमे वीरेश्वरकँ काशी आनल गेल। काशी एबाक पूर्व ओ राजा हरिसिंह देवसँ सेहो भेंट केलन्हि आ काशीमे स्नान

करबाक क्रममे ओ पाथरकेँ गंगेमे राखि देलन्हि। शाही संरक्षक एहि प्रसंगकेँ लऽ कए हरिसिंह देवक शिकायत सुल्तान लग कऽ देलक। एहिपर मिथिला राज्य जप्त भेल आ हरिसिंह देवकेँ आजीवन कारावासक आदेश भेटल। एहिबातक सूचना राजाकेँ पहनहि भेट गेलन्हि आ ओ तुरंत पड़ाएकेँ नेपाल चल गेला। बादमे हुनक पता नहि लागल। मिथिलाकेँ तुगलक साम्राज्यमे मिला लेल गेल। सुल्तान तिरहूतकेँ एक अलग प्रांत बना देलैन्ह आ तिरहूतक महत्व बढ़ल आ दरभंगा ओकर राजधानी बनल। तिरहूतकेँ तुगलकपुर सेहो कहल गेल। ओतए एकटा किला आ जामा मस्जिदक स्थापना भेल।

१३४०मे मुहम्मद तुगलक मिथिलाक शासन भार कामेश्वर ठाकुरकेँ देलन्हि। बंगालक शासनक भार सुल्तान शमसुद्दीन हाजी इलियासकेँ देलन्हि। मिथिलासँ कर वसूली करब आ राजापर निगरानी रखबाक भार सेहो हिनकेपर देल गेलैन्ह। कामेश्वर ठाकुर ओइनी गामक रहए वाला छलाह आ इ गाम हुनका पूर्वजकेँ कर्णाट शासकसँ जागीरक रूपमे भेटल छलन्हि। कामेश्वर ठाकुर राज्य प्राप्त केला उत्तर अपनहि गामकेँ राजधानी बनौलन्हि। मुहम्मद तुगलकक जीवैत हाजी इलियास अपन निवास दरभंगामे रखलक परञ्च मुहम्मद तुगलकक मुइलाक बाद ओ अपनाकेँ स्वतंत्र घोषित कए देलक आ कर देव सेहो बंद कऽ देलक। अपन साम्राज्य क्षेत्र विस्तारक योजनाक क्रममे ओ अपन आसपासक इलाकापर अपन अधिकार बढ़ौलक आ कोशी धरिक क्षेत्रपर अपन आधिपत्य स्थापित कऽ देलक। ओ मिथिलाक राजाक संग युद्ध कए मिथिला राज्यकेँ दू भागमे विभक्त कऽ देलक। बूढ़ी गंडकक उत्तरी भागमे मिथिलाक राज्य रहल आ ओकर दक्षिणमे इलियासक राज्य भेल। एवँ प्रकारे नेपाल तराइसँ बेगूसराय धरि ओ अधिकारक स्थापना केलक आ कामेश्वर वंशकेँ ओइनीसँ हँटौलक। मिथिलाक एहि अप्राकृतिक बटवाराक विरोधमे कामेश्वर ठाकुर विद्रोह कऽ देलन्हि मुदा ओहि विद्रोहकेँ शख्तीसँ दबाओल गेल। एहि शख्तीसँ विद्रोह दबेबाक क्रममे बहुतो गाम नष्ट–भ्रष्ट भऽ गेल। विद्रोह दबौलाक पश्चात ओ बूढ़ी गण्डकक तटपर अपन राज्यक सुरक्षार्थ एकटा प्रशासनिक केन्द्र बनौलक जे शमसुद्दीनपुर (समस्तीपुर)क नामे ताहि दिनमे प्रसिद्ध छल। गंगाक तटपर ओ हाजीपुर बसौलक आ ओतए एकटा किलाक निर्माण सेहो केलक।

फिरोज तुगलककेँ जखन इ सूचना भेटलैक तँ ओ आगि वबुला भऽ गेल आ समाचार सुनतहि ओ दिल्लीसँ मिथिलाक हेतु विदा भऽ गेल। जावत फिरोज गोरखपुर पहुँचल तावत हाजी इलियास अपन बोरिया–विस्तर बान्हिकेँ पण्डुआ दिसि विदा भऽ गेल। ओतहु अपनाकेँ सुरक्षित नहि देखि ओ ओतएसँ एकदला दिसि चलगेल। जखन फिरोज मिथिला पहुँचल तखन कामेश्वर ठाकुर तथा छोट–मोट जमीन्दार लोकनि उपहार लऽ कए सुल्तानक समक्ष उपस्थित भेलाह आ हाजी इलियासक लूट–पाटक शिकायत केलन्हि। सुल्तान कामेश्वर ठाकुरकेँ पुरस्कृत केलथिन्ह। कामेश्वर ठाकुर हुनक अधीनता स्वीकार केलन्हि आ कर देबाक प्रतिज्ञा केलन्हि। फिरोज मिथिलाक दुनू भागकेँ मिलाकेँ फेर एक कऽ देलैन्ह आ ओहिठाम अपन काजी नियुक्त केलन्हि। सुल्तान ओहिठामसँ एकदला दिसि विदा भेला। १३५३ फिरोज तुगलक कामेश्वर ठाकुरकेँ छोट बालक भोगीश्वरकेँ राजा बनौलन्हि मुदा मुल्ला तकिया एहि प्रसंगमे चुप्प छथि। बरनी सेहो एहि विषयमे किछु नहि कहैत छथि। फिरोज विद्रोही इलियासकेँ दबाकेँ जखन घुरला तखन ओ मिथिलामे अपन हाकिम बहाल केलन्हि। मुल्ला तकिया कोनो स्पष्ट संकेत एहि सम्बन्धमे नहि दैत छथि। मिथिलामे मुसलमानी

शासनक प्रसारक सम्बन्धमे जखन विवरण प्रस्तुत करब तखन सब बातक समीचीन व्याख्या करब। एहिठाम तँ मात्र मुल्ला तकियाक वयाजक आधारपर वस्तुस्थितिकेँ उपस्थिति कैल गेल अछि। फिरोज तुगलक पुनः मिथिलाकेँ दिल्लीक एकटा प्रांत बना लेलन्हि आ एहिठामक राजा पुनः दिल्लीक अधीन भऽ गेलाह भने हुनका स्वायत्तता प्राप्त रहल होन्हि से दोसर गप्प। कर वसूल करबाक हेतु फिरोज तुगलक एतए अपन आदमीकेँ नियुक्त केलन्हि। भोगीश्वर फिरोजक मित्र छलाह।

**दरभंगाक उत्पत्तिः-** एहि प्रसंगमे दरभंगाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे दूएक बात कहि देव आवश्यक बुझना जाइत अछि। दरभंगा शब्दक उत्पत्ति कहिया आ कोना भेल एहि प्रश्नपर अखनो धरि मत विभिन्नता अछिए। **तवारिखुल फितरत** (फितरतक इतिहास)क अनुसार दरभंगाकेँ बसायवला गियासुद्दीन तुगलक छलाह। हरिसिंह देवकेँ पराजित कए ओ एहि नगरकेँ बसौलन्हि एहेन बुझल जाइत अछि। हरिसिंह देव पड़ाएकेँ जंगल–पहाड़ दिसि चल गेल छलाह। सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक अपन आक्रमणक क्रममे हुनकापर कब्जा करबा लेल जंगल कटबा देलन्हि। एहि साफ कैल जंगलक नाम **"दारू भंग"** राखल गेल। संस्कृतमे **"दारू"**क अर्थ होइछ लकड़ी आ **'भंग'**क अर्थ भेल काटब, छाटब आ नष्ट करब। चूंकि स्वयं सुल्तान अपना हाथे तरूआरिसँ जंगलकेँ काटिकेँ नष्ट केने छलाह आ ओहिठाम अपन आधिपत्य स्थापित कएने छलाह तैं ओहि स्थानकेँ **"दारूभंग"** कहल गेल जे क्रमेण **दरभंगा**क नामे प्रसिद्ध भेल। अखन धरि इ मत सर्वमान्य नहि भेल अछि।

विलियम हण्टर दरभंगी खाँ सँ दरभंगाक उत्पत्ति बतबैत छथि। दरभंगी खाँ आइसँ करीब १२५ वर्ष पहिने भेल छलाह आ ओ मुहम्मद रहीम रूहेलाक पौत्र छलाह। हिनक वंशज अखनो दरभंगामे छथिन्ह। दरभंगी खाँक बसाओल दरभंगा बाला सिद्धांत कोनो तरहे मान्य नहि बुझि पड़इयै परञ्च तइयो हम देखइत जे ओमैली सेहो हण्टरेक मतकेँ मानने छथि। दरभंगा ओहिसँ पुरान नगर अछि तैं हण्टर आ ओमैलीक मत अमान्य अछि। इहो सिद्धांत प्रतिपादित कैल गेल अछि जे **'द्वार–वंग'** अथवा **दूर–वंग** या **दार–इ–वंगल**सँ दरभंगा शब्दक निर्माण भेल अछि। दरभंगाकेँ **'द्वार वंग'**क संज्ञा देव उपयुक्त नहि बुझि पड़इयै कारण कोन रूपे एकरा बंगालक द्वार कहल जेतैक? इ बात ठीक जे मध्य युगमे दिल्लीक सेना एहि बाटे बंगाल जाइत छल।

मिथिलाक संस्कृत लेखक पण्डित गंगादत्त झा(१६१५–१६८४) अपन भृंगदूतमे दरभंगा शब्दक उल्लेख कएने छथि–

> *"तस्याः पाथः परम विमलं सन्निपियाभिरामा–*
> *गारां कामायुध दरभंगा राजधानी मुपेयाः"* ।

अहुँसँ इ सिद्ध होइछ जे दरभंगीक पूर्वहिसँ दरभंगा नाम प्रचलित अछि। १७७८मे प्रतापसिंह सेहो दरभंगामे अपन राजधानी बनौने छलाह मुदा हुनकासँ १०० वर्ष पूर्वसँ **'दरभंगा'** राजधानीक रूपमे प्रख्यात छल जकर प्रमाण हमरा **'भृंगदूत'**क कविसँ भेटइत अछि। ओहि कविक विवरणसँ इहो ज्ञात होइछ जे दरभंगा (राजधानी) वाग्मती नदीक तटपर स्थापित छल आ ओतए एहेन एहेन सुन्दर भवन सब छल जे देखबामे कामदेवक तरूआरि सन लगैत छल। भृंगदूतक आधार इ कहल जा सकइयै जे **'दरभंगा'** १७म शताब्दीमे एकटा प्रसिद्ध दर्शनीय नगर छल। दरभंगामे ताहिदिनमे मुगल बादशाहक प्रतिनिधि रहैत छलाह आ खण्डवला कुलक राजधानी **"भौर"**मे छल

आ भौर आ दरभंगाक मध्य मधुर सम्बन्ध छल। महाराज माधव सिंहक समयसँ खण्डवला कुलक महाराज लोकनि स्थायी रूपेँ दरभंगामे रहए लगलाह। एक इहो सिद्धांत प्रतिपादित कैल गेल अछि जे **'दलभंग'**सँ दरभंगाक उत्पत्ति भेल अछि–गजरथपुरमे शिवसिंहक पराजय भेलापर ओहि स्थानक नाम **'दलभंग'** राखल गेलैक किएक तँ ओहिठाम शिवसिंहक **'दल'**केँ **'भंग'** कैल गेल छलन्हि। परञ्च अहुमे विशेष तथ्य नहि बुझा पड़इत अछि।

ओना तँ सब गोटए अपन–अपन तर्क उपस्थित कएने छथि मुदा कोनो तर्क ने अखन धरि मान्य भेल अछि आ ने ओकरा हेतु कोनो प्रामाणिक साधने उपलब्ध अछि। १७म शताब्दीमे **'दरभंगा'** नामक प्रचलन इ सिद्ध करैत अछि जे इ नाम बहुत पूर्वहिसँ प्रख्यात रहल होएत। तैं हमर अपन विचार इ अछि जे एहि शब्दक उत्पत्ति गियासुद्दीन तुगलकक समयमे भेल जे **'दारू'–'भंग'** केलैन्ह आ ओहि दारूभंगसँ दरभंगा शब्दक विन्यास भेल। इ जखन तुगलक साम्राज्यक एकटा अंग बनल तखन मिथिला तुगलकपुरक नामे प्रसिद्ध भेल आ ओकरे राजधानी भेल **'दरभंगा'**। दरभंगा ताहि दिनमे जंगल छल आ तकरा कटबामे सबकेँ डर होइत छलैक तैं गियासुद्दीन अपनहि जखन जंगल काटब शुरू केलन्हि तखन आ सब केओ मिलिकेँ एहिमे योगदान देलथिन्ह आ जंगल साफ भेलैक आ ओहिठाम तुगलक साम्राज्यक प्रधान कार्यालय बनल। तिरहूतक तुगलक कालीन सिक्का सेहो भेटल अछि।

अध्याय–१२

# मिथिलाक इतिहासमे मुसलमानी अमल

कर्णाट वंशक समयसँ मिथिलामे मुसलमान लोकनि हुलकी–बुलकी देव शुरू कऽ देने छल। ७११ई. जखन सिन्धपर अरब लोकनिक आक्रमण भेलैक ताहिसँ पूर्वहुसँ अरब लोकनिक सम्पर्क पश्चिमी आ दक्षिणी भारतसँ छलैक आ ओ लोकनि ओहि क्षेत्रमे व्यापार करबाक हेतु अवैत छलाह। जखन अरब लोकनि सिन्धपर आक्रमण केलन्हि तकर बादहिसँ भारतक संग राजनैतिक सम्बन्धक शुरूआत मानल जाइत अछि। ७११ सँ १२०० ई.क बीच बहुत रास मुसलमान चिंतक आ संत उत्तर भारतक विभिन्न क्षेत्रमे पसरि गेलाह आ मिथिला क्षेत्र सेहो सूफी लोकनिक एकटा प्रधान केन्द्र छल। ओम्हर पूबमे बंगाल धरि बख्तियार खलजीक समय धरि मुसलमानी प्रकोप बढ़ि चुकल छल आ बिहारोमे गंगा दक्षिण भागमे मगधपर मुसलमान लोकनि अपन आधिपत्य जमा चुकल छलाह। मिथिलेटा एकटा भाग बचल छल जाहिपर हिनका लोकनिक नियंत्रण अखन धरि नहि भेल छलन्हि यद्यपि इ लोकनि एहि बातक हेतु सतत प्रयत्नशील रहैत छलाह।

मुल्ला तकियाक वयाजक अनुसार तँ मुसलमान लोकनि बख्तियार खलजीक समयमे मिथिलोपर आक्रमण कएने छलाह यद्यपि एकर कोनो आन प्रमाण ओना नहि भेटइत अछि। गंगाक मार्गसँ जेवा काल किवाँ गंगा कोशीक संगम दिसिसँ भने इ लोकनि लूट–पाट करैत होथि से दोसर कथा मुदा हिनका लोकनिक आधिपत्य तिरहूतपर भेल नहि छलन्हि। पूबमे मिथिलाकेँ मुसलमानी प्रगतिक पथमे बाधक बुझल जाइत छलैक कारण ताहि दिनमे अहिठाम सशक्त कर्णाट लोकनिक शासन छल आ तैं सब ठामसँ विद्वान लोकनि पड़ायकेँ एतए अबैत छलाह। पश्चिमक मुसलमान लोकनि तँ तत्काल मिथिलाकेँ अपना नियंत्रणमे नहि आनि सकलाह परञ्च बंगालक मुसलमान शासकक गिद्ध दृष्टि सेहो मिथिलाक स्वतंत्र कर्णाट राज्यपर लगले रहैत छलैक आ तैं जखन कोनो मौका भेटैक तखने वो लोकनि मिथिला दिसि बढ़ि जाइत छलाह। गंगदेवक कर्णाट शासक लोकनिमे ओ शक्ति नहि रहि गेल छलन्हि जाहिसँ ओ लोकनि शक्तिशाली आक्रमणक विरोध करितैथ। १२११ आ १२२९क बीचमे बंगालक विजेता गियासुद्दीन इवाज मिथिलाक राजाक क्षेत्र अपन नाक घुसौलन्हि आ हुनकासँ कर वसूल केनाई प्रारंभ केलन्हि। अहिसँ पूर्व मिथिलाक राजा ककरो सामने ने तँ झुकल छलाह आ ने कर देने छलाह। बंगाल पड़ोसिया होइतहुँ मिथिलापर मुसलमानी आक्रमणक श्रीगणेश केलक।

बंगालसँ तिरहूतमे एबाक हेतु रस्तो सुगम छलैक। कोशी, गण्डक आ गंगाक काते कात तिरहूत होइत बंगाल जाएव–आएव सुगम छल आ तैं ताहि दिन पश्चिम आ पूबक आक्रमणकारी लोकनि अहि मार्गक प्रश्रय लेने छलाह। बीचमे पड़ैत छल तिरहूतक राज्य जे समयानुसार **'वेत्तसिवृत्ति'**क पालन करैत अपन स्वतंत्रताक सुरक्षाक हेतु यथासाध्य परिश्रम करैत छल। कानूनगोय महोदयकेँ इ बात बुझबामे नहि अवैत छन्हि जे जखन मिथिला आ कामरूपक स्वतंत्र राज्यकेँ बख्तियार नहि

जीत सकल तखन ओ तिब्बत दिसि बढ़बाक प्रयास कियैक केलक? बख्तियार खलजीक मूल उद्धेश्य छल प्रांत सबकेँ लूटब आ धन जमा करब तैं कोन प्रांत स्वतंत्र रहल अथवा गुलाम भेल तकर चिंता हुनका नहि छलन्हि। आ वो मात्र अपन स्वार्थ आ महत्वाकाँक्षाक पूर्त्तिक हेतु सब काज करैत छलाह। पश्चिमसँ एक्के वेर बंगाल धरि मुसलमानी राज्यक प्रसार कऽ देव ताहि दिनमे कि कोनो कम उपलब्धिक बात भेलैक? बंगाल विजयक क्रममे नदीक मार्गक अवलंबनमे मिथिला दक्षिण पूर्वी सीमा देने जँ ओ गुजरल होथि तँ कोनो आश्चर्यक गप्प नहि। सेनवंशक संग बरोबरि खटपल रहलसँ मिथिलाक इ अंश विशेष काल अरक्षित रहैत छल आ तैं यदि अहि बाटे बंगाल जेबाक क्रममे मुसलमान लोकनि अपन प्रभाव क्षेत्र एकरा बना लेने होथि तँ से संभव। परञ्च एतए स्मरण रखबाक अछि जे गियासुद्दीन इवाजक पूर्व धरि कोनो मुसलमान शासक मिथिलाक राजासँ कर नहि वसूल केने छलाह। तैं बख्तियारक प्रभावक गप्पक प्रसंग मिथिलापर व्यर्थ बुझना जाइछ। बख्तियारक पुत्र इख्तियारोक तिरहूतपर आक्रमण करबाक संकैत भेटइत अछि परंञ्च उहो आक्रमण लूट–पाटे जकाँ छल कारण ओहिसँ तिरहूत राज्यक अक्षुण्णता एवं अखण्डतापर कोनो आँच नहि आएल। दक्षिण बिहारपर ओकर आक्रमणक स्थायी प्रभाव पड़लैक कारण उदंतपुर विश्वविद्यालयकेँ उहै नष्ट केलक आ अपन बहादुरीक प्रदर्शन कुतुबुद्दीन ऐबकक दरबारमे दिल्लीमे जाके केलक।

बंग, कामरूप आ तिरहूतक शासकसँ ऐतिहासिक तौरपर कर वसूल केनिहार व्यक्ति छलाह गियासुद्दीन इवाज। कानूनगोएक मत जे तिरहूतक सम्बन्धमे छन्हि से पूर्णतया भ्रामक मानल जाइत अछि आ ओकर कोनो ऐतिहासिक प्रमाण नहि भेटइयै। अरिमल्लदेव नामक कोनो राजा मिथिलामे नहि भेल अछि आ ओहिकालमे नरसिंह देव अहिठामक शासक छलाह। अहि शंकाक समाधानक हेतु हम प्रोफेसर कानूनगोएकेँ लिखने छलियन्हि आ हुनके आदेशानुसार डॉ. रमेश मजुमदारकेँ सेहो। श्री मजुमदार महोदय इ लिखलन्हि जे कर्णाटवंशमे अरिमल्लदेवक नामक कोनो शासक नहि भेल छथि जकर राज्य मिथिलामे हो। कानूनगोए महोदयक अनुसार मिथिलाक पूर्वी भाग ताहि दिनमे लखनावतीक अधिकार भऽ गेल छलैक। कोन आधारपर कानूनगोए महोदय अहि निर्णयपर पहुँचल छथि तकर प्रमाण ओ नहि देने छथि आ अहिकालमे मिथिलाक राज्य टुकड़ा–टुकड़ामे बटबाक प्रमाण हमरा लोकनिकेँ नहि भेटल अछि। यदि ओ सिलवाँ लेवीसँ प्रेरित भए अपन निर्णय बनौने छथि तखन आव एतवे कहि देव उचित जे आधुनिक शोधक आधार लेवी महोदयक मत मान्य नहि अछि।

नरसिंह देवक शासन कालसँ मुसलमानी प्रकोप मिथिलामे बढ़ल सेटा मान्य अछि आ मैथिल परम्परामे सेहो अहिबातकेँ स्वीकार कैल गेल अछि आ विद्यापतिक **पुरूष परीक्षा** एकर साक्षी अछि। नरसिंह देव पहिल व्यक्ति छलाह जे कर देलन्हि आ दिल्ली आ बंगाल दुनु ठामसँ सम्बन्ध बनौलन्हि। इ सब होइतहुँ ओ अपन स्वतंत्रताकेँ सुरक्षित रखबामे सफल भेला। बछवाड़ाक समीप ब्रह्मपुरा गाममे एकटा मस्जिद अखनहु वर्त्तमान अछि जकरा इल्तुतमिश प्रचुर मात्रामे दान देने छलैक। एहिसँ बुझि पड़इयै जे मिथिलाक एहि क्षेत्रपर इल्तुतमिशक प्रभाव रहल हेतैक आ तखने ओ दान देने हेतैक। इल्तुतमिशक समयमे तुगान खाँ बिहारक राज्यपाल छलाह मुदा ताहि दिनक बिहारमे मिथिला सम्मिलित नहि छल। मिथिला बिहारसँ फुटे एक स्वतंत्र राज्य छल जकरा जीतबाक लेल बंगाल आ दिल्ली दुनु समान रूपसँ प्रयत्नशील छलाह। तुगान खाँ अपनाके बंगाल आ बिहारक शासक बना लेलक आ रजिया बेगमसँ ओकर

मंजूरी लऽ लेलक। अहि स्थितिकेँ देखि नरसिंह देव पुनः अपनाकेँ स्वतंत्र घोषित कलेलन्हि आ कर देव बन्द कऽ देलन्हि। मुदा थोड़बे दिनक बाद ओ गिरफ्त भऽ गेला आ दिल्ली लऽ जाएल गेलाह। चंगेज खाँक विरूद्ध अपन बहादुरी देखा ओ पुनः मिथिलाक स्वतंत्रता प्राप्त केलन्हि आ एहि आदेशसँ घुरला जे ओ सोझे दिल्लीकेँ कर देल करौथ।

रामसिंह देवक समयमे मुसलमानी आक्रमणक प्रकोप बढ़ि गेल छल। तुगान खाँक तिरहूत आक्रमणक उल्लेख मुसलमानी स्त्रोतमे भेटइत अछि परञ्च ओहिमे राजाक नाम नहि अछि। कालक हिसाबे तखन रामसिंह देव मिथिलापर शासन करैत छलाह। तुगानक आक्रमणसँ मिथिलाक स्वतंत्रताकेँ धक्का अवश्य पहुँचले परञ्च स्वतंत्रता सुरक्षित रहलै। तुगान प्रचुर मात्रा धन–वित्त प्राप्त केलक। तिब्बती यात्री धर्मस्वामी जे रामसिंहक शासनकालमे एतए आएल छलाह से अपना आँखि सब किछु देखलन्हि आ लिखैत छथि जे मुसलमानी प्रकोपसँ वैशालीक निवासी हड़कम्पित छलाह आ मुसलमानी सेनाक आवागमनसँ जे धुरा उड़ैत छल ताहिसँ सौसे मेघ अन्हार भऽ जाइत छल। तुरूक आक्रमणक संख्या दिन प्रतिदिन बढ़िते जाइत छलैक आ तिरहूतक राजा रामसिंह देव मुसलमानी प्रकोपसँ बचबाक हेतु अपन राजधानीक चारूकात बढ़िया किलाबंदी करौने छलाह। किछु संस्कृतक पाण्डुलिपिक पुष्पिकासँ सेहो इ ज्ञात होइछ जे रामसिंहकेँ मुसलमान सबसँ संघर्ष करए पड़ल छलन्हि आ ओहिमे हुनका अभूतपूर्व सफलता सेहो भेटल छलन्हि। चारूकातसँ मुसलमानक प्रकोप रहितहुँ रामसिंह अपन पूर्वजक जकाँ मिथिलाक स्वतंत्रताकेँ सुरक्षित रखबामे समर्थ भेलाह आ एहि हेतु हिनक शासन काल मानल गेल अछि।

शक्तिसिंहक समयमे मिथिलापर अलाउद्दीनक आक्रमणक विवरण मुल्ला तकियाक **वयाज**मे भेटइत अछि परञ्च कोनो आन साधनसँ एकर संपुष्टि नहि होइत छैक। अलाउद्दीनकेँ हम्मीरक विरूद्ध इ सहायता देने छलथिन्ह आ हिनका **हम्बीरध्वांत भानुः** कहल गेल छन्हि। हिनका संग देवादित्य ठाकुर आ देवादित्यक पुत्र वीरेश्वर सेहो गेल छलथिन्ह। चण्डेश्वरक **कृत्यचिंतामणि**मे एकर उल्लेख अछि। फरिश्ताक विवरणमे अछि जे अलाउद्दीन समस्त बिहारकेँ जीत लेने छलाह मुदा तहिया मिथिला बिहारसँ भिन्न छल आ बिहार कहलासँ मिथिलाक बोध नहि होइत छल। अलाउद्दीन मिथिलाक व्यक्तित्व आ वैभवकेँ देखि ओकरा मित्र बनौने होथि से संभव कारण ओहि मित्रतासँ हुनका कैकटा लाभ छलन्हि। सर्वप्रथम लाभ तँ इ भेलैन्ह जे ओ मैथिल शासककेँ अपना पक्षमे कए हम्बीरक विरोधमे ठाढ़ केलन्हि आ देवादित्यकेँ **'मंत्री रत्नाकर'** पदवीसँ विभूषित केलन्हि। अहि सबसँ बुझि पड़इयै जे ओ बिना युद्ध केनहि मिथिलाकेँ अपना मैत्री भावसँ मिला लेने होएताह आ ओहिठाम अपन प्रभाव क्षेत्र बढ़ौने होएताह। मिथिलामे प्रभाव क्षेत्र बढ़ाएब आवश्यक छल किएक तँ ओम्हर बंगाल दिसि मुसलमान लोकनि मिथिलाक पूर्वी दक्षिणी क्षेत्रमे घुसि रहल छलाह।

अहि प्रसंगक विवरणक पूर्व बलबनक संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक अछि। कहल जाइत अछि जे अपन बंगाल अभियानक क्रममे बलबन **इकलिम–इ–लखनौती** तथा **अरशाह–इ–बंगाल**केँ दबाकेँ अपना अधीनमे केने छलाह आ मुसलमानी बंगालक राज्यपालक रूपमे ओ अपन पुत्र बुगरा खाँकेँ ओतए नियुक्त केलन्हि। बुगरा खाँकेँ ओ कहलन्हि जे अहाँ **"दिआर–इ–बंगाल"**केँ जीतबाक प्रयास करू। किछु गोटएक मत छन्हि जे सोनार गाँवक दशरथ दनुजराय (वंग)क राज्य **'दिआर–इ–बंगाल'**मे छलन्हि। एहि **दिआर–इ–बंगाल**केँ किछु तिरहूत जिलाक दरभंगा बुझैत छथि जे हमरा

बुझबे अप्राँसगिक बुझि पड़इयै कारण अहिठाम दशरथ–दनुजरायक राज्य छल ने कि कर्णाट वंशक। बंगालक द्वार जँ एकरा बुझल जाइक तँ इ क्षेत्र कतहु बंगालक समीप रहल होइत कारण बलबनक समयमे मिथिलामे कर्णाट वंशक राज्य छल आ ओ तीरभुक्तिक नामे प्रसिद्ध छल आ **'दिआर–इ–बंगाल'**क नाम ताधरि प्रचलित नहि भेल छलैक। बलबनक समयमे बिहारकेँ बंगालसँ अलग कैल गेल छलैक से बात ठीक मुदा तखन मिथिला बिहारसँ फराके एकटा स्वतंत्र राज्य छल।

१९५५मे महेशवारा (बेगूसराय)सँ फिरूजएतिगिन (१२९०–९२)क एकटा सुप्रसिद्ध एवं अद्वितीय शिलालेख उपलब्ध भेल अछि जकरा हम पूनासँ प्रकाशित करौने छी। फिरोज एतिगीन बंगालक रूकनुद्दीन कैकश द्वारा नियुक्त एक प्रशासक छलाह जे अपनाकेँ ओहि अभिलेख द्वितीय सिकन्दर आ खानक खान कहने छथि। एहि प्रशासकक नामक एक गोट आर अभिलेख लक्खीसराय (मूंगेर)सँ सेहो प्राप्त भेल अछि। रूकनुद्दीन कैकस बलबनक वंशक छल आ मिथिला क्षेत्रमे ओकर अधिकारक प्रसार अहिबातक संकेत दैत अछि जे शक्तिसिंह आ हरिसिंह देवक समय बंगालक शासक दक्षिणसँ गंगा पार कए गण्डक धरि बढ़ि चुकल छलाह आ कर्णाट शासककेँ ओहि क्षेत्रसँ धकिया चुकल छलाह। कर्णाट शासक लोकनि बंगालक दबाबसँ तबाह भऽ रहल छलाह। मुल्ला तकिआ एहिबातक उल्लेख नहि कएने छथि मुदा अभिलेख जखन साक्षाते मौजूद अछि तखन दोसर साधनक अपेक्षे कोन? गण्डक क्षेत्रसँ अहि शिलालेखक प्राप्ति अहि बातकेँ स्पष्ट कऽ दैत अछि जे ओहिकाल धरि अवैत–अवैत कर्णाट लोकनिक शक्ति दक्षिणमे क्षीण भऽ चुकल छलन्हि। अहि क्षेत्रमे गंगाक दुनु कात बंगालक सीमा धरि दियारा सब अछि–अहि दियारा सबकेँ संकेत **"दिआर–इ–बंगाल"**सँ होइत हो से संभव कारण गंगाक दुनु काते बंगाल जेबा–एबाक रास्ता छल। अहि अभिलेखसँ कर्णाट राज्यक वास्तविक विस्तारक सम्बन्धमे प्रश्न उठब स्वाभाविक बुझि पड़इत अछि। बलबनक बाद बलबनी शाखा बंगालमे स्वतंत्र शासन करए लागल छल आ एतए धरि अपन राज्यक सीमा बढ़ा लेने छल।

एकर बाद छिट–पुट ढ़ंगसँ मुसलमान लोकनि एम्हर–ओम्हरसँ हुलकी–बुलकी दैत रहलाह आ लूट–पाट करैत रहलाह। चारूकात मुसलमानी प्रभावक वावजूदो जे मिथिलाक कर्णाट लोकनि अखन धरि अपन स्वतंत्रता सुरक्षित रखने छलाह, इ कोनो कम गौरवक विषय नहि। लखनौती जेबाक बाटमे मिथिला पड़ैत छल आ तैं एहिपर एबा–जेबा कालमे सब केओ अपन किछु ने किछु बना लैत छलाह। संगठित रूपेँ मिथिलापर सुनियोजित आक्रमण केनिहार व्यक्ति छलाह गियासुद्दीन खलजी। **सुगति सोपान**सँ ज्ञात होइछ मिथिलाक राजनैतिक स्थिति दयनीय भऽ गेल छल। **दान रत्नाकर**क एक श्लोकमे कहल गेल अछि जे मिथिला म्लेच्छ रूपी समुद्रमे डुबि गेल छल (**मग्नाम्लेच्छमहार्णवे.....**)। कहबाक तात्पर्य इ भेल जे हरिसिंह देवक समय तक अवैत मुसलमानी आक्रमणक प्रकोप मिथिलापर बढ़ि गेल छल आ हरिसिंह देव अखन धरि ककरो समक्ष झुकल नहि छलाह जेना ज्योतिरीश्वरक विवरण सँ स्पष्ट होइछ। अपितु हमरा बुझना जाइत अछि जे वो कोनो सुलतानकेँ पराजित सेहो केने छलाह–आव इ सुलतानकेँ छलाह से कहब कठिन? नामक अभाव किछु निश्चित नहि कहल जा सकइयै। नाबालिक होएबाक कारणे हरिसिंह देवकेँ बहुत दिन धरि अपना मंत्री सबक अधीनमे रहए पड़ल छलन्हि।

१३२३–२४मे मिथिलापर गियासुद्दीन तुगलकक आक्रमण भेल। मिथिलापर आक्रमणक पूर्व ओ बंगालपर आक्रमण कएने छलाह मुदा कानूनगोए महोदय कहैत छथि

जे ओ पहिने तिरहूत आ तब बंगालपर आक्रमण केलन्हि। मुदा से मत मान्य नहि अछि। गियासुद्दीनक आक्रमणक विवरण सब मुसलमानी स्त्रोतमे भेटइत अछि, मुल्ला तकिआमे सेहो आ एहि घटनाक एकटा चश्मदीद गवाह सेहो छथि जनिक पोथी **वशातिनुलउन्स** अखनो उपलब्ध अछि आ जकर फोटो कॉपी पटनाक काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थानमे अखनो राखल अछि। ओहि पाण्डुलिपिक बारहम पातपर मिथिलाक राजाक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे ककरो कोनो बात नहि सुनलन्हि, तर्क आ बुद्धिसँ काज नहि लेलन्हि आ अनेरो पहाड़ दिसि पड़ा गेलाह–आगि जकाँ पाथरक पाछु नुका गेला मुदा तइयो चकमक करिते रहलाह। इशामीक अनुसार गियासुद्दीन तिरहूतपर आक्रमण केलन्हि आ ओहिठामक राजा एत्तेक भयभीत भऽ गेला जे बिना कोनो प्रकारक विरोध केने भागि गेला। हिन्दू लोकनि सेहो जंगलमे नुका रहलाह। सुल्तान जखन अपनहि हाथसँ जंगल काटब शुरू केलन्हि तखन सैनिक सेहो ओहिमे जुटि गेला आ तीन दिनमे सम्पूर्ण जंगल साफ भऽ गेल। तकर बाद राजाक किलापर चढ़ाई भेल जे सातटा पैघ–पैघ पानि भरल खाधिसँ घेरल छल। किलापर विजय प्राप्त कए राजाक धन सम्पत्ति सबटा लूटलन्हि आ विरोधीक हत्या केलन्हि। अहमदकेँ अहिठामक शासक नियुक्त कए ओ ओतएसँ वापस गेलाह। फरिश्ता आ मुल्ला तकिआमे हरिसिंह देवक गिरफ्तारक गप्प झूठ अछि कारण **वशातिनुल–उंस**क विवरणसँ इ बात कटि जाइत अछि। वशातिनुलउंस (लेखक–इखतिस्सान)क अनुसार–तिरहूतक राजाकेँ प्रचुर सामग्री उपलब्ध छलन्हि, जन–धनक कोनो अभाव नहि छलन्हि, मजबूत किला छलन्हि, नीक व्यक्तित्व छलन्हि मुदा ओ घमण्डे चूर रहैत छलाह आ विद्रोहक भावनाक् नेतृत्व सेहो करैत छलाह। राजद्रोह हुनकामे कूटि–कूटिकेँ भरल छल। एहिसँ पूर्वक शासकक प्रति कहियो ओ अपन माथ नहि झुकौने छलाह, ने ककरो मातहदी गछने छलाह आ ने कहिओ पराजित भेल छलाह। सुल्तानक आगमनक सूचनासँ ओ भयभीत भऽ गेला आ संगहि चिंतित सेहो। ओ किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ बैसि गेला। एतेक चिंतातुर आ अपाहिज जकाँ ओ भऽ गेला जे सब किछु रहितहुँ ओ सुल्तानक विरोध करबाक वजाय किला छोड़ि भगबाक घोषणा करैत ओ सबसँ तेज घोड़ापर चढ़िकेँ भागि गेलाह। भोरमे जे अपनाकेँ सम्राट बुझैत छलाह तिनके स्थिति साँझमे भिखारि जकाँ भऽ गेलैन। ओ ओतए पहाड़ दिसि भगलाह आ अपनाकेँ पाथरक पाछु नुका लेलन्हि। सुल्तान ओहिठाम बहुत दिन धरि रूकला आ प्रशासनिक व्यवस्था केलन्हि। जे केओ सुल्तानक आज्ञा मानलन्हि हुनका क्षमादान भेटलन्हि आ बाँकीकेँ सजा। सब किछु ठीक ठाक केलाक बाद ओ ओहिठामसँ दिल्ली दिसि विदा भेला। तिरहूत तुगलक साम्राज्यक एकटा अंग बनि गेल आ ओकरा तुगलकपुर सेहो कहल जाइत छल। एवँ प्रकारे कर्णाट कालक गौरव पूर्ण शासनक अंत भेल आ शुद्ध रूपे मिथिलामे मुसलमानी अमल शुरू भेल। एतवा दिन मुसलमान एम्हर–आम्हरसँ हस्तक्षेप करैत छलाह मुदा आव मिथिला दिल्ली सल्तनतक एकटा प्रांत बनि गेल आ एकर स्वतंत्र सत्ता समाप्त भऽ गेलैक जकरा पुनर्स्थापित करबाक प्रयास बादमे शिवसिंह आ भैरव सिंह केलन्हि।

कर्णाट वंशक पराभव भेलापर मिथिलामे ओइनवार वंशक स्थापना भेल आ इ राजवंश तुगलक साम्राज्यक करद राज्य छल। ओना आंतरिक मामलामे जे स्वायतत्ता प्राप्त रहल हौकसँ दोसर बात मुदा वास्तविकता आव इएह जे कर्णाट कालीन स्वतंत्रता लुप्त भऽ चुकल छल आ मुसलमानी प्रभाव मिथिलामे काफी बढ़ि गेल छल। खास कऽ कए तुगलक लोकनिक सम्बन्ध ओइनवार शासकक संग बरोबरि बनल

रहलन्हि आ जखन तुगलक वंशक ह्रास भेल तखन आन–आन शक्ति सब सेहो मिथिलाकेँ धमकावे लागल। बंगाल, जौनपुर, अवध आ दिल्ली सबहिक मुसलमान शासकक नजरि मिथिलापर बनल रहैन्ह आ जखन जे मौका पावैथि सैह हाथ मारि लैत छलाह। कोनो तरहे मिथिलाकेँ चैन नहि छलैक आ बेचारे शिवसिंह आ भैरवसिंहक सत्प्रयासक बादो मिथिला स्थायीरूपेण राजनीतिक क्षेत्र कर्णाटकालीन मर्यादा नहि प्राप्त कऽ सकल। इ तँ धन्य विद्यापति जे अहिवंशक गौरवगाथाक यशोगान कऽ एकरा अमरत्व प्रदान करेबामे समर्थ भेलाह। गियासुद्दीन तुगलकक समयमे तिरहूतकेँ बंगालसँ फूटका कऽ एकटा अलग प्रांत बनाओल गेल छल आ दरभंगामे ओकर राजधानी छल।

ताहि दिनसँ दरभंगा मुसलमानी शक्तिक प्रसारक जे एकटा केन्द्र बनल से बनले रहल जा धरि कि ओहिपर अंग्रेजक कब्जा नहि भऽ गेलैक। ओइनवार वंशकेँ तुगलक लोकनिक हाथे राज्य भेटल छलन्हि तैं ओ लोकनि ओहिवंशक उपकृत छलाह। मोहम्मद तुगलकक समयमे एकर आर प्रसार भेलैक आ तिरहूत पर तुगलक शक्तिक विस्तार सेहो मुदा महत्वाकाँक्षी लोकनिक तँ कतहुँ अभाव नहि अछि आ इएह कारण छल जे बंगालक शमसुद्दीन हाजी इलियास रक्षकक स्थान पर भक्षकक काज केलन्हि आ तिरहूत आ नेपाल पर आक्रमण कए देलन्हि। तुगलक साम्राज्यमे मोहम्मद तुगलकक पगलपनीक चलते जे अव्यवस्था उत्पन्न भऽ गेल छलैक ताहिसँ प्रोत्साहित भए गोरखपुर, बहराइच, चम्पारण, तिरहूत आदिक राजा ढ़ीट भगेल छलाह आ शमसुद्दीन इलियास अपन महत्वाकाँक्षाक पूर्त्ति करबाक हेतु हिनका लोकनिकेँ सजा देवाक ढ़ोंग रचलक। हिन्दू राजा लोकनि आपसमे बटल छलाह जकर परिणाम इ भेल जे इ लोकनि सम्मिलित भए ओकर मुकाविला नहि कऽ सकलाह आ हाजी इलियास अपन विजयक डंका बजबैत हाजीपुर धरि पहुँचि गेल। गोरखपुर धरि ओकर प्रभाव बढ़लैक आ मिथिलामे ओइनवार राजाक अधिकारकेँ ओ सीमित ककए बूढ़ी गण्डकक उत्तरी भागमे राखि देलक आ दक्षिणक समस्त भागपर अपन आधिपत्य स्थापित केलक। समस्तीपुरसँ बेगूसराय धरि आ ओम्हर हाजीपुर धरि इलियासक आधिपत्य बढ़लैक आ समस्तीपुर एवँ हाजीपुरक संस्थापको इएह मानल जाइत अछि। हाजीपुरक सामरिक महत्व ताहि दिनसँ बनले रहल आ मुसलमान कालमे एकर महत्व छल। बंगालोक प्रतिनिधि अहिठाम रहैत छलाह।

जखन फिरोज तुगलक गद्दीपर बैसलाह तखन इलियासक ढ़ीटपनी दिसि हुनक ध्यान आकृष्ट भेलन्हि आ तैं तुगलक साम्राज्यक निर्धारित सीमापर अपन सत्ता स्थापित करबाक हेतु ओ अग्रसर भेलाह। एम्हर जे हिन्दू राजा सब इलियाससँ पराजित भेल छलाह सेहो सब इलियाससँ खिसियैले छलाह आ तैं ओ लोकनि हर्षोत्फ्फुल भेलाह। फिरोज तुगलकक स्वागतमे ठाढ़ भेला गोरखपुर, कारूष, चम्पारण आ तिरहूतक शासक लोकनि। अहि सबपर अपन सत्ता स्थापित कए फिरोज सरयु नदीसँ कोशी नदीक क्षेत्र धरिक इलाकापर अपन प्रशासनिक व्यवस्था ठीक केलन्हि आ ओकरा अपन अधीनमे पुनः आलन्हि। फिरोजक प्रगतिक सूचना सुनितहि इलियास तिरहूतसँ भागल आ फिरोज हुनका पाँछा गेला। इलियास पहिने पण्डुआ पहुँचल आ तकर बाद एकदला। फिरोज तुगलक तिरहूत बाटे बंगाल दिसि गेलाह आ झंझारपुर अनुमण्डलमे सम्प्रति एकटा पिरूजगढ़ अछि जे फिरोज द्वारा स्थापित कहल जाइत अछि। ओहिठामसँ ओ राजविराज लग कोशी पार करैत बंगाल पहुँचलाह आ इलियासकेँ हरौलन्हि। ओहिठामसँ घुरलापर मिथिलाक सहयोगक प्रतिदान स्वरूप ओ

भोगीश्वरकेँ अपन प्रियसखा कहैत मिथिलाक राजा बनौलन्हि। कहल जाइत अछि जे तिरहूतक दुनू भागकेँ मिलाकेँ ओ एक केलन्हि आ समस्त राजक भार ओइनवार लोकनिकेँ देलन्हि। मुदा किछु गोटएक मत छन्हि जे इ काजक श्रेय शिवसिंहकेँ छलन्हि। दिल्ली घुरबासँ पूर्व फिरोज मिथिलाक हेतु अपन कलक्टर आ काजी बहाल केलन्हि। हाजी इलियासकेँ मिथिलासँ भगाकेँ ओहिपर ओ पुनः अपन आधिपत्य स्थापित केलन्हि आ ओइनवार वंशकेँ करद राज्यक रूपमे रहए देलन्हि। इ लोकनि वार्षिक कर तुगलककेँ दैत रहलाह। इलियास अपना अमलमे तिरहूतमे बहुत रास किला बनबौने छल मुदा ओकरा गेलापर ओहि सब किलाकेँ हिन्दू लोकनि तोड़ देलन्हि।

फिरोज तुगलकक दिल्ली चल जेबाक बाद ओइनवार वंशमे आंतरिक संघर्ष प्रारंभ भेलैक आ एम्हर तुगलक लोकनिक प्रभाव सेहो घटे लगलन्हि। गणेश्वरक हत्यासँ मिथिलामे एक नवस्थिति उत्पन्न भेल जकर चर्च हम पूर्वहि कऽ चुकल छी। बिहारमे मलिक वीर अफगान तुगलक लोकनिक प्रतिनिधि छलाह मुदा तिरहूतपर हुनक कोनो अधिकार छलन्हि अथवा नहि से कहब कठिन कारण तिरहूत तखन बिहारसँ अलग राज्य छल। कीर्तिसिंह आ वीर सिंहक जौनपुर यात्राक उल्लेख पूर्वहि भऽ चुकल अछि आ इ लोकनिक जौनपुरक इब्राहिम शर्कीसँ मदति लेबाक हेतु विद्यापतिक संगे ओतए गेल छलाह। फिरोज तुगलकक पोता सुल्तान महमूद तुगलक बिहार आ तिरहूतक राज्य अपन वजीर ख्वाजा जहाँ (जकरा मलिक–उस–शर्क) सेहो कहल जाइत छैक के देने छलाह आ ओ जखन देखलन्हि जे दिल्लीक गद्दी लड़खड़ा रहल अछि तखन ओ अपन स्वतंत्रता घोषित कऽ लेलन्हि। ओ अपन पदवी सुल्तान–उस–शर्क रखलन्हि आ अपनाकेँ जौनपुरक शासक घोषित केलन्हि। आ अवध, बिहार, तिरहूत तथा गंगाक दोआव धरि ओ अपन आधिपत्य कायम रखलन्हि। एतवा धरि निश्चित अछि जौनपुरक आक्रमण मिथिला पर भेल छलैक मुदा ओ कीर्ति सिंह–वीर सिंहक हेतु अथवा बंगालमे मुसलमानी सत्ताक पुनर्स्थापनक क्रममे से कहब कठिन। मुल्ला तकिया विवरणमे इब्राहिम शाह शर्कीक शिलालेखक उल्लेख अछि जाहिसँ तथ्यक पुष्टि होइछ मुदा तत्कालीन घटना क्रमक सम्बन्ध ततेक रास नेऽ बात सब मिझ्झर भेल अछि जे ओहिमे सँ कोनो वास्तविक तथ्यकेँ बाहर करब कठिन गप्प। एहि हेतु अखन आरो प्रयास करए पड़त आ तखनहि हमरा लोकनि ओहि औझरैल जालसँ बाहर हैब। १४६० धरि मिथिला जौनपुरी राज्यक मातहदी राज्य छल तकर कोनो प्रमाण हमरा लोकनिकेँ नहि भेटइत अछि। मुसलमानी साधन सेहो एत्तेक स्पष्ट नहि अछि जाहि आधार किछु ठोस बात कहल जा सकए।

जखन तुगलक साम्राज्यक पतनक बाद चारूकात अस्थायित्व छल आ कोनो निस्तुकी राजाक शासन जमि नहि रहल छल तखनहि मिथिलामे शिवसिंहक उदय भेलन्हि आ ओ मिथिलाकेँ मुसलमानी नियंत्रणसँ मुक्त कऽ अपन सोनाक सिक्का बाहर केलन्हि। बंगाल, जौनपुर, दिल्ली आ आन–आन, छोट–छोट राज्य जखन सब अपन डफली बजा रहल छलाह तखन शिवसिंहे किएक चुप्प बैसितैथ? शिवसिंहक संघर्ष जौनपुरक शर्की राजाक संग भेल छलन्हि। ओना तँ अहि युद्धक पूर्ण विवरण नहि ज्ञात अछि मुदा **कीर्तिपताका**क विवरणसँ एहि युद्धक संकेत भेट सकइयै। हुनका द्वारा घोषित मिथिलाक स्वतंत्रता मुसलमानक आँखिमे काँट जकाँ गरए लागल आ ओ अपन स्वतंत्रताक सुरक्षार्थ अपन जानक बाजी लगौलन्हि। शिवसिंह लड़ैत–लड़ैत मारल गेला अथवा कतहु पड़ा गेला से कहब कठिन। शिवसिंहक बादसँ मिथिलापर

आधिपत्यक हेतु दिल्ली, जौनपुर आ बंगालक बीच घीचांतीरी होइत रहल। शिवसिंहक पछाति कालक्रमेण इलियास वाला बटबाराकँ बंगालक शासन पुनः जीऔलक आ ओहि क्षेत्रपर पुनः अपन स्तित्व कायम केलक। भैरवसिंहक समयमे ओहि क्षेत्रपर बंगालक प्रतिनिधि रहैत छल से वर्धमानक दण्डविवेक ग्रंथसँ ज्ञात होइछ–

"*गौड़ेश्वर प्रतिसरीरमति प्रतापः।*
*केदार रायमवगच्छति दारतुल्यम्*"॥

इ केदार राय बंगाल सुल्तानक प्रतिनिधि छलाह। इ हाजीपुरमे अपन मुख्यालय रखने छलाह। भैरव सिंह हिनका पराजित कऽ पंचगौड़ेश्वरक पदवीसँ विभूषित भेल छलाह आ मिथिलाक दुनू भागकँ एक वेर पुनः जोड़िकँ एक केने छलाह आ संगहि अपनाकँ स्वतंत्र सेहो घोषित केने छलाह। तकर बाद लोदी वंशक प्रभाव मिथिलापर बढ़लैक आ सिकन्दर लोदी मिथिलाक राजाक परम मित्र छलाह जकर उल्लेख हम पूर्वहि कऽ चुकल छी। सिकन्दर जौनपुरकँ हराकँ अपन राज्यक विस्तार पटना, तिरहूत आ सारन चम्पारण धरि केने छलाह। **वाकिआत–इ–मुस्तकी**सँ ज्ञात होइछ जे ताहि दिनमे चम्पारणमे मियाँ हुसैन फारमुली जागीरदार छलाह। आधिपत्यक हेतु लोदी आ बंगालक शासकक बीच संघर्ष होइत रहल आ मिथिला पेड़ाइत रहल। लोदीक समयसँ मिथिलापर मुसलमानक प्रभाव एकदम प्रत्यक्ष होमए लगलैक। बेगूसरायमे एकटा लोदीडीह अखनो अछि आ तुगलकसँ लऽ कऽ शाह आलम धरिक सिक्का ओतएसँ प्राप्त भेल अछि। दिल्ली आ बंगाल दुनु मिथिलापर अधिकार प्राप्त करबा लेल संघर्षशील रहैत छलाह। भगिरथपुर अभिलेख अहिबातक साक्षी अछि जे मिथिलापर चारूकातसँ मुसलमानी प्रकोप खूब जोर–शोरसँ बढ़ि गेल छल।

१५२६मे पानीपतक पहिल लड़ाईमे इब्राहिम लोदी परास्त भेला। बाबरक लेख इत्यादिमे तिरहूतक राजा रूपनारायणक उल्लेख भेटइयै। तिरहूत बाबरकँ कर दैत छल। बाबरसँ पूर्वहुँ तिरहूतमे अपन आधिपत्य कायम रखबाक हेतु मुसलमान लोकनि किछु उठा नहि रखलन्हि। बंगालक राजा नसरत शाह तिरहूतक राजाकँ परास्त केलक आ नसरत शाहक एकटा अभिलेख बेगूसरायक मटिहानी गामसँ प्राप्त भेल छैक। नसरत अलाउद्दीनकँ तिरहूतक गवर्नरक रूपमे नियुक्त केलक। नसरतक अवसान भेलापर मकदूम शाह विद्रोह केलक आ सासारामक अफगान नेता शेरशाहक संग मित्रता सेहो। शेरशाह चम्पारणसँ चटगाँव धरि जीतबाक प्रयास केने छल। हुमायुँक भाएक प्रभाव नरहनमे छलैक जे कि महेश ठाकुरक **सर्वदेश वृतांत संग्रह**सँ बुझना जाइत अछि। हाजीपुरपर शेरशाहक प्रभाव छलैक। १५४७मे हुमायुँ मिरजा हिन्दालकँ हाजीपुरपर कब्जा करबाक आदेश देलकै। १५३० सँ १५४५ धरि मिथिलामे अराजकता रहलैक आ तकर किछु दिनक बाद केशव कायस्थ राजा भेल। दिल्ली सँ इ राज्यक भार हुनका भेटल छलन्हि। शेरशाह आ हुनक वंशजक शासन तिरहूतपर छलन्हि। तेघड़ा क्षेत्रमे मुगल–अफगानक संघर्ष भेल छल। मुगल साम्राज्यक समयमे मिथिलाक हेतु दिल्ली दिसि गवर्नर अथवा मुगलक प्रतिनिधि नियुक्त कैल जाइत छल। दरभंगामे बरोबरि फौजदार रहैत छल। महेश ठाकुरक शासनकालमे बहुत रास पठान सब तिरहूतमे आबिकँ बसि गेल। 1575मे जखन दाउद खाँ अफगान मुगलक विरोधमे विद्रोह केलन्हि तखन मिथिलाकँ पठान सब हुनक संग देलन्हि। दाउदकँ दबेबाक हेतु अकबर बिहार, तिरहूत आ हाजीपुरसँ सेना जमा केने छलाह। सैनिक दृष्टिकोणसँ मुगलकालमे हाजीपुर बहु महत्त्वपूर्ण भऽ गेल छल।

अकबर हाजीपुरकेँ बरोबरि सुरक्षित राखए चाहैत छलाह आ **खान–इ–आजम**केँ बंगाल आ तिरहूतक गवर्नर नियुक्त केने छलाह। मुजफ्फर खाँ चम्पारणक राजा उदीकरणक संग मिलि विद्रोही लोकनिकेँ दबौने छलाह। तिरहूतक राजा सम्राटकेँ कर दैत छलथिन्ह। १५८०क बाद शुभंकर ठाकुर भौरमे मिथिलाक राजधानी बनौलन्हि आ मुगल सम्राटसँ अपन बढ़िया सम्बन्ध बनाके रखलन्हि।

शुभंकर ठाकुरक समयमे जखन अकबर काबुल दिसि गेल छलाह तखन एम्हर तिरहूतमे बदम्क्षीक पुत्र बहादुर शाह साम्राज्यक विरूद्ध विद्रोह केलन्हि आ अपन नामक सिक्का आ खुतबा शुरू क देलन्हि। पश्चात् ओ आजम खाँक नौकर सब द्वारा मारल गेला। पुरूषोत्तम ठाकुर जखन राजा भेलाह तखन हुनका राजस्व जमा करबाक हेतु किला घाटमे बजाओल गेलन्हि आ ओतहि धोखासँ मारि देल गेलन्हि। हुनक पत्नी दिल्ली जाए जहाँगीरक दरबारमे एकर शिकायत कैलक आ पुरूषोत्तमक हत्याराकेँ मृत्युदण्ड देल गेलैक। रानी ओतहि जमुना नदीक निगम बोध घाटपर सती भऽ गेलीह। हुनक बाद नारायण ठाकुरक शासन कालमे कोनो एहेन महत्वपूर्ण घटना नहि घटल आ मुसलमानक सम्बन्ध यथावत रहल। तब सुन्दर ठाकुर राजा भेलाह। १६६१मे औरंगजेबक एकटा फरमान अछि जाहिमे उल्लिखित अछि जे महिनाथ ठाकुर पलामू आ मोरंगकेँ जीतबामे साहाय्य देने छलाह। हुनका समय नवाब मिरजा खाँ दरभंगाक फौजदार छलाह। पलामूक चेरो सरदार प्रतापराय सम्राटकेँ कर देव बन्द कऽ देने छलाह आ अपना क्षेत्रमे तहलका मचौने छलाह। हिनका दबेबाक हेतु औरंगजेबक आदेश एलापर फौजदार महिनाथ ठाकुरसँ मदति लेलन्हि आ पलामूक संग-संग मोरंगक विद्रोही लोकनिकेँ सेहो दबाओल गेल। ओहि हेतु औरंगजेब हिनका धन्यवाद सेहो देने छलथिन्ह। अहिसँ इ स्पष्ट अछि जे मुगल सम्राटक अधीन छलाह। हिनका पारितोषिक हेतु मूंगेर, हवेली, ताजपुर, पूर्णियाँ, धरमपुर आदिक जमीन्दारी भेटलन्हि आ माछक निशान सेहो। मोरंगक विरूद्धक लड़ाइमे नरपति ठाकुर सेहो संग देने छलथिन्ह। महिनाथक बाद नरपति ठाकुर राजा भेलाह। मिरजा खाँक पश्चात मासूमखाँ, नुसेरी खाँ, शाहनवाज खाँ आ हादी खाँक ओहिठामक फौजदार भेला।

नरपति ठाकुरकेँ मकवान्पुरक राजासँ झंझट भेलन्हि। नरपति ठाकुर तखन सूबादारसँ अनुरोध केलन्हि आ सूबादारसँ आश्वासन भेटलापर मकवानीपर आक्रमण केलन्हि। मकवानीक राजाकेँ पकड़िकेँ दरभंगाक फौजदारक समक्ष आनल गेल जतए ओ कर देव स्वीकार केलन्हि। बादमे नवाब फिदाई खाँ (1692 – 1702) ओकरा आ बढ़ाकेँ बेसी कऽ देलन्हि। तकर बाद राघव सिंहक शासन भेल। 1701मे शमशेर खाँ तिरहूतक फौजदार छलाह। ओहि वर्ष राघव सिंह राजा भेल छलाह। अलीवर्दी हुनका राजाक पदवी देने छलन्हि। ओ तिरहूतक राज्य मुकर्ररीपर लऽ लेने छलाह मुदा पारिवारिक संघर्षक चलते केओ एक गोटए जाके नवाबकेँ हुनका विरोधमे खबरि कऽ देलकन्हि आ नतीजा इ भेलैक जे हुनकापर चढ़ाई भऽ गेलन्हि आ हुनक राज्य जप्त कऽ लेल गेलन्हि। रिआज – उस सालातिनक अनुसार भौरक राजाक विद्रोही प्रवृत्तिक कारणे इ आक्रमण भेल छल। पुनः हुनका 'रेवन्यु कलक्टर' बनाकेँ तिरहूत वापस पठैल गेलन्हि। नवाबक दीवान धरणीधरकेँ सेहो इ पचास हजार टाका सालाना दैत छलथिन्ह। एकर बाद विष्णु सिंह राजा भेलाह आ तकर बाद नरेन्द्र सिंह। नरेन्द्र सिंहक शासनकाल महत्वपूर्ण अछि। हिनकहि शासनकालमे कन्दर्पी घाटक लड़ाई भेल छल। राजा रामनारायणसँ हिनका संघर्ष भेल छलन्हि जकर

विवरण हमरा लालकविसँ प्राप्त होइछ। रामनारायणक नेतृत्वमे भिखारी महथा, सलावत राय आ वख्त सिंह पाँच हजार सेनाक संग मिथिलाक राजा नरेन्द्र सिंहपर आक्रमण केने छलाह। रामनारायण भिखारी महथाकेँ आदेश देलथिन्ह जो तिरहूतकेँ सोझे अपना कब्जामे कऽ लौथ। सलावत राय सेहो हुनका संग गेलथिन्ह। राजा नरेन्द्र सिंह सेहो तैयारी कऽ कए बढ़लाह। बक्सी गोकुलनाथ झा, जाफर खाँ आ हालाराय सेहो हुनका संग आगाँ भेलथिन्ह। राजा मित्रजित आ उमराव सिंहकेँ आगाँ पठौलथिन्ह जाहिसँ ओ लोकनि दुश्मनक सेनाकेँ रोकि सकैथ। सलावत राय उमरावकेँ हाथे मारल गेला आ भिखारी महथा कहुना बचिकेँ भागलाह। लालकविक वर्णनक किछु अंश एवँ प्रकारे अछि–

*"रामनारायण भूपतें कहयौ मुखालिफ जाय।*
*हाकिम को मिथिलेशने, दीन्हों अदल उठाय॥*
*सीरकरो तिरहूति को, ताके रचो उपाय।*
*फौजदार महथा भये, संग सलावति राय॥*
*वख्त सिंह कुल उद्धरण, रोड़मल्ल दिलपुर।*
*चौभान भानु भानू सुउअ, एक एक तैं सूर॥*
*याही सब तै नाथ करी, फौजे पाँच हजार।*
*दिग शुल सन्मुख जोगिनी, महथ उतरे पार॥*

*पड़ै उठाय धाय धाय एक एक सँ लड़ै।*
*मनो गजेन्द्र सो गजेन्द्र जंग जोर को धरै॥*
*महीप मित्रजित राव वख्त सिंह को धरै।*
*चखा चखी चोट चोट लोट पोट ह्वैगिरै॥*

एहि युद्धमे नरहनक राजा नरेन्द्र सिंहक संग देने छलाह। कन्दर्पी घाटक युद्ध बलान नदीक तटपर भेल छल। नरेन्द्र सिंह एहि युद्धमे विजयी भेल छलाह। दरभंगाक अफगान लोकनि सेहो करीब तीन मासक हेतु अपनाकेँ स्वतंत्र घोषित कऽ चुकल छलाह। दरभंगाक अफगान आ दरभंगाक महाराज लोकनिक बीच सम्बन्ध बढ़िया छल। अलीवर्दीक विरोधमे दरभंगाक अफगान लोकनि मराठाक संग षडयंत्र करए लागल छलाह। अफगान सब अखनो मोहद्दीनगरक समीपमे छथि। 1765मे जखन अंग्रेजकेँ बंगाल, बिहार आ उड़ीसाक दिवानी भेट गेलैक तखन राजनैतिक स्थितिमे पूर्ण परिवर्त्तन भऽ गेलैक आ मुसलमानी अमल एक रूपें समाप्त भऽ गेलैक। 1774मे तिरहूतकेँ पटनाक अधीन कऽ देल गेलैक आ 1782मे ग्रैण्ड तिरहूतक कलक्टर भऽ कए एला। तखन मुजफ्फरपुर तिरहूतक अधीन छल। मुसलमानी अमलक अंत भेलापर अंग्रेजक अमल शुरू भेल आ मिथिला ओकर एकटा अंश बनि गेल। मुगल कालमे मिथिला तीन प्रकारमे विभाजित छल – हाजीपुर, चम्पारण आ तिरहूत आ अधुना (तिरहूत) मिथिलाक प्राचीन सीमा क्षेत्रक हिसाबे मुजफ्फरपुर, दरभंगा आ कोशी प्रमण्डल मिलाकेँ मिथिला कहाओल जाइत अछि। अंग्रेज अपना सुविधानुसार प्रशासनिक क्षेत्र बनौने छलाह आ आजुक शासक ओकरा आओर अपना सुविधानुसार बना रहल छथि।

अध्याय–१३

# मिथिलामे अंग्रेजी राजक अमल

# (१७६५–१९४७)

१७६४क बक्सरक लड़ाइ भारतक हेतु एकटा निर्णायक युद्ध छल कारण एकरा बाद इ स्पष्ट भऽ गेल छल जे उत्तर भारतक कोनो शक्तिकेँ आब अंग्रेजसँ मुकाबिला करबाक क्षमता नहि रहि गेल छलन्हि। १७६५मे अंग्रेजी इस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ जखन दिवानी भेटलैक तखनहिसँ भारतमे अंग्रेजी राज्यक स्थापनाक वीजारोपण सेहो भऽ गेलैक। १८म शताब्दी उत्तर भारत आ दक्षिण भारतक महत्वाकाँक्षी नेता लोकनिक स्वार्थ पूर्त्तिक युग छल जखन लोग देशक पैघ स्वार्थकेँ बिसैरि अपन छोट–छोट स्वार्थक पूर्त्तिक हेतु देशक बलिदान करैत जाइत गेलाह। तिरहूत औरंगजेब समय धरि मुर्शिदाबादक नवाबक मातहदीमे छल। १७४०सँ बिहार आ तिरहूतक भाग्य मुर्शिदाबादसँ मिलल छल आ ओहिठामक नवाब बिहारमे अपन उपनवाब बहाल करैत छलाह। अलीवर्दी खाँ पहिने बिहारेक उपनवाब छलाह। अलीवर्दीक कृपासँ अंग्रेज व्यापारी लोकनिकेँ थोड़ेक सुविधा प्राप्त भेल रहैन्ह।

१७५६मे अलीवर्दीक मृत्यु भऽ गेलैक आ तकर बाद सिराजुद्दौलाह बंगालक नवाब भेल। अंग्रेज लोकनि अपन कुचक्रसँ पलासीक युद्धमे सिराजकेँ परास्त कए मीरजाफरकेँ १७५७मे नवाब बनौलन्हि। १७६०मीरजाफरकेँ हटा कए मीरकासिमकेँ नवाब बनाओल गेल। मीरकासिम मूंगेरकेँ अपन राजधानी बनौलन्हि। हुनका अंग्रेजसँ पटइत नहि छलन्हि आ बरोबरि खटपट होइत रहन्हि आ अंग्रेज मीरकासिमक चुस्ती चालाकीसँ खार खाइत छलाह। १७६३मे अंग्रेज आ मीरकासिमक बीचक सम्बन्ध आ खराब भऽ गेल आ मीरकासिम दिल्लीक शाह आलम आ अवधक नवाब शुजाउद्दौलाहक सहाय्यसँ अंग्रेजक पटनामे स्थित कम्पनीपर धावा करबाक विचार केलन्हि। एकरे नतीजा भेल १७६४क बक्सरक लड़ाइ। एहिमे अंग्रेज लोकनि विजयी भेलाह आ १७६५मे हुनका दिवानी भेटलन्हि। बंगाल, बिहार आ उड़ीसाक ओ अप्रत्यक्ष रूपेँ मालिक भऽ गेलाह। तहियेसँ मिथिलामे अंग्रेजी राज्यक अमल मानल जा सकइयै। १७६५मे राबर्ट बारकर अपन सेनाक संग उत्तरी बिहारमे विद्रोही जमीन्दारकेँ दबेबाक हेतु ऐलाह। बेतियाक जमीन्दार जे गत दू वर्षसँ अराजक स्थितिसँ लाभ उठाकेँ विद्रोहक झंडा गारि देने छलाह तनिका इ धतेलन्हि। ओ जमीन्दार अपन किलामे नुका रहल छला। बारकरक पहुँचलाक बाद ओ तुरंत हुनकासँ समझौता कऽ लेलन्हि आ सबटा बकिऔता चुका देलन्हि। बारकर बेतियाक सम्बन्धमे बड़ड बढ़िया विवरण देने छथि। १७७२मे जखन बोर्ड आफ रेवन्युक स्थापना भेल तखन तिरहूतक सेहो राजस्वक आधारपर समझौता भेल। १७७४मे तिरहूतकेँ पटनाक अधीन कऽ देल गेलैक। १७७२मे फ्रांसीस ग्रैण्ड तिरहूतक प्रथम कलक्टर भऽ के एलाह। ग्रैण्ड नीलहा कोठीक संस्थापक सेहो छलाह आ हिनके प्रयासे समस्त तिरहूतमे नीलहा कोठीक जाल बिछा देल गेल छल। १७८७धरि ग्रैण्ड

साहेब रहलाह आ एहि बीच ओ समस्त तिरहूतक सर्वेक्षण राजस्वक दृष्टिये केलन्हि। तकर बाद वार्थस्ट एला।

१७६२मे राजा प्रताप सिंह भौरसँ हटाकँ दरभंगामे अपन राजधानी लऽ अनले छलाह। १७७०मे जखन पटनामे रेवेन्यु कौंसिलक स्थापना भेल तखन पुनः प्रताप सिंहकँ अपन जमीन्दारीक मुकर्ररी कम्पनीसँ भेटलन्हि। केली तिरहूतक राजस्व अधीक्षक भऽ कऽ एलाह। १७७१मे प्रताप सिंह आ केलीमे मतभेद प्रारंभ भेल। राजाक ओतए बहुत रास बकिऔता भऽ गेल छलन्हि आ अंग्रेज लोकनि हिनक पुरान स्तित्वकँ नहि रहए देमए चाहैत छलथिन्ह। माधवसिंहक समयमे फेर नव हिसाबे कम्पनीक संग समझौता भेलन्हि, ओना राज्यारोहणक पूर्वहिं माधवसिंहकँ धीरज नारायणसँ कैकटा परगन्ना भेटल छलन्हि। सबटा बकिऔता चुकौलापर राज्य पुनः माधवसिंहकँ वापस भेलन्हि। ताहि दिनमे एक प्रकारक अस्थायित्व छल तैं लगले–लगले परिवर्त्तनो होइत रहैत छल। तथापि १७८१ सँ १७८९ धरि दरभंगा निस्तुकी रूपें माधव सिंहक अधीन रहल। वार्थस्ट कलक्टर दरभंगा आबि महाराजसँ भेट कए अनुरोध केलकन्हि जे दमामी बन्दोबस्त मानि लैथ परञ्च माधवसिंह बड़ा चिंतामे पड़ि गेल छलाह आ कोनो निर्णय लेबामे असमर्थ रहलाह। वो गवर्नर जेनरलसँ अनुरोध केलन्हि जे हुनक राज्य घुरा देल जान्हि। जखन इ सब वार्तालाप छल तखन हुनका कराम अलीक स्टेट सेहो प्राप्त भेलैन्ह (१७९५)। एहिमे १५परगन्नामे ३५टा गाम छल। सरकार बहादुर अहिबातकँ नहि मानि एहि सब दान बला गाँव अपन राज्यमे मिला लेलक। पुनः झंझटक बाद १८००इ.मे इ सम्पत्ति राजकँ भेटलैक। अतंतोगत्वा दरभंगा राज सेहो दमामीबन्दोबस्तक अधीन भऽ गेल।

महाराज छत्रसिंहक समयमे कम्पनीक संग सम्बन्ध आर बढ़िया भेलैक। कम्पनीकँ तखन नेपालसँ खटपट होइत छलैक आ लड़ाइक संभावना बढ़ल जाइत छलैक। कम्पनीक प्रतिनिधि महाराजसँ भेंट केलक आ हिनकासँ अनुरोध केलकन्हि जे संभावित गोरखा आक्रमणक विरूद्ध हिनका लोकनिकँ सतर्क रहबाक चाही। तिरहूतक कलक्टर सीलीकँ सेहो लिखल गेलैक जे ओ क्षेत्रक सब जमीन्दार सबसँ सेना प्राप्त करबाक प्रयास करे। सीली सेजर बैडशाक नाम जे पत्र लिखने छलाह जनकपुरसँ ताहिसँ ज्ञात होइछ जे दरभंगा महाराजकँ छोड़ि केओ सक्रिय सहयोग नहि देने छलन्हि। छत्रसिंह करीब ९हजार टाकाक मदति सेहो देने रहथिन्ह। योग्य सैनिकक व्यवस्था सेहो इ कऽ देने छलथिन्ह। हिनक खुफिया सब अंग्रेजकँ गोरखाक आक्रमणक पूर्व सूचना एवं ओकरा सबहिक बढ़बाक बाटक संकेत सेहो देलकन्हि। नेपालक विरूद्धक संघर्षमे अंग्रेजक मुख्य सहायक (सब तरहें) छत्र सिंह छलाह आ अंग्रेज सेना तखन पुपरी तक पहुँच चुकल। खिसियाकँ नेपालक राजा अपन सैनिककँ इ आदेश देलन्हि जे वो तिरहूत जिलाक सब गामकँ लूट–पाट शुरू करे। जखन नेपालक विरूद्ध अंग्रेजक जीत भेलैक तखन छत्रसिंहकँ महाराज बहादुरक पदवी भेटलन्हि। युद्ध समाप्त भेला उत्तरो अंग्रेजक अनुरोधपर छत्रसिंहक सेना मोतिहारीमे बनल रहल। इ लोकनि सतत अंग्रेजक खैरखाह बनल रहल। महेश्वर सिंहक समयमे सिपाही विद्रोह भेल। अंग्रेजकँ हिन्दुस्तानी जमीन्दारपर सन्देह होइते छलैक आ ताहिपर एकटा कारणो आबि गेलैक। एक अफवाह प्रसारित भेलैक जे बहेड़ाक डिपुटी मजिस्ट्रेट मिस्टर डोवटनपर महाराजक एकटा कर्मचारी बन्दुक उठौलक यद्यपि इ बात किछु दोसर छलैक। महाराज अपन स्वामीभक्ति प्रदर्शित करबाक हेतु अंग्रेजकँ नाथपुर आ पुर्णियाँक बीच डाक व्यवस्था चालू रखबाक हेतु

१६टा घोड़सवार देलथिन्ह। १०० सिपाही सेहो ओ अंग्रेजकेँ पठौलन्हि मुदा ओ लोकनि संशकित रहबाक कारणे ओकरा घुरा देलन्हि। १८५५मे संथाल विद्रोहकेँ दबेबाक हेतु सेहो महाराज हाथी इत्यादि कम्पनीक सैनिककेँ देने छलथिन्ह। महाराज महेश्वर सिंहक बाद कोर्ट आफ वार्डस भऽ गेलैक। तिरहूतमे सिपाही विद्रोहक प्रभाव कोनो रूपें कम नहि छल।

अंग्रेजक संग बढ़िया सम्बन्ध रखितहुँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह देशक नब्जकेँ चिन्हलन्हि आ काँग्रेसक प्रारंभिक अवस्थामे जी जानसँ मदति केलन्हि जकर उल्लेख हम पूर्वहिं कऽ चुकल छी। सिपाही विद्रोहक बाद समस्त भारतपर अंग्रेजक एकछत्र राज्य कायम भेल आ तिरहूत कमीश्नरीक एकटा अंग जिलाक रूपमे दरभंगाकेँ राखल गेल। महेश ठाकुर वंश अंग्रेजी राजक समएमे दरभंगा राजक नामें प्रसिद्ध भेल आ उत्तर बिहारक प्रायः सब जिलामे किछु न किछु हिनका लोकनिकेँ रहबे करैन्ह। रामेश्वर सिंह आ कामेश्वर सिंहक समयमे सेहो ब्रिटिश सरकारक संग सम्बन्ध बढ़िये रहलन्हि आ १९३५–१९३६मे महाराज कामेश्वर सिंह अपन स्तित्वकेँ आर दृढ़ केलन्हि आ हुनकमे बृद्धि भेलन्हि। नेटिभ राज्यक स्थिति प्राप्त करबाक हुनक पैघ अभिलाषा छलन्हि आ अहि दिशामे ओ बहुत प्रयत्नो केने छलाह। सामान्य प्रतिष्ठाक हिसाबे आन जमीन्दारक अपेक्षा दरभंगा राज्यक विशेष महत्व छलैक आ अंग्रेज लोकनि एकरा अपन एकटा पैघ सम्बल मानैत छलाह। १९३५क कानूनक बाद जे राष्ट्रीयताक एकटा वयार बहल तकरा फलें परिवर्त्तन स्वाभाविक भगेल आ १९४७मे भारतक स्वाधीनताक बाद बिहार पहिल राज्य छल जे जमीन्दारी उन्मूलनक हेतु कानून पास केलक आ बिहारसँ जमीन्दारी प्रथा समाप्त भऽ गेल। बिहारक सब जमीन्दार समाप्त भऽ गेला आ ओहि क्रममे मिथिलाक सबसँ पैघ जमीन्दार जे कहियो मिथिलेशो कहबैत छलाह, सेहो समाप्त भऽ गेला।

## II

**तिरहूतमे नीलहा कोठीक इतिहास:-** उत्तर बिहार आधुनिक भारतक इतिहासक दृष्टिकोणसँ बड़ड महत्वपूर्ण मानल गेल अछि कारण नीलक खेती अहिठाम होइत छल आ एकरा हेतु अंतर्राष्ट्रीय बाजार प्राप्त छल। नीलक अपन महत्व होइत छैक आ जखन इ बुझना गेलैक जे उत्तर बिहार एकरा हेतु उपर्युक्त स्थान अछि तखन इस्ट इण्डिया कम्पनीक कार्यकर्त्ता लोकनिक ध्यान अहि दिसि जाएब स्वाभाविके। अंग्रेजक आगमनक पूर्वहिंसँ अहिठाम नीलक खेती बढ़िया जकाँ होइत छल। युरोपमे इ रंग ततेक जनप्रिय भऽ गेल छलैक जे एकर माँग बढ़ि गेल छलैक। भारतवर्षमे सेहो एकर खेतीक प्रश्न किछु विवाद उठल हेतैक जकर कारण स्पष्ट नहि अछि मुदा १८३७ई.क लार्ड मैकौलेक एकटा मेमोरेण्डम छैक जाहिसँ अहि वस्तुपर प्रकाश पड़इयै आ इ आभास भेटइयै जे तकर बादसँ बंगालमे नीलक खेती कम होमए लागल आ नीलक खेतीपर तिरहूतमे विशेष ध्यान दिये जाए लागल।

१७८२ ग्रैण्ड तिरहूतक कलक्टर भऽ कए आएल छलाह आ १७८५मे ओ लिखैत छथि जे ओ अपने तिरहूतमे नीलक खेतीक सूत्रपात युरोपीय पद्धतिपर केलन्हि। इ ओ सबटा अपने खर्चपर केने छलाह। अंग्रेजक सर्वप्रथम फैक्ट्री ओना तिरहूतमे १६५०–१७००क बीच हाजीपूरक समीप सिंघिया अथवा लालगंजमे भेल छल आ तहियासँ अहि क्षेत्रमे अंग्रेजक प्रभाव बढ़ैत गेल आ ग्रैण्ड जखन कलक्टर भऽ कए

एलाह तखन नीलक खेतीकेँ विशेष प्रोत्साहन भेटल। ग्रैण्ड एकरा एकटा उद्योगक हिसाबे विकसित केलन्हि। १७८८क ४फरवरीक एकटा रिपोर्टमे कहल गेल अछि जे तिरहूत कलक्टरीमे जे बारह–गोटए युरोपियन रहैत छथि ताहिमे १०गोटए नीलक खेती करैत छथि। इ बारहो गोटए कम्पनीक नौकर नहि छलाह। एहिमे सँ ६ गोटएक नाम छल–पीटर डी रोजेरियो, जेम्स जेंटिल, जी. डब्लु. एस. शुमान, जेम्स गेलन, जान मिलर आ फ्रांसिस रोज। जेम्स गेलन रोजेरियोक मनेजर छलाह। फ्रांसीस रोज जबर्दस्ती तिरहूतमे राजवल्लभक जागीरमे अपन नीलक खेती शुरू कऽ देने छलाह। १७९३मे नील फैक्ट्रीक संख्या ९ भऽ गेल छल। नील फैक्ट्रीक स्थापनासँ कानूनी व्यवस्था जटिल भऽ गेल छल आ ओहिपर सरकारकँ ध्यान देमए पड़इत छलैक। एकर कारण इ छल कि इ लोकनि तरह–तरहक अन्याय आ जोर जबर्दस्ती करैत जाइत छलाह। १७९३मे तिरहूतक जज नीवकेँ बाध्य भऽ कए डोनबल नामक एक फ्रेंच नागरिक तथा टोमस पार्ककेँ तिरहूत छोड़बाक आदेश देमए पड़ल छलन्हि। टोमस पार्क सरैया आ सिंहियामे बिना कोनो लाइसेंसकेँ बसि गेल छलाह। बिना लाइसेंसकेँ कतहु बसब ताहि दिनमे गैरकानूनी छल। ढ़ोलीक जेम्स आर्नल्डकेँ सेहो जज महोदय ताकिद कऽ देने छलाह जो स्थानीय लोकनिक कुलाचारपर ध्यान राखैथि आ ओकरा विरूद्ध कोनो काज नहि करैथ। एहेन आदेश देबाक कारण इ छल जे जेम्स आर्नल्ड एकटा ब्राह्मणकेँ मारि बैसल छलाह। एवं प्रकारे रोज कोनो ने कोनो समस्या उठिते छल आ एकर विस्तृत इतिहास हमरा लोकनिकेँ मिन्डन विलसनक **"हिस्ट्री आफ बिहार इंडिगो फैक्ट्रीज"**मे भेटइत अछि। ९टा प्रारंभिक नीलक कोठी जे फुजल छल तकर विवरण एवं प्रकारे अछि**:-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | दाउदपुर | - | |
| (ii) | सराय | - | विलियम औखी हण्टर |
| (iii) | ढ़ोली | - | |
| (iv) | अथर | - | जेम्स जेंटिल |
| (v) | शाहपुर | - | रिचार्डसन परविस |
| (vi) | काँटी | - | अकेजेण्डर नामेल |
| (vii) | मोतीपुर | - | '' |
| (viii) | दयोरिया | - | फिंच |
| (ix) | बनारा | - | ल्युयिस किक तथा शुमान |

१७९४मे मात्र ७६७ बीघा १४ कट्ठा जमीनपर नीलक खेती होइत छल मुदा थोड़वे दिनमे ओकर एतेक विकास भेलैक जे समस्त उत्तर बिहारक कोन-कोनमे नीलहा साहेब सब पसरि गेल आ बढ़ियासँ बढ़िया जमीनपर अपन अधिकार कऽ लेलक। १८०३मे २५टा नील कोठी छल जाहिमे प्रमुखक नाम अछि भवराहा (भौर), मुहम्मदपुर, बेलसर, पिपराघाट, दलसिंहसराय, जितवारपुर, तिवारा, कमतौल, चितवारा, पुपरी, शाहपुरूण्डी इत्यादि। १८१०मे कलक्टर अहिबातक अनुशंसा केलन्हि जे २५टा नील फैक्ट्रीकेँ खजानासँ कर्ज देल जाइक कारण इ लोकनि अपना क्षेत्र बेकार सबकेँ काज दैत छथि आ एवं प्रकारे बेकारीक समस्याकेँ दूर करैत छथि। १८१०मे लगभग १०,०००मन नील तिरहूतसँ कलकत्ता पठाओल जाइत छल। चम्पारणमे नेपाल युद्ध समाप्त भेलाक बाद कर्नल हीकी नामक एक व्यक्ति १८१३इ. मे नीलक खेती शुरू केलन्हि। हीकी बारामे अपन फैक्ट्री खोललन्हि। ओकर ठीक बाद राजपुर आ

तुरकौलियामे मोरन आ नहल अपन अपन नीलक कारखाना खोललन्हि। १८४५मे सिरहामे कैप्टेन टाइलर अपन कारखाना खोललन्हि।

१८१६मे चम्पारणमे नीलक खेतीक उल्लेख नहि भेटइयै मुदा १८३०क रिपोर्टमे एकर वर्णन अछि। चीनीक स्थानपर लोग नील उपजाएब शुरू केलन्हि। नीलक खेती अहि हिसाबसँ बढ़ए लागल कि तिरहूतक कलक्टर घबरा गेला। १८२८मे लिखलन्हि जे आब अहिपर रोक लगाना चाही। १८५०मे तिरहूतमे (दरभंगा मुजफ्फरपुरमे) ८६टा नीलक कारखाना भऽ गेल छल। सब गोटए चीनीक कारबार छोड़ि नीलपर उतरि गेल छलाह। नील उद्योगपर युरोपियन लोकनिक एकाधिपत्य छलन्हि। सिपाही विद्रोहक समयमे जे तिरहूतमे बेसी विस्फोट नहि भेल तकर कारण इएह छल जे अहि क्षेत्रमे नीलहा साहेबक बोलबाला आ दबदबा छल आ मजूर सब हिनका सबसँ रोजी रोटी पबैत छल आ तैं दबाबमे रहैत छल। सिपाही विद्रोहक समयमे अहि क्षेत्रमे शांति स्थापनाक भार सरकार हिनके लोकनिपर छोड़ि देने छलन्हि आ इ लोकनि ओकर नीक जकाँ निर्वाह केलन्हि। दलसिंहसराय, तिवारा आ जितवारपुरक कारखाना पुरान छल आ ओहि सबहक बड्ड धाक छलैक। १८७४मे तिरहूतक सबसँ पैघ नीलक कारवार पण्डौलमे छलैक जकर क्षेत्रफल ३०० वर्गमील छलैक।

१८६७–६८मे नीलक खेतीक विरोधमे एकटा जबर्दस्त प्रदर्शन चम्पारणमे भेलैक। रैयतक शोषण चरमोत्कर्षपर छलैक आ ओकर कोनो निदान सेहो नहि बहराइत छलैक। मजदूरकेँ पूरा पारिश्रमिक नहि देल जाइत छलैक। मजदूर लोकनि नीलक खेती करबासँ इंकार करए लागल आ जिउकतिया नामक गाममे अहि विरोधक पहिल उदाहरण भेटइत अछि। आनगामक लोग सब सेहो एकर देखा–देखी शुरू केलक। अहि वस्तुकेँ जल्दी सोझरेवाक हेतु मोतिहारीमे तत्काल कचहरीक स्थापना भेल। रैयतक प्रति थोड़ेक सुविधा सेहो देखाओल गेल। अंग्रेजकेँ शङ्क भेलैक जे अहि आन्दोलनकेँ केओ उसका रहल अछि। आ हुनका लोकनि दृष्टि बेतिया राजपर गेल। १८७६मे बेतिया राजमे अंग्रेज मनेजर बहाल भेल आ तकर बाद फेर अंग्रेज लोकनि नीलक खेती दिस ध्यान देलन्हि। १९म शताब्दीक अन्त धरि चम्पारणमे कुल २१ फैक्ट्री आ ४८टा ओकर शाखा छल। चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगाक नीलहा साहेब मिलि कए १८०१मे अपना सबहिक हेतु एकटा नियम बनौलन्हि आ १८७७ ओ लोकनि **बिहार इण्डिगो प्लांटर्स एशोसियेशन** नामक संस्था सेहो स्थापित केलन्हि। एकर मुख्यालय मुजफ्फरपुरमे छल आ एकरा सरकारसँ मान्यता छलैक।

मूंगेर, भागलपुर, पूर्णियाँक बिभिन्न भागमे नीलक खेती पसरि गेल आ बेगूसराय, सहरसा, पूर्णियाँ आ कटिहार जिलाक बिभिन्न नीलहा कोठीक ताँता लागि गेल छल। १८९६मे मंझौल, बेगूसराय, भगवानपूर, बेगमसराय, दौलतपुर आदि स्थानमे नीलक कारखाना खुजल छल। ओनातँ १८७७सँ अहि जिलामे नीलक प्रसार भऽ चुकल छल। बेगूसरायक कोठी १८६३मे बनल छल। सहरसामे चपराम, सिंहेश्वर, पथरघट, राघोपुर आदि क्षेत्रमे प्रमुख नीलक कोठी सब छल आ तहिना पुर्णियाँ आ कटिहारमे सेहो। एक्के नीलहा साहेबक कैकटा कोठी होइत छल। प्रतापगंज दिसि सेहो एकटा प्रसिद्ध कोठी छल।

तिरहूत प्लांटर्स लोकनि एकटा सैनिक टुकड़ी सेहो बनौने छलाह जकर नाम छल **'दऽ बिहार लाइट हार्स'**। १८५७–५८क सिपाही विद्रोहक समयमे जखन हिनका लोकनिकेँ तिरहूतमे शांति सुरक्षा रखबाक भार देल गेल छलन्हि तखन इ लोकनि सरकारक समक्ष अहि आशयक एकटा आवेदन देने छलाह जे हिनका लोकनिकेँ अपना

हेतु एक प्रकार सैनिक संगठन करबाक अधिकार भेटैन्ह। १८६१–६२ ई. इ अधिकार हिनका लोकनिकेँ भेटलन्हि आ इ लोकनि **'सूबा बिहार माउंटेड राइफिल्स'** नामक एकटा संस्था बनौलन्हि। १८८६मे ओकर नाम बदलिकेँ **'बिहार लाइट हार्स'**कऽ देल गेल। १९१४–१८क प्रथम विश्वयुद्धमे एहिसँ सरकारकेँ बहुत सहायता भेटल छलैक। १९२०मे एक कानून द्वारा एकरा **'आक्जिलियरी फोर्स'**मे परिवर्त्तित कऽ देल गेलैक।

१९म शताब्दीक अन्तिम चरणमे नीलक खेतीकेँ बड़का धक्का लगलैक। १८९६मे जर्मनीमे एकटा सिंथेटिक सस्त नीलक आविष्कार भेलैक आ संसार भरिमे प्रसिद्ध भऽ गेलैक आ एकर परिणाम इ भेलैक जे अहिठामक नीलक खेती समाप्त होमए लगलैक। नीलक दाम २५०सँ घटिकेँ १५०/- मन भगेलैक। जाहिमे नील उपजैत छलैक ताहिमे लोग तम्बाकु आ कुसियारक खेती शुरू केलक। प्लांटर्स एशोसियेसन सेहो अहि प्रकारक निर्णय लेलक। १९१४मे विश्वयुद्धक कारण जब जर्मनीसँ नील एनाए बन्द भऽ गेलैक तखन फेर साहेब लोकनिक ध्यान अहि दिसि गेलन्हि आ पुनः नीलक खेत शुरू भेल मुदा से बहुत दिन धरि चलल नहि। नीलक खेती समाप्त भेल।

## III

**स्वातंत्र्य संग्राम आ मिथिला:-** प्राचीन मिथिलाक सीमा अंग्रेज अमलमे आबिकेँ नहि रहि गेल। अंग्रेजक आगमन कालहिसँ प्रत्यक्ष एवँ अप्रत्यक्ष रूपेँ ओकर विरोध सबठाँ शुरू भऽ गेल छल कारण हुनका लोकनिक स्वार्थ अपन साम्राज्य विस्तारमे छलन्हि, जनताक कल्याणमे नहि। तथापि शक्तिशाली होएबाक कारणे आ अहिठाम आंतरिक फूट रहबाक कारणे हुनका लोकनि जे सफलता भेटलन्हि तकरा परिणाम स्वरूप ओ लोकनि २००वर्ष धरि अहिठाम शासन केलन्हि आ १९४७मे अहि देशक पिण्ड छोड़िकेँ ओ लोकनि गेला।

मिथिलामे सिपाही विद्रोहक बाद जे विरोधक पहिल आवाज उठल छल से उएह जे चम्पारणमे किसान लोकनि नीलहा कोठीक साहबक विरूद्ध उठौने छलाह आ तिरहूतक हिसाबे ओ एकटा महत्वपूर्ण घटना भेल। ओहि विद्रोहक सूत्रकेँ महात्मा गाँधी १९१७मे चम्पारणमे पकड़लन्हि आ सत्यक संग अपन प्रयोग शुरू केलन्हि। अहि दृष्टिकोणसँ इ निर्विवाद रूपें कहल जा सकइयै जे वास्तविक अर्थमे स्वाधीनता संग्रामक श्रीगणेश गाँधीक युगमे मिथिलहिक आँगनसँ भेल। जँ कहियो महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह लाउथर कासल कीनिकेँ काँग्रेसक सेसनक हेतु देने छलाह तँ काँग्रेस ओकर प्रतिदान चम्पारणमे गाँधीजीकेँ नियुक्त कऽ देलक आ चम्पारणमे स्वातंत्र्य संग्रामक जे आगि पजरलसँ तातक जड़ैत रहल जातक कि भारत स्वतंत्र नहि भेल। वैशाली विदेहक गणराज्य परम्पराक अनुरूप अशोक द्वारा चिन्हित एवं शेरशाहक सुशासनसँ पदांकित चम्पारणक पवित्र क्षेत्र गाँधीजीक कर्मभूमि बनि महावीरक अहिंसाकेँ साकाररूप प्रदान केलक। १९१७–१९४७धरि गण्डकसँ कोशी आ हिमालयसँ गंगाधरिक क्षेत्रमे एकसँ एक सपूत जन्म लेलन्हि जे स्वतंत्रताक हेतु अपन प्राणक आहूति देने छलाह। कलकत्तासँ आबि प्रफुल्ल चाकी आ खुदीराम बोस सेहो अपनाकेँ अहि भूमिमे अमर केलन्हि। राष्ट्रीय संग्रामक इतिहास लिखब हमर अभीष्ट एतए नहि अछि मात्र एतबे कहबाक अछि जे स्वातंत्र्य संग्राममे मिथिला कोनो प्रांतसँ

ककरोसँ पाछु नहि छल। १९१७मे जँ गाँधीजी बाट देखौलन्हि तँ १९४२मे मिथिला सेहो अपन सर्वस्व निछावर कऽ देलक हुनके आह्वानपर आ उत्तर बिहार १९४२मे सब तरहें क्रांतिकारी लोकनिक गढ़ बनल छल। सब बिचारक राजनेता मिथिलाक क्षेत्र अपन विचारक भूमिकाक निर्वाह केलन्हि आ हुनके लोकनिक सत्प्रयासे १९४७मे भारतक स्वतंत्रता प्राप्त भेल–ओहिमे मिथिलाक योगदान ओतवे छल जतवा आन कोनो प्रांतक। क्रांतिकारी दलक इतिहासमे सेहो मिथिलाक नाम प्रख्यात छैक।

अध्याय–१४

# मिथिलाक अन्यान्य राजवंशक विवरण

**(i) गंधवरिया राजवंशक इतिहास:-** स्वर्गीय पुलकित लाल दास **'मधुर'** अथक परिश्रम कए गन्धवरियाक इतिहास लिखि स्वनामधन्य श्री भोला लाल दासक ओतए प्रकाशनार्थ पठौने छलाह। कोनो कारणवश इ पाण्डुलिपि (जे कि आब जीर्णावस्थामे अछि) प्रकाशित नहि भऽ सकल आ गन्धवरियाक इतिहासक प्रसंग एकदिन जखन हमरा भोला बाबूसँ गप्प भेल तखन ओ एहि पाण्डुलिपिक चर्च केलन्हि आ हमरा आग्रहपर ओ पाण्डुलिपि हमरा पठा देलन्हि। पाण्डुलिपि देखलापर इ बुझबामे आएल जे मधुरजी गन्धवरियाक इतिहास किंवदंतीक आधारपर लिखने छथि मुदा ताहु हेतु हुनक परिश्रम स्तुत्य एवं सराहनीय अछि। जखन गन्धवरिया कतहु किछु प्रामाणिक इतिहासक सामग्री नहि एकत्रित भऽ सकल अछि ताहि दृष्टिकोणे मधुरजीक इ सत्प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय अछि। सोनबरसा राज केसमे गन्धवरियाक इतिहास देल गेल अछि मुदा ओहुमे जे गन्धवरिया लोकनि सोनबरसाक विरोधमे गवाही देलन्हि ताहि मँहक एकटा प्रमुख व्यक्ति स्वर्गीय श्री चंचल प्रसाद सिंह मुइलासँ पूर्व हमरा व्यक्तिगत रूपें इ कहने गेला जे हुनक अपन जे वयान ओहि केसमे भेल छन्हि से एकदम उल्टा छन्हि तैं गन्धवरियाक इतिहासक हेतु ओकरा उपयोग करबामे ओकरा **'रिभर्स'** कऽ कए पढ़ब उचित। ओहु केसमे जे इतिहास बनाओल गेल अछि से बहुत किछु परंपरेपर आधारित अछि मुदा ओहिमे एक बहुत महत्वपूर्ण बात इ भेटल जे गन्धवरियाक द्वारा देल दानपत्र सब बहुत किछु उपस्थित कैल गेल छल जाहिमे किछु चुनल दानपत्रक अंग्रेजी अनुवादक अंश हम अपन **'हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहूत'**मे प्रकाशित कैल अछि। सहरसा जिलामे गन्धवरियाक एतेक प्रभुत्व छल तइयो ओकर कोनो उल्लेख पुरनका **'भागलपुर गजेटियर'**मे नहि छल आ जखन सहरसा जिला बनल आ ओकर नव गजेटियर बनल तखन ओहिमे इतिहास लिखबाक भार हमरा भेटल आ ओहिक्रममे हम एक पाराग्राफमे गन्धवरियाक चर्च कैल। एकर अतिरिक्त आ कोनो प्रामाणिक इतिहास गन्धवरियाक नहि बनल अछि आ ने अद्यावधि एहि दिशामे कोनो प्रयासे भऽ रहल अछि। एहना स्थितिमे मधुरजीक लिखल गन्धवरियाक इतिहासक मूलकेँ हम अहिठाम प्रस्तुत कऽ रहल छी जाहिसँ ओहि मृतात्माकेँ अपन कृतिक स्वीकृति देखि आनन्द होन्हि। अनापेक्षित बातकेँ हटा देल गेल अछि। गन्धवरिया लोकनिक गन्धवारडीह एखनो शकरी आ दरभंगा टीसनक बीचमे अछि आ हुनका लोकनिक ओतए जीवछक पूजा होइत छन्हि। गन्धवरिया लोकनि पँचमहलामे पसरल छथि– वरूआरी, सुखपुर, परशरमा, बरैल आ यदिया मानगंजकेँ मिलाकेँ **पँचमहला** कहल जाइत छल। जाहिठाम मधुरजीक अंश समाप्त होएत ओतए हम संकेत दऽ देब।

दरभंगा ओ विशेषतः उत्तर भागलपुर (सम्प्रति सहरसा जिला)मे गन्धवरिया वंशज राजपूतक संख्या अत्यधिक अछि। दरभंगा जिलांतर्गत भीठ भगवानपुरक राजा साहेब तथा सहरसा जिलांतर्गत दुर्गापुर भद्दीक राजा साहेब एवँ वरूआरी, पछगछिया, सुखपुर,

बरैल, परसरमा, रजनी, मोहनपुर, सोहा साहपुर, देहद, नोनैती, सहसौल, मंगुआ, धवौली, पामा, पस्तपार, कपसिया, विष्णुपुर एवं वारा इत्यादि ग्राम स्थित बहुसंख्यक छोट पैघ जमीन्दार लोकनि एहि वंशक थिकाह आ सोनबरसाक स्वर्गीय महाराज हरिवल्लभ नारायण सिंह सेहो एहि वंशक छलाह। इ राजवंश बहुत प्राचीन थिक ओ एहि राजवंशक सम्बन्ध मालवाक सुप्रसिद्ध धारानगरीक परमारवंशीय राजा भोज देवक वंशसँ अछि। एहिवंशक नाम **"गन्धवरिया"** एतै आबिकेँ पड़ल। राजा भोज देवक ३५म पीढ़ीक पश्चात् ३६म पीढ़ीक राजा प्रतिराज साह अपन धर्मपत्नी तथा दूइ पुत्रक संग ब्रह्मपुत्र स्नानक निमित्त आसाम गेल छलाह। एहि यात्रा जखन ओ लोकनि फिरलाह तँ पुर्णियाँ जिलांतर्गत सुप्रसिद्ध सौरिया ड्योढ़ीक समीप मार्गमे कतहु कोनो संक्रामक रोगसँ राजा–रानीक देहांत भऽ गेलन्हि।

सौरिया राजक प्रतिनिधि एखनो दुर्गागंजमे छथि। माता–पिताक देहांत भेलापर दुनू अनाथ बालक भूलल–भटकल सौरिया राजाक ओतए उपस्थित भेलाह आ अपन पूर्ण परिचय देलन्हि। सौरिया राज ताहि समयमे बड़ड पैघ आ प्रतिष्ठित छल। ओ दुनू भाइकेँ यथोचित आदर पुरस्कार अपना ओतए आश्रय प्रदान केलन्हि तथा कालांतर उपनयन संस्कारो करा देलन्हि। उपनयनक समय उक्त दुनू भाइक गोत्र अवगत नहि रहबाक कारणे हुनका लोकनिकेँ परासर गोत्र देल गेल जबकि परमारक गोत्र कौण्डिन्य छल। दुनू राजकुमारक नाम लखेशराय आ परवेशराय छलन्हि। ओ लोकनि वीर आ योद्धा छलाह। सौरिया राजक जमीन्दारी दरभंगा राज्यमे सेहो पबै छलन्हि। कोनो कारणे ओहिठाम युद्ध उपस्थित भेलन्हि। राजा साहेब अहि दुनू भाइकेँ सेनानायक बनाए अपन सेना पठौलन्हि। कहल जाइछ जे दुनू भाइ एक राति कतहु निवास कैलन्हि कि निशीथ राति भेलापर शिविरक आगाँ किछु दूरपर एक वृद्धा स्त्रीक कानव ओ दुनू गोटए सुनलन्हि। जिज्ञासा केला संता ओ स्त्री बाजलि ***"जे हम अहाँ घरक गोसाओन भगवती थिकहुँ। हमरा अहाँ लोकनि कतहु स्थान दिअह"।*** एहिपर ओ दुनू भाइ बजलाह जे हम सब तँ स्वयं पराश्रित छी तैं हमरा वरदान दिअह जे हमरा लोकनि एहि युद्धमे विजय पाबी। ओ स्त्री हुनका लोकनिकेँ एक बहुत उत्तम खड़ग प्रदान कैल जकर दुनू पृष्ट भागपर बहुत सूक्ष्म अक्षरमे समस्त दुर्गा सप्तशती अंकित छल। इ खड़ग प्रथम दुर्गापुर भद्दीमे छल पश्चात् महाराज हरिवल्लभ नारायण सिंह ओकरा सोनबरसा आनलन्हि। ओहिमे कहियो बीझ नहि लागल छल। ओ खड़ग एक पनबट्टामे चौपेतल बन्द रहैत छल आ झाड़ि देला संता ओ खड़गक आकारक भऽ जाइत छल। दुनू भाइ युद्धमे विजयी भेला। समस्त रणक्षेत्र मुर्दासँ पाटि गेल आ दुर्गन्ध दूर–दूर धरि व्याप्त भऽ गेल। एहिसँ सौरियाक राजा प्रसन्न भए एहिवंशक नाम **'गन्धवरिया'** रखलन्हि। इ युद्ध दरभंगा जिलांतर्गत गंधवारि नामक गाममे भेल छल। गंधवारि आ अन्यान्य क्षेत्रक हिनका लोकनिकेँ उपहार स्वरूप भेटलन्हि। लखेशरायक शाखामे दरभंगा जिलांतर्गत (सम्प्रति मधुबनी) भीठ भगवानपुरक श्रीमान राजा निर्भय नारायणजी भेल छथि आ परवेशक शाखामे सहरसाक गन्धवरिया जमीन्दार लोकनि छथि। सहरसाक विशेष भूभाग एहि शाखाक अधीन छल। दुर्गापुर भद्दी एकर प्रधान केन्द्र छल।

परिवेशरायकेँ चारि पुत्र भेलन्हि– लक्ष्मण सिंह, भरत सिंह, गणेश सिंह, वल्लभ सिंह। गणेश सिंह आ वल्लभ सिंह निसंतान भेलाह। भरत सिंहक शाखामे धवौलीक जमीन्दार भेल छथि। लक्ष्मण सिंहकेँ तीन पुत्र भेलन्हि– रामकृष्ण, निशंक आ माधव सिंह। एहिमे माधव सिंह मुसलमान भए गेलाह आ नौहट्टाक शासक भेलाह।

**'निशंक'**क नामपर निशंकपुर कुढ़ा परगन्नाक नामकरण भेल। प्रथम एहि परगन्नाक नाम मात्र **'कुढ़ा'** छल बादमे ओहिमे निशंकपुर जोड़ल गेल। निशंककेँ चारि पुत्र भेलन्हि– दान शाह, दरियाव शाह, गोपाल शाह आ क्षत्रपति शाह। दरियाव शाहक शाखामे वरूआरी, सुखपुर, बरैल तथा परसरमाक गन्धवरिया लोकनि छथि।

लक्ष्मण सिंहक ज्येष्ठ पुत्र रामकृष्णकेँ चारि पुत्र भेलन्हि– वसंत सिंह, वसुमन सिंह, धर्मागत सिंह, रंजित सिंह। वसुमन सिंहक शाखामे पछगछियाक राज भेल। धर्मागत सिंहक शाखामे जदिया मानगंजक जमीन्दार लोकनि भेल छथि। रंजित सिंहक शाखामे सोनबरसा राज भेल। एहि वंशक हरिवल्लभ नारायण सिंहकेँ १९०८मे सोनबरसासँ १०–१२मील उत्तर कांप नामक सर्किलमे साढ़े नौ बजे रातिमे शौचक समय मारि देलकन्हि। हिनक एक कन्याक विवाह जयपुरक स्टेटक संम्बन्धीक संग भेल छलन्हि। आ हिनका एकोटा पुत्र नहि छलन्हि। ओहि कन्याक पुत्र रूद्रप्रताप सिंह सोनबरसाक राजा भेलाह। एहि शाखामे सोहा, साहपुर, सहमौरा, देहद, वेहट, वराटपुर, तथा मंगुआक गंधवरिया जमीन्दार भेल छथि। एहिमे साहपुरक राजदरबार सेहो प्रसिद्ध छल–हुनका दरबारमे बिहपुर मिलकीक श्यामसुंदर कवि आ शाह आलमनगरक गोपीनाथ कवि उपस्थित छलाह। स्वर्गीय चंचल प्रसाद सिंह सेहो सोनबरसाक दमाद छलाह।

वंसत सिंहकेँ जहाँगीरसँ राजाक उपाधि भेटल छलन्हि। राजा वसंत सिंह गंधवारिसँ अपन राजधानी हटाकेँ सहरसा जिलामे वसंतपुर नामक गाम बसौलन्हि आ ओतहि अपन राजधानी बनौलन्हि। मधेपुरासँ १८–२०मील पूब इ गाम अछि। वंसत सिंहकेँ चारि पुत्र छलन्हि– रामशाह, वैरिशाह, कल्याण शाह, गंगाराम शाह। प्रथम पुत्रक शाखा नहि चलल। वैरिशाह राजा भेल। कल्याण शाहक शाखामे रजनीक जमीन्दार लोकनि आ गंगारामक शाखामे वाराक जमीन्दार लोकनि भेलाह। इ अपना नामपर गंगापुर तालुका बसौलन्हि। वैरिशाहकेँ दु रानी छलन्हि– जाहिमे जेठरानीसँ राजा केसरी सिंह आ जोरावर सिंह भेलथिन्ह आ छोट रानीसँ पद्मसिंह। जोरावर सिंहक शाखामे मोहनपुर आ पस्तपारक जमीन्दार लोकनि भेलाह। पद्मसिंहक शाखामे कोड़लाहीक जमीन्दार लोकनि भेल छन्हि। राजा केसरी सिंह प्रतिभाशाली व्यक्ति छलाह। हुनका औरंगजेबसँ राजाक उपाधि भेटल छलन्हि। केसरी सिंहक पुत्र धीरा सिंह, धीरा सिंहक कीर्ति सिंह, कीर्ति सिंहक राजा जगदत्त सिंह भेलाह जे बड़ड प्रतापी, दयालु आ दानवीर छलाह। गंगापुर, दुर्गापुर आ बेलारी तालुका हिनका अधिकारमे छलन्हि। इ जनश्रुति विशेष प्रख्यात अछि जे ताहि समयमे दरभंगा राजक कोनो महारानी कौशिकी स्नानक निमित्त अवै छलीह। सिंहेश्वरक समीप बेलारीमे हुनक डेरा पड़ल। इ सुनिकेँ जे इ दोसरा गोटाक राज्य थिकन्हि ओ बजलीह जे हम आन राज्यमे अन्न जल ग्रहण नहि कऽ सकैत छी। जगदत्त सिंह तत्काल बेलारी तालुकाक दानपत्र लिखिकेँ महारानीसँ स्नान भोजनक आग्रह केलन्हि। उक्त बेलारी तालुका हेवनि धरि बड़हगोरियाक खड़ौड़य बबुआन लोकनिक अधीन छल आ तत्पश्चात् राज दरभंगाक भेल। जगदत्त सिंहकेँ चारि पुत्र भेलैन्ह– हरिहर सिंह, नल सिंह, त्रिभुवन सिंह, रत्न सिंह। त्रिभुवन सिंह **'पामा'**मे अपन ड्यौढ़ी बनौलन्हि। मधुरजीक विवरण संक्षेपमे एतबे अछि।

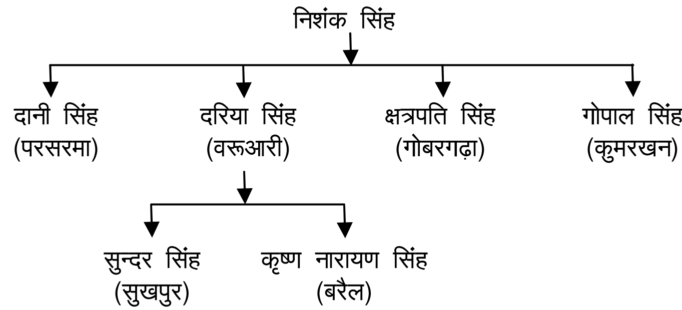
मधुरजीक विवरणसँ आ आन विवरणसँ किछु तफात देखबामे अवइयै। पंचगछियाक राजवंश अपनाकेँ नान्यदेवक वंशज हरिसिंह देवक पुत्र पतिराज सिंहसँ उत्पत्ति मनैत छथि। पतिराज सिंह **'गन्धवारपुर'**मे अपन वास स्थापित केलन्हि आ तै

गन्धवरिया कहौलथि। परञ्च इहो लोकनि अपनाकेँ पतिराज सिंहक पुत्र परवेश रायक वंशज कहैत छथि। रामकृष्ण सिंहक वंशज भेला पछगछिया स्टेट। हिनका लोकनिक वंश वृक्षक अनुसार–

लक्ष्मण सिंहसँ राजक बटबारा एवं प्रकारे भेल–

| | | |
|---|---|---|
| माधव सिंह<br>(मुहम्मद खान)<br>(नवहट्टा) | रामकृष्ण<br>(दुर्गापुर, सोनबरसा<br>पछगछिया इत्यादि) | निशंकसिंह<br>(पंचमहला) |

सोनबरसा, पछगछिया तथा बरूआरी प्रसिद्ध स्टेट मानल जाइत छल। पंचमहलामे बरूआरी मुख्य स्टेट छल। निशंक सिंहक पुत्र दरिया सिंहक वंशज भेला बरूआरी स्टेट। अहिवंशमे राजा कोकिल सिंह प्रख्यात भेल छथि जनिका सम्राट शाह आलमसँ ११७५ हिजरीमे शाही फरमान भेटल छलन्हि। राजाक उपाधि हिनका सम्राटसँ भेटल छलन्हि। बरूआरी तिरहूत सरकारक अधीन छल आ कोकिल सिंहकेँ अहिक्षेत्रक ननकार हैसियत भेटल छलन्हि। गन्धवरिया लोकनिक कुलदेवी **"जीवछ"**क प्रतिमा वरूआरी राजदरबारमे छल आ ओकर पूजा नियमित रूपेँ होइत छल। **'जीवछ'**क प्रतिमाकेँ नोहट्टासँ अहिठाम आनल गेल छल।




एतवा सब किछु होइतहुँ गन्धवरियाक कोनो प्रामाणिक इतिहास नहि बनि पाओल अछि। जे किछु दानपत्रक अंग्रेजी अनुवादमे केसमे भेटल अछि से बेसी भीठ–भगवानपुरक राजा सबहिक। भीठ भगवानपुर गन्धवरियाक पैघ हिस्साक राजधानी छल आ हुनका लोकनिक स्तित्व निश्चित रूपें दृढ़ छलन्हि आ ओ दानपत्र दैत छलाह जकर प्रमाण अछि। दरभंगाक गन्धवरिया लोकनि सेहो अपन इतिहासक रूपरेखा नहि प्रकाशित केने छथि तैं ओहि सम्बन्धमे किछु कहब असंभव। हमरा बुझने ओइनवार वंशक पतनक बाद **'भौर'** क्षेत्रमे राजपूत लोकनि अपन प्रभुत्व जमा लेने छलाह आ स्वतंत्र राज्य स्थापित केने छलाह। खण्डवलासँ हुनका संघर्षो भेल छलन्हि आ ओहि संघर्षक क्रममे ओ लोकनि भीठ–भगवानपुर होइत सहरसा–पुर्णियाँक सीमा धरि पसरि गेला। **"गन्ध"** आ **"भर"** (राजपूत)क शब्दक मिलनसँ गन्धवारि बनल (**'गन्धभर'**) आ ओहि गाँवकेँ ओ लोकनि अपन राजधानी बनौलन्हि। कालांतरमे भीठ–भगवानपुर हिनका लोकनि प्रधान केन्द्र बनल। इतिहासक परंपराक पालन करैत इहो लोकनि अपन सम्बन्ध प्राचीन परमार वंशक संग जोड़लन्हि आ **'नीलदेव'** नामक एक व्यक्तिक

अनुसंधान केलन्हि। ओहिमे सँ केओ अपनाकेँ विक्रमादित्यक वंशज कहलैन्हि आ केओ नान्यदेवक। भीठ भगवानपुरक वंश तालिका तँ हमरा लग नहि अछि मुदा सहरसाक गंधवरिया लोकनिक वंश तालिका देखलासँ इ स्पष्ट होइछ जे परमार भोज आ नान्यदेवसँ अपनाकेँ जोड़निहार गन्धवरिया लोकनि लखेश आ परवेशक अपन पूर्वज मनैत छथि। पूर्वजक हिसाबे सब स्त्रोत एकमत अछि। परंपरामे इहो सुरक्षित अछि जे नीलदेव गंधवारिमे आबिकेँ बसल छलाह आ **'जीवछ'** नदीकेँ अपन कुलदेवता बनौने छलाह। कहल जाइत अछि जे नीलदेव राजा गंधकेँ मारिकेँ अपन राज्य बनौलन्हि। सहरसा जिलामे भगवतीक आशीष स्वरूप राज भेटबाक जे गप्प अछि ताहुमे कैक प्रकारक कथा आ किंवदंती भेटइयै। मात्र एक बातपर सब स्त्रोत एकमत अछि जे हिनका लोकनिकेँ उपनयनक अवसरपर अपन गोत्र याद नहि रहला संता **'परासर गोत्र'** देल गेलन्हि। जा धरि कोनो आन वैज्ञानिक साधन उपलब्ध नहि होइछ ताधरि गन्धवरियाक इतिहास अहिना किंवदंती आ परम्परापर आधारित रहत।

**ii. बनैली राजक इतिहास:-** प्राचीनताक दृष्टिकोणसँ बनैलीक इतिहास सेहो अपन महत्व रखैत अछि। १४म शताब्दीमे गदाधर झा नामक एक विद्वान दरभंगा जिलाक वैगनी नवादा नामक गाममे रहैत छलाह। कहल जाइत अछि जे हिनक विद्वतासँ प्रभावित भए गियासुद्दीन तुगलक हिनका काफी सम्पत्ति दानमे देने छलथिन्ह। हुनकासँ नवम पीढ़ीमे भेला देवनंदन झा जनिका परमानंद झा आ मानिक झा नामक दूटा पुत्र छलथिन्ह। परमानंद झा संस्कृत, फारसी आ अरबीक प्रसिद्ध विद्वान छलाह। शिकारक सेहो हुनका बड़ड शौख छलन्हि। बाघ मारबामे तँ वो सहजहि निपुणते प्राप्त केने छलाह। अपन पूर्वजसँ हिनका पर्याप्त धन सम्पत्ति भेटले छलन्हि आ इ अपन क्षेत्रक पूर्ण मालिक छलाह। क्षेत्रक प्रशासनिक काज लऽ कए हिनका बरोबरि अजीमाबाद जाए पड़इत छलन्हि आ तैं हिनक निपुणताकेँ देखि अठारहम् शताब्दीमे हिनका फकराबाद परगन्नाक चौधरी बना देल गेलन्हि। दिनानुदिन हिनक ख्याति बढ़ैत गेलन्हि परञ्च इ अपन काज सम्पादन करबामे असावधान होइत गेलाह। फलस्वरूप इ अजीमाबादक कोपभाजन बनला आ दरभंगासँ भागि कमला नदी बाटे फरकिया दिसि प्रस्थान केलन्हि। अजीमाबादक सरकारसँ डर बनले रहैन्ह तैं फरकियाकेँ छोड़ि ओ धरमपुर दिसि बढ़ला आ पुर्णियाँक क्षेत्रमे अमौर दिसि चल गेलाह। ताहि दिनमे नवाब आ अंग्रेजमे खटपट चलि रहल छल। एम्हर हिनका लाल सिंह चौधरी आ दुलार सिंह चौधरी दूटा पुत्र उत्पन्न भेलन्हि। हुनक भाए माणिक चौधरीक देहांत भऽ गेलन्हि। माणिक चौधरीक एक पुत्र छलथिन्ह हरीलाल चौधरी। ओहि समयमे अमौरमे भैरव मल्लिक नामक एकटा सम्पन्न कायस्थ सेहो रहैत छलाह जे बड़ड जनप्रिय, निपुण आ उत्साही लोक छलाह आ जिनकर प्रतिष्ठा ओहि क्षेत्रमे अपूर्व छल। ओ पूर्णियाँ आ दिनाजपुर क्षेत्रक कानूनगोय छलाह। इएह अपना ओहिठाम परमानन्द चौधरीकेँ रहबाक प्रश्रय देलन्हि। कृषिकार्य कए अपन पालन पोषण करबाक हेतु परती जमीन सेहो ओ परमानंद चौधरीकेँ देलन्हि।

तकर बादहिसँ परमानंद चौधरीक भाग्य पलटल। पहसाराक प्रसिद्ध राजा इन्द्रनारायण राय एक दिन अपन पालकीपर बैसल कतहु जाइत छलाह कि बाटहिमे परमानन्द चौधरी एकटा रहु माछ मारिकेँ हुनका समक्ष उपस्थित केलन्हि। राजा प्रसन्न भए हुनका अपना ओतए तहसीलदार मनेजरमे बहाल कऽ लेलथिन्ह। परमानन्द शक्तिशाली लोक भऽ गेलाह आ ओहि क्षेत्रमे हुनक प्रभाव बढ़ए लागल। एक दिन पुर्णियाँक नवाब शिकारक हेतु एम्हर एला मुदा हुनका एक्कोटा शिकार नहि भेटलन्हि

तखन परमानंद चौधरी हुनका देखितहि देखितहि एकटा बाघ मारिकेँ देलथिन्ह। नवाब पसिन्न भए हुनका **"हजारी"**क उपाधि देलथिन्ह आ वो आब हजारी चौधरीक नामे प्रसिद्ध भऽ गेलाह। हिनक पुत्र दुलार सिंह कृषि आ व्यापारक माध्यमसँ अपन आर्थिक स्थितिकेँ सुदृढ़ केलन्हि। घी, इलायची, आ लकड़ीक व्यापार ओ नेपालसँ शुरू केलन्हि आ नवाबसँ मिलिकेँ ओहि सब वस्तुकेँ कलकत्ता धरि पठबे लगलाह। फेर हाथीक व्यापार शुरू केलन्हि जाहिमे बड्ड लाभ भेलन्हि। अहि क्षेत्रमे धनीमानी व्यक्तिमे हुनक गिनती होमए लागल। भैरव मल्लिकक धन बिलहि गेल आ ओ शोकाकुल भए मरि गेल। हुनका स्थानपर दुलार सिंह कानुनगोय नियुक्त भेला। एम्हर ताधरि परमानंद चौधरी असजा आ मोरंग तटक तीरा परगन्नाक अधिकारी सेहो भऽ चुकल छलाह। ओम्हर ताधरि राजा इन्द्रनारायण सिंहक महाल कुरसाकाँटाक बन्दोबस्त दमामी बन्दोबस्तक समय इ लऽ लेने छलाह। राजा इन्द्रनारायण हुनक एहि विश्वासघाती कार्यसँ असंतुष्ट भऽ गेल छलथिन्ह। हजारी चौधरीक परोक्ष भेलापर हुनका लोकनिमे आपसी मनमुटाव शुरू भेल। दुलार सिंह हरीलालकेँ अमौरक इलाका दऽ कए अपन घरेलु कलहकेँ शांत केलन्हि। हरीलालक उत्तराधिकारी अयोग्य बहरेला। दुलारसिंह बनैलीमे अपन निवास स्थान बनौलन्हि। ओतहिसँ हिनक प्रभावमे वृद्धि शुरू भेल। दुलार सिंहक दू पुत्र छलथिन्ह सर्वानन्द आ वेदानन्द– सर्वानन्द निसंतान मरि गेलाह। वेदानंदक कार्यकलापसँ वंशक कीर्ति बढ़ल। दुलार सिंहकेँ दोसर विवाहसँ कतेको संतान भेलैन्ह जाहिमे प्रख्यात भेलाह रूद्रानंद सिंह जे अपन पुत्र श्रीनंदनक नामपर श्रीनगर राजक स्थापना केलन्हि। कानूनगोय रहलाक कारणे सरकारक ओतए दुलार सिंहक वेश प्रभाव छल आ अपन प्रभावहिसँ ओ नवहट्टा, धपहर, गोगरी आदि क्षेत्र धरि अपन अधिकारक विस्तार केलन्हि। ओम्हर पुर्णियाँ आ मालदह धरि अपन जमीन्दारी बढ़ौलन्हि। नेपाल युद्धमे सेहो इ कम्पनी सरकारकेँ सहायता देने छलाह। नेपाल विजयक पश्चात् हिनका कम्पनी सरकारसँ राजाबहादुरक उपाधि भेटलन्हि। नेपाल आ अंग्रेजक बीच सीमा निर्णयक समयमे कम्पनी सरकार तीरा परगन्नाक समीप हिनका सातकोस भूमि बन्दोबस्तमे दऽ देलकन्हि।

दुलार सिंहक बाद हुनक पुत्र वेदानंद सिंह राजा भेला आ हुनको कम्पनीसँ राजाक उपाधि भेटल छलन्हि। हुनका समयमे राज दू भागमे बटि गेल। वेदानंद अपन पैत्रिक बनैलीमे रहलाह आ रूद्रानन्द सौरा नदी टपि कए श्रीनगरमे बसलाह। वेदानन्द खरगपुर महाल कीनिके अपना राजमे मिलौलन्हि आ अपन राजक पूर्ण विस्तार केलन्हि। हिनके बनैली राजक संस्थापक कहल जा सकइयै। हिनक विवाह मिथिलामे महेश ठाकुरक वंशजमे भेल छलन्हि। इ विद्या प्रेमी सेहो छलाह आ किछु पोथिओ लिखने छलाह। हिनक बाद लीलानंद सिंह राजा भेलाह। हिनका तीनटा पत्नी छलथिन्ह– प्रथम पत्नीसँ पद्मानंद सिंह आ तेसर पत्नीसँ कुमार कलानन्द आ कृत्यानंद सिंह भेलथिन्ह। लीलानंद सिंह अपना समयक मिथिलाक एक प्रमुख व्यक्ति छलाह। हिनक परोक्ष भेलापर राजा पद्मानंद सिंह राजा भेलाह आ हिनका अंग्रेजी राजसँ सरकारक उपाधि सेहो भेटल छलन्हि। हिनकहि समयमे राजमे बटबाराक मामला शुरू भेल जाहिमे हिनका ७आना आ कुमार कलानंद आ कृत्यानंदकेँ ९आना हिस्सा भेटलन्हि। पद्मानंद सिंह अपना बापे जकाँ दानी छलाह। वैद्यनाथ मंदिरक फाटक बनेबामे हिनक पूर्ण योगदान छलन्हि। महादेवक प्रति हिनक निम्नलिखित कविता प्रसिद्ध अछि–

*"जो अलका पति की सुख–सम्पत्ति देइ मेरो प्रभु भौन भरेंगे।*
*अङ्कलिये गिरि राज सुता, कर पंकज तेसिर आइ धरेंगे॥*
*चन्द्र विभूषण भाल धरे, दुख जाल कराल हमार हरेंगे।*
*पद्मानंद सदा शिवकेँ, हरखाहमखाह निवाह करेंगे॥*

*करै पवित्र जाको दर्शनदिव्य देवन को,*
*सेवाते होत जाके सहजहि सनाथ है।*
*गायें यश जाको, पावें मंगल मनोरथको,*
*छाइ छिति कीरति कृपाल गुणगाथ हैं॥*
*नाथनकेँ नाथको अनाथनकेँ नाथ प्रभु,*
*देवनकेँ नाथ मेरे बाबा वैद्यनाथ हैं॥*

बनारसमे श्यामा मंदिर आ तारा मंदिरक स्थापना हिनके पत्नी लोकनिक प्रयत्ने भेल छल। हिनक पुत्र लोकनिक अकालमृत्यु भऽ गेलन्हि। हिनक वंशजक रानी चन्द्रावतीक कोठी भागलपुरमे अछि।

कलानंद सिंहकेँ सेहो सरकार बहादुरसँ राजा बहादुरक पदवी भेटलन्हि। हिनक दूटा पुत्र भेलथिन्ह कुमार रामानंद सिंह आ कुमार कृष्णानंद सिंह। कृष्णानंद सिंह अपन निवास स्थान सुल्तानगंजक श्रीकृष्णगढ़मे बनौलन्हि। कलानंद सिंहक बाद राजा कृत्यानंद सिंहक प्रभाव बनैली राजमे सबसँ विशेष छल। बिहारक जमीन्दारमे इ सर्वप्रथम ग्रैजुएट छलाह आ अंग्रेजी, हिन्दी आ संस्कृतक असाधारण विद्वान सेहो। खेलकुद आ शिकारमे इ अद्वितीय छलाह। बंगाल–बिहारक काउंसिलमे सेहो इ सक्रिय भाग लैत छलाह आ पटनासँ बिहारी पत्रिकाक प्रकाशन सेहो करौने छलाह। तेजनारायण जुबिली कालेजक आपात् कालमे इ अपूर्व सहयोग दए ओहि कालेजकेँ जीवित रखलन्हि आ ताहि दिनक हिसाबे ६लाखक दान देने छलाह। हिनके दानक स्वरूप ओहि कालेजक नाम तेजनारायण बनैली कालेज पड़ल अछि। हिनको राजाबहादुरक उपाधि छलन्हि आ सनद देवा काल बिहारक राज्यपाल बेली साहेब तेजनारायण जुबिली कालेजमे देल हिनक सराहणीय दानक उल्लेख केने छलाह। भागलपुरमे आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक स्वागताध्यक्ष सेहो छलाह। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ स्थान दियेबामे हिनक अपूर्व योगदान छल। बिहार प्रांतीय संस्कृत सम्मेलनक सभापति सेहो इ छलाह।

वंशवृक्ष
गदाधर झा

११म पीढ़ी–दुलार सिंह चौधरी

| | | |
|---|---|---|
| (१२) सर्वानंद सिंह | वेदानंद सिंह<br>लीलानंद सिंह<br>पद्मानंद सिंह<br>कलानंद सिंह<br>कृत्यानंद सिंह | रूद्रानंद सिंह<br>(श्रीनगर राज्य शाखा<br>कुमार गंगानन्द सिंह) |
| पद्मानंद सिंह | कलानंद सिंह | कृत्यानन्द सिंह |
| चन्द्रानन्द सिंह | रामनंद सिंह | श्यामानंद सिंह |

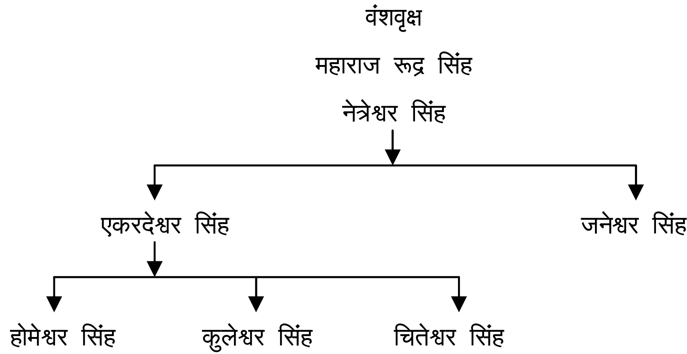
| | | |
|---|---|---|
| सूर्यानन्द सिंह | कृष्णानन्द सिंह (सुलतान गंज) | बिमलानंद सिंह<br>तारानन्द सिंह<br>दुर्गानन्द सिंह<br>जयानन्द सिंह<br>नुनु जी |

**iii. शंकरपुर राजक इतिहास**:- शंकरपुर मधेपुरासँ उत्तर १२मीलक दूरीपर अछि। एकरा बड़गोड़िया स्टेट सेहो कहल जाइत छल कारण बड़गोरिया नामक एकटा गाम दरभंगामे अछि जाहि नामपर अहि राजक नामकरण भेल छल। शंकरपुरक समीप दूटा प्रसिद्ध प्राचीन गढ़ अछि राय भीर आ बुधिया गढ़ी। एकरे समीपमे बेलारी गाम अछि। बेलारीक सम्बन्धमे किंवदन्ती अछि जे वल्लालसेन अहिगामक संस्थापक छलाह। शंकरपुरक समीप मधेली बजार आ वंसतपुर नामक प्रसिद्ध एतिहासिक स्थान अछि जाहिठाम सीत–वसंतक ध्वंसावशेष देखबामे अवइयै।

बेलारी तालुका पहिने दुर्गापुरक अधीन छल। पाछाँ दरभंगा राजक अंतर्गत भेल। खण्डवला कुलक महाराज छत्रसिंहक तेसर पुत्र नेत्रेश्वर सिंहकेँ बबुआनीक हिसाबे शंकरपुर भेटलन्हि। तखनहिसँ शंकरपुर राजक स्थापना मानल जा सकइयै। हिनका दूटा पुत्र छलथिन्ह एकरदेश्वर सिंह आ जनेश्वर सिंह। जनेश्वर सिंह लक्ष्मीश्वर सिंहक अभिभावकत्वमे रहलाह। जनेश्वर सिंह प्रख्यात पुरूष भेल छथि। इ विद्याप्रेमी छलाह आ मधेपुरामे संस्कृत विद्यालयक स्थापना केने छलाह। हिनक पुस्तकालय अपूर्व छल जे हिनक परोक्ष भेलापर लक्ष्मीश्वर पुस्तकालय दरभंगामे पठा देल गेल। वैवाहिक दृष्टिकोणे एकरदेश्वर सिंहक सम्बन्ध सौरिया राज (संस्थापक राजा सुमेर सिंह चौधरी)सँ सेहो छल। एकरदेश्वर सिंहकेँ तीन पुत्र भेलथिन्ह–

होमेश्वर सिंह, कुलेश्वर सिंह, चितेश्वर सिंह।

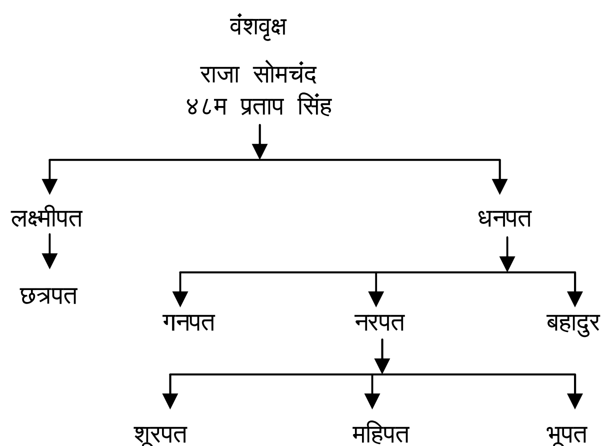
वंशवृक्ष




**iv. हरावत स्टेटक इतिहास:-** इ राज सहरसा आ पूर्णियाँक सीमा रेखापर छल। हरावत परगन्नामे रहलाक कारणे अहि राजक नाम हरावत राज पड़ल। अहि राजक संस्थापक अग्निवंशीय चौहान छलाह परञ्च बादमे इ लोकनि जैन धर्ममे दीक्षा लेलन्हि। सम्राट शाहजहाँक समयमे हिनका लोकनिकेँ राजाक उपाधिसँ विभूषित कैल

गेलन्हि आ राजस्थानसँ इ लोकनि मुर्शिदाबाद पहुँचलाह। हरावत परगन्नामे स्टेट संस्थापकक रूपमे प्रतापसिंहक नाम अवइयै। हिनक व्यक्तित्वसँ प्रभावित भए दिल्ली सम्राट आ बंगालक नवाबसँ हिनका खिल्लत भेटल छलन्हि। हरावतक प्रसिद्ध राजा इन्द्रनारायणक पत्नी इन्द्रावतीक कर्त्तापुत्र विजयगोविन्द सिंह प्रताप सिंहसँ महाजनी कारबार शुरू केलन्हि। इन्द्रनारायणक जमीन्दारी सौरिया राजक नामे प्रख्यात छल जे हिनक पूर्वज सुमेरसिंह चौधरीकेँ मुसलमान सम्राटसँ भेटल छलन्हि। विजय गोविन्दसँ प्रताप सिंहकेँ झगड़ा भेलन्हि आ १८५०मे सम्पूर्ण हरावत परगन्नाक जमीन्दारीपर प्रतापक अधिपत्य भऽ गेलैन्ह। एवँ प्रकारे सौरिया राजक एक महत्वपूर्ण भाग समाप्त भऽ गेल। हुनके नामपर प्रतापगंज बाजार बसल अछि। प्रतापसिंह अहिवंशक सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति भेलाह। अपना मृत्युसँ पूर्वहिं ओ अपन सम्पत्ति अपन दुनू पुत्र लक्ष्मीपति सिंह आ धनपति सिंहमे बटबा देलन्हि। इ दुनू भाए सार्वजनिक काममे सक्रिय रूपसँ भाग लेलन्हि। धनपति सिंह सेहो काफी प्रसिद्ध व्यक्ति भेल छथि। हिनका तीनटा पुत्र छलथिन्ह– गनपत, नरपत, बहादुर। गनपत सिंह अपना नामपर गनपत गंज बजार बसौलन्हि। नरपत सिंह कैसरे हिन्द कहबैत छलाह। हिनक पुत्रमे शूरपत सिंह प्रसिद्ध भेल छथि। ओ महाजनी भाषाक अतिरिक्त आरो कैक भाषाक जानकार छथि। हिन्दीसँ हुनका विशेष प्रेम छलन्हि आ जैन धर्म ग्रंथक हिन्दीमे अनुवाद सेहो करौने छलाह। प्राचीनकालमे हरावत जंगल छल आ **आइनी–अकबरी**मे एकर राजस्वक उल्लेख अछि। नाथपुरक चलते हरावतक बड़ड नाम छल मुदा कोशीक पेटमे सब जाके नष्ट भऽ गेल।

वंशवृक्ष




**v. चक्रवारक इतिहास:-** मिथिलाक पाँजि आ अंग्रेजक इस्ट इण्डिया कम्पनीक कागज देखलासँ ज्ञात होइत अछि जे मुगलकालक अंतिम दिनमे बेगूसराय इलाकामे एकटा छोट–छीन राज चक्रवार ब्राह्मण लोकनि बनौने छलाह जे सम्प्रति चक्रवार भूमिहारक नामे प्रसिद्ध छथि। शुद्ध भूमिहारक दृष्टिकोणसँ लिखल गेल स्वामी सहजानंदक **'ब्रह्मर्षिवंश विस्तर'**मे चक्रवारकेँ भूमिहारमे नहि गिनल गेल छैक आ बहुतो दिन धरि ओ लोकनि मैथिल कहबैत छलाह। चक्रवारक मूल छन्हि **'बेलौंचे सुदइ'**।

स्थानीय परम्पराक आधारपर ज्ञात होइछ जे चिरायुँमिश्र नामक एक व्यक्ति बेलौंचे डीहसँ उपटिकें बेगूसराय जिलाक साम्हो ग्राममे आबिकें बसि गेल छलाह। मुल्ला तकियाक वयाजसँ इ ज्ञात होइछ जे ओ हाजी इलियास तिरहूत राजकें दू भागमे बटने छल आ गंडकक दक्षिणी भागपर अपन अधिपत्य स्थापित कए बेगूसराय क्षेत्र धरि अपन प्रभाव बढ़ा लेने छल। फिरोज तुगलक पुनः तिरहूतक सम्पूर्ण राज्य भोगीश्वरकें हस्तांतरित कऽ देने छलाह। मिथिलाक ब्राह्मण शासक, ओइनवार वंशक लोग, आंतरिक मामलामे स्वतंत्र छलाह परञ्च दिल्लीक प्रभुताक मनैत छलाह। ओहि कालमे जे एक प्रकारक अस्तव्यस्तता छल तकरा चलते बहुत रास मैथिल ब्राह्मण अपन जीविकोपार्जनक हेतु चारोकात बहराइत गेलाह। तेरहम–चौदहम शताब्दीमे चिरायुँ मिश्र सेहो गंगा स्नान करबाक दृष्टिये साम्हो दिसि पहुँचलाह आ ओतुका प्राकृतिक छटा देखि आकृष्ट भए गेलाह आ ओतुके लोकक आग्रहपर ओतए बसि गेलाह। चक्रवार परम्परामे तँ इ कथा सुरक्षित अछि जे तहियेसँ हुनका लोकनि राज्य ओतए बनि गेलन्हि आ चक्रवारक प्रभाव पूर्णियाँसँ बक्सर धरि गंगाक दुनूकात पसरि गेल। तुगलक कालीन मलिक वायासँ संघर्ष हेबाक कथा सेहो चक्रवार परम्परामे सुरक्षित अछि। (अहि प्रसंगमे देखु–हमरे लिखल–**'चक्रवारस आफ बेगूसराय'**)

अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मुगल साम्राज्यक विघटन प्रारंभ भऽ गेल छल। प्रांतीय राज्यपाल लोकनि अपन स्वतंत्रता घोषित करए लागल छलाह। एहना स्थितिमे चक्रवार लोकनि सेहो अपनाकें बेगूसराय क्षेत्रमे स्वतंत्र घोषित कए देलन्हि। हुनक स्वतंत्र राज होएबाक सबसँ पैघ प्रमाण इ अछि जे चक्रवार राजक विभिन्न व्यक्ति अपन हस्ताक्षर आ मुद्रासँ युक्त अनेको दानपत्र देने छथि। चक्रवार राजा बख्तावर सिंहक एक भूमिदान पत्रसँ इ प्रतीत होइछ जे हुनक अधिपत्य दलसिंहसराय धरि छल। **"महाराज बख्तावर सिंह देवदेवानाम्"**–क उपाधिसँ सेहो इ सूचित होइछ जे ओ मात्र एक सामंतेटा नहीं अपितु अपना प्रदेशक एक स्वतंत्र शासक सेहो। कम्पनीक कागजातमे बख्तावर सिंहक उल्लेख चक्रवारक राजाक रूपैं भेल अछि। राजा शिवदत्त सिंह चक्रवारक एकटा दानक मान्यता अलीवर्दी स्वीकृत केने छल आ ओहि दानकें ओ यथावत् रहए देने छल। इहो कहल जाइछ जे राजा बख्तावर सिंहक पितृव्य रूको सिंह फरकिया परगन्नाकें लूटने छलाह जे तखन राजा कुंजल सिंहक अधीनमे छल। रूको सिंह १७३०मे कुंजल सिंहक हत्या कऽ देलन्हि।

कम्पनीक लेखसँ बुझि पड़इयै जे १७१९धरि चक्रवार लोकनि बेगूसरायमे प्रभुता संपन्न राज्यक रूपमे स्वीकृत भऽ चुकल छलाह। ओ लोकनि सरकारकें लगान देब बन्द कऽ देने छलाह आ मूंगेरसँ पटना धरि गंगा नदीक मार्गपर नियंत्रण सेहो कऽ लेने छलाह। ओहि मार्गसँ जाइबला सब नावकें रोकिकें ओ लोकनि कर वसूल करैत छलाह आ ओकरा लूटितो छलाह। अंग्रेज कम्पनीकें अपन नावक संग सेना सेहो पठवे पड़इत छलैक। कोन्रा आ अन्य स्थानमे चक्रवार लोकनि सबल पड़इत छलाह। चक्रवार लोकनि अंग्रेजक नावपर आक्रमणो करैत छलाह आ अंग्रेज आ चक्रवारक बीच बरोबरि युद्ध होइत छल। अंग्रेज लोकनि १७२१मे बख्तावर सिंहकें चक्रवारक राजा मानि लेलाह। अलीवर्दी चक्रवारकें पराजित करबामे सफल भेलाह। कहल जाइत अछि जे १७३०मे विश्वासघात कऽ कए अलीवर्दीक आदमी चक्रवार राजाकें मारि देलक। हालवेल अपन पोथीमे अहि विश्वासघातक वर्णन केने अछि। ओ चक्रवार राजा कोन छल तकर नाम नहि भेटइत अछि कारण बख्तावर सिंह अलीवर्दीसँ नीक सम्बन्ध स्थापित कऽ लेने छलाह आ बादमे अलीवर्दीक अभियानमे हुनक मदति सेहो

केलथिन्ह। चक्रवार वंशक दलेल सिंह टेकारी राजक एक महत्वपूर्ण पदाधिकारी छलाह आ राजा मित्रजित सिंहक प्राण बचेबामे सहायक भेल छलाह। १७९३मे दमामी बन्दोबस्तक समय कार्नवलिस साम्होक बन्दोबस्त चक्रवार दिग्विजय नारायणक संग कऽ देलक। अखनो धरि बेगूसराय जिलाक बारह गाम चक्रवार लोकनि पसरल छथि आ अपन प्राचीन इतिहासक अध्ययनसँ गौरवान्वित होइत छथि। चक्रवार कालमे बेगूसरायक महत्व काफी बढ़ि गेल छल आ एकर प्रमाण हमरा कम्पनी रेकार्डससँ भेटइत अछि।

**vi. नरहनक द्रोणवार वंश :-** द्रोणवार लोकनिकेँ छथि, कहाँसँ एलाह आ कोना अहिठाम अपन राजक स्थापना केलन्हि तकर कोनो प्रामाणिक इतिहास नहि भेटैछ आ अपन अथक परिश्रमक बाबजूदो हम कोनो ठोस सामग्री जुटेबामे समर्थ नहि भेलहुँ अछि। इ लोकनि पश्चिमसँ एलाह आ एक परम्पराक अनुसार कन्नौजसँ। जँ अहि परम्परामे विश्वास कैल जाइक तखन तँ हमरा बुझि पड़इयै जे कोलाञ्चसँ ब्राह्मण लोकनिकेँ बजाकेँ जे दान देल जाइत छल ताहिकालक ओहिमहक कोनो शाखा द्रोणवारक पूर्वज रहल हेथिन्ह। पंचोभ ताम्रपत्र अभिलेखसँ स्पष्ट अछि जे १३म शताब्दी धरि कोलाञ्च ब्राह्मणकेँ आमंत्रित कए दान देल जाइत छलन्हि। द्रोणवार परम्परामे कहल जाइत अछि जे कन्नौज से जे द्रोणवारक शाखा तिरहूत अवइत छल ताहिमे सँ किछु गोटए बाटहिमे गाजीपुरमे रूकि गेलाह। कहल जाइत अछि जे तिरहूतमे **'द्रोणवार'** लोकनि **'द्रोणडीह'**सँ आएल छथि। दोसर परम्पराक अनुसार हिमालयक तलहट्टीमे द्रोणसागर नामक कोनो ताल अछि जकर चारूकात बहुत रास ब्राह्मण बसैत छलाह आ तैं इ लोकनि द्रोणवार कहौलन्हि। रेलवे बोर्ड द्वारा प्रकाशित **'तीर्थाटन–प्रदीपिका'** नामक पोथीमे काशीपुर द्रोणसागरक वर्णन अछि। पाण्डव लोकनि अपन गुरू द्रोणाचार्यक हेतु **'द्रोणसागर'**क निर्माण केने छलाह।

सरैसा परगन्नाक द्रोणवारक ओतए जे मैथिल पंडितक लिखल हस्तलेख सब अछि ताहिमे ओ लोकनि द्रोणवारक हेतु **'द्रोणवंशोद्भव'** शब्दक व्यवहार कएने छथि। द्रोणवार लोकनि अपनाकेँ द्रोणक वंशज कहैत छथि आ पश्चिमक वासी सेहो। मुसलमानी उपद्रव बढ़लाक बाद इ लोकनि अपन मूलस्थानसँ भगलाह आ ओहि क्रममे एक शाखा तिरहूतमे आबिकेँ बसलाह। विद्यापति अपन लिखनावलीमे द्रोणवार पुरादित्यक उल्लेख केने छथि जिनक राज नेपालक तराइमे छल आ जाहिठाम विद्यापति लखिमाकेँ लऽ कए प्रश्रय लेने छलाह। परमेश्वर झाक अनुसार शिवसिंह रनिवासक सब स्त्रीवर्गकेँ विद्यापति ठाकुरक संग कए नेपालक तराइमे रजाबनौली गाम सप्तरी परगन्नाक अधिपति निजमित्र पुरादित्य नामक द्रोणवंशीय दोनवार राजाक शरणमे पठौलन्हि। पुरादित्य द्रोणवार हुनका सबहिक सम्मानपूर्वक रक्षा केलन्हि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे ओइनवार वंशक शिवसिंह आ द्रोणवार वंशक पुरादित्यक मध्य घनिष्ट मित्रता छल। अहिठाम विद्यापति लिखनावली लिखलन्हि आ भागवतक प्रतिलिपि सेहो तैयार केलन्हि।

द्रोणवारक बस्ती देकुलीक सम्बन्धमे परमेश्वर झा लिखैत छथि जे तेसर देकुली मुजफ्फरपुर जिलामे शिवहर राजधानीसँ एक कोस पूर्व सीतामढ़ी सड़कसँ दक्षिण भागमे अछि, ताहिमे एक बहुत खाधिमे एक शिवलिंग भुवनेश्वर नामक छथि आ एहि गामक विषयमे बहुत रास पुरान कथोपकथन अछि जाहिमे कौरव पाण्डवक उल्लेख सेहो अबैछ। संभव जे इ देकुली द्रोणवारक मूल स्थान रहल हो आ एतहिसँ ओ लोकनि चारूकात पसरल होथि। द्रोणवारक संघर्ष बौद्ध लोकनिसँ तिरहूतक सीमामे

भेल छलन्हि से हमरा लोकनिकेँ विद्यापतिसँ ज्ञात होइछ। एहिसँ इहो सिद्ध होइछ जे द्रोणवार लोकनि सेहो मिथिलाक उत्तरांचलमे प्रबल शक्तिक रूपमे विराजमान छलाह आ मैथिल ब्राह्मणहि जकाँ बौद्ध विरोधी सेहो छलाह। आन द्रोणवार वंशक एहेन प्रमाण आर कहाँ भेटइत अछि। द्रोणवार लोकनि मूलरूपेण तिरहूतक अंशमे प्राचीन कालमे रहल हेताह आ नेपालक तराइ धरि अपन राजक विस्तार केने होथि से संभव।

द्रोणवार परम्परा एकटा कथा इहो अछि जे बुद्धक देहावसान भेलापर जखन हुनक अस्थि वितरण होइत छल तखन मिथिलामे द्रोण ब्राह्मण लोकनि हुनक अस्थि अनने छलाह। जँ ताहिकाल **'द्रोणवार'** लोकनि मिथिलामे उपस्थित छलाह तखन तँ हमर इ मत आरो पुष्ट होइछ जे द्रोणवार अहिठामक थिकाह आ मिथिलाक आन ब्राह्मण जकाँ हिनको उत्पत्ति तिरहूतेमे भेल छलन्हि। मात्र अस्थि संचय करबा लेल ओ द्रोण लोकनि ओतए दूरसँ एतए नहि आएल होएताह। कालक्रमेण ब्राह्मण कौलिक कार्यसँ अपनाकेँ फराक कऽ लेलापर इ लोकनि भूमिहार कऽ कोटिमे राखल गेल होथि से संभव।

एक दोसर परम्पराक अनुसार नेपाल दरबारसँ द्रोणवार लोकनिकेँ राजाक उपाधि भेटलन्हि आ हिनक शौर्यकेँ देखैत मकमानी जिलाक भार हिनका लोकनिकेँ देल गेल छलन्हि। द्रोणवार राजा अभिमान राय प्रसिद्ध भेला आ मकमानीमे हिनक अधिपत्य छलन्हि आ इ लोकनि **'पाण्डेय'** कहबैत छलाह। अभिमानक मृत्युक पश्चात् हुनक कर्मचारी लोकनि महारानीकेँ लऽ कए मिथिला प्रांतक दक्षिणी सीमापर स्थित बेलौंचे सुदइ मूलक चक्रवार ब्राह्मणक राज्यमे पहुँचा देलन्हि। अभिमान रायक पुत्र छलाह गंगाराम। गंगाराम अहिवंशक सर्वप्रसिद्ध व्यक्ति भेल छथि आ हिनका सम्बन्धमे बहुत रास किंवदंती अछि। चक्रवार राजा अपन कन्यासँ गंगारामक विवाह करौलन्हि। सार–बहनोइमे सामान्य बाताबाती भेलापर ओ राज्य छोड़ि देलन्हि आ अपन पत्नीकेँ संग लऽ कए ओतएसँ चलि देलन्हि। ससूरसँ सेनाक साहाय्य भेटलन्हि आ ओ सरैसा परगन्नामे अपन राजक स्थापना केलन्हि। सरैसा परगन्नाक **"पुनाश"** गाममे हिनक पूर्वज पहिने रहैत छलथिन्ह तैं सरैसा परगन्नामे राज्य स्थापनाक निर्णय इ केलन्हि। ताहि दिनमे ओहि सब क्षेत्रपर मुसलमानक आधिपत्य छल। ताजखाँ (ताजपुरक संस्थापक) आ सुल्तानखाँ (सुल्तानपुरक संस्थापक)केँ मारि इ मोखामे अपन राजधानी बनौलन्हि। सरैसा परगन्ना नरहनसँ जन्दाहा धरि करीब ४०मील नाम अछि आ पोखरैरासँ सुल्तानपुर घाट धरि करीब २०मील चाकर अछि। हिनक एक विवाह मैथिल ब्राह्मण परिवारमे सेहो छलन्हि। पहिल पत्नीक नाम भागरानी आ दोसराक नाम मुक्तारानी छलन्हि। हिनक दुनूरानी मोखागढ़मे सती भेलथिन्ह।

भागरानीसँ उत्पन्न पुत्र भेला राय बड़ड प्रतापी भेलाह। भेला राय मोखा सुल्तानपुरमे रहलाह आ मालाराय **'वीरसिंहपुर–पोखरैरा'**मे। भेला रायक वंशज नरहनक पूर्वज भेलाह। अहिवंशक लोग बनारसक गद्दीपर छथि। भेला रायक पुत्र विक्रमादित्य रायकेँ सरैसा परगन्नाक **'चौधराइ'** भेटलन्हि। विक्रमादित्य राय बड़ा पराक्रमी छलाह। इ अपना नामपर **'विक्रमपुर'** गाम बसौलन्हि। हिनक पुत्र हरेकृष्ण राय नरहनमे अपन दोसर राजधानी बनौलन्हि।– प्रधान राजधानी मोखा आ दोसर नरहन। वंशवृक्षक अनुसार इतिहास एवं प्रकारे अछि–

द्रोणवार हरगोविन्द राय–

चौधरी केशवनारायण राय (सरैसा, भूषारी, नैपुर परगन्ना)

फतेह नारायण

अजीत नारायण

चित्र नारायण (इमादपुर परगन्नाकेँ मिलौलन्हि)

अजीत नारायण–सम्राटसँ टभका, सुरौली, लोमा, विझरौली, ननकार, लाखिराजक रूपमे हिनका भेटलन्हि। हिनक

वैवाहिक सम्बन्ध टेकारीसँ छलन्हि।

हिनक जेठपुत्र दिग्विजय नारायण बनारसक राजा बलबंत सिंहक बेटीसँ विवाह केलन्हि।

वारेन हेस्टिंग्सक मदतिसँ बलबंत सिंहक बाद चेतसिंह बनारसक गद्दीपर बैसलाह। जखन चेतसिंह वारेन हेस्टिंग्ससँ पराजित भेलाह आ बनारसक राजगद्दी खाली भेल तखन नरहनक अजीत नारायणक पौत्र आ दिग्विजय नारायणक पुत्र वारेन हेस्टिंग्सक अनुमतिसँ बनारसक गद्दीपर बैसलाह। हुनक नाम छलन्हि राजा महीप सिंह आ इ सालाना ३८ लाख टाका वारेन हेस्टिंग्सकेँ देबाक वचन देलथिन्ह। तहियासँ बनारसक गद्दीपर हिनके वंशज शासन कै रहल अछि।

महीप सिंह
उदित सिंह
इश्वरी प्रसाद सिंह
प्रभुनारायण सिंह
आदित्य नारायण सिंह

दिग्विजयक भ्राता नरहन स्टेटक मालिक भेला। महाराज दरभंगाक जे नवाबक संग कन्दर्पी घाटक लड़ाइ भेल छल ताहिमे सर्वजीत सिंह नरेन्द्र सिंहक दिस छलाह। हुनक भाए उमराव सिंह नरहनक सैनिकक नेतृत्व करैत छलाह आ एकर विवरण हमरा लाल कविसँ भेटइत अछि। नरेन्द्र सिंह प्रसन्न भए हिनका दुनू भाइकेँ पुरस्कृत करए चाहैत छलथिन्ह मुदा ओ लोकनि पुरस्कार लेबासँ नकारि गेलाह तथापि फरकिया परगन्नामे हिनका लोकनिकेँ किछु गाँव भेटलन्हि। दरभंगा राज परिवारमे एहि हेतु नरहन राज परिवारक बड़ड सम्मान छलैक। हिनका लोकनिमे एतेक नीक सम्बन्ध छल जे महाराज प्रताप सिंहक समयमे जखन नवाबक दबाब बढ़ल तँ प्रताप सिंह अपन परिवारकेँ नरहन पठा देलन्हि आ अपने बेतिया चल गेलाह। रामेश्वर सिंह धरि इ सम्बन्ध ओहिना बनल छल।

सर्वजीत
रणजीत
रूप नारायण
राम नारायण
परमेश्वरी प्रसाद सिंह

नरहन दरबारमे चित्रधर मिश्र आ चंदा झा सन प्रसिद्ध विद्वानकेँ प्रश्रय भेटल छलन्हि आ महामहोपाध्याय गंगानाथ झासँ सेहो हिनका लोकनिक बढ़िया सम्बन्ध छल। राम नारायणक सम्बन्ध नेपालक जंगबहादुर शाहसँ सेहो छल कारण दुनू गोटएकेँ सोनपुर मेलामे भेट भेल छलन्हि। राम नारायण नेपालो गेल छलाह।

**vii. बेतिया राजक इतिहास:-** सोलहम शताब्दीक उतरार्द्धमे उग्रसेन सिंहक पुत्र गज सिंह द्वारा बेतिया राजक स्थापना भेल। गज सिंहकेँ शाहजहाँसँ राजाक पदवी

भेटल छलन्हि। इ मिथिलाक राजा महिनाथ ठाकुरक समकालीन छलाह आ हुनका समयमे दुनूक बीच मनमुटाव आ खटपट सेहो भेल छल। मुगल साम्राज्यक कमजोर भेलापर उत्तर बिहारक सबटा राज्य स्वतंत्र हेबाक प्रयासमे लागि गेल छल आ बेतिया राज एकर कोनो अपवाद नहि कहल जा सकइयै। १७२९मे अलीवर्दी बेतिया राजपर आक्रमण कए ओकरा अपना अधीन केने छलाह। १७४८मे बेतियाक राजा लोकनि दरभंगा अफगानक संग मित्रता केलन्हि। दरभंगा अफगान अलीवर्दीक सेना द्वारा पराजित भेला। दरभंगा अफगानकेँ बेतियाक राजा सब बरोबरि मदति करैत रहैथ। अलीवर्दीक बाद पुनः बेतिया अपन स्वतंत्रता घोषित कए लेलक आ अंग्रेजी सत्ताक विरूद्ध ताधरि बनल रहल जाधरि कि १७५९मे अंग्रेजी सेनाक आक्रमण बेतियापर भेल। मीरजाफरक पुत्र मीरन अंग्रेजी सेनाक संग १७६०मे बेतियापर धावा मारलक आ बेतियाक स्वतंत्रता पुनः समाप्त भऽ गेल। १७६२मे मीरकासीम बेतियाक विरूद्ध सेना पठौलन्हि आ बेतियापर अपन अधिकार जमौलन्हि।

१७६६मे राबर्ट बेकरक प्रयाससँ बेतियामे अंग्रेजी सत्ताक स्थापना संभव भऽ सकल। १७६२मे ओहिठाम जुगलकेश्वर सिंह राजा छलाह। हुनका पुनः इस्ट इण्डिया कम्पनीसँ झंझट भेलन्हि कारण बहुतो दिनसँ बेतियापर करक बकिऔता खसल छलैक। कर देबाक बजाय बेतियाक राजा अंग्रेजी सेनासँ युद्ध करब उचित आ सम्मानीय बुझलैथ आ युद्धमे परास्त भेला उत्तर ओ भागिकेँ बुन्देलखंड चल गेला आ कम्पनी हुनक राजकेँ अपना अधीन कऽ लेलक। बादमे जखन राजक स्थिति अंग्रेजक बुते नहि सुधरलैक तखन अंग्रेज पुनः जुगलकेश्वर सिंहसँ वार्त्ता शुरू केलक आ हुनका घुरबाक लेल अनुरोध केलक। अंग्रेज जुगलकेश्वर सिंहकेँ मझवा आ सिमरौन परगन्ना सेहो देलक आ बाँकि क्षेत्रकेँ गजसिंहक पौत्र आ पितिऔत श्री किशुन सिंह आ अवधुत सिंहमे बाँटि देलक। उएह लोकनि बादमे क्रमशः शिवहर (मुजफ्फरपुर) आ मधुबन (चम्पारण) राजक संस्थापक होइत गेलाह।

१७९१ जुगलकेश्वर सिंहक पुत्र वीरकेश्वर सिंहक संग कम्पनीक समझौता भेल आ वीरकेश्वरक नेतृत्वमे बेतिया राजक स्थिति सुदृढ़ भेल। कम्पनी आ नेपालक बीच जे युद्ध भेल ताहिमे वीरकेश्वर सिंह सक्रिय भाग लेलन्हि। १८१६मे आनन्दकेश्वर सिंह राजा भेला आ लार्ड विलियम बेंटिङ्गसँ हुनका महाराज बहादुरक पदवी भेटलन्हि। एकर कारण इ छल जे ओ अंग्रेजकेँ बड्ड मदति केने छलाह। हुनका बाद नवलकेश्वर सिंह राजा भेलाह आ १८५५मे राजेन्द्रकेश्वर सिंह। सिपाही विद्रोहक अवसरपर इ अंग्रेजक अपूर्व सहायता केने छलाह। हुनका आ हुनक पुत्र हरेन्द्रकेश्वरकेँ महाराज बहादुरक पदवी अंग्रेजसँ भेटल छलन्हि। १८९३मे हरेन्द्रकेश्वरकेँ के.सी.आइ.इक पदवी सेहो भेटलन्हि।

बेतियाक शासक लोकनि भूमिहार ब्राह्मण छलाह। इ लोकनि अपना राजकालमे नीक अस्पताल आ पुस्तकालय बनौने छलाह। इ लोकनि साहित्य प्रेमी सेहो छलाह। हिनका लोकनिक दरबारमे कवि आ कलाकारक बड्ड आदर छल। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आ राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्दकेँ हिनका लोकनिक ओतएसँ बरोबरि सहायता भेटइत छलन्हि। ओना तँ बेतिया राज बड्ड प्राचीन मानल गेल अछि मुदा एकरा सम्बन्धमे अखन सब बात स्पष्ट नहि भऽ सकल अछि। बेतिया राजक वंशावली एवं प्रकारे अछि।

बेतिया राजक वंशावली
गंगेश्वर देव
मकेश्वर देव
राजा देव
धानोराज
उदय करण राज, जदुराज
उग्रसेन
गज सिंह (राज सिंह ?)
दिलीप सिंह
पृथ्वी सिंह
सत्रजित सिंह
ध्रुवसिंह (बड़ड पैघ किला बनौने छलाह।

अपन बेटीक बेटा जुगलकेश्वरकेँ कोरामे लेलन्हि। कारण हिनका पुत्र नहि छलन्हि।

शिवनाथ सिंह
जुगलकेश्वर सिंह
वीरकेश्वर सिंह
वीरकेश्वर सिंह
नवलकेश्वर सिंह
महेन्द्रकेश्वर सिंह
आनन्दकेश्वर सिंह
राजेन्द्रकेश्वर सिंह
हरेन्द्रकेश्वर सिंह
(महारानी शिवरतन—महारानी जानकी कुँवर)

भूमिहार ब्राह्मणक इ वंश अपनाकेँ बड़ड प्राचीन मनैत छथि। हिनका लोकनिक वैवाहिक सम्बन्ध बनारस राजसँ सेहो अछि। कामेश्वर वंश जकाँ इहो लोकनि अपनाकेँ सुगौनासँ जोड़ैत छथि मुदा एतिहासिक तत्वक अभावमे अखन किछु कहब असंभव। बेतियाक वर्णन १७८६मे प्रकाशित गजेटियरमे भेटइत अछि। १७८६मे अहिठाम इशाइ मिशनक एकटा शाखा छल।

**छोट छिन्ह राज सभहिक विवरण:-** शिवहरक स्थापना बेतिया राजक शाखासँ भेल छल। सुरसंड राज सेहो भूमिहार ब्राह्मण वंशक राज छल जकर स्थापना महाराज प्रताप सिंह (दरभंगा)क समयमे भेल। एहिमे सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्ति चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह भेल छथि जे नेपाल क्रांति (१९५०)क समयमे भारतक राजदूत रहल छलाह। बनैली राजक शाखाक रूपमे श्रीनगर राजक स्थापना भेल अछि। रूद्रानंद सिंह अपन पुत्र श्रीनन्दन सिंहक नामपर श्रीनगरक स्थापना केने छलाह श्रीनन्दन सिंहक तीन पुत्र नित्यानंद सिंह, कमलानंद सिंह आ कालिकानंद सिंह भेला। कमलानंद सिंह साहित्य सेवी छलाह। आ हिन्दीक प्रगतिक हेतु लाखो टाका खर्च केने छलाह। **'साहित्य सरोज'**, **'अभिनव भोज'**, **'कलियुगी हरिश्चन्द्र'**, **'कलिकर्ण'**

आदि उपाधिसँ इ विभूषित छलाह। हिनके पुत्र भेलथिन्ह कुमार गंगानन्द सिंह जे मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी आ प्राचीन भारतीय इतिहासक प्रकाण्ड पण्डित छलाह। कालिकानंद सिंह आ गंगानंदक पुस्तकालय दर्शनीय छल। पुर्णियाँमे राजा पृथ्वीचन्द लालक राज सेहो प्रख्यात छल। छोट–मोट मुसलमान राजक संख्या सेहो ओतए बड़ड अछि। पुर्णियाँमे श्रोत्रिय लोकनिक रजबारा सेहो छल जाहिमे सौरिया राजक इतिहास प्रसिद्ध अछि। मुसलमानी राजमे खगड़ाक मुसलमानी राज प्रसिद्ध छल।

अध्याय–१५

# मिथिलाक प्रशासनिक इतिहास

प्राचीन कालमे मिथिला एक एहेन स्थान छल जतए जनक सन शासक छलाह, याज्ञवल्क्य सन विधि विशेषज्ञ एवँ विधिकर्त्ता तथा गौतम सन प्रख्यात नैयायिक। एक ठाम एहेन त्रिरत्नक जुटब कोनो सामान्य बात नहि अपितु ओहि माँटिक विशेषता कहल जा सकइयै। जनक कालीन मिथिला अपना युगमे राजतंत्रक प्रधान केन्द्र छल मुदा ओ राजतंत्र सब तरहे आदर्श राजतंत्र कहल जा सकइयै आ एकर प्रमाण हमरा उपनिषदसँ भेटइत अछि। अफलातुन (प्लेटो)क दार्शनिक राजाक कल्पना मिथिलहिमे जनक युगमे साकार भेल छल आ हमर एहि कथनकेँ कोनो रूपेँ अतिशयोक्ति नहि कहल जा सकइयै। **बृहदारण्यक उपनिषद**सँ ज्ञात होइछ जे राजा अपन प्रजाक हाल–चाल बुझबाक हेतु बरोबरि अपन राज्यमे भ्रमण करैत रहैत छलाह आ राजाक अहि परिभ्रमणक क्रममे गामक बृद्ध लोकनि राजाक ठहरबाक आ सुख सुविधाक व्यवस्था करैत छलाह। जाधरि राजा अहि प्रकारक यात्रापर रहैत छलाह ताधरि ओ लोकनि राजाक संग रहैत छलाह। गामक मुख्य पदाधिकारी **उग्रकर्मासूत** कहबैत छलाह आ ओ गामक बृद्धक संग मिलि शासन कार्य चलबैत छलाह। राजा अपन प्रजासँ प्रेम करैत छलाह आ प्रजाक स्थितिक ज्ञान प्राप्त करबाक लेल स्वयं बरोबरि भ्रमणशील रहैत छलाह। **उग्रकर्मासूत**केँ पुलिस पदाधिकारी सेहो कहल गेल अछि। प्राचीनकाल ग्यारह रत्निनमे एकटा **'सूत'** सेहो होइत छलाह आ बादमे इएह इतिहासकारक काज सेहो करए लागल छलाह। जनक कालीन मिथिलामे हिनक मुख्य काज छल ग्रामीण शासन व्यवस्थाकेँ सुदृढ़ बनाके राखब आ जनताक कल्याणपर ध्यान देब। एतबा सब किछु होइतहुँ ताहु दिनमे अकाल पड़इत छल आ जनकक समयमे अनावृष्टिक कारणे अकाल पड़ल छल जाहिमे जनककेँ स्वयं हर जोतए पड़ल छलन्हि।

वैदिक कालमे मिथिलामे राजतंत्रिय व्यवस्था छल आ वंशानुगत राजतंत्र प्रणालीक जड़ि जमि चुकल छल। पवित्रताक भावना राजा लोकनिकेँ रहैत छलन्हि। राजा लोकनि शक्तिशाली होइत छलाह। राजदरबारमे ब्राह्मणक प्रधानता छल आ संगहि सेनापति आ रथकार सेहो रहैत छलाह। **एतरेय ब्राह्मण**क अनुसार ककरोसँ कोनो काज लेब राजाक विशेषाधिकार बुझल जाइत छल। राजा समस्त मानवक एक मात्र शासक मानल जाइत छलाह आ ओहिमे जे गैरजबाबदेह होइत छलाह हुनका प्रजाक भोक्ता कहल जाइत छल। जनप्रिय राजा लोकनिकेँ देवक संज्ञा भेटइत छलन्हि। ब्राह्मण साहित्यमे राजा जनककेँ **सम्राट** सेहो कहल गेल छन्हि। राजा जनकक समयमे राजतंत्र मिथिलामे चरमोत्कर्षपर छल। अत्याचारी राजापर अंकुश रखबाक हेतु प्राचीन मनीषि लोकनि अधिकाधिक नियम बनौने छलाह। राज्याभिषेकक अवसरपर जे शपथ ग्रहण होइत छल ताहिमे राजाकेँ इ प्रतिज्ञा करए पड़इत छलन्हि जे ओ अपना प्रजाक हेतु किछु उठा नहि रखताह। राज्यमे **सूत, ग्रामणी** आ अनान्य अधिकारी वर्गक बड़ड महत्व छल आ राजाक निर्वाचनमे इएह लोकनि सर्वेसर्वा होइत

छलाह। तैं तँ **शतपथ ब्राह्मण**मे हिनका लोकनिकेँ **"राजकृत"** सेहो कहल गेल छन्हि। वैदिक युगमे विदथ, सभा आ समितिक उल्लेख सेहो भेटैछ। विदथ बड़ड पुरान संस्था छल आ मिथिलामे एकर प्रचलन छलैक अथवा नहिसे कहब असंभव। सभा–समिति प्राचीन वैदिक वैधानिक संस्था छल आ एहि माध्यमसँ राजापर अंकुश राखल जाइत छल। गिलगिटसँ प्राप्त बौद्ध पाण्डुलिपिमे एहिबातक उल्लेख अछि जे मिथिलाक राजाक ओतए ५००अमात्य रहैत छलाह जाहिमे **'खण्ड'** अमात्य अग्रगण्य छलाह। **खण्ड** शक्तिशाली अमात्य छलाह आ समस्त मिथिला राज्यमे हुनक धाक जमल छलन्हि। खण्डक वक्तव्यसँ इ स्पष्ट अछि कि जखन वैशालीमे गणराज्यक स्थापना भऽ चुकल छल तखनो मिथिलामे राजतंत्र प्रतिष्ठित राजनैतिक व्यवस्था छल। **महाउम्मग्गजातक**सँ इ ज्ञात होइत अछि जे मिथिलामे राजा विदेहक ओतए केवट नामक एकटा प्रधानमंत्री छलाह। मिथिलापर एकबेर जखन उत्तर पाँचाल दिसिसँ आक्रमण भेल छल तखन मिथिलाक रक्षार्थ केवट किछु उठा नहि रखने छलाह। केवटक कथाक विशद विश्लेषण जातक कथामे भेटइत अछि। कराल जनकक कुकृत्यसँ तंग भए मिथिलाक जनता राजतंत्रक जूआकेँ उठा फेकलक आ ओहि स्थानपर वैशालीक देखादेखी गणतंत्रक स्थापना केलक। किछु दिनक पश्चात् विदेह गणराज्य अपन सुरक्षार्थ वैशालीक गणराज्यसँ मिलि जुलिकेँ रहए लागल आ वज्जीसंघक प्रमुख सदस्य सेहो भऽ गेल।

**वैशालीक गणराज्य शासन पद्धति:-** वैशालीक लिच्छवी लोकनिक शासन गणतांत्रिक छल। राज्यक शक्ति जनतामे निहित छल। कौटिल्य लिच्छवी लोकनिक हेतु **'राज शब्दोपजीवीसंघ'**क व्यवहार कएने छथि। **'ललितविस्तर'**क अनुसार वैशालीक प्रत्येक व्यक्ति अपना सम्बन्धमे इएह बुझैत छल जे ओ राजा अछि। केओ अपनाकेँ ककरोसँ छोट नहि बुझैत छलाह। ओहिठामक राज्यशक्ति समूहमे निहित छल। शासक राज्यक सेवक बुझल जाइत छलाह। परिषदक बैसक जाहि भवनमे होइत छल तकरा **'संथागार'** कहल जाइत छल। संथागारेमे बैसिकेँ सब केओ राजनैतिक आ सामाजिक प्रश्नपर विचार विमर्श करैत जाइत छलाह। परिषदक सभापति अथवा **गणमुख्य** सेहो राजा कहबैत छलाह। वैशालीमे ७७०७राजाक उल्लेख भेटइत अछि। संभवतः इ सब गोटए कुलीन परिवारक छलाह आ शासन सत्ता हिनके लोकनिक मध्य निहित छल। इएह कारण अछि जे वैशालीक शासनकेँ कुलीनतंत्र सेहो कहल गेल अछि।

आजुक संसद जकाँ ताहि दिनक संथागारमे सेहो सबटा कार्य नियमानुसार होइत छल। सदस्य लोकनिक बैसबाक प्रबन्धकेँ आसन कहल जाइत छल आ परिषदक कार्यवाहीक हेतु निश्चित गणपूर्त्तिक आवश्यकता छल। गणपूर्त्ति करेनिहार पदाधिकारीकेँ **गणपूरक** कहल जाइत छल। परिषदमे उपस्थित प्रस्तावकेँ प्रतिज्ञा कहल जाइत छल। प्रस्तावपर वाद–विवाद होइत छल आ तकर बाद ओहिपर मत लेल जाइत छल। मतकेँ गुप्त राखल जाइत छल आ पारित प्रस्तावकेँ सबकेँ मानए पड़इत छलन्हि।

गणक मुख्य अधिकारी होइत छलाह राजा, उपराजा, सेनापति, भांडागारिक, इत्यादि आ सेना, अर्थ आ न्याय शासनक मुख्य अंग छल। बौद्ध साहित्यमे हिरण्यक, सारथी आदि कर्मचारीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। नायक नामक एक पदाधिकारीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। न्याय विभागक अधिकारीकेँ **विनय महामात्य** कहल जाइत छल। अभियुक्तकेँ सर्वप्रथम हिनके समक्ष उपस्थित कैल जाइत छल

आ अहिठाम सर्वप्रथम आरोपक जाँच होइत छल। निरपराध भेलापर अपराधीकेँ मुक्त कऽ देल जाइत छल आ अपराध सिद्ध भेलापर पुनः ओकरा **व्यावहारिक** अथवा **वोहारिक महामात्य**क समक्ष उपस्थित कैल जाइत छल। निरपराध सिद्ध भेलापर अपराधी मुक्त कऽ देल जाइत छल अन्यथा ओकरा पुनः **अट्ठकुलक**क समक्ष उपस्थित कैल जाइत छल। क्रमशः अभियुक्तकेँ सेनापति, उपराजा आ राजाक समक्ष उपस्थित कैल जाइत छल। अभियुक्तकेँ दण्ड तखने देल जाइत छल जखन ओकर अपराध पूर्णतया सिद्ध भऽ जाइक। समस्त न्याय प्रणालीक रेकार्ड राखल जाइत छल जकरा **'पवेणीपुस्तक'** कहल जाइत छलैक। न्याय व्यवस्था समता आ स्वतंत्रताक सिद्धांतपर आधारित छल। अपील करबाक व्यवस्था सेहो छल।

नगर व्यवस्थाक भार **नगरगुत्तिक**पर रहैत छल। नगरमे शांति स्थापनाक दायित्वक भार ओहि पदाधिकारीपर छलैक। **नगरगुत्तिक**केँ रातिक राजा सेहो कहल जाइत छलैक।

अहिठाम इ स्मरण रखबाक अछि जे वैशाली लिच्छवी संघक राजधानी छल आ संगहि **वृज्जि गणसंघ**क सेहो तैं वैशालीक अत्यधिक महत्व बौद्धयुगमे भऽ गेल छल। विदेह आ लिच्छवी संयुक्त रूपसँ संवज्जि कहबैत छलाह आ वृज्जिसंघमे आठटा गणराज्य सम्मिलित छल। कल्पसूत्रक अनुसार लिच्छवीक एहेन सम्बन्ध एकबेर मल्लक संग सेहो छल आ इ दुनू गोटए मिलिकेँ एकबेर संयुक्त परिषदक निर्माण केने छलाह जाहिमे १८ सदस्य छलाह–९लिच्छवी आ ९मल्ल। इहो लोकनि राजा कहबैत छलाह। साम्राज्यवादी आक्रमणक प्रकोपसँ बचबाक हेतु इ लोकनि समय–समयपर अपन संघ बनबैत छलाह। वैशाली सबमे प्रमुख छल तैं सब छोट–छोट, गणराज्य वैशालीक संग मिलिकेँ संघ बनेबाक हेतु उत्सुक रहैत छल। वृज्जिसंघ शासनकेँ परामर्श देबाक हेतु एक संस्था छल **अष्टकुलक** जाहिमे आठो गणक प्रतिनिधि रहैत छलाह। संघक सब सदस्यक अधिकार बरोबरि छलन्हि। उच्चतम न्यायालयकेँ अष्टकुलक कहल जाइत छल। संघ शासन प्रणालीक अपन नियम छल जाहिसँ संघ शासन संचालित होइत छल। वैशाली ताहि दिनमे सर्वश्रेष्ठ संघ राज्यक केन्द्र छल।

बुद्ध वैशाली गणतंत्रक मतैक्य, सौहार्द, आदर, दृढ़ता, पराक्रम आदिक भावनासँ बड्ड प्रभावित छलाह आ बेर–बेर वैशाली अबैत रहैत छलाह। बुद्धक अनुसार जे गणराज्य निम्नलिखित सातटा आदर्शक (**सप्तअपरिहाणिसुत्त**) पालन करैत रहत तकर कहिओ ह्रास नहि हेतैक–

i) नियमित एवँ व्यवस्थित रूपें सदति सभाक आयोजन करब–
ii) विचार, उत्थान एवँ व्यवहारमे सदस्यक मतैक्य रहब–
iii) व्यवहृत सिद्धांतक प्रयोग करब–
iv) बृद्ध लोकनिक प्रति आदर, श्रद्धा, सहयोग एवँ प्रतिष्ठाक भाव राखब–
v) संघक चैत्यक प्रति श्रद्धा एवँ सहयोगक भावना राखब–
vi) पराजित देशक स्त्रीक संग उचित व्यवहार करब–
vii) अर्हत् क प्रति समुचित सहयोग एवं रक्षाक भावना राखब।

**महापरिनिर्वाणसुत्त**सँ ज्ञात होइछ ज **वृज्जीसंघ**क शासन व्यवस्थामे–

i) विभिन्न संघक सभाक अधिवेशन बरोबरि नियमित रूपँ होइत रहैत छल।
ii) वृज्जीसंघक सदस्य लोकनि बरोबरि आपसमे मिलैत–जुलैत रहैत छलाह आ शासन चलेबामे सतर्कताक परिचय दैत छलाह।

iii) ओ लोकनि अपन परम्परागत नियमक पालनक प्रति जागरूक रहैत छलाह।

iv) शासनमे बुझनुक बृद्ध लोकनिक हाथ रहए दैत छलाह।

वैशालीमे कोना आ कहिया गणराज्यक स्थापना भेल से कहब असंभव। बुद्ध तँ लिच्छवी लोकनिक प्रशंसा **'तावतिंश देव'** कहिकेँ केने छथि आ ओ स्वयं गणशासन प्रणालीसँ एतेक प्रभावित भेल छलाह जे ओ एहि प्रणालीकेँ अपन संघ संगठनक आदर्श मानलन्हि। ७७०७राजा ओहिठाम राजकुलोद्भव मानल जाइत छलाह आ ओहिना व्यवहारो करैत छलाह। वैशालीक पुष्करिणी हिनके लोकनिक हेतु सुरक्षित रहैत छल। इ लोकनि वैशालीक एक विशिष्ट क्षेत्रसँ संबन्धित छलाह। **जैन कल्पसूत्र**सँ इहो स्पष्ट होइछ जे वैशाली शासनक एकटा कार्यकारिणी समिति सेहो छल। वैशाली सन प्राचीन न्याय व्यवस्थाक कोनो दोसर उदाहरण संसारमे नहि भेटइत अछि। अभियुक्तकेँ तखने दण्डित कैल जा सकैत छल जखन ओ क्रमशः सातो न्याय समितिसँ एकमतसँ दण्डित घोषित हुए। वृज्जीसंघक शासनमे सेहो समानताक सिद्धांतक पालन होइत छल। अजातशत्रुक आक्रमणक बादो जखन वैशाली मगध साम्राज्यक अंग बनि गेल तखनो एकर गणतांत्रिक स्वरूप अपना क्षेत्रमे बनले रहल।

मौर्य युगसँ वैशाली–विदेह मौर्य साम्राज्यक एकटा अंग बनिकेँ रहल। अशोकक समयमे वैशाली आ चम्पारणक प्रशासनिक महत्व बढ़ल होइत कारण अहि दुनूठाम अशोकक स्तंभ अछि। अशोकक स्तंभसँ इ अनुमान लगाओल जाइछ जे प्रशासनिक दृष्टिकोणसँ मिथिलाक महत्व घटल नहि छल अपितु बढ़ले छल। अहि बाटे नेपाल जेबाक मार्ग छल तैं प्रशासनिक दृष्टिये सीमासँ सटल वैशाली–विदेह राज्यकेँ सुरक्षित राखब आ ओकरासँ नीक संबन्ध बनौने राखब साम्राज्यवादी शासकोक अभीष्ट रहैत छलन्हि। वैशालीसँ पुर्णियाँ धरिक सीमा मिथिला प्रांतक अंतर्गत छल आ मिथिला उत्तर बिहारक एकटा प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र छल। साम्राज्यवादी छत्रछायाक अंतर्गत रहितहुँ मिथिला अपन प्रजातांत्रिक प्रणालीकेँ सोहागक सिन्दुर जकाँ संजोगने छल। पतञ्जलिक **महाभाष्य**मे सेहो जतए–ततए मिथिला जनपदक उल्लेख भेटइत अछि। मौर्य साम्राज्यक समाप्त भेलापर वैशाली पुनः अपन स्वतंत्रता प्राप्त केलक से बुझि पड़इयै।

वैशालीक उत्खननसँ जे बहुत रास मोहर सब भेटल अछि ताहिपर श्रेणी, सार्थवाह, कुलिक, निगम आदिक उल्लेख भेटइयै। एहेन बुझना जाइत अछि जे वैशालीमे श्रेष्ठी, सार्थवाह आ शिल्पी लोकनिक सम्मिलित निगम छल आ एहि निगमक काज विभिन्न नगर सबमे पसरल छल। श्रेष्ठी–सार्थवाह–कुलिक निगमक २७४टा मोहर वैशालीसँ भेटल अछि जाहिमे ७५टा इशानदासक, ३८टा मातृदासक, ३७टा गोभिस्वामीक मोहर अछि। संभवतः इ लोकनि निगम शाखाक अध्यक्ष रहल होयताह। ठाम–ठाम मोहर सबक अतिरिक्त भगवान, जिन, पशुपति आदिक नामक उल्लेख सेहो भेटइत अछि।

गुप्तकालमे वैशाली तीरभुक्ति प्रांतक राजधानी छल आ ओहिठामसँ प्राप्त मुद्रामे एकरा अधिष्ठान सेहो कहल गेल छैक। एहि प्रांतक महत्व अहुँसँ बुझना जाइत अछि जे स्वयं गोविन्दगुप्त एहि प्रांतक राज्यपाल छलाह आ हुनक एक अभिलेख सेहो अहिठामसँ भेटल अछि।

महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त पत्नी श्री गोविन्द गुप्त माता श्री ध्रुवस्वामिनी–

अहिठामसँ बहुत रास मुद्रा, अभिलेख आदि भेटल अछि। प्रांतीय शासकक रूपमे राजकुलक लोग नियुक्त होइत छलाह। हुनका लोकनिकेँ युवराज कुमारामात्य कहल जाइत छलन्हि। प्रान्तीय शासककेँ अपन अपन महासेनापति, महादण्डनायक आ अन्यान्य कर्मचारी होइत छलन्हि। पुण्ड्रवर्द्धन भुक्ति आ तीरभुक्तिक क्षेत्र ताहि दिनक मिथिला प्रांतमे छल। युवराज कुमारामात्यक अधीन **भुक्ति**क शासनक हेतु **उपरिक** नियुक्ति होइत छल आ पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तिमे करण कायस्थक **'दत्त'** पदवी धारी **'चिरात दत्त'**क ३–४पुस्त उपरिकक पदपर विराजमान छलाह। उपरिककेँ प्रांतीय शासक अथवा गवर्नर कहल जाइत छल। प्रांतीय शासकक मुख्य कर्त्तव्य निम्नलिखित छल–

i) शांति–व्यवस्थाकेँ सुरक्षित राखब
ii) कर वसूलीक व्यवस्थाकेँ सुदृढ़ राखब
iii) प्रजाक रक्षा करब
iv) सुख–समृद्धिक प्रबन्ध करब
v) राजाक प्रति प्रजामे बिश्वास उत्पन्न करब
vi) सीमावर्त्ती राज्यक आक्रमणसँ अपन क्षेत्रकेँ सुरक्षित राखब।

गुप्तकालमे प्रादेशिक शासक लोकनिक सम्पर्क सोझे राजासँ छलन्हि। सामंतवादक विकास अहियुगमे प्रारंभ भऽ चुकल छल आ एकर प्रभाव शासनपर पड़ब स्वाभाविकेँ छल। उत्खननसँ प्राप्त सामग्रीक आधारपर प्रांतीय शासनसँ सम्बन्धित निम्नलिखित कर्मचारीक विवरण भेटइत अछि–

उपरिक, कुमारपालाधिकरण (राजकुमारक मंत्रीक कार्यालय), बलाधिकरण (सेनापतिक कार्यालय), दण्डपाशाधिकरण (पुलिस अधिकारीक कार्यालय), महादण्डनायक (प्रमुख न्यायाधीश), विनय स्थिति स्थापक (कानून आ व्यवस्था मंत्री)।

गुप्तकालमे केन्द्रीय शासनक विभिन्न विभागकेँ **अधिकरण** कहल जाइत छलैक आ एक प्रकारक राष्ट्रीय सेवाक प्रावधान सेहो छलैक। जकरा **'कुमारामात्य'** कहल जाइत छलैक। **'कुमारामात्य'** साम्राज्यक शासन प्रणालीक स्थायी सेवामे रहैत छलाह आ हुनका कतहु कोनो काजमे पठाओल जा सकैत छल। ओ लोकनि प्रशासनिक सेवाक सदस्य होइत छलाह। कवि हरिषेण सेहो अपनाकेँ **कुमारामात्य** कहने छथि। कुमारामात्यक सम्बन्ध प्रांतीय आ स्थानीय शासनसँ सेहो रहैत छल। वैशालीसँ प्राप्त सूचना प्रशासनिक सम्बन्धमे एवँ प्रकारे अछि–

i) कुमारा**मात्यधिकरण**स्य
ii) युवराज पादीयकुमारा**मात्यधिकरण**
iii) परमभट्टारक पादीय कुमारा**मात्यधिकरण**
iv) वाला**धिकरणस्य**
v) रण भाण्डागारिधिकरणस्य
vi) दण्डपाशा**धिकरणस्य**
vii) तीरभुक्तौ**परिकाधिकरण**स्य
viii) तीरभुक्तौ विनय स्थिति **स्थापकाधिकरणस्य**
ix) तीरभुक्तौ कुमारा**मात्यधिकरण**स्य
x) वैशाल**याधिष्ठानाधिकरण**

**भुक्ति**क अधीन **विषय** (जिला) होइत छल। विभिन्न स्त्रोतसँ इ ज्ञात होइछ जे पालयुग धरि अवैत–अवैत तीरभुक्तिमे **चामुण्डा, होद्रेय, कक्ष** विषय छल आ नौलागढ़सँ प्राप्त अभिलेखक अनुसार एक **'रक्षमुक्त विषयाधिकरण'** नामक सेहो एकटा प्रशासनिक केन्द्र छल। **विषय**मे **पादितरिक** आ **गौल्मिक** नामक अधिकारी होइत छलाह। **अक्षपटलाधिकृत** गामक जमीनक लेखा–जोखा रखैत छलाह। **विषय**मे चारि सदस्यक एकटा परामर्शदातृ समिति सेहो होइत छल जाहिमे **नगर श्रेष्ठी, सार्थवाह, प्रथमकुलिक** आ **प्रथमकायस्थ** सदस्य होइत छलाह। विषयपति अपन जिलाक प्रमुख व्यक्तिक संग मिलिकेँ शासन करैत छलाह। वैशालीमे नगर शासन स्थानीय निगमक हाथमे छल।

अहिठाम पुण्ड्रवर्द्धन–पुर्णियाँ (जे कि पूर्वी मिथिलाक अंश रहल अछि)केँ सम्बन्धमे किछु कहिदेव आवश्यक। प्राचीन कालहिसँ प्रशासनिक, सामरिक आ साँस्कृतिक दृष्टिकोणसँ पुर्णियाँक महत्व रहल अछि आ मिथिलाक सुरक्षा सेहो पुर्णियाँक सुरक्षासँ सम्बद्ध मानल गेल अछि। गुप्तलोकनि पूर्वी प्रदेशपर अपन नियंत्रण रखबाक हेतु अहिठाम अपन शासनक एक प्रमुख केन्द्र बनौने छलाह। कंनिघमक अनुसार वैशालीक वृज्जीसंघ सेहो एहि प्रदेश अपन नियंत्रण रखैत छलाह। पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तिक समीकरण पुर्णियाँसँ करब अत्यंत स्वाभाविक बुझना जाइत अछि। अभिलेखमे **कोकामुखस्वामी** आ **स्वेतवाराहस्वामी** उल्लेख भेटइत अछि जे नेपालक धनकुट्टा नामक स्थान लग अछि आ पुर्णियाँ जिलाक अभ्यंतर सेहो। बादमे जे आर अभिलेख सबमे वराहक्षेत्र किंवा **'पुण्ड्र'**क उल्लेख भेटैछ से सब पुर्णियाँक संकेत दैत अछि। पुर्णियाँक प्रशासनकेँ नियंत्रणमे राखब अहुलेल आवश्यक छल कारण पुर्णियाँक सीमा नेपाल, असम, बंगालसँ मिलैत छल। पुण्ड्रवर्द्धन भुक्ति बंगाल–बिहारक पूर्वी अंश मिलाकेँ छल आ पुर्णियाँ ओकर प्रमुख केन्द्र छल।

हर्षक शासन कालमे सेहो मिथिलाक प्रधानता बनल रहल। राज्यसत्ताक कमजोरीक कारणे राजतंत्रक विकेन्द्रीकरण भऽ गेल छल आ हर्षक मृत्युक पश्चात् तिरहूतमे अराजकता पसरि गेल छल जे लगभग ५० वर्ष धरि बनल रहल। दोसर बात इहो जे अहियुगमे सामंतवादी प्रवृत्ति दृढ़तर भेल आ शासनयंत्रमे एकर प्रभाव स्पष्ट होमए लागल। चीनी यात्री हियुएन संग सेहो एहि बातक समर्थन केने छथि। हर्षक शासनक मुख्य आधार छल व्यक्तिगत भ्रमण एवँ निरीक्षण आ तैं हर्षक परोक्ष भेलापर शासन यंत्र एकदम ढ़ील भऽ गेल आ चारूकात सब केओ अपन–अपन हाथ–पैर पसारे लगलाह। तहियासँ लऽ कए पाल शासनक स्थापना धरि एक प्रकारक अस्थायित्व बनल रहल आ मिथिलाक क्षेत्रपर चारू दिसिसँ आक्रमण होइत रहल। एहि अराजकताक कालोमे तीरभुक्ति एक प्रमुख प्रांत छल आ उत्तर गुप्त शासक लोकनिक मुख्य शासन केन्द्र सेहो जकर प्रमाण हमरा कटरासँ प्राप्त ताम्रलेखसँ भेटइत अछि। कटरा (मुजफ्फरपुर)सँ प्राप्त जीवगुप्तक अभिलेखमे तीरभुक्तिक चामुण्डा विषयक आ **तिष्टिहल पाटक**क उल्लेख भेटइत अछि। तारा नामक स्थानसँ इ ताम्रपत्र देल गेल छल आ ओहिमे **सुरभकार**, **याम्या** आ **हरिग्राम**क नामक गामक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। एहि ताम्रलेखमे निम्नलिखित शासनाधिकारीक वर्णन अछि–

i) महासान्धिविग्रहिक
ii) अक्षपटलिक
iii) सर्वाधिकाहिक
iv) प्रतिहार

v) सेनापति आ
vi) महासामंत

पालयुगमे तीरभुक्ति एकटा प्रधान केन्द्र छल। ओना तँ नारायण पाल भागलपुर ताम्रलेखमे **तीरभुक्तिक कक्ष** (कौशिकी–कच्छ–छै परगना) विषय आ गाम सबहिक वर्णन भेटिते अछि मुदा तिरहूतक केन्द्र वनगाँवसँ जे ताम्र अभिलेख (विग्रह पाल तृतीयक) भेटल अछि ताहुसँ तीरभुक्तिक शासनपर प्रकाश पड़इयै। पालकालमे जखन कलचुरी वंशक आक्रमणक प्रकोप बढ़ल तखन पाल लोकनि अपनाकेँ समेटकेँ तीरभुक्तिमे सुरक्षित रखलन्हि आ एवं प्रकारे अपन साम्राज्य आ प्रतिष्ठाकेँ बचौलन्हि। मिथिला भौगोलिक दृष्टिये सुरक्षित छल तैं ओ लोकनि एम्हरे घसकिकेँ एलाह। वनगाँवक अभिलेखसँ ज्ञात होइछ जे तीरभुक्तिमे **हौद्रेय** (आधुनिक हरदी गाँव सहरसा) विषय सेहो छल। गुप्तयुगसँ कर्णाटवंशक स्थापना धरि तीरभुक्ति शासनक एकटा प्रधान केन्द्र बनल रहल। ११म शताब्दीक दूटा अभिलेख चम्पारणसँ हालहिमे उपलब्ध भेल अछि जाहिसँ ताहि दिन शासन प्रणालीपर किछु प्रकाश पड़इयै। गोरखपुरसँ चम्पारण धरि क्षेत्रकेँ **दरद गण्डकी देश** कहल जाइत छल आ प्रशासनिक इकाइक हिसाबे **दरद–गण्डकी–मण्डल** जकरा अधीनमे **विआलिसि विषय** (४२ग्राम) छल। एहि लेखसँ इ स्पष्ट अछि जे अहिठाम **विषय मण्डल**क एकटा छोट अंग मानल गेल अछि। चम्पारणक इ दुनूटा अभिलेख कर्णाटक पूर्व थिक आ प्रतिहार लोकनिक सत्ताक कमजोर भेलापर इ लोकनि संभवतः एहि क्षेत्रपर अपन सत्ता स्थापित केने छलाह। एहि दुनू अभिलेखमे निम्नलिखित प्रशासनिक शब्दावली भेटइत अछि।

**i)** राणक, **ii)** ठाकुर, **iii)** अमात्य, **iv)** पुरोहित**, v)** महामत्तक**, vi)** महासान्धिविग्रहिक**, vii)** महाप्रतिहार**, viii)** महाक्षपटलिक**, ix)** महासाधनिक**, x)** महापीलुपति**, xi)** महासेनापति**, xii)** महाकटकाध्यक्ष**, xiii)** दुष्टसाध्यासाधनिक**, xiv)** दाण्डिक**, xv)** दण्डपाशिक**, xvi)** शौल्किक**, xvii)** गौल्मिक**, xviii)** दूतसंप्रेषणिक**, xix)** तलवर्गिक**, xx)** अंगरक्षक**, xxi)** चाट–भाट, इत्यादि।

एहिमे वर्णित बहुत रास शब्दावली पाल अभिलेखमे सेहो भेटल अछि। एहि अभिलेखसँ इहो अनुमान लगाओल जाइछ जे मिथिलाक सीमा पश्चिममे श्रावस्ती भुक्तिसँ पश्चिमोत्तरमे दरद–गण्डकी–देशसँ आ पूबमे पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तिसँ मिलल जुलल छल। एवँ प्रकारे समस्त उत्तर बिहारक प्रतिनिधित्व प्राचीन कालक तीरभुक्ति करैत छल आ अहि दृष्टिकोणे एकर प्रशासनिक महत्व अद्वितीय छलैक जे मुगलकाल धरि बनल रहलैक। उत्तरमे कर्णाट लोकनि सिमरौनगढ़ धरि बढ़ले रहैत आ ओतए अपन राजधानी बनौने रहैत। ग्राममे ग्राम पंचायतक व्यवस्था छल आ अभिलेख सबमे **पञ्चमण्डली** आ **पञ्चकुलक** उल्लेख भेटइत अछि।

१०९७मे जखन कर्णाटवंशक स्थापना भेल तखन पुनः शासन व्यवस्थाक संगठन मिथिलाक आवश्यकताक अनुकूल गठित भेल यद्यपि एकर आधार छल सामंतवादी व्यवस्था। नान्यदेव अहिठामक शासन व्यवस्थाकेँ सुगठित केलन्हि आ मिथिलाक निजीगौरव एवँ विशिष्टताक विकास सेहो। नान्यदेव स्वयं कर्णाट वंशक संस्थापक छलाह तैं शासनमे हुनक प्रधानता रहब स्वाभाविके। शासकक प्रधान राजा होइत छलाह। प्रजाक रक्षा करब उचित बुझल जाइत छल– चण्डेश्वर तँ प्रजाकेँ विष्णु कहने छथि। राजा शासन, न्याय एवँ प्रशासनिक यंत्रक अध्यक्ष होइत छलाह। शासनकेँ सुरूचिपूर्ण ढ़ँगसँ चलेबाक हेतु राजा बरोबरि प्राचीन परम्परा एवम मान्यताकेँ ध्यानमे रखैत छलाह। शासकक संगहि संग मिथिलाक राजा प्रसिद्ध विद्वानो होइत

छलाह आ उदाहरण स्वरूप हमरा लोकनि नान्यदेव, रामसिंह देव, शिवसिंह, लखिमा, विश्वास देवी आदिक नाम लऽ सकैत छी। राजा लोकनि परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज, महानृपति, क्षितिपाल, भूपाल, मिथिलाधिपति, भुजवल भीम, भीमपराक्रम, कर्णाटचूडामणि, दशमदेव अवतार, एकादश अवतार, भूमिपति, मुकुटमणि, आदि पदवीसँ विभूषित होइत छलाह। नान्यदेव, गंगदेव, रामसिंहदेवक शासन धरि तँ कोनो प्रकारक गोलमाल देखबामे नहि अवइयै परञ्च शक्तिसिंहदेवक शासनकालमे मंत्री लोकनि शासन सत्ता अपना हाथमे लऽ लेने छलाह। सामंते मंत्री होइत छलाह। शक्तिसिंहक कठोर शासनसँ ओ लोकनि उबि गेल छलाह तैं हुनकासँ सब अधिकार छीनिके अपना हाथमे लऽ लेलन्हि। मंत्रियेक संरक्षणमे बहुत दिन धरि हरिसिंह देव नाम मात्रक शासक छलाह। सामंतवादी व्यवस्थाक फलें राजाक शक्ति क्षीण अवश्य भेल छल मुदा शक्तिशाली शासक अपन अधिकारक उपयोग कइये लैत छलाह। हरिसिंह देव, शिवसिंह देव, भैरव सिंह देव आदि शासक एकर उदाहरण छथि। सामान्यतः राजाकेँ सामन्तक बलपर निर्भर करए पड़इत छलन्हि।

राजाकेँ सहायता देबाक हेतु मंत्रिपरिषदक व्यवस्था सेहो छल। मिथिलामे प्रधानमंत्रीकेँ **महामत्तक** कहल जाइत छल। अन्हराठाढ़ी आ हावीडीह अभिलेखमे प्रधानमंत्री लोकनिकेँ मंत्रीक नामसँ संबोधित कैल गेल अछि। मंत्री लोकनिकेँ संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, आ संश्रयक पूर्ण ज्ञान रहब आवश्यक बुझना जाइत छल। श्रीधरदास एवँ रत्नदेवक वंशज मिथिलामे बहुतो दिन धरि मंत्री पदक भार सम्हारने छलाह। श्रीधरदासकेँ सेन वंश दिसिसँ **महामण्डलिक**क पदवी भेटल छलन्हि। रत्नदेवक वंशजकेँ सामंतवादी पदवी **'रउत'** रहैन्ह आ विद्यापतिमे रत्नदेवक वंशज रउत रजदेवक उल्लेख अछि। रामादित्य, कर्मादित्य, वीरेश्वर, देवादित्य, गणेश्वर, चंडेश्वर आदि सेहो प्रमुख मंत्रीगण मिथिलामे भेल छथि। शक्तिसिंहक निरंकुश शासनसँ जखन मंत्रीगण उबि गेल छलाह तखन ओ लोकनि सात बृद्धक एकटा परिषद बनौलन्हि आ शक्तिसिंहकेँ गद्दीसँ उतारि ओहि परिषदक हाथमे शासन भार देलन्हि। एहिसँ मंत्रिपरिषदक व्यापकता एवँ अधिकारक पता लगइयै। पाछाँ जखन हरिसिंह देव वयस्क भेला तखन हुनक राज्याभिषेक भेल। ताहिसँ पूर्व संभवतः चण्डेश्वर राज्यक भार सम्हारने छलाह। चण्डेश्वर साँधिविग्रहिक छलाह। हुनका महावार्त्तिक नैबन्धिक सेहो कहल गेल अछि। एहिसँ प्रत्यक्ष अछि जे चण्डेश्वर बड़ड शक्तिशाली मंत्री छलाह। मंत्री लोकनि सामंत, महासामंत, मांडलिक, महामाण्डलिक, महाराज, महामत्तक आदि पदवी एवँ उपाधिसँ विभूषित होइत छलाह। इ लोकनि हृदयसँ दान इत्यादि सेहो करैत छलाह आ एहि दिशामे वीरेश्वर आ चण्डेश्वरक नाम अग्रगण्य अछि। चण्डेश्वरक अधीन जे एकटा सामन्त हरिब्रह्म छलाह तिनक एकटा पद **प्राकृत पैंगलम**मे सुरक्षित अछि। मंत्रिपरिषदक अतिरिक्त आरो कतैक पदाधिकारी होइत छलाह जेना–

i) महामुद्राधिकृत
ii) महासर्वाधिकृत
iii) महाधर्माध्यक्ष
iv) धर्माध्यक्ष
v) प्राडविवाक
vi) कोषाध्यक्ष

vii) स्थानांतरिक, इत्यादि।

ग्राम शासनक न्यूनतम इकाइ छल। ग्रामक अध्यक्षकेँ **ग्रामपति** कहल जाइत छल। ग्रामपति कर वसूल कए राजाक ओतए पठबैत छलाह। **गुल्म** सेहो एकटा ग्राम पदाधिकारी होइत छलाह। तीन अथवा पाँचटा ग्रामकेँ मिलाकेँ एकटा **गुल्म** नियुक्त होइत छलाह। एकर अतिरिक्त **दश ग्रामपति, विंशति ग्रामपति, त्रिंशति ग्रामपति, सहस्त्र ग्रामपति**, इत्यादिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। प्रत्येक ग्राममे एकटा मुखिया होइत छल। केन्द्रीय शासन ग्राम शासनक सफलतापर निर्भर करैत छल। ग्राम सभामे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, आ साँस्कृतिक आदि विषयपर विचार विमर्श होइत छल। ग्रामक झगड़ा दन ग्राम सभामे फरियैल जाइत छल। जखन ग्राम सभा फरियैबामे असमर्थ होइत छल, तखने उपरका अधिकारीक ओतए ओ पठाओल जाइत छल। मिथिलाक समस्त राजनैतिक संगठनक आधारशिला छल ग्राम सभा। ग्राम सभाक पदाधिकारीकेँ पारिश्रामिक भेटइत छलन्हि जकर विवरण निम्नांकित अछि–

**i) दशेश–** दश गामक अधिकारीकेँ जोतबाक हेतु ओतेक जमीन भेटइत छलन्हि जतेक ओ एक हरसँ स्वयं जोति सकैत छलाह।

**ii) विंशतिंश–** बीस गामक अधिकारीकेँ चारिटा हरसँ स्वयं जोति सकबा जोकर जमीन भेटइत छलन्हि।

**iii) सतेश–**एक सौ गामक अधिकारीकेँ एकटा सम्पूर्ण गामे भेटइत छलन्हि।

**iv) सहस्त्राधिपति–** एक हजार ग्रामक अधिकारीकेँ एकटा सम्पूर्ण नगर भेटइत छलन्हि।

ग्राम शासन संगठनक प्रसंगमे गंगदेवक नाम अग्रगण्य अछि। मिथिलामे एकर सर्वश्रेष्ठ श्रेय हुनके छन्हि। ओ समस्त मिथिला राज्यकेँ राजस्व प्रशासनक दृष्टिकोणसँ कतेको परगन्नामे बटने छलाह आ प्रत्येक परगन्नाक हेतु **चौधरी** आ **कोतवाल** नियुक्त केने छलाह। इएह लोकनि ग्राम शांति आ राजस्व वसूलीक हेतु उत्तरदायी होइत छलाह आ हिनके लोकनिक योग्यता आ सहयोगपर केन्द्रीय शासनक सफलता निर्भर करैत छल। ग्राम शासन आ केन्द्रीय शासनक मध्य सम्पर्क स्थापित करबाक हेतु आ ओकरा बनाकेँ रखबाक हेतु एक प्रकारक विशेष कर्मचारी होइत छलाह जकरा **'स्निग्ध'** कहल जाइत छल। **'स्निग्ध'**केँ ग्राम विभागक मंत्रियो कहि सकैत छी। यदा कदा **'स्निग्ध'**क स्वार्थपूर्ण आचरणसँ ग्रामीण तबाहो होइत छलाह। **'सवार्थ चिंतकम्'** नामक एकटा अधिकारी आ होइत छलाह जिनका ग्रामीण लोकनि **'राहु'** बुझैत छलथिन्ह। ग्राममे पंचायतक चुनाव जनतांत्रिक पद्धतिसँ होइत छल आ मिथिलामे एकर परम्परा बड़ड प्राचीन छल। प्रत्येक गामक हेतु पुलिस (आरक्षी)क नियुक्ति सेहो होइत छल। प्रत्येक दिन पुलिस लोकनिकेँ अपन काजक ब्योरा गामक मुखियाकेँ देमए पड़इत छलन्हि। जँ कतहु कोनो गड़बड़ी भेल तँ ओहि हेतु पुलिसकेँ उत्तरदायी ठहराओल जाइत छल।

मिथिलाक अभिलेख आ प्राचीन पोथी सबमे बहुत रास प्रशासनिक शब्दावली भेटइत अछि जाहिसँ बुझि पड़इयै जे ओ सब ताहि दिनमे व्यवहारमे छल। संग्रामगुप्तक **पंचोभ ताम्रलेख**(१३म शाताब्दी)मे निम्नलिखित अधिकारीक विवरण भेटइत अछि–

i) महाराजाधिराज
ii) महामाण्डलिक
iii) महासान्धिविग्रहिक
iv) महाव्युहपति
v) महाधिकारिक
vi) महामुद्राधिकारिक
vii) महामत्तक
viii) महासाधनिक
ix) महाकटुक
x) महाकरणाध्यक्ष
xi) वार्तिनैबन्धिक
xii) महादण्डनायक
xiii) महापंचकुलिक
xiv) महासामन्तराणक
xv) महाश्रेष्ठिदानिक
xvi) गुल्मपति
xvii) खण्डपाल
xviii) नरपति
xix) महौत्थिक
xx) महाधर्माधिकरणिक, इत्यादि।

**वर्णनरत्नाकरमे–**

i) भूपाल
ii) माण्डलिक
iii) सामन्त
iv) सेनापति
v) पुरपति
vi) मंत्री
vii) पुरोहित
viii) धर्माधिकरण
ix) सान्धिविग्रहिक
x) महामत्तक
xi) प्रातबलकरणाध्यक्ष
xii) शांतिकरणिक
xiii) दुर्गपाल
xiv) राजगुरू, इत्यादि।

**चण्डेश्वरक राजनीति रत्नाकर:-** भारतीय राजनैतिक विचारधाराक विकासक इतिहासमे मिथिलाक चण्डेश्वरक स्थान अग्रगण्य अछि। ओनातँ भारतमे राजनीति शास्त्रपर प्राचीन कालहिसँ ग्रंथ लिखल जा रहल अछि आ एकर प्रमाण हमरा महाभारत, शुक्र, उशनस आ कौटिल्य तथा कामन्दकमे भेटइत अछि। एहिमे कौटिल्यक ग्रंथ सर्वश्रेष्ठ अछि आ पाछाँ सब केओ ओकरे अनुकरण केने छथि। चण्डेश्वर ग्रंथ **राजनीति रत्नाकर**मे सब पूर्वाचार्यक मत उद्धृत अछि।

मध्ययुगीन विचारकमे चण्डेश्वरक नाम विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि। ओ एक संभ्रान्त, प्रतिष्ठित एवँ विद्वान परिवारमे जन्म ग्रहण केने छलाह। ओ देवादित्यक पौत्र आ वीरेश्वरक पुत्र छलाह आ इ तीनु गोटए कर्णाट शासक हरिसिंह देवक शासन काल मंत्री पदकेँ सुशोभित केने छलाह। हिनक पित्ती धीरेश्वर, शुभदत्त आ लक्ष्मीदत्त तथा गणेश्वर सेहो पैघ–पैघ राज्याधिकारी छलाह। ओ लोकनि अपना युगक धुरन्धर विद्वान सेहो छलाह। चण्डेश्वर मिथिलाक प्रसिद्ध निबन्धकार भेल छथि आ **कृत्यरत्नाकर, दानरत्नाकर, व्यवहार रत्नाकर, शुद्धि रत्नाकर, पूजा रत्नाकर, गृहस्थ रत्नाकर, विवाद रत्नाकर, राजनीति रत्नाकर** हिनक प्रमुख रचना भेल छन्हि। मिथिलाक धर्म व्यवस्था आ कानूनक प्रसंगमे हिनक **विवाद रत्नाकर** आ वाचस्पतिक **विवाद चिंतामणि** प्रामाणिक ग्रंथ मानल जाइत अछि। स्मार्त विषयपर लिखल हुनक ग्रंथ **कृत्य चिंतामणि**मे उत्सव–संस्कारक वर्णन अछि। चण्डेश्वरक व्यक्तित्व एवँ कृतित्वक प्रभाव उत्तरवर्त्ती विद्वानपर सेहो देखबामे अवइयै। मैथिल आ बंगाली विद्वान हुनकासँ प्रभावित देखल जाइत छथि। मिसरूमिश्र, वर्द्धमान, वाचस्पति मिश्र, आ रघुनंदन

चण्डेश्वरसँ एतेक प्रभावित छथि जे ओ लोकनि अपना ग्रथमे हुनक ग्रंथक असंख्य उदाहरण देने छथि।

ओइनवार वंशक राजा भवेशक आज्ञासँ चण्डेश्वर राजनीतिरत्नाकरक रचना केलन्हि। ओहियुगक दृष्टिये एहि ग्रंथक बड़ड महत्व अछि। राजनीति विषयपर इ एकटा प्रौढ़ ग्रंथ मानल गेल अछि। एहिमे १६टा तरंग अछि आ सबहक व्यवस्था एवं क्रमबद्धतापर चण्डेश्वर विशेष ध्यान देने छथि। विषय प्रतिपादनक दृष्टिये सेहो इ महत्वपूर्ण मानल जा सकइयै। सोलहो तंरग एवँ प्रकारे अछि–

- **i)** राजाक निरूपण,
- **ii)** मंत्रीक निरूपण,
- **iii)** पुरोहितक निरूपण,
- **iv)** प्राड़विवाकक निरूपण,
- **v)** सभ्यक निरूपण,
- **vi)** दुर्गक निरूपण,
- **vii)** मंत्रणाक निरूपण,
- **viii)** कोषक निरूपण,
- **ix)** सेनाक निरूपण,
- **x)** सेनापतिक निरूपण
- **xi)** दूतक निरूपण
- **xii)** राजाक सामान्य कार्यक निरूपण
- **xiii)** दण्डक निरूपण
- **xiv)** राज्यव्यवस्थाक निरूपण
- **xv)** पुरोहित आदि द्वारा राज्यदान निरूपण
- **xvi)** राज्याभिषेक निरूपण

अहिठाम द्रष्टव्य जे चण्डेश्वर पहिने विजिगीषु राजा अमात्य एवँ अन्यान्य प्रवृति आ राज्यव्यवस्थाक प्रतिपादन केला उत्तर राज्याभिषेकपर सबसँ अंतमे विचार करैत छथि। राजाक वास्तविक एवँ न्यायसंगत उत्तराधिकारी भेला ज्येष्ठ पुत्र आ तैं राज्याभिषेक हुनके हेतैन्ह आ ताहि प्रसंगक एहिमे विस्तृत विवरण अछि। प्रत्येक विषयक निरूपण करबाक पूर्व चण्डेश्वर प्रारंभमे कोनो प्रामाणिक विधिग्रंथ अथवा राजनीतिज्ञक मतक उद्धरण दैत छथि आ तखन अपन मत स्थापित करैत छथि। पारस्परिक मतांतर एवँ विषमतामे समन्वय स्थापित करब हुनक लक्ष्य बुझना जाइत अछि। एहि ग्रंथक प्रणयनक क्रममे ओ वेद, पुराण, धर्मग्रंथ, स्मृति ग्रंथ, सूत्र ग्रंथ, राजनीति विषयक ग्रंथ आदि अध्ययन कए ओकर समन्वय स्थापित करबाक दृष्टिये सर्वमान्य सिद्धांतक स्थापना सेहो। प्रत्येक विषयक सांगोपांग विवेचन करबामे ओ बीच–बीचमे अपन स्वतंत्र टिप्पणी सेहो देने छथि जाहिसँ इ स्पष्ट अछि जे ओ कोनो बातकेँ आँखि मुनिकेँ नहि मानए बाला छलाह। एहि आलोचनात्मक टिप्पणीसँ ग्रंथक उपयोगिता आ विलक्षणता बढ़ि गेल अछि। कोनो दृष्टिये देखला उत्तर इ निर्विवाद अछि जे **'राजनीति रत्नाकर'** अपना ढ़ँगक एक अपूर्व ग्रंथ अछि आ राजनीति चिंतनक क्षेत्रमे मिथिलाक इ अनुपम देन अछि। प्राचीन पारिभाषिक शब्दक अर्थबोधक हेतु चण्डेश्वर जे पद्धति अपनौने छथि से विशेष रूपे उल्लेखनीय अछि। विभिन्न प्रमाणसँ अपन तर्ककेँ पुष्ट कऽ कए ओ अपन मतक स्थापना केने छथि आ ओहिमे समन्वय स्थापित करबाक प्रयास सेहो। अपन ग्रंथक अंतमे ओ लिखैत छथि–"मनु एवँ अन्य स्मृति ग्रंथमे निरूपित राजनीतिक अगाध एवम विशाल सागरसँ सार स्वरूप रत्नक चयन कए एवँ नीति निबंधक सर्वसम्मत मतक संकलन कए हम एहि ग्रंथक रचना कैल अछि जे भगवानकेँ मान्य हेतैन्ह, राजा द्वारा समादृत होएत आ उदार व्यक्तिक ऐश्वर्य वृद्धिक हेतु लाभदायक सिद्ध हेतैन्ह"।

मध्य युगमे जखन कि राजनीति विषयक पुस्तकक कोनो अभाव नहि छल तखन चण्डेश्वरकेँ इ पोथी लिखबाक आवश्यकता किएक भेलैन्ह से एकटा विचारणीय विषय।

इ ग्रंथ लिखबाक पाछाँ चण्डेश्वरक अभिप्राय इ छल जे प्रत्येक राजा धर्म आ अर्थमे सामंजस्य स्थापित करैत न्यायोचित मार्गपर चलिकेँ राजनीतिक वास्तविक कर्तव्य एवँ दायित्वक निर्वाह करैथ। सोलहो तरंगक प्रतिपाद्य विषय देखला उत्तर इ स्पष्ट भऽ जाइछ।

**i) राजा:-** चण्डेश्वर मनुक मतक उद्धरण दैत लिखने छथि जे संसारक रक्षार्थ प्रजापति राजाक सृष्टि केने छलाह। प्रजाक रक्षा कैनिहार राज्याभिषिक पुरूषकेँ राजा मानल गेल अछि। याज्ञवल्क्य द्वारा वर्णित राजाकेँ अपेक्षित गुणक वर्णन सेहो कैल गेल अछि। एहि गुणक अतिरिक्त चण्डेश्वरक अनुसार राजाकेँ धार्मिक सेहो हेबाक चाही। तीन प्रकारक राजाक वर्णन ओ करैत छथि–सम्राट (चक्रवर्त्ती), सकर (कर दै वाला) आ अकर (कर नहि दै वाला)। तीनुक धर्म आ गुण एक समान होएबाक चाही। प्रजाक पालन, विद्वान, बृद्ध एवँ ब्राह्मणक रक्षा राजाक मुख्य कर्तव्य मानल गेल अछि। राजाकेँ विभिन्न विषयक ज्ञान रहबाक चाही। व्यसन रहित राजाकेँ एहिक आ पारलौकिक सफलता भेटइत छैक आ अन्याय केनिहार राजाक शीघ्रहि नाश भऽ जेबाक संभावना रहैत छैक। चण्डेश्वर कौटिल्य द्वारा निर्धारित राजाक कर्तब्य आ अधिकारक चर्च नहि केने छथि।

**ii) अमात्य:-** राजाकेँ चाही जे ओ सात–आठ सुपरिक्षित व्यक्तिकेँ अमात्य नियुक्त करैथ कारण ओहि बिनु राज काज चलब असंभव। सन्धि विग्रह आदि प्रश्नपर राजाकेँ अमात्यक संग विचार विमर्श करबाक चाही। अमात्यक परिषदकेँ मंत्रिपरिषद कहल गेल अछि।

**iii) पुरोहित:-** वेद–वेदार्थक ज्ञाताके पुरोहितक पदपर नियुक्त करबाक चाही। श्रौत–स्मार्त कार्यमे राजाकेँ पुरोहितक संग ऋत्विजक नियुक्ति करबाक चाही।

**iv) प्राडविवाक:-** धर्म एवम न्याय व्यवस्थाक हेतु प्राडविवाक (मुख्य न्यायाधीश)क नियुक्ति आवश्यक मानल गेल अछि। प्राडविवाककेँ कुलीन, शील सम्पन्न, गुणवान, सत्यवक्ता, निर्भीक, चतुर आ निपुण होएबाक चाही। प्राडविवाक तीन सभ्यक संग मिलिकेँ निर्णय दैथ से सर्वोत्तम–एकमतसँ निर्णय हो तँ ओकरे धार्मिक निर्णय मानबाक चाही।

**v) सभा–सभ्य:-** चारि प्रकारक सभाक वर्णन भेल अछि–

**प्रतिष्ठिता**–नगर अथवा राजा द्वारा निश्चित कैल गेल स्थानपर जे सभा आहूत हो तकरा प्रतिष्ठिता कहल गेल अछि।

**अप्रतिष्ठिता**–कोनो गाममे आयोजित होइवाला सभाकेँ अप्रतिष्ठिता कहल गेल अछि।

**सुमुद्रिता**–जाहिमे अध्यक्ष एवँ न्यायाधीश विराजमान होथि।

**शासिता**–जाहिमे राजा विद्यमान होथि।

सभाक दश अंग कहल गेल अछि–**राजा, अधिकारी (वक्रा), सभासद, धर्मशास्त्र, गणक, लेखक, सुवर्ण, अग्नि, जल** आ **दण्डधारी**। राजा शासन करैत छथि, अधिकारी वक्रा भेला, सभासद निरीक्षणक कार्य करैत छथि, धर्मशास्त्र निर्णयक काज करैत अछि, गणक हिसाब लिखैत छथि, लेखक न्यायालयक कार्यवाही लिखैत छथि, सुवर्ण, अग्नि आ जल सपथक सामग्री भेल। उत्तम कार्यक अधिष्ठाता, सत्य–धर्मक प्रति अनुरक्त निर्लोभ एवँ निष्पक्ष व्यक्तिकेँ राजाकेँ सभ्य चुनबाक चाही। एहने लोग

धर्म आ कर्ममे निष्णात होइत छथि। निर्णयक शुद्धता सभासदक शुद्धतापर निर्भर करैत अछि। अधार्मिक बातक प्रतिवाद करब हुनक प्रमुख कर्त्तव्य छल।

**vi) दुर्ग:-** राजाक हेतु दुर्गक निर्माण करब आवश्यक छल। छह प्रकारक दुर्गक चर्च कैल गेल अछि। राजाकेँ स्वयं गिरि दुर्गमे आश्रय लेना चाही कारण सब दुर्ग ओकरे श्रेष्ठ मानल गेल छैक। प्रत्येक दुर्गमे सब किछु रहबाक चाही।

**vii) मंत्रणा:-** एकांत राजभवन अथवा जंगलमे जतए मंत्रभेदक कोनो आशंका नहि हो ततए गुप्त मंत्रणा करबाक चाही। मंत्रणाकेँ सब तरहे गुप्त राखब आवश्यक।

**viii) कोष:-** एहने कोषकेँ प्रशंसनीय मानल गेल अछि जाहिमे द्रव्य जमा हो मुदा बाहर नहि कैल जाए। राजाकेँ कोषक वृद्धिक हेतु सतत प्रयत्नशील रहबाक चाही।

**ix) सेना:-** राजाकेँ सेना आ बलक व्यवस्थापर पूर्ण ध्यान देबाक चाही। एहिमे छह प्रकारक सेनाक संयोजनक चर्च भेल अछि।

**x) सेनापति:-** हस्ति, अश्व, रथ, पदाति सेना, सेनापतिक अधीन रहैत अछि आ एहि पदक सेहो ओतवे महत्व अछि जतवा पुरोहित आ अमात्यक। पुरूषार्थयुक्त, लोकप्रिय, दक्ष, शस्त्रास्त्रसँ युक्त, रण विद्यामे कुशल, प्रवासक संकटकेँ सहएवाला व्यक्तिकेँ सेनापतिक पदपर नियुक्त करबाक चाही।

**xi) राजदूत आ गुप्तचर:-** सन्धि एवँ विग्रहक दायित्व राजदूतपर निर्भर करैत अछि। एहिपर एहि ग्रंथमे विशेष विचार कैल गेल अछि। दूतकेँ सच्चरित्र, चतुर, मेधावी, देशकालक ज्ञाता, निर्भीक, आ सुवक्ता होएबाक चाही। दूतकेँ राजाक मुँह कहल गेल अछि। दूतकेँ मारबाक नहि चाही चाहे ओ मलेच्छे कियैक ने हो? गुप्तचर सेहो राज्यक प्रमुख अंग मानल गेल अछि। स्वराष्ट्र आ परराष्ट्रक वस्तुस्थितिक पता लगाएब गुप्तचरक मुख्य कार्य छल।

**xii)** राजाक सामान्य कार्य**:-** एहि प्रसंगमे मनुक सहारा लैत चण्डेश्वर लिखैत छथि**–**

i) युद्धसँ विमुख नहि हैव।
ii) प्रजाक पालन।
iii) ब्राह्मणक सेवा।
iv) सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय (षड्गुण)क चिंतन–मनन करब।
v) साम–दाम–दण्ड–भेदपर विचार करब, दण्डक प्रयोग तखने करबाक चाही जखन सब उपाय निरर्थक सिद्ध हो।
vi) राजाकेँ धनक टोहमे बरोबरि रहबाक चाही।
vii) राज्यक रक्षा आ अपन सुरक्षा।
xiii) **दण्ड:-** शारीरिक–आर्थिक–देशकालकेँ ध्यानमे राखि दण्ड–विधान बनेबाक चाही।
xiv) **राज्यक उत्तराधिकार:-** सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्रकेँ देबाक चाही।
xv) **पुरोहितक हाथे राज्याभिषेक:-** उत्तराधिकार सौंपबाक पूर्वहि जँ देहावसान भऽ जाए तँ पुरोहित आ मंत्री द्वारा ज्येष्ठ पुत्रकेँ अभिषिक्त करबाक चाही। जँ कोनो पुत्र नहि हो तँ राजवंशक कोनो उपयुक्त व्यक्तिकेँ चुनबाक चाही।
xvi) **राज्याभिषेक:-** राजा अपन जीवन कालहिमे ज्येष्ठ पुत्रकेँ युवराज पदपर नियुक्त कऽ सकैत छथि। जँ कोनो पुत्र नहि हो तँ प्रजा आ ब्राह्मणक

परामर्शसँ कोनो समीपवर्त्ती अन्य व्यक्तिकेँ ओहि पदपर आनिकेँ राज्याभिषेक कैल जा सकइयै। अभिषिक्त युवराजकेँ मान्य परम्पराक अनुसार चलबाक चाही। धर्मशास्त्र आ अर्थशास्त्रमे विरोध भेलापर मध्यम मार्गक अवलंवन कए अपन व्यावहारिक बुद्धिसँ राज्यक संचालन करबाक चाही।

चण्डेश्वर अपन **राजनीति रत्नाकर**मे अमर सिंह, कात्यायन, कामन्दक, कुल्लूक भट्ट, कौटिल्य, नारद, भागवत, मनु, याज्ञवल्क्य, रामायण–महाभारत, लक्ष्मीधर, वसिष्ठ, विष्णु, बृहस्पति, व्यास, शुक्र, श्रीकर, हारीत, आदिसँ मत उद्धृत केने छथि। **राजनीति रत्नाकर** एक प्रकार संग्रह ग्रंथ थिक आ मध्य युगमे जखन लोग सब मौलिक ग्रंथक अवगाहन करबामे असमर्थ छल तखन चण्डेश्वर एहि ग्रंथक रचना कए ओहि अभावक पूर्त्ति केलन्हि। एकर लोकप्रियता एवँ प्रसिद्धिक इएह कारण अछि।

चण्डेश्वरक **राजनीति रत्नाकर** मिथिलाक हेतु एकटा आदर्श ग्रंथ भेल आ तदनुसार मिथिलामे शासन पद्धति संगठित भेल जकर प्रमाण हमरा ओइनवार वंशक शासन पद्धतिसँ लगइयै। देवसिंह अपना जीवतहि शिवसिंहकेँ युवराज बनौने छलाह। अहिठाम इहो स्मरण रखबाक अछि जे १३२५क बाद मिथिलमे मुसलमानी अमल प्रारंभ भऽ चुकल छल आ अहिठाम मुसलमान शासकक प्रतिनिधि सेहो रहैत छलाह। अहिबातकेँ ध्यानमे राखियेकेँ चण्डेश्वर अपन **राजनीति रत्नाकर**मे विचारक प्रतिपादन केने छथि आ अपन समन्वयवादी प्रवृत्तिक परिचय सेहो देने छथि। सामंतवादी कुलीन लोकनिक प्रभाव तँ सहजहि बढ़िये गेल छल। विद्यापतिक रचना आ अन्यान्य साधन सबसँ निम्नलिखित मंत्री आ कुलीनक नाम भेटइत अछि।

i) अच्युत,
ii) महेश,
iii) रतिधर,
iv) रतिपति आ शंकर,
v) वाचस्पति (परिषद छलाह),
vi) रउत रजदेव,
vii) अमृतकर आ अमिञंकर,
viii) गणेश्वर,
ix) चण्डेश्वर।

न्याय व्यवस्थाक क्षेत्रमे मिथिलाक योगदान विशेष रहल अछि आ ताहुमे फौजदारीक क्षेत्रमे सेहो। वर्धमानक **दण्डविवेक** कानूनक एक प्रमुख पोथी मानल गेल अछि। न्याय व्यवस्थामे जाति सेहो देखल जाइत छल आ तदनुसार अभियुक्तकेँ सजा देल जाइत छल। सब किछु होइतहुँ वर्द्धमान बहुत अर्थमे स्पष्ट वक्ता छलाह आ मूल सत्यकेँ पकड़ने छलाह। हुनक विश्वास छलन्हि जे लोभ आ अज्ञानतावशे दिवानी मुकदमाक संख्या बढ़ैत अछि। हुनक विचार छलन्हि जे अभियुक्तकेँ एहि हिसाबे सजा देल जाइन्ह जे पुनः ओ ओहन काज नहि करए आ ओकरा चरित्रमे सुधार भऽ जाइक। ब्राह्मण अभियुक्तकेँ सुविधा भेटइत छलन्हि। गैर कानूनी ढ़ंगसँ दोसराक चीज वस्तु लेबकेँ चोरी कहल गेल अछि आ एहि प्रकारक तीनटा वर्गीकरण वर्द्धमान कएने छथि–

i) साहस कृत (डकैती)
ii) प्रकाशतस्कर (ठग)
iii) अप्रकाशतस्कर (चोर)

वर्द्धमान **दण्ड**क वर्गीकरण एवँ प्रकारे केने छथि–
दण्ड
वाक् धिक् धन् वध् निर्वासन्
धन्
धनदण्ड सर्वस्वहरण
वध
पीड़न अंगच्छेद प्रमापण
पीड़न
ताण्डव अवरोधन बन्धन विडम्बन

वाचस्पति मिश्रक अनुसार सजा देबाक अधिकार राजाकेँ छन्हि। न्यायपालिकाक अध्यक्ष राजा होइत छलाह आ हुनका कानूनक पालन करए पड़इत छलन्हि। कानूनमे साक्ष्यक रूप **'बृषल'**केँ विश्वास नहि कैल जाइत छल आ तैं साक्षी ओ नहि भऽ सकैत छलाह। कानून आ राजनीतिक दृष्टिये वाचस्पतिक **विवादचिंतामणि, नीतिचिंतामणि** आ **विवाद निर्णय** महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। विद्यापति सेहो एकटा कानून ग्रंथ लिखने छलाह जकर नाम छल **विभागसार**। वकीलकेँ मिथिलामे **व्यावहारिक** कहल जाइत छल।

मुसलमान लोकनि शांतिसुरक्षाक हेतु ठाम–ठाम **कोतवाल**क नियुक्ति करैत छलाह आ **कोतवाल** शब्दक व्यवहार हमरा विद्यापतिमे सेहो भेटइत अछि जाहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे **कोतवाल** मिथिलाक शासन प्रणालीक एकटा प्रमुख अंग बनि चुकल छल। विद्यापतिमे **कोतवाल**क हेतु **कोटवार** शब्दक व्यवहार अछि। बादमे **कोतवाल**क स्थान फौजदार लेलक। **काजी, ख्वाजा, मखदुम** आदि शब्दक व्यवहार मिथिलाक शासन प्रणालीमे शुरू भऽ चुकल छल। **वज्रघंट**क विवरण सेहो भेटइत अछि। **कीर्त्तिपताका**सँ निम्नलिखित व्यक्ति (पदाधिकारी लोकनि?)क नाम उपलब्ध होइयै।

सूरज, राजनन्दन, हरदत्त, भिखु, पुण्डमल्ल, गोपाल मल्लिक, जयसिंह, हरिहर, रजदेव, केदारदास, सोहन, मुरारि, रामसिंह, पृथ्वीसिंह, विदु, दामोदरा, जनरंजन, सोने, विद्याधर, कमलाकर, श्रीराम, श्रीशाखो, सनेही झा। इ सब गोटए राज्यक पदाधिकारी छलाह। गोपाल मल्लिक आ पुण्डमल्ल धनुर्विद्यामे निपुण छलाह। रउत रजदेव योद्धा छलाह। युद्धक वर्णनक क्रममे ज्योतिरीश्वर ठाकुर ३६प्रकारक वस्त्रास्त्रक नाम गिनौने छथि आ विद्यापति सेहो सेनापति, दलपति आ राउतक वर्णन केने छथि। ज्योतिरीश्वर **'राजनीति'** शब्दक व्यवहार केने छथि आ राजनीति केनिहारक हेतु **'तत्वज्ञ'** शब्दक। राजनीतिकताक तत्वज्ञ क्रममे **"मंत्रगोपन, मृत्यमरण, देशरक्षा, वलावलज्ञान, कोषसंचय, व्युहरचना, व्युहप्रवेश, व्युहभंग, शंशय"**क विवरण वर्णन रत्नाकरमे अछि। विद्यापतिक **लिखनावली**मे निम्नलिखित शब्दावली भेटइत अछि–

i) महापत्रिक ठक्कुर
ii) महामत्तक ठक्कुर
iii) महासूपकारपति
iv) महापार्णागारिक ठक्कुर

v) स्वस्त्रागरिक
vi) पानियगारिक
vii) महादश नैबन्धिक ठक्कुर
viii) महादेव गारिक ठक्कुर
ix) कोषागार
x) महाभानुगारिक
xi) दलपति
xii) राउत
xiii) कार्यि
xiv) ओसथि
xv) मोकद्दम, इत्यादि।

खण्डवला कुलक समयसँ मुगल अधिकारी तिरहूतमे रहए लागल। सम्प्रति मिथिला तीन प्रमण्डलमे विभक्त अछि–तिरहूत, दरभंगा आ सहरसा।

अध्याय–१६

# मिथिलाक सामाजिक इतिहास

मिथिलाक अस्तित्व वैदिक कालहिसँ अद्यावधि सुरक्षित अछि। मिथिलामे आर्यक आगमनक पूर्व मिथिलाक सामाजिक व्यवस्थाक रूपरेखा केहेन छल से कहब असंभव। ओकर ठीक–ठीक अनुमान लगायबो संभव नहि अछि। मिथिलाक संस्कृतिक अविछिन्न प्रभाव रहल अछि। आजुक मिथिलामे हमरा लोकनि जे देखैत छी ताहिसँ बहुत भिन्न ओहि दिनक अवस्था सामान्य जनक हेतु नहि छल। प्रत्येक देशक अपन अपन देशगत विशेषता होइत छैक आ ओहिपर ओहि देशक भूगोलक प्रभाव रहिते छैक। मिथिला एहि नियमक अपवाद नहि रहल अछि आ रहबे किएक करैत? सामाजिक नियमक निर्माण कोनो एक दिनमे नहि होइत छैक आ सामाजिक व्यवस्थापर मात्र भूगोलक नहि अपितु आर्थिक व्यवस्थाक प्रभाव सेहो पड़इत छैक। पूर्व वैदिक कालमे समाजक व्यवस्था कठोर नहि बनल छल आ बहुत दूर धरि ओ व्यवस्था स्वच्छन्द एवँ मुक्त छल। समाजमे प्रत्येक व्यक्तिकँ मुक्त वातावरणक अनुभव होइत छलैक आ ओ लोकनि कोनो स्थायी नियमक निर्माण कए नहि बैसि गेल छलाह। गतिशील समाज छल आ तैं विकासोन्मुख सेहो। एवँ प्रकारे इ समाज बहुतो दिन धरि चलल आ शनैः शनैः आर्यक विस्तार जहिना भारतवर्षक विभिन्न भागमे होमए लगलैक तहिना समाजोमे तदनुकुल परिवर्त्तन अवश्यम्भावी बुझना गेलैक आ समाजक महारथी लोकनि ओहि दिसि अपन ध्यान देलन्हि। साम्राज्यक विस्तारक संगहि अर्थनीतिक पेंच कसे जाए लागल आ समाज ओहिसँ भिन्न नहि रहि सकल। वर्णाश्रमक व्यवस्था, भने कोनो ऊँच्च आदर्शसँ भेलहो, पछाति ओ अपन दुर्गुणक संग हमरा लोकनिक समक्ष उपस्थित भेल आ जेना जेना वर्ग विभेद बढल गेल तेना-तेना एकर स्वरूप दिन प्रतिदिन विकृत होइत गेलैक। जँ से नहि होइत तँ मिथिलामे पुनः जनक सन शासक, याज्ञवल्क्य सन विधिनिर्माता एवं गौतम सन सूक्ष्म विचारक किएक नहि अवतीर्ण भेलाह? आ ने फेर उत्पन्न भेलीह कोनो गार्गी आ मैत्रेयी? एहि मूलतथ्यकँ जाधरि हमरा लोकनि अवगाहन करबाक चेष्टा नहि करब ताधरि हमरा लोकनिक कल्याण नहि आ ने तत्वक उचित दिगदर्शने।

सर्वप्रथम चारि वर्णक उल्लेख ऋगवेदक पुरूष सूक्तमे भेटइत अछि। प्रारंभमे एहेन बुझि पड़ैत अछि जे जखन आर्य लोकनिक विस्तार भेलैन्ह आ हुनका लोकनिकँ अहिठामक मूलनिवासीसँ सम्पर्क भेलैन्ह तखन दुहुक संस्कृतिमे पर्याप्त भिन्नता छल आ ओ लोकनिकँ वर्णक विभाजन उचित बुझलन्हि आ तदनुकुल वर्णक विभाजन भेल। मिथिलामे आर्यक प्रसारक समय वर्णव्यवस्थाक प्रचलन भऽ चुकल छल। मुदा ताहि दिनमे अझुका कट्टरता देखबामे नहि अवइयै। विवाहादिक प्रसंगमे ऋगवेद आ **शतपथ ब्राह्मण**मे भिन्नता देखबामे अवैछ। ब्राह्मण आ क्षत्रियकँ अपनासँ छोट वर्गमे विवाह करबाक अधिकार प्राप्त छलन्हि। ब्राह्मण कालमे शूद्र लोकनिक अवस्था शोचनीय भऽ गेल छल। **एतरेय ब्राह्मण**मे शूद्रक दुर्दशाक वर्णन भेटइत अछि। शूद्र लोकनि सब अधिकारसँ वंचित छलाह आ समाजमे हुनक स्थान निकृष्टतम् छलन्हि। कालांतरमे

किछु एहेन व्यवस्था बनल जाहिमे ब्राह्मण-क्षत्रिय लोकनि सम्मिलित रूपें निम्नवर्गक शोषणमे रत भऽ गेलाह। एकर मूल कारण इ छल जे जँ-जँ सामाजिक व्यवस्था गूढ़ होइत गेल तँ तँ इ दुनू वर्ग उत्पादनक साधन एवं तत्संबधी ज्ञानक कुंजी अपना हाथमे दबौने गेलाह आ निम्न दुनू वर्गक लोग हिनका सबहिक अधीन होइत गेल। जखन आर कोनो चारा नहि रहलैक आ परिस्थिति दिनानुदिन बदतर होइत गेलैक तखन शूद्रकें वेदोसँ वंचित कैल गेलैक। एहि सब घटना क्रमक उल्लेख तत्कालीन साहित्य एवं कथा सबमे सुरक्षित अछि। दरिद्र लोकनिक की दशा रहल होइत तकर पूर्वाभास तँ महाभारतक अध्ययनसँ भेटइत अछि जतए इन्द्रोकें इ कहए पड़ल छन्हि जे दुःखक अनुभव करबाक हो तँ मर्त्यलोक जा कए हुनका लोकनिक संग रहिकें देखि आउ। महाभारतक अनुशासन पर्वमे एहि दृष्टिकोणक बहुत रास घटना वर्णित अछि।

समाजक वर्गीकरण दिनानुदिन विषम होइत गेल। शूद्र एवं अन्यान्य छोट छीन वर्गक लोग सब जमीनक अभावमे मजूर अथवा बेगारीक अवस्थाकें प्राप्त केलक आ ओम्हर दोसर दिसि गगन चुम्बी अट्टालिका ओकरा लोकनिक दयनीय एवं उपेक्षित आ असहाय अवस्थापर अट्टहास करए लागल। सूत्र एवं स्मृति साहित्यमे एहि बातक पुष्ट प्रमाण अछि। करहुक मामिलामे वैश्य-शूद्रेकें तंग होमए पड़इत छलन्हि। वैदिक युगमे जाति वा वर्गक निर्णय कर्मसँ होइत छल आ आन वर्णक लोगो अपन कर्मसँ ब्राह्मण भऽ सकैत छल। **शतपथ ब्राह्मण**क अनुसार राजा जनक याज्ञवल्क्यक उपदेश एवं अपन कर्तव्यसँ ब्राह्मण भेल छलाह। **तैत्तिरीय ब्राह्मण**मे विद्वानेकें ब्राह्मण कहल गेल अछि।

स्त्री, शूद्र, श्वान आ गायकें **"अनृत"**क संज्ञा देल गेल छैक। विवाहमे खरीद-बिक्रीक प्रथा छल। बहु विवाहक प्रथा सेहो छल। धनसम्पत्तिसँ सेहो स्त्रीगणकें वंचित राखल जाइत छल। पूर्व वैदिक कालक जे मुक्त वातावरण छल से आब समाप्त भऽ चुकल छल आ ओकर स्थान लऽ लेने छल संकीर्णता। सामाजिक दृष्टिकोणसँ संकीर्णताक समावेश घातक सिद्ध भेल। संकीर्णताक भावनाकें प्रश्रय देबाक हेतु अत्यधिक साहित्य एवं कर्मकाण्डी नियमक निर्माण भेल। ओना उपरसँ देखबामे तँ इएह बुझि पड़ैछ जे स्त्रीगणक स्थान समाजमे बड़ड उँच्च छलन्हि मुदा इ स्थिति वास्तविकतासँ बड़ड दूर छल। गार्गी आ मैत्रेयीक नामसँ कोनो देश अपनाकें गौरवान्वित बुझओ परञ्च हमरा लोकनिकें एतए इ स्मरण राखब आवश्यक जे ओ लोकनि नियमक अपवाद मात्र छलीह। ओहिठाम याज्ञवल्क्यक दोसर पत्नी कात्यायनीकें देखिऔक तँ बुझबामे असौकर्य नहि होएत जे समाजमे स्त्रीक वास्तविक स्थिति की छल? सुलभा आ गार्गीक देनसँ भारतक दर्शन भरपुर अछि। जतए एक दिसि मनुक्खकें अधिकाधिक विवाह करबाक अधिकार प्राप्त छलन्हि ओहिठाम एक स्त्रीकें दोसर विवाह करबाक आ दोसराक संग मेल जोलक कोनो अधिकार नहीं छलैक। सुरूचि जातकमे एकटा कथा सुरक्षित अछि जकर सारांश भेल-*"मिथिलाक राज्य बड़ड विस्तृत अछि आ एहिठामक शासककें १६०००(सोलह हजार) पत्नी छन्हि"*। एहिसँ प्रत्यक्ष भऽ जाइछ जे सामाजिक व्यवस्थामे स्त्रीगणक की स्थिति छल? **एतरेय ब्राह्मण**मे कहल गेल अछि जे पुतोहु अपन श्वसूरक सोझाँ नहीं जाइत छलीहे, जँ अनचोकसँ श्वसूरक नजरि पुतोहुपर पड़ि जाइत छलन्हि तँ पुतोहु बेचारी नुका रहैत छलीह। मिथिलामे पर्दा प्रथा आ पुतोहु-श्वसूरक सम्बन्धक इ प्राचीनतम उदाहरण भेल आ मैथिल समाजमे ताहि दिनसँ अद्यावधि कोनो विशेष परिवर्त्तन नहीं देखबामे अबैछ।

विधवाक स्थितिओ प्रायः अझुके जकाँ छल। समाजमे विधवाकेँ हेय दृष्टिये देखल जाइत छल आ स्थिति बदतर छल। रखेल रखबाक प्रथा, दासी पुत्रक साथ दुर्व्यवहार, व्यभिचार एवं वेश्यावृत्तिक उल्लेख सेहो भेटैछ। राजदरबारमे असंख्य दासी पुत्री आ रखेलक व्यवस्था रहैत छल। मिथिलाक विभाण्डक मुनिक पुत्र ऋषि श्रृंग्यकेँ अंगक एकटा सुन्दरी फुसला लेने छलन्हि। किंवदंती अछि जे अंगक राजा लोमपाद अपन बेटी शांताकेँ एहि कार्यक हेतु अगुऔने छलाह। एहि घटनाक उल्लेख अश्वघोष सेहो कएने छथि।

*"ऋष्य श्रृंग मुनि सुतं स्त्रीष्व पंडितम्।*
*उपायै विविधैः शांता जग्राहच जहारच"॥*

पुराण आ जातकमे वर्णित समाजमे बहुत किछु समानता अछि। दिन प्रति दिन समाजमे कट्टरता एव अनुदार भावना जड़ि पकड़ने जाइत छल। धनक महत्व बढ़ए लागल छल आ विद्या आ विद्वानक महत्व क्रमशः घटए लागल छल। ओना तँ लक्ष्मी-सरस्वतीक आपसी द्वेष बौद्धयुगमे आबिकेँ विशेष रूपें चरितार्थ भेल छल मुदा ओहुँसँ पूर्वहुँ हमरा एहि सब वस्तुक स्पष्ट उदाहरण भेटइत अछि। ब्राह्मणक अपेक्षा धनाढ्यक प्रतिष्ठा बढ़ि रहल छल। आवश्यकतानुसार आब लोक अपन रोजगार चुनए लागल आ प्राचीन कालमे ब्राह्मण लोकनिक लेल जे खेती निषिद्ध मानल जाइत छल से आब नहि रहि गेल। ब्राह्मण खेती आ व्यवसाय दुनूमे लागि गेलाह। पुराणादिक अध्ययनसँ इ सब बात स्पष्ट भऽ जाइछ। बौद्ध साहित्यक अनुसार ब्राह्मण लोकनि अपन जीविकाक हेतु सब काज करैत छलाह। जातक तँ एहि प्रकारक कथा सबसँ भरले अछि। सामाजिक नैतिकतामे सेहो परिवर्त्तन भेल आ प्राचीन मूल्याँकनक मापदण्डमे सेहो समयानुसार उचित संशोधन आ परिवर्त्तन कैल गेल।

मनुक्खक जीवनक कमसँ कम तीनटा विभाजन सर्वप्रथम **छान्दोग्य उपनिषद**मे देखबामे अवइयै। उपनिषद कालमे मिथिलामे क्षत्रिय ब्राह्मणक स्तर धरि पहुँचि चुकल छलाह। ज्ञान एवं ब्रह्मविद्याक क्षेत्रमे ओ कोनो रूपें ब्राह्मणसँ कम नहि छलाह। उपनिषदमे कर्मकाण्डक विरोधमे उठैत भावनाक प्रदर्शन सेहो देखबामे अवइयै। उपनिषदमे हम जे देखैत छी ताहिसँ स्पष्ट अछि जे ओ युग मिथिलाक सामाजिक-साँस्कृतिक इतिहासक उत्कर्षक युग छल आ सब तरहे सुखी सम्पन्न सेहो। एक बात जे स्मरणीय अछि उ भेल इ जे मिथिलाक क्षत्रिय शासक कोनो रूपैं ब्राह्मणसँ अपनाकेँ कम नहीं बुझैत छलाह आ ब्राह्मणोकेँ इ स्वीकार करबामे कोनो आपत्ति नहि छलन्हि। स्वयं याज्ञवल्क्य जनकक एहि गुणकेँ स्पष्ट रूपे मनने छथि आ गीतामे सेहो एकर संकेत अछि। वर्ण व्यवस्था ताहि दिनमे एतेक दृढ़ नहि भेल छल।

बौद्ध एवं जैन धर्मक कार्य क्षेत्र सेहो मिथिलामे छल आ एकर प्रभाव तत्कालीन समाजपर पड़ब स्वाभाविके छल। अवैदिक धर्मक विकासक मुख्य स्थान छल मगध आ वैशाली सेहो ओहि प्रभावसँ अक्षुण्ण नहि छल। बौद्ध युग धरि अबैत अबैत ब्राह्मण सत्ताक भीत ढ़हि रहल छल आ क्षत्रिय लोकनिक प्रभाव चारूकात दिनानुदिन बढ़ि रहल छल। भोजन भावक नियमादिमे सेहो परिवर्त्तन अवश्यम्भावी भऽ गेल छल। जातकक अनुसार एहि युगमे ब्राह्मण लोकनि सबहिक संग भोजन भाव करैत छलाह आ एहेन ब्राह्मण सबकेँ कट्टर वैदिक लोकनि अपना पाँतीसँ फराके रखैत छलाह। सभहिक संग खेनिहार ब्राह्मण लोकनिकेँ पतित कहल जाइत छल। सामाजिक

मान्यताक हेतु एहि युगमे संघर्ष चलैत रहल आ तरह तरहक उथल-पुथलक कारणे समाजमे सतत अस्थायित्व बनल रहल।

आजीविक, जैन, आ बौद्ध संप्रदायक प्रसारसँ वेदक अपौरूषेयतामे लोगक संदेह उत्पन्न होमए लगलैक आ एवं प्रकारे समाजक वर्गीकरणमे सेहो। कारण उपरोक्त तीनू सम्प्रदायक नेता वर्णव्यवस्थाक कट्टर विरोधी छलाह। एकरे प्रभाव स्वरूप जाति पातिक खाधि भोथा रहल छल आ एहि अग्निधार बहुत रास सड़ल विचारक होम सेहो भए रहल छल। प्रारंभमे वैशालीसँ आगाँ एहि विचार सबहिक दालि नहीं गलल छलैक परञ्च काल क्रमेण एकर प्रभावसँ मिथिला मुक्त नहि रहि सकल। वैशालियो पूर्णतः वर्ण-व्यवस्थासँ मुक्त नहि भऽ सकल यद्यपि बौद्ध लिच्छवी लोकनिकेँ **तावतिंशदेव** कहने छथि। धनक प्रभाव एहि सब क्षेत्रमे सेहो बनले छल आ गरीब मानवता कहिओ अपनापर होइत अन्यायक विरोधमे सशक्त भऽ कए ठाढ़ नहि भऽ सकल। लिच्छवी लोकनिक रहन सहन सेहो वर्गगत छलन्हि जँ एहि व्यवस्थामे कतहु कोनो प्रकारक छूट देखबामे अबैत हो तँ ओकरा नियमक अपवाद कहब। समाजक भद्र लोकनि चाण्डालकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छलाह आ समाजमे चाण्डालक स्थिति बदतर छल। ओ लोकनि नगरसँ बाहर रहैत छलाह। घृणित कार्य हुनके सबसँ कराओल जाइत छल। हुनका लोकनिक अवस्थामे सुधारक कोनो आसार देखबामे नहि अबैत छल।

भृत्य, गुलाम, बहिया आदिक स्थिति तँ आर चिंतनीय छल कारण इ लोकनि तँ शूद्रक कोटिमे छलाहे। स्वयं बुद्ध जे अपना मुँहसँ गुलामक अवस्थाक वर्णन कएने छथि ताहिसँ रोमाँच भऽ जाइछ। जातकमे चारि प्रकारक गुलामक वर्णन अछि। वहियाक प्रथा मिथिलामे अति प्राचीन कालसँ चलि आबि रहल अछि। कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ अन्यान्य ग्रंथ सबमे एकर उल्लेख भेटइयै। वेश्याक प्रचलन ऐहु युगमे छल आ वैशालीक अम्बपालीक नाम तँ सर्वविदित अछिये। यद्यपि बुद्ध स्वयं एहि व्यवस्थाक विरोधी छलाह आ एतए धरि जे ओ स्त्रीकेँ संघमे एबासँ वर्जित करैत छलाह मुदा तइयो जखन अम्बपाली हुनका प्रति अपन भक्ति दरसौलक तखन बुद्ध ओकर निमंत्रण स्वीकार कए ओतए भोजन केलन्हि। अभिजात वर्गक लोक सबहिक ओतए गणिकाक ढ़ेर लागल रहैत छल। एहिमे बहुतो नृत्य एवं संगीत कलामे निपुण होइत छलीहे। कोनो कोनो राजदरबार १६०००गणिकाक उल्लेख भेटइयै। पर्दा प्रथाक संकेत बौद्धयुगमे भेटइत अछि।

बौद्धकालमे धनसम्पति आ राज्याधिकार सामाजिक मापदण्ड भेल आ क्षत्रिय लोकनिक महत्व समाजमे एतेक बढ़लन्हि जे ओ लोकनि आब विशेष रूपेँ आहूत होमए लगलाह। विदेह-वैशालीमे ओ लोकनि आर शक्तिशाली छलाह। वर्ण-व्यवस्थामे एवं प्रकारे सेहो थोड़ेक परिवर्त्तन हैव स्वाभाविक भऽ गेल। अशिक्षित ब्राह्मण लोकनि निम्नस्तरकेँ प्राप्त भेलाह। क्षत्रिय लोकनिक प्रभाव वृद्धिक सबसँ पैघ उदाहरण इएह भेल जे वैशालीक अभिषेक पुष्पकरिणीमे लिच्छवी राजा लोकनि अनका स्नान नहि करए दैत रहथिन्ह। समस्त लिच्छवी क्षेत्र तीन हिस्सामे वर्ग अथवा वर्णक आधारपर बटल छल आ प्रत्येक क्षेत्रक रहनिहार अपनहि क्षेत्रमे विवाहादि कऽ सकैत छल। पैघ वर्णक बालक जँ छोट वर्णक कन्यासँ विवाह करए तँ ताहि दिनमे एकर मान्यता छल मुदा एहिबात स्मरण राखबाक इ अछि जे राजकुमार नाभाग जखन एक वैश्य कन्यासँ विवाह केलन्हि तखन हुनका गद्दीसँ वंचित कए देल गेलन्हि। एहिसँ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे राजदरबारमे अंर्तजातीय विवाहकेँ प्रोत्साहन नहीं देल जाइत छल।

कुलीन परिवार एवँ अभिजात वर्गक सदस्यगण ताहु दिनमे एकर कट्टर विरोधी छलाह।

ब्रह्मचारी एवं धर्मप्रचारक लोकनि कतहु भोजन कऽ सकैत छलाह। ओ लोकनि जातीयताक बन्धनसँ अपनाकेँ मुक्त मनैत छलाह। शूद्र लोकनि भनसिया नियुक्त होइत छलाह। माँछ-माँउसक व्यवहार ब्राह्मण लोकनिक ओतए सेहो होइत छल। भोजन-भावमे मध्ययुगीन कट्टरता ताहि दिनमे नहि छल। गैर ब्राह्मण लोकनि सेहो सब किछु खाइत-पीबैत छलाह। छुआछूतक कट्टरता नहि रहितहुँ इ देखबामे अबैछ जे चाण्डालसँ सब केओ फराके रहैत छलाह आ चाण्डाल नगरक बाहर रहैत छल। चाण्डालकेँ अछूत बुझल जाइत छल आ जँ ओकर नजरि ककरो भोजनपर पड़ि जाइत छल तँ ओहि भोजनक परित्याग कैल जाइत छल। बुद्धक संघक स्थापनाक पछाति बहुतो शूद्र आ छोट वर्णक लोग सब ओहिमे सम्मिलित भेल छल।

वर्णाश्रमक प्रधानता तथापि बौद्धयुगमे बनले रहल। एहि युगमे ब्रह्मचर्याश्रमक प्रधानता विशेष छल। विभिन्न आश्रमक महत्वपर एहि युगमे बेस विवाद चलि रहल छल। विवादक मुख्य प्रश्न इएह छल जे वाणप्रस्थ आ सन्यासमे कोन उत्तम? ओना तँ एहि युगमे हम इ देखैत छी जे सन्यासक प्रवृत्ति दिनानुदिन बढ़ि रहल छल। **मार्कण्डे पुराण**क कथाक अनुसार वैशालीक राजा लोकनि-खनित्र, मरूत्त, वरिष्यंत, मखदेव आदि-सन्यास ग्रहण कएने छलाह। ब्रह्मचर्य, ग्राईस्थ, वाणप्रस्थ आ सन्यासी सम्बन्धी नियम एखनो पूर्णरूपेण स्थायी नहि भेल छल। बौधायन धर्मसूत्रमे तँ वाणप्रस्थ आ सन्यासक प्रतिकूल वातावरण देखबामे अवइयै। किछु धर्मसूत्र सबमे गृहस्थाश्रमक अपेक्षा वाणप्रस्थक सराहना कैल गेल अछि मुदा इहो विचार ततेक संदिग्ध रूपे प्रगट भेल अछि जे ओहि सब आधारपर किछु निश्चित बात कहब अथवा कोनो मत निर्धारित करव असंभव। एहियुगमे परिवारक चर्च सेहो भेटइत अछि। ताहि दिन भिन्न-भिनाओज नीक नहि बुझल जाइत छल। कन्याक हेतु विवाहक निश्चित आयु १६वर्ष छलैक आ जाहि कन्याकेँ भाई इत्यादि नहि रहैत छलैक से अपन पैत्रिक धनक उत्तराधिकारिणी सेहो होइत छल। **'स्त्रीधन'** सिद्धांतक विकास एहि युगमे भेल छल। सती प्रथाक उल्लेख सेहो ठाम-ठाम भेटइत अछि। वैशालीक राजा खनित्र आ वरिष्यंतक पत्नी सती भेल छलथिन्ह। मादरी जे अपनाकेँ एहि सतीत्वमे अनने छलीह ताहुसँ सती प्रथाक संकेत भेटइत अछि।

बौद्ध युगक ओना इतिहासमे अपन विशेष महत्व छैक परञ्च वैशालीक हेतु तँ इ स्वर्णयुग छल। जाहि पुष्करिणीक उल्लेख हम पूर्वहि कऽ चुकल छी ताहिमे स्नान करबाक हेतु श्रावस्तीक सेनापति बन्धुल मल्लक स्त्री मल्लिका व्यग्र छलीह आ एकर वर्णन हमरा जातकमे भेटइत अछि। जातकमे कहल गेल अछि.....

*"वैसाली नगरे गणराज कुलानाम्।*
*अभिषेक मंगल पोक्खरी नम्॥*
*ओतरित्वा न्हातापानीयम्।*
*पातुकम् अहि समीति"॥*

बन्धुल अपन पत्नीकेँ लऽ ओहिठाम गेलाह मुदा पहरू लोकनि हुनका दुनूकेँ नहि जाए देलथिन्ह आ अंतमे एहि लेल युद्ध भेल आ ओ दुनू गोटए ओहिमे स्नान कऽ घुरइत गेलाह। एकर अतिरिक्त वैशालीमे आर कतेको दर्शनीय वस्तु छल– उदेन चैत्य, गोतमक चैत्य, सतम्बक चैत्य, बहुपुत्तक चैत्य, सारदन्द चैत्य, चापाल चैत्य,

कपिनय्य चैत्य. मर्कट हृदतीर चैत्य, मुकुट बन्धन चैत्य, इत्यादि। वैशालीमे एहि युगमे महालि, महानाम, सिंह, गोश्रृंङ्गी, भद्द आदि नामक प्रधान व्यक्ति भेल छलाह। **चुल्लुवग्ग**मे लिच्छवी भद्रक उल्लेख एहि प्रसंगमे अछि जे एकबेर हुनका बौद्ध संघसँ निष्काषित कऽ देल गेल छल मुदा पुनः सुधार भेलापर हुनका लऽ लेल गेल छल। ओहि समयमे समाजसँ निष्कासित करबाक प्रथा एवं प्रकारे छल–जाहि सभकेँ निष्कासित करबाक होन्हि तिनका भोजनार्थ निमंत्रण देल जाइत छलन्हि आ आसनपर बैठला उत्तर हुनक जल पात्रकेँ उलटि देल जाइत छलन्हि। पुनः जखन हुनका समाजमे लेल जाइत छलन्हि तखन ओहि पात्रकेँ सोझ कऽ कँ राखल जाइत छलैक। जाहि समयमे तोमर देव वैशालीक प्रधान छलाह तखन लिच्छवी लोकनि साज गोज कए हुनक स्वागत कएने छलाह। केओ नील, केओ स्वेत आ केओ लालरंगक शास्त्रास्त्र एवं आभूषण आ वेशभूषासँ सुसज्जित भए बुद्धक स्वागतार्थ उपस्थित भेल छलाह। महविस्तुमे एकर विवरण एवं प्रकारे अछि-

*"संत्यत्र लिच्छवयः पीतास्या पीतरथा*
*पीत रश्मि प्रत्योदयष्टि। पीतवस्त्रा,*
*पीतालंकारा, पीतोष्णीशा, पीतछत्राः*
*पीतखड्ग मुनिपादुका।*
*पीतास्या पीतरथा पीतरश्मि प्रत्योदमुष्णीशा।*
*पीता च पंचक कृपा पीलावस्त्रा अलंकारा:॥*
*नीलास्या, नीलरथा, नीलरश्मि प्रत्यादमुष्णीशा।*
*नीला च पंचक कृपा नीलावस्त्रा अलंकाराः॥*

वैशालीक आम्रकानन जाहिमे अम्बपाली रहैत छलीह सेहो बड़ड प्रसिद्ध छल। बौद्ध धर्मक इतिहासक दृष्टिकोणसँ सेहो वैशालीक अत्यधिक महत्व अछि। अहिठाम इ निर्णय लेल गेल छल जे स्त्री लोकनिकेँ संघमे प्रवेशक अनुमति देल जाइछ। एतहि भिक्षुणी संघक स्थापना सेहो भेल छल। आनंदक कहलापर बुद्ध एहिबातकेँ मनने छलाह आ एहिपर अपन स्वीकृति दैत बौद्धधर्मक सम्बन्धमे भविष्यवाणी सेहो कएने छलाह- *"स्त्री जातिक प्रवेशसँ बौद्धधर्म आब ५००वर्ष धरि जीवित रहत"*। वैशालीसँ जेबा काल बुद्ध इ कहि गेल छलाह जे आब ओ पुनः एतए घुरिकेँ नहि आबि सकताह। वैशालीक लोग सब इ सुनि बड़ड दुखी भेल छल–

*"इदं अपश्चिमं नाथ वैशाल्यास्तव दर्शनम्।*
*न भूयो सुगतो बुद्धो वैशाली आगमिष्यति"॥*

हुनका **महापरिनिर्वाण**क सए वर्ष बाद वैशालीमे बौद्धसंघक दोसर संगीति भेल छल। मिथिलाक माँटिमे एहेन प्रभाव जे अहिठामक लोग सब बेस तार्किक होइत छलाह। नागार्जुनक शिष्य भिक्षुदेव जखन वैशाली जेबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह तखन नागार्जुन कहलथिन्ह- *"ओना अहाँ जाए चाहैत छी तँ जाउ मुदा इ स्मरण राखब जे ओहिठामक नवीनो भिक्षुक लोकनि बड़ड जबर्दस्त तार्किक होइत छथि"।*

जैन ग्रंथ सबसँ सेहो ताहि दिनक सामाजिक अवस्थाक विवरण भेटइयै। वैशालीमे क्षत्रिय, ब्राह्मण आ वणिक भिन्न-भिन्न उपनगरमे रहैत छलाह। सामाजिक क्षेत्रमे हुनका लोकनिक मध्य सहयोग एवं सहकारिताक भावना व्यापक छलन्हि। ओ लोकनि विदेशी अतिथिकेँ सम्मिलित रूपें स्वागत करबाक हेतु जाइत छलाह। ओ

लोकनि बड़ड कर्मठ होइत छलाह आ रंगीन वस्त्रसँ विशेष प्रेम छलन्हि। दालि, भात, तरकारीक अतिरिक्त ताहि दिनमे माँछ-माँउसक प्रचलन सेहो छल। अपना नगरसँ हुनका लोकनिकेँ बड़ड प्रेम छलन्हि। हीरा, जवाहिरात, सोना, चानीसँ हुनका लोकनिक हाथी, घोड़ा, आ सवारी सजल रहैत छलन्हि। शिकार हुनका लोकनिकेँ बड़ड प्रिय छलन्हि। अंगुत्तर निकायक अनुसार लिच्छवी बालक लोकनि बड़ड चंचल आ नटखटिया होइत छलाह। लिच्छवी लोकनि स्वतंत्रता आ स्वाभिमानक प्रेमी छलाह। शिक्षा प्राप्त करबाक हेतु ओ लोकनि दूर-दूर देश धरि जाइत छलाह। विवाहक नियमावली लिच्छवी लोकनिक हेतु कठोर छलन्हि। जाहि कन्याकेँ विवाह करबाक विचार होन्हि से लिच्छवी गणकेँ सूचना दैत रहथिन्ह आ गणक दिसि हुनका लेल सुन्दर वर चुनल जाइत छल। स्त्रीक सतीत्वक रक्षार्थ लिच्छवी लोकनिक किछु उठा नहि रखैत छलाह। एहिमे राजा आ रंकमे कोनो कानूनी भेद नहि छल। मृतकक दाह संस्कारक सम्बन्धमे सेहो हुनका लोकनिक अपन नियम छलन्हि- मुर्दा जरेबाक, गारबाक, अथवा ओहिना छोड़ि देबाक प्रथा हुनका ओतए छलन्हि। मुर्दाकेँ गाँछमे लटकेबाक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। हुनका लोकनि ओहिठाम एकटा उत्सव होइत छल जकरा **"सब्बरतिवार"** कहल जाइत छल जाहिमे ओ लोकनि भरि राति जागिकेँ नाच गान करैत छलाह आ एकर उदाहरण **अंगुत्तर-निकाय**मे भेटइत अछि।

मौर्य युगमे सर्वप्रथम समस्त भारतक राजनैतिक एकीकरण भेल आ मिथिलाक क्षेत्र अखिल भारतीय साम्राज्यक अंग बनल। सामाजिक दृष्टिकोणसँ सेहो इ युग महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। राज्यक स्वरूप मंगलकारी छल यद्यपि राजाक शक्तिमे अपार बृद्धि भेल छलैक। साँसारिकताकेँ प्रति आस्था लोगमे बढ़ि गेल छलैक आ प्रत्येक व्यक्ति जीवनकेँ सुखी रूपे व्यतित करबा लेल इच्छुक छल। ताहि दिनमे मनुष्य सुगठित, स्वस्थ आ बलवान होइत छल। वस्त्राभूषणक प्रति हुनका लोकनिक स्नेह विशेष रहैत छलन्हि आ खेलकूद, नाचगान आ संगीतक प्रचलन बढ़िया छल। मगधक राजधानी पाटलिपुत्र ताहि दिनमे संसारक सर्वश्रेष्ठ नगर छल आ प्रधान क्रीड़ा केन्द्र सेहो। एहि क्रीड़ाक अंतर्गत शाल-भंजिका एवं अशोक पुष्प प्रचायिका विशेष रूपे प्रचलित छल। कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ अशोकक अभिलेखमे उत्सव, समाज, आ यात्राक उल्लेख भेटइत अछि जाहिमे आमोद-प्रमोदक व्यवस्था छल आ सब केओ बड़ड उत्साहसँ ओहिमे भाग लैत छलाह।

कौटिल्य वर्णाश्रम धर्मक बड़ड पैघ समर्थक छलाह। एहि धर्मक समुचित पालन कराएब राजाक कर्तव्य छल। अशोकक शासन कालमे वर्णाश्रम धर्मपर विशेष ध्यान नहि देल गेल कारण अशोक स्वयं बौद्ध छलाह आ हुनका एहि व्यवस्थापर पूर्ण आस्था नहि छलन्हि। चन्द्रगुप्त मौर्य स्वयं शूद्र छलाह तैं हम देखैत छी जे एहि युगमे शूद्रक प्रति कौटिल्यक विचार मनुक अपेक्षा विशेष उदारवादी छल। वर्ण व्यवस्थाक अंतर्गत कतेको जाति–उपजाति बढ़ि गेल। मनु तँ बहुतों विदेशी जाति सबकेँ क्षत्रियक श्रेणीमे रखने छथि। मिथिलाक लिच्छवी लोकनिकेँ सेहो मनु व्रात्य कहने छथि। व्रात्यकेँ सेहो ओ चारि वर्णमे बटने छथि–व्रात्य ब्राह्मण, व्रात्य क्षत्रिय, व्रात्य वैश्य एवँ व्रात्य शूद्र। यवन दूत मेगास्थनीज लिखने छथि जे एहिठाम युनान जकाँ गुलामक व्यवस्था नहि छल। एहि युगमे स्त्रीकेँ अवस्थामे सेहो परिवर्त्तन भेलैक। कौटिल्य स्त्रीकेँ सम्पत्ति अर्जित करबाक आ रखबाक अधिकार देने छथिन्ह। अपन जेवरपर खर्च करबाक अधिकार सेहो हुनका लोकनिकेँ छलन्हि। जँ कोनो व्यक्तिकेँ बेटा नहि रहैक तँ ओकरा बेटीकेँ ओहि सम्पत्तिक स्वामित्वाधिकार भेटइत छलैक।

स्त्रीक कल्याणक हेतु अशोकक समयमे **"स्त्री–अध्यक्ष–महामात्र"**क नियुक्ति भेल छलैक। गुलाम लोकनिक प्रति सेहो राज्यक विचार उदार छल। प्रत्येक गुलामकेँ अपन स्वतंत्रता प्राप्त करबाक अधिकार छलैक।

मौर्योत्तर कालमे चारि वर्णक व्यवस्था बनल रहल। जाति आ उपजातिक संख्यामे विशेष बृद्धि भेल। चारूवर्णक लोग अपना–अपना वर्णक अभ्यंतरहिमे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करैत छलाह। वराहमिहिरक **वृहत्संहिता**क अनुसार नगरमे चारूवर्णक भिन्न–भिन्न क्षेत्र होइत छल। चीनी यात्रीक विवरणसँ स्पष्ट अछि जे ब्राह्मण लोकनि पूज्य बुझल जाइत छलाह। ब्राह्मण लोकनिक शुद्ध जीवन व्यतीत करबाक प्रसंग सेहो ओहिमे भेटइत अछि। समाजमे ब्राह्मणक प्रतिष्ठा विशेष छल आ मनु ओकरा आर प्रतिष्ठित बनौलन्हि। नारदक अनुसार श्रोत्रिय लोकनिकँ कर नहि लगबाक चाही। ब्राह्मण वर्गकेँ सब प्रकारक सुविधा प्राप्त छलन्हि। गुप्त युगमे ब्राह्मण लोकनिक वर्गीकरण वैदिक शाखाक अनुरूप भेल। पाछाँ आबिकेँ एकर आर वर्गीकरण भेल।

मौर्योत्तरकालीन भारतमे क्षत्रिय लोकनिक प्रधानता बढ़ल। शूंग वंश आ कण्ववंशक स्थापनासँ मिथिलामे पुनः ब्राह्मण धर्मक पुनर्स्थापन सम्भव भेल आ ब्राह्मण लोकनिक सत्तामे बृद्धि सेहो। एहियुगमे मिथिलाक ब्राह्मण मिथिलासँ बाहर जाए अपन शाखा–प्रशाखाक स्थापना कएने छलाह। शासन भार जे केओ लैथ हुनक धर्म क्षत्रियक धर्म भऽ जाइत छल। ओना सामान्यतः शासनक भार क्षत्रिय लोकनिक हाथमे रहैत छलन्हि। क्षत्रिय युद्धविद्या, कला, संगीतमे तँ पारंगत होइते छलाह संगहि ओ लोकनि विद्वान सेहो होइत छलाह। समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्तिसँ एहिपक्षपर विशेष प्रकाश पड़इयै। जे केओ शासक अथवा राजा होइत छलाह हुनके क्षत्रियक संज्ञा भेटइत छलन्हि। गुप्तशासक लोकनि ओना तँ क्षत्रिय नहि छलाह मुदा जखन राजा भऽ गेलाह तखन ओ क्षत्रिय कहबे लगलाह। राजाक गुणक विवरण बाणक **हर्षचरित**मे सेहो भेटइत अछि। कृषि आ व्यापारक भार वैश्यपर छलन्हि। इ लोकनि दान आ धर्मक प्रपक्षी होइत छलाह। स्थान–स्थानपर धर्मशाला, अस्पताल आ सत्रक स्थापना इ लोकनि बड़ड प्रेमसँ करबैत छलाह। व्यापार आ उद्योगक संचालनार्थ इ लोकनि अपना मध्य जे संगठन बनौने छलाह तकरा **श्रेणी** अथवा **गिल्ड** कहल जाइत छल। मिथिलामे श्रेष्ठी आ सार्थवाहक जे उल्लेख भेटइत अछि सेहो हिनके लोकनिक तत्वावधानमे बनैत छल। शूद्र लोकनिक स्थिति चिंतनीय छलन्हि। ओ लोकनि छोट छीन रोजगारक संग खेती गृहस्थी सेहो करैत जाइत छलाह। हुनका लोकनिकँ वेद पढ़बाक अधिकारसँ वंचित राखल गेल छल। बिना मंत्रक ओ लोकनि अपन यज्ञादि करैत छलाह। मूल रूपें ओ लोकनि दू भागमे बटल छलाह–सत्–शूद्र आ असत्–शूद्र। असत्–शूद्रकेँ अछूत कहल जाइत छलन्हि। अनुलोम–प्रतिलोम प्रथाक कारणे कतेको मिश्रित जातिक अर्विभाव समाजमे भऽ चुकल छल। चाण्डालक स्थिति यथावत् छल। मिथिलाक उत्तरी छोरपर थारू आ किरात नामक जाति सेहो बसैत छल।

विवाहादिक नियममे कोनो विशेष परिवर्त्तन एहियुगमे नहि भेल। अपन–अपन जातिक अंतर्गतहिमे विवाहादि होइत छल। अनुलोम–प्रतिलोम विवाहक उल्लेख सेहो यदा–कदा भेटिते अछि। मान्य व्यवस्थाक वावजूदो अंतर्जातीय विवाह सेहो होइते छल। गुप्तकालीन साहित्यमे ठाम ठाम गंधर्व विवाहक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। एहियुगमे स्त्रीगणक स्थितिमे आ अवनति भेल। हुनका लोकनि शूद्रे जकाँ वेदक अध्ययनसँ वंचित राखल गेल। वेद मंत्रोच्चारण ओ लोकनि नहि कऽ सकैत छलीह।

किछु गोटए पढ़ल–लिखल सेहो होइत छलीहे मुदा ओहन स्त्रीगणक संख्या महान समुद्रमे एकठोप तेल जकाँ छल। पर्दा प्रथाक सम्बन्धमे कालिदास घूंघट–घोघक उल्लेख केने छथि। एहि युगमे स्मृतिकार लोकनि विधवाक सम्बन्धमे आर कठिन नियम बनौलन्हि। शंख, अंगीरस आ हारीत स्मृतिमे तँ एतेक धरि कहल गेल आछि जे विधवाकेँ अपना पतिक चितापर जरिकेँ प्राणांत कए लेबाक चाही। तत्कालीन अभिलेखमे सेहो सतीक उल्लेख भेटइयै।

वस्त्राभूषणमे ताहिदिनक लोग शौकीन होइत छलाह। रेशमी सूती आ ऊनी कपड़ाक विशेष प्रचलन छल। धोती, साड़ी, साया, दुपट्टा, आंगी, जनेउ, बाला इत्यादिक व्यवहार होइत छल। मिथिलाक क्षेत्रसँ प्राप्त मूर्त्तिसँ तत्कालीन वेशभूषाक ज्ञान होइछ। लोग सब नाभीक नीचासँ धोती पहिरैत छलाह आ स्त्रीगण सब साड़ी सेहो ओहिना। स्त्रीगण सब साड़ीक संगे दूपट्टो ओढ़ैत छलीह। टोपीक व्यवहार सेहो होइत छल। नौलागढ़सँ जे एकटा माँटिक मुरूत भेटल अछि ताहिमे देखैत छी जे एक गोटए बेस सुन्दर मुरेठा बन्हने अछि। इ मुरूत गुप्तकालीन थिक। ओहुसँ पहिलुका आर एकटा सुन्दर स्त्रीक माटिक मुरूत ओतहिसँ भेटल आछि जाहिमे केश विन्यास शैली आ विशेषता देखबामे अवइयै। सौन्दर्य प्रसाधन एवँ श्रृंगार प्रक्रियाक रूप एहि दुनू माँटिक मुरूत बढ़िया जकाँ ज्ञात होइत अछि आ संगहि दु युगक सौन्दर्य साधनक ज्ञान सेहो। स्त्रीक मुरूत शुंगकालीन थिक। मिथिला आ वैशालीसँ प्राप्त माँटिक मुरूतसँ तत्कालीन सौन्दर्य प्रसाधनक चित्र भेटइयै। औंठी, कर्णफूल, कण्ठहार, बाला, इत्यादिक व्यवहार होइत छल। ताहि दिनमे जे मिथिलाक स्त्रीगण पाइत पहिरैत रहैथ तकरो अन्यतम नमूना मिथिलाक मुरूत सबमे भेटइत अछि। सुगन्धित तेल आ अन्यान्य सौन्दर्य साधनक व्यवहार सेहो ताहि दिनमे होइत छल। दाँतमे मिस्सी लगेबाक प्रथा सेहो छल आ हियुएन संग एकर उल्लेख कएने छथि।

गुप्तयुगक पछाति एवँ कर्णाटवंशक उत्थान धरि वर्णाश्रम धर्मक प्रधानता बनले रहल आ ठाम–ठाम कठोर सेहो भेल। स्मृतिकार लोकनिक रचनासँ एकर भान होइछ। अनुलोम–प्रतिलोमक फले अनेको वर्णशंकर उपजाति आदिक विकास भेल। असत् शूद्र अंत्यजक नामसँ पाँचम वर्णमे परिगणित भेल। एहियुगमे पंचगौड़क कल्पना सेहो साकार भेल आ पंचगौड़ ब्राह्मणक सूत्रपात सेहो। ब्राह्मण लोकनि दोसरो वर्णक जीविकाकेँ अपनौलन्हि। यज्ञक संगहि संग ओ लोकनि मूर्त्तिपूजा आ पुरोहिताइक पेशा सेहो अपनौलन्हि। ब्राह्मण लोकनि सेनापतिक काजमे सेहो निपुण होमए लगलाह। पालवंशक अधीन बहुतो ब्राह्मण सेनापति रहैथ जकर उल्लेख पाल अभिलेखमे अछि। एहियुगमे ब्राह्मण लोकनिकेँ प्रचुर मात्रामे खेत दानमे भेटल छलन्हि आ ओ लोकनि पैघ–पैघ सामंत भेल छलाह आ जमीनकेँ दोसराक हाथे खेती करबाय ओ लोकनि अपन सामंत प्रदत्त राजनैतिक अधिकारक सुरक्षामे व्यस्त रहैत छलाह। ब्राह्मण–क्षत्रिय आब खेतियो दिसि भीर गेल छलाह।

शूद्र लोकनिक अवस्था आ दयनीय भऽ गेल छलैक। एहियुगसँ डोम, चमार, नट आदिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। भाटक उल्लेख तँ सहजहि भेटितहि अछि। एहियुगमे जातिकर्म, नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध इत्यादि संस्कारक उल्लेख भेटइत अछि। विवाह संस्कार प्रधान सामाजिक संस्कार मानल जाइत छल। बहुपत्नित्वक उदाहरण सेहो भेटइत अछि। ब्राह्मण अन्य जातिक भोजन अथवा जल नहि ग्रहण करैत छलाह। एहियुगमे प्रायश्चितक विधान सेहो बनल। माँछ, माउँस आ मदिराक व्यवहार होइत छल। सिद्ध कवि लोकनिक लेखतँ एहि सब विवरणसँ भरल

अछि। **चर्यापद**(मैथिलीक आदि रूप)मे एकठाम लिखल अछि जे स्त्री लोकनि मदिरा बेचइत छलीह। क्षत्रिय लोकनि विशेष मदिरा पान करैत छलाह। पहिरब–ओढ़बमे कोनो विशेष फर्क देखबामे नहि अवइयै। मूर्त्ति सबसँ श्रृंङ्गारिकताक भान होइछ। कर्णफूल, हार, भुजदण्ड, करघनी, कंगन, बाला आदि आभूषणक व्यवहार होइत छल। कुमकुम लगेबाक प्रथा सेहो छल। सतीप्रथाक प्रचलन तँ चलिये आबि रहल छल। एक लेखमे दीपावलीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि–

*"दीपोत्सव दिने अभिनव निष्पन्न प्रेक्षा मध्य मण्डपे"।*

संगीत आ नृत्यक आयोजन तँ बरोबरि होइते छल। **चर्यापद**मे सतरंजक उल्लेख सेहो अछि। जूआक प्रथा प्रचलित छल। एहियुगमे अन्धविश्वास आ तंत्रमंत्रक प्रधानता बढ़ि चुकल छल। ज्योतिषपर लोकक आस्था जमि चुकल छल। विजयसेनक देवपारा अभिलेखमे ग्राम ललनाक नगर जीवनक अनभिज्ञता आ अबोधपनक उल्लेख भेल अछि। मुसलमान लोकनि भारतमे पसरि चुकल छलाह तैं एहि युगमे शुद्धिक सिद्धांतक प्रतिपादन सेहो भेल। मिथिलामे पान आ चौपाड़िक प्रचलन खूब छल।

शबरस्वामीक लेखसँ तत्कालीन मैथिल समाजक झाँकी भेटइत अछि। ओ **'हूराहिरी'**क उल्लेख कएने छथि। **शतपथ ब्राह्मण**मे कहल अछि–

*"तस्माद वराहं गावोऽनु धावंती"।*

गम्हरी, दही, दूध, चूड़ा, आदिक उल्लेख सेहो शबरस्वामीमे भेटइयै। इहो दास आ गुलामक उल्लेख कएने छथि। हुनका लेखनीसँ चिड़इ खेबाक प्रथाक अप्रत्यक्ष रूपे उदाहरण भेटइयै। दही भातक उल्लेख सेहो ओहिमे भेटइयै। माछ खेबाक निपुणताक वर्णनमे तँ एहने बुझि पड़ैत अछि–जेना शबरस्वामी नाचि उठल होथि। ओ खीर बनेबाक उल्लेख सेहो केने छथि।

*"ये एकस्मिन कार्यिन विकल्पे न साधकाः*
*श्रूयंते ते परस्परेण विरोधिनोभवंति।*
*लोकवन्–यथा मत्स्यांन् न पयसा*
*समश्रीयादिति। यद्यपि*
*सगुणमत्स्या भवंति तथापि*
*पयसा सहन समश्यंते"।*

एहियुगमे जातिक रूप कायस्थ जातिक विकास आ उत्थान भेलैक। उशनस आ वेदव्यासक स्मृतिमे कायस्थक उल्लेख जातिक रूपमे भेल अछि। याज्ञवल्क्य स्मृतिमे सेहो कायस्थक उल्लेख भेल अछि। गुप्तकालीन अभिलेखमे सेहो प्रथम कायस्थक उल्लेख भेटइत अछि। गुणैगार ताम्रपत्रमे सैनिक मंत्री लोकनाथकेँ कायस्थ कहल गेल छन्हि। बंगाल–पूर्णियाँ क्षेत्रक पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तिमे तीन चारि पुस्त धरि चिरातदत्त (करण कायस्थ) राज्यपाल छलाह। ५५०ई.क पश्चात् कायस्थ लोकनि एक जातिक रूपमे समाजमे स्थापित भऽ चुकल छलाह। **'प्रथम कायस्थ'** मुख्य सचिव होइत छलाह। कायस्थमे अखन विशेष उपजातिक वृद्धि नहि भेल छल। **'करण'** सेहो कायस्थक द्योतक छलाह ओना इ एकटा **'पद'** छल जाहिपर काज केनिहार सब केओ करणिक कहबैत छलाह आ जतए एकर मुख्यालय होइत छल तकरा अधिकरण कहल जाइत छल। मिथिलामे करण कायस्थक प्रभुता कर्णाटवंशक स्थापनाक संग

बढ़लैक। वैशाली क्षेत्रमे ११–१२म शताब्दीक एकटा लेख प्राप्त भेल अछि जाहिमे करण कायस्थक उल्लेख अछि। ई लेख बुद्धक प्रतिमाक पादपीठपर खोदल अछि। एहि मूर्त्तिक दान केनिहार करणिक महायान पंथी भक्त छलाह।

*"देय धर्मोऽयम् अवरमहायानयायिनः*
*करणिकोच्छाहः माणिकसुतस्य"–*

एवँ प्रकारे हम देखैत छी जे कर्णाट वंशक स्थापना धरि मिथिलाक समाज सब स्टेजसँ गुजरि चुकल छल। नान्यदेवक पछाति मिथिलाक अपन निखार प्रत्यक्ष भेलैक आ सामाजिक क्षेत्रमे जे क्रांतिकारी परिवर्त्तन भेलैक तकरे हमरा लोकनि हरिसिंह देवी प्रथाक नामे जनैत छी जकर प्रभाव अखन धरि मिथिलामे बनल अछि।

**पंजी प्रथाक विकास:-** महाराज हरिसिंह देव कर्णाटवंशक अंतिम शासक छलाह जे मुसलमान द्वारा पराजित भऽ पड़ा गेला। पड़ेबासँ पूर्व मिथिलाक सामाजिक नियमनक हेतु ओ जे एकटा विस्तृत व्यवस्था केलन्हि ओकरे अधुना हमरा लोकनि–**'हरिसिंह देवी'** प्रथाक नामे जनैत छी अथवा सुसंस्कृत भाषामे एकरा पंजी प्रथा कहल जाइत अछि। एहि सम्बन्धमे अखनो धरि कैक प्रश्नपर विद्वानक बीच मतभेद बनले अछि। ओना एहि प्रथाक जन्म देनिहार तँ हरिसिंह देवकेँ मानल जाइत छन्हि मुदा किछु विद्वानक अनुसारे एकर इतिहास प्राचीन अछि। कुलीन प्रथाक स्थापना जँ जन्मक विशुद्धतापर भेल छल तखन तँ एहि प्रसंगपर मीमाँसक कुमारिल भट्टक मंतव्य जे **तंत्रवार्तिक**मे प्रसारित अछि से देखब आवश्यक–

*"विशिष्टेनैव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः*
*परिरक्षंति आत्मानम्।*
*अनेनैव हि हेतुना राजभिर्ब्राह्मणैश्च*
*स्वपितृपितामहादि पारम्पर्या–*
*विस्मरणार्थ समूहलेख्यानि प्रवर्तितानि*
*तथा च प्रतिकूलं गुणदोष स्मरणात्तदनुरूपः*
*प्रवृत्ति निवृत्तयो दृश्यंते"॥*

अर्थ भेल जे कुलीनकेँ अपन जातिक रक्षाक हेतु बड़ड प्रयत्न करए पड़इत छन्हि। तहि सँ क्षत्रिय एवँ ब्राह्मण लोकनि अपन पिता पितामह प्रभृति पूर्वजक नाम बिसरि नहि जाइ तँ **"समूह संख्य"** रखैत छथि आ प्रत्येक कुलमे गुण–दोषक विवेचन कए तदनुसार सम्बन्ध करबामे प्रवृत होइत छथि।

जँ एहि प्रमाणकेँ कुलीन प्रथा अथवा पाँजि रखबाक प्रथाक प्रारंभ मानल जाइक तँ इ कहए पड़त जे सर्वप्रथम एकर उदगम मिथिलामे भेल आ बादमे जखन लोग एकरा बिसरि गेलाह छल तखन हरिसिंह देव ओकरा वैज्ञानिक पद्धतिपर पंजीबद्ध करौलन्हि। सातम–आठम शताब्दीसँ हरिसिंह देव धरिक कालमे जँ लोग एहि **'समूह लेख'** पद्धतिकेँ विसैरि गेलाह तँ कोनो आश्चर्यक गप्प नहि कारण एहि बीचमे मिथिलापर चारूकातसँ आक्रमण होइत रहल छल आ एक अस्थिरताक स्थिति व्यापक छल। कर्णाटवंशक स्थापनाक बाद पुनः एक प्रकार स्थायित्व आ नवजागरण आएल आ तैं सामाजिक उच्छृखंलतापर पूर्णविराम लगेबाक हेतु सामाजिक नियमनक आवश्यकता लोककेँ बुझि पड़लैक आ हरिसिंह देवकेँ इ श्रेय छन्हि जे ब्राह्मण–क्षत्रिय मध्य प्रचलित प्राचीन पद्धति अपना शासन कालमे पूर्णरूपेण वैज्ञानिक बनौलन्हि।

स्वर्गीय रमानाथ झाक अनुसारे **समूह लेख्य** पाँजि जकाँ राखल जाइत छल आ प्रत्येक वैवाहिक सम्बन्ध भेल उत्तर ओहिपर टीपि लेल जाइत छल। कुमारिलक **'समूह लेख्य'** समस्त ब्राह्मणक एकत्र संग्रहित भऽ पंजी कहाओल। एहि परिचय सबहिक आधारपर एक एक कुल एक एकटा नाम दऽ देल गेल जे नाम ओहिकुलक पूर्वजक आदिम ज्ञात निवास स्थान गामक नामपर भेल ओ सैह ओहि कुलक मूल कहाओल। कुमारिलक समएमे गुणदोषक विवेचन लोग स्वयं करैत छल मुदा हरिसिंह देवीक बाद आब परिचयक आधारपर गुण–दोषक विवेचण होएब प्रारंभ भेल। बंगालक कुलीन प्रथा जाति मूलक छल आ अकुलीनक संपर्क होइतहुँ कुलीन अपन कुलीनत्वसँ पतित भऽ जाइत छल। मिथिलामे उच्चता–नीचताक अवधारण स्मृतिक अनुसारहि भेल। मनुक उक्ति देखबा योग्य अछि–

> *"कुविवाहैः क्रियालोपैर्वेदाध्ययनेन च*
> *कुलान्यकुलताँ यांति ब्राह्मणातिक्रमेण च"–*
> *उत्तमैरुत्तमैर्नित्यं सम्बन्धानाचरेत्सह*
> *निनिषुः कुलमुत्कर्षमधमानधमाँस्त्यजेत्"॥*

उपरोक्तसँ स्पष्ट अछि जे जातिक अपकर्ष किंवा उत्कर्ष वैवाहिक सम्बन्धसँ नियमित होइत छल। मुदा मात्र जन्मक शुद्धिमात्र एकर नियामक नहि छल। भवभूतिक **मालती माधव**क टीकामे धर्माधिकरणिक जगद्धर लिखने छथि–

> *"जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्काराद् द्विज उच्यते*
> *विधया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते"॥*

एतवा सब किछु रहितहुँ विद्या ओ आचारकेँ गौण मानि मात्र जन्मक उत्कर्षकेँ प्रधानता दए सामाजिक नियमन जहियासँ आरम्भ भेल तहियेसँ एहि व्यवस्थामे दोष आबए लागल। विवाहक सम्बन्धमे प्राचीन कालहिसँ किछु नियम बनल छल–विवाहक अधिकार ओहि कन्यासँ भऽ सकैत अछि जे–

i) एक गोत्रक नञि हो।
ii) एक प्रवरक नञि हो।
iii) माएक सपिण्ड नञि हो।
iv) बापोक दिसि कोनो पूर्वजक ६पुश्त धरि निम्न नञि हो।
v) माएक दिसिसँ कोनो पूर्वजक ५पुश्त धरि निम्न नञि हो।
vi) पितामह–मातामहक संतान नञि हो।
vii) कठमाम (सतमाएक भाई)क संतान नञि हो।

स्वजनक संग विवाह नहि भऽ सकैत छल कारण ओहन विवाहसँ उत्पन्न संतानकेँ चण्डाल कहल जाइत छलैक। मिथिलामे **स्मृतिसार**क रचयिता हरिनाथसँ एहने गलती भऽ गेल छलन्हि आ तैं हरिसिंह देव पंजी प्रथाक निर्माण केने छलाह सएह कहल जाइत अछि। सब केओ इ कथा जानने छथि तैं अहिठाम एकरा दोहराएब हम आवश्यक नहि बुझैत छी। हरिनाथ अनधिकारमे विवाह कऽ लेने छलाह कारण हुनक पत्नी हुनक साक्षात पितिऔत भाइक दौहित्री लथिन्ह। जाहि **समूह लेखक** उल्लेख हम पूर्वहिं कैल अछि हरिसिंह देव ओकरे वैज्ञानिक पद्धतिपर आनि पंजी प्रथाक जन्मदाता कहबैत छथि। हरिसिंह देवक आदेशानुसार सब ब्राह्मणक

परिचय संग्रहित भेल आ ओहि संग्रहकेँ विशिष्ट पंडितक जिम्मा लगा देल गेल जे सब किछु देखि अधिकार निर्णय करैथ आ विवाहक हेतु प्रमाण पत्र दैथ–ओहि प्रमाण पत्रकेँ **'अस्वजन'** पत्र कहल जाइत छैक। संग्रहित परिचयमे प्रत्येक विवाह आ विवाहक संतानक नाम जोड़ल जाइत छल आ उएह परिचय **पञ्जी** कहाओल आ जिनका जिम्मा एकर भार देल गेलन्हि सैह **पञ्जीकार** कहौलथि। **'अस्वजन पत्र'** लिखके देबाक प्रथा सिद्धांत कहाओल जे अद्यावधि ब्राह्मण आ करण कायस्थमे प्रचलित अछि।

जे लोकनि परिचय एकत्र करैत छलाह से **'परिचेता'** कहबैत छलाह–एहि प्रसंगमे गोत्र, प्रवर आ शाखा सेहो लिखल जाइत छल। सब परिचयकेँ गोत्रक अनुसार अलग–अलग रखलासँ प्रत्येक गोत्रक भिन्न–भिन्न कुलक चित्र समक्ष आबि जाइत छल। कुलक नाम कुलक प्राचीनतम ज्ञात निवास स्थानपर राखल गेल जे ओहि कुलक **"मूल"** कहाओल। बादमे **गोत्र** आ **मूल**सँ प्रत्येक वंशक संकेत भेटए लागल। गुप्त युगहिंसँ एहिबातक प्रमाण भेटइत अछि जे ब्राह्मण अपन ग्राम अथवा निवास स्थानहिसँ चिन्हल जाइत छलाह आ गुप्तयुगसँ पाल युग धरिक अभिलेख सबमे ब्राह्मण लोकनिक चारि–पाँच पुस्तक विवरण भेटइत अछि। ब्राह्मण लोकनि जाहि–जाहि गाममे निवास करैत छलाह ताहि–ताहि गामक प्रशंसा सेहो अभिलेख सबमे भेटइत अछि। मध्ययुगमे राढ़क ब्राह्मण लोक **५६**उपजातिमे बटि गेल छलाह आ हिनका लोकनिक वर्गीकरण **गाम–गाँइ–गामीक**क आधारपर भेल छलन्हि। ११–१३म शताब्दीक अभिलेखमे एकर उल्लेख भेटइत अछि। ठीक अहिना हरिसिंह देव मूल–निवासक आधारपर ब्राह्मण लोकनिकेँ करीब **१८०मूल**मे बँटने छलाह आ मिथिलाक करण कायस्थकेँ करीब **३५०मूल**मे। अहिना अम्बष्ट कायस्थ सेहो करीब **१००घर**मे बटल छथि। **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण**क ब्रह्मखण्डमे कहाबत अछि जे देश भेदसँ जाति भेद उत्पन्न होइछ आ मध्ययुगीन पंजी परम्परा जे जोड़ देल गेल अछि से एहिबातक सबूत मानल जा सकइयै। गाम–गामक महत्व बढ़ए लागल। संग्रहित पाँजिमे जे सबसँ प्राचीनतम ज्ञात पुरूषक नाम उपलब्ध भेल उएह **'बीजी–पुरूष'** कहौला। जँ एक्के गामक वासी दु कुलमे भेटला तँ हुनक भेदकेँ स्पष्ट करबाक हेतु कुलक मूलक संगहि–संग नव निवास स्थानक नाम जोड़ि देल गेल।

मिथिलाक ब्राह्मण लोकनि सामवेद आ शुक्ल यजुर्वेदक अनुयायी छथि–सामवेदी कौथुम शाखीय छथि आ यजुर्वेदी माध्यन्दिन शाखीय। क्रमशः इ दुनू छन्दोग आ वाजसेनयि कहबैत छथि। सामवेदी–छन्दोगमे मात्र शाँडिल्य गोत्र प्रचलित अछि आ माध्यन्दिन वाजसेनयिमे वत्स, काश्यप, पराशर, कात्यायन, सावर्ण आ भारद्वाज। एहि सात गोत्रक कुल व्यवस्थित कहबैत छथि। ब्राह्मणक आ ग्यारहटा गोत्र जे मिथिलामे अछि से भेल–गार्ग्य, कौशिक, अलाम्बुकाक्ष, कृष्णात्रेय, गौतम, मौदगल्य, वशिष्ठ, कौण्डिन्य, कपिल आ तण्डि। प्रत्येक गोत्रमे कैकटा मूल अछि। ओना तँ लगभग २००मूलक आभास भेटइत अछि परञ्च ब्राह्मण विद्वान लोकनि मात्र सात गोट **गोत्र** आ ३४या ३६टा मूलकेँ व्यवस्थित मानैत छथि। मिथिलामे कुलीनताक परिचायक छल जन्मक विशुद्धता, आचारक चारूता आ विद्या व्यवसाय–एहि तीनुसँ युक्त व्यक्तिकेँ श्रोत्रिय कहल जाइत छलन्हि। एहिठाम स्मरणीय जे पाँजिमे मात्र परिचय संग्रहित अछि जाहि आधारपर विवाहक अधिकारक निर्णय होइत अछि। हरिसिंह देव ब्राह्मणकेँ तीन श्रेणी (श्रोत्रिय, योग्य, जयबार)मे बँटने छलाह–इ कथन निराधार अछि। आदर्शकेँ बिसरिकेँ जखन हमरा लोकनि केवल भेदपर जोड़ देब प्रारंभ कैल तखनहिसँ

एहि व्यवस्थामे कुरीतिक प्रवेश भेल। जे जे नीच काज करैत गेलाह से क्रमशः नीच होइत गेला। ब्राह्मण पाञ्जिक अनुसार अधिकार निर्णयक नियम एवँ प्रकारे अछि–

i) कन्याक पिताक पितामहक पितामह।
ii) कन्याक पिताक पितामहक मातामह।
iii) कन्याक पिताक पितामहीक पितामह।
iv) कन्याक पिताक पितामहीक मातामह।
v) कन्याक पिताक मातामहक पितामह।
vi) कन्याक पिताक मातामहक मातामह।
vii) कन्याक पिताक मातामहीक पितामह।
viii) कन्याक पिताक मातामहीक मातामह।
ix) कन्याक माताक पितामहक पितामह।
x) कन्याक माताक पितामहक मातामह।
xi) कन्याक माताक पितामहिक पितामह।
xii) कन्याक माताक पितामहीक मातामह।
xiii) कन्याक माताक मातामहक पितामह।
xiv) कन्याक माताक मातामहक मातामह।
xv) कन्याक माताक मातामहीक पितामह।
xvi) कन्याक माताक मातामहीक मातामह।

आठम पीढ़ीसँ सपिण्डत्व हटि जाइत छैक।

मिथिलामे **पाञ्जिक** अध्ययन अखनो वैज्ञानिक पद्धतिसँ नहि भेल अछि कारण ओकर साहित्य एतेक जटिल अछि जे सब केओ ओकर अध्ययन कइयो नहि सकैत छथि। रमानाथ बाबूक अतिरिक्त आ एकाध गोटए पाञ्जिक अध्ययन कएने छथि मुदा पूर्णरूपेण वैज्ञानिक ढ़ँग आ तालपत्रपर लिखित पाञ्जिक अध्ययन मेजर विनोद बिहारी वर्मा अपन **"मैथिल करण कायस्थक पाञ्जिक सर्वेक्षण"**मे कएने छथि। इ अध्ययन अपना ढ़ँगक अद्वितीय अछि आ पाञ्जिक अध्ययनक क्षेत्रमे इ अपन एकटा नव कीर्तिमान स्थापित केलक आछि। तालपत्र हिनक काफी प्राचीन अछि आ पाँजि प्रथाक स्थापनाक लगभग ५०वर्षक अभ्यंतरहिमे लिखल अछि। एहि आधारपर अखन आरो कतेक अध्ययन प्रस्तुत कैल जा सकइयै। पाँजि प्रथाक नींव जाहि आधारपर पड़ल तकरा सम्बन्धमे मेजर वर्मा लिखैत छथि–

चण्डेश्वर ठाकुरक **गृहस्थ रत्नाकर**सँ उद्धृत किछु स्मृतिकारक कथन उद्धृत कैल जाइछ जाहिपर पाँजी प्रथाक नींव पड़ल।–

**मनुशातातपौ:-**

*असपिण्डा तुया मातुर सगोत्रा चयापितुः।*
*सा प्रशस्ता द्विजातीनाँ दार कर्म्मणि मैथुने॥*

एवँ प्रकारे ओ गौतम, याज्ञवल्क्य, हारीत, विष्णुपुराण आदिसँ विभिन्न मत उपस्थित कएने छथि। पाँजि जखन उपस्थित कएल गेल तखन देशक स्थिति चिंतनीय छल। करण कायस्थ पाञ्जिक अध्ययनसँ स्पष्ट होइछ जे कठोर बन्धनक पश्चातो पाँजिमे **"स्वयं गृहीता"** कन्या, **"चेचिक विजाती"**सँ व्याहक उल्लेख, **"कुलाल"**

जातिक उल्लेख, **"चेटिका धृताः"** आदिक यत्र–तत्र विवरण भेटइत अछि। जातिक रक्षा करब पाञ्जिक एकमात्र प्रयोजन छल परञ्च कायस्थ पाञ्जिक अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे किछु अंतर्जातीय विवाह सेहो होइत छल। करण कायस्थक पाञ्जिमे गोत्रक उल्लेख नहि अछि। बलायिन मूलक आदि पुरूष मंधदासक गोत्र राढ़मे अत्रि, कुचबिहारमे वशिष्ट आ मिथिलामे काश्यप लिखल गेल अछि। पाञ्जिमे कतहु नहि कहल गेल अछि जे अमूक मूल श्रेष्ठ आ छोट अछि आ ने भलमानुसे–गृहस्थक चर्च ओहिमे कतहु अछि।

पाञ्जिक पूर्ण शिक्षा प्राचीन कालमे पञ्जीकार लोकनिकेँ देल जाइत छलन्हि आ प्राचीन पाठशालामे मिथिलामे पाञ्जि शास्त्रक पढ़ाइ होइत आ जे एहिमे उत्तीर्ण होइत छलाह सएह **'पञ्जीकार'** होएबाक योग्यता प्राप्त करैत छलाह। पञ्जीकारकेँ निम्नलिखित वस्तुसँ अवगत हैव आवश्यक छल–

i) मूल निर्णय,
ii) डेरावली,
iii) वंशावली,
iv) सादा उतेढ़।

पाञ्जि लिखबाक हेतु किछु नियमक पालन आवश्यक छल। पञ्जीक एक पातक एक पृष्ठक सोलह कालम आ गाम एवं प्रकारे विभक्त कैल गेल अछि–

*मायक वंशक हेतु आठ कालम आ गाम।*
*पितामहीक वंशक हेतु चारि कालम आ गाम।*
*प्रपितामहीक वंशक हेतु दू कालम आ गाम।*
*वृद्धा प्रपितामहीक वंशक हेतु एक कालम आ गाम।*
*अपन स्वयंक ५पीढ़ी पूर्वजक हेतु एक कालम आ गाम।*

पाञ्जिक १६कालम विभक्त देखबामे अवइयै। एक पातक एक पृष्टमे १६मूल गामक उल्लेख रहैत अछि–३१व्यक्तिक नाम आ १६कन्याक नामक उल्लेख रहैत अछि। अधुना पाञ्जि देखबाक अथवा अध्ययन करबाक अवगति आब पञ्जीकारोकेँ नहि छन्हि। कायस्थक पञ्जीकार मूलतः दुई वंशक छथि–महुनी आ सीसब। पाञ्जिमे जातीय इतिहास सुरक्षित अछि।

**पंञ्जीक तिथि**:- पञ्जीक तिथिक सम्बन्ध सेहो विद्वानक बीच मतभेद अछि। सब तथ्यक अनुशीलन केला उपरांत हमरा अपन विचार इ अछि जे पञ्जीक प्रारंभ १३१०–११ ई.मे भेल होएत। १३२३ सँ १३२७ धरिक तिथि जे मनैत छथि से हमरा बुझने मान्य नहि भऽ सकइयै कारण १३२३सँ १३२७क बीच हरिसिंह देव मुसलमानी आक्रमणसँ ततेक तबाह आ व्यस्त छलाह जे ओहि समयमे कोनो एहेन काज करब असंभव छल। नेपाली स्त्रोतसँ इहो ज्ञात होइछ जे हरिसिंह देव १३२६ई. धरि मिथिलासँ पड़ा चुकल छलाह आ तकर बादक हुनक इतिहासक कोनो निस्तुकी पता हमरा लोकनिकेँ नहि अछि। काठमाण्डुक वीर पुस्तकालयक गोपाल वंशावलीक मूल एतए विज्ञ पाठकक हेतु देल जा रहल अछि –

*"स माघ शुदि ३ तिरहूतिः हरशिंहु राजासन*
*मिह्लोसन तासत्र गही टो ढ़ीलीस तुरूक याके*
*वंङ रायत मानालपं थमु अगु गन याङ वस्यं*

*शिमरावन गड़ढ़ भङ्ग याङ तिरहूतिया राजा महाथ*
*आदिन समस्त वडङ व्यसन वंग्व टों ग्वलछिनो*
*लिन्दुंबिल ववः ग्वलछिनो राजगाम द्वलखा धारे वंग्व।*
*हिंपोतस राजा हरसिंह तो शिकथ्वस*
*काय नो मआथ नो उभय बंधि यंडा कूलन*
*ज्योडाव हंग्व राज गामया मझीधारो*
*धायान समस्त धन कासन"।*

उपरोक्त वंशावलीसँ स्पष्ट अछि जे हरिसिंह देव ७जनवरी १३२६कँ शिमराँव गढ़क नष्ट भ्रष्ट भेला पड़ेला आ तकर बाद ओ मरि गेला। राजगाँवक माँझी भारो हुनक पुत्रकँ गिरफ्तार कए कैदी बना लेलकन्हि आ हुनक सब वस्तुजात लूटि–पाटि लेलकन्हि। ओ शरणार्थीक श्रेणीमे छलाहे शासक हिसाबमे नहि। एहि प्रसंगकँ जखन हमरा लोकनि ध्यानमे राखब तखन बुझना जाएत जे पञ्जी प्रबन्ध सन काजक प्रारंभ १३२३–१३२७क बीच नहि भेल होएत। मैथिल परम्परामे इ कहल गेल अछि जे शक् १२४८मे नेहरामे विश्वचक्र महादान कएने छलाह। ओ पञ्जी निर्णयार्थ विद्वान लोकनिक आह्वान कएने छलाह। शक् १२४८मे इ सम्भव नहि भऽ सकइयै कारण तखन ओ पराजित भऽ नेपाल पड़ा चुकल छलाह। रघुनन्दन झा द्वारा बनाओल पञ्जी प्रबन्धक आदिमे एहि तरहे श्लोक अछि–

*"शाके श्री हरिसिंह देव नृपतेर्भूपार्क १२१६ तुल्ये जनि–*
*स्तस्माद्दंत मितेऽब्दके द्विजगणैः पञ्जी प्रबन्धः कृतः"॥*

१२१६+७८=१२९४ई. जखन हरिसिंह देव एकटा नाबालिकक रूपमे छल। अहु समयमे पञ्जी प्रबन्ध सन मूल प्रश्नपर विचार करबाक क्षमता हिनकामे तखन नहि हेतैन्ह तैं इहो तिथि हमरा बुझने अमान्य अछि। शक्तिसिंहक समयसँ मिथिलामे अस्तव्यस्तता छल। चण्डेश्वर ठाकुर हरिसिंह देवक मुख्य सलाहकार छलाह आ राज्यक हेतु सब काज करैत छलाह। नेपाल विजयक अवसरपर तुला पुरूष सेहो केने छलाह। १३१४क आसपास हरिसिंह देव वयस्क भेलापर अपन राज्यक भार सम्हारलन्हि आ तखने चण्डेश्वरक तत्वावधानमे नेपाल विजयक खुशखबरी सेहो भेटलन्हि। ओम्हर मुसलमानी प्रकोप जोरसँ बढ़ि रहल छल तैं हेतु सामाजिक नियम निष्ठाकँ सुदृढ़ करबाक हेतु हिनक ध्यान आकृष्ट कैल गेलन्हि आ एहि दिसि ध्यान देलन्हि आ पञ्जी प्रबन्धक व्यवस्था केलन्हि। पाञ्जिमे छोट–पैघक गप्प नहि छल–इ सभ कल्पना मात्र थिक। सब जातिक हेतु पञ्जी प्रबन्ध भेल छल मुदा मैथिल ब्राह्मण आ कायस्थ छोड़िकँ इ चलल नहि। सूरी लोकनिक बीच सेहो पाञ्जि छल आ रहरिया तथा मधेपुरमे एकर संकेत भेटल अछि। सूरीमे पञ्जि आ पदवी एखनो विराजमान अछि। एतए पैघ काज करबाक हेतु काफी समय आ पलखतिक आवश्यकता छल तैं १३१०सँ १३१४क बीच पञ्जी प्रबन्धक प्रारंभ हैव बेसी युक्तिसंगत बुझि पड़इयै।

निम्नलिखित तीनटा स्त्रोतपर एहि प्रसंगमे विचार करब आवश्यक–

*"शाके युग्म गुणार्क सम्मित वरे भूपाल चूडामणिः*
*श्रीमच्छ्र हरिसिंह देव विजयी पञ्जी प्रबन्धः कृतः*

*तस्मात कर्ण बीजकलितं सुद्विंश चक्रेपुरा।*
*कायस्थ मति प्रदस्थ गुणिनः श्री शंकर दत्तभान'॥*

शंकर दत्त मल्लिककेँ (सीसब मूल)केँ १३१०–११मे हरिसिंह देव पञ्जी प्रबन्ध करबाक आदेश देने छलथिन्ह। श्यामलाल चौधरी लिखित "*वंशावली मैथिल कर्ण कायस्थ उपाख्यान पुस्तक वंश कुलदीपक*" (इ पांडुलिपि सम्प्रति नैशनल लाइब्रेरी, कलकत्ताक, 'शांति देवी–राधा कृष्ण चौधरी संग्रह'मे सुरक्षित अछि आ ओहिठाम कायस्थ पञ्जीक तालपत्र पोथी सेहो)मे कहल गेल अछि जे शंकर दत्त मल्लिक अपन भागिन मोहिनवार मूल ग्रामसँ लडूआरी डेरा अवस्थित गुणपति दासकेँ पाञ्जि देलथिन्ह तैं इ वंश पञ्जीकारक वंश कहाओल। श्याम लाल चौधरी एवम प्रकारे श्लोक लिखने छथि-

*"शाके युग्म गुणार्क सम्मित वरे भूपाल चूडामणि*
*तस्मात् करण विज कलितं कायस्थ पञ्जी प्रबन्धः*
*कृतः तस्मात् मंत्र गुणीनां श्री गुणपतिः दत्तवान॥*

तेसर स्त्रोतकेँ स्पष्ट केनिहार छथि मेजर विनोद बिहारी वर्मा। हुनका द्वारा प्रस्तुत अध्ययनक स्त्रोतमे एकठाम लं.सं. २३३(=१३५२)मे लिखल कोनो '**दत्त मल्लिक**'क सबूत भेटलन्हि अछि। इ ओहि '**दत्त मल्लिक**'केँ शंकर दत्तक पुत्र शंभू दत्त मल्लिक मानैत छथि। शंभूदत्त मल्लिक पाञ्जिक नकल करब १३५२ई.शुरू केलन्हि। शंकर दत्त कवि सेहो छलाह। एहिसब तथ्यकेँ एकठाम संग्रहित कए जखन हम अध्ययन करैत छी तँ हमरा इ स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे पाञ्जि निर्माणमे प्रमुख रूपे ब्राह्मण आ कायस्थ लोकनिक योगदान छ्लैक आ १३१०सँ १३१४क मध्य पञ्जी प्रथा व्यवस्थापित भेल। तकर बाद जखन हरिसिंह पड़ाकेँ चल गेला तखन–पण्डित लोकनि बैसिकेँ ओकरा सरिऔलन्हि आ ताहिमे ताहि दिनमे १५–२०वर्ष लगले हेतैन्ह तैं संभव जे ब्राह्मण–कायस्थक पाञ्जि आ वंश संग्रह करबामे जे समय लागल हेतैन्ह तकर बाद जे एकटा साँगोपाँग विवरण प्रस्तुत भेल होएत से १२४८ शक=१३२६/२७मे प्रकाशित भेल होएत। मिथिलाक तत्कालीन राजनैतिक स्थितिमे देखैत उपरोक्त तर्क हमरा बेशी युक्तिसंगत बुझि पड़इयै आ तैं एकर तिथि निर्णय करबाक प्रश्नपर ओहि तथ्यकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक।

कर्णाट आ ओइनवार युग मिथिलाक सामाजिक इतिहासक दृष्टिये महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। बौद्ध धर्मक ह्रास भेलापर एतए ब्राह्मण व्यवस्थाक पुनर्स्थापन भेल आ जातीयताक व्यवस्थामे जे थोड़ बहुत लचड़ एहि बीचमे आबि गेल छल तकरा मैथिल निबंधकार लोकनि अनेकानेक स्मृति ग्रंथादि लिखिकेँ ठोस बनौलन्हि। सामाजिक कार्य कलापक हेतु सेहो बहुत रास ग्रंथ लिखल गेल जाहिमे चण्डेश्वरक **गृहस्थ रत्नाकर** सर्वश्रेष्ठ अछि।

कुलीन प्रथाक विकास मिथिलामे एहियुगमे भेल। ओना एकर विश्लेषण पञ्जी प्रबन्धक प्रसंग भेल अछि परञ्च ओकर एतिहासिक पृष्ठभूमि एहिठाम राखब आवश्यक। कुलीन व्यवस्थाक संस्थापक छलाह आदि सूर जे पूर्वी मिथिलामे कतहुँ शासन करैत छलाह आ वृद्ध वाचस्पति हुनके ओत्तए रहि अपन **न्यायकणिका** नामक पुस्तकक रचना कएने छलाह। आदिसूर क समय (९म शताब्दी)मे मिथिला आ बिहारमे बौद्धधर्मक प्रधानता छल आ तैं ब्राह्मणत्वक रक्षार्थ ओ कोलाञ्चसँ पाँचटा शुद्ध ब्राह्मणकेँ बजाय अपना ओतए आश्रय देलन्हि। आदिसूरक दरबारमे ब्राह्मण लोकनिक

वर्गीकरण प्रारंभ भेल छल आ पाछाँ बल्ला सेन अपनाकेँ आदिसूरक वंशसँ मिलाय अपनाकेँ कुलीन प्रथाक जन्मदाता घोषित केलन्हि मुदा एहिठाम इ स्मरणीय जे मिथिलाँचलसँ प्राप्त दू ताम्र पत्र (बनगाँव आ पंचोभ) अभिलेखमे दान देबाक हेतु कोलाञ्च ब्राह्मणक उल्लेख स्पष्ट अछि। मिथिलाक पाञ्जिमे जे मूल ग्राम अछि सएह ओकर प्राचीनताक सबसँ पैघ प्रमाण मानल जा सकइयै। एवँ प्रकारे कुलीन व्यवस्थाक जन्म सर्वप्रथम मिथिलहिमे भेल छल आ पाछाँ एहिठामसँ बंगाल आ असममे इ पसरल। हरिसिंह देव ओहिसब पुराण व्यवस्थाकेँ एकत्र कए पञ्जी प्रबन्धक व्यवस्था केने छलाह। एहि प्रथाक बादसँ विवाहादिक नियम सेहो श्रृंखलाबद्ध भेल। पञ्जि आ घटकक प्रथा चलल। एहि प्रथाकेँ जँ रमानाथ बाबू समाजक नियमनक हेतु सर्वश्रेष्ठ मनने छथि तँ उपेन्द्र ठाकुर एकरा प्रतिक्रियावादी कहने छथि। एकरा चलते सामाजिक संकीर्णता दिनानुदिन बढ़ैत गेल आ बिकौआक प्रथा प्रचलित भेल।

एहि युगमे क्षत्रियक रूपमे राजपूत लोकनिक विकास भेलन्हि–हुनको लोकनिमे पाञ्जिक प्रथा चललन्हि मुदा बहुत दिन धरि नहि रहि सकलन्हि। ओना मिथिलामे ताहि दिनमे गन्धवरिया राजपूतक विकास भऽ चुकल छल तथापि ज्योतिरीश्वरक **वर्ण रत्नाकर**मे ३६टा राजपूत जातिक वर्णन भेटइत अछि। वैश्यमे व्यापारी वर्ग, कर्मकार, कलाकार, पशुपालक, खेतिहर, साहूकार, आदि लोकक गिनती छलैक। वैश्य मूल रूपेण खेती करैत छलाह आ व्यापार सेहो। आर्थिक उन्नतिक भार हिनके लोकनिपर छलन्हि। शूद्रक स्थान दयनीय छल। तेली, सूरी, धाँगर, यादव, धानुक, केओट, अमात आदि शूद्रक श्रेणीमे गिनाइत छलाह आ हिनका लोकनिकेँ कोनो विशेष सामाजिक अधिकार नहि प्राप्त छलन्हि। मुख्यतः इ लोकनि बान्हल मजूर होइत छलाह आ हिनका लोकनिक सब किछु अपन मालिकपर निर्भर करैत छलन्हि। जँ **वर्ण रत्नाकर**मे एकर उल्लेख अछि तँ विद्यापतिक **लिखनावली**मे हिनका लोकनिक दयनीय स्थितिक वर्णन। **वर्ण रत्नाकर**मे दू प्रकारक छोट जातिक वर्णन अछि– i) **अनिर्वासित** आ, ii) **निर्वासित**। एकर अतिरिक्त ज्योतिरीश्वर '**मन्द–जातीय**'क एकटा पैघ सूची उपस्थित कएने छथि। ओहि सबसँ छोट जातिक सामाजिक स्तित्वक पता चलइयै। गुलामी आ बेगारीक प्रथा सेहो छल।

स्त्रीक अवस्था तँ आर दयनीय भऽ गेल छल। समाजमे स्त्रीकेँ कोनो उच्च स्थान प्राप्त नहि छलन्हि आ एकर स्पष्टीकरण तँ ज्योतिरीश्वरक निम्नलिखित वाक्यहि भऽ जाइत अछि–**"स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लभ्य; स्त्रीक चरण अइसन दारूण"** विद्यापति सेहो स्त्रीकेँ "**अलप गेआनी**" कहने छथि। इ बात ठीक जे एहि युगमे लखिमा, धीरमती, विश्वास देवी सेहो भेलीह आ चन्द्रकला सन निपुण स्त्री सेहो परञ्च हिनका लोकनिक आधारपर इ नहि कहल जा सकइयै जे समस्त मिथिला स्त्रीक स्थान हिनके सब जकाँ छल। सती प्रथाक प्रचलन सेहो छल आ इ राजपूतमे बेसी छल। चौठम (मूँगेर)सँ प्राप्त एकटा कागजसँ एहि बातक ज्ञान होइछ। भवसिंहक दुह पत्नी सेहो वाग्मतीक तटपर सती भेल छलथिन्ह। स्त्री शिक्षापर विशेष ध्यान नहि देल जाइत छल। पर्दा प्रथाक प्रचलन छल आ वैश्यावृत्तिक प्रचलन सेहो। विवाहिता स्त्री लोकनिकेँ सुहागिन कहल जाइत छलन्हि आ ओ लोकनि सिन्दुरक व्यवहार करैत छलीह।

पाटी फारबाक, काजर लगेबाक, तरहथी रंगबाक, नह रंगबाक प्रथा स्त्रीगणक मध्य विशेष प्रचलित छल। पानसँ दाँत लाल आ मिस्सीसँ दाँत करबाक प्रथा छल। गोदना पड़ेबाक उल्लेख सेहो लोकगीतादिमे भेटइत अछि। घोघ काढ़बाक प्रथा छल।

धोती साड़ीक प्रचुर व्यवहार छल आ स्त्री लोकनि साया आ चोलीक व्यवहार सेहो करैत छलीह। कसीदा काढ़बामे मैथिलानी निपुण बुझल जाइत छली। छौड़ी सब लंहगा, घघरा आ कंचुकी पहिरैत छल। पनटीक व्यवहार होइत छल। भोज भातक प्रथा सेहो छल आ मैथिल तँ भोजन भट्ट होइते छलाह। ज्योतिरीश्वर **'पुर्नभोज वर्णनाः'** लिखने छथि। चूड़ा दहीक विशेष व्यवहार होइत छल।

लिखनावलीमे जे पत्रादिक नमूना अछि ताहिसँ छोट जातिक सामाजिक अवस्थाक ज्ञान होइछ। स्वयं विद्यापति लिखने छथि–

*"उच्चैः कक्षमधः कक्षे समकक्षे नरंप्रति*
*नियमे व्यवहारे च लिख्यते लिखन क्रमः"।*

हिन्दू मुसलमानक सम्पर्क बढ़लासँ हिन्दू लोकनिक मध्य एक प्रकार अस्तव्यस्तता आबि गेल छल। विद्यापति अपन कीर्तिलतामे एकर विस्तृत वर्णन कएने छथि–

*"धरि आनए बाभन बटुआ, मथा चढ़ाबए गाइक चुडुआ।*
*फोट चाट जनेउ तोड़, उमर चढ़ाबए चाह घोड़।*
*हिन्दु बोलि दुरहि निकार, छोट ओ तुरूका भभकी मार।*
*हिन्दुहि गोट्टओ गिलिये हल, तुरूक देखि होइ भान"॥*

चण्डेश्वरक **कृत्य रत्नाकर**मे ओहियुगक पूजा–पाठ, पविनितिहार एवँ उत्सवादिक वर्णन भेटइत अछि। गौरी पूजा, दुर्गाव्रत, दुर्गारथ, वाराह द्वादशी, नरसिंह द्वादशी, बुद्ध द्वादशी, मत्स्य द्वादशी, रासकल्याण, महाष्टमी आदिक उल्लेख भेटइत अछि। एकर अतिरिक्त उदकोत्सव महोत्सव, विनायक पूजा, भाष्कर पूजा, सूर्यपूजा, आदिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। फगुआक उल्लेख सेहो भेल अछि। (विस्तृत विवरणक हेतु देखु हमर पोथी**–"मिथिला इन द एज आफ विद्यापति")**।

**स्मृतिकारक दृष्टिकोण**:- सामाजिक समस्याक प्रति मैथिल स्मृतिकारक अपन विशिष्ट दृष्टिकोण छलन्हि जकर मूल उद्देश्य छल समन्वयात्मक प्रवृतिकेँ प्रोत्साहन देव। ओ लोकनि वैदिक एवँ अवैदिक तत्वकेँ अपन स्मृतिमे स्थान एकटा विशिष्ट समन्वयात्मक प्रवृत्तिकेँ जन्म देलन्हि कारण ताहि दिनक परिस्थितिमे ओकर आवश्यकता छल। एहि दृष्टिकोणसँ ओ लोकनि गौड़ीय आ उत्कलीय स्मृतिकारसँ बड़ड आगाँ छलाह। श्रीदत्त उपाध्याय, चण्डेश्वर आ विद्यापतिक कार्य एहि क्षेत्रमे प्रशंसनीय अछि। कीर्तिलतासँ जे स्थितिक भान होइछ ताहिसँ बुझना जाइत अछि जे मिथिलोमे हिन्दूक स्थिति दयनीय छल आ ओ लोकनि लाचारीक हालतमे रहैत छलाह। जखन राजकुमारे इब्राहिम शाहक प्रति कहलन्हि**–"अज्ज पुण्णा पुरिसथ्थ, पातिसाह–पापोस पाइअ",** तखन दोसरा कोन गप्प? कन्याक बिक्री सेहो होइते छल। मुदा तखन मिथिलामे उपाये कि छल? विद्यापति हिन्दू मुसलमानक प्रसंगमे प्रायश्चितक कोनो चर्च नहि केने छथि। वाचस्पति सेहो एहि दिसि कोनो विशेष ध्यान नहि देलन्हि आ मात्र एतवे कहिकेँ छोड़ि देलन्हि जे मलेच्छक भाषा नहि सिखबाक थिक(मलेच्छ भाषां न शिक्षेत्)। ताहि दिन धरि बुझि पड़इयै जे मिथिलामे एहेन कोनो समस्या नहि उठल हेतैक कारण कतवो मुसलमानी प्रकोप किएक ने बढ़ल हौक एहिठाम हिन्दू शासक छल आ सूफी लोकनिक विशेष प्रभाव रहलासँ मनोमालिन्य कम छल। अगर ककरो जबर्दस्ती मुसलमान बनाइयै देल गेलैक अथवा गोमाँस खुआइये देल गेलैक तँ ओकरा प्रायश्चित् कराके घुरेबासँ कोन लाभ। ओहिठामक लोग तँ ओहिना विशेष कट्टर होइत छल तैं समस्या एखन धरि जटिल नहि भेल छलैक।

हिन्दूधर्मकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु बहुत रास पारिजात, रत्नाकर इत्यादिक निर्माण भेल परञ्च लोक एतेक आलसी भऽ गेल छल जे ककरो एतेक पढ़बाक–बुझबाक पलखति नहि छलैक। बहुत गोटए कोनो नियमोक पालन नहि करैत छलाह। एहिसबकेँ ध्यानमे राखि शंकर मिश्र एकटा संक्षिप्त **'छन्दोगांटिकोद्धार'** रचना केलन्हि आ ओकरा अंतमे लिखलन्हि–

> *"एतावत्यपि कृते न प्रत्यवेयात्, अन्यथा तु प्रत्यवेयात्"।*
> रूद्रधर अपन शुद्धि विवेकमे लिखलन्हि–
> *"सत्येव रत्नाकर–पारिजात मिताक्षरा–हारकतादयोऽन्ये।*
> *तत्रापि तत्रालसमानसानां भवेद प्रमोदम्य मम प्रयासः"।*

चण्डेश्वर अपन गृहस्थरत्नाकरमे विवाहक नियमक प्रतिपादन कएने छथि। मैथिल परम्परामे प्रतिलोम विवाहकेँ मान्यता नहि छैक यद्यपि एहिपर विचार आ विवाद दुनू भेल छैक। मैथिल स्मृतिकार लोकनिक सामन्त दरबारमे रहैत जाइत छलाह आ तैं इ लोकनि अपन रचनामे ब्राह्मणेटाक महत्व दैत छलाह अनका नहि। शासक आ सामन्त सेहो ब्राह्मण छलाह आ स्मृतिकार लोकनि अपने सेहो। शूद्रकेँ तँ कोनो स्थाने नहि देल जाइत छलैक। शूद्र प्राडविवाक सेहो नहि भऽ सकैत छलाह। तथापि रूद्रधरक इ वाक्य देखबा योग्य अछि–"***शूद्रस्य वृषोत्सर्ग वाक्ये एव वेद पाठाधिकारो नान्यत्र इति सर्वप्रामाणिक सिद्धम्***"–(श्राद्धविवेक)।

इ कतेक हास्यास्पद बुझि पड़इयै जे जखन मुसलमान अथवा आन विदेशी ब्राह्मण–शूद्रकेँ एक्के रंग बुझैत रहन्हि आ जखन दुनूक एक भऽ कए चलब अत्यावश्यक छल तखन ब्राह्मण स्मृतिकार लोकनि अपन समन्वयात्मक प्रवृत्तिक बाबजूदो सबकेँ मिलाकेँ एक संग नहि लऽ चलि सकलाह। बहु विवाहक प्रथा पञ्जी प्रबन्धक कारणे बढ़ि गेल छल। **गृहस्थ रत्नाकर**क अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे दोसर विवाह करबाक पूर्व प्रथम पत्नीक प्रबन्ध कऽ देबाक चाही। विधवा विवाहक सम्बन्धमे कोनो स्पष्ट निर्देश नहि भेटइयै। चण्डेश्वर विवाहक सम्बन्धमे मात्र एतबे कहैत छथि जे पूर्व वर कन्याक पक्षक दिसिसँ कोनो बात ककरोसँ नुकाकेँ नहि रखबाक चाही। कोनो दोष कोनो पक्ष दिसि हो तँ ओकरा स्पष्ट कहि देबाक चाही आ जँ कोनो बात नहि कहल गेल आ विवाहक बाद ओकर पता चलल तखन ओहि हेतु दण्डक निर्देश सेहो देल अछि। मैथिल स्मृतिकारक प्रयत्नसँ हिन्दू कानूनक मिथिला स्कूलक स्थापना भेल। एहिमे ओ लोकनि लक्ष्मीधरक **कृत्य कल्पतरू**सँ बड़ड प्रभावित भेलाह। सामाजिक दुश्मनक विवरण वर्धमान अपन **दण्ड विवेक**मे **'प्रकाश तस्कर'** कहिकेँ केने छथि– मांत्रिक, ताँत्रिक, व्यापारी, वैद्य, झूठ गवाही देनिहार, इत्यादि भला आदमीक वेशमे समाजक हेतु खतरनाक बुझल गेल छथि।

दानपर मिथिलामे विशेष बल देल जाइत छल। चण्डेश्वरक **दान रत्नाकर**, रामदत्तक **षोडस–महादान–पद्धति**, वाचस्पतिक **महादान निर्णय** एवँ विद्यापतिक **'दान वाक्यावली'** एहिबातक प्रमाण अछि। दानोमे **सप्तसमुद्रदान, हेमहस्तिरथदान**, **विश्व चक्रदान** आदिक उल्लेख अछि। एहि सबसँ स्पष्ट अछि जे इ सब ग्रंथ राजा–महाराजा, सामंत लोकनिक हेतु लिखल जाइत छल आ सामान्य गरीब लोककेँ एहिसँ कोनो लाभ नहि छलैक। विद्यापतिकेँ छोड़ि कोनो मैथिल स्मृतिकार गरीबक हेतु दानक रास्ता नहि बतौलन्हि अछि। मैथिल स्मृतिकार लोकनि तंत्र पंचरात्र एवँ पाशुपत साहित्यसँ प्रभावित छलाह। समन्वयवादी होइतहुँ ओ लोकनि पंचोपासनाक

समर्थक छलाह। दैनन्दिन जीवनकेँ नियमित रखबाक हेतु ओ लोकनि धर्मपर विशेष जोड़ देलन्हि। समाजपर एकर प्रभाव पड़ल। संस्कृतक सुरक्षा हिनका लोकनिक प्रयासे भेल।

समाजमे गुलामक प्रथा सेहो प्रचलित छल। गुलामीक एहेन विकराल रूप छल जे पुछु जनि। सामंतवादी व्यवस्था छल आ बन्हिल मजूर छल। वहियाक खरीद बिक्री होइत छल। **गौरीव वाटिका पत्र, बही–खाता, अजातपत्र, अकरारपत्र, जनौढ़ी, निस्तार पत्र, लिखनावली** आदिसँ बहिया सबहिक स्थितिक पता लगैत अछि। १८–१९म शताब्दी धरि एकर प्रचलन मिथिलामे छलैक। वहियाक स्वत्वाधिकारक प्रश्नपर बरोबरि लोककेँ आपसमे झगड़ा–झाँट होइत छलैक आ अंततोगत्वा ओकर निर्णय कचहरीमे जाके होइत छलैक।

प्राचीन कालसँ इ व्यवस्था चल अबैत छल। **जातक**, बौद्ध साहित्य आ कौटिल्यक अध्ययनसँ एहिपर पूर्ण प्रकाश पड़इत अछि। मिथिलामे प्राचीन कालहिसँ दास–दासीक संख्याक विवरण प्राचीन साहित्यमे भेटइत अछि। नारदक अनुसार जँ कोनो गुलाम अपन मालिकक जीवनक रक्षा केलक आ मालिक बचि गेला तँ ओकरा गुलामीसँ मुक्त कऽ देल जाइत छलैक। **विवाद चिंतामणि**मे नारदक मतकेँ वाचस्पति उद्धृत केने छथि जाहिसँ स्पष्ट होइछ जे ताहि दिनमे नारदक इ मत मान्य छल। मिथिलाक सामंतवादी समाजमे हेवनिधरि खवास लोकनिक जे महत्व छलैक ताहिसँ बुझना जाइत अछि जे प्रियपात्र गुलाम, खवास आ वहिया अपन मालिकक मोनकेँ जीतिकेँ बहुत किछु प्राप्त करैत छल। विद्यापतिक **लिखनावली** आ मैथिल स्मृतिकार लोकनिक रचनादिमे सेहो एहि प्रसंगक विशेष बात भेटइत अछि।

दू ब्राह्मण परिवारमे एकटा गुलाम लऽ कए जे झगड़ा भेल आ ताहिपर न्यायालय अपन निर्णय देलन्हि से अद्यावधि सुरक्षित अछि आ तत्कालीन सामाजिक व्यवस्थापर प्रकाश दइयै। वहिया लोकनिक स्थिति बड़ड दयनीय होइत छल आ ओकरा सबहिक इज्जत सदति खतरेमे रहैत छलैक। बहिया सभहिक अदला–बदला, लिखा–पढ़ी, कऽ कए होइत छल जाहिसँ केओ कत्तौसँ भागे नहि। भगलापर ओकरा सजा देल जाइत छलैक। १७७०आ १८११क दूटा एहनो उदाहरणक प्रमाण हमरा लोकनिकेँ भेटल अछि।

गुलामक अंतर्गत निम्नलिखितकेँ हमरा लोकनि राखि सकैत छी– गुलाम, नफर, खवास, डिंगर, कामकार, वहिया, इत्यादि। कुरमी, धानुख, केओट, अमात, कहार, आदि जातिक लोग खवासीमे राखल जाइत छल आ वहियाकेँ बान्हल मजूर बुझल जाइत छलैक। एहि सबहिक लोग घर गृहस्थीसँ खेती आ बहलमानी धरि करैत छलैक। चमार जूता आ चमड़ाक कारबारक हेतु राखल जाइत छल आ ओहुना वर्गसँ बान्हल मजूर होएत छल। मिथिलाक कोन–कोनमे छोट पैघ जमीन्दारक संख्या ततेक ने छल जे कोनो एहेन गाम नहि छल जाहिठाम खवासी आ वहियागिरी नहि हो।

जखन एकर अभाव होमए लागल आ तंग भऽ कए पीड़ित–शोषित लोग भागे लागल तखन एहि व्यवस्थाकेँ दृढ़ करबाक हेतु कतेको उपाय रचल गेल आ लिखापढ़ी शुरू भेल। जे गुलामी या वहियागिरीसँ छुटइत छल तकरा हेतु निस्तार पत्र लिखल जाइत छल। मिथिलाक सामंतवादी व्यवस्थाक इ एकटा प्रमुख अंग छल। जकर उदाहरण हेवनिधरि मिथिलामे देखबामे अवइत छल। अपना शताब्दीक उतरार्द्धमे एहि प्रथाक ह्रास देखबामे अवइयै कारण आब मिथिलाक शोलकन्हक विशेष भाग अपना गामकेँ छोड़ि कमेबाक हेतु बाहर चल जाइत अछि।

अध्याय–१७

# मिथिलाक आर्थिक इतिहास

मिथिलाक आर्थिक अवस्था अति प्राचीन कालसँ अद्यपर्यंत कृषिपर आधारित रहल अछि। प्राचीन कालमे अखन जकाँ जलक अभाव नहि छल। मिथिलाक प्राकृतिक बनाबट किछु एहेन अछि जाहिसँ एहिठाम कृषिक प्रगति नीक जकाँ होइत अछि। वैदिक कालमे खेत जोतबाक, बीआ पारबाक, काटबा आ फसिल तैयार करबाक विस्तृत रूपें उल्लेख भेटइत अछि। पकला उत्तर अन्नकेँ काटल जाइत छल आ तखन ओकरा बोझ बान्हिकेँ खरिहानमे आनल जाइत छल। दाउन होइत छल तकर पश्चात् ओसौनी होइत छल आ तखन ओकरा सरियाकेँ व्यवहारक हेतु राखल जाइत छल। एहि लेल कृषक लोकनिकेँ बड़ड परिश्रम करए पड़इत छलन्हि। नापतौलक आधार छल '**खाड़ी**'। बखारीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। मिथिलामे **चाउर, जौ, मूँग, मकई, गहूम, तिल, मसुरी,** आदि वस्तु उपजैत छल। जौ के रोपनी शीतकालमे होइत छल आ गर्मी मासमे ओकरा काटल जाइत छल। धानक रोपनी बरसातमे होइत छल आ अगहनमे ओकर कटनी होइत छलैक। अनावृष्टिसँ कृषिकेँ क्षति पहुँचैत छलैक। कीड़ा–मकोड़ासँ सेहो फसिल बर्बाद होइत छल। अन्हर, बिहाड़ि, बसात, अतिवृष्टि आ अनावृष्टिक संगहि टिड्डीक प्रकोपसँ कृषिकेँ धक्का पहुँचैत छलैक। अनावृष्टिसँ अकालक संभावना सेहो रहैत छलैक। सामान्य किसानक स्थिति बढ़िया नहि छल आ हुनका मालिक लोकनिक अत्याचारसँ तबाह होमए पड़इत छलन्हि। कृषकक समूह विशाल होइतहुँ हुनका लोकनिकेँ कोनो विशेषाधिकार नहि छलन्हि आ हुनका लोकनिपर कर्जक बोझ बरोबरि बनले रहैत छलन्हि।

उपनिषदमे जे जनकक बहुदक्षिणा यज्ञक उल्लेख अछि ताहिसँ इ अनुमान लगाओल जा सकइयै जे मिथिला ताहि दिनमे एक समृद्धशाली राज्य छल। राजकोश धन–धान्यसँ अवश्ये भरल होइत अन्यथा एतेक पैघ यज्ञ ओ कइयै कोना सकितैथ। ओहि यज्ञमे हजारोक संख्यामे गाय आ सोनाक दान भेल छल। गाय बड़दपर विशेष ध्यान देल जाइत छल ताहि दिनमे। बृहदारण्यक उपनिषदक अध्ययनसँ बुझि पड़इयै जे मिथिला ताहि दिनमे सुखी सम्पन्न राष्ट्र छल आ ओतए कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक। ओहिमे सामानसँ लदल बैलगाड़ीक उल्लेख सेहो अछि। आवागमनक हेतु रथ एवँ नावक व्यवहार होइत छल। '**स्वर्णपाद**'क व्यवहार एहि बातक संकेत दैत अछि जे ताहि दिनमे सोनाक सिक्काक प्रचलन छल। आर्थिक निश्चिंतताक कारणे देशमे आध्यात्मिक एवँ बौद्धिक विकास संभव भेल छल। मैथिल लोकनि ताहि दिनमे स्वभावसँ शांत एवँ क्रियाशील छलाह। पढ़ब–लिखबपर विशेष ध्यान दैत छलाह तथापि सैनिकक रूपें सेहो ओ लोकनि ककरोसँ कम नहि छलाह आ तीर चलेबामे तँ अग्रगण्ये।

कृषि मनुष्यक मुख्य कार्य छल। लोक सब विशेष कए गामेमे रहैत छल। गाममे ३०–४०सँ लऽ कए १०००परिवार धरि रहैत छल। गामक समीपहि गाछी–बिरछी सेहो रहैत छल। गामक अध्यक्ष अथवा गण्यमान्य व्यक्ति गामभोजक होइत छलाह।

गामक हेतु इ सर्वश्रेष्ठ एवम महत्वपूर्ण पद छल। राजाक हेतु कर वसूल करब, कृषि व्यवस्थाक निरीक्षण करब, ग्रामीण झगड़ा–झंझटकेँ फरिछैब हिनका लोकनिक मुख्य कर्तव्य छल। जँ उपजा नहि होइत छल तँ ग्रामीण लोकनिक भोजनक व्यवस्था हिनके करए पड़इत छलन्हि। उपजनिहार खेतमे पहरूदार सेहो राखल जाइत छल। उत्पादनक साधन मूल रूपें धनीमानी लोकक हाथमे छल तैं साधारण कृषकक स्थिति दयनीय रहब स्वाभाविके छल। जँ कोनो कारणे अन्न नहि उपजल तँ हिनका लोकनिकेँ अपार कष्टक सामना करए पड़इत छलन्हि। अकाल पड़बाक उल्लेख प्राचीन साहित्यमे भेटइत अछि। महावस्तुमे एहि बातक स्पष्ट उल्लेख अछि जे वैशालीमे एक बेर भीषण अकाल पड़ल छल। भूखसँ पीड़ित भऽ असंख्य लोक मुइल छल आ मुर्दाक दुर्गन्धसँ समस्त नगरक वातावरण दुर्गन्ध पूर्ण भऽ गेल छल। एहि युगमे बाढ़िक प्रकोपक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। गण्डकसँ पूर्वक क्षेत्रमे जलक बाहुल्य रहैत छल। मौर्यकालीन अभिलेखमे अकाल आ अभावक उल्लेख भेटइयै। मिथिलाक अंतर्गत **विदेह, वैशाली, चम्पारण, अंगुतराप, पुण्ड्र, कौशिकी कक्ष**, आदि स्थान सब कृषिक हेतु प्रसिद्ध छल आ एहि समस्त प्रदेशकेँ अन्नक भण्डार कहल जाइत छल। अंगुतरापक आपण गाम सुखी सम्पन्न छल। खेती करबाक हेतु खेतकेँ छोट–छोट टुकड़ीमे बाटल जाइत छल आ खेतक बीच सबमे आड़ि सेहो होइत छल। मिथिलामे इ प्रथा अद्यपर्यंत अछिये।

ताहि दिन मिथिलामे जमीनपर स्वत्वाधिकारक प्रश्न लऽ कए विद्वानमे मतभेद बनल अछि। अखन जतवा जे साधन उपलब्ध अछि ताहि आधारपर कोनो निर्णयात्मक मतक प्रतिपादन करब कठिन अछि कारण जमीनपर दुनू पक्षक विचारक हेतु सामग्रीक अभाव नहि अछि। व्यक्तिगत रूपें हमर अपन मंतव्य तँ इ अछि जे प्राचीन कालमे औपचारिक रूपें समस्त जमीनक अधिकारी राजा होइत छलाह किएक तँ परम्परागत विचारे '**सवै भूमि गोपाल की**" मानल जाइत छल आ राजा ईश्वरक प्रतिनिधि हिसाबे जमीनक मालिक सेहो होइत छलाह। विद्वान लोकनि तीनटा मत प्रतिपादन केने छथि–**व्यक्तिगत, सामूहिक** आ **राजकीय** स्वत्वाधिकार आ तीनू मतक पक्ष–विपक्षमे एक्के रंग तर्क देल जा सकइयै। फाहियान लिखने छथि जे केओ राजकीय जमीन जोतैत छथि हुनका ओहिमे सँ किछु अंश राजाकेँ देमए पड़इत छन्हि। अर्थशास्त्रमे राज्य नियंत्रित कृषि व्यवस्थाक विवरण अछि। जातकमे सामूहिक स्वत्वाधिकारक विवरण भेटइत अछि।

जमीन प्राचीनकालक आर्थिक जीवनक नींव छल जाहिपर समस्त आर्थिक रूपरेखा ठाढ़ छल। **जातक**मे **भोगगाम** आ **अर्थशास्त्र**मे '**आयुधीय**' गामक उल्लेख भेटइयै। एहि सभक व्याख्या प्रत्येक विद्वान अपना–अपना ढ़ँगे करैत छथि। अर्थशास्त्रमे कौटिल्य कर्मचारीकेँ नगद वेतन देबाक व्यवस्था केने छथि मुदा '**आयुधीय**' गामक उल्लेख किछु विद्वानकेँ दोसर अर्थ लगैत छन्हि। जखनसँ प्रचुर मात्रामे जमीनक दान शुरू भेल तखनसँ सामंतवादक वीजारोपण सेहो भेल आ भारतक अन्य प्रांत जकाँ मिथिलामे सेहो सामंतवादी प्रथाक विकासक सूत्रपात भेल। सामंतवाद मिथिलामे मध्ययुगमे अपन चरमोत्कर्षपर छल। सामंतवादक प्रभावे जमीनक टुकड़ी–टुकड़ीमे बटब बढ़ए लागल आ बेगार प्रथाक श्रीगणेश सेहो भेल। गुप्त युगसँ जे प्रथा प्रारंभ भेल से मिथिलामे बनल रहल आ सामंतवादी व्यवस्थाक प्रभाव हमरा लोकनिक दैनन्दिन जीवनपर सेहो पड़ल।

**सिक्का एवँ कर व्यवस्था**:- एहि प्रसंगमे कर व्यवस्था एवँ सिक्काक प्रसंगपर विचार करब अप्रांसगिक नहि होएत। टाका–पैसाक व्यवहार होइत छल अथवा नहि से निश्चित रूपसँ कहब असंभव मुदा वैदिक साहित्यमे **हिरण्य, अयस, श्याम, लौह, शीशा, कार्षापण** आदिक उल्लेख भेटइत अछि। चानीक टाकाकेँ '**निष्क**' कहल जाइत छल। सिक्काकेँ **कृष्णल, सतमान, हिरण्य, पिण्ड,** आ **कार्षापण** सेहो कहल जाइत छल। '**स्वर्ण**' सेहो सिक्काक हेतु व्यवहार होइत छल। कतहु–कतहु सिक्काकेँ '**पाद**' सेहो कहल गेल छैक।

राजाजनक अपन यज्ञमे प्रत्येक गामपर दश–दश '**स्वर्ण पाद**' लगौने छलाह। ओहिमे प्रत्येक ब्राह्मणकेँ तीन–तीन सतमान सेहो देल गेल छलन्हि। बौद्ध साहित्यमे सेहो एहि हेतु बहुत शब्दक व्यवहार भेल अछि। चानी आ तामाक प्राचीन सिक्का प्रचुर मात्रामे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रसँ प्राप्त भेल अछि–**हाजीपुर, चम्पारण, वैशाली, असुरगढ़, गोरहोघाट, पटुआहा, बहेड़ा, जयमंगलागढ़, पुर्णियाँ, बलिराजगढ़, मंगलगढ़** इत्यादि। एहि सभ स्थानसँ तँ घैलक–घैल सिक्का बहराएल अछि। जातक कथामे वस्तुक दाम '**पण**'क माध्यमसँ देल गेल जाइत छल। सिक्काकेँ **पण** सेहो कहल जाइत छल। साधारणतः सिक्काक तीन नाप छल–२४, ३२ आ ४०रत्ती। '**पाद**' १००**रत्ती**क चौथाई भाग होइत छल।

लोककेँ राजाकेँ किछु कर सेहो देमए पड़ैत छलैक। डी. आर. भण्डारकरक अनुसार जनक कालीन आ बौद्धकालीन मिथिलामे "**पाद**" करक व्यवहार विशेष प्रचलित छल। राजस्व प्रशासनक जे मान्य सिद्धांत छल तदनुसार मिथिलाक शासक लोकनि कर **संचय** आ **ओसूली** करैत छलाह। '**षडभाग**' सिद्धांत तँ सर्वमान्य छल। राजा प्रजाक रक्षा करैत छलाह आ तकरा बदलामे प्रजा राजाकेँ कर दैत छल। '**कर**'क रूपमे जमीनसँ प्राप्त कर सभसँ प्रमुख छल। समाहर्त्ता राजस्व प्रशासक होइत छल। हुनका सहायतार्थ गोप तथा स्थानिक सेहो होइत छलाह। पतञ्जलिक अनुसार क्षेत्रकर नामक एकटा पदाधिकारी महत्वपूर्ण व्यक्ति होइत छलाह जे कृषियोग्य भूमिक सर्वेक्षण कए ओहिपर कर लगेबाक अनुशंसा करैत छलाह। **बलि, भाग, भोग, कर, हिरण्य, उदक भाग, उद्रंग, सीत** आदि कैक प्रकारक कर होइत छल। एहिमे किछु कर तँ बड़ड कष्टकर छल। उपरोक्त शब्दक विश्लेषण करबामे विद्वान लोकनिक बीच मतभेद छन्हि तथापि उपरोक्त सबटा कर प्रचलित छल सेहो मान्य अछि। एकर अतिरिक्त **शुल्क, क्लिप्त, उपक्लिप्त, प्रणय, विष्टी, उत्संग** आदि सेहो करेक विभिन्न नाम छल आ इ राजकीय आयक मुख्य स्रोत मानल जाइत छल। इ सब प्रकारक कर मिथिलामे व्याप्त छल आ ओहि ठामसँ प्राप्त शिलालेख आ तत्सम्बन्धी प्राचीन साहित्यमे सेहो एकर उल्लेख अछि।

**सामूहिक आर्थिक जीवन**:- बौद्ध साहित्यसँ इहो स्पष्ट होइछ जे मिथिलामे मिलि जुलिकेँ रहबाक व्यवस्था आ श्रेणीबद्ध भऽ काज करबाक आदत बहुत पुराण अछि। जातक कथासँ इ ज्ञात होइत अछि जे विदेहक निवासी बंगाल होइत समुद्रक मार्गसँ विदेश जाए व्यापार करैत छलाह। ओ लोकनि एहि हेतु सामूहिक व्यवस्था करैत छलाह–आ **नाव** आ **जहाज** सेहो बनबैत छलाह। विदेहमे बाहरोसँ व्यापारी लोकनि अबैत छलाह। एहि मानेमे पूर्व–पश्चिम दुनूसँ मिथिलाक घनिष्ट सम्बन्ध छल। आर्थिक जीवनक क्षेत्रमे एहि प्रकारक सामूहिक संगठन लाभदायक सिद्ध होइत छल आ मैथिल लोकनि एहिसँ विशेष लाभान्वित होइत छलाह। बृहदारण्यक उपनिषदसँ एकर प्रमाण भेटइत अछि। सामूहिकताक हेतु **गण, व्रात, पूग, संघ, जाति, श्रेणी** आदि शब्दक

व्यवहार होइत छल। '**श्रेणी**' मूलतः व्यापारी लोकनिक संगठन छल। व्यापारी लोकनि वणिक कहबैत छलाह। व्यापारक संचालनक हेतु व्यापारी लोकनि अपन '**श्रेणी**' आ संघ बनबैत छलाह। किछु गोटए एकरा गणक संज्ञा सेहो दैत छथि। रामायण–महाभारतमे सेहो व्यापारी संघक उल्लेख भेटइत अछि। रामायणमे '**नैगम**' शब्दक व्यवहार भेल अछि। वैदिक साहित्यक '**श्रेष्ठी**' आ उपनिषदक '**श्रेष्ठिन**' शब्दो सेहो सामूहिकताक परिचायक थिक। मनु आ पाणिनिमे सेहो **श्रेणी** शब्दक उल्लेख अछि।

बौद्ध साहित्य तँ **श्रेणी** शब्दसँ भरले अछि। **लोहार, सोनार, कुम्हार, तेली, व्यापारी, मछुआ, कमार** इत्यादि लोकनिक अपन अलग–अलग **श्रेणी** होइत छलैक। हुनका लोकनिक अपन नियम कानून सेहो भिन्ने छलन्हि। ओ लोकनि अपन नियम अपने मिलिकेँ बनबैत छलाह। हिनका लोकनिक मध्य जे कोनो मतभेद होइत छलन्हि तँ ओकरो निपटारा ओ लोकनि अपन संघेक द्वारा करैत छलैथ। संघ श्रेणीक प्रधान लोकनिकेँ राजदरबारमे समादर होइत छलन्हि आ कानून इत्यादि बनेबा काल हुनका लोकनिक राय–विचार लेल जाइत छलन्हि। मिथिलाक महत्वक वर्णन एहि दृष्टिकोणे **महाउमग्ग जातक**मे अछि जाहिसँ इ ज्ञात होइत अछि जे नगरक चारू कोनमे निगमक संगठन छल।

**श्रेणी**क प्रधानकेँ **प्रमुख, प्रधान, जेट्ठक** अथवा **सेठी** कहल जाइत छलैक। **कमार, सोनार, लोहार, मालाकार, ताँती, कुम्हार** आदि सभ वर्गक अपन–अपन प्रधान होइत छलैक। श्रेणीक अंतर्गत काज केनिहार पदाधिकारीक वेतन इत्यादि श्रेणीसँ देल जाइत छलैक। समय–समयपर राजा श्रेणीक प्रधानकेँ विचार–विमर्श करबाक हेतु बजबैत छलथिन्ह। व्यापारी वर्गक प्रतिनिधिकेँ बरोबरि राजदरबारसँ सम्पर्क राखे पड़इत छलैक। **श्रेणी**केँ बहुत रास वैधानिक अधिकार सेहो प्राप्त छलैक। सामूहिक जीवनक सभसँ पैघ प्रमाण हमरा वैशालीक उत्खननसँ प्राप्त अवशेष सबसँ भेटइत अछि। **सार्थवाह, कुलिक, निगम** आदि शब्दक व्यवहार ओहिठाम प्रचुर मात्रामे भेल अछि। नगर शासनमे हिनका लोकनिक बड़ड पैघ हाथ छलन्हि। ओहिठामक बहुत मुद्रापर "**श्रेष्ठी निगमस्य**" उल्लिखित अछि आ ओहिपर बहुत गोटएक नाम सेहो भेटइत अछि– जेना **हरि, उमा भट्ट, नाग सिंह, सालिभद्र, धनहरि, उमापालित, वर्ग्ग, उग्रसेन, कृष्ण दत्त, सुखित, नागदत्त, गोण्ड, नन्द, वर्म्म, गौरिदास** इत्यादि– इ सभ गोटए कुलिक छलाह। सार्थवाहमे डोड़डकक नाम आ श्रेष्ठिमे षष्ठिदत्त आ श्रीदासक नामक उल्लेख अछि। बेगूसरायसँ प्राप्त एकटा माँटिक मुद्रापर '**श्री समुद्र**' आ दोसरपर '**सुहमाकस्य**' लिखल भेटइत अछि। वैशालीमे बैकिंग प्रथाकेँ चालू रखबाक श्रेय हिनके लोकनिकेँ छन्हि आ वैशाली व्यापारी एवँ सम्पत्तिधारी लोकनिक केन्द्र छल। एहि युगमे मैथिल लोकनि अपन आश्चर्यकारी साहसिक भावनाक परिचय देने छलाह।

**उद्योग**– व्यापारक स्थानीयकरणक कारण श्रेणीकेँ बल भेटल छलैक आ व्यापारक उत्कर्षक कारणे **सेट्ठी** लोकनिक उत्थान भेल छल। अपन संगठनकेँ मजबूत कऽ कए रखबाक आवश्यकता अहू लेल छलैक जे हुनका लोकनिपर कोनो–कोनसँ कोन प्रकार घातक आक्रमण नहि होमए आ हुनका लोकनिक स्वार्थपर आँच नहि आबे। सामूहिकताक भावनासँ जे बल भेटइत छैक तकर अनुभव ओ लोकनिक लेने छलाह आ ओकर लाभकेँ देखि चुकल छलाह। हुनक संगठित शक्तिकेँ नजरअन्दाज आब शासको नहि कऽ सकैत छलाह। प्रत्येक व्यवसायक पृथक–पृथक संघ छल। मुग्ग–पक्क–जातकमे १८टा **श्रेणी (गिल्ड)**क उल्लेख अछि। रमेश मजुमदार २७टा **श्रेणी**

**(गिल्ड)**क उल्लेख केने छथि। एकटा **जातक**मे मिथिलाक चारिटा श्रेणीक उल्लेख अछि। श्रेणी कैक प्रकारक अर्थ व्यवस्थाक सहायक छलः–

i) बैंकिंग प्रणालीकेँ जीवित राखब।
ii) सब तरह वस्तुकेँ न्यास रूपमे सुरक्षित राखब।
iii) कर्ज देबाक व्यवस्था करब।
iv) अपना क्षेत्रक अंतर्गतक भूमिक व्यवस्था करब।
v) राजस्व ओसुलीक काजमे सहायता देब।
vi) आपसमे सद्भावना बनाके राखब।
vii) अपना सदस्यक दिसि ठीका, पट्टा इत्यादि लेबाक व्यवस्था करब।
viii) बिक्री व्यवस्थाकेँ नियमित करब।
ix) अपना सदस्यकेँ अनुशासित राखब आ समय–समयपर सामयिक कर लगाएब।
x) सामूहिक कार्यक व्यवस्था करब।
xi) आवश्यक वस्तुजात पैदा करब।
xii) विज्ञापन प्रसारित करब।
xiii) आवश्यकता भेलापर स्थानीय तौरपर व्यवहारक हेतु सिक्का बाहर करब।

श्रेणीकेँ समाज आ राज्यमे प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त छलैक। जातकक अनुसार भाण्डागारिकक कार्यक्षेत्र श्रेणीक निरीक्षण धरि सीमित छल। श्रेणीक नियमक मान्यता राजाकेँ देमए पड़इत छलन्हि। प्राचीन कालक सामूहिक जीवनमे एकर विशेष महत्व छलैक आ जातकक अनुसार मिथिलामे सेहो श्रेणीबद्ध सामूहिक जीवनक प्रमाण भेटइत अछि।

**व्यापार एवँ उद्योग**:- अति प्राचीन कालसँ मिथिलामे उद्योग आ व्यापारक काफी प्रगति भेल छल। मिथिला चारू कात नदीसँ घेरल अछिये आ तैं आवागमनक कोनो असुविधा कहियो रहबे नहि केलैक। विदेहसँ तक्षशिला धरि राजमार्ग बनले छल। **जातक** सभ तँ मिथिलामे उद्योग–व्यापार सम्बन्धी कथा सभसँ भरल अछि। विदेहमे बाहरोसँ व्यापारी अवइत छलाह। वैशाली आ विदेह मुख्य व्यापारक मार्गपर छल। राजगृह, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र, वैशाली, कुशीनगर, कपिलवस्तु, श्रावस्ती आ मिथिलाक बीच आवागमनक मार्ग प्रशस्त छल। कश्मीरसँ होइत गाँधार धरि मिथिलासँ सोझे एक सड़क अबइत छल जकरा मिथिलासँ उज्जैन, बनारस, चम्पा, ताम्रलिप्ति, कपिलवस्तु, इन्द्रप्रस्थ, शाकल, कुशावती, पाटलिपुत्र आदि स्थानक सड़कसँ सम्बन्ध छल। सामुद्रिक व्यापारकेँ इ लोकनि बड़ड महत्व दैत छलाह आ समुद्रमे चलए बला जहाजकेँ '**वाहनम्**' कहैत छलाह। मैथिल लोकनि दक्षिणी चीनमे अपन एक साँस्कृतिक उपनिवेश सेहो बसौने छलाह आ ओतए किछु स्थानक नाम विदेह आ मिथिला सेहो रखने छलाह। रामायणमे वैशालीकेँ उद्योग व्यापारक केन्द्रक संगहि एकटा बन्दरगाह से कहल गेल अछि। चीन, तिब्बत आ नेपालक संग मिथिलाक व्यापारिक सम्बन्ध छल।

सूती कपड़ाक कारबार ताहि दिनमे मिथिलामे बेसी होइत छल। बौद्ध साहित्यक अध्ययनसँ एहि पक्षपर विशेष प्रकाश पड़इयै–**तंतु, ताँती, तंतभण्ड, तंत–वित्थनम्** आदि शब्द ताँतीसँ सम्बन्धित काजक संकेत दैत अछि। मिथिलाक '**कोकटी**' अखनहुँ प्रसिद्ध अछि आ तखनहुँ प्रसिद्ध छल। एकर अतिरिक्त मिथिलाक मुख्य उद्योगमे

अवइत अछि **चीनी, तेल, हड्डीपर कैल काज, धातु उद्योग, चमड़ा उद्योग, माँटिक बर्तनक उद्योग, वेंत, तारक पातक बनल वस्तु, सिलाई–फराई,** इत्यादि। जहिना आई इ सब वस्तुक हेतु मिथिला प्रसिद्ध अछि तहिना प्राचीन कालहुमे छल। कुसियारक चर्च तँ तेरहम शताब्दीक तिब्बती यात्री सेहो कएने छथि। ढ़ोल, बाजा, आ अन्यान्य छोट–मोट उद्योगक निर्माण सेहो मिथिलामे होइत छल। युद्ध कालीन अस्त्र–शस्त्र सेहो बनैत छल आ कहल जाइत अछि जे लिच्छवीक विरूद्ध युद्ध शुरू करबाक कालमे अजातशत्रु **रथ मूसल** आ '**महाशील कांतार**' सन यंत्रक व्यवहार केने छलाह। लिच्छवी लोकनि कुंकुम आ सुगन्धित द्रव्यक व्यापार करैत छलाह। कमार लोकनि काठपर तरह–तरहक कलाकारी करइत छलाह आ पाथर धातुक माला सेहो बनबैत छलाह। माँटिक सौन्दर्यपूर्ण वासन आदि बनैत छल आ ओहिपर तरह–तरहक पालिश आ कलाकारी होइत छल। माँटिक बासन एकटा कारी चमकैत पालिश होइत छल जकरा "**नादर्न ब्लैक पालिश्ड वेयर**" कहल जाइत छलैक आ समस्त भारतमे एकर माँग छल। मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रसँ इ प्रचुर मात्रामे प्राप्त भेल अछि।

मिथिलामे कपूर, चानन, नोन, रेशमी, ऊन, अफीम, कागज, सोना, तामा, पाथर, चूना, आदि वस्तु बाहरसँ मंगाओल जाइत छल। व्यापारिक दृष्टिकोणसँ मिथिलाक सम्पर्क पूबमे ताम्रलिप्ति आ पश्चिममे भरूकच्छसँ छलैक। मिथिलासँ सभ प्रकार अन्न, दलहन आदि वस्तु बाहर जाइत छल। फल फलिहारी बाहर पठाओल जाइत छल। व्यापारक दृष्टिकोणे निम्नलिखित पथ महत्वपूर्ण छल–

i) मिथिला–राजगीर
ii) मिथिला–श्रावस्ती
iii) मिथिला–कपिलवस्तु
iv) विदेह–पुष्कलावती
v) मिथिला–चम्पा
vi) मिथिला–सिन्धु
vii) मिथिला–प्रतिष्ठान
viii) मिथिला–ताम्रलिप्ति
ix) मिथिला–नेपाल–तिब्बत

स्थल मार्गक अतिरिक्त इ लोकनि समुद्र मार्गक व्यवहार सेहो करैत छलाह। गण्डकसँ गंगा आ चम्पाक मार्ग बाटे इ लोकनि ताम्रलिप्ति धरि पहुँचैत छलाह आ ओहिठामसँ सुवर्ण भूमि आ अन्यान्य स्थानपर जाइत छलाह। जातकक कथासँ इ ज्ञात होइछ जे सिन्धुक घोड़ाक व्यवहार मिथिलामे होइत छल आ सिन्धुक सम्पर्क भेलासँ मिथिलाक व्यापारिक सम्बन्ध पश्चिमोसँ घनिष्ट हैव बुझि पड़इयै। भारतक व्यापारी लोकनि वेविलोन धरि जाइत छलाह तैं संभव जे मैथिल व्यापारी सिन्धु बाटे आन व्यापारी सब संग ओम्हर जाइत होथि। प्रशस्त स्थल आ समुद्र मार्गक कारणे मिथिलाक व्यापारिक प्रगति अपन उत्कर्षपर छल आ **जातक** एकर सबूत अछि। (एहि विषयपर विस्तृत अध्ययनक हेतु देखु–मुहम्मद अकीकक लिखल–"**इकोनौमिक हिस्ट्री आफ मिथिला**")।

मौर्य युगकेँ मंगलकारी राज्यक युग कहल गेल छैक। एहि युगमे जनताक सर्वांगीण आर्थिक जीवनक नियंत्रण राज्यक माध्यमसँ होइत छल। खान इत्यादिपर राज्यक प्रभुत्त्व छल। राज्यक जमीन आ कृषि कार्यक निरीक्षणक हेतु अधीक्षक

नियुक्त होइत छलाह। राज्यक प्रत्येक विभागक हेतु अलग–अलग निरीक्षक रहैत छलाह। राज्यक दिसिसँ कृषिकेँ विशेष महत्व देल जाइत छलैक आ जनकल्याणकेँ ध्यानमे राखि इ स्वाभाविको छल। बंजर जमीन सभमे खेती करबाक हेतु शूद्र लोकनिकेँ बसाओल जाइत छलैक। पुरोहित आ विद्वान ब्राह्मण लोकनिकेँ दानमे जमीन भेटइत छलैक। सिंचाई–पटौनी आ मालक व्यवस्था राज्यक दिसिसँ होइत छलैक। प्राकृतिक उपद्रवसँ बचबाक हेतु राज्यक दिसिसँ सब प्रबन्ध होइत छल। गाम सभमे सहयोग समितिक व्यवस्था सेहो छल आ केओ एहिमे सम्मिलित नहि होइत छलाह हुनका दण्डित कैल जाइत छल। उद्योग, व्यापार आ वाणिज्य सेहो प्रगतिक पथपर छल। प्रशस्त राजमार्गक व्यवस्थासँ व्यापारक प्रगतिमे सहायता भेटइत छलैक। बाजारमे निर्धारित मूल्यपर सब वस्तुक बिक्री होइत छल आ मूल्य नियंत्रण आ वेतन निर्धारणक सिद्धांतक प्रतिपादन आइसँ २३००वर्ष पूर्व कौटिल्य केने छलाह। जे केओ राज्यकर देबामे असमर्थ छलाह हुनका ओहि बदलामे बेगारी करए पड़ैत छलन्हि। व्यापारीकेँ पूर्ण मात्रामे कर देमए पड़इत छलन्हि।

गुप्त युगमे कोनो विशेष परिवर्त्तन देखबामे नहि अवइयै। **कृषि, उद्योग, व्यापार**क प्रगति अहुयुगमे भेल। वैशालीसँ प्राप्त मुद्रा एहि युगक आर्थिक जीवनपर प्रकाश दैत अछि। फाहियान आ हियुएन संगक यात्रा विवरणसँ इ ज्ञात होइछ जे मिथिलाक आर्थिक अवस्था ओहि युगमे बेजाय नहि छल। एहि युगमे सामंतवादी प्रथाक विकास भेल। लोककेँ आब जमीन्दारी प्रथाक अनुभव होमए लागल छलन्हि। जनताक विशिष्ट समूह अहुखन गामेमे बसैत छल आ कृषि आजीविकाक प्रधान आधार छल। '**कर**'क मात्रामे हेर–फेर आब जमीनक अनुसारे हैव प्रारंभ भेल। जाहिठाम पटौनीक व्यवस्था छल ताहिठाम कर बेसी लगैत छलैक आ वंजर जमीनक कम। हियुएन संगक अनुसार एहिठामक किसान परिश्रमी होइत छलाह आ अधिक अन्न उपजबैत छलाह। जमीन मूलरूपसँ तीन भागमे बाँटल जाइत छल–

i) **गोचर**–जाहिमे भिन्न प्रकारक घास उपजैत छल।
ii) **बंजर**–कोनो प्रकारक उपजा नहि होइत छल।
iii) **उपजाऊ।**

हाटक व्यवस्था सेहो प्रारंभ भऽ गेल छल। हाटक निरीक्षणक हेतु '**हट्टपति**' नामक एकटा अधिकारी सेहो नियुक्त होइत छलाह। ब्राह्मण आ क्षत्रियकेँ कर रहित जमीन दानमे भेटइत छलन्हि। एहि युगमे जमीन छोट–छोट टुकड़ामे बँटि चुकल छल। भूमि नापबाक प्रणाली प्रचलित भऽ चुकल छल आ गुप्तयुगमे एकरा कुलवाप्य कहल जाइत छल। अन्न नापबाक प्रणाली सेहो प्रचलित भऽ चुकल छल आ ओकरा '**द्रोण**' कहल जाइत छलैक। खेतीबारी हरसँ होइत छल।

एहि युगमे व्यापारक प्रगति सेहो खूब भेल छल। एहियुगमे बहुतो गोटए मिथिलासँ काशी जाइत छलाह। सिक्काक रूपमे कौड़ीक प्रचलन सेहो भऽ चुकल छल। लहना–तगादाक वेश बढ़ल–चढ़ल छल आ सूदक दर ९% सँ १२% धरि छल। भोजन वस्त्रक सामग्री एकठामसँ दोसर ठाम पठाओल जाइत छल। कैक प्रकारक आभूषण बनाओल जाइत छल। एक स्थानसँ दोसर स्थान सामान बैलगाड़ी आ नावपर पठाओल जाइत छल। आ सभपर चूंगीकर सेहो लगैत छलैक। एक बैलगाड़ीपर बीस बोझसँ बेसी सामान लदलासँ दू टाका शुल्क लगैत छल। किराना वाला बैलगाड़ीपर एक टाका शुल्क लगैत छल। कथा सरित्सागरसँ ज्ञात होइत अछि

जे काशीक चारूकात रस्ताक जाल बिछाओल छल। पुण्ड्रवर्द्धनसँ पाटलिपुत्र धरि मिथिले बाटे रस्ता छल। एहि सबसँ स्पष्ट होइछ जे प्राचीन मिथिला सब तरहे सम्पन्न छल। आ देश–विदेशसँ ओकर सम्पर्क बनल छलैक। सामान्य मनुक्खक जीवनमे कोनो विशेष परिवर्त्तन नहि भेल छलैक। धनी लोकनि अपना धनकेँ गारिकेँ रखैत छलाह।

मध्ययुगीन मिथिलाक आर्थिक इतिहासक जनबाक हेतु साधनक अभाव अछि तथापि तत्कालीन साहित्यक अध्ययनसँ हमरा लोकनिकेँ पर्याप्त ज्ञान प्राप्त होइछ। ज्योतिरीश्वरक **वर्णरत्नाकर**मे एहि युगक आर्थिक स्थितिक विवरण भेटइत अछि। ओहि ग्रंथसँ इ प्रतीत होइछ जे ताहि दिनमे मिथिलाक ग्रामीण स्वर प्राञ्जल भऽ उठल छल। चाउर, जौ, विभिन्न प्रकारक दालि, बाजरा, मटर, तेलहन, कुसियार, रूई, पिआज, लहसून, दाना इत्यादि मिथिलामे प्रचुर मात्रामे उपजैत छल। चूड़ा आ चाउरक भूजाक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। सोआ, मेथी, मंगरैल आ सोंफक खेती सेहो होइत छल। आम, खजूर, नेमो, नारंगी, अनार, अंजीर, जामून, कटहर, सपाटु, लताम, पपीता आदि फलक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। चूड़ा दहीक प्रथा विशेष प्रचलित छल। अन्न रखबाक हेतु बखारी बनैत छल। चीनी आ गूड़क प्राचुर्य छल। एहिठामसँ मधु नेपाल जाइत छल। ताड़ी–दारू सेहो बनैत छल। महुआक दारू बड़ड प्रचलित छल। पानक बड़का व्यवसाय मिथिलामे होएत छल। पान लगेबाक विधिपर ज्योतिरीश्वरतँ विभिन्न प्रकारक विधानो बतौने छथि। ओहिमे तरह–तरहक मशाला पड़इत छलैक आ ओ सभ मशाला देशक विभिन्न भागसँ मँगाओल जाइत छलैक।

तीस प्रकारक वस्त्रक वर्णन ज्योतिरीश्वर स्वयं कएने छथि। दामी वस्त्रक अंगपोछा बनैत छल। ओ रंगरेज आ मुशहरीक उल्लेख सेहो कएने छथि। विभिन्न प्रकारक धातुसँ अनेकानेक प्रकार बासन–बर्त्तन बनैत छल। **वर्णरत्नाकर**मे अष्ट धातुक उल्लेख सेहो भेल अछि। लोहा आ अन्यान्य धातु गलेबाक कलामे मैथिल निपुण होइत छलाह। एहिठामक लोहार लोहा गलाकेँ हर, खुरपी, कैंची, चक्कू, कुरहड़ि आदि बनबैत छलाह। खपरैल घरक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। कमार लोकनि काठक अनेको वस्तु बनबैत छलाह। ज्योतिरीश्वर ३६प्रकारक शस्त्रास्त्रक उल्लेख केने छथि।

**वर्णरत्नाकर**सँ ज्ञात होइछ जे मैथिल लोकनि तंजोर, सिलहट, अजमेर, काँची, चोलप्रदेश, कामरूप, बंगाल, गुजरात, काठियावाढ़, तेलंगना, आदि स्थान सभसँ अपन वस्त्र मंगबैत छलाह। ओहिमे श्रीखण्ड, मलय आ सूरतक उल्लेख सेहो अछि। नाव बनेबामे मैथिल लोकनि सिद्धहस्त छलाह। एकर विवरण धर्मस्वामी सेहो उपस्थित केने छथि। नाव सबमे सिंह, बाघ, घोड़ा, बत्तक, साँप, माँछ आदिक चेन्ह रहैत छल। नाव बनेबामे मैथिल लोकनि अपन सौन्दर्यबोधक परिचय दैत छलाह।

स्वास्थ्यपर सेहो विशेष ध्यान देल जाइत छल। मिथिला ताहिदिनमे दूध दहीक हेतु प्रसिद्ध छल आ ओहिठाम लोग स्वस्थ होइत छल। देहक श्रृंगारक संग देहक सेवाक विन्यास सेहो छल। देह मालिश कएनिहारकेँ मरदनिया कहल जाइत छलैक। भोजनमे गरम मशालाक प्रयोग होइत छल। आ शरीरक सौन्दर्यक हेतु अगुरू, कर्पूर आदिक व्यवहार प्रचुर मात्रामे होइत छल। जीवनक एहन कोनो अंश अथवा सौन्दर्य सामग्रीक एहेन कोनो अवयव नहि जकर उल्लेख वर्णरत्नाकरमे नहि हो। पंचशायकमे एक दिसि स्त्रीक प्रसाधनक सभ विषयक वर्णन अछि तँ दोसर दिसि परिवार नियोजन आ गर्भ निरोधक तकक विधि लिखल अछि। कामसूत्रसँ कोनो अंशमे एहि ग्रंथक

महत्व कम नहि अछि। **ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर, पंचशायक आ विद्यापतिक कीर्तिलता एवँ लिखनावली** पढ़लासँ बहुत बातक ज्ञान होइछ।

विद्यापतिक **लिखनावली**सँ इ ज्ञात होइत अछि जे राजस्वकर सेहो वसूल होइत छल। भूमि नपबाक उल्लेख सेहो ओहिमे अछि। दानपत्रक सूची सेहो राखल जाइत छल। एहि ग्रंथमे ऋण–पत्र, खेती–व्यवस्था पत्र, बन्धकी–व्यवस्था पत्र आदिक विवरण भेटइत अछि। **दानवाक्यावली**मे राहरि, साठी आ लतामक चर्च अछि आ ओहिमे कैक प्रकारक वस्त्रक उल्लेख सेहो भेल अछि– कार्पासिक वस्त्र, समेम वस्त्र, क्षौम वस्त्र, कौशेय वस्त्र, कुश वस्त्र, कृमिज वस्त्र, मृगलोमजवस्त्र, वृक्षावक् संभव वस्त्र आ आविक वस्त्र। **कीर्तिलता**मे बाजार, हाट, नगर, आदिक विशिष्ट वर्णन अछि। बजारमे पनहट्टा, धनहट्टा, सोनहट्टा, पकवानहट्टा, मछहट्टा इत्यादिक उल्लेख अछि। ओहि ग्रंथमे दरिद्रताक उल्लेख सेहो अछि। तत्कालीन दरिद्रताक विवरण ओहिमे अछि। कीर्तिपताकामे विद्यापति कहने छथि जे राजाक मुख्य कर्त्तव्य होना चाही दरिद्रताकेँ खतम करब। ऋणक उल्लेखो कीर्तिलतामे अछि आ दरिद्रताक विवरण तँ पदावलीक कतेको गीतमे। आर्थिक इतिहासक दृष्टिकोणसँ इ युग अखनो एकटा विशिष्ट अध्ययनक अपेक्षा रखइयै कारण ने तँ उपेन्द्र ठाकुर आ ने मोहम्मद अकीक एहि कालपर कोनो प्रकाश देने छथि। थोड़ बहुत विवरण हम **मिथिला इन द एज आफ विद्यापति**मे कैल अछि। मुसलमानी प्रसारसँ आर्थिक जीवनक रूपरेखामे सेहो थोड़ेक परिवर्त्तन भेलैक मुदा तइयो मैथिल अपन कट्टरताक कारणे आन प्रांतक अपेक्षा एहिठाम अपनाकेँ फराके रखलन्हि आ अपन विधि–विधानकेँ यथाशक्ति सुरक्षित सेहो।

मुसलमानी शासन कालमे मिथिलाक आर्थिक जीवनमे कोनो विशेष उल्लेखनीय प्रगति नहि भेलैक अपितु स्थिति यथावते रहलैक। शाहजहाँक समयमे जखन समस्त भारतमे अकालक स्थिति उत्पन्न भेलैक तँ मिथिलो ओहिसँ वाँचल नहि रहल। कास्तकार आ सामान्य किसानक स्थिति बड़ड दयनीय भऽ गेलैक। तिरहूतमे ताहि दिनमे बंजारा लोकनिक उपद्रव जोरपर छल। बरनिअरक यात्रा विवरणसँ ज्ञात होइछ जे बंजारा समस्या उभरिकेँ ऊपर आएल छल आ ओकरा दबेबाक हेतु संगठित प्रयास भऽ रहल छल। कृषक लोकनिक स्थिति बदत्तर भऽ गेल छल आ औरंगजेबक परोक्ष भेलापर तँ स्थिति आर चिन्तनीय आ दयनीय भऽ गेल छल। भारतमे अंग्रेज आ अन्यान्य विदेशी लोकनिक कारबार आ व्यापार शुरू भऽ गेल छल आ शोषण प्रक्रियामे एकटा नव गति आबि गेल छलैक। १७५७मे पलासीक लड़ाईक बादक स्थितिकेँ भारतीय अर्थनीतिक इतिहासमे अंधकारपूर्ण कहल गेल अछि। अंग्रेज, मुसलमानी अमला–फैला, हिन्दू–जमीन्दार, बंजारा, सन्यासी सभ मिलिकेँ जनताकेँ लूटबामे लागल छल आ संगहि अपन–अपन जेबी गरम करबामे। देशक चिन्ता ककरो नहि छलैक। चारूकात हाहाकार आ अकालक स्थिति छल। १७५७क पछातिमे मिथिलामे बरोबरि अकाल पड़इत रहल। बेकारीक समस्या उत्पन्न भऽ गेल। कृषि आ उद्योगक स्थिति दिन–प्रतिदिन खसए लागल। तिरहूतक गामक गाम उजार होमए लागल।

१७७०मे बड़का अकाल पड़ल आ ओहिठामक लोग खेती बारी छोड़िकेँ पड़ाए लागल। ओहि वर्षमे दरभंगाक विशेष भागमे चासक कोनो काज नहि भऽ सकल आ स्थिति एहेन भऽ गेल जे १७८३मे दरभंगाक कलक्टर एहि आशयक प्रस्ताव रखलन्हि जे अवध प्रांतसँ खेतिहर मंगाकए दरभंगामे खेतीक व्यवस्था कैल जाइक। एहि अकालक कारण मुजफ्फरपुरक कलक्टरीसँ प्राप्त कागज सभसँ ज्ञात होइछ।

हाजीपूरसँ पुर्णियाँ धरि अभूतपूर्व अकाल पड़ल छल। एकर मुख्य कारण इ छल जे सरकार अकारण सभ बातमे हस्तक्षेप करैत छल, आवागमन एवँ यातायातक असुविधा छल आ ताहि दिनमे केओ एहेन योग्य नेता नहि छलाह जे एहि सभहिक निराकरणक कोनो प्रयास करितैथि। एहेन अराजक स्थितिमे जकरा जतए जे हाथ लगैक से सैह करे आ जमीन्दारी अत्याचार आ शोषणक तँ कोनो कथे नहि छल। १७८२मे बाध्य भऽ कए इ नियम बनबे पड़लैक जे बिना अंग्रेजी सरकारक अनुमतिकेँ केओ जमीन्दार अपन जमीनकेँ एम्हर–ओम्हर नहि कऽ सकइयै। वार्थहस्ट्र साहेब १७८७मे तिरहूतक शासक भेला। दरभंगाक महाराज आ इस्ट इण्डिया कम्पनीक बीच एहि प्रश्नकेँ लऽ कए बरोबरि झंझट होइते रहलन्हि (देखु–हमर '**द खण्डवलाज आफ मिथिला**')। स्थिति एहेन विभत्स भऽ गेल छल जे परगन्ना पचही, आलापुर आ भौरमे किछु उपजावारी नहि होइत छल आ इ सभ जंगलमे परिवर्त्तित भऽ गेल छल। एहि सभ क्षेत्रमे जंगली जानवरक वास भऽ गेल छल। अंग्रेजकेँ अपन राज्यक सुरक्षाक चिंता छलन्हि आ जमीन्दार लोकनिकेँ अपन सम्पत्तिक आ बीचमे पिसाइत छल दरिद्र जनता जकरा हेतु चारूकात अन्हारे अन्हार छलैक। सरकार आ जमीन्दारक अतिरिक्त महाजन लोकनि सेहो निर्दय भऽ कए जनताक पसीनाक कमाई छीन लैत छलैक।

मानव–कृत शोषण यंत्रकेँ साहाय्य देनिहार प्रकृति सेहो छलैक। अतिवृष्टि आ अनावृष्टि तँ अपन रूप देखिबते छल आ ताहिपर नदीक बाढ़ि तँ अपन नङटे नाच देखिबते छल। मिथिलामे नदीक तँ अभाव अछि नहि आ प्रति वर्ष एकर बाढ़ि अखने जकाँ ताहि दिनमे अबैत छल। गंगा, गण्डक, वाग्मती, कमला, कोशी, बलान, करेह, लखनदै आदि नदीक बाढ़ि बरसातमे तीन मास धरि मिथिलाकेँ समुद्रमे बदैल दैत छलैक जाहिसँ एकर आर्थिक जीवन अस्त–व्यस्त भऽ जाइत छलैक। कोशीकेँ तँ सहजहि '**दुखक नदी**' कहले गेल अछि। एहिसँ सब फसिल नष्ट भऽ जाइत छल, महामारीक प्रकोप बढ़ैत छल आ आवागमन एवँ यातायातक सुविधा लुप्त प्राय भऽ जाइत छल। एहना स्थितिमे बरोबरि अकाल हैव स्वाभाविके–१५५५सँ १९७५धरि मिथिलामे कतेको बेर अकाल पड़ल अछि आ महामारीक प्रकोप बढ़ल अछि– १५७३–७४, १५८३–८४, १५९५–९६, १६३०, आ अंग्रेजक समय १७७०सँ १९००क बीच १५–२०बेर अकालक दर्शन लोककेँ भेल छलैक। १६३०क अकाल तँ अद्वितीय छल। ओहि साल मिथिलासँ बहुत रास लोगकेँ भागिकेँ दोसर ठाम चल गेल छल। मिथिलामे बाढ़ि तँ वार्षिक क्रम जकाँ अबैत अछि आ एहेन शायद कोनो वर्ष होएत जाहिमे बाढ़ि नहि आएल हो। बाढ़ि आ अकाल मिथिलाक आर्थिक इतिहासक एकटा अभिन्न अंग मानल जाइत अछि।

१७७०क अकाल मिथिलाक इतिहासमे अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकेँ एक दम्म कम्म भऽ गेल छल। १८७३–७४मे पुनः एकटा ओहने अकाल मिथिलामे भेल छल जकर विवरण हमरा फतुरी लाल कविक अकाली कवित्तसँ भेटइयै– अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकेँ दूर करबाक हेतु आ मजूरकेँ रोजी देबाक हेतु ताहि काल रेलगाड़ीक योजना चलाओल गेल जकरा सम्बन्धमे फतुरीलाल लिखैत छथि–

*"कम्पनी अजान जान कलनको बनाय शान।*
*पवन को छकाय मैदानमे धरायो है॥*
*छोड़त है अड़ादार बड़ा बीच धाय–धाय।*
*सभेलोग हटाजात केताजात खड़ा है॥*

*तारकी अपारकार खबरि देत वार वार।*
*चेत गयो टिकसदार रेल की उवाई है॥*
*करत है अनोर शोर पीछे कत लगत छोर।*
*जोर की धमाक से मशीन की बड़ाई है॥*
*कम्पूसन पहरदार कोथी सब अजबदार।*
*कोइला भर करल कार धूआँसे उड़ायो है॥*
*बाजा एक बजन लाग हाथी अस।*
*पिकन लाग जैसा जो चढ़नदार वैसाधर पायो है॥*
*गंगाकेँ भरल धार उतरि गयो फतूर पार गाड़ीकी।*
*अजबकार कवित्त यह बनाया है"॥*

अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ि, अभाव, एवँ प्राकृतिक प्रकोपसँ मिथिलाक आर्थिक जीवन परम्परागत रूपें प्रभावित रहल अछि आ अहुखन अछिये।

अंग्रेजक अमलमे आबिकेँ जखन रेलगाड़ीक सुविधा बढ़ल आ आवागमन एवँ यातायात आ संचार व्यवस्थामे सुधार भेल तखन मिथिलाक आर्थिक इतिहासक रूपरेखामे परिवर्त्तन हैव स्वाभाविक भऽ गेल। उद्योग आ व्यापारक प्रगति सेहो भेल परञ्च ओकरा अखनो पर्याप्त नहि कहल जा सकइयै। प्राचीन कालहि मिथिलामे उद्योग–व्यापार विकसित अवस्थामे छल आ मध्य कालक विशिष्ट भागमे एकर से स्थिति बनल रहलैक मुदा इस्ट–इण्डिया कम्पनीक समयमे आबिकेँ एहिमे थोड़ेक ह्रास अवश्य भेलैक। खाद्य सामग्रीक अतिरिक्त मिथिलाक क्षेत्रमे कुसियार, तम्बाकु आ पाट आ मिरचाई बेस मात्रामे उपजैत अछि एहि लऽ कए मिथिलाक व्यापारो अछि। सब प्रकारक खादीक कपड़ा सेहो एहिठाम बनैत अछि। कोकटीक हेतु तँ मिथिला सर्वप्रसिद्ध अछिये। मिथिलामे व्यापारक प्रसिद्ध केन्द्र छल– हाजीपुर, लालगंज, बगहा, गोविन्दपुर, सतराघाट, दरभंगा, कमतौल, खगड़िया, रोसरा, पूसा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, रानीगंज, नबाबगंज, नाथपुर, साहेबगंज, राजगंज, रामपुर, अलीगंज, खबासपुर, दुलालगंज, कलियागंज, देवगंज, किसनगंज, बहादुरगंज, बारसोई, बेगूसराय, तेघड़ा, दलसिंहसराय इत्यादि। एहिमे नाथपुर तँ अंतराष्ट्रीय व्यापारक मुख्य केन्द्र छल जाहिठाम प्रचुरमात्रामे नेपाली लोकनि सामान लऽ कए अबैत छलाह आ एहिठामसँ सामान लऽ कए जाइत छलाह। अंग्रेजक अमल धरि नाथपुर एक प्रख्यात व्यापारिक केन्द्र छल। १८३६ नारेदिगर आ नाथपुरक सर्वेक्षण अंग्रेज द्वारा कैल गेल जकर रेकर्ड सम्प्रति सुरक्षित अछि। सिन्दूर, कागज, आ अफीमक व्यापार बेस होइत छल। अफीमक कारखाना विदुपुर, लालगंज, दरभंगा, वैगनी नवादा, आदि स्थानमे छल। पाटक कारबार पुर्णियाँ आ सहरसामे सबसँ बेसी होइत छल आ नीलक सम्बन्धमे पूर्ण विवरण हम पूर्वहिं दऽ चुकल छी।

एतवा होइतहुँ मिथिलामे २०म शताब्दीमे कोशीक प्रकोपक बढ़लासँ आर्थिक स्थिति दयनीय भऽ गेल छल। रेलमार्ग सबटा टूटि फाटि गेल, गामक गाम उजरि गेल छल। नाथपुरक व्यापारिक महत्त्व नष्ट भऽ गेल छल आ जे प्राचीन उपलब्धि आर्थिक दृष्टिकोणे मिथिलाक छल से आब इतिहासक वस्तु बनिकेँ रहि गेल। राष्ट्रीय आन्दोलन आ स्वदेशीक पुनरूत्थानक क्रममे कोकटीक हेतु प्रसिद्ध तिरहूत (मिथिला)केँ पुनः अखिल भारतीय खादीक प्रधान केन्द्र बनाओल गेल आ मधुबनीमे एकर मुख्यालय राखल गेल। बहुत गोटएक गुजर एखनो एहिसँ चलि रहल अछि। १९५५मे कोशीकेँ

बन्हबाक प्रयास भेल आ वीरपुरमे कोशी बैरेजक निर्माण भेलासँ दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ आ उत्तर मूंगेर आ भागलपुर पूर्णतः लाभान्वित भेल अछि। मिथिलामे आर सब नदीकेँ जँ बान्हल आ नियंत्रित कैल जाइक तँ मिथिलाक आर्थिक स्थितिक रूप रेखा बदलि जेतैक। पूर्णियाँ–सहरसा जतबे कष्ट कोशीक कारणे भोगने छल अखन ततबे सुभ्यस्त आ सम्पन्न भऽ गेल अछि। स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र जखन रेल मंत्री बनलाह तखन ओ एहि सभ क्षेत्रक टुटल फाटल रेलवे लाइनकेँ चालू करौलन्हि। एहिसँ एहि क्षेत्रक आर्थिक विकासक संभावना आर बढ़ि गेल आ दुर्भाग्यक गप्प इ एहने एक लाइनक उद्घाटनक हेतु जखन ओ ०२/०१/७५केँ समस्तीपुरमे पहुँचलाह तँ ओतए एक संदिग्ध स्थितिमे बम बिस्फोटक कारणे मारल गेलाह।

अध्याय–१८

# धर्म आ दर्शन

**धर्म:-** वैदिक युगहिसँ मिथिला धर्म आ दर्शनक प्रधान केन्द्र रहल अछि। प्रारंभमे एकेश्वरवादी मत बड़ड प्रचलित छल आ ऋग्वेदमे एकर विशद विश्लेषण भेल अछि। वेदक प्रारंभिक कालमे यज्ञक महत्व विशेष छल मुदा पाछाँ जे हमरा लोकनि प्रजापतिक कथा–पिहानी पढ़ैत छी ताहिसँ इहो ज्ञात होइछ जे **'अवतारवाद'**क सिद्धान्त सेहो जोर पकड़ि रहल छल। ब्राह्मण साहित्यमे प्रजापति **'पुरूष'**क रूपमे ठाढ़ भेल छथि आ एहेन बुझि पड़इत अछि जेना की विश्वक भार सम्हारवाक कार्य हुनके माथपर पड़ि गेल हो। **'आत्मा'** आ **'ब्रह्म'**क विकास उपनिषदक युगमे भेल। हिन्दू धर्मक दार्शनिक विश्लेषण उपनिषदमे भेटइत अछि आ एहिमे विशिष्ट भागक विश्लेषण मिथिला भूमिमे राजा जनकक दरबारमे भेल छल।

अखिल भारतीय धर्मक रूपमे जैन धर्म आ अखिल विश्व धर्मक रूपमे बौद्ध धर्मक उत्थान प्रसार आ प्रचार मिथिलहिक अंगनामे भेलैक। जनक सेहो अपना युगक विद्रोही छलाह आ प्राचीन नियमक उल्लंघन कए यज्ञ सम्बन्धी अपन कर्त्तव्य कए एहि बातकेँ सिद्ध केने छलाह जे मनुष्य अपन कर्त्तब्यसँ किछु प्राप्त कऽ सकइयै। ओहि परम्पराक अनुरूप आ प्राचीन कट्टरता एवँ अन्धविश्वासकेँ कटैत तथा वेदक अपौरूषेयतामे अविश्वास करैत मिथिला आङनमे अवतीर्ण भेल छलाह वर्द्धमान महावीर आ गौतम बुद्ध। वर्द्धमान महावीरक जन्म वैशालीमे भेल छलन्हि– कुंडग्राममे जाहिठाम ज्ञात्रिक लोकनि रहैत छलाह। महावीरकेँ **विदेह, वैदेहीदत्ता, विदेह जात्य, विदेह सुकुमार, वैशालिक** एवँ **वैशालिए** इत्यादि कहल गेल छन्हि। आ चारांगसुत्तमे तँ साफ लिखल अछि–

*"समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा*
*वासिट्ठत्सगुता तीरो णं तिन्रि नां तं–*
*तिसला इव विदेह दिन्ना इव पियकारिणी इवा"* ।

महावीरक माए त्रिशलाकेँ **वैदेही** कहल जाइत छलन्हि। २१म तीर्थंकर नेमीनाथक जन्म सेहो मिथिलेमे भेल छल। महावीर १२टा वर्षावास वैशालीमे आ ६टा वर्षावास मिथिलामे बितौने छलाह। विदेह आ वैशालीमे महावीर बहुत रास शिष्य छलथिन्ह आ एहि सब क्षेत्रमे हिनक प्रतिपादित धर्मक विशेष प्रचार भेल छल। जैन साहित्यमे मिथिलाक प्रचुर वर्णन भेटइत अछि जाहिसँ इ स्पष्ट होइछ जैन आ मिथिलाक बीच घनिष्ट सम्पर्क छल आ मिथिलाक साँस्कृतिक परम्परा जैन विद्वान लोकनिक ध्यान अपना दिसि आकृष्ट केने छलन्हि। प्रारंभिक अवस्था बुद्ध सेहो जैन धर्म दिसि आकृष्ट आ प्रभावित भेल छलाह मुदा से मात्र किछु दिनक हेतु। बौद्ध धर्मक उत्थान आ प्रसारक पूर्व विदेह आ वैशाली जैन धर्मक एकटा प्रधान केन्द्र छल। महावीर वर्ण व्यवस्थाक विरोधी छलाह तथापि ओ त्रिवर्णक एक प्रकारे समर्थक सेहो छलाह। जैन धर्म निर्वाणपर जोर देने अछि। हरिभद्र अपन **'षडदर्शन समुच्चय'**मे लिखने छथि–

**"आत्यंतिको वियोगस्तु देहादेर्मोक्ष उच्च्यते"–** महावीरक विश्वास छलन्हि जे मनुष्य अपन कर्मसँ वर्ण–व्यवस्था रूपी जालकेँ तोड़ि सकइयै। चाण्डालोमे सद्गुण भऽ सकैत जे ओ उचित कर्त्तव्यक पालन करए। मनुष्यक आस्था हुनक अपूर्व विश्वास छलन्हि आ बहुत ब्राह्मणो हुनक मतकेँ महत्व दैत छलथिन्ह। कल्पसूत्रक सुखवोधिका टीकामे लिखल अछि–

*"प्रभु अपापापुर्या....जगाम, तत्र बहवो ब्राह्मणाः मिलिताः....*
*चतुश्चत्वारिंशच्छा तानि द्विजाः प्रवजिताः"।*

जैन लोकनि दर्शन आ न्यायक क्षेत्रमे सेहो बड़ड पैघ योगदान देने छथि।

महावीरक इतिहास मिथिलाक प्राचीन इतिहाससँ जुटल अछि आ जैन साहित्यक अनुसार मिथिलाक राजा निमि जैन धर्म स्वीकार केने छलाह आ श्रमण भऽ गेल छलाह। उत्तराध्ययनसूत्रमे लिखल अछि–

*"नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ*
*चइऊण गेह चं वेदेहि सामण्णे पज्जुंवट्ठिओ"।*

एहिठाम स्मरण रखबाक अछि बौद्ध परम्परामे एहने किछु बात एहि राजाक सम्बन्धमे सेहो अछि जेना कि **महाजनक जातक**क कथासँ ज्ञात होइछ। विदेहमे महावीरक पर्याप्त समर्थक रहल हेतन्हि एहिमे संदेह नहि। वैशालीमे तँ हिनक विशेष प्रभाव रहबे करैन्ह। एहिठामसँ जैन धर्मक प्रसार सबतरि भेल। हियुएन संगक समय धरि एहिठाम **'निग्रंथ'** लोकनिक पर्याप्त संख्या छल। जैन लोकनि सेहो स्तुपक निर्माता होइत छलाह आ ओहन एक स्तुप वैशालीमे सेहो छल तकर प्रमाण जैन साहित्यमे भेटइत अछि।

बौद्ध धर्मक दृष्टिकोणे सेहो मिथिला महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। ई. पू. ६ठम शताब्दी तँ समस्त विश्व इतिहासक दृष्टिकोणसँ सहजहि महत्वपूर्ण अछि, मिथिलाक हेतु तँ आ विशेष रूपें। वैदिक कर्मकाण्डक विरोध तँ उपनिषदक युगहिसँ स्पष्ट भऽ चुकल छल मुदा ओहि विरोधक परिणति भेल जैन आ बौद्ध धर्मक उत्थानसँ। मुण्डक उपनिषदमे विरोध तीव्रतासँ भेल छल। विरोध तीव्रता भेलेसँ जँ काज चलितै तँ से बात नहि। एक दिसि तँ ओ लोकनि वैदिक कर्मकाण्डक विरोध केलन्हि आ दोसर दिसि एहन गहन दर्शनक प्रतिपादन केलन्हि जकरा सामान्य लोक बुझबामे असमर्थ छल। एहना स्थितिमे सामान्य लोकक हेतु सुधारक अपेक्षा छल आ बुद्धक अवतीर्ण भेनाइ ओहि अपेक्षाक पूर्ति मात्र छल। ब्राह्मण धर्मक कर्मकाण्ड आ कुरीतिसँ लोग तंग आबि चुकल छल आ एकटा निदानक खोजमे छल। विदेह आ वैशालीमे बौद्ध धर्मक पर्याप्त प्रभाव रहल हैत एकर सबसँ पैघ प्रमाण इ अछि जे मनु लिच्छविये जकाँ विदेह लोकनिकेँ **व्रात्य** कहने छथिन्ह। विदेह– भेलाह ओ जनक पिता **वैश्य** आ माता **ब्राह्मण** हेथिन्ह।

बौद्ध धर्मक प्रभाव मिथिलामे रहल होइत एकर प्रमाण जातक कथा साहित्यसँ सेहो भेटइत अछि। जातक कथामे एहि सम्बन्धमे बहुत रास प्रसंग अछि। सभ किछु होइतहुँ मिथिलापर बौद्ध धर्मक कोनो स्थायी प्रभाव नहि पड़ल कारण हम देखैत छी जे बौद्ध धर्मक तुरंत बाद ओहिठाम पुनः सनातन धर्मक तुती बाजए लगैत अछि। बुद्ध वैशालीक सब तरहे प्रशंसा केने छथि आ अशोक बौद्ध धर्मक प्रसारक हेतु किछु उठा नहि रखलन्हि मुदा तइयो मिथिलाक समस्त भूमि एकरा प्रभावमे स्थायी रूपे नहि

आबि सकल। मिथिलाक विभिन्न क्षेत्र बौद्ध धर्मक केन्द्र आ प्राचीन अवशेष अछि मुदा धर्मक प्रभाव कोनो अवशेष नहि देखबामे अवइयै। जँ बौद्ध धर्मक प्रचार–प्रसार भेलो हैत तँ मिथिलामे शूंग–कण्व कालीन शासनक समय ब्राह्मण लोकनि ओकरा नीप–पोतिके एक कऽ देने होएताह। कनिष्क बुद्धक भिक्षापात्र लेबाक हेतु वैशाली धरि आएल छलाह आ ओहियुगक गणेशक एकटा मूर्त्ति करिऔनसँ भेटल अछि जे एहि बातक प्रमाण दैत अछि जे कनिष्कक युग धरि बौद्ध धर्मक प्रभाव एम्हर घटि चुकल छल। हियुएन संग लिखैत छथि जे सातम शताब्दीमे मिथिला वैशालीक क्षेत्रमे बौद्ध धर्मक प्रभाव घटि चुकल छल। ब्राह्मण धर्म पुनः अपन प्राचीन सत्ता प्राप्तक चुकल छल। बौद्ध धर्म एहिठाम स्थानीय सम्प्रदायमे मिलिकँ लुप्त भऽ गेल छल।

मैथिल परम्परामे एकटा कथा सुरक्षित अछि जे **पम्मार**(परमार) विक्रमादित्यक राज्य मिथिला धरि छल। मिथिलामे विक्रमादित्यक एबाक कारण इ जे हरिहर क्षेत्रमे बौद्ध संघ तथा मैथिल वर्गकँ शास्त्रार्थ भेल परञ्च बौद्ध सब राजाक बलसँ मैथिलक अपमान केलन्हि। तखन सब मैथिल क्रुद्ध भए वररूचि मिश्रक पुत्र जयादित्य मिश्रकँ विक्रमादित्यक ओतए पठौलन्हि। ओतए शिप्रानदीक तटस्थ महाकाल शिवमन्दिरमे पूजाक समय भेंट भऽ गेलैन्ह– तखन दुनू गोटएक बीच श्लोक बद्ध प्रश्नोत्तर भेल–

*"के यूयं, कुत आयाता, अत्र वक्तव्यमस्तिकिम्?*
*मैथिला मिथिलातोऽत्र शकादित्येन पीड़िताः॥*
*आसजीवति कुत्रास्ति? नेपाले बौद्ध संकुले।*
*इतोभ्रष्टस्ततो भ्रष्टः सोऽचिरेणभर्विष्यति"॥*

तखन विक्रमादित्य मिथिला मण्डल आबिकँ दखल कैल आ बौद्ध लोकनिकँ पराजित केलक। हुनके वंशक राजपूत एहिठाम **गन्धवरिया** कहबैत छथि। बौद्ध धर्म एहिठाम हिन्दूधर्ममे मिझ्झर भऽ गेल आ **सनातनधर्मी** हुनका विष्णुक नवम अवतार मानि लेलथिन्ह– **गीत गोविन्द**मे लिखल अछि–

*"निन्दसि यज्ञ विधेरहह श्रुतिजातम्।*
*सदय हृदय दर्शित पशु घातम्।*
*केशवधृत बुद्ध शरीर।*
*जय जगदीश हरे"।*

मिथिला मौलिक रूपे सनातनी मानल जाइत अछि आ एहिठाम वर्णाश्रमक प्रतिष्ठा अति प्राचीन कालहि चलि आबि रहल अछि। उपनिषद युगमे एतए आत्मा आ ब्रह्मक विश्लेषण भेल–राजा जनक अपन कर्त्तव्य पथसँ जे एकटा मार्ग संकेत केलन्हि सेहो बहुत दिन धरि चलि नहि सकल आ जैन धर्म तँ सहजहि अन्हर–बिहाड़ि जकाँ आएल आ चलि गेल। ओ वसात ककरो लगलैक ककरो नहिओ लगलैक। बुद्ध मध्यम मार्गक समर्थक छलाह। हुनक कथन छलन्हि जे आत्मा निरोधक माध्यमसँ आत्माक उन्नति भऽ सकइयै। शील, समाधि आ प्रज्ञाकँ इ लोकनि उत्कृष्ट यज्ञ कहलन्हि। वैशालीमे बौद्धधर्मक प्रधानता विशेष छल आ ओतए बौद्ध लोकनिक दोसर संगीति भेल छल। ओहिमे किछु क्रांतिकारी निर्णय सेहो लेल गेल छल। महायान गीतासँ प्रभावित कहल जाइत अछि। बौद्ध धर्मक उत्थानक पाछाँ वैदिक परम्पराकँ मिथिलामे किछु चोट लगलैक। मिथिला शीघ्रहि ओहि घातक आक्रमणसँ हटिके पुनः अपना पैरपर ठाढ़ भेल।

पूर्वी भारतमे आर्य संस्कृतिक प्रथम मान्य केन्द्र रहला उत्तरो मिथिलामे धार्मिक क्षेत्रक प्रधानता छल शिव, शक्ति आ विष्णुक। त्रिपुण्ड चाननक प्रतीक इएह तीनु देवता छथि। मिथिलाक सर्वश्रेष्ठ इश्वर शिव छथि जनिका भैरव सेहो कहल जाइत छन्हि आ एहेन शायदे मिथिलामे कोनो गाम हैत जतए शिवमन्दिर अथवा भैरव मन्दिर नहि हो। एकमुख लिंगसँ चतुर्मुख लिङ्गक अवशेष मिथिलाक कोन–कोनसँ भेटल अछि। प्राचीन अभिलेखमे सेहो शिव माहेश्वरक विवरण अछि। संग्राम गुप्तक अभिलेखमे शिवक वाहन नन्दीक विवरण सेहो अछि। मिथिला कवि लोकनि सेहो शिवक महिमाक गुण–गान कएने छथि–विद्यापतिसँ चंदा झा धरि।

शक्तिक प्रधानता सेहो मिथिलामे ओतवे रहल अछि। शक्तिक संगहि संग एतए तंत्रक प्रचार सेहो विशेष रूपें भेल अछि आ मध्यकालीन मिथिलाक देवादित्य, वर्धमान, मदन उपाध्याय आदि शाक्त आ तांत्रिक छलाह। मिथिलामे नेना सभकेँ जे पहिल पाठ देल जाइत अछि ताहुसँ तंत्रक झलक भेटइयै आ अरिपन इत्यादिक आधार तँ तंत्र अछिये। मात्रिका पूजा शक्ति पूजाक प्रतीक थिक। पाग बनेबाक कला तंत्रसँ प्रभावित अछि। मिथिलाक एहेन कोनो धार्मिक अवसर नहि अछि जाहिमे शक्तिक उपासना नहि होइत हो। खोजपुरसँ एकटा दुर्गाक प्रतिमा (अभिलेख सहित) सेहो भेटल अछि। नेपालक तुलजादेवीक स्थापनाक श्रेय मैथिलेकेँ देल जाइत छन्हि।

एवँ प्रकारे मिथिलामे शिवशक्तिक प्रभाव तँ छलाहे आ अधुना अछियो। मुदा मध्ययुगमे मिथिलामे वैष्णव धर्मक प्रभाव सेहो ओतबे छल। **भागवत, हरिवंश** आ **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण**सँ मिथिलाक वैष्णव धर्म प्रभावित छल। कृष्णक प्रभाव मिथिलामे कोनो रूपे कम नहि छल। प्राक्–विद्यापति युगसँ एकर प्रभाव देखबामे अवइयै। उमापति भवानी, हरि आ शिवक उल्लेख अपन **परिजातहरण**मे केने छथि। चण्डेश्वर अपन **कृत्यरत्नाकर**मे गौरी आ शंकरीक संगहि संग मत्स्य आ कच्छप अवतारक उल्लेख सेहो केने छथि। **पूजा रत्नाकर**मे तँ शिव, विष्णु, दुर्गा आ सूर्यक पूजाक तांत्रिक विधिक वर्णन अछि। ज्योतिरीश्वर **धूर्तसमागम**मे अपना शिवक पक्षधर कहने छथि। विद्यापति सब देवी–देवतापर गीत बनौने छथि। हुनक **दुर्गाभक्ति तरंगिणी**मे दुर्गापूजाक विधि अछि, **शैव सर्वस्वसार**मे शिवक महिमा अछि, **ब्याढ़ि–भक्तितरंगिणी**मे सर्पपूजाक विधान अछि आ **वर्षकृत्य**मे वर्ष भरिक कृत्यक विवरण। जतेक साहित्यकार आ दार्शनिक मिथिलामे भेल छथि सब कोनोने कोनो रूपे शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य आदि देवी–देवताक बन्दना केने छथि तैं ककरो कोनो सम्प्रदायमे बान्हिकेँ राखब उचित नहि बुझना जाइत अछि। हरपति आगमाचार्य अपन **मंत्र प्रदीप**मे शैव–शाक्त आ वैष्णव देवी देवताक उल्लेख कएने छथि। विष्णुपुरीक **विष्णु पूजा कल्पलता** एवँ **भक्ति रत्नावली** वैष्णव धर्मक एकटा प्रधान स्तंभ थिक।

वैष्णव धर्मक प्रसार–प्रचारमे गीत गोविन्दक विशेष हाथ रहल अछि। कृष्ण अवतारक संगहि संग सर्वश्रेष्ठ देवतो मानल जाए लग लाहे। ११–१२म शताब्दीमे नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास कमलादित्य (विष्णु)क एकटा मन्दिर बनौलन्हि। प्राचीन मिथिलामे विष्णुपूजाक तिथि सेहो निश्चित् रहैत छल। विष्णुक सब अवतारक पूजा होइत छल। भगीरथपुर अभिलेखसँ ज्ञात होइछ रानी अनुमतिक आज्ञासँ माधवक मन्दिर बनाओल गेल छल। विष्णुक प्रभाव मिथिलामे कतेक छल से एहिसँ बुझल जा सकइयै जे उमापति अपन **पारिजातहरण**मे हरिसिंह देवकेँ विष्णुक दशम अवतार मनैत छथि आ विद्यापति शिवसिंहकेँ एकादशम अवतार। नरसिंह ठाकुर कृष्णक उल्लेखक संदर्भमे **वंशीवट** एवम **मुरली**क उल्लेख सेहो केने छथि। विद्यापति स्वयं भागवतसँ

अवगत छलाह। विद्यापतिक पूर्व आ विद्यापतिक बादो वैष्णव धर्म आ पदावलीक धार बहिते रहल आ एकर प्रमाण इ अछि जे विद्यापतिक बहुत दिन बादो मनबोध अपन प्रसिद्ध काव्य **"कृष्ण जन्म"** (हरिवंश)क रचना केलन्हि।

तंत्रक प्रधानता मिथिलामे प्राचीन कालसँ रहल अछि। तंत्रक माध्यमे मिथिलामे हेवनि धरि बहुतो साधक भऽ गेल छथि। तंत्रक विकासक भूमि मिथिलोकेँ मानल गेल अछि

*"गौड़े प्रकाशिता विद्या मैथिलैः प्रबलीकृता।*
*क्वचित् क्वचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरं प्रलयं गताः"॥*

बंगालमे उत्पन्न भेलोत्तर तंत्र मिथिलेमे आबिकेँ दृढ़ भेल। नवन्यायक जन्मदाता गंगेशक सम्बन्धमे किंवदंती अछि जे ओ कालीक साधना कऽ कए ओतेक पैघ विद्वान भेल छलाह। तंत्रपर मिथिलामे बहुत रास पोथी सेहो लिखल गेल अछि। देवनाथ ठाकुरक **तंत्र कौमुदी** एहि दृष्टिकोणे बड़ड महत्वपूर्ण अछि। हुनक दोसर पोथीक नाम अछि **मंत्र कौमुदी** आ इ दुनू पुस्तक तांत्रिक विधिमे ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। नरसिंहक लिखल **ताराभुक्ति सुधार्णव** सेहो महत्वपूर्ण पोथी मानल गेल अछि। एहिमे केवल तारेक नहि अपितु समस्त शक्तिक पूजा विधि अछि आ एकर ग्यारहम अध्यायमे **काली भक्ति सुधार्णव** सेहो अछि। ताराक संग कालीकेँ अनबाक औचित्यपर विचार करैत लिखल गेल अछि।-

*"यथा काली तथा तारा या तारा कालिकैव सा।*
*उभयोर्नहि भेदोऽस्ति।*
*इति गन्धर्वतंत्र वचनात् काली विधिरपि निरूप्यते"॥*

हरिपति आगमाचार्य **मंत्र प्रदीप**क रचना केलन्हि। कुमार गदाधर **शारदा तिलक**पर टीका लिखलन्हि आ ओहि ग्रंथक नाम रखलैन्ह **तंत्र प्रदीप**। वामाचार आ कुलाचारक दृष्टिये **साधक मण्डन** आ **भवानी भक्ति मोदिका** महत्वपूर्ण पोथी मानल जाइत अछि। कहल गेल अछि जे कलियुगक तंत्रे प्रधान अछि आ शूद्र–शोलकन्हिमे एकर विशेष प्रचलन रहत। निम्नलिखित श्लोकसँ एकर स्वरूप बुझबामे आओत–

*"यद्यप्येते प्रयोगाः कालीं तारां वाधिकृत्य प्रोक्तः तमागम।*
*यथा काली तथा नीला यथा नीला तथोन्मुखौ॥*
*यथोन्मुखी तथा दुर्गा नाम्ना भेदोऽस्ति कुत्रचित्॥*
*प्रणम्य पार्वतीनाथं स्वगुरूंच विनायकम्*
*ईशान्नाथः करोत्येनां भवानी भक्ति मोदकाम्।*
*कुलर्णिवे*
*सर्वेभ्यश्चोत्तमा वेदा वेदोभ्यो वैष्णवं परम्।*
*वैष्णवादुतमं कौलं कौलइत् परतरं नहि॥*
*कौलं कुलधर्म प्रतिपादकं शास्त्रं भवानी भक्ति युक्तमित्यर्थः।*
*विहाय सर्वधर्मांश्च नानागुरू मतातिच।*
*जपार्चामेव जानीयान्नान्य चिंता विधीयते"॥*

घनानंद दास नामक एकटा मैथिल कर्ण कायस्थ प्रख्यात तांत्रिक मिथिलामे भऽ गेल छथि।

सूर्यपूजाक विधान सेहो मिथिलामे छल आ एकर प्रचार सेहो। गुप्त युगक बादसँ सूर्यपूजाक प्रधानता मिथिलामे बढ़ल छल आ मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रसँ सूर्य मूर्त्तिक भग्नावशेष सभ भेटल अछि जाहिमे बरौनीसँ प्राप्त एकटा मूर्त्ति अखनो बेगूसरायक संग्रहालयमे राखल अछि। कलात्मक आ धार्मिक दुनू दृष्टिकोणसँ इ मूर्त्ति महत्वपूर्ण अछि। एकर अतिरिक्त सबसँ महत्वपूर्ण वस्तु इ जे ओइनवार शासक नरसिंह देव सहरसा जिलाक कन्दाहा गाममे एकटा सूर्यक मन्दिर बनबौलन्हि जे अहुखन विराजमान अछि आ जाहिपर एकटा अभिलेख सेहो अछि। भवादित्यक मन्दिरक नामे अखनो ओ मन्दिर ओतए प्रसिद्ध अछि। मिथिलाक चारूकातसँ प्राप्त अभिलेख मिथिलाक धार्मिक एवँ सामाजिक आर्थिक जीवनपर पूर्ण प्रकाश दैत अछि आ ओहिसँ इहो बुझना जाइत अछि जे हिन्दू धर्मक विभिन्न सम्प्रदायक मान्यता एहि क्षेत्रमे छल। पालशासक लोकनि कक्ष विषय (कौशिकी कक्ष)मे शिवमन्दिरक निर्माण हेतु दान देने छलाह। एहि सभसँ स्पष्ट होइछ जे कोनो विशेष संप्रदायक प्रति आकृष्ट नहि भऽ एहिठामक लोग सभ देवी देवताक अर्चना करैत छलाह आ धार्मिक दृष्टिकोणमे ओहि अर्थे उदार छलाह।

**महिषीक महत्व:-** तांत्रिक दृष्टिकोणसँ मिथिलामे महिषीक उल्लेख करब आवश्यक भऽ जाइत अछि। गामसँ बाहर आग्नेय कोणमे पश्चिमाभिमुख एकटा मन्दिर अछि। ताहि मध्य एकटा नील सरस्वती अक्षोभ्य ऋषि सहित तारामूर्ति विराजित छथि। एहिठाम दूर–दूरसँ लोक अनुष्ठानार्थ अबैत छथि। नवरात्रमे विशेष उत्सव होइछ। ओहिठाम **तारा, नील सरस्वती, एकजला, लक्ष्मीनारायण, त्रिपुरसुन्दरी, सीतला, तारानाथ** आदि देवी–देवताक मूर्त्ति अछि आ ६टा कुंड सेहो जकर नाम क्रमशः अछि– **ताराकुंड, ताराकंचुकीकुण्ड, वशिष्ठकुण्ड, गौतमकुण्ड, अक्षोभ्यकुण्ड,** आ **मानसरोवरकुण्ड**। एहि सभ कुण्डक वर्णन चीनाचार तंत्रमे पाओल जाइत अछि

*"वशिष्ठकुण्डं पापघ्नं, कुण्डं च गौतमाभिधां*
*अक्षोभ्यकुण्डं सफलं, चैतज्जाभ्य दिशिस्मित।*
*तत समीपे महेशाजि सरोमानससंज्ञकम्*
*माहिष्मत्याश्रमहात्मश्रृणु साध्वि बरानने।*
*वशिष्ठं समानिता तारणी चीन देशतः*
*नारिभ्येन जटाशक्ति तथा नील सरस्वती*
*अक्षोभ्य गरूणायुक्ता स्थापिता यत्रसुन्दरी"॥*

कहल जाइत अछि जे **चीनाचार तंत्र** नामक पोथी दरभंगा राजक पुस्तकालयमे अछि।

मैथिली परम्पराक अनुसार दक्ष एकटा यज्ञक आयोजन केलन्हि जाहिमे ओ ने शिव आ ने पार्वतीकेँ आमंत्रित केलन्हि। ओतए सती पार्वती अपन बापक ओत यज्ञक कथा सुनि पहुँचलीह आ ओतए अपन पतिक अपमान देखि यज्ञ कुण्डमे कुदि पड़लीह। शिवकेँ जखन एहि बातक भान भेलन्हि तँ ओ ओतए पहुँचलाह आ सतीक शरीरकेँ अपना कन्हापर उठौलन्हि। शिवकेँ एहेन तमतमाएल देखि विष्णुक चिंतित हैव स्वाभाविके छल आ तैं ओ अपन चक्र घुमौलन्हि जाहिसँ सतीक देह कटि–कटिकेँ ठाम–ठाम खसए लागल। सतीक **आँखि** महिषीमे खसल आ तहियेसँ महिषी तंत्रक एकटा प्रधान केन्द्र बनि गेल।

एकटा दोसर परम्पराक अनुसार अति प्राचीन कालमे महिषीमे असूर लोकनिक अड्डा छल आ ओकरे नियंत्रित करबाक हेतु वशिष्ठ चीनसँ शक्तिकेँ अनने छलाह। महिषीकेँ महिषासुरक राजधानी सेहो कहल गेल अछि। सभ ठामक आ सभ तरहक तांत्रिक लोकनिक जमघट एहिठाम प्राचीन कालहिसँ होइत अछि। महिषीक नील सरस्वतीकेँ तांत्रिक लोकनि महानील सरस्वती मनैत छथि जकर अप्रत्यक्ष उल्लेख हमरा लोकनिकेँ पाल अभिलेखमे **"उरूनील पद्मा"**क रूपमे भेटइत अछि। महिषीकेँ सिद्धपीठ सेहो मानल गेल छैक-

"*कमला विमला चैव तथा माहिष्मतीपुरी*
*वाराही त्रिपुरा चैव वाग्मती नील वाहिनी*'।

**मिथिला महात्म्य** आ **शक्तिपीठ**मे सेहो एकर विवरण भेटइत अछि। ओहि क्षेत्रमे वाणेश्वर महादेव सेहो अछि जकर स्थापनाक श्रेय वाणासूरकेँ देल जाइत छैक। तारा, भवादित्य आ वाणेश्वर महिषीक त्रिकोण तंत्र थिक जाहिसँ महिषीक तांत्रिक केन्द्र होएबाक प्रमाण पुष्ट होइत अछि।

एकटा लोकगीत अछि-

*"भवा भवादित्य देवना महेश*
*बनगाँ दुर्गा मिटे कलेश*
*बोलोरे मधुरी वाणी दुर्गा" ।*

महिषीसँ थोड़ेक दूरपर मधेपुरामे प्रसिद्ध सिंहेश्वरक मन्दिर सेहो अछि। महिषीमे मण्डन–शंकराचार्य विवाद भेल छल।

ताँत्रिक केन्द्रक हिसाबे मिथिलामे कात्यायनी स्थान आ जयमंगलागढ़क सेहो बड़ड महत्व अछि। प्राचीनकालमे संभवतः जयमंगला गढ़ तांत्रिक बौद्धक केन्द्र रहल होएत। जयमंगला गढ़क उल्लेख मैथिली परम्परामे सेहो अछि आ पुरातात्विक दृष्टिकोणसँ तँ ओ पुराण स्थान अछिये। मिथिलामे तंत्रक प्रचारक जे रूप रहल हो से अलग बात मुदा एतवा धरि निश्चित अछि जे एहिठाम आदि कालहिसँ शक्ति पूजाक बड़ड महत्व रहल अछि आ अहुखन मिथिलामे घरे–घर गोसाउनिक पूजा होइते अछि। मैथिल तांत्रिक विशेष कए वामाचारक पक्षधर होइत छलाह। मिथिलामे कौल आ दशमहाविद्याक प्राधान्य छल। काली, तारा, भुवनेश्वरी, दुर्गा, पार्वती, आदिशक्तिकेँ विशेष महत्व देल जाइत छल। मिथिलाक तांत्रिकमे वामाचार आ दक्षिणाचार दुनू पाओल जाइत छथि। तंत्रक फलहि एहिठाम अभिचारकर्मक प्रारंभ भेल। लक्ष्मीधर ६४तंत्रक नाम गिनौने छथि। शूद्र आ मिश्रित जातिक लोगक हेतु वामाचारमे विशेष स्थान छल। ओना तंत्रक साधनामे जाति–पातिक कोनो विशेष महत्व नहि छल। तंत्र मिथिलाक धार्मिक जीवनक एकटा मुख्य अंग छल आ अध्ययन–अध्यापनक अतिरिक्त मिथिलामे एकर साधना सेहो कैल जाइत छल। दक्षिणाचार प्रतिष्ठित बुझल जाइत छल। कहल जाइत अछि जे तंत्र लऽ कए मिथिला आ चीनक सम्पर्क भेल छलैक। मिथिलामे अहुखन नवरात्रक विशेष महत्व अछि आ अहुँसँ एकर तंत्रसँ प्रभावित हैव सिद्ध होइत अछि।

दार्शनिक पृष्ठभूमिमे मिथिलामे जे धार्मिक विकास भेल ताहि फले मिथिलामे कर्मकाण्डक अभिवृद्धि भेल आ इ मिथिलाक साँस्कृतिक जीवनक एकटा प्रधान अंग बनि गेल। कर्मकाण्डक विकास एहिठाम प्राचीन कालमे भेल आ एखनो हमरा

लोकनिक जीवन एवँ संसारपर एकर प्रभाव देखबामे अवैत अछि। वर्णाश्रमक विकासक संगहि संग कर्मकाण्डो अपना लोकनिक जीवन संस्कारक एक प्रमुख अंग बनि गेल अछि। कर्मकाण्डपर अनेकानेक ग्रंथ मिथिलामे लिखल गेल अछि आ कर्णाट कालमे वीरेश्वर, गणेश्वर आ रामदत्त एहिपर कतेको पोथी लिखने छथि। चण्डेश्वरक **'गृहस्थरत्नाकर'** आ **'कृत्यरत्नाकर'** तथा **'पूजारत्नाकर'** एहि दृष्टिकोणसँ बड़ड महत्वपूर्ण अछि। मिथिलाक मुख्य संस्कार जे सभ वर्णमे देखल जाइत अछि से भेल नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन आ विवाह। इ सभ कार्य मिथिलामे अपना पद्धतिक अनुसार होइत छल। प्राचीन मिथिलामे जैमिनीय कर्म मीमाँसा समादृत छल आ एखनो एकरे प्रधानता अछि। कर्मकाण्डक पुष्टिकरणक हेतु तँ महाराज भैरवसिंहक शासन कालमे जरहटिया गाममे १४००मीमाँसक एक महान सम्मेलन भेल छल। जरहटियामे सभसँ पैघ पोखरि अछि जकर यज्ञ बड़ड उत्साहसँ भेल छल जाहिमे देश देशांतरक राजा आ विद्वानकेँ बजाओल गेल छल। लंकाक राजाकेँ आमंत्रित करबाक हेतु चौहान संग्राम सिंह आ केसरी सिंहकेँ पठाओल गेल छलन्हि।

मैथिल लोकनि श्रौत, स्मार्त आ आगम तीनू कर्मकाण्डक अनुष्ठानक विधि लिखने छथि। एहि दृष्टिकोणसँ गोकुल उपाध्यायक **कुण्डकादम्बरी** महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। एकर अतिरिक्त संध्या तर्पण आ एकोदिष्टसँ पार्वनक नियम सेहो मैथिल लोकनिक ओतए प्रचलित अछि। मैथिल श्रीदत्तक **'आह्निक'**क प्रचलन एखनहुँ देखबामे अबैछ। विद्यापतिक **'वर्षकृत्य'** सेहो एहि दृष्टिकोणसँ महत्वपूर्ण अछि। कर्मकाण्डपर अनेकानेक ग्रंथक प्रणयन भेल छल जाहिमे **देशकर्म पद्धतिक** बड़ड नाम छल। पूर्व–मीमाँसक लोकनिक ध्यान सेहो एहि दिशि गेल छलन्हि। श्राद्ध कर्मपर सेहो अनेकानेक ग्रंथक रचना भेल।

शिव शक्ति आ विष्णु पूजाक विधानपर सेहो पोथी लिखल गेल। नारायण पालक अभिलेखसँ ज्ञात होइछ जे कौशिकी कक्ष क्षेत्रमे एक हजार शिव मन्दिर बनल छल। मिथिलामे **त्रिमूर्त्ति (ब्रह्मा–विष्णु–महेश)**क कल्पना बड़ड पुरान रहल अछि। मुदा व्यवहारमे देखबामे इएह–अवैत अछि जे मिथिलामे शिव आ शक्तिक जनप्रियता विशेष रहल अछि। तंत्रक प्रधानता ताहु दिनमे छल आ एखनो अछि। तांत्रिक केन्द्र होएबाक कारणे मिथिलाक प्रसिद्धि विशेष छल आ बाहरोसँ लोक एहिठाम अबैत जाइत छलाह। शक्ति पूजाक विराट रूप अखनहुँ मिथिलामे देखल जाइत अछि। नवरात्रक महत्व अखनो एतए बड़ड अछि। तंत्रक प्रभाव तँ एहिठामक वेश भूषा आ साधारण जीवनमे अखनो देखबामे अवइयै जेना अइपन, साँवर पूजा, पाग, त्रिपुण्ड इत्यादि। मातृकापूजाक प्रथा प्राचीन कालसँ अद्यावधि विराजमान अछि। **वर्णरत्नाकर**मे विभिन्न प्रकारक सम्प्रदायक उल्लेख अछि आ ओहिसँ इहो ज्ञात होइछ जे एहिठाम नाथ पंथ आ अन्यान्य मतक विकास सेहो भेल छल। धर्मस्थान आ सिद्ध लोकनिक वर्णन सेहो ओहि पोथीमे अछि। ज्योतिरीश्वर **'बौद्ध पक्ष'**क व्यवहार केने छथि आ ओहि संगे उदयनक उल्लेख सेहो।

पावनितिहारक उल्लेख हमरा लोकनिकेँ चण्डेश्वरक **कृत्यरत्नाकर**सँ भेटइत अछि। फागुन मासमे होलीक उल्लेख भेल अछि। प्रत्येक मासमे कोनो ने कोनो उत्सव होइते छल। प्रत्येक पूजाक अवसरपर यज्ञ आओर दानक व्यवस्था छल। स्कंद पूजा दीपजराकेँ होइत छल। कार्तिकेयक व्रतक बड़ड महत्व छल। हिन्दोल चैत्र, मदन द्वादशी, वसंतोत्सव, अक्षयतृतिया, गौरीव्रत, गंगा दशहरा, मत्स्य–द्वादशी, दुर्गाक रथयात्रा, पितृपक्ष, नवरात्र, देवोत्थान एकादशी, कोजागरा, शिव चतुर्दशी, आदि

पावनिक नाम चण्डेश्वर लिखने छथि। मिथिलामे बिहुला पूजा, इन्द्रपूजा, कृष्णाष्टमी, गणेश चतुर्थी, जीतिया, धन्वन्तरी पूजा, दीपावली, सामाचकेबा, मधुश्रावणी, नेवान्न आदिक विधान सेहो बनल अछि। हरिहर क्षेत्रक स्थान सेहो प्राचीन कालहिसँ प्रसिद्ध रहल अछि।

मिथिलामे मुसलमानक एलाक बाद दुनू संप्रदायक बीच क्रमेण समन्वय स्थापित भेल आ मिथिला क्षेत्र सूफी लोकनिकेँ विशेष रूपें आकृष्ट केलक। ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिमे जे अरबी–फारसी शब्द भेटइयै ताहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे मिथिलामे मुसलमानक सम्पर्क पूर्वहिसँ रहल होइत। इस्लामी संस्कृतिक प्रभाव मिथिलाक धर्म आ संस्कृतिपर पड़ल होएत एहिमे कोनो सन्देह नहि। सत्यनारायण पूजा एकर एकटा प्रमाण देल जा सकइयै। मिथिलाक मुसलमानोपर एहिठामक संस्कृतिक प्रभाव पड़ल। तजिया दाहामे मैथिल लोकनि सेहो सक्रिय भाग लैत छथि। अकबरक चलाओल फसली संवतक व्यवहार मिथिलामे विशेष अछि। मैथिलीरागमे इमान आ फिरदौस मुसलमानी संपर्कक देन थिक। मुसलमान लोकनि मिथिलामे रहि मैथिल संस्कृतिसँ प्रभावित भेलाह आ सूफीक अप्रत्यक्ष प्रभाव तँ मिथिलाक भक्ति भावनापर देखले जा सकइयै। लोरिक कथापर आधारित दाउद अपन प्रेमकाव्य चन्दायन लिखने छथि। एवँ प्रकारे साँस्कृतिक समन्वय दुनू संस्कृतिमे भेल। अंग्रेजक आवागमनसँ अहुस्थितिमे परिवर्त्तन भेल मुदा मिथिलाक कट्टरता मिथिलामे इसाई धर्मक दालिकेँ गले नहि देलकन्हि। ओना ठाम–ठाम गिरिजाघर फूजल मुदा ताहिसँ कोनो प्रभाव मिथिलाक जनजीवनपर नहि पड़ल। धर्ममे एहिठाम अखनो कर्मकाण्डी लोकनिक संख्या विशेष अछि आ कट्टर मैथिल अखनो सहजहि अपन अधिकार छोड़बा लेल प्रस्तुत नहि होइत छथि। ओ क्रियाकर्मकेँ विशेष महत्व दैत छथि आ अपन पद्धतिक अनुसार सभ काज करबाक पक्षपाती होइत छथि।

**दर्शन:-** मिथिला प्राचीन कालहिसँ दर्शनक एकटा प्रधान केन्द्र रहल अछि। ब्रह्मविद्याक जन्मदाता जनक जाहि दर्शनक श्रीगणेश केलन्हि तकर अभिवृद्धि दिनानुदिन होइत गेल आ मिथिला अपन न्याय आ दर्शनक हेतु जगत्प्रसिद्ध भऽ गेल। **"ततत्वंअसि"**क मूलमंत्र हमरे लोकनि देने छी जकर विश्लेषण बादक प्रकाण्ड पण्डित लोकनि विभिन्न रूपे कएने छथि। माया, कर्म, मुक्ति, आत्मा सभहिक विश्लेषण राजा जनकक ओहिठाम भेल छल। धर्म मनुष्यक आन्तरिक सुखानुभूतिक वस्तु थिक–एहु सिद्धांतक विवेचन मिथिलेमे भेल अछि आ **शतपथ ब्राह्मण**मे कहल गेल अछि– **"मनश्चहं वैवाकच भुजो देवभ्यो यज्ञः वहतः"–** स्मरण रखबाक वस्तु इ अछि जे प्राचीन परम्पराक अवहेलना राजा जनक यज्ञ करबाक अधिकारक घोषणासँ कैलन्हि आ यज्ञ सेहो बिना पुरोहित वर्गक हस्तक्षेपकेँ। ओहि युगक हिसाबे इ एक महान क्रांतिकारी बात छल जकर नेतृत्व कए जनक पूर्वी भारतमे एकटा नव कीर्त्तिमानक स्थापना केलन्हि आ भविष्यक हेतु मार्गदर्शन सेहो। जखन ओ इ काज सफलता पूर्वक कऽ लेलन्हि तखन हुनक अभिलाषा तँ पूर्ण भेवे केलन्हि मुदा एकरा संगहि संग इहो मान्य भेल जे कर्मक माध्यमसँ सभ केओ सभ किछु भऽ सकइयै। उपनिषद साहित्य मिथिलाक एहि गुण गौरवसँ भरल–पुरल अछि। जनकक एहि प्रतिज्ञासँ मिथिलामे एक नूतन युगक आविर्भाव भेल।

आत्माक तत्वज्ञक हेतु संसारमे कोनो बाधा नहि रहि जाइत छैक। एहि सत्यक विवेचन मिथिलहिमे भेल अछि– **"तरति शोकं आत्मवित्"–** आओर एकरहि संगहि संग

इहो कहल गेल अछि जे **"ब्रह्मविद् बहमैव भवति"**। ब्रह्मक जननिहारे ब्राह्मण कहबैत अछि। **बृहदारण्यक उपनिषद**मे एहि सभ बातक स्पष्टीकरण भेल अछि। राजा जनकक ओहिठाम दूर–दूरसँ दार्शनिक लोकनि अवैत छलाह आ तेँ मिथिलाकेँ दार्शनिकक भूमिए कहल गेल अछि। साँस्कृतिक दृष्टिकोणसँ तेँ ओहुना उपनिषद युग भारतीय संस्कृतिक चरमोत्कर्ष मानल गेल अछि। मिथिलामे प्रारंभहिसँ छात्र लोकनिकेँ दार्शनिक शिक्षा देल जाइत छलन्हि आ एहि प्रकारे दार्शनिक शिक्षाक पृष्ठभूमि बनाओल जाइत छल। एहिठाम कुरू–पाँचाल धरिसँ लोग दार्शनिक शिक्षा लेबए अबैत छलाह। जनक स्वयं अपने पैघ–पैघ विद्वानसँ शिक्षा प्राप्त केने छलाह। हुनका दरबारमे पैघ–पैघ विद्वान सेहो रहैत छलथिन्ह। ओ अश्वमेध यज्ञ सेहो केने छलाह।

**ब्रह्मवैवर्त्त**मे कहल गेल अछि जे निमी आ हुनक उत्तराधिकारी जनक वैदेह आयुर्वेदपर सेहो लिखने छलाह। एहि युगमे गौतम आ कपिल आयुर्वेद शास्त्रपर सेहो लिखने छलाह। चक्रपाणि **शुश्रुत**क टीकामे कपिलक उल्लेख केने छथि। व्यास **निदान ग्रंथ**क टीकामे गौतमक उल्लेख केने छथि। मिथिला गयायुर्वेद (गाय बड़दक आयुर्वेद)पर सेहो एकटा ग्रंथ एहियुगमे लिखल गेल छल मुदा ओकर कोनो प्रमाण अखन नहि भेट रहल अछि। शुश्रुत अपन पोथी **उत्तरतंत्र**मे विदेह राज्यक वर्णन कएने छथि– **"शाकल्य शास्त्राभिहिता विदेहाधिप कीर्तितः"**। न्यायशास्त्रक प्रणेता महर्षि गौतम मैथिल छलाह। गौतमक अक्षपादक उल्लेख चीनी यात्रीक विवरणमे सेहो भेटइत अछि। राहुलजीक अनुसार अक्षपाद, वात्सायन आ उद्योतकर मैथिल छलाह। याज्ञवल्क्यक जीवन चरित्र तेँ सहजहि मिथिलाक साँस्कृतिक इतिहासक जीवन चरित्र थीक। केओ केओ हुनका योगदर्शनक अगुआ सेहो मनैत अछि। **"योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं संपूज्य मुनयोऽब्रुवन्"**। याज्ञवल्क्यक सामाजिक ओ सांस्कृतिक विचार उदार छल। गौतम, कपिल, ऋषि श्रृंग्य (मधेपुराक स्थित श्रृंगेश्वरक संस्थापक), विभाण्डक, सतानन्द, वेदवती आदि विद्वान–विदुषी मिथिलाक गौरवकेँ उठौने छथि।

सामान्यतया दर्शनक संख्या ६ मानल गेल अछि। नास्तिक दर्शन विश्वक प्रत्यक्ष रूपकेँ निरूपण केनिहार शास्त्र थिक। नाम, रूप, कर्मवाला पदार्थक (प्रत्यक्ष जगतक) नास्तिक दर्शन जतेक गंभीरतापूर्वक विचार केलक अछि ततेक आस्तिक दर्शन दृश्य जगतपर नहि। एहि तथ्यकेँ दृष्टिमे राखि नास्तिक दर्शनक अवहेलना नहि कैल जा सकइयै। ओकर ज्ञान राखब आवश्यक। वेदांत निर्गुण आत्मा मानैत अछि। जैन दर्शनक मुक्तिक तीन प्रधान मार्ग अछि– **सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान** आ **सम्यग् चरित्र**। वैशेषिकक उद्देश्य प्रधान तथा विश्व थिक। वैशेषिक दर्शन ईश्वरक द्वारा साक्षात सृष्टिक उद्भव नहि मानि ईश्वरक इच्छासँ सृष्टिक प्रवृत्ति मानैत अछि। अणुवाद एहि तंत्रक प्रिय धरातल थिक। महामुनि कपिल वैशेषिक तंत्र संमत परमाणुवादसँ संतुष्ट नहि छलाह। वैशेषिक दर्शनक प्रधान लक्ष्य अधिभूत प्रपंच थिक– द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय– जकर आधिभौतिक जगतसँ सम्बन्ध मानल गेल अछि। साँख्य एहि सभसँ अतिरिक्त एक पुरूष सत्ता आर मनलक अछि। कपिलक दर्शन साँख्य नामे विख्यात अछि। साँख्यतंत्र प्रकृतिकेँ जगतक कारण मनलक अछि। प्रकृति जगतक कर्त्री थिकीह।

*"प्रकृतिः कर्त्री, पुरूषस्तु पुष्करपलाशवत् निर्लेपः किंतु चेतनः"।*

वैशेषिक परमाणुसँ विश्वक उत्पत्ति मानैत अछि। इ दर्शन स्थूल शरीर सम्बन्धी भूतक व्याजसँ सांसारिक पदार्थक साधर्म्य एवँ वैधर्म्यक निरूपण केलक

अछि। नास्तिक दर्शनकैं शास्त्रार्थ द्वारा परास्त करबाक उद्देश्यसँ तर्कशास्त्रक निर्माण भेल।

विदेहक राज्य सभामे एवँ याज्ञवल्क्यक सभापतित्वमे ब्राह्मण ग्रंथक निर्माणेटा नहि भेल अपितु गूढ़ धर्मतत्वक निर्णय सेहो। कर्मक अनुष्ठान करबामे कृष्ण विदेह राज जनककैं सर्वश्रेष्ठ मनने छलाह आ ओकरे आदर्श मनैत छलाह। न्यायशास्त्रक उद्गम स्थल मिथिले अछि। गौतम एवँ कणाद मैथिल छलाह। भारतीय गूढ़ दर्शनक तत्वक विवेचना मिथिलामे प्रारंभ भेल छल आ ओहि परम्पराकैं बादमे मण्डन, वाचस्पति, मदन, उदयनाचार्य, गंगेश, पक्षधर, आ शंकर मिश्र बढ़ौलन्हि। मिथिलामे पूर्व मीमाँसा आ वेदांत (उत्तर मीमाँसा)क पूर्ण रूपेण विकास भेल छल। कर्मकाण्ड (पूर्व मीमाँसा) आ ज्ञान काण्ड (उत्तर मीमाँसा)पर एहि ठाम विशद् विश्लेषण कैल गेल। वेदांतक माध्यमसँ ब्रह्म–जिज्ञासापर जोर देल गेल अछि। वेदांत उपनिषद्, गीता आ वादरायणक ब्रह्मसूत्रपर आधारित अछि। वेदांतक विश्लेषण बादमे बहुतो गोटए अपना–अपना ढ़ँगे केने छथि। न्याय आ मीमाँसाकैं मिथिलाक अपूर्व देन मानल जाइत अछि। गौतमसँ गंगेश धरि दर्शनक इतिहास मिथिलाक एकटा स्वर्णिम पृष्ठ मानल गेल अछि। मीमाँसाकैं प्रखर केनिहार छलाह कुमारिल, प्रभाकर आ मुरारी।

मिथिलाक दर्शनक इतिहासमे कुमारिल आ शंकरक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल गेल अछि। **ब्रह्मसूत्र**पर टीका लिखि शंकर वेदांतकैं आर जगजिआर केलन्हि। कुमारिल जैमिनीक मीमाँसा सूत्रक आलोचना केने छथि। हुनका भट्टक पदवी छलन्हि आ तै हुनक मतकैं भट्टमत सेहो कहल जाइत छन्हि। मैथिल लोकनि हिनका मिथिलाकैं मनैत छथि आ आनन्दगिरी **शंकर दिग्विजय**मे मण्डन मिश्रकैं कुमारिलक भगिनीपति कहने छथि। भट्टपुराक निवासी कुमारिलकैं मानल गेल अछि आ हुनका मतकैं भट्टमत कहल गेल अछि। बौद्ध दार्शनिक धर्मकीर्तिसँ सेहो हुनका वाद–विवाद भेल छलन्हि। हिनक प्रसिद्ध पुस्तक अछि **श्लोक वार्त्तिक, तंत्रवार्त्तिक, वृहत् टीका, मध्यम टीका** इत्यादि। **तंत्र वार्त्तिक** शबर भाष्यपर टीका थिक। **श्लोकवार्त्तिक**पर बहुत रास मैथिल विद्वान सभ टीका लिखने छथि। भट्टमतक संस्थापकक रूपैं ओ मिथिलामे प्रख्यात छथि।

पूर्व मीमाँसा आ वेदांतक क्षेत्रमे मिथिलाक इतिहासमे मण्डन मिश्रक नाम अग्रगण्य अछि। एक परम्पराक अनुसार वाद विवादमे मण्डन शंकराचार्य द्वारा पराजित भेलाह आ शंकराचार्यक मत ग्रहण केलाक बाद ओ सुरेश्वराचार्यक नामे प्रसिद्ध भेलाह। अपन रचनासँ ओ बौद्ध दार्शनिक लोकनिकैं धतौलन्हि। मण्डन–सुरेश्वराचार्यक मिलौनाइ विद्वानकैं ग्राह्य नहि छन्हि। मैथिल परम्पराक अनुसार मण्डन महिषीक रहनिहार छलाह आ शंकर जखन वाद–विवादक हेतु आएल छलाह तखन ओ काफी बृद्ध भऽ गेल छलाह। ओ कुमारिलक बहनोइ छलाह आ हुनक पत्नी भारती अद्वितीय विदुषी छलथिन्ह। मण्डन भट्टमतक विशेषज्ञ आ व्याख्याता छला आ कुमारिलक तंत्रवार्त्तिकपर टीका लिखने छलाह। मण्डनक प्रसिद्ध पुस्तक अछि **विधि विवेक, भावना विवेक, विभ्रम विवेक** इत्यादि। अपन रचनाक आधारपर ओ अद्वैतक प्रवर्त्तक कहल जा सकैत छथि। हुनक अद्वितीय विद्याक हेतु शंकरकैं एतए आबए पड़ल छलन्हि आ दुनूक बीच जे वार्त्तालाप भेल छल ताहिमे भारती सभापतित्व केने छलीह। मण्डनक **ब्रह्मसिद्धि** प्राक्–शंकर वेदांतक प्रसिद्ध ग्रंथ मानल गेल अछि। **"स्वतः प्रमाण"** (मीमाँसा वेदांत) आ **"परतः प्रमाण"** (न्यायादि) शब्द हुनक दार्शनिक ज्ञानक परिचय दैत अछि। **'ब्रह्मसिद्धि'**क **"ब्रह्मतत्व समीक्षा"**क अंशपर वाचस्पति टीका लिखने छलाह।

मीमाँसाक क्षेत्रमे गुरूमतक प्रवर्त्तक प्रभाकर मिश्रक उल्लेख करब आवश्यक बुझना जाइत अछि। एहिमतकेँ **प्रभाकर स्कूल** सेहो कहल जाइत अछि। मीमाँसाक लोकनि हिनका गुरूक पदवी देने छथिन्ह। इ मण्डन मिश्रक सहपाठी छलाह। शबर भाष्य हिनको एकटा टीका छन्हि–**'बृहतिः'**। प्रभाकरक मतकेँ **गुरूमत**, कुमारिलक मतकेँ **भट्टमत** आ मुरारि मिश्रक मतकेँ **मिश्रमत** कहल जाइत छैक। मुरारिक पथ हिनका दुनूसँ भिन्न छल। मुरारिक पथ **'तृतीय पथ'** कहल गेल छैक।

वाचस्पति मिश्रक नाम मिथिलाक दर्शनक इतिहासमे अद्वितीय अछि। ओ पूर्वी मिथिलाक निवासी छलाह आ ओम्हुरके राजाक दरबारमे रहैत छलाह। राहुलजीक अनुसारे वाचस्पतिक प्रसादे मिथिलाक दार्शनिक ज्ञान बाँचल, बढ़ल आ बौद्ध दार्शनिकक आक्रमणसँ बचि सकल। बौद्ध दर्शनक खण्डन कए ओ आदर्शवादी दर्शनक रक्षा केलन्हि। उद्योतकरक **न्यायवार्त्तिक**पर हुनक टीका प्रसिद्ध अछि। वाचस्पतिकेँ **षडदर्शनवल्लभ, सर्वतंत्र स्वतंत्र** आ **द्वादश दर्शन टीकाकार**क संज्ञा भेटल छलन्हि। हुनका **तात्पर्चाचार्य**क पदवी सेहो छलन्हि। शंकर भाष्य ब्रह्मसूत्र ओ जे अपन टीका लिखने छलाह तकर नाम छल **भामती** (अपन पत्नीक नामपर) जकर विशद विश्लेषण अखनो अपेक्षिते अछि। वेदांत साहित्यमे भामतीक स्थान अद्वितीय अछि आ ओहिमे ओ बौद्ध सिद्धांत **'प्रतीत्य समुत्पाद'**क उल्लेख सेहो केने छथि। **तात्पर्य टीका**मे ओ दिङ्नागक उक्ति देने छथि। षडदर्शनक सभ अंशपर ओ अपन विवेचन उपस्थित केने छथि आ ईश्वर कृष्णक **साँख्यकारिका**पर हुनक टीका **साँखतत्व कौमुदी** साँख्य साहित्यमे अद्वितीय स्थान रखैत अछि। मण्डन मिश्रक विधि विवेक आ **'ब्रह्मसिद्धि'**पर ओ क्रमशः **न्यायकणिका** एवँ **तत्वसमीक्षा, तत्वबिन्दू** नामक टीका लिखलन्हि। अपना युगमे ओ समस्त उत्तर भारतमे वेदांतपर एक मात्र अधिकारी विद्वान मानल जाइत छलाहे। **न्यायकणिका** न्यायक अपूर्व पुस्तक मानल गेल अछि। दर्शनक क्षेत्रमे हुनका सर्वज्ञ मानल गेल अछि। **दृष्टिश्रृष्टिवाद** एवँ **जीवश्रृष्टि अविद्यापक्ष**क हुनका संस्थापक मानल गेल अछि। योगदर्शनक टीका रूपे ओ **तत्ववैशारदी** लिखलन्हि। एहिसँ इ प्रत्यक्ष भऽ जाइछ जे दर्शनक एहेन कोनो शाखा नहि छल जाहिपर ओ नहि लिखने होथि। हिनकहि प्रयाससँ समस्त न्यायशास्त्रपर मिथिलाक एकाधिपत्य भेल। इ बौद्ध दार्शनिक वसुबन्धुक उल्लेख सेहो कएने छथि।

मीमाँसाक इतिहासमे पार्थसारथी मिश्रक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि। **शास्त्रदीपिका** नामक पोथी हिनक प्रसिद्ध अछि। इ कुमारिलक समर्थक छलाह आ सालिकनाथ मिश्र प्रभाकरक। **श्लोकवार्त्तिक**पर पार्थसारथी मिश्रक टीका **न्याय रत्नाकर**क नामे प्रसिद्ध अछि।

एकर बाद मिथिलामे अवतीर्ण भेलाह प्रसिद्ध नैयायिक उदयनाचार्य। इ न्यायशास्त्रक अद्वितीय विद्वान छलाह। **किरणावली, कुसुमाँजलि, न्याय परिशिष्ट, न्यायवार्त्तिक, तात्पर्य परिशुद्धि, आत्मतत्वविवेक** आदि हिनक लिखल प्रसिद्ध पुस्तक सभ अछि। न्यायक क्षेत्रमे ओ अद्वितीय मानल गेल छथि आ अपन तर्क प्रणालीसँ ओ बौद्ध लोकनिकेँ परास्त कए पूर्ण यश प्राप्त केने छलाह। मैथिली परम्परामे तँ एतेक धरि कहल गेल अछि जे ओ बौद्धसँ ततेक दूर रहए चाहैत छलाह जे ओ मिथिलासँ दूर जाके राजा आदिसूरक **धर्माधिकरणि**क बनि गेलाह। हुनक ग्रंथ **लक्षणावली**सँ ज्ञात होइछ जे ९८४इ.मे ओ जीवित छलाह। **आत्मतत्वविवेक** चारि परिच्छेदमे बटल अछि–

i) प्रथम परिच्छेदमे संसारक अस्थायित्वपर विचार भेल अछि।

ii) दोसर परिच्छेदमे ओ आदर्शवादीक व्यक्तिगतक विश्लेषण करैत छथि।

iii) तेसर परिच्छेदमे गुणसँ फराक ओ द्रव्यकेँ नहि मनैत छथि।

iv) चारिम परिच्छेदमे इश्वरक हेबाक पक्षमे पूर्ण नैयायिकक तर्क उपस्थित केने छथि।

इ हुनक सभसँ प्रसिद्ध ग्रंथ मानल गेल अछि आ एहिमे ओ बौद्ध लोकनिक पूर्ण आलोचना केने छथि आ बौद्धक अनात्मवादक विरूद्ध एहिमे आत्माक प्रतिष्ठाकेँ पुनर्स्थापित कैल गेल अछि। **न्यायकुसुमाञ्जलि**मे सेहो ईश्वरक स्तित्वपर विचार कैल गेल अछि आ बौद्धक दृष्टिकोणक आलोचना सेहो। तेरहम शताब्दीमे वर्द्धमान **'प्रकाश'**क टीका आ रूचिदत्त **'मकरन्द'** नामक टीका एहिपर लिखलन्हि। वैशेषिकक दृष्टिकोणसँ उदयन अपन न्याय पद्धतिक स्थापना केने छलाह। नव–न्यायक प्रमुख संस्थापकमे हुनक नाम आएब स्वाभाविके। हुनका नामपर निम्नलिखित श्लोक प्रचलित अछि–

*"एश्वर्य मदमत्तोऽसि मामवज्ञाय वर्त्तसे*
*पुनर्बौद्धे समायाते मदधीना तवस्थितिः"* –

मीमाँसाक अतिरिक्त मिथिलाक महत्वपूर्ण योगदान नव–न्यायक क्षेत्रमे रहल अछि। एहि नव न्यायक संस्थापक छलाह गंगेश उपाध्याय। उदयनाचार्य बौद्धक विरूद्ध जे तर्कपूर्ण विवाद प्रारंभ केने छलाह तकर स्वागत केलैन्हि बंगालक रघुनाथ शिरोमणि तथा मिथिलाक शंकर मिश्र आ भगीरथ ठाकुर। अत्रेय नारायणाचार्य आदि बादमे ओकर विशद विश्लेषण सेहो केने छलाह। उदयनाचार्यक पूर्वहिसँ मिथिलामे मण्डन–वाचस्पति दर्शनक जे एकटा अविच्छिन्न श्रृंखला चलौने छलाह तकर परिणति भेल गंगेशक नव–न्यायक स्थापनामे। करिऔनमे ताहि दिनमे दर्शनक अध्ययन–अध्यापनक एकटा प्रधान केन्द्र छल आ ओतहि भेल छलाह उदयनाचार्य आ ओहि केन्द्रक छात्र छलाह गंगेश उपाध्याय।

पुरनका न्याय आ वैशेषिककेँ मिलाजुलाकेँ नवन्यायक जन्मदाता छलाह गंगेश। नव–न्यायपर श्रीहर्षक **खण्डन–खण्ड–खाद्य**क प्रभाव सेहो देखबामे अवइयै। गंगेश अपन **तत्वचिंतामणि**मे श्रीहर्षक मतक आलोचना केने छथि। गंगेशमे हमरा मीमाँसा आ वेदांतक आलोचना सेहो भेटइत अछि। ओ मात्र चारिटा प्रमाणकेँ मनैत छथि– **i)** प्रत्यक्ष, **ii)** अनुमान, **iii)** उपमान, आ **iv)** शब्द। पुनः प्रत्यक्षकेँ बारह वादमे, अनुमानकेँ सत्रह वादमे, आ शब्दकेँ सोलह वादमे बाँटल गेल अछि। बादमे चलिकेँ नवद्वीपक लोग सभ **अनुमान**पर विशेष जोर देलन्हि। ताहि दिनसँ अद्यावधि **तत्वचिंतामणि** अद्वितीय न्यायक ग्रंथ मानल गेल अछि आ नव–न्यायक तँ इ मूल स्रोते भेल। मिथिलासँ पढ़िकेँ गेलाक बाद जखन रघुनाथ शिरोमणि नादियामे नव–न्यायक स्थापना केलन्हि तखन ओहिठाम गंगेशक ग्रंथपर बहुत रास आलोचना लिखल गेल। मिथिलामे पक्षधर मिश्र एहि ग्रंथपर **'आलोक'** नामक टीका लिखलन्हि आ बंगालमे हुनक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि **'दीधिति'** नामक टीका आ मथुरानाथ तर्कवागिश **'प्रकाश'** नामक टीका लिखलन्हि। पुनः **'दीधिति'**पर **जागदीशी** आ **गदाधरी** टीका लिखल गेल। गंगेश तँ एहिरूपक नव–न्यायक सृष्टि केलन्हि जे आगाँ चलिकेँ विशेष विद्वत–प्रिय भेल आ प्राचीन न्यायशास्त्र पठन प्रणालीमे आमूल परिवर्त्तन अनलक। युग युगांतरसँ भारतमे मैथिल लोकनि श्रेष्ठतम नैयायिक भेल छथि। नव–न्यायक स्थापना तँ मिथिलामे भेल मुदा एकर प्रस्फुटन नादियामे (देखु–इंगलस नामक अमरीकी

विद्वानक पोथी–"**मटेरियल्स फार द स्टडी आफ नव–न्याय**")। गंगेशक पुत्र वर्द्धमान सेहो पैघ नैयायिक भेलाह। ओ गंगेशक सभ पोथीपर टीका लिखने छथि। **'प्रकाश'** नामक टीकाक रचयिता ओ छलाह। **लीलावती प्रकाश**मे ओ अपन पिताक सम्बन्धमे कहने छथि–

*"न्यायाम्भोज पतङ्गाय मीमाँसा पार दृश्यने*
*गंगेश्वराय गुरवेपित्रेऽत्र नमः"*

एहिठाम इ स्मरण रखबाक अछि जे वर्द्धमान धर्माधिकरणिक वर्द्धमानसँ भिन्न छलाह। बड़ड प्रतिष्ठाक संग **सर्वदर्शन संग्रह**मे हिनक उल्लेख भेल अछि। नव–न्यायक क्षेत्रमे मिथिलामे निम्नलिखित व्यक्ति प्रसिद्ध भेल छथि– पक्षधर (जयदेव), वासुदेव, रूचिदत्त, भगीरथ ठाकुर, महेश ठाकुर, शंकर मिश्र, वाचस्पति मिश्र (अभिनव), मिसारू मिश्र, दुर्गादत्त मिश्र, देवनाथ ठाकुर, मधुसुदन ठाकुर इत्यादि।

वाचस्पति मिश्र न्याय, मीमाँसा धर्मशास्त्र आदिक प्रकाण्ड पण्डित भेल छथि। हुनक पुत्र नरहरि मिश्र सेहो महान विद्वान छलथिन्ह। अयाची मिश्रक पुत्र शंकर मिश्र अपना युगक अद्वितीय विद्वान छलाह। शंकर मिश्रक पिता भवनाथ मिश्र सेहो पैघ नैयायिक छलाह। शंकर मिश्रक सम्बन्धमे कहबी अछि जे जखन ओ नेना छलाह तखन मिथिलाक कोनो राजा ओहि बाटे जा रहल छलाह जे हिनक सौन्दर्यसँ अत्यंत मुग्ध भऽ गेलाह आ बालककेँ बजाकेँ कोनो श्लोक सुनेबाक हेतु कहलथिन्ह। शंकर मिश्र निम्नलिखित श्लोक सुनौलन्हि–

*"बालोऽहं जगदानन्द न मे वाला सरस्वती*
*अपुर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्रयम्"।*

महाराज कहलथिन्ह जे अपन आनक मिश्रित कए श्लोक पढ़ू–तखन शंकर मिश्र पढ़लन्हि–

*"चलितश्चकितश्छन्नः प्रयाणेत्व भूपते*
*सहर्षशीर्षा पुरूषः सहश्राक्षः सहस्त्रपात्"।*

महाराज प्रसन्न भए दान देलथिन्ह। शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरूषोत्तम देवक आश्रित रहैथ। शंकर अपना समयक अद्वितीय विद्वान छलाह आ बहुत रास पोथीक प्रणेता सेहो रहल छथि।

पक्षधर मिश्र (जयदेव–पीयूष वर्ष) विद्यापतिक समकालीन व्यक्ति छलाह आ मिथिलाक नव–न्यायक एक प्रकाण्ड विद्वान सेहो। उहो भैरव सिंहक समयमे विराजमान छलाह। **न्याय–शास्त्र** ओ अदभूत विद्वान छलाह। मैथिली परम्परामे इ बात सुरक्षित अछि जे जतय कतहु कोनो विषयमे शास्त्रार्थ अथवा वाद–विवाद होमए लगैक आ ओहिमे जकर पक्ष लचल होइक तकरे पक्ष धय उपपादन करेऽ लागैथि पक्षधर आ एवँ प्रकारे सर्वत्र विजयी हेबाक कारणे लोक हुनका **'पक्षधर'** कहए लागल। हुनका सम्बन्धमे निम्नलिखित श्लोक प्रचलित अछि–

*"शंकर वाचस्पत्योः शंकर वाचस्पति सदृशौ।*
*पक्षधर प्रतिपक्षी लक्षी (क्ष्यी) भूतो न वर्त्तते जगति"॥*

कवि समाजमे ओ **'पीयूष वर्ष'**क नामे प्रसिद्ध छलाह आ **चन्द्रालोक**मे ओ अपन एहि नामक व्यवहार सेहो केने छथि–

*"चन्द्रालोकंममुं स्वयं वितनुते पीयूषवर्षः कृती"॥*

पक्षधर मिश्रक हाथक लिखल **विष्णुपुराण**मे निम्नलिखित श्लोक भेटइत अछि। तड़िपतपर लिखल इ पोथी भटपुरा गाममे अछि (पोथी जोगियार गामक केशव झा नैयायिकक ओतए छलन्हि)।

*"वाणैर्वेद युतैः सशंभुनयनैः संख्या गर्त हायने*
*श्रीमदगौड़मही भुजो गुरूदिने मार्गे च पक्षेसिते।*
*षष्ठयांताममरावती मधिवसन् या भूमिदेवालया*
*श्रीमत पक्षधरः सुपुस्तकमिदं शुद्धं व्यलेखीद् द्रुतम्॥*

(लं.सं.–३४५)

पक्षधर मिश्रक सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ मानल गेल अछि **'आलोक'** आ एहि **'आलोक'** आरो कतए गोटए बादमे टीका लिखलन्हि। रघुनाथ शिरोमणि मिथिला विजयार्थ आएल छलाह परंतु पक्षधर मिश्रक विद्यार्थी सभसँ परास्त भए तृतीय श्रेणीक छात्रक संग हुनकासँ पढ़ए लगलाह आ थोड़ेक दिन अपन प्रतिभासँ उत्तम विद्वान भए स्वदेश गेलाह आ वंग देशमे न्याय विद्याक प्रचार आ उन्नति केलन्हि।

**'आलोक'** गंगेशक **तत्व चिंतामणि**पर टीका थिक। हिनक लिखल दोसर ग्रंथ अछि **चन्द्रालोक–** इ ग्रंथ अलंकार विषयपर अछि आ एकरे आधारपर अधयजी दीक्षित **कुवलयानन्द** नामक अलंकार ग्रंथ बनौलन्हि। इ एकटा **प्रसन्न–राघव** नाटक सेहो लिखने छलाह। हिनक आरो बहुत रास पुस्तक सभ अछि।

शंकर मिश्रक समय धरि मैथिल विद्वान लोकनि बौद्ध मान्यताकँ कटैत रहलाह अपन आदर्शवादी दर्शनक विश्लेषणमे व्यस्त रहलाह। बौद्ध धर्मक दूटा शाखा भऽ गेल छल– **हीनयान** आ **महायान**। महायानक प्रभावे वज्रयान–तंत्रयानक विकास सेहो भेल आ मिथिलाक तंत्रहुँपर बौद्ध तंत्रक प्रभाव पड़ल हो तँ कोनो आश्चर्य नहि। कुमारिल भट्ट आ शंकराचार्यक प्रभावसँ बौद्ध धर्मक ह्रास भेल। **'शंकर दिग्विजय'**मे कुमारिलक मुँहसँ शंकराचार्यकँ निम्नलिखित वाक्य कहाओल गेल अछि–

*"श्रुत्यर्थ धर्म विमुखान सुगतान् निहंतुं*
*जातं गुहं भुवि भवंतमहं नु जाने"॥*

एहिमे तथ्य कहाँ धरि से कहब कठिन मुदा इ तँ निश्चित अछि जे कुमारिल, शंकराचार्य, मंडन आ वृद्ध वाचस्पतिक प्रयासे मिथिलामे बौद्ध धर्मक अंकुश नहि जमि सकल आ एहिठाम हिन्दूधर्मक प्रधानता बनल रहल। अद्वैत वेदांतक इतिहासमे शंकराचार्य एक नवीन धाराक प्रवर्त्तक मानल जाइत छथि। बड़ड सूक्ष्म ढ़ँगसँ ओ अपना ग्रंथमे बौद्धमतक खण्डन केने छथि। माधवक **शंकर दिग्विजय**क अनुसार सुधन्वा नामक एक राजा शंकराचार्यक कहलापर हजारो बौद्धकँ नदीमे डुबा देलन्हि। मुदा एहिमे तथ्य कतबा अछि से कहब असंभव। शंकराचार्य आ मंडनसँ विशेष श्रेय बृद्ध–वाचस्पतिकँ भेटबाक चाही जे अपन युक्तिसंगत तर्क आ दार्शनिक कुशलतासँ बौद्ध लोकनिकँ परास्त करबामे सफल भेलाह। वाचस्पति मिश्रसँ शंकर– पक्षधर मिश्र धरि दर्शनक क्षेत्रमे इ बाद–विवाद चलैत रहल।

एहि सभ वाद–विवादक बाबजूदो मिथिलामे कर्णाट आ ओइनवार वंशक समयमे हम देखैत छी जे धार्मिक सहिष्णुताक भावना विराजमान छल। १२३४–३६धरि

तिब्बती यात्री धर्मस्वामी (बौद्ध) भारतमे छलाह आ राजा रामसिंह देवसँ हुनका विशेष प्रेम छलन्हि। रामसिंह स्वयं तँ ब्राह्मण धर्मक समर्थक छलाह तथापि ओ धर्मस्वामीकँ अपन राज पुरोहित बनबाक हेतु आग्रह केने छलथिन्ह। ओहि कालमे वैशालीमे एकटा ताराक मुरूतक उल्लेख सेहो धर्मस्वामी केने छथि। कट्टर मैथिल लोकनि बौद्ध–विरोधी छलाह आ उपेन्द्र ठाकुरक मते मैथिल ब्राह्मण बौद्धकँ मुसलमानसँ बेसी घृणा करैत छलाह। ज्योतिरीश्वर ठाकुर बौद्धकँ पतीत आ खतरनाक कहने छथि आ बौद्ध विरोधी भावनाकँ प्रखर करबाक हेतु उदयनक प्रशंसा केने छथि। सप्तरी इलाकामे बौद्ध आ हिन्दूक बीच बरोबरि संघर्ष होइते रहैत छल।

मिथिलामे ताराक प्रधानता प्राचीन कालहिसँ अछि तकर प्रमाण हमरा धर्मस्वामीसँ भेटइत अछि। **'तारा'**कँ ताहि दिनमे बौद्ध देवीक रूपमे मानल जाइत छल। मुदा तंत्रक विकास भेलासँ **'तारा'** तांत्रिक देवीक रूपमे सेहो स्वीकृत भेल आ मिथिलामे एकर जनप्रियता बढ़ि गेलैक। १२–१३म शताब्दीमे वैशालीकँ तीरभुक्तिक अंतर्गत राखल गेल अछि। बौद्ध धर्मक सम्बन्धमे चण्डेश्वरक **कृत्यरत्नाकर**मे कहल गेल अछि जे बुद्धक पूजा चैत्र शुक्ल प्रतिपदाकँ होएबाक चाही। वैशाख आ श्रावण सेहो बौद्ध पूजाक बिधान बताओल गेल अछि। एहिसँ बुझि पड़इयै जे बौद्ध लोकनिक किछु संख्या मिथिलामे अवश्य रहल होएत आ चण्डेश्वर सन समन्वयवादी ओकरो ध्यानमे राखि अपन विधान बनौने होएताह।

मिथिलामे सूफीसंत लोकनिक प्रभाव सेहो विशेष छल आ प्रोफेसर सैयद हसन असकरीक निबन्ध सभमे एकर विशद विश्लेषण भेल अछि। सूफी लोकनिक प्रभावे एहि क्षेत्रमे रहस्यवादक विकास भेल। मिथिलामे शेख फत्तु, शेख बुरहान आ इसमाइल, सैयद मुहम्मद, सैयद अहमद, अबुल फतेह हियायतुल्लाह, मीर इब्राहिम चिस्ती, शेख काजीन शुत्तारी, अब्दुर रहमान, शेख हुसैन, शाह ताजद्दुनीन, शेख शमशुद्दीन, शमन मदारी, पीर शाह नजीर, आ शेख ताजुद्दीन मदारी आदि प्रमुख सूफी संत सभ भऽ गेल छथि। बिहारी लालक **'आयनी–तिरहूत'**मे मिथिलाक बहुत रास मुसलमानी परिवारक इतिहास सुरक्षित अछि। शताब्दीक सम्पर्क आ संघर्षक उपरांत तँ आब मिथिलाक माँटि–पानिमे इ लोकनि एहेन मिल गेल छथि जे ओहिसँ हिनका लोकनिकँ फराक करब असंभव। हिनका लोकनिक **'मरसिया'** मैथिली साहित्यक एकटा प्रमुख अंग बनि चुकल अछि।

अध्याय–१९

# मिथिलामे शिक्षाक विकास

उपनिषद् एहि बातक प्रमाण अछि जे मिथिलामे अतिप्राचीन कालहिसँ शिक्षाक प्रचार बेस रहल अछि। विद्या व्ययसनी एहि ठामक लोग सभ दिनसँ होइत आएल छथि आ विद्वानक प्रतिष्ठाक स्वीकृतिक सर्वश्रेष्ठ एवँ सर्वप्रथम उदाहरण हमरा जनकक राजसभासँ भेटइत अछि। उपनिषदसँ इ ज्ञात होइछ जे ताहि दिनमे लोक शिक्षापर विशेष ध्यान दैत जाइत छलाह। याज्ञवल्क्यक मत छन्हि जे गुरूकँ विद्यार्थीसँ ताधरि कोनो प्रकारक दान इत्यादि नहि ग्रहण करबाक चाही जाधरि ओ अपन शिक्षा समाप्त नहि कऽ लैत छथि। एकर अर्थ इ भेल जे गरीबसँ गरीब विद्यार्थी सेहो गुरूक ओतए जाए शिक्षा प्राप्त कऽ सकैत छल। शिक्षा प्राप्त करबाक मार्गमे अर्थक कमीकँ बाधक नहि बुझल जाइत छल। शिक्षको निस्वार्थ भावे समाजक सेवा करैत छलाह। शिक्षककँ राज्यसँ पूर्ण सहयोग भेटइत छलन्हि आ हुनक सम्मान आ प्रतिष्ठाक तँ कोनो कथे नहि। यज्ञमे राजा ब्राह्मणकँ गाय आ सोना दानमे दैत छलथिन्ह। विद्वान कखनो कोनो स्थिति कोनो सहाय्यक हेतु राज दरबारमे निःसकोच आ सकैत छलाह। आचार्य लोकनिक सभ प्रकारक दिक्कतकँ दूर करबाक कार्यकँ शासक अपन धर्म बुझैत छलाह किएक तँ हुनका लोकनिक जीवन विद्याध्यनक हेतु समर्पित छल। चारि वेदक अतिरिक्त इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद्, श्लोक, सूत्र, अनुव्याख्यान, व्याख्यान आदिक पठन–पाठन होइत छल। ऋषिक आश्रम विद्यालयक काज करैत छल आ आश्रमेकँ प्रसिद्ध विद्या केन्द्र मानल जाइत छल। विदेहमे ताहि दिनमे पढ़ल–लिखल लोगक संख्या विशेष छल।

बालकि सर्वप्रथम तँ अपना घरेमे शिक्षा भेटइत छलैक। ताहि दिनमे बालक–बालिकामे कोनो भेद नहि छल आ दुहुकँ शिक्षा देबाक प्रथा छल। वैदिक स्कूलमे (चरणमे) बालिकाक प्रवेश सेहो होइत छल। कथ–सम्प्रदायमे शिक्षित बालिकाकँ **कथी** कहल जाइत छल। ताहिदिन गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा सन विदुषी छलीहे। उपनयनक बाद अध्ययनक विशेष कर्म शुरू होइत छल। विद्यार्थी जीवन बारह वर्षक होइत छल आ बारह वर्ष विद्यार्थी अपन गुरूक संग रहि विद्याध्ययन करैत छलाह। विद्यार्थीकँ आचार्य कुलवासिन आ अंतेवासिन कहल जाइत छलन्हि। दिनमे सुतव निषेध छल। गैर–ब्राह्मणकँ शिक्षाक एतेक सुविधा नहि रहल हेतैन्ह। एक लव्यक कथासँ एहि बातपर प्रकाश पड़इत अछि। उद्दालक, आरूणि, स्वेतकेतु, आदि तहि दिनक प्रसिद्ध विद्वान छलाह। भ्रमणशील रहितहुँ किछु गोटए विद्याक उपार्जन करैत छलाह आ एहेन भ्रमणशील विद्यार्थीसँ जनककँ भेट भेल छलन्हि– स्वेतकेतु आरूणेय, सोमशुष्म, सत्ययज्ञी आ याज्ञवल्क्य। एहि क्रममे जनक– याज्ञवल्क्यकँ विवादो भेल छलन्हि आ एकर बादहिसँ जनक **'ब्रह्मवादिन'**क कोटिमे आवि गेल छलाह। प्रसिद्ध क्षत्रिय विद्वानमे काशीक अजातशत्रु, प्रवाहन जैवाली, केकैयक अश्वपति, विदेहक जनक, तथा प्रतर्दन आदिक नाम उल्लेखनीय अछि।

उपनिषद् युगमे मिथिला विद्याक प्रधान केन्द्र छल। जनक **'ब्रह्म'**क सम्बन्धमे निम्नलिखित ६शिक्षकसँ अपन ज्ञान प्राप्त केने छलाह– जित्वन, उदंक, बरकु, गर्दभी विपीत, सत्यकाम, साकल्य। याज्ञवल्क्यसँ ओ उपनिषदक ज्ञान प्राप्त केने छलाह। जनकक उदारतासँ काशीक अजातशत्रु तबाह रहैत छलाह। जनकक अश्वमेध यज्ञक अवसरपर निम्नलिखित दार्शनिक लोकनि उपस्थित छलाह। उद्दालक आरूणि, अश्वल, जारूतकोख आर्त्तभाग, भुज्युलाहयायनि, उशष्ट चाक्रायण, कहोड़, कौषितकेय, विदग्ध शाकल्य एवँ गार्गी आ एहिमे याज्ञवल्क्य विजयी भेल छलाह। जनक प्रभावित भए अपन समस्त विदेह राज्य याज्ञवल्क्यकँ अर्पित केने छलाह।

शिक्षाक प्रगतिक क्रम ओकर बादो चलिते रहल आ बौद्ध युगमे तँ वैशाली अति प्रसिद्ध केन्द्र भऽ गेल। तक्षशिला विश्वविद्यालयमे मिथिला आ वैशालीक विद्यार्थी पढ़बाक हेतु जाइत छलाह। महिला सेहो विदुषी होइत छलीहे। ओ लोकनि पढ़बाक हेतु तक्षशिला जाइत छली कि नहि से कहब कठिन कारण जातकमे एकर एहेन कोनो उल्लेख नहि भेटइत अछि। चाण्डालकँ शिक्षासँ वर्जित राखल जाइत छल। वैशाली सेहो शिक्षाक एकटा प्रधान केन्द्र मानल जाइत छल। बुद्ध एहिठाम अपन कैकटा सारगर्भित प्रवचन देने छलाह। धार्मिक आ दार्शनिक वाद–विवादक हेतु लिच्छवी लोकनि एत्तए एकटा कूटागार प्रशाल बनबौने छलाह। तकर बादसँ जखन समस्त भारत एक राजनैतिक सूत्रमे बन्हि गेल तखन एहिमे एकरूपता आबए लागल। **मौर्य–गुप्त–हर्ष** आ पाल युगमे सेहो मिथिलाक अपन वैशिष्टय सुरक्षित रहल। उत्तर बिहारमे सेहो कैकटा बौद्ध बिहार छल जकर प्रमाण भेटइत अछि आ एहने एकटा बौद्ध बिहारमे बौद्ध संत नरोपा रहैत छलाह जे ओतएसँ विक्रमशिला गेल छलाह। नौलागढ़सँ एकटा जे अभिलेख भेटल अछि ताहु आधारपर इ कहल जाइत अछि जे ओहि क्षेत्रमे एकटा विहार छल।

मिथिलामे कर्णाटवंशक स्थापनाक बाद मिथिलाक अपन व्यक्तित्व विकसित भेल आ ताहि दिनसँ साँस्कृतिक एवँ सामाजिक क्षेत्रमे मिथिलाक अपूर्व योगदान रहल अछि। कर्णाट, ओइनवार आ खण्डवला कुल शासक लोकनि स्वयं पण्डित छलाह आ ओ लोकनि विद्या–प्रसारक नीक व्यवस्था केलन्हि आ अपना–अपना शासनकालमे विद्या–प्रसारक प्राचीन परम्पराक पुनर्स्थापन केलन्हि। एहियुगमे विभिन्न विषयपर मिथिलामे पोथी लिखल गेल आ प्राचीन पोथी सभपर असंख्य टीका। प्रत्येक मुख्य बातक हेतु निबन्धक निर्माण भेल आ विद्याक विभिन्न पक्षपर विस्तृतरूपेण ग्रंथक रचना कैल गेल। कर्णाट युगकँ एहि दृष्टिकोणसँ **स्वर्ण युग** कहल गेल छैक। समस्त मिथिलामे शिक्षा केन्द्रक जेना जाल बिछा देल गेल।

व्याकरणक क्षेत्र पद्मनाभ दत्तक नाम चिरस्मरणीय रहत कारण ओ अपन **'सुपद्म'**क रचना कए एहि दिशामे बड़ड पैघ योगदान देलन्हि। छन्दशास्त्रपर भानुदत्त मिश्रक रचना महत्वपूर्ण अछि आ **'सरस्वती कण्ठाभरण'**पर रत्नेश्वरक टीका सेहो प्रशंसनीय अछि। कामशास्त्रपर भानुदत्तक अतिरिक्त ज्योतिरीश्वरक **पंचशायक** एवँ **रंगशेखर** महत्वपूर्ण ग्रंथ मानल गेल अछि। भवदत्त प्रणीत **नैषधचरितम**क टीका एखनो धरि पढ़ाओल जाइत अछि। पृथ्वीधर आचार्य **मृच्छकटिक**पर टीका लिखलन्हि। **अमरकोश**पर श्रीकर आचार्यक टीका संस्कृत साहित्यक एक अमूल्य निधि मानल जाइत अछि। ज्योतिरीश्वरक **'वर्णरत्नाकर'** अपना ढ़ँगक अपूर्व ग्रंथ अछि जाहिसँ मैथिली साहित्य गौरवान्वित अछि। दार्शनिक क्षेत्रक लेखक उल्लेख हम पूर्वहि कऽ चुकल छी तै दोहरायब उचित नहि बुझना जाइत अछि। श्रीदत्त उपाध्याय, हरिनाथ

उपाध्याय, भवशर्मण, इन्द्रपति, लक्ष्मीपति आ चण्डेश्वर, विद्यापतिक परिवारक योगदान एहि युगमे विशेष रहल अछि। मिथिला न्याय–मीमाँसाक हेतु अत्यंत प्रसिद्ध छल आ देश–देशांतर लोक इ दुनू विषय पढ़बाक हेतु एहिठाम अबैत छलाह।

ताहि कालमे मिथिलेटा एहेन अंचल छल जाहिठाम देशक कोन–कोनसँ विद्वान लोकनि आबिकेँ शरण लैत छलाह। साँस्कृतिक दृष्टिकोणसँ मिथिलाक महात्म्य बड़ड बढ़ि गेल छल। नालन्दा–विक्रमशिला जखन नष्ट भऽ रहल छल तखन बहुत पण्डित जे पोथी लऽ कए भागि रहल छलाह ताहिमे बहुतोकेँ मिथिलेमे शरण भेटलन्हि। उत्तर भारतमे आर जतए कतहु उथल–पुथल होइक तखन ओतहुँसँ विद्वान लोकनि मिथिला दिसि चल अवइत छलाह कियैक तँ एहिठाम विद्वान लोकनिक समादर होइत छल। मण्डन मिश्रक समयसँ मिथिलाक प्रसिद्धि समस्त भारतमे प्रसारित भए चुकल छल आ तकर बाद तँ एकापर एक एहेन विद्वान एहिठाम होइत गेलाह जाहिसँ मिथिलाक प्रसिद्धि समस्त भारतमे दिनानुदिन बढ़िते चल गेल। मध्य–युगमे न्याय–वैशेषिक–मीमाँसा वेदांतक हेतु मिथिला भारतमे प्रसिद्ध भए गेल छल आ मुसलमानी आक्रमणक फलस्वरूप वर्णाश्रमक जे डोरी ढ़ील भेल जाइत छल ताहु हेतु मिथिलामे निबन्ध आ कर्मकाण्डपर ग्रंथक रचना एवँ ओकर अध्ययन–अध्यापन प्रारंभ भए चुकल छल। एहि सभमे योग्यता प्राप्त करबाक हेतु बाहरसँ विद्वान लोकनि एतए पढ़बा लेल अबैत छलाह आ विशेष कऽ कए न्यायक अध्ययनक हेतु मिथिला–विश्वविद्यालय समस्त भारतमे अद्वितीय छल। जखन मगधक अवसान भेलैक तखन मिथिला विश्वविद्यालयक चरमोत्कर्ष भेल आ पक्षधर मिश्रक अनुमतिसँ रघुनाथ शिरोमणि जखन नादियामे नव–न्यायक केन्द्र खोललन्हि तखनसँ नादियाक प्रभुत्व बढ़ल। ताहि दिन मिथिलाक विद्वानक महत्व तँ एतबेसँ बुझना जाइत जे बंगालक विद्वान लोकनि मैथिल निबन्धकार लोकनिक मतकेँ महत्व दैत छलथिन्ह आ बंगालक नैयायिक मैथिल नैयायिकक वाक्यकेँ प्रमाण मनैत छलाह। ओहि युगक मिथिलाक प्रत्येक विद्वान अपना आपमे एकटा संस्थे होइत छलाह। मिथिलाक संस्कृत एवँ भाषा साहित्यक हेतु एकरा स्वर्णयुग मानल गेल अछि।

मिथिलामे कर्णाट–ओइनवार कालमे उदयन, गंगेश, वर्द्धमान, पद्मनाभ, जगद्धर, शंकर, वाचस्पति, पक्षधर आदि जे विद्वान भेल छथि ताहिसँ कोनो देश आ कोनो काल गौरवान्वित भऽ सकैछ। विद्यापतिकेँ तँ सहजहि सभ केओ एकस्वरसँ भारतीय भाषाक सर्वश्रेष्ठ गीतकार मनैत छथि। गीतकाव्यक दृष्टिकोणसँ कालिदास आ जयदेवक बाद विद्यापतियेक स्थान अबैत अछि। ओनातँ विद्यापति मैथिली पदावली लऽ कए प्रसिद्ध छथि मुदा स्मरण रखबाक विषय इ जे एहेन कोनो विषय नहि अछि जाहिपर विद्यापति नहि लिखने होथि। लखिमा रानी सेहो प्रथम कोटिक विदुषी छलीहे। स्वयं महेश ठाकुर अपन विद्याक बले मिथिलाक राज्य प्राप्त केने छलाहे आ ओहि खण्डवला वंशमे आरो कतेक अद्वितीय विद्वान लोकनि भेल छथि। महेश ठाकुर स्वयं **अकबरनामा**क संस्कृत अनुवाद सेहो केने छलाह आ हेमांगद ठाकुर ज्योतिषपर अपूर्व ग्रंथ लिखने छलाह। महेश ठाकुर तँ प्रसिद्ध विद्वानक कोटिमे गिनल जाइत छथि आ हुनक वाक्यकेँ प्रमाणो मानल गेल अछि।

**कविन्द्रचन्द्रोदय**मे विश्वंभर मैथिलोपाध्याय, बदरीनाथ उपाध्याय मैथिल, दामोदर उपाध्याय मैथिल आदिक उल्लेख अछि। शाहजहाँक दरबारमे सेहो दूटा मैथिल विद्वान अपन विद्वता प्रदर्शित केने छलाह आ एहि पाँतिक लेखकक पूर्वज सेहो कोनो मुगल बादशाहसँ अपन विद्वता प्रदर्शित कए, जमीन्दारी प्राप्त केने छलाह आ चौधराइ सेहो।

ओ मूल ताम्रपत्र गत सौ वर्ष पूर्वहि भीषण अग्निकाण्डमे स्वाहा भऽ गेल। खण्डवला शासक विद्वान लोकनिकेँ जागीर दैत छलाह जकर प्रमाण अछि।

ताहि दिनमे मिथिलामे गामे–गाम विद्यालय छल आ जाहिठाम जाहि विषयक पण्डित रहैत छलाह ताहिठाम सैह विषय नीक जकाँ पढ़ाओल जाइत छल। राजा महराजाक दिसिसँ विद्वानकेँ प्रोत्साहन भेटइत छलैक। मिथिला विश्वविद्यालयमे ताहि दिन अन्य विषयक अतिरिक्त नव–न्यायपर विशेष ध्यान देल जाइत छल। नव–न्याय पढ़बाक हेतु भारतक कोन–कोनसँ एहिठाम विद्यार्थीगण अबैत छलाह। विद्वता एवँ विद्याक क्षेत्रमे मिथिलाक स्थान अग्रगण्य छल आ मध्य युगमे नालन्दाक स्थान बुझु जे मिथिलेकेँ प्राप्त भऽ गेल छलैक। नालंदा जकाँ मिथिला विश्वविद्यालयकेँ अट्टालिका वाला भवन नहि छलैक, कारण एहिठाम तँ टोल आ चौपाड़िक व्यवस्था छल। मिथिला विश्वविद्यालयक आन वैशिष्ट्य छलैक। स्नातकत्व प्राप्त करबाक जे कसौटी एहिठाम छल ताहिसँ यदि अझुका स्नातक लोकनिकेँ मिलाओल जाइन्ह तँ एक्को गोटए अहुना स्नातक नहि कहा सकताह। मिथिला विश्वविद्यालयमे जे परीक्षा पद्धति छल तकरा **शलाका–परीक्षा** कहल जाइत छलैक। इ परीक्षा बड़ड कठिन छलैक। एहिमे शास्त्रार्थक व्यवस्था छल आ ओहि शास्त्रार्थमे प्रकाण्ड पण्डित लोकनि सेहो बैसैत छलाह। **'शलाका'**क अर्थ भेल जे पाण्डुलिपिक पृष्ट सभ जे सुइसँ घोपल जाइत छल ताहिमे सँ कतहुँसँ कोनो विषयपर शास्त्रार्थक सूत्रपात्र भऽ सकैत छल। जखन पाठ्यक्रमक पढ़ाइ समाप्त होइत छल तखन सभ छात्र एकठाम बैसैत छलाह आ ओहिमे गुरूजन सेहो सम्मिलित होइत छलाह आ तकर बाद शास्त्रार्थ प्रारंभ होइत छल आ ओहि शास्त्रार्थक पश्चात् स्नातकत्वक प्रमाण पत्र देल जाइत छलन्हि। ओहुसँ एक कठिन परीक्षा प्रणाली छल जकरा **'षडयंत्र'** कहल जाइत छल। एहि प्रणालीमे छात्र लोकनिकेँ अपन विद्वताक प्रदर्शन जनताक मध्य करए पड़इत छलन्हि। ओहि परीक्षामे केओ हुनकासँ कोनो प्रकारक प्रश्न कए सकैत छल आ जखन ओहन लोग हुनका उत्तरसँ संतुष्ट होइत छलथिन्ह तखने हुनका प्रमाण पत्र भेंट सकैत छलन्हि। प्राध्यापक लोकनिकेँ **उपाध्याय, महोपाध्याय, महामहोपाध्याय** कहल जाइत छलन्हि। मिथिला विश्वविद्यालयमे **चारूवेद, मीमाँसा, न्याय, दर्शन, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद** आदि विषयक शिक्षा देल जाइत छल।

मिथिला विश्वविद्यालयक सबन्धमे एकटा किंवदंती प्रचलित अछि– जकर उल्लेख एहिठाम आवश्यक बुझना जाइत अछि। पक्षधर मिश्रक एकटा बंगाली शिष्य छलथिन्ह **रघुनाथ शिरोमणि**। परीक्षाक अवसरपर किछु एहेन बात भेल जाहिसँ रघुनाथ शिरोमणिक विद्वतापर किछु चोट पहुँचल। सन्ध्या भेलापर पक्षधर मिश्र अपन आगंन गेला आ पूर्णिमाक इजोरियामे बैसि ओ अपन पत्नीकेँ कहइत रहथिन्ह जे आइ हमरासँ एक बड़ड पैघ गलती भऽ गेल अछि। शास्त्रार्थ कालमे रघुनाथ बेचारा ठीके बजने छल मुदा हम ओकरा काटि देने छलियैक जाहिसँ ओकरा प्रतिष्ठापर अवस्से चोट पहुँचल हेतैक। हम तँ उचित बुझैत छी जे हम ओकरा बजाकेँ इ बात स्पष्ट कहि दियैक। एम्हर रघुनाथ तरूआरि नेने गुरूपर आक्रमण करबाक हेतु झोंझहिमे नुकाएल अपन गुरूक सभ बात सुनि रहल छल। पक्षधर मिश्र जहिना अपन स्वीकारोक्ति अपन पत्नीक समक्ष केलन्हि तहिना रघुनाथ अपन तरूआरि फेकि अपन गुरूक चरणपर खसि पड़ल। ओ अपन मूर्खताक हेतु माँफी मंगलक आ उदगार प्रगट केलक जे अहाँ सन गुरूसँ हमरा इएह आशा रखबाक चाहैत छल। रघुनाथ शिरोमणि मिथिला विश्वविद्यालयक एक प्रख्यात छात्र छल आ ओ मिथिलाक इतिहासक एकटा

अंग बनि चुकल अछि। मैथिली परम्परामे सेहो ओकरा सम्बन्धमे एकटा प्रवाद छैक जकर उल्लेख करब आवश्यक। जरहटिया गाममे भैरवसिंह देवक खुनाओल पोखरिक प्रसंगक उल्लेख हमरा लोकनि पूर्वहि कऽ चुकल छी। ओहिमे पाथरक जाठि लंकासँ बनिकेँ आएल छल मुदा ओहिमे शर्त्त इ छल जे यज्ञमे कोनो **'काण'** अथवा **'विकलांग'** व्यक्ति नहि उपस्थित रहैथ। शुभ लग्नमे यज्ञ प्रारंभ भेल। जखन जाठि बैसेबाक बेरि भेलैक तखन मृदंग ध्वनि छोड़लक–

*"भादिक भादिक भादिक भा भैरव भूपति देव सभा"*

यज्ञ देखबाक हेतु कोनो कोनमे रघुनाथ शिरोमणि जे **'काण'** (काना) छलाह सेहो बैसल छलाह। हुनका उपरोक्त अपूर्ण वाक्य सुनिकेँ रहल नहि गेलैन्ह आ वो तत्काल बाजि उठलाह–

*"सारवती कथिता कविना पण्डितराज (रत्न) शिरोमणि ना"*

एहि श्लोकहिसँ हुनक परिचय स्पष्ट भऽ गेल आ लंकावासी काना व्यक्तिकेँ देखि पोखरिमे जाठि फेक भागि गेलाह।

रघुनाथ शिरोमणिसँ प्रसन्न भए पक्षधर मिश्र हुनका बंगालमे स्वतंत्र रूपें नव–न्याय विश्वविद्यालयक स्थापनाक अनुमति देलथिन्ह आ तखनहिसँ नादिया नव–न्यायक अध्ययनक प्रधान केन्द्र बनि गेल। नादियाक स्थापनाक उपरान्त मिथिलाक महत्व घटए लागल तथापि स्मृतिक क्षेत्रमे चण्डेश्वर, हरिनाथ, भवशर्मण, इन्द्रपति, विद्यापति, वाचस्पतिक कारणे मिथिलाक प्रभुत्व बनल रहल। मिथिला विश्वविद्यालयक प्रतापे संस्कृत साहित्य सुरक्षित रहि सकल। घरे–घरे मिथिलामे ताहि दिन पाण्डुलिपि तरिपत लिखल जाइत छल। महामहोपाध्याय पी.वी.कणे ठीके कहने छथि जे याज्ञवल्क्यक समयसँ आइ धरि मिथिला अपन विद्वताक परम्पराकेँ सुरक्षित रखने अछि। महेश ठाकुरक समयसँ मिथिला विश्वविद्यालयक परीक्षा पद्धतिमे एक नवीन पद्धतिक श्रीगणेश भेल जकरा **'धौत परीक्षा'**क नामे हमरा लोकनि जनैत छी। जनिका विद्वान कहेबाक शौख छलन्हि हुनका लेल इ परीक्षा पास करब आवश्यक कारण एहिमे बिनु परीक्षोतीर्ण भेने केओ विद्वान नहि कहा सकैत छलाह। एहि परीक्षाक नियम इ छल जे प्रत्येक वर्ष एकर घोषणा कैल जाइत छल आ इच्छुक संस्कृत पण्डित लोकनि ओहिमे उपस्थित भए छलाह। परीक्षोतीर्ण भेलापर नैयायिक लोकनिकेँ एक जोड़ लाल धोती आ वैदिक एवँ वैयाकरण लोकनिकेँ एक जोड़ पीअर धोती विदाइ भेटइत छलन्हि। एहिमे मिथिलाक बाहरोसँ विद्वान अबैत छलाह। एहिमे सफल भेल विद्वान अपनाकेँ सगौरव **"धौत परीक्षोतीर्ण"** कहैत छलाह। दरभंगा राजक अंत भेलाक पूर्व धरि मिथिलामे इ व्यवस्था छल। एम्हर आबिकेँ स्वर्गीय डाक्टर गंगानाथ झा एहि परीक्षाक सिलेबस (पाठ्यक्रम) सेहो निर्धारित कऽ देने छलाह। खण्डवाल कुलक समयमे संस्कृत आ मैथिली साहित्यक रचनामे अभिवृद्धि भेल। महेश ठाकुरक वंशज सभ एकापर एक विद्वान छलाह–स्वयं पोथी लिखलन्हि आ उतारलन्हि आ विद्वान लोकनिकेँ प्रश्रय दए पोथी लिखबौलन्हि। नरपति ठाकुरक समयमे लोचन अपन **रागतरंगिणी** नामक पोथी लिखलन्हि। मैथिलियोसँ विशेष खण्डवला कुलक समयमे संस्कृत साहित्यक अभिवृद्धि भेल आ महिनाथ ठाकुरक समयमे तिरहुति गीतक प्रचार सेहो। हेवनि धरि मिथिलामे संस्कृत विद्वानक कोनो अभाव नहि छल आ बहुतोकेँ दरभंगा राजसँ वृति भेटइत छलन्हि।

ताहु दिनमे मैथिल विद्वान बाहर जाके अपन नाम कमाइत छलाह। ब्राह्मण मुख्यतः दानपर आधारित रहैत छलाह आ जखन मिथिलाक स्थिति विपन्न भऽ गेल तखन ओ लोकनि मिथिलासँ बहराए बाहरो जाए लगलाह। ओना अपन विद्वताकेँ प्रदर्शित करबाक हेतु सेहो ओ लोकनि मिथिलासँ बाहर जाइत छलाह। भवनाथ मिश्र अयाचीक शिष्यगण भारतक कोन–कोनमे पसरल छलथिन्ह। एहिमे सँ बहुतो प्रवासेमे रहियो गेलाह जकर प्रमाण अखनो अछि। भारतक कोन–कोनमे ब्राह्मण लोकनिक टोली अखनो देखल जा सकइयै जे अपनाकेँ मैथिल कहैत छथि। **काव्य प्रदीप**क रचयिता गोविन्द ठाकुर कृष्णनगरक राजा भवानंद रायक ओतए रहैत छलाह। हुनक वंशज दिनाजपुरमे बसि गेलथिन्ह। मालदहमे सेहो ओइनवार वंशक शाखा एखनो विराजमान छथि आ ओहिवंशक स्वर्गीय अतुल चन्द्र कुमर (हमर प्रिय मित्र) बंगाल सरकारक पार्लियामेंट्री सचिव सेहो रहल छलाह। हुनक देल ओइनवार वंशक वंशवृक्ष परिशिष्टमे भेटत। भवनाथ मिश्र अयाचीक प्रपौत्र एवँ **रसमंजरी**क सुप्रसिद्ध लेखक कविराज भानुदत्त मध्य भारतकेँ कैक राज्यमे भ्रमण केलन्हि आ हुनक लेखनीसँ गढ़मण्डलाक राजा संग्राम सिंह, बन्दोगढ़क बघेल राजकुमार (रेवा), अहमदनगरक राजा निजाम शाह आ राजा शेरखाँक पता लगइयै। हिनके पुत्रक नाति गंगानंद बिकानेर धरि गेल छलाह। महामहोपाध्याय गोकुलनाथ उपाध्याय आ हिनक भ्राता महामहोपाध्याय जगन्नाथ गढ़वालक राजा फतेहशाहक ओतए छलाह।

भवानी नाथ मिश्र (उर्फ सचल मिश्र) एक प्रसिद्ध न्यायाधीश भेल छथि जे १८म शताब्दीमे पूनामे पेशवा माधव रावक ओतए रहैथ। ओहिठाम पेशवासँ हुनका जबलपुरमे दूटा गाम भेटलन्हि जतए हुनक वंशज अखनो छथिन्ह। हुनका ओतए अद्वितीय सम्मान भेटल छलन्हि। कृष्णदत्त मैथिल नागपुरक भोंसलाक प्रधानमंत्री देवजी पुरूषोत्तमक ध्यान आकृष्ट केने छलाह। इ बहुत पैघ नाटककार छलाह आ हिनका सम्बन्धमे हमर निबन्ध फराके प्रकाशित अछि।

महेश ठाकुरक भ्राता गढ़मण्डलाक संग्रामशाहक पुरोहित छलाह आ हुनक वंशज बहुत दिन धरि महिष्मतीनगरमे बसल छलाह। अखनो मैथिल ब्राह्मणक बहुत रास शाखा ओम्हर छथि। शाहजहाँक दरबारमे सेहो दूटा मैथिल अपन विद्वताक परिचय देने छलाह। हुनका दुनूकेँ शाहजहाँसँ इनाम भेटल छलन्हि आ दूटा गाम दानमे सेहो। रघुदेव मिश्र शाहजहाँक प्रशंसामे एकटा **'विरूदावली'** सेहो बनौने छलाह। संस्कृत शिक्षाक सम्बन्धमे **'हरिहरसूक्ति मुक्तावली'**मे विशेष बात भेटइत अछि।

मिथिलामे विद्याक किछु प्रसिद्ध केन्द्र छल– **जजुआर** (यजुर्वेदक शिक्षाक हेतु प्रसिद्ध), **रीगा** (ऋग्वेदक हेतु), **अथरी** (अथर्ववेदक हेतु), **माउबहेट** (माध्यनन्दिनी शाखाक हेतु), **कुथुमा** (कौथुमी शाखाक हेतु), **शकरी** (शकारी शाखाक हेतु), **भट्टसिम्मरि** एवँ **भट्टपुर** (मीमाँसाक भट्ट स्कूलक हेतु) इत्यादि। मिथिलामे तँ कुम्भकारकेँ सेहो पण्डिते कहल जाइत छैक (कुम्भकारोऽपि पण्डितः)। टोल आ चौपाड़ि तँ अखनहुँ मिथिलाक गाम–गाममे पसरल अछि। एहिठामक शिक्षा परम्पराकेँ देखि १८–१९म शताब्दीमे अँग्रेज एहिठामक भूमिकेँ विश्व–विद्यालयक हेतु उपयुक्त मनने छलाह। १९७२मे मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना भेल आ १९७५मे ललित बाबूक परोक्ष भेलापर ओकर नाम ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कऽ देल गेल।

**कला:-** शिक्षाक संगहि संग मिथिलामे कलाक विकास सेहो युग–युगांतरसँ होइत आबि रहल अछि। उत्खननक अभावमे इ कहब कठिन अछि जे प्राचीन कालमे

मिथिलाक कलाक स्वरूप कि छल आ कोना छल। पुरातात्विक साधनक अभावमे ओहि पक्षपर किछु कहब असंभव। **मिथिला—महात्म्य**मे जे मिथिलाक वर्णन भेटइत अछि ताहि आधार इ अनुमान लगाओल जा सकइयै जे मिथिला नगरी सुनियोजित ढ़ँगसँ योजनाबद्ध रूपैं बनल छल आ देखबा सुनबामे सर्वोत्तम रहल होएत। **मिथिला—महात्म्य** तँ जे वर्णन अछि तकरा जाधरि पुरातत्व सिद्ध नहि कऽ दैत अछि ताधरि तँ ओकरा काल्पनिके माने पड़त। **जातक कथा** सभमे सेहो मिथिला नगरीक विशिष्ट विवरण भेटइत अछि आ ओहुसँ इ सिद्ध होइत अछि जे मिथिला एकटा सुनियोजित नगर छल जे देखबामे सुन्दर छल आ एकर सीमा वेश विस्तृत छलैक। **जातक**मे राज दरबार आ किलाक विवरण सेहो भेटइत अछि।

विदेह, वैशाली, अंगुतराप क्षेत्रक प्राचीन इतिहास पुरातात्विक अंवेषणक अपेक्षा अखनो रखैत अछि। एहि सभ क्षेत्रसँ प्राक्—बौद्धकालीन अवशेष प्रचुर मात्रामे भेटइत अछि आ **नादर्न ब्लैक पालिश्डवेयर** (एन.बी.पी.)क प्राप्ति एहि बातकेँ सिद्ध करैत अछि जे बौद्ध युगमे एहि सभ क्षेत्रमे कलात्मकताक रूप निखरि गेल हैत। एन.बी.पी.क संगहि संग ताहि दिनक सिक्का सभ सेहो भेटल अछि। मिथिलाक गामहि गाम गढ़ सभसँ भरल अछि आ तैं इ निर्विवाद रूपे कहल जा सकइयै जे किलाबन्दीक क्षेत्रमे एहिठामक लोक प्रसिद्धि प्राप्त केने छल। बलिराजगढ़सँ प्राप्त ईंटा एहिबातक सबुत अछि। गढ़क निर्माण सुनियोजित ढ़ँगसँ होइत छल आ मौर्यकालमे गढ़ निर्माणक सम्बन्धमे कौटिल्यक मत स्पष्ट अछि। किलाक निर्माण रक्षात्मक दृष्टिकोणसँ होइत छल। मिथिलाक गढ़ सभसँ माँटिक गोलक प्रचुर संख्यामे भेटल अछि। मौर्यकालीन अवशेष पुर्णियाँ, सहरसा, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, वैशाली आदि स्थानसँ प्राप्त भेल अछि आ ताहुमे मृण्मूर्त्ति सभ भेटल अछि से तँ सर्वथा अद्वितीय अछिये। शूंगकालक अवशेष सभ सेहो भेटल अछि। वैशालीक अतिरिक्त अशोक कालीन एकटा मौर्यकालीन स्तंभ धरहरा (पुर्णियाँ)सँ सेहो प्राप्त भेल अछि। जयमंगलागढ़सँ मौर्यकालीन एकटा काष्ट पुलक अवशेष भेटल अछि। पाटलिपुत्रक बाद उत्तर बिहारमे इएह एकटा काष्ठपुलक नमूना मौर्यकालीन भेटल अछि।

इ निश्चित रूपें कहि सकैत छी जे अशोक कालमे उत्तर बिहारमे सेहो किछु भवनादि, स्तंभादिक निर्माण भेल आ वैशालीमे थोड़ बहुत चैत्य इत्यादि बनल। चम्पारण आ जयमंगलागढ़मे सेहो एहेन प्राचीन अवशेषक उदाहरण भेटल अछि आ चम्पारणसँ तँ सहजहि पृथ्वीक एकटा मुर्त्तिये। पालि—साहित्यमे वैशालीक सम्बन्ध बहुत रास वर्णन अछि आ चैत्यक विवरण सेहो। वैशालीक पोखरि लिच्छवी लोकनिक समयमे कलात्मक छल। गुप्तकालीन अवशेष सेहो मिथिलाक सभ क्षेत्रसँ प्राप्त भेल अछि आ ओहिमे सँ विशेष भाग कोशी आ आन—आन नदीक बाढ़िमे भासि गेल अछि। एक अत्युत्तम गुप्तकालीन मृण्मूर्त्ति नौलागढ़सँ भेटल छल आ संगहि किछु सिक्का साँचा सेहो। आरो कतेक रास गुप्तकालीन सामग्री एम्हर—आम्हरसँ भेटल अछि। बरौनीसँ प्राप्त एकटा सूर्यक मुरूत (कारी पाथरमे) उल्लेखनीय अछि कारण ओहिमे पैरमे जूता आ देहमे जनेउ सेहो अछि।

एम्हर आबिकेँ पालकालीन अवशेष वैशाली, उचैठ, बलिराजगढ़, नौलागढ़, जयमंगलागढ़, अलौलीगढ़, महिषी, पुर्णियाँ, आओर सहरसा तथा बेगूसरायसँ भेटल अछि। कलाक दृष्टिसँ इ युग अत्यंत महत्वपूर्ण मानल गेल अछि आ बेगूसराय जिलाक गामे गाम पालमूर्त्तिसँ भरल अछि। बीहट, रजौरा, बरौनी, संहौल, नौला,

जयमंगला, वीरपुर, आदि जतहि देखु सभ पालकालीन मुरूतसँ भरल अछि। नौलागढ़, जयमंगलागढ़, वीरपुर आदिसँ प्राप्त पालकालीन मूर्त्ति विधित्सा एवँ अभिकल्पना सभ तरहे विलक्षण अछि। पालयुगमे बौद्ध कलाकेँ प्रश्रय तँ भेटवे कैल मुदा हिन्दू कला शैलीक अवहेलना नहि भेल से निश्चित। एहि युगमे मिथिलामे आकाशचारी गन्धर्वक प्रचुरता एवँ ऐन्द्रियिक विस्तारक दुनू सीमांतक बीच जे संतुलन देखाओल गेल अछि से सर्वथा प्रशंसनीय आ स्तुत्य अछि। धार्मिक वस्तुकेँ कलात्मक वस्तुमे रूपांतरित कए देल गेल अछि। मुख्य मुरूत सभहिक दुनू पार्श्वमे सेवारत देवतागण एवँ अनुगत मूर्त्तिकेँ पृथक कमलाशनपर राखल गेल अछि जे निरूपित देवताक वाहनकेँ प्रदर्शित करैत अछि। शारीरिक बल एवँ पौरूषकेँ चारूता आ लालित्यमे परिवर्त्तित कए देल गेल अछि। मध्यकालीन कलाक पूर्वी स्कूलक रूपमे एहि युगमे मिथिलाक योगदान रहल होएत से बुझि पड़इयै। बाराह, सूर्य, गंगा, शिव–पार्वती, दुर्गा आदिक पालकालीन मुरूतक अवशेष सौसे मिथिलामे छिड़िएल अछि। बाराह मूर्त्ति विष्णुक बाराह अवतारक चित्रणक प्रतीक थिक। जयमंगलागढ़क सुखासन पोजमे शिव–पार्वतीक मूरूत अद्वितीय अछि। अपन दहिना हाथकेँ शिवक दहिना कन्हापर राखि पार्वती महादेवक वामा जाँघपर एहि मुरूतमे बैसल छथि। शिव अपन बामा हाथसँ पार्वतीक संग गाढ़ालिङ्गनबद्ध भेल छथि आ शिवक हाथ पार्वतीक स्तनकेँ छुएत छन्हि। एहि प्रकारक मुरूत तांत्रिक क्षेत्रसँ विशेष भेटल अछि। एहेन टुटल–फुटल मुरूत महिषीमे सेहो बहुत रास अछि आ तारा (खदिरवणी)क मुरूत सेहो पालकालीने थिक। जयमंगला आ महिषी दुनू प्रसिद्ध तांत्रिक केन्द्र मानल जाइत अछि। तांत्रिक साधक लोकनि सुखासन पोजमे बैसल शिवक कोरामे पार्वतीकेँ अपना मोनमे केन्द्रित कए साधना करैत छथि। नारायण पालक अभिलेखसँ स्पष्ट अछि जे कौशिकी कच्छकेँ क्षेत्रमे एक हजार शिव मन्दिरक स्थापनाक हेतु दान देल गेल छल। निश्चित रूपें एहि सभ क्षेत्रमे स्थापत्य कलाक पूर्ण विकास भेल होएत। सुन्दर रीतिसँ अभिकल्पित स्तंभ हमरा लोकनि नौलागढ़, जयमंगलागढ़ आ संहौलसँ भेटल अछि जाहिसँ स्थापत्यक सम्बन्धमे ज्ञान प्राप्त होइत अछि। इमादपुर (मुजफ्फरपुर)सँ धातुक मूर्त्ति सेहो भेटल अछि। पालयुगमे तीरभुक्तिमे बौद्ध आ तांत्रिक संप्रदायक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि।

कलाक दृष्टिकोणसँ मिथिला कहियो कोनो रूपे बाँझ नहि रहल आ सभ युगमे किछुने किछु कलात्मक वस्तुक निर्माण एहिठाम होइते रहल। मूर्त्तिकला आ स्थापत्यमे सेहो मिथिला पछुऐल नहि छल। स्पूनर तिरहूतक किछु मन्दिरकेँ मिथिला आ तिरहूतक शैलीक मानैत छथि–

i) बगहाक हरमंदिर (चम्पारण)
ii) त्रिवेणीक कमलेश्वरी नाथक मंदिर (चम्पारण)
iii) सौराठक महादेव मंदिर (मधुबनी)
iv) अहियारीक रामचन्द्रक मंदिर (दरभंगा)
v) सुबेगढ़क भगवती मंदिर (मुजफ्फरपुर)
vi) शिवहरक शिवमंदिर (मुजफ्फरपुर)
vii) मुजफ्फरपुरक राम मंदिर
viii) सिमराँव गढ़क कंकाली देवीक मंदिर।

एम्हर जे बहेड़ामे उत्खनन भेल अछि ताहुसँ एकटा मंदिरक अवशेष भेटल अछि जकर विवरण हम आनठाम प्रकाशित करौने छी।

बहेड़ाक उत्खननसँ मंदिरक मिथिला शैलीपर प्रकाश पड़इयै। स्पूनरक ध्यान कंदाहाक सूर्यमंदिर दिसि नहि गेल छलन्हि जाहिसँ हुनका इ बुझनामे आबतन्हि जे ओइनवार लोकनिक समयमे स्थापत्य कलाक स्वरूप कि छल। भगीरथपुर उत्खननसँ सेहो बुझना जाइत अछि जे ओहिठाम एक मंदिरक निर्माण भेल छल जे काल–क्रमेण टुटि गेल मुदा जकर अवशेष उत्खननसँ प्राप्त भेल अछि। श्रीधरदास (कर्णाट काल)क कमलादित्यक मंदिरसँ मन्दिर बनेबाक जे परम्परा मिथिलामे प्रारंभ भेल से बरोबरि चलिते रहल आ मन्दिर बनेबाक क्षेत्रमे मिथिला निश्चितरूपे अपन एकटा अलग शैलीक निर्माण केलक।

शिल्प एवँ वास्तुकलामे सेहो मिथिला पछुऐल नहि छल आ वेलवा (सारण)सँ भीठ भगवानपुरक अवशेषक अध्ययन केलासँ एहि बातक पुष्टि होइत अछि। वेलवा आ भीठ भगवानपुरक कलापर कामशास्त्रक प्रभाव स्पष्ट अछि आ एहिसँ इहो साफ देखबामे अवइयै जे कलाक क्षेत्रमे ओ लोकनि वस्तुस्थितिकेँ नहि बिसरने छलाह। मूर्त्तिकलाक क्षेत्रमे सेहो प्रचुर सामग्री भेटल अछि। हाजीपुरसँ पुर्णियाँ धरि मूर्त्तिकला (पाथर आ माँटि)क असंख्य अवशेष भेटल अछि। वैशाली, लौरिया नंदन गढ़, अरेराज, पुनौरा, जनकपुर, दरभंगा, भगीरथपुर, देकुली, बहेड़ा, बलिराजगढ़, लदहो, बौराम, बाउर, भीठ भगवानपुर, बरौनी, जयमंगलागढ़, नौलागढ़, असुरगढ़, अलौलीगढ़, बीहट, वीरपुर, संहौल, पटुआरा, महिषी, बलबागढ़ी, हरदी, परसरमा, अन्हराठाढ़ी, श्रीनगर, पुरैनिया, सिकलीगढ़, आदि स्थानसँ प्राप्त विभिन्न युगक मूर्त्तिकला उपलब्ध अछि। लौरिया नंदनगढ़सँ स्वर्ण मूर्त्ति (मातृ देवता-पृथ्वी) भेटल अछि। भीठ भगवानपुरक मुरूत सभकेँ विद्यापति गीतक साकार रूप मानल जा सकइयै। मैथिल शासक मूर्त्तिकला शैलीकेँ यथाशक्ति जीवित रखबाक प्रयास केलन्हि मुदा पालयुगीन सफलता हुनका लोकनिकेँ नहि भेट सकलन्हि। प्राचीन कालसँ अद्यावधि मिथिलामे कखनो मूर्त्तिकलाक नेऽ तँ ह्रास भेल आ नेऽ लोपे। एखनो मिथिलाक माँटिक मुरूत देखबा योग्य होइछ। संहौलसँ प्राप्त एक मुरूत कारी पाथरक (पत्रलेखन मुद्रामे नायिका) बेगूसराय काँलेजक संग्रहालयमे राखल अछि जे कोनो अर्थे खजुराहो आ भुवनेश्वरक तुलनामे कम नहि अछि। ओहने एक शाल भंजिकाक मुरूत सेहो अछि। सूर्यक मुरूतक उल्लेख तँ कइये चुकल छी। बहेड़ासँ एकटा काँसाँक मुरूत सेहो भेटल अछि जकर बनाबट कुर्किहारक मूर्त्तिकला सन छैक। भवन निर्माण कलाक क्षेत्रमे मिथिला अपन गौरवक निर्वाह केने छल। मुजफ्फरपुरक मंदिरक सम्बन्धमे स्पूनर साहेब कहने छथि जे ओ **'नवरत्न टाइप'**क विशिष्ट उदाहरण थिक। सिमरौनगढ़क अवशेषसँ कर्णाटकालीन भवन निर्माणक उदाहरण भेटइत अछि। सिमरौनगढ़ कर्णाट लोकनिक राजधानी छल आ ओतहि रामसिंहक समयमे तिब्बती यात्री धर्मस्वामी आएल छलाह। ओ सिमरौनगढ़क जे वर्णन उपस्थित कएने छथि ताहिसँ बुझि पड़इयै जे सिमरौन संगठित एवँ सुनियोजित नगर छल आ ओकरा चारूकात विशाल किलाबंदी छलैक। सिमरौनसँ प्राप्त अवशेषसँ इ प्रतीत होइत अछि जे नीचाँ मे पहिने पाथरक आधार देल जाइत छल आ ताहिपर सँ चिक्कन ईंटाक नींव दऽ कए भवन बनैत छल। पाथर आ ईंटापर तरह–तरहक नक्कासी सेहो होइत छल आ बलिराजगढ़सँ प्राप्त ईंटापर मनुक्खक तरहथीक छाप देखल गेल छैक। नक्कासीदार ईंटा बहेड़ासँ सेहो प्राप्त भेल अछि। एकटा ईंटापर अश्वमेध घोड़ाक छाप अछि आ दोसरपर कोनो तांत्रिक चक्रक। मैथिल संस्कारक अध्ययन एहेन–एहेन

कलात्मक वस्तुक उपलब्धिसँ सेहो भऽ सकैछ। जतवा धरि जे अखनो धरि मिथिलामे प्राप्त भेल अछि तकरा कलात्मक दृष्टिसँ अन्यतम कहि सकैत छी।

मिथिलाक अपन वैशिष्ट ओकर भित्तिचित्र, अइपन, कोहवरमे छैक जे अद्यावधि **"मिथिला पेंटिङ्गस"**क नामे प्रसिद्ध भए देश–विदेशमे नाम अर्जन केलक अछि। अरिपनक आधार तँ ओना पुराणमे सेहो अछि मुदा तंत्रसँ इ कम प्रभावित नहि अछि। अइपन–कोहवर लिखब एक विशिष्ट कला बुझल जाइत छल आओर मिथिलाक प्रत्येक नारीमे एहिमे सिद्धहस्थ होएब आवश्यक बुझना जाइत छल। कोबरा–मड़बाक चित्र सेहो बनइत छल आ एकटा पाण्डुलिपिक मुख्य पृष्ट मड़बाक चित्र हमरा बरौनीसँ प्राप्त भेल अछि। ओहि चित्रमे वरपक्ष आ कन्यापक्षक लोग पाग पहिरने मड़बापर बैसल देखल जाइत छथि। एहि चित्रकेँ हम विशेष महत्वपूर्ण मनैत छी कारण एहेन पाण्डुलिपि हमरा आ कतहु देखबामे नहि आएल अछि। इ पाण्डुलिपिक पृष्ट छान्दोग्य विवाह पद्धतिक पाण्डुलिपिक एक पृष्ट थिक। कागजपर चित्र बनाएब सेहो मिथिलाक पुरान कला थिक आ बारहम शताब्दीक एक पाण्डुलिपिपर एक ताराक चित्र बनल अछि जाहिमे तीरभुक्ति आ वैशाली दुहुक उल्लेख अछि। भित्तिचित्र, कोहबर, अइपन, आदिमे दुर्गा, सीता, काली, राधा, रामकृष्ण, शिव, आदिक चित्र बनैत अछि आओर मिथिलामे एहेन कोनो उत्सव नहि होइत अछि जाहिमे चित्रादि नहि बनैत हो। सभ अवसरक हेतु निर्धारित चित्रमाला अछि। सूर्य, चन्द्रमा, बाँस, कमल, तोता, मैना, माँछ इत्यादिक प्रयोग सेहो एहि चित्र सभमे होइत अछि। चित्र बनेबाक पाछाँ एक विशिष्ट कथा साहित्य एहिमे जूटल अछि जकर संग्रह आ अध्ययन अपेक्षित बुझना जाइत अछि। आर्थर सेहो एहि क्षेत्रमे किछु काज केने छथि आ आबतँ सहजहि एहि कलाक अंतराष्ट्रीय प्रसार भऽ गेल अछि। मिथिलामे करण कायस्थ आ ब्राह्मणक परिवार एकरा एखनो धेने अछि। सिक्की, मौनी, सूप, डाला, कोनिया आदिपर सेहो चित्र बनेबाक प्रथा अछि। सिक्कीक तँ बहुत रास कलात्मक वस्तु बनाओल जाइत अछि। एहि सभ कलाकेँ गृहकला कहल गेल छैक आ मिथिलामे अति प्राचीन कालहिसँ इ सभ प्रथा चलि आबि रहल अछि। एहिमे तरह–तरहक रंगक व्यवहार होइत अछि जेना गुलाबी, पीअर, हरिअर, लाल, सुगा पाँखिक रंग इत्यादि। एक प्रकारक माँटि सेहो ओहन होइत छल जाहिसँ रंग तैयार कैल जाइत छल।

संगीतक क्षेत्रमे मिथिलाक योगदान ककरोसँ कम नहि रहल अछि। कर्णाटवंशक संस्थापक नान्यदेवक शासन कालमे संगीतमे बहुत रास नवीन राग आ भासक प्रयोग शुरू भेल। नान्यदेव स्वयं एक महान संगीतज्ञ छलाह। सारंगदेव अपन **संगीत रत्नाकर**मे एहि बातक उल्लेख केने छथि। नान्यदेव स्वयं **'सरस्वती हृदयालंकार'** नामक एक प्रसिद्ध ग्रंथक रचयिता छलाह। श्रीधर दासक अन्धराठाढ़ी अभिलेखमे कहल गेल अछि जे नान्यदेव **'ग्रंथमहार्णव'** नामक पोथीक रचयिता सेहो छलाह। नान्यदेव संगीतमे 160राग सभहिक वर्णन केने छथि। नान्यदेवक स्थापित कैल परम्परा संगीतक क्षेत्रमे मिथिलामे सदति व्याप्त रहल। मिथिलामे एकपर एक संगीतज्ञ सभ युगमे भेल छथि। **पुरूष परीक्षा**क एक कथासँ ज्ञात होइछ जे हरिसिंह देव स्वयं सेहो एकटा पैघ संगीतज्ञ छलाह। ज्योतिरीश्वर ठाकुर, सिंह भूपाल, जगज्योतिमल्ल, आ लोचन प्रसिद्ध संगीतज्ञ भऽ चुकल छथि। विद्यापति आ लखिमाक नाम सेहो एहि क्षेत्रमे अमर अछि।

पूर्व समयमे भवभूति नामक एक ब्राह्मण रहैथ जे नवीन धुनि (ध्वनि) सभमे गीत बनौलन्हि। ओहि समयमे सुमति नामक कायस्थ पश्चिमसँ आबिकेँ हुनकासँ सभ कला

सिखलन्हि आ राजसभामे ओकर प्रदर्शन केलन्हि आ ताहियासँ ओ कलावान, कथक, कलाओत आदिक नामे प्रसिद्ध भेला। हुनक संततिमे कतेको व्यक्ति **"मल्लिक"**क उपाधि धारण केलन्हि। सुमतिक पुत्र छलाह उदय आ हुनक पुत्र जयत भेलाह। जयत सुश्वर गायक छलाह तैं शिवसिंह हुनका विद्यापति ठाकुरक समीप शिक्षार्थ समर्पण कैल। विद्यापति हुनका हेतु नवीन–नवीन धुनि सभहक कल्पना कए गीत बनौलन्हि जकर अग्रगायक राजसभामे जयत भेला। जयतक पुत्र कृष्ण देशी रागमे गान करैथ। हुनक पुत्र भेला हरिहर मल्लिक आ हुनक पुत्र घनश्याम विशिष्ट गायक भेलाह। घनश्यामक पुत्र सभ देशी सम्प्रदायक गानमे निपुण भेलाह। तदनुसारहिं लोचन कवि एवँ नरपति ठाकुर तिरहूत राग सभहिक प्रचार केलन्हि। **रागतरंगिणी**मे गीतक भनिता अछि ताहिमे नरपति आ महिनाथक उल्लेख अछि।

संगीतक क्षेत्रमे मिथिलाक अपन अलग शैली छैक। संगीतमे ओ लोकनि कतेक पारखी होइत छलाह तकर पता **वर्णनरत्नाकर**क भाट वर्णनासँ लगैत अछि। ओहिमे सात प्रकारक गायन दोष आ १४प्रकारक गीति दोषक उल्लेख अछि। पेशेवर गबैयाकेँ विद्यांवित कहल जाइत छल। **वर्णरत्नाकर**मे नृत्यवर्णनाक उल्लेखक संगहि संग लोरिक नाचक उल्लेख सेहो अछि। ढ़ोलकक विभिन्न प्रकारक रस आ तालक वर्णन सेहो अछि। जगद्धर अपन **संगीत सर्वस्व**मे सेहो मैथिल संगीत शैलीक विशद विश्लेषण केने छथि। मिथिला संगीत शैलीक क्षेत्रमे घनश्यामक **श्रीहस्त मुक्तावली** सेहो प्रसिद्ध मानल गेल अछि। संगीतक क्षेत्रमे वंशमणि झाक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि। लोचन अपन **रागतंरगिणी**मे मैथिल रागक सम्बन्धमे निम्नलिखित उद्‌गार प्रगट केने छथि–

*"श्रीमद्विद्यापति कवियितुः काव्यार्णानुवद्वौस्ततत्प्रायानथतदनु गरव्यात गीतैर्विद्वान्।*
*रागानेभ्यः कथमपित्तथा वर्तुलीकृत्य धीमाना प्रेम्णाक्षी मंत्रापरितो लोचनस्तांल्लिलेख"॥*

ओ प्रसिद्ध राग सभहिक उल्लेख सेहो केने छथि।

**रागक उल्लेख:-**

*ललिता विभासी तदनु भैरव्यहिरानि वराड़ीच।*
*गोपीवल्लभ गुजरी रामकली कापशारंगी॥*
*कौशिक कोरा राख्यो वसंतो धनछीतथा।*
*असावारी चश्रीरागो गौड़ा मालव मालवौ॥*
*भूपाली राज विजयनायः कामोद देशाखौः।*
*केदारोऽथ मलारी इत्येते मैथिलाः कथिताः॥*

मैथिल रागक प्रचार ओहिकालमे नेपाल, गोरखपुर, बंगाल आ आसाम धरि भेल छल। संगीत आ नृत्यकला मिथिलामे एक समयमे अपन चरमोत्कर्षपर छल। शुभंकर ठाकुर नृत्य विद्यापर एकटा महान ग्रंथ लिखने छलाह। मैथिल गवैयाक बजाहटि त्रिपुराक राजाक ओतएसँ होइत छलन्हि। संगीतमे मिथिला शैलीक विकासक हेतु लोचनक **रागतंरगिणी** आनिवार्य ग्रंथ बुझना जाइत अछि। हेवनि धरि मिथिला संगीतक प्रधान केन्द्र छल आ पचगछियाक स्वर्गीय रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक दरबार समस्त भारतीय गायक लोकनिक हेतु एकटा बड़का आश्रय छल। हुनके एहिठाम माँगन खबास प्रसिद्ध गबैया छल आ माँगनक शिष्य रघु झा सेहो। लक्ष्मीनारायण सिंह अखिल भारतीय स्तरक प्रसिद्ध संगीतज्ञ छलाह आ अपन जमीन्दारीकेँ संगीतक पाछाँ बिलटा देलन्हि।

अध्याय–२०

# मिथिलाक संस्कृति

### I. विषय–प्रवेश

मिथिला एकटा भौगोलिक इकाइ छल अति प्राचीन कालसँ। यजुर्वेदक समयसँ **'मैथिल'** शब्द एक संस्कृतिक परिचायक छल आ मिथिलाक भौगोलिक इकाईक अंतर्गत जे केओ रहैत छलाह से **'मैथिल'** कहबैत छलाह। अधुना एकर अर्थ दोसर लेल जाइत अछि परञ्च प्राचीन कालमे से बात नहि छल। मैथिल संस्कृतिक विकास कालक्रमेण होइत गेलैक आ **'मैथिलत्व'** जे अपन एकटा व्यक्तित्व छैक तकर पूर्णोत्कर्ष विद्यापतिमे आबिकेँ भेल।

प्राचीन कालक मिथिक संतान **माथव** कहौलन्हि आ ओहिसँ **'मैथिल'** शब्दक आविर्भाव भेल। अर्जुन आ श्रीकृष्णक मध्ये भेल गप्पसँ **'मैथिल'**क चित्र स्पष्ट होइछ। एहिठाम विदेह जनकक कर्मानुष्ठानपर बल देल गेल अछि। **शतपथ ब्राह्मण**क निर्माण मैथिलक हाथे भेल सेहो कहल जाइछ। याज्ञवल्क्यकेँ एकर श्रेय देल जाइत छन्हि– **"याज्ञवक्योहि मैथिलः"**। ब्राह्मण युगमे विदेहक राज्यसभामे याज्ञवल्क्यक सभापतित्वमे वेदमहर्षिगण गूढ़ धर्मतत्वक निर्णय करैत छलाह। मिथिलेकेँ न्यायशास्त्रक उदगम–स्थल मानल गेल अछि आ परम्परानुसार गौतम एवँ कणादकेँ मैथिल कहल गेल छन्हि। मिथिलामे राजर्षिविद्या, सिद्धविद्या, राजविद्या, एवँ आर्षविद्याकेँ क्रमशः वैज्ञान, ज्ञान, ऐश्वर्य एवँ धर्मक नामसँ सम्बोधित कैल गेल अछि। मिथिलामे बुद्धियोगक प्राधान्य रहल अछि। श्रीकृष्ण कर्मानुष्ठानक रूपमे विदेह जनककेँ आदर्श मनने छथि। विद्याकेँ मिथिलाक वैभव मानल गेल अछि।

उपनिषद् कालमे मिथिला विदेहक नामे ज्ञात छल। बृहदारण्यकमे जनककेँ विदेहक राजा कहल गेल छन्हि। विद्या आ दानक हेतु ओ सुप्रसिद्ध छलाह। अपन समकक्षीक मध्य ओ अद्वितीय छलाह। भौतिक दृष्टिकोणसँ सेहो विदेह एकटा सुसंपन्न राज्य छल आ एहिठाम आध्यात्मिक एवँ विद्वतपूर्ण विकासक संभावना विशेष छल। जनक बहुदक्षिणा यज्ञ केने छलाह जाहिमे दूर–दूर देशसँ ब्राह्मण लोकनिकेँ आमंत्रित कैल गेल छलन्हि आ ओहिठाम कुरू–पाँचालक ब्राह्मण सेहो आएल छलाह। वैदिक कर्मकाण्डक प्रधान केन्द्र छल मिथिला ताहि दिनमे। जनक ब्राह्मणकेँ गाय आ सोना दानमे दैत छलाह। ब्रह्मविद्याक गूढ़ तत्वक विश्लेषणक हेतु हिनका दरबारमे एकटा बृहत् जमघट भेल छल विद्वानक जाहिमे ताहि दिन सबटा प्रसिद्ध विद्वान सम्मिलित भेल छलाह। जनक स्वयं एक पैघ दार्शनिक छलाह। एहि जमघटमे याज्ञवल्क्य, आर्तभाग, लाह्यायनी भुज्य, चाक्रायण उषस्त, कौषितकेय कहोल, गार्गी, आरूणी उद्दालक एवँ शाकल्य आदि विद्वान उपस्थित छलाह। बेरा–बेरी याज्ञवल्क्य एहिमे सभकेँ पराजित केलन्हि। जनक याज्ञवल्क्यक विद्वतासँ प्रभावित भेला आ हुनका अपना ओतए रखलन्हि। याज्ञवल्क्यक दूटा पत्नी छलथिन्ह **मैत्रेयी** आ **कात्यायनी**। विदेहक लोग विशेष विद्या प्रेमी होइत छलाह। स्त्री शिक्षा सेहो बड़ड प्रचलित छल।

मैत्रेयी विदुषी छलीह। गार्गीक विद्वताक प्रशंसा तँ बृहदारण्यकमे अछिये। गार्गी याज्ञवल्क्यक संग विवादमे भाग लेने छलीह। याज्ञवल्क्य स्मृतिमे कहल गेल अछि—

"*मिथिलास्थः सयोगीन्द्रः क्षणंध्यात्वा व्रवीन्मुनीन्*"

जनक वंशक राजा सभ योगीश्वर याज्ञवल्क्यक प्रसादे ब्रह्मज्ञानी भेलाह—

"*एते वै मैथिला राजन्नात्म विद्या विशारदः*
*योगीश्वर प्रसादेन द्वन्यैंमुक्ता गृहेष्वपि*"

व्यासक पुत्र शुकदेवजी मिथिलेमे **ब्रह्मविद्या**क शिक्षा प्राप्त केने छलाह। गीतामे श्रीकृष्ण कहने छथि—

"*कर्मणैवहि संसिद्धि मास्थिता जनकादयः*"

एहि सभ तथ्यसँ मात्र एतबे संकेत देल गेल अछि जे मैथिल संस्कृतिक नींव वैदिक युगमे पड़ल आ ओकर बहुमुखी विकास भेल। एक सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रक भौतिक सुविधाक आधारे इ विकास संभव भेल होएतैक एहिमे सन्देह नहि कारण जाधरि चारूकात सुरक्षा एवँ शांति नहि रहैत छैक ताधरि आध्यात्मिक चिंतनक हेतु वातावरण उपयुक्त नहि बुझल जाइत छैक। समस्त ब्राह्मण साहित्य एवँ उपनिषद् मैथिलक कृतित्वक प्राचीनकालक गवाही थिक जकर अवहेलना मिथिलाक साँस्कृतिक इतिहासक अध्ययनक क्रममे नहि कैल जा सकइयै। मिथिलाक सीमाक सम्बन्धमे विवाद भने हो मुदा मैथिली संस्कृतिक प्रवाह जे अविच्छिन्न चलैत रहल अछि आ जकर चरमोत्कर्ष विद्यापतिमे भेलैक ताहिमे सन्देहक कोनो गुंजाइश नहि अछि। अति प्राचीनकालसँ एखन धरि मिथिलाक भूमि संस्कृतिक एक विशिष्ट केन्द्र रहल अछि आ संस्कृतिक ओहि पातर डोरीसँ बान्हल अझुको मिथिलावासी निर्वाह कऽ रहल छथि। ओहि संस्कृतिक अपन जे वैशिष्टय छैक तकर निखार अखनो धरि पूर्णरूपेण नहि भेल छैक। एकर वैशिष्टयक विस्तृत विवरण महाभारतमे भेल अछि—

**"मैथिलस्य"—** शब्दक व्यवहार एहि कथनकँ पुष्ट करैत अछि। बौद्ध आ जैन साहित्यमे सेहो मैथिलक विशिष्टता सुरक्षित अछि। अश्वघोष अपन **बुद्धचरित**मे लिखने छथि—

"*ध्रुवानुजौ यौ बलिबज्रबाहु वैभ्राजमाषाढ़ मथांतिदेवम्।*
*विदेह राजं जनकं तथैव (रामं द्रुमं सेनजित स्वराज्ञः)*"

**बृहदारण्यक उपनिषद**मे अछि—

"*सहोवाचाजातशत्रु सहस्त्रमेतस्यांवाचिदध्मो।*
*जनको जनक इति वैजना धावंतीति*"॥

पाणिनिमे **'मैथिल'** शब्दक उल्लेख मैथिल संस्कृतिक व्यापकता एवँ प्राचीनताक द्योतक थिक। मैथिल आ तैरहूतक एक्के संग व्यवहार **भविष्य पुराण**मे सेहो भेल अछि—

"*निमेः पुत्रस्तु तत्रैव मिथिनमि महानस्मृतः*
*प्रथमं भुजूबलैर्येन तैरहूतस्य पार्श्वतः॥*

*निर्मितं स्वीय नाम्ना च मिथिलापुरमुतमम्।*
*पुरीजनन सामर्थ्याज्जनकः स च कीर्तितः"॥*

**श्रीमद् भागवत**मे कहल गेल अछि–

"*जन्मना जनकः सोऽभूद्वैदेहस्तु विदेहजः।*
*मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता*"॥
"*एते वै मैथिला राजन्नात्म विद्या विशारदाः*
*योगेश्वर प्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि*"।

मिथिलाक जनक एहि परम्पराक स्थापना करबामे समर्थ भेल छलाह जे लोग गृहस्थ रहितहुँ जीवन्मुक्त भऽ सकैत छल आ अपनाकेँ **'विदेह'** कहि सकैत छल। मिथिलाक इ एकटा विशिष्ट देन संस्कृतिक क्षेत्रमे मानल गेल अछि जकर एहेन उदाहरण दोसर ठाम नहि भेटइत अछि। जखन व्यासजीक पुत्र शुकदेवजी अपन पितासँ तपश्चर्याक हेतु आज्ञा मंगलन्हि तखन व्यासजी हुनका योगिराज जनकक दृष्टांत रखैत कहलथिन्ह जे अहाँ घरोमे रहिकेँ तपस्या कऽ सकैत छी। अहिसँ जखन ओ संतुष्ट नहि भेला तखन हुनका राजर्षि जनक ओतए उपदेश ग्रहण करबाक हेतु पठाओल गेलैन्ह। देवी भागवतमे एहि प्रसंगक उल्लेख अछि। मिथिला पहुँचलापर शुकदेवजी जनकक द्वारपालक प्रश्न **"किं सुखं, किं दुखम्"** प्रश्नसँ आश्चर्यचकित भऽ गेलाह। एहि प्रश्नक समीचीन उत्तर देने बिना ओ भीतर नहि जा सकैत छलाह परञ्च जखन जनकजीकेँ हुनक आगमनक सूचना भेटलन्हि तखन ओ हुनका स्वागतक संग भीतर लऽ गेलथिन्ह। शुकदेव जी ज्ञान प्राप्त कए मिथिलासँ घुरलाह। कहल जाइछ जे कृष्ण सेहो जनकसँ ज्ञान चर्चाक हेतु मिथिलामे आएल छलाह। महाभारत, ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, रामायण, आदि ग्रंथमे मिथिलाकेँ ज्ञान भूमि कहल गेल छैक। मिथिलाक धर्मव्याधक उल्लेख महाभारतमे भेल अछि जे एक क्रोधी ब्राह्मणकेँ गृह तपस्याक शिक्षा दए गृहस्थ बनौने छलाह।

आनन्द रामायणक अनुसार रावण त्रिलोक सुन्दरी लक्ष्मीरूपा पद्माक रूपगुणक प्रशंसा सुनि ओकरा प्राप्त करबाक हेतु उताहुल भऽ गेल छलाह आ अंततोगत्वा रत्नरूपमे परिणत पद्माकेँ प्राप्त कए अपना ओतए आनि पूजाक पेटीमे रखलन्हि। दोसर दिन जखन मन्दोदरीकेँ देखेबाक हेतु पेटी खोलल गेल तँ ओहिमे एकटा विकराल सहस्त्रमुखी पद्माकेँ देखि रावण त्रस्त भऽ गेल तखन पद्मा रावणकेँ कहलन्हि– "*अहाँ एहिठाम आनिकेँ हमर जे अपमान कैल अछि ताहिमे अहाँक नष्ट निश्चित अछि। अहाँ अविलंब हमरा अपना ओतए धऽ आउ गेऽ आ ओतहि हमरा माँटिमे गारि दियह। हजार वर्षक पछाति ओहि पवित्र भूमिसँ जखन हम पुनः उत्पन्न होएब तखन अहाँ अपन नाशकेँ अवश्यम्भावी बुझि लेब*"। इएह सीता भऽ कए जन्म लेलथि।

मिथिलाक धार्मिक महत्व विवरण निम्नलिखित उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि–

**देवी भागवत**क छठम् स्कन्धमे मिथिलाक सम्बन्धमे कहल गेल अछि–

"*एवँ निमिसुतो राजा प्रथितो जनकोऽभवत्*
*नगरी निर्मिता तेन गंगातीरे मनोहरा।*
*मिथिलेति सुविख्याता गोपुराट्टाल संयुता*
*धनधान्य समायुक्ता हट्टशाला विराजिता*"॥

**बृहद्विष्णुपुराण:-**

*"तत्रयात्रा महापुण्या सर्वकामसमृद्धिनी*
*इयंतु मिथिला पुण्या स्वयं रामस्वरूपिणी॥*
*मिथिला सर्वतः पुण्या सुराणामपि दुर्लभा।*
*अतस्तीर्थेषु सर्वेषु मिथिला पूज्यते सदा॥*
*माया पुर्जादिकाः प्रोक्ताः सामान्येन विमुक्तिदाः।*
*यैषा तु मिथिला राजन् विष्णु सायुज्य कारिणी"॥*

**यामलसारोद्दार:-** (शिवजनक संवाद - '**बृहदविष्णुपुराण**')

*"बैकुण्ठगान पुरस्कृत्य लोकाल्लंक्ष्मी रवातरत्।*
*बैकुण्ठस्तु निजांशेन मिथिला भूमिमाविशत्॥*
*अतोनिवास भूमिस्ते सर्वस्थानाद्विशिष्यते।*
*बैकुण्ठान्नकला न्यूना दृश्यते मिथिला मया॥*
*मिथिला वासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।*
*देहांते राघवं प्राप्य तद् भक्तैः सह मोदते"॥*

मिथिलाक तीर्थ सभहिक नामक विवरण सेहो **रामायण, विष्णुपुराण, स्कन्दपुराण** आदि ग्रंथ सभमे भेटइत अछि। अगस्त्य रामायणमे निम्नांकित वर्णन अछि–

*"वैदेहो पवन स्यांते दिश्यैशान्यां मनोहरम्।*
*विशालं सरस्तीरे गौरीमंदिरमुतमम्॥*
*वैदेही वाटिका तत्र नाना पुष्पसुगुम्फिता।*
*रक्षिता मालिकन्याभिः सुर्वर्तुसुखदाशुभा॥*
*प्रभाते प्रत्यहंतत्र गत्वा स्नात्वालिभिः सह।*
*गौरीमपूजयत्सीता मात्राज्ञप्ता सुभक्तितः"॥*

**स्कन्दपुराण:-**

*"आसीद् बह्मपुरी नाम्ना मिथिलायाँ विराजिता।*
*तस्यां लसति धर्मात्मा गौतमोनाम् तापसः॥*
*अहल्यानाम तत्पत्नी पतिभक्ता प्रियंवदा।*
*सर्वलक्षण सम्पन्ना सासीत्सर्वांगसुन्दरी"॥*

**बृहद विष्णुपुराण:-**

*"गौतमस्या श्रमे याम्ये पातालोस्थित पाथसि।*
*स्तात्वाकुण्डेनमेद्भक्तया ययुः पाठफलंलभेत्"॥*
*"विभाण्डको महायोगी दक्षिणो निवसत्यसौ।*
*गौतमस्याश्रमात्पुण्याधाम्य पश्चिम कोणके"॥*

एहिसँ स्पष्ट अछि जे विभाण्डक मुनिक आश्रम गौतमाश्रमसँ सटले छल। मिथिला मात्र अध्यात्म विद्येटामे नहि अपितु शस्त्र आ शास्त्र दुहुक हेतु प्रसिद्ध छल। पराशर मैत्रेय संवादमे कहल गेल अछि जे सभ ठाम आ सभ समयमे जाहिठाम शत्रुक मथन होइत हो उएह जनक निर्मित मिथिला थिक।

*"अंतोवहिश्च सर्वत्र मथ्यंते रिपवः सदा।*
*मिथिला नाम सा ज्ञेया जनकैश्च कृता मही"॥*

एहि पक्षपर रामायणमे सेहो विशद् विश्लेषण भेल अछि। जनक विषय विरागी रहितहुँ राज–काज किंवा साँसारिक कर्तव्यसँ कथमपि विमुख नहि रहैत छलाह। तैं तँ हुनका राजर्षि, जीवन्मुक्त, योगी आ विदेह कहल गेल छन्हि। रामायणमे कहल गेल अछि जे राजा सुधन्वा मिथिलापर घेरा डालिकेँ शिवधनुष जनकक ओहिठाम पठाकेँ पद्माक्षी सीताक याचना केलन्हि। जनक एहिबातकेँ नहि मानलन्हि जकर नतीजा भेल युद्ध। राजा सुधन्वाकेँ मारि ओ साँकाश्यमे अपन वीर भ्राता कुशध्वजक अभिषेक केलन्हि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे जनक व्यावहारिक सेहो छलाह।

वैशाली अपन गणतांत्रिक शासन पद्धतिक हेतु विश्वविख्यात छल एवँ जैन धर्म आ बौद्ध धर्मक प्रसार केन्द्रक हेतु सेहो। वैशालीक गरिमासँ स्वयं गौतमबुद्ध एतेक प्रभावित छलाह जे एहि स्थानकेँ ओ तावतिंश देवसँ तुलना कएने छथि। वैशाली लोकनि नागरिकताक कलामे अपना समयमे अपूर्व छलाह आ ताहि दिनमे चारूकात हिनक यश छिड़िऐल छल। चम्पारण तँ सहजहि वैदिक कालहिसँ प्रसिद्ध साँस्कृतिक केन्द्र छल। लौरिया नंदनगढ़मे ८०फीट उँच्च स्तुप भेटल अछि आ ओहिठाम वैदिक समाधिभूमिक टिलहासँ एकटा स्वर्णपत्रपर अंकित पृथ्वीमाताक चित्र भेटल अछि जे कैक मानेमे अपूर्व अछि। ओहिठाम एकटा अशोकक स्तंभ सेहो अछि जाहिपर अशोकक धर्मोपदेश अंकित अछि। आधुनिक युगोमे महात्मा गाँधी अपन अहिंसात्मक संघर्षक प्रयोग सेहो एहिठामसँ प्रारंभ केने छलाह। **'हरिहर क्षेत्र'** मिथिलाक एकटा महान धार्मिक केन्द्र मानल गेल अछि आ पुराणक अनुसार गजग्राहकक युद्ध एतहि भेल छल। धार्मिक आर्थिक आ सामाजिक बिकासक क्रममे मिथिलाक विशिष्ट योगदान रहल अछि। एहिठाम इ उल्लेख करब आवश्यक बुझना जाइत अछि जे दरभंगाक महाराज स्वर्गीय रमेश्वर सिंहक सत्प्रयासे हरिद्वारमे गंगा नहरक बाँधकेँ कटबाओल गेल आ गंगाक रूकल प्रवाहकेँ पुनः भगीरथ–खातमे आनल गेल जाहिसँ हमरा लोकनिकेँ गंगाक दर्शन भरहल अछि। मिथिलामे हुनका **'अपर–भगीरथ'** कहल जाइत छन्हि। जखन खादीक आन्दोलन प्रारंभ भेल तखन अखिल भारतीय खादीक केन्द्र मधुबनीमे स्थापित भेल आ अद्यावधि ओ चलल आबि रहल अछि आ खादीक प्रामाणिकताक हेतु मधुबनीक नाम आवश्यक मानल जाइत अछि। ओना मधुबनी हस्तशिल्प आ कुटिरशिल्पक हेतु सेहो प्रसिद्ध अछि।

मिथिलाक संस्कृतिक विकास कोनो एक दिनमे अथवा एक ठाम नहि भेल छल। मिथिलाक सीमा काफी विस्तृत छल आ एकर सभ क्षेत्र सारणसँ महानंदा धरि कोनो ने कोनो रूपें मैथिल संस्कृतिक विकासक स्रोत छल। जैन आ बौद्ध साहित्यक अतिरिक्त आरो बहुत रास साहित्यिक साधन अछि जाहिमे मिथिलाक संस्कृतिक विवरण भेटइत अछि आ जकर मूल्याँकन अद्यावधि नहि भऽ सकल अछि। मैथिल संस्कृतिक विशिष्ट अध्ययनक हेतु एक एहेन दलक आवश्यकता अछि जे वर्षों एहि काजक हेतु अपनाकेँ समर्पण कऽ दैथि आ तखने एकर सर्वांगीण अध्ययन संभव भऽ सकत। सोमदेवक **'यशस्तिलक चम्पू'**मे हमरा लोकनि **'तिरहूत रेजिमेंट'**क उल्लेख भेटइयै जाहिसँ बुझना जाइत अछि जे एहिठामक निवासी युद्ध विद्यामे सेहो निपुण होइत छलाह आ एहिठामक **'रेजिमेन्ट'**क विशेष महत्व रहैत छल। साहित्यक क्षेत्रमे **'मैथिल रीति'**क उल्लेख भेटइत अछि जे एहि बातक द्योतक थिक जे **गौड़ीय** आ **'वैदर्भी रीति'**क अतिरिक्त एकटा **'मैथिल रीति'** सेहो एकटा स्कूलक

प्रतिनिधित्व करैत छल। कलामे मिथिलाक अपूर्व योगदान रहल अछि। हस्तकला, शिल्पकला, चित्रकला, आदि जे हेवनिमे अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त केलक अछि। मैथिलत्वक अपन विशेषता तँ एहने छलैक जे विद्यापति बाध्य भए एहि गुणकेँ अपन **'पुरूष परीक्षा'**मे वर्णन केने छथि। **'विद्यापति'**मे आबिकेँ मैथिल संस्कृति अपन चरमोत्कर्षपर पहुँचल आ मैथिलक व्यक्तित्वक शुद्ध रूपें निखार ओहिठाम आबिकेँ भेल।

बिहारक आन भागक अपेक्षा मिथिलेटा एकटा एहेन क्षेत्र अछि जकर अपन साँस्कृतिक वैशिष्ट्य अखन धरि बनल छैकि आ जकर एकटा साँस्कृतिक खण्ड कहल जा सकैत अछि–अपन लिपि, अपन कला, अपन सामाजिक संस्कार, अपन भौगौलिक इकाई, अपन साहित्य एवँ अपन कानूनक स्कूल तथा परम्परा एकरा एखनहुँ अपन व्यक्तित्व प्रदान केने छैक जे आन कोनो क्षेत्रमे नहि देखबामे अवइयै। रहन–सहन, खान–पान, विधि–व्यवहार, नियम–परिनियम, सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक समानता आ भाषा एवँ साहित्यक श्रृखंलाबद्ध विकास क्रम तथा साँस्कृतिक गतिविधिक अविच्छिन्न प्रवाह एवँ एकरूपता मिथिलाक साँस्कृतिक परम्पराक द्योतक थिक आ इएह कारण थिक जे एकर व्यक्तित्वक वैशिष्टय अखनो धरि सुरक्षित अछि। **'मिथिला'**, **'मैथिल'** शब्दसँ एकटा संस्कृतिक बोध होइत अछि आ एहि नामसँ हम अखिल भारतमे कतहु समादृत भऽ सकैत छी आ व्यक्तिगत रूपें हम भेलो छी। इ दुनू शब्द मात्र एकटा भौगौलिक क्षेत्रक द्योतक नहि अपितु एकटा संस्कृतिक द्योतक थिक जकर विकासक क्रमक प्रारंभ हमरा यजुर्वेदमे देखबामे अवइयै आ चरमोत्कर्ष विद्यापतिमे।

## II. मिथिलाक संस्कृतिक विशिष्टता - अइपन

**मिथिलाक चित्रकला (अइपन) :-** मिथिलाक अरिपन आब एकटा विश्वकलाक रूपमे परिवर्त्तित भए स्वीकृत भऽ चुकल अछि आ मैथिली कलामे दक्ष लोकनिकेँ आब सरकारी उपाधि सेहो भेटए लागल छन्हि। **'अरिपन'** शब्दक विकास आलेपन अथवा आलिम्पणसँ भेल अछि– **'आलेपन'** 64कलामे सँ एक कला मानल गेल अछि जकरा हमरा लोकनि चित्र अथवा शिल्पकला कहि सकैत छी। अरिपन देबाक प्रथा तँ प्राचीन कालहिसँ चलि आबि रहल अछि। प्रत्येक शुभ कार्यमे कोनो ने कोनो रूपें अरिपन देबाक प्रणाली प्राचीन कालहुँमे छल। शुभ कर्मक अवसरपर **'सर्वतोभद्र'**, **'स्वस्तिक'**, **'षोड़सदल'**, **'अष्टदल'**, आदि एकरे प्रभेद मानल गेल अछि आ एकर प्रमाण हमरा प्राचीन साहित्यमे सेहो भेटइत अछि। निम्नलिखित उद्धरण सभसँ प्रमाण भेटत।

**ब्रह्माण्ड पुराण:-**

"*विवाहो सर्वयज्ञेषु प्रतिष्ठादिषुकर्मषु।*
*निर्विघ्नार्थ मुनिश्रेष्ठ न थोद्वेगाद्धतेषुच॥*
*वासुदेव कथाभिश्च स्तोत्रैरन्यैश्चे वैष्णवैः।*
*सुभाषितैरिन्द्रजालै**र्भूमिशोभाभिरैवः च'*** ॥

भूमि शोभाक विवरण एहिठाम देखबामे अवइयै। इएह भूमि शोभाकेँ हमरा लोकनि अपना ओतए **'अरिपन'** कहैत छी।

**संस्कार रत्नमाला (भट्ट गोपीनाथ कृत):-**

> "*लग्नाहेमातृकाः पूज्याः पूज्या गौरी हरान्विता।*
> *पीठे वै तदलाभे तु सुश्लाक्षणे तण्डुलान्विते॥*
> *पंकज कारयित्वा तु तंत्र गौरी हरौ यजेत्*'॥
> *संस्थाप्य गणपं गौरी काञ्चनी काण्चने गजे।*
> *कृत्वोपवासनियमं गजं गौरीञ्च पूजयेत्*'॥

एहिठाम **"सुश्लक्षण"**, **'ताण्डुलान्वित'** आदिसँ इ भान होइछ जे अरिपनक हेतु चाउर पीसिकँ चौरठ बनाओल जाइत छल आ तखन ओकरा घेरिकँ अरिपन देल जाइत छल। स्वनिर्मित गजक ऊपर गौरी आ गणपतिक पूजनक प्रसंगक विवरण **भविष्यपुराण** आदि अन्याय ग्रंथमे सेहो भेटइत अछि। एहि सभ साधनक आधारपर इ कहल जाइत अछि जे भूमिकँ बढ़िया जकाँ नीपिकँ ओहिपर मंडल आलेपन कए (अरिपन दए) नवघटक स्थापना करबाक चाही।

चण्डेश्वर **कृत्यरत्नाकर**मे लिखने छथि–

"*पूजयेन्मंगलां तत्र मण्डले विधि वत्सदा*'– अर्थात् अरिपन दऽ कए सदैव विधिपूर्वक मंगला देवीक पूजा करी। एहि प्रसंगमे निम्नलिखित ग्रंथ सेहो उल्लेखनीय बुझना जाइत अछि–

**पूजा प्रकाश (वीरमित्र मिश्र):-**

> "*पद्माष्ट दलं तत्र कर्णिका केसरोज्ज्वलम्।*
> *उभाभ्याँ वेदतंत्राभ्याँ मध्ये तुभय सिद्धये*'॥

पूजा प्रदीपमे गोविन्द ठाकुर लिखने छथि– "***यंत्राधारमाश्रित्यैव पूजा विहिता***'।

एकर आरो कतेक रास उदाहरण देल जा सकइयै मुदा स्थानाभावक कारणे एहिठाम ओतेक उद्धरण देब संभव नहि। पर्व भेदसँ नाना प्रकारक अरिपन मिथिलामे स्त्रीगण दैत छथि। अपन चिरंतन संस्कृतिक प्रभावक फलें एहिठाम स्त्रीगणमे इ कलाक विलक्षणता देखबामे अवइयै। प्रत्येक अवसरक फराक–फराक आलेपनक (अरिपनक) विधि छैक। विवाहोत्तर महुअकक शुभ अवसर जे दूटा पुरैनी पातक आकारक अरिपन देल जाइत अछि से भेल वर–वधुक अविच्छिन्न सम्बन्धक प्रतीक। ठीक ओहिना कोजागराक अवसरपर लक्ष्मीपूजासँ सम्बन्धित अरिपन मखानक तीन पातक आकारक बनाओल जाइत अछि। पृथ्वी पूजाक अवसरपर त्रिकोण यंत्राकार, देवोत्थानमे **प्रवोधिनी**, साँझक **'मंदिराकार'** आ **तुलसी पूजा**क अरिपनक अलग विधान अछि। सभ पर्वपर अलग–अलग अरिपन देबाक परिपाटी मिथिलामे अद्यपर्यंत अछि। सत्यनारायण पूजाक अवसरपर जे **'चौशंख'** अरिपन देल जाइत अछि से बड़ड मार्मिक अछि– **'चौशंख'** चतुर्भुज भगवानक द्योतक थिक। षष्ठी देवीक पूजाक अवसर **'कमलाकार'** अरिपन देबाक प्रणाली अछि। **देवोत्थान** (प्रवोधिनी)क सम्बन्धमे चण्डेश्वर लिखैत छथि–

> "*वासुदेव कथाभिश्च स्त्तोत्रैरन्यैश्च वैष्णवैः।*
> *सुभाषितैरिन्द्रजालैर्भूमिशोभाभिरेवच*'॥

'***भूमि शोभा*** *क अर्थ भेल अरिपन।*

कुल देवताक सम्बन्धमे रूद्रधरक मत छन्हि–

"*ततः कतैक भुक्ता ब्राह्मणी* ***तण्डुल चूर्णेनोपलेपनं***
*विधाय तत्समीपे पूर्व भागो परिफलके पट्टके*

*वा तथैवोपलेपयेत।...एवँ सुन्दरं महावेदि मण्डलं कृत्वैशान्यां ग्रहवैद्यां श्वेत वर्णिकयाऽष्टादशदलं पद्मं विलिरव्य....*"

हेमाद्रि सेहो अरिपनक उल्लेख केने छथि आ श्रीहर्षक **नैषधीय चरित**मे सेहो एकर विवरण एवँ प्रकारे अछि–

"*धृत लाञ्छन गोमयाञ्चनं* ***विधुमालेपनपाण्डरं*** *विधि।*
*भ्रमयत्युचितं विदर्भजाऽननीराजनवर्द्धमानकम्*" ॥
*एकर टीकामे नारायण लिखने छथि–*

"*आलेपनम्–पिष्टोदकम्–**अईपण**–इति लोके प्रसिद्धम्*"। आगाँ ओ पुनः लिखने छथि– "*चतुष्कोण निर्माणार्थ हरिद्राचूर्ण मिश्रितं तण्डुल पिष्टं तस्यदाने–**आलेपवरणे** पंडिताः–चतुराः*"॥

विवाह, श्राद्ध, पूजा आदि अवसरक हेतु विविध प्रकारक अरिपन लिखबाक व्यवस्था मिथिलामे प्राचीन कालसँ चलि आबि रहल अछि। विवाहक सप्तपदी प्रकरणक प्रसंगमे सेहो आलेपनक उल्लेख भेटइत अछि। **आलेपन** शब्दक व्याख्या **शब्दकल्पद्रूम**मे सेहो भेल अछि। विद्यापति एकर उल्लेख एवँ प्रकारे केने छथि।

"*ललातरूअर मंडप जीति, निरमल ससधरधवलए भीति।*
*हरि जब आओब गोकूलपुर, घरे–घरे नगर बाजए जयतूर।*
*अलिपन देओब मोतिमहार, मंगलकलसक करब कुचगर*" ॥

वैदिक युगहिसँ मिथिलामे सभटा मांगलिक कार्य सर्वतोभद्रादिमंडलेपर होइत छल। ओना अरिपनक परिपाटी तँ समस्त भारतमे कोनो ने कोनो रूपें अछिये मुदा एहिकलामे मिथिलाक अपन एकटा वैशिष्ट्य छैक। हरिद्रा–कुंकुम–केसर आदिक संग सिन्दूरक संग अरिपन देबाक परिपाटी मिथिलेटामे अछि। मिथिलाक लोक चित्रकलामे अपन एकटा सादगी अछि। इ कला सनातन कालसँ प्रवाहित होइत आएल अछि। मिथिलाक एहिकलामे उन्मुक्त भावना एवँ परिष्कृत शैली, नैसर्गिक अभिव्यंजना एवँ सुरूचिक जे समन्वय देखबामे अवइयै से आनठाम भेटल असंभव। लोक संस्कृतिक एहेन प्राँजल प्रसाद आ कत्ते भेटत? कहल जाइत अछि जे स्वस्तिक अरिपनक प्रारंभ वैदिक युगहिमे भेल छल। **'सर्वतोभद्र'** आ **'स्वस्तिक'**कँ एक्के मानल गेल अछि। मिथिलामे प्रचलित **'अरिपन'** आ अन्यान्य चित्रशैलीकँ **'मिथिला शैली'**क नामसँ सेहो जानल गेल अछि। एकरा आधुनिक विद्वान लोकनि **"मिथिला स्कूल आफ पेन्टिङ्ग"** सेहो कहैत छथि आ अधुना एहि धरोहरकँ संयोगिकँ रखने छथि मैथिल करण कायस्थ आ ब्राह्मण ललना लोकनि। आर्थर महोदय एहि कलाक विशिष्ट अध्ययन केने छथि आ एहि सम्बन्धमे अपन मतो प्रकाशित केने छथि। एहि चित्रक अध्ययनसँ सामाजिक धार्मिक आदिक ज्ञान सेहो होइत अछि। अरिपन आ भित्ति चित्र कालजयी भए एखनो मिथिलाक घर–घरमे व्याप्त अछि।

एहिमे दू प्रकारक भेद अछि। **भित्ति चित्र** आ **भूमि चित्र**। **भूमि चित्र** अइपनक नामे प्रसिद्ध अछि। मिथिलाक सबटा शुभकार्यमे अइपन लिखबाक प्रथा अहुखन बनल

अछि। वीरेश्वर एवँ रामदत्तक लेख सभसँ सेहो एहिबातपर प्रकाश पड़इत अछि। अइपनपर तंत्रक प्रभाव स्पष्ट अछि आ एकर कारण इ थिक जे मिथिला तंत्रक प्रधान केन्द्र छल आ अइपन ओकर यांत्रिक प्रकाश थिक। मैथिल निबन्धकार लोकनि एकर महत्वक विश्लेषण अपना लेख सभमे केने छथि।

**अरिपन**मे मूलतः तुसारी पूजा, पृथिवी, साँझ, मौहक, मधुश्रावणी, द्वादशा, गवहा संक्रान्ति, कोजागरा, सुखरात्रि, षडदल, अष्टदल, स्वस्तिक आदि प्रसिद्ध अछि। **भित्ति चित्र**मे हरिसौं पूजाक चित्र, सरोवर, नयनायोगिन, बाँस, पुरैन, देहरिपरक चित्र, दहीक भरिया, माँछक भरिया, गोपी चीरहरण लीला आदि प्रसिद्ध अछि। डाला, हाथी, कोहवरक घरक हाथी, चुमाओनक डाला, रंग–बिरंगक पहिया आदिक चित्र सेहो प्रसिद्ध मानल गेल अछि। मिथिलामे एखनो उपरोक्त चित्रशैलीक व्यापकता देखबामे अवइयै।

**संगीत:-** संगीत मैथिल संस्कृतिक एकटा अभिन्न अंग मानल गेल अछि। प्राचीन कालहिसँ मिथिलामे संगीतक पद्धति चलि आबि रहल अछि। १४हम शताब्दीमे मिथिलामे संगीतपर सिंह भूपाल **"संगीत–रत्नाकर–व्याख्या"** नामक ग्रंथ लिखने छलाह। १६हम शताब्दीमे जगद्धर **'संगीत सर्वश्व'** नामक ग्रंथ लिखलन्हि आ ओकर तुरंत बाद खड़गराम आ कल्लीराम **"लच्छिराघव"** नामक ग्रंथक रचना केलन्हि। लोचनक **रागतरंगिणी** तँ सर्व प्रसिद्ध अछिये जकर उल्लेख पूर्वहि भेल अछि।

मिथिलामे संगीतक प्रारंभ वैदिक गानसँ मानल जाइत अछि। गौतम, भृगु, विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य आदिक आश्रममे वैदिक यज्ञ आ गान सदैव होइत रहैत छल आ ओ परम्परा मिथिलामे बहुत दिन धरि बनल रहल। जनक विदेहकँ राजदरबार तँ सहजहि एकर आश्रय केन्द्र छल। वैदिक गानमे ऋग्वेदक मंत्रसमूह गाओल जाइत छल। सामवेदक गानक निर्माणमे मिथिलाक अपूर्व योगदान अछि। याज्ञवल्क्य संगीत विद्याकँ मुक्तिमार्गक साधन मनैत छलाह–**"*वीणा वादन तत्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः। तालज्ञश्चा प्रयासेन मुक्तिमार्गेनिगच्छति*'**॥ वैदिक गानमे जकरा स्वरमण्डल कहल गेल अछि ओहि समूहक सात स्वरकँ (स,री,ग,म,प,ध,नी) सप्तक कहल गेल अछि। संगीतक इ सात स्वर अपन–अपन स्थानपर निश्चित बनल अछि। एहि सात स्वरक फेर अलग–अलग समूह सेहो होइछ। १६म–१७म शताब्दीमे दामोदर मिश्र छ टा रागक स्थापना केलन्हि। एक–एक रागक पाँच–पाँचटा रागिणी एवँ हुनक आठ–आठ पुत्र आ आठ–आठ पुत्रवधु। ओ रागकँ पुरूष आ रागिणीकँ स्त्री मनलन्हि। भैरव, मालकोष, हिंडोल, दीपक, मेघ आ श्री– इ छ टा राग भेल। **'गीत गोविन्द'**कँ प्रबन्ध काव्यक गानक रूपमे मानल गेल अछि। "*वाग्देवता चारित्रचित्रित चित्रसद्मा....करोति जयदेव कवि प्रबन्धम्*"।

ओकर बाद एहि श्रेणीमे विदापति ठाकुरक पद्मावली सेहो अबैत अछि। विद्यापति स्वयं एक पैघ संगीतकार छलाह। मिथिलामे **'नचारी'** आ **'लगनी'** अहुखन प्रसिद्ध अछि। मिथिलामे संगीतक मुख्य केन्द्र रहल अछि दरभंगा। **आइन–ए–अकबरी**मे विद्यापतिक **नचारी**क उल्लेख अछि आ संगहि ६रागक ६–६रागिणीक उल्लेख सेहो अछि। पचगछिया मिथिला संगीतक एकटा प्रधान केन्द्र अद्यावधि मानल जाइत अछि। एहिठामक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक दरबारमे माँगन खबास सन प्रसिद्ध गबैया रहैत छलाह। एहि सम्बन्धमे हम पहिने बहुत किछु लिखि चुकल छी तैं ओकरा एहिठाम दोहरैब आवश्यक नहि बुझना जाइत अछि।

**III. मैथिल संस्कृतिक स्तंभ –**

**मैथिल संस्कृतिक किछु प्रमुख स्तंभ:-**

i) **गौतम–** मिथिलाक ब्रह्मपुर गाँवक रहनिहार छलाह। गौतम कुण्ड एवँ अहिल्या स्थानसँ हुनक सम्बन्ध बताओल जाइत अछि।

ii) **याज्ञवल्क्य–** हिनका सम्बन्धमे मतभेद अछि मुदा हिनको मैथिल कहल गेल अछि। महाराज जनकक समकालीन आ योगी छलाह। इ अपनाकँ **"मिथिलास्थस्स योगीन्द्रः"** कहने छथि। हिनक पत्नी मैत्रेयी वेदांतक विदुषी छलथिन्ह।

iii) **कपिल–** मिथिलामे साँख्यक निर्माता मानल जाइत छथि।

iv) **मण्डन मिश्र–** न्याय आ मीमाँसाक अद्वितीय विद्वान सहरसा जिलाक **महिषी ग्राम**क निवासी छलाह। शंकराचार्यसँ हिनक शास्त्रार्थ भेल छल जाहिमे हिनक पत्नी भारती(शारदा) अध्यक्षता केने छलीह। हिनक पनिभरनी शंकराचार्यकेँ बाट देखबैत कहने छलथिन्ह–

"*स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं शुकाङ्गनायत्र विचास्थंति।*
*शिष्योप शिष्यैरूपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम॥*
*जगद् ध्रुवं स्याज्जगद् ध्रुवं आ कीराङ्गनायत्र गिरोगिरंति।*
*द्वारस्थनीडाङ्गणसान्नेरूद्दा जा नीहि तन्मण्डन मिश्र धाम*" ॥

v) **वाचस्पति–** अद्वितीय दार्शनिक जनिक **'भामती'** दर्शनक क्षेत्रमे अपूर्व ग्रंथ मानल गेल अछि। इ सर्वतंत्र स्वतंत्र विद्वान छलाह आ पूर्वी मिथिलाक निवासी छलाह।

vi) **उदयनाचार्य–** ओना तँ करिऔनक निवासी कहल जाइत छथि मुदा पूर्वी मिथिलाक निवासी हेबाक प्रमाण सेहो हिनका सम्बन्धमे भेटइत अछि। ओ पैघ दार्शनिक छलाह आ हिनक निम्नोक्त गर्वोक्ति प्रसिद्ध अछि–

"*वयमहि पदविद्यां तर्क मान्वीक्षिकींवा*
*यदि पथि विपथे वा वर्त्तयामस्सपंथा॥*
*उदयति दिशि यस्यां भानुमान् सैव पूर्वा*
*नहि तरणिरूदीते दिक्पराधीन वृत्तिः*" ॥

हिनक लिखल अनेक ग्रंथ उपलब्ध अछि आ ओ एक विश्वविख्यात दार्शनिक छलाह। मिथिलाक प्रसिद्धिक प्रसारमे हिनक योगदान ककरोसँ कोनो हालतमे कम नहि अछि। कहल जाइत अछि जे जगन्नाथ धाम जेबाक कालमे हिनका मोनमे इश्वर सम्बन्धी संकल्प–विकल्प होमए लागल आ जगदीशपुरी नामक स्थानमे जखन ओ एक मंदिरमे प्रवेश केलन्हि तखन एकाएक मंदिरक केबार बन्द भऽ गेल। इश्वरक प्रति हुनक आस्था बढ़ि गेलन्हि आ ओ लिखलन्हि–

*उपस्थितेषु बौद्देषु मदधीना तवस्थितिः*
*ऐश्वर्य्य मदमत्तस्सवं मामवज्ञाय वर्त्तसे॥*

vii) **गंगेश उपाध्याय–** मंगरौनी निवासी गंगेश न्याय–शास्त्र दुधर्ष विद्वान भेल छथि आ हिनक प्रसिद्ध ग्रंथ **"तत्वचिंतामणि"** अपना विषयक अद्वितीय ग्रंथ मानल गेल अछि। नव–न्यायक जन्मदाता इ छलाह जाहि हेतु मिथिला जगत्प्रसिद्ध भेल।

viii) **अभिनव वाचस्पति–** धर्मशास्त्रज्ञ आ दार्शनिक छलाह आ मिथिलाक धर्मशास्त्र साहित्य एवँ न्याय आ कानूनक सुदृढ़ करबामे हिनक अपूर्व योगदान रहल छन्हि।

ix) **पक्षधर मिश्र–** तार्किकक संगहि संग न्याय–शास्त्रक अद्वितीय विद्वान छलाह। गंगेशक **तत्व चिंतामणि**पर हिनक टीका **'आलोक'** सर्व विदित अछि। हिनके अनुमतिसँ रघुनाथ शिरोमणि नादियामे **'नव–न्याय'**क केन्द्रक स्थापना केने छलाह। तकरा बादहिसँ नादिया नव–न्यायक प्रसिद्ध केन्द्र भेल। इ **'प्रसन्न राघव'** (नाटक) आ **'चन्द्रालोक'** रचयिता सेहो छलाह आ हिनका सम्बन्ध कैक प्रकारक किंवदंती मिथिलामे अहुखन प्रचलित अछि–

"*शंकर वाचस्पत्योः शंकरवाचस्पती सदृशौ।*
*पक्षधर प्रतिपक्षी लक्षीभूतो न च क्वापि*" ॥

x) **शंकर मिश्र–** भवनाथ मिश्र अयाचीक पुत्र शंकर मिश्र मिथिलाक साँस्कृतिक इतिहासक एकटा कीर्त्तिस्तंभ मानल गेल छथि। पाँच वर्षक अवस्था निम्नलिखित श्लोक सुनाकँ मिथिलाक शासककँ इ चकाचौंध कऽ देने छलाह–

"*बालोऽहं जगदानन्दनमे बाला सरस्वती*
*अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम्*" ॥

जखन मिथिलाक शासक एकरा वर्णन करे कहलथिन्ह तखन ओ पूछलथिन्ह जे लौकिक अथवा वैदिक कोन रूपें–तखन महाराज कहलथिन्ह जे दुहु रूपें वर्णन करु–

"*चकितश्चलितश्छत्रः प्रयाणे तव भूपते*
*सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्*" ॥

एहिमे पहिल पांति स्वनिर्मित लौकिक संस्कृत थिक आ दोसर पांति वैदिक मंत्र थिक।

xi) **विद्यापति ठाकुर–**मिथिलाक संस्कृतिक चरमोत्कर्ष भेल महाकवि विद्यापति जे हमरा लोकनिक रक्तमे अद्यतन समाहित छथि आ जिनका बिना मिथिलाक साँस्कृतिक इतिहासक कल्पनो करब असंभव अछि। मैथिल जनजीवनक एहेन कोनो अंश नहि अछि जाहिमे विद्यापति व्याप्त नहि होथि आ इ गौरव एहि रूपें संसारक आन कोनो कविकँ प्राप्त नहि भेल छन्हि। जन्मसँ मृत्यु धरिक सामाजिक संस्कारोपर विद्यापति अद्यावधि व्याप्त छथि आ मैथिल संस्कृतिक विशिष्ट तत्वमे जे किछु एखनो बाँचल अछि तकर एकमात्र श्रेय विद्यापतिकँ छन्हि। मैथिली संस्कृतिक ओ एहेन कीर्तिस्तंभ छथि जकर मूल्याँकन करब अखनो धरि संभव नहि भेल अछि।

ओ मैथिलकँ **'पुरूषार्थ'**क पाठ पढ़ौलन्हि आ **'सुपुरूष'**क कल्पनाकँ साकार करबामे समर्थ भेलाह। **'पुरूष'**क चरित्रक विभिन्न पक्षक विश्लेषण करैत ओ कहने छथि जे विद्या, बुद्धि आ विवेककँ समुचित रूपें उपयोग केनिहार व्यक्तिये मानव कहा सकैत छथि। पुरूषार्थक अर्थे भेल मनुक्खक संतुलित विकास। परम्परावादी होइतहुँ विद्यापति युगपुरूष छलाह आ भविष्यक हेतु संकेत देनिहार सेहो। अपना समयक हिसाबे ओ प्रगतिशील कहल जा सकैत छथि आ विचारमे वस्तुनिष्ठ आ धर्मनिरपेक्ष सेहो। **'विभागसार'** नामक कानूनी ग्रंथ लिखि विद्यापति अपन राजनैतिक पटुता आ

ज्ञानक परिचय तँ देने छथिये, संगहि एहि पुस्तकक माध्यमसँ ओ ओइनवार वंशक एकताकेँ सुदृढ़ रखबामे सेहो सफल भेल छलाह।

विद्यापति मूलरूपेण तीन प्रकारक मैथिली गीतक रचना कए अपनाकेँ अमर कऽ गेलाह आ मैथिल संस्कृतिकेँ नव–जीवन प्रदान कऽ गेलाह। मैथिलीमे एहि तीनू प्रकारक गीतक रचना कए ओ मैथिली भाषा, मिथिलाक संस्कृति माध्यमकेँ सेहो अमरत्व प्रदान केलन्हि। प्रथम कोटिक गीत भेल विभिन्न देवी–देवताक प्रति गाओल गीत सभ जे अद्यावधि मिथिलामे ओहिना प्रचलित अछि जेना ताहि दिनमे रहल होएत। सभ प्रकारक सामाजिक उत्सवपर इ गीत सभ गाओल जाइत अछि आ एहिसँ मैथिल संस्कृतिक एकरूपता देखबामे अवइयै। एकरा सामान्यतः व्यवहार गीत कहल जाइत अछि। दोसर प्रकारक गीत भेल–शिवगीत जाहिमे नचारी आ महेशवाणीकेँ राखल जा सकइयै आ जाहि माध्यमसँ विद्यापति मिथिलाक शोषित–पीड़ित मानव व्यथाकेँ चित्रित करबामे सफल भेल छथि। तेसर प्रकारक गीत भेल सामान्य स्थितिक जीवन–यापन करैत जीवनक उपभोग करैत प्रेम गीत–प्रेमी आ प्रेयसीक मिलन, विरह, संभोग सम्बन्धी गीत जाहिमे राधाकृष्णकेँ आनि चित्रित कैल गेल अछि। एहि दिशामे ओ जयदेवसँ प्रभावित देखना जाइत छथि। प्रेमी–प्रेमिकाक हेतु तँ विद्यापति प्राणदायकेँ कहल जा सकैत छथि कारण मानव द्वारा संभावित एहेन कोनो मनः स्थिति नहि अछि जकर वर्णन विद्यापति नहि केने होथि।

शिव गीतक सेहो तीन रूप देखबामे अवइयै– **i) शिवक स्तुति किंवा प्रार्थना**; **ii) शिव–विवाह**, आ **iii) शिवक पारिवारिक जीवन सम्बन्धी गीत**। साहित्यक इतिहास दृष्टिकोणे विद्यापतिक शिवगीत साहित्यक क्षेत्रमे एकटा अपूर्व देन कहल जा सकइयै जकर दोसर उदाहरण हमरा देखबामे नहि अवइयै। नचारीक हेतु विद्यापति समस्त भारतमे प्रसिद्ध छथि। एकर प्रभाव आनोठाम देखल जाइत अछि खास कए नेपालमे।

त्रैभाषिक नाटक कऽ रचना कए विद्यापति जे आदर्श स्थापित केलन्हि तकरा मिथिलामे हेवनि धरि लोग अनुसरण करैत रहलाह आ हर्षनाथ धरि त्रैभाषिक नाटकक रचना होइत रहल।

मैथिल संस्कृति एकटा अन्यतम उदाहरण जे हमरा विद्यापति गीतसँ भेटइत से भेल शिव–विवाहक गीत–एकटा अपूर्व महेशवाणी जाहिमे पाँचगोट मैथिल विवाह विधिक उल्लेख अछि आ इ गीत **भाषा गीत संग्रह** (संख्या ६६)मे संग्रहित अछि। प्रथमहि एहि संग्रहमे प्रकाशित भेल अछि–एहिमे परिछन, तकरबाद पटिआपर बैसब, महुअक, सासु द्वारा बेदीपर घुमोनाइ, आ पाँचम गौरीक सखी सभ द्वारा महादेवकेँ काजर करब आदि विद्याक उल्लेख अछि जे अहुखन मिथिलामे प्रचलित अछि–एहि महेशवाणीकेँ एतए उद्धृत कैल जाइत अछि–

"*दोला तर नबइते ससि पसि परू, बाघछाल गेल छिड़िआइ।*
*तेहि अमिअ रसे मृगरिपु जिबि उठु, भागें मोए अएलाहुँ पड़ाइ॥*
*दोसर विधि पड़िचाँ चढ़ि बैसलाहे, जषने दिगंबर आइ रे।*
*लाजक लेल गोरि नहि आबए, सखि सभे गेल पड़ाइ॥*
*माइ हे माड़ब मए नहि जेबए, जहाँ बस उमत जमाइ॥*
*पएर धोअए षने दूध पिउल फणि, हर लागल तसु चोरी।*
*सबे सबतहु करताल बजाबए, मधुरहासे हँस गोरी॥*
*सासुहि शंकरवदन उगारल, आँचर छानल ग्रिमपासे।*

*देखि गिरिभाने भोगि कुच चढ़लाह, आओर कि कहब उपहासे॥*
*गोरि सखि मिलि इस सीर धरि, नयन आँजल मन मोहे।*
*एकहाथ नयनानल डाढ़ल, दोसर गिड़ल गंगा गोहे॥*
*भनइ विद्यापति सुनह मन्दाइनि, ओ वर सहजक भोरा।*
*गोरि सहित हर देथु अभयवर, पुरत मनोरथ तोरा*"॥

महादेवक स्वरूप एवँ वेषसँ अदभुत स्थिति उत्पन्न भगेल छल। एहिमे विद्यापति कालीन विवाहक लौकिक विधिक विवरण भेटइत अछि जाहिसँ तत्कालीन मैथिली संस्कृतिक सामाजिक रूपक दर्शन होइछ। एकरा परिछनक गीत सेहो कहि सकैत छी। एहि क्रममे एकटा आर गीत द्रष्टव्य अछि–

"*कौन वर आनल तपसिया,*
*गोरि मुगुध भेलि देखि रंगरसिया॥*
*नयन अनल काजर कहाँ लगाओब।*
*जटा गांग–गोट कैसे कए चुँवाओब॥*
*भुत बरिआती कत्तए जेमाओब।*
*पाँच वदन महुअक कहा पाओब॥*
*पानि पिनाक मुसरे सरे गाबए।*
*बाघछाल ओढ़न किछु न सोहाबए॥*
*भनइ विद्यापति ओ वरदायक।*
*देथु अभय वर ओ जुग नायक*"॥

आँखि आगि रहलाक कारणे काजर कत्तए करबैन्ह, जटामे गंगाक मोनि रहलाक कारणे चुमाओन कोना करबैन्ह, भूत–प्रेत बरिआतीकेँ भोजन कत्तए करेबैन्ह, पाँचटा मुँह छन्हि महुअक कोन मुँहे करेबैन्ह। हाथक पिनाकसँ अठोङ्गर कूटैत।

अहुठाम मैथिल विवाहक विधक विवरण भेटइत अछि आ विद्यापतिक सामाजिक व्यापकताक सेहो। जाहि दृष्टिये देखबा हो देखु। मुदा इ मानए पड़त जे विद्यापति मैथिली संस्कृतिक व्यापकताकेँ जीवंत रखलन्हि आ प्राचीन कालहिसँ चल अबैत परम्पराकेँ एकठा समेटिकेँ मैथिलत्वक वैशिष्ट्यकेँ शिखरपर चढ़ौलन्हि। तैं तँ विद्यापति हमरा लोकनिक संस्कृतिक आलोक स्तंभ छथि।

**IV. मैथिल संस्कृतिक उत्कर्ष–मैथिली भाषा:-** कोनो संस्कृतिक एकरूपताक द्योतक होइछ भाषा आ बिहारमे मिथिलेटा एकटा एहेन साँस्कृतिक क्षेत्र अछि जकर एकरूपताकेँ द्योतित केनिहार मैथिली भाषा अद्यपर्यंत जीवित अछि। मिथिला उपनिषद् युगहिसँ प्रसिद्ध विद्याकेन्द्र रहल अछि आ जखन मगधक प्रबल प्रताप सूर्य डुबियो गेल छलैक तखनहुँ मिथिला अपन संस्कृति आ विद्याकेँ सुरक्षित रखने छल। इतिहासक क्रममे सभ्यता ओ संस्कृतिक जत्तेक अंग–उपांग अछि ताहि सभमे मिथिला अपन स्वतंत्र स्थान बना लेने अछि। अधुना भारतीय सभ्यता मध्य मैथिल संस्कृति एवँ भाषाक विशिष्ट स्थान अछि। मिथिलाक विद्या, संस्कृति एवँ भाषासँ समस्त उत्तरभारत अनुशासित– प्रभावित भेल अछि आ ब्रजलोकसँ आसाम धरि एकर प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रभाव देखल जा सकइयै।

अति प्राचीन होइतहुँ मैथिली एक जीवंत भाषा थिक। बिहारमे मैथिलीक प्रभेद भेल दक्षिण भागलपुरक **'छिकाछिकी'**, चम्पारणक **'मधेशी'** तथा छोट लोकक **'जोलहा'**

बोली आदि। मैथिलीक प्राचीनताक सम्बन्धमे एतबे स्मरण राखब आवश्यक अछि जे **'ललितविस्तर'** नामक बौद्ध ग्रंथमे जे ६४लिपिक विवरण भेटइयै ताहिमे एकटा **'वैदेही'** लिपिक उल्लेख सेहो अछि। मिथिलाक नाम प्रसिद्ध भेलापर उएह लिपि **'मैथिली'** आ **'तिरहूत'**क प्रसिद्ध भेलापर **'तिरहूता'**क नामे प्रसिद्ध भेल। मिथिलासँ असम धरि इएह लिपि प्रचलित अछि। बृद्ध वाचस्पतिसँ अद्यावधि जतबा जे संस्कृतक पंडित, मनीषि एवँ विद्वान भेल छथि से सभ केओ मैथिली लिपि आ भाषाकेँ जीवित रखबाक प्रयास केने छथि आ ओहिमे योगदान सेहो देने छथि। रूचिपति जगद्धर, चण्डेश्वर, विद्यापति आदि व्यक्ति अपन संस्कृत रचनादिमे मैथिली शब्दक प्रचुर मात्रामे व्यवहार केने छथि जाहिसँ बुझना जाइत अछि जे भाषाक रूपमे मैथिलीक स्वीकृति अति प्राचीन कालहिमे भऽ गेल छल। वाचस्पति मिश्र **'भामती'**मे मैथिली शब्द **'हड़ी'**क व्यवहार केने छथि।

मैथिलीक प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ अछि ज्योतिरीश्वर ठाकुरक **'वर्णन रत्नाकर'** जे अपना ढ़ँगक अद्वितीय ग्रंथ मानल गेल अछि आ अपूर्व गद्यग्रंथक हिसाबे पूर्वी भारतीय भाषाक प्राचीनतम ग्रंथ थिक। एहेन अदभुत ग्रंथ भारतवर्षक आन कोनो भाषामे अद्यावधि उपलब्ध नहि भेल अछि। ज्योतिरीश्वर, उमापति, विद्यापति, अमृतकर, अमियकर, गोविन्द दास, केशनारायण आदि कवि–मनीषिक प्रयासे मैथिली १३–१४–१५म शताब्दी धरि समस्त उत्तर पूर्वी भारत एवँ नेपालक एकमात्र साँस्कृतिक भाषा छल आ इ समस्त क्षेत्र एक साँस्कृतिक सूत्रमे बान्हल छल। चारिसे वर्ष धरि नेपालक राजा ओ हुनका सभसँ प्रोत्साहित धुरन्धर विद्वान मैथिल लोकनि मैथिलीमे सहस्त्र काव्य ओ नाटकक रचना केलन्हि। प्राचीन शिलालेख ओ अन्यान्य एतिहासिक साधनसँ इ स्पष्ट होइछ जे एक समयमे मैथिली उत्तर भारतवर्ष आ नेपालमे पूर्ण रूपें व्याप्त छल आ नेपालमे गोरखा शासनक पूर्व धरि एक प्रकारक राष्ट्रभाषे छल।

विद्यापतिक **लिखनावली**सँ सामाजिक स्थितिक ज्ञान होइछ। मिथिलामे बहिया–बहिकिरनीक क्रय–विक्रय होइत छल आ एकर बहुत रास प्रमाणो मिथिलामे यत्र–तत्र भेटल अछि आ एहि प्रश्नकेँ लऽ कए मर मुकदमा सेहो होइत छल। भेष–भाव–भाषा एवँ लिपिपर कोनो जाति आ देशक मर्यादा निर्भर करैत अछि आ एहि दृष्टिये मिथिला–मैथिलीक जे अविच्छिन्न प्रवाह ८–९म शताब्दीमे प्रारंभ भेल छल से अद्यावधि प्रवाहित अछिये जाहिसँ मैथिल संस्कृतिक स्वरूप परिलक्षित होइछ। जाहि मैथिलीक उद्भव एवँ विकास हमरा लोकनि अखन देखि रहल छी तकर उत्पत्ति बौद्ध–गान आ दोहा आदिक कालसँ भेल अछि जे कि निम्नलिखित विवरणसँ स्पष्ट होएत।

८म शताब्दीसँ १२मशताब्दी धरि बौद्ध भिक्षु लोकनि जाहि चलित भाषामे अपन स्फुट दोहा, गीत आदिक रचना केलन्हि तकरे साहित्यमे **'सिद्धगान'**क संज्ञा देल गेल अछि। एहिमे सँ बहुत रास सिद्ध लोकनि बिहारेक निवासी छलाह। सिद्ध लोकनि भाषाकेँ महान भाषाविद लोकनि अपना–अपना ढ़ँगे लेने छथि आ केओ ओकरा हिन्दी, बंगला, असमी, उड़िया आदिक प्राचीन रूप मनने छथि। एहिठाम स्मरण रखबाक अछि जे प्रातः स्मरणीय राहुल सांकृत्यायन एहि सिद्धगानक भाषाकेँ मैथिली मगहीक प्राचीन रूप कहने छथि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक **वर्ण रत्नाकर**मे सेहो एहि सिद्ध सभहिक नाम भेटइत अछि। सिद्ध गानक भाषाक उदाहारणसँ सेहो इ स्पष्ट होएत जे इएह मैथिलीक आदि रूप थिक–

**सरहपाद (८–९म शताब्दी)–**

*जह मन पवन न संचरइ रवि शशि नाह पवेश*
*तहिँ वह चित्त विसाम करू सरहे कहिअ उवेश।*

**विरूपा (९म शताब्दी)–**

*दशम दुआरत चिन्ह देखइया,*
*आइल गराहक अपणो वहिआ।*
*चउसठि घड़िये देह पसारा,*
*पइठल गराहक नाहि निसारा।*

**कम्बलपाद (९म शताब्दी)–**

*खुण्टी उपाड़ी मेलल काच्छि,*
*वाहतु कामलि सद्‌गुरू पुच्छि।*

**कुक्कुरीपाद–**

*दिवसे विहुड़ी काइड़ भाअ राति भइले कामरू जाअ।*
*अइसन चर्य्या कुक्कुरी पाएँ गाइड़ केड़ि मज्झें एकुड़ी एहि सनाइड़।*
*भानो थे कुक्कुरी पाए भवा थेरा जे एथु बुझएँ सो एथुवीरा।*

उपरोक्त गीतमे संचरइ, करू, भाअ, जाअ, अइसन आदि ठेठ मैथिली शब्द जकर प्रयोग अहुखन मैथिलीमे व्याप्त अछि। एहि प्रकारक प्रयोग ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति सेहो केने छथि। **वर्णन रत्नाकर, कीर्तिलता** आ **पदावली**मे एहेन सभ प्रंयोग आ भाषाक साम्य देखबामे अवइयै। **सिद्धगान**क भाषा **वर्णन रत्नाकर** आ **कीर्तिलता**क भाषासँ विशेष भिन्न नहि अछि। एहि कोटिमे **प्राकृतपैंगलम**कँ सेहो राखि सकैत छी। **लोरिक** आ **डाकवचनावली** सेहो प्राचीन अछि।

शंकरदत्त, उमापति आ विद्यापतिक प्रयासे मैथिलीक प्रगति विशेष भेल। उमापतिक मैथिली गीत कोनो साहित्यक शोभा भऽ सकैत अछि। उमापति आ विद्यापति ज्योतिरीश्वरक अपेक्षा चलित मैथिलीक प्रयोग विशेष केने छथि। विद्यापति **'देसिल बअना'**क व्यवहार कए अपनाकँ गौरवान्वित बुझैत छलाह। उमापति आ विद्यापतिक मैथिलीक रूपक बानगी देखब आवश्यक**–**

**उमापति:**

*अनगुन परिहरि हरखि हेरू धनिमानक सबधि विहाने।*
*हिमगिरि कुम्मरि चरण हृदय, धरि सुमति उमापति भाने॥*

**विद्यापति:**

*साँझक वेरां जमुनाक तीरां कदवेरी वनतरूतरा*
*अकमि कानरा कि कहब काला सोझांहि बुझल सखि कुसुमसरा*
*कण्ठ गरल नहि मृगमद चारू फणिपति मोरा नहि मुकुताहारू।*
*भनहि विद्यापति सुन देवंकामा एक दोस अछि ओहि नामक रामा॥*

**गोविन्द दास:**

*कोटि कुसुमसर वरिसय जे पर तेहिकि जलदजल लागि*

*प्रेम दहन कर हृदय जकर पुनि ताहि कि वज्रक आगि।*
*जसु पद तल हम जीवन सौंपल ताहि कि तनु अनुरोध।*
*गोविन्द दास कहए धनि अभिसरू सहचरि आओल वोध॥*

गोविन्द दासक एकाक्षर अनुप्रासक एकटा अन्यतम उदाहरण देखब आवश्यक–

*काँचा कंचन कांति कमलमुखी कुसुमित कानन जोइ।*
*कुंज कुटीर कलावती कातर कान्हु कान्हु की रोइ॥*
*कि कहब कितब कत जे कुल कामिनी कठिन कुसुम सर सहइ।*
*करहि कपोल केश कत कुंनचत कालिन्दीकूल से रहइ॥*

लोचनक रागतंरगिणीमे ३७मैथिल कविक गीत सभ संग्रहित अछि। लोचन ब्रजभाषाकेँ मध्यदेशी भाषा आ विद्यापतिक भाषाकेँ देशी भाषा कहने छथि। लोचन स्वयं ब्रजभाषा आ मैथिलीमे गीत बनौने छलाह। लोचनक एकटा मैथिली गीतक नमूना निम्नांकित अछि–

*साँवर वदन विहुसिया, मधुवन जाइते मिलल तोर रसिकया।*
*सुनासि न मधुर मुरली रव, सुकृत सफलकर सवे समुचित नव।*
*लोचन भन बुझ सरस विमलमति, मधुमति पति महिनाथ महीमति।*

मध्यकालीन मैथिली गद्यक एकटा नमूना–

"हमरा वहियाक हराइक बेटी पदुमी नाम्नी गौरवर्णा जे तोहरे बेटा ञे श्रीकृष्णा ञे बिहायाले से हमे एक टका लए तोहरा हमे देलियावे। ताहि सँ हमरा कञो लञे सम्बन्ध नहि"।

एवँ प्रकारे हम देखैत छी जे मैथिलीक विकास क्रम बरोबरि बनल रहल अछि। एकर प्रगति कहिओ अवरूद्ध नहि भेल। हिन्दीमे क्रियाक रूप कर्त्ताक कर्मकेँ अनुसार परिवर्त्तित होइत अछि, आ लिंगभेद प्रधान रहैत अछि, मुदा मैथिलीमे से बात नहि अछि। मैथिलीमे लिंगभेदक क्रम गौण रहैत अछि आ क्रिया कारकक अनुसार बदलैत अछि। आदर, अत्यादर, अनादर, आदि भावक संगहि क्रियाक रूप भिन्न होइछ जे आन ठाम देखबामे नहि अवइयै।

१७–१८म शताब्दीमे आबिकेँ मैथिलीक रूपमे परिवर्तन देखबामे अवइयै आ ओहि दृष्टिये मनबोधक **कृष्णजन्म**मे मैथिलीक ठेठ रूप देखबामे अवइयै–

"*कतओक दिवस जखन वितिगेल,*
*हरि पुनि हथगर गोरगर भेल।*
*से कोन ठाम जतय नहि जाथि,*
*कय वेरि आङनहु सँ बहराथि*"॥

एहि मैथिलीक रूपक साम्य आधुनिक मैथिलीसँ अछि। मनबोधक पछाति हर्षनाथ, चन्दा झा, जीवन झा, रघुनन्दन दास, लाल दास आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। हिनका लोकनिक उद्धरण देव आवश्यक–

**चन्दा झा–**

"*पड़ा पड़ा बड़ा बड़ा गृहाद्द जारि देलकौ–*
*विदेह कन्यका विपति जानि, कानि लेलकौ*

*बहुत छोट बानरे सभैक हाल कैलकौ*
*प्रचण्ड दण्ड देनिहार दूत चोर धेलकौ*' ।

*हर्षनाथ–*

"*रमनि हे सुनिय वचन दय कान।*
*जें ओ मोर मानिय दोष दोष करि.*
*करू धनि दण्ड विधान*' ।

**लाल दास–**

"*खसल निशुंभ महा बलबान, संज्ञालुप्त सुतल हतज्ञान।*
*देखि निशुंभ को महिमे पड़ल, आएल शुम्भ क्रोध अति भरल।*

**जीवन झा–**

"*विरह व्यथा अति आकुल रमनी,*
*सकल कलेबर केवल धमनी।*
*सहजहि पातर लकलक हियकर,*
*धक धक रे की*"॥

अन्यान्य भाषा जकाँ मैथिलीक अपन लिपि सेहो छैक जे अद्यावधि जीवित छैक आ ठेठ मिथिलामे जकर अखनो सभ कार्यक अवसरपर व्यवहार होइत छैक। मैथिलीक विकास २०म शताब्दीमे सभसँ बेसी भेल अछि आ ताहुमे स्वतंत्रता प्राप्तिक पछाति तँ आरो बेसी। अहिठाम मैथिली साहित्यक इतिहास लिखब हमर अभीष्ट नहि अछि–एहि विषयपर कतेक पुस्तक उपलब्ध अछि आ कतेक गोटए लिखिओ रहल छथि। हमर कथ्य एतबे जे मैथिली भाषा मिथिलाक सांस्कृतिक एकरूपताक सर्वश्रेष्ठ साधन रहल अछि आ ७००–८००वर्ष सँ मैथिलीक माध्यमसँ मिथिलाक राजनैतिक आ साँस्कृतिक एकताक निर्माणमे साहाय्य भेटल अछि। भाषाकेँ संस्कृतिक संबलक रूपमे उपस्थित कैल गेल अछि आ मैथिलीक प्राधान्य एहि बातक स्पष्ट सबूत अछि।

**V. मैथिल संस्कृतिक निजी वैशिष्ट:-** जेना बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात, कर्णाटक, केरल आदि प्रांत भाषिक, साँस्कृतिक, भौगौलिक, ऐतिहासिक आदि दृष्टिये प्रांत कहल जाइत अछि ठीक तहिना बिहारमे मिथिलेटा एहेन एकटा साँस्कृतिक क्षेत्र अछि जे सभ दृष्टिये प्रांत कहल जा सकैत अछि। भौगोलिक ऐतिहासिक, साँस्कृतिक एवँ भाषिक दृष्टिये मिथिला एकटा महान केन्द्र अति प्राचीन कालसँ रहल आ एकर अपन साँस्कृतिक वैशिष्टक महत्ता सेहो वैदिक कालसँ अद्यावधि अविच्छिन्न रूपें चलि आबि रहल अछि। उत्थान–पतन इतिहासक एकटा अकाट्य नियम आ तैं मिथिला एकर कोनो अपवाद नहि परञ्च एकर साँस्कृतिक एकता सभ दिन बनल रहल छैक आ इतिहास एकर साक्षी अछि। एकर क्षेत्र विस्तीर्ण अछि आ मिथिला एकटा भौगौलिक इकाइ मानल गेल अहि जे सम्प्रति तीन प्रमण्डल (**तिरहूत, दरभंगा** आ **कोशी**)मे विभक्त अछि। उत्तरमे नेपाल, पूर्वमे पश्चिम बंगाल, दक्षिणमे मगध, आ पश्चिममे बिहार आ उत्तरप्रदेशक अंश अछि। नदीक द्वारा सिञ्चित हेबाक कारणे एकरा **'तीरभुक्ति'** सेहो कहल गेल अछि। **'तीरभुक्ति'**क रहनिहारक गर्वोक्तिक उल्लेख विद्यापति अपन **'पुरूष परीक्षा'**मे कएने छथि– **"अहो**

**तीरभुक्तीयाः स्वभावाद् गुणगर्विणो भवंति" (तिरहुतिया स्वभावतः गुणगर्वित होइ अछि)**। विद्यापतिक इ उक्ति मैथिल सँस्कृतिक एक विशेषताक द्योतक थिक।

परिवर्त्तनशील सृष्टिमे अपरिवर्त्तित रूपें डटल रहिकँ मिथिला अपन वैशिष्ट्यक जे परिचय देलक अछि तकर उदाहरण स्वरूप इ कहल जा सकइयै जे अपन आङनमे जन्मल, पोसल आ बढ़ल जैन धर्म आ बौद्ध धर्मकँ इ कहियो अंगीकार नहि केलक आ वैदिक धर्म आ कर्मकाण्डकँ अपनौने रहल। जहिना जैन–बौद्ध मैथिलक वैदिकत्वकँ पलटि नहि सकलाह तहिना बादमे मुसलमान लोकनि एहिठामक कट्टरताक गढ़कँ नहि ढ़ाहि सकलाह। मिथिलाक सामाजिक संगठन दृढ़ रहल आ ओकरा दृढ़तर बनाओल गेल। कट्टरताक निर्वाहक हेतु शास्त्र पुराणक अध्ययनपर विशेष बल देल गेल आ कर्मकाण्डक समर्थनक हेतु **'निबन्ध'**क रचना भेल। सनातन समाज रूपी स्तम्भकँ जैन, बौद्ध, मुसलमान अथवा अंग्रेजी प्रभाव सर्वतोभावेन हिलेबामे समर्थ नहि भेल। मिथिलामे सनातन धर्मक प्रति जनताक प्रगाढ़ प्रेम अछि आ ओकरा अहुखन डिगैब असंभव। एम्हर आबिक जे अखिल भारतीय स्तरपर सुधार आन्दोलनो भेल तकरो कोनो प्रभाव मैथिलपर नहि भेल। एतावता मैथिल संस्कृतिक धार अक्षुण्ण रूपें प्रवाहित होइत चलल आबि रहल अछि भने आजुक दृष्टिये हम ओकरा अनुदार कही से दोसर कथा। मिथिला आदर्शवादी दर्शनक जन्मभूमि मानल गेल अछि। दर्शनक दिग्गज आचार्य लोकनि मिथिलाक धरतीकँ अपन विद्वतासँ चमत्कृत कएने छथि। एहिठामक देन थिक **"स्वतः प्रमाणं"** (मीमाँसा वेदांत) आ **"परतः प्रमाणं"** (न्याय)। मण्डन मिश्र मीमाँसक छलाह। आनन्दगिरि कुमारिल भट्टकँ सेहो मैथिल कहने छथि। मैथिलक आदर्श रहल अछि जीवन्मुक्त रहब। श्री शुकदेव जी एहिठाम आबि जनकसँ उपदेश लए अपन मोह भंग केने छलाह। योगवाशिष्ठ आ गर्गसंहितामे एहि प्रसंगक कथा अछि। शनैः शनैः मिथिलामे धार्मिक कर्मकाण्डी लोकनिक संख्यामे वृद्धि भेल। विष्णु, शिव, शक्ति आदिक पूजा नियमित रूपें शास्त्रानुकुल ढ़ँगे अहुखन मिथिलामे होइत अछि।

कर्मकाण्ड शरीरक संस्कारसँ सम्बन्ध रखैत अछि। संस्कार कर्म पूर्व कालमे अनेक रूपक रहितहुँ एम्हर आबिकँ दश प्रकारैक अवगत होइत अछि। वीरेश्वर, गणेश्वर, रामदत्त आदिक लेख सभसँ एहिपर विशेष प्रकाश पड़ैत अछि। दश प्रकारक कर्ममे ६काम्य तथा ४नित्य मानल गेल अछि– नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन आ विवाहक हवैछ, जे यथायोग्य नहि केने वर्णाश्रमक विलोप मानल जाइत अछि। एकर विधि एखनहुँ मिथिलहिमे यथासमय ओ यथाशास्त्र होइत देखल जाइत अछि। मिथिलामे जैमिनीय कर्म मीमाँसा शास्त्रक अधिक प्रभाव छल ओ अछिओ। श्रौत–स्मार्त–आगम तीनू कर्मकाण्डक यथा वदनुष्ठान ओ लोकमे आविष्कार मैथिल विद्वानहिक कैल भेटइत अछि। **'कुण्डकादम्बरी'**मे गोकुलनाथ उपाध्याय ग्रह योगसँ लऽ कऽ अश्वमेधांत कर्मकलापक कुण्ड निर्माण कऽ गेल छथि। मैथिल एखन धरि संध्यातर्पण एवँ एकोदिष्ट पार्यण करैत छथि। पंचदेवोपासक मैथिल अहुखन होइते छथि। एकर प्रचार मिथिलहिमे सर्वतोभावेन देखल जाइत अछि। मिथिलामे मनुक अतिरिक्त याज्ञवल्क्य निर्दिष्ट आचारक विशेष प्रचार अछि। मैथिल विद्वानक विश्वास छन्हि जे आचारक संग धर्मक जाहि तरहक सम्बन्ध छैक आरोग्य शास्त्रसँ कम नहि। प्रातः कृत्यादिसँ शयनपर्यंत, व्रत आदिसँ लऽ साधारण आचमन सभ वैज्ञानिक तत्वसँ भरल अछि। विचार स्वातंत्र्यक उदाहरण निम्नलिखित वाक्यसँ भेटत–

**"यस्तर्केणानुसन्धते सधर्म वेद नेतरः"–** विद्यापतिक **'पुरूषपरीक्षा'**मे अपन–अपन कर्तव्यक समुचित ढ़ँगसे करबकेँ धर्म कहल गेल अछि। **'बृहदारण्यकोपनिषद'** जकर रचना मिथिलामे भेल छल ताहिमे यौनधर्मक सम्बन्धमे स्पष्ट रूपे कहल गेल अछि– **"सर्वेषामानन्दा नामुपुष्यं एकायतननम्"।** मनुष्यकेँ संस्कारयुक्त कर्म करबाक अधिकार मिथिलामे देल गेल छैक। संस्कार एवँ कर्मक सम्बन्धमे मनुक मत अछि–

*"स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रै विद्येनेज्यया सुतैः।*
*महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियतेतनुः" ॥*

वेदक अध्ययन, ब्रह्मचर्य अवस्थाक पालन, सायं प्रातः केर होम, देव ओ ऋषिक तर्पण, संतानक उत्पत्ति, पाँच महायज्ञ (**ब्रह्मयज्ञ–अध्यापन, पितृयज्ञ–तर्पण, देवयज्ञ–देवप्रीत्यर्थ अग्निमे होमक आहूत देव, भूतयज्ञ–बलिविश्वेदेवक, नृयज्ञ–अतिथि** केर पूजन) तथा आन ज्योतिष्टोमादिक काम्ययज्ञक द्वारा शरीरकेँ पवित्र करब उचित मानल गेल अछि। एकर सभकेँ संस्कार कहल गेल अछि। संस्कार कुलाचारक अनुसार होइत अछि। संस्कारानुसार सभ जातिक कर्म सेहो निर्धारित अछि। करण कायस्थ कोनो वर्णगत नहिओं रहला उत्तर मिथिलामे सम्मानित रहला अछि। हिनका लोकनिक आचार–विचार तथा व्यवहार कोनो रूपें द्विजसँ कम नहि कहल जा सकैत अछि। ब्राह्मणे जकाँ सभ संस्कार हिनको लोकनि ओतए होइत अछि आ संगहि धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकलाप सेहो–वैवाहिक सम्बन्धो अहुखन धरि हरि सिंह देवीय पद्धतिसँ होइत छन्हि। कायस्थहुक हेतु प्राचीन कालमे वैवाहिक सभाक व्यवस्था मधुबनी आ जगतपुरमे छल। मिथिलामे सत शूद्रकेँ **'सोलकन्ह'** आ असत् शूद्रकेँ **'अछोप'** कहल गेल छैक।

मिथिलामे संस्कारक पालन पूर्णरूपेण होइत आ अहुखन प्राचीन परम्परा देहातमे विराजमान अछि। पाँचम वर्षमे एहिठाम विद्यारंभ संस्कार शुरू होइत अछि–आ ओहि अवस्थामे बालककेँ **'खड़ी'** अथवा **'भट्टा'** धराओल जाइत अछि। धार्मिक कर्म केला उत्तर गुरूजी बालकक हाथ धकए **"आँजी सिद्धिरस्तु"** लिखबैत छथिन्ह। आँजीकेँ केओ प्रणवक भ्रष्टरूप, गणेशक अंकुश, सूंढ़क प्रतीक अथवा त्रिशूलक चेन्ह कहैत छथि। विद्या प्रारंभक पूर्वहिसँ बालककेँ संस्कृत श्लोक इत्यादि सिखाओल अथवा रटाओल जाइत छन्हि आ ओहिमे सर्वप्रसिद्ध श्लोक निम्नांकित अछि–

*"साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी।*
*उग्रेण तपसा लब्धो यथा पशुपतिः पतिः॥*
*बालोऽहं '**जगदानन्द**' नमे वाला सरस्वती।*
*अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत् त्रयम्॥*
*मा निषाद प्रतिष्ठानवमगमः शाश्वतीः सभा।*
*यत्क्रौञ्च मिथुनादेकम वधीः काममोहितम्॥*
*सा रमा न वरारोहा नगे भागमनाहि या॥*
*याहि न तामगभागेन हारो रावण मार सा" ॥*

मिथिलामे विवाह संस्कार सेहो एकटा महत्वपूर्ण संस्कार मानल गेल अछि आ मैथिल व्यवस्थाक अनुरूप बारह वर्ष धरि विवाह भए जाएब आवश्यक बुझना जाइत अछि। शास्त्रमे कन्यासँ त्रिगुण अथवा अढ़ाए गुण पैघ वरक हैव उचित मानल गेल छैक। विवाहक हेतु कन्याक गुण, कुल आदिपर सेहो विचार कैल जाइत छैक।

वैवाहिक सभा समौल, सौराठ, परतापुर, भखराइन, बनगाँव आदि स्थानमे पूर्वमे होइत छल। अखन आब मात्र सौराठ सभा रहि गेल अछि जाहिठाम शुद्धक समयमे एक विशाल मेला लगैत अछि आ जकरा देखबाक हेतु दूर–दूरसँ लोग सभ अबैत छथि। शास्त्रीय अनुमति देबाक हेतु पञ्जी प्रबंधक सभ सामग्री सहित पञ्जियार लोकनि सेहो एहिठाम उपस्थित रहैत छथि। जखन दुनू पक्षकेँ (वरपक्ष–कन्यापक्ष) सर्वथा सम्बन्ध करबाक निश्चय भऽ जाइत छन्हि तखन **'अस्वजनपत्र'** लऽ कन्या पक्षक लोक लौकिक व्यवहारानुसार **'हथधरी'** कए अपन गाम जाइत छथि। **'अस्वजनपत्र'**केँ गोसाउनिक सिरामे समर्पित कैल जाइत अछि। सिद्धांत भऽ गेलापर दुनू पक्ष निश्चित भऽ जाइत छथि। तकर बाद विवाह निश्चित बुझल जाइत अछि।

धर्मक क्षेत्रक हम विवेचन कऽ चुकल छी जे मिथिलामे पंचदेवोपासनाक पद्धति बड़ड प्राचीन अछि आ मैथिलक वैशिष्ट्यक हिसाबे एकर महत्व एखनो बनले अछि। एहिठाम स्मरण रखबाक अछि कि सभ किछु रहितहुँ एहिठाम कहिओ कोनो प्रकारक साम्प्रदायिक कलह नहि भेल अछि आ सभ प्रकारक धार्मिक विचारक लोग एहिठाम अपन–अपन धर्मक पालन करैत आएल छथि। एक्के ठाम अथवा एक्के परिवारमे शैव शाक्त, आ वैष्णव देखल जा सकैत छथि। वस्तुतः साम्प्रदायिकतामे जाहि प्रकारक सामंजस्य एहिठाममे देखबामे अवइयै तेहेन अन्यत्र भेटब बड़ड दुर्लभ। सभ सभहिक धार्मिक कार्यकलापमे सक्रिय रूपेण भाग लैत छथि। भारतीय संस्कृतिक इएह मूलमंत्र रहल अछि आ मिथिलामे एकरा चरितार्थ होइत हम देखि सकैत छी। मिथिला तांत्रिक सम्प्रदाय अपन एकटा स्थान भारतक संदर्भमे रखैत अछि तैं ओकर विवेचन अपेक्षित।

**तांत्रिक संप्रदाय आ मिथिला–** शिव आ शक्तिक प्रधानता मिथिलामे प्राचीन कालहिसँ चलि आबि रहल अछि। शिवक पूजाक हेतु मिथिलामे शिवमंदिरक कोनो अभाव नहि अछि आ सभ वर्ग आ वर्णक लोग शिवक पूजा करैत छथि। शिवकेँ आशुतोष सेहो कहल गेल छन्हि आ मिथिलाक गामक गाममे विद्यापति रचित नचारी आ महेशवाणी केओ कखनो सुनि सकैत अछि। शिवक संगहि संग मिथिलामे शक्तिक उपासनो होइछ आ सभ घरमे गोसाउनिक पूजा नियमित रूपें प्रतिदिन हेवे करैत अछि–मिथिलामे कुल देवी सभ घरमे पाओल जाइत अछि। स्मृतिक अनुसार शिवतत्वक ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु शक्तिक उपासना आवश्यक मानल गेल अछि। तैं तँ कहल गेल अछि– **"शिवोहि शक्ति राहतः शक्तः कर्त्तुन किंचन"**। एकर समर्थन शंकराचार्यक **सौन्दर्यलहरी**मे सेहो भेल अछि–

"*शिवः शक्तयायुक्तो यदि भवति शक्तः प्रभाषितुम्।*
*नचेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि*" ॥

शिवतत्वक ज्ञान प्राप्तिक हेतु शक्तितत्वक ज्ञान अपेक्षित अछि आ मिथिलाक संस्कृतिमे एहि दुहु तत्वकेँ बुझब अत्यावश्यक मानल गेल अछि।

श्रुति तीन भागमे विभक्त अछि– **कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड**, आ **ब्रह्मकाण्ड**। कर्मकाण्डक प्रवर्त्तक भेल छथि **जैमिनीय** (पूर्व मीमाँसा), **ब्रह्मकाण्डक प्रवर्त्तक ब्रह्मसूत्रकार व्यास रचित उत्तर मीमाँसाकार** आ **उपासना काण्डक प्रवर्त्तक भेल छथि नारद**। आगम शास्त्र ज्ञानी उपासना काण्डकेँ महत्व दैत छथि। ज्ञान आ उपासना श्रुति मूलक मानल गेल अछि आ इ दुनू मत अद्वैतक समर्थक अछि। सकल साधारणक सुविधाक हेतु आगम मार्गक उपस्थान केनिहार छलाह ब्रह्माक चारू पुत्र–

सनक, सनन्दन, सनातन, आ सनत कुमार–जेहि महादेवसँ प्रार्थना कए एहि मार्गक सूत्रपात केलन्हि। चारू गोटएकेँ महादेव जे उपदेश देलथिन्ह सैह **'आगम'** कहाओल आ इएह **'आगमशास्त्र'** तंत्रक नामे प्रसिद्ध भेल। **'वैदिक'** आ **'आगम'** भिन्न पद्धति अछि। एकरे हमरा लोकनि अधुना **'निगम'** (**वेद–वेदांग**) आ **'आगम'** (**तंत्र–मंत्र**)क नामे जनैत छी। कुलार्णवमे लिखल अछि–

"*कृते श्रुत्युक्त आचारस्त्रेतायां स्मृति संभवः।*
*द्वापरेतु पुराणोक्तः कलवागमसम्मतः*"॥

कलियुगमे आगमशास्त्रक प्रधानता रहबाक गप्प एहिठाम कहल गेल अछि। **महानिर्वाणतंत्र**मे शिव पार्वतीकेँ कहने छथि जे आगम मार्गक बिना अनुशरण केने कलियुगमे सिद्धिक प्राप्ति असंभव। वाराही तंत्रमे आगमक निम्नांकित लक्षण बताओल गेल अछि–

"*सृष्टिश्च प्रलयश्चैव देवतानांतर्थाचनम्।*
*साधनञ्चैव सर्वेषां पुरश्चरणमेव च॥*
*षट्कर्मसाधनञ्चैव ध्यानयोगश्चतुर्विधः।*
*सप्तर्भिलक्षणैर्युक्तमागमं तद्विदुर्बुधाः*"॥

आगम उएह कहबैत अछि जाहिमे सृष्टि, प्रलय, देवतार्चन, कार्यसाधन, पुरश्चरण षट्कर्म आदि वाधा दूर करबाक एवँ शांति स्थापनाक हेतु वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन आ मारणक विधानक योग हो। आगमशास्त्र शिव शक्तिसँ सम्बन्धित मानल गेल अछि। आगमक तीन मुख्य भेद भेल **डामर (तमस्), यामल (रजस्),** आ **तंत्र (सत्व)**। पुनः एहि सभक प्रभेद एवँ प्रकारे अछि–

**डामर–** योग, शिव, दुर्गा, सारस्वत, ब्रह्म, एवँ गन्धर्व।

**यामल–** आदियामल, ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, गणेशयामल, आदित्ययामल, तथा रूद्रयामल।

तंत्रक विभिन्न प्रभेदक विवरण वाराही तंत्रमे भेटइत अछि।

मिथिलामे शक्तिक प्रधानताक कारणे शाक्ततंत्रक प्रचार अछि–कौलमत एवँ दशमहाविद्याक प्रचार एत्तए बेसी भेल अछि। कौलमतावलम्बी वामाचारक प्रवर्त्तक भेलाह कारण एहि मार्गमे सिद्धिक प्राप्ति शीघ्र होइछ। काली एवँ ताराक प्रधानता मिथिलामे विशेष रूपें छल। वशिष्ट ताराक उपासक भेल छथि। बौद्ध धर्मक प्रभाव भने मैथिलपर नहि रहल हो से संभवे मुदा बौद्ध तंत्रक प्रभाव तँ स्पष्ट रूपें मिथिलाक तंत्रक इतिहासपर पड़ल अछि आ चीन–तिब्बतसँ मिथिलाक साँस्कृतिक सम्बन्ध एहि माध्यमसँ भेल अछि। दश महाविद्या प्रथाक समुचित आदर अहुखन मिथिलामे अछि। वामाचार एवँ कौलमतक प्रचार सामान्यतः मिथिलाक निम्नवर्गक लोगमे भेल। ओना ग्रंथादिमे तँ 64तंत्रक नाम भेटइत अछि। चन्द्रकला, ज्योत्सनावती, कलानिधि, कुलार्णव, कुलेश्वरी, भुवनेश्वरी, बाहर्स्पत्य ओ दुर्वासामतमे ब्राह्मणादि चारू वर्णकेँ ओ वर्णसंकरहुक समान अधिकार देल गेल छैक। प्रथम तीन वर्गकेँ दक्षिणाचार मार्गे आ शूद्रादि आ वर्णसंकरकेँ वामाचार मार्गे साधना करबाक अधिकार प्राप्त छैक। मिथिलामे तांत्रिक स्थान सभमे विशेषकए छोटलोकककेँ भगताक रूपमे एखनो देखल जाइत अछि। अखनो मिथिलामे कैकटा प्रधान तांत्रिक केन्द्र अछि आ ओहिसभ ठाम जाँति–पाँतिक कोनो बन्धन नहि देखबामे अवइयै। तांत्रिक धर्मक उत्थानक पाछाँ सेहो

किछु आर्थिक आ सामाजिक तथ्य छल जकर अनुसंधान एखनो पूर्णरूपेण नहि भऽ सकल अछि। पूर्वी भारतमे मैथिली, असमी, आ बंगाली संस्कृतिमे तंत्र एकटा महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह केने अछि। मिथिलामे घनानंद दास नामक एकटा प्रसिद्ध कायस्थ तांत्रिक भेल छलाह।

तंत्र व्यापक अछि आ लौकिक पारलौकिक दुहु मार्गक बताओल गेल अछि। मोक्ष प्राप्तिक मार्गमे भोगकेँ नहि त्यागे पड़ए सैह विधान तंत्रमे बताओल गेल अछि। सर्वप्रथम आदिशक्ति प्रकृतिक पूजा प्रारंभ भेल आ ताहि दिनसँ मिथिलामे तंत्रक परम्परा चलि आबि रहल अछि। ब्रह्मस्वरूप प्रकृतिक प्राप्तिक हेतु तंत्रमे पंचमकारक विधान सेहो बताओल गेल अछि–पंचमकारक नाम एवँ लक्षण एवँ प्रकारे अछि–

"*आनन्दं परमं ब्रह्ममकारास्तस्य सूचका*
*मत्स्यं, मांसं तथा मद्यं मुद्रा मैथुनेव च।*
*एते पंचमकाराः स्युमोक्षदा हि युगे–युगे*"॥

कुलार्णव तंत्रमे एकर विश्लेषण एवँ प्रकारे अछि–

**मत्स्यः–**

*मायामलादिशमनान्मोक्षमार्गनिरूपणात्।*
*अष्ट दुःखादि विरहान्मत्स्येतिपरिकीर्तितः॥*

**माँसः–**

*मांगल्य जननाद्देवि संविदानंददानतः।*
*सर्वदैव प्रियत्वाच्च माँस इत्यभिधीयनः॥*

**मद्यः–**

*सुमनः सेवितत्वाच्च राजत्वात्ससर्वदाप्रिये।*
*आनन्द जननाद्देवि सुरेतिपरिकीर्तितः॥*

**मुद्राः–**

*मुदं कुर्वंति देवानांमनांसिद्रावयंतिच*
*तस्मान्मुद्रा इतिख्याता दर्शिना व्याकुलेश्वरी॥*

**मैथुनः–**

*सर्वद्रोहं विनिमुक्त्वा तवप्राणप्रिय भवेत्।*
*एकाकारो भवेद्देवि त्वयि ब्रह्माणि मैथुनम्॥*

मिथिलामे तांत्रिक साधनाक आधारपर पैघ–पैघ तांत्रिक अपन सिद्धि द्वारा लोककेँ चकित केने छथि। इएह कारण थिक जे अहुखन मिथिलामे तंत्रवादक मर्म सुरक्षित अछि।

**स्त्रीगणक स्थिति:-** मिथिलाक सामाजिक–साँस्कृतिक वैशिष्ट्यमे स्त्रीगणक स्तित्व महत्वपूर्ण रहल अछि आ एहिठाम हमरा सभ प्रकारक स्त्रीगणक विभेद देखबामे

अवइयै। ओना भारतीय संस्कृतिमे तँ स्पष्ट कहल गेल अछि जे स्त्रीकेँ कहियो कोनो अवस्था स्वच्छन्द रहब अपेक्षित नहि अछि–

*"पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।*
*पुत्रश्च स्थविरे रक्षित् न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति*" ॥

स्त्रीकेँ कुल, जाति, समाज एवँ देशक गौरव बुझल गेल अछि। स्त्री शिक्षाक आधुनिक परिपाटी ताहि दिनक मिथिलामे नहि छल ओना रानी–महारानी लोकनि विदुषी होइत छलीह से देखबामे अवइयै। **'मैत्रेयी'** ब्रह्मवादिनी भेल छलीह आ **'मल्ली'** नामक एक मैथिलानी जैन लोकनिक एक तीर्थकंर भेल छथि। मंडन मिश्रक पत्नी **'भारती'** तँ सर्वविदीत छथिये। लखिमा ठकुराइन आ विद्यापतिक कुलवधु तथा **'विश्वास देवी'**क नाम तँ प्रख्यात अछिये। मुदा एहिसँ इ अनुमान नहि लगेबाक चाही जे मिथिलाकेँ सामान्य नारि लोकनिकेँ सेहो एहने शिक्षा देल जाइत छलन्हि। परम्परागत रूपें परिवारमे जे किछु सिखाओल जाइत छलैक सैह हुनक शिक्षा भेलैन्ह। पर्दा प्रथाक संकेत तँ मनुक कालहिसँ देखबामे अवइयै। मेधातिथि अपन मनुभाष्य (४१४४)मे कहने छथि–**"अवगुण्ठितामेव हि विशेषे स्पृहयंति"**। मिथिलामे स्त्री पर्दाक हिसाबे घोघ काढ़ैत छथि आ इ प्रथा एखनो धरि विराजमान अछि। मिथिलामे नारीक सौन्दर्य, कोमलता, माधुर्य, पवित्रता आ शीलक रक्षार्थ पर्दाकेँ आवश्यक बुझल गेल अछि। मध्ययुगमे मिथिलामे एहिप्रथाक विशेष प्रचार भेल छल। अहु प्रथाक प्रचलन पैघ लोकमे जतवा अछि ततवा छोट लोकमे नहि कारण छोट लोककेँ तँ बाल–बच्चा समेत सदति बाहर–भीतर काज करए पड़िते छैक। मिथिलामे कुमारि ब्राह्मणकेँ पवित्र मानल गेल छैक आ कुमारि भोजनक प्रथा अद्यतन प्रचलित अछिये। अविवाहित कन्या मिथिलामे माँथ नहि झपैत अछि। मिथिलामे कोजागरा पूर्णिमा, सुखरात्रि आ कार्तिकमे शामा–चकेबाक प्रचलन स्त्रीगणक मध्य प्रसिद्ध अछि।

एहिठामक सामाजिक संगठन अद्यावधि जीवंत अछि आ सामाजिक नियमक उल्लंघन केनिहारकेँ दण्ड देल जाइत छैक। बाल–विवाह आ अनमेल विवाहक प्रणाली पहिने जेहेन छल ताहिसँ आब किछु बदलल अछि। स्त्री शिक्षामे प्रगति भेल अछि आ पर्दा प्रथा सेहो कम भेल अछि। कट्टर मैथिल लोकनि (चाहे ओ कोनो वर्णक किऐक ने होथि) अखनो स्पर्शास्पर्शक सम्बन्धमे बड़ड विचार रखैत छथि आ चमैन जे घरक ओतए महत्वपूर्ण काज करैत अछि तकरा अखनो अछापक गिनतीमे राखल गेल अछि। सभठाम परिवर्त्तन भेला उत्तरो मिथिलाक गाम घरमे अहुखन कट्टरता आ अन्धविश्वास जनित प्रलाप देखल जा सकइयै। रघुनंदन दासक **'मिथिला नाटक'**मे तथ्यपूर्ण सामाजिक चित्रण अछि।

# परिशिष्ट

## परिशिष्ट–१

**मिथिलाक इतिहासपर चंदा झाक मंतव्य**

नान्य राजा क्षत्रिय कर्णाट छलाह जे शाके १०१९मे राज्य पौलन्हि। २२६वर्ष धरि हुनक संतान लोकनि राज्य केलन्हि।

हुनक मंत्री जबदी परगन्ना स्थित अन्धराठाढ़ी गाममे कमलादित्य विष्णुक स्थापना केलन्हि। आधारशिलामे लेख श्लोकार्थ अछि– नान्य राजाक मंत्री श्रीधर श्रीधरक प्रतिष्ठा केलन्हि। खसल पाथरक चौखठिपर **"मकरध्वज योगी"** लिखल अछि।

शाके १०४०मे चिक्कौर राजाक राज्यमे जयचन्द्र राजासँ असगरे संग्राम कैल।

काफर राजाकेँ मारबाक बहादुरीमे पुरस्कार स्वरूप महमुद गजनी नरसिंहकेँ तिरहूतक राजा बनौलक। नरसिंह नान्यक पोता छल। बंगदेशसँ घुरबाकाल गयासुद्दीन सिमरौनगढ़ीसँ नरसिंह देवकेँ लऽ गेल छलाह।

हरिसिंह देव मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी प्रबन्ध केलन्हि। हुनक मंत्री रहथिन्ह साँधिविग्रहिक महावार्त्तिक–निबन्धकारक, महामत्तक वीरेश्वर ठाकुर। रणस्तंभ किलापर विजयाभियानक अवसरपर मैथिल मंत्री वीरेश्वर अलाउद्दीनक संग छलाह। १२९५इ. मे हम्वीर स्वर्गवासी भेलाह। अलाउद्दीन वीरेश्वरकेँ मंत्रिरत्नाकरक पदवीसँ अलंकृत केलन्हि।

शक्रसिंह देव कर्णाटक मंत्री छलाह।

हरिसिंह देव अपना वंशक पंचम राजा छलाह। शाके १२१६मे जन्म भेल छलन्हि। ओ १२४८शाकेमे दरभंगासँ पूब ७कोश एवँ सकरीसँ १$^{1}/_{2}$ (डेढ़)कोश दक्षिण नेहरा राघोपुरमे निवास करैत छलाह। ओहि गाममे पैघ–पैघ पोखरि आ किला छल। ओ ओतहि पञ्जी प्रबन्धक व्यवस्था केलन्हि। दैवाधीन ओ पटना छोड़ि उत्तर पहाड़ जंगल दिसि चल गेलाह। मिथिलामे भाला परगन्नामे मौजे उमागाममे अहुखन हरिसिंह देव पूज्य छथि। ओतहु भवन आदि देखबामे अवइयै।

**कर्णाट वंश**

राज्य भोग–वर्ष–२२६

i) नान्यदेव–३६
ii) गंगदेव–१४–**गंगासागर**
iii) नरसिंह देव–५२
iv) रामसिंह देव–९२
v) शक्रसिंह–१२–**सुखीदीघी**
vi) हरिसिंह–२०–**निजाम्बुदीर्घिका**

**नोटः-** एहि प्रसंगमे हमर अपन मत **"कर्णाट्ज आफ मिथिला"** (भण्डारकर शोध पत्रिका–१९५५) प्रकाशित अछि। संगहि **'कम्प्रीहेनसिभ हिस्ट्री आफ बिहार खण्ड–१'**मे सेहो हम सभ तथ्यक विवेचन कैल अछि। रामसिंह देवक पछाति १२६०इ.मे मिथिलामे वीरसिंह नामक राजाक विवरण पेटेक देने छथि जे विचारणीय अछि आ संगहि एहि तथ्यपर ओ नव प्रकाश सेहो देने छथि। द्रष्टव्य अछि हुनके लिखल **"मिडिवल हिस्ट्री आफ नेपाल"** आ बिहार रिसर्च सोसायटीक महाराजा वाल्युममे "मिथिला आ नेपाल" नामक हुनक निबन्ध।

*"शाके श्रीहरसिंहदेव नृपतेर्भूपार्क तुल्येजनि–*

*स्तस्माद्दंतमितेऽब्दके द्विजगणैः पञ्जी प्रबन्धः कृतः।*
*तस्माद्वैरिजवंश वैरिकलिने (?) सद्विश्च चक्रेपुरा*
*सद्विप्राय समर्पितः सुकृतिने शांताय तस्मैनमः॥1॥*
*शास्तानान्यपतिर्बभूव तदनुश्रीगाङ्गदेवो नृप*
*स्तत्सूनुर्नरसिंहदेवनृपतिः श्री रामसिंहस्तः।*
*तत्सूनुः खलु शक्रसिंह विजयी भूपाल वन्द्यस्ततो*
*यत्र श्रीहरि (हर) सिंह देव नृपतिः कर्णाट चूडामणि॥२॥*
*वाणब्धिबाहुशशिसम्मित शाकवर्षे*
*पौषस्य शुक्लदशमी क्षितिसूनुवारे।*
*त्यक्तवा सुपट्टनपुरीं हरि (र?) सिंह देवो*
*दुर्देव देशित पथो गिरिमाविवेश॥३॥*

मिथिलामे जबदीनहड़ी परगन्नामे बलिराजगढ़क समीप सिहुलावन (सिरिहला) नामक प्रसिद्ध स्थान अछि जतए बलदेवजी स्यमंतक मणिक हेतु ६०वर्ष धरि निवास कएने छलाह। दुर्योधन, क्षेमधूर्त्ति, जलसन्ध आदिक सम्बन्ध सेहो एहि स्थानसँ छल।

पक्षधर मिश्र १३५०शाकेमे हरिनारायण प्रसिद्ध भैरवदेवक सभामे उपस्थित छलाह।

श्रीकृष्ण स्यमंतक मणि जाम्बवानकें पराजित कए प्राप्त केलन्हि आ ओ मणि ओ सत्राजितकेँ देलन्हि। सत्राजित सत्यभामा नामक कन्याकेँ देलन्हि। सत्यभामा रातिमे सत्राजितकेँ मारि मणि लऽ अकरूरकेँ एहि शर्त्तमे देलन्हि जे ओ एहि चोरीक गप्पकेँ प्रकासमे नहि अनताह। सत्यभामा हस्तिनापुर पहुँचि पितामरण एवँ मणिहरणक समाचार श्रीकृष्णकेँ देलन्हि। श्रीकृष्ण द्वारका पहुँचि अपन जेठ भाइ बलभद्र जीसँ एकरा खोजबाक हेतु आग्रह केलन्हि। मणि नहि भेटलाक कारणे कृष्णकेँ क्रोध भेलन्हि आ तखन ओ मिथिलामे आबि राज सत्कारसँ प्रसन्न भऽ धर्मागंद गढ़मे निवास केलन्हि आ तखनहिसँ ओहि गढ़क नाम कोपगढ़ पड़ल। ६०वर्षक पछाति कृष्णजी द्वारिका घुरलाह।

बलिराजगढ़ ओ क्षेमगढ़ सेहो प्रसिद्ध अछि-------

स्कन्दपुराण (सह्याद्रिखण्ड–अध्याय–३५)क आधारपर सौनल मुनिसँ उत्पन्न क्षत्रिय वंशक बीसम राजा बलिराज छलाह (चन्द्रवंशी)।

हरिअमय बलिराजपुर मूल प्रसिद्ध अछि जाहिमे ब्राह्मण श्रोत्रिय महामहोपाध्याय सचल मिश्र पूनामे वाजीराव पेशवासँ अनेक दान प्राप्त केने छलाह।

बलिराजपुर गढ़क समीप मदनेश्वर महादेव छथि जकर स्थापना बलिराजक दादा मदन कएने छलाह आ जनिक नामपर मदनोगाम सेहो अछि। १२८१सालमे हावी

परगन्नामे साहो मौजेमे पोखरि खुनैतकाल एकटा प्रतिमा बाहर भेल से हावीडीहमे राखल छल आ लक्ष्मीनारायणक प्रतिमा शिलामे निम्नलिखित लेख उत्कीर्ण छल– **“श्रीमान्मदनमाधवः”**

पद्मावती देवी–सौनल्यमुनि

१) यदु
२) भास्कर
३) सुरथ
४) गर्जन
५) दण्डधारी
६) खड्गधर
७) श्रीवदन
८) नागराज
९) गुणराज
१०) शिव
११) सोमनाथ
१२) महाकाल
१३) दुन्दुभि
१४) बिम्बराज
१५) देवक
१६) अनिरूद्ध
१७) गोपति
१८) मदन
१९) सुनेत्र
२०) बलिराज– (जकरा नामपर बलिराज गढ़ अछि।)

## परिशिष्ट–२

**ओइनवार वंशक वंश तालिका**

ओएन ठाकुर
अतिरूप ठाकुर
विश्वरूप ठाकुर
गोविन्द ठाकुर
लक्ष्मण ठाकुर
राजपण्डित कामेश्वर–हर्षण (सुगौनेशः)–तेवाड़ी–सलखन–त्रिपुरे–गौड़।
राजा भोगीश्वर
महत्तक कुसुमेश्वर
राजा भवसिंह
राजा भोगीश्वर
राजा गणेश्वर
राजा कीर्तिसिंह(?)
वीर सिंह

राजा भवसिंह
राजा देवसिंह
राजा हरसिंह
(पद्मसिंहक बाद राजा भेलाह)
त्रिपुर सिंह (राज्य दुर्जन खाड़े–पुत्र अर्जुन राय)
राजा देव सिंह
शिवसिंह
पद्मसिंह
राजा हरसिंह
दर्पनारायण पदांकित रत्नसिंह–नरसिंह
हृदय नारायण धीरसिंह (पुत्र–राघवेन्द्र)
हरिनारायण भैरवसिंह (धीर सिंहक भ्राता)
(विश्वास देवी)- ?
रूपनारायण रामभद्र
कंसनारायण लक्ष्मीनाथ
(शिव सिंह)
लखिमा रानी–विश्वास देवी(?)
पद्मसिंह

(भैरवसिंहकेँ चन्द्रसिंह नामक एक छोट भाइक उल्लेख अछि– इ संभवतः सतभाय रहथिन्ह। इहो कोनो क्षेत्रमे राज करैत छलाह–विद्यपति आ मिसारू मिश्र हिनक **'नरेश'**, **'नृपति'** कहैत छथिन्ह। हिनक पत्नीक नाम सेहो लखिमा रहन्हि।)

**नोटः-** चंदा झाक अनुसार त्रिपुरसिंहक पुत्र अर्जुन राय गणेश्वरकेँ मारलन्हि। कारण छल राजगद्दीक हेतु आपसी झगड़ा कामेश्वर आ हर्षणक वंशजमे। कीर्ति सिंह बादशाहक मददसँ राजा भेलाह। चंदा झा लिखनावलीक आधारपर कहैत छथि जे बन्धुघाती अर्जुन (त्रिपुरक पुत्र) सेहो मारल गेला। कीर्ति सिंह–वीर सिंह अपुत्र मरि गेलाह तखन भवसिंहक वंशक हाथमे शासन गेलन्हि।

ओइनवार वंशक एक शाखा अहुखन अराइदंगा (मालदह) पश्चिम बंगालमे विराजमान छथि जे अपनाकेँ कामेश्वर ठाकुरक वंशज मानैत छथि। हुनक वंश वृक्ष हमरा स्वर्गीय अतुल चन्द्र कुमर १९५८मे पठौने छलाह।

लक्ष्मण ठाकुर
आठम पीढ़ीमे भेलाह कुलमन–ओइनीसँ मुर्शिदाबाद गेला।
संतोष (अराइदंगा पहुँचलाह)
धनारायण
भोलानाथ
काशीनाथ
दुर्गाप्रसाद
चण्डीप्रसाद
विशेश्वर
वीरेश्वर
रामेश्वर
हरेश्वर

विशेश्वर
नवीन
दिनानाथ
उपेन्द्र
दिनानाथ
स्वर्गीय अतुल चन्द्र कुमर (भूतपूर्व पार्लियामेंट्री सेक्रेट्री, बंगाल)

अरूण चन्द्र कुमर (पुरनका मालदह गजेटियरमे सेहो हिनका लोकनिक विवरण भेटइत अछि।)

मिथिला भारतीमे प्रो. हेतुकर झाक निबन्धसँ स्पष्ट अछि जे मिथिलामे १७–१८म शताब्दी धरि ओइनवार लोकनि राजनैतिक दृष्टिये महत्वपूर्ण छलाह आ मुगल बादशाहत एहि तथ्यकैं मनैत छलाह। अराइदंगाक ओइनवार लोकनिक क्षेत्र पुर्णियाँ धरि पसरल छलन्हि आ हेवनि धरि ओ लोकनि राजनैतिक दृष्टिकोणे मालदहोमे महत्वपूर्ण बुझल जाइत छलाह।

## परिशिष्ट–३

**विद्यापतिक वंशावली**

विष्णु ठाकुर
हरादित्य
कर्मादित्य
वीरेश्वर
धीरेश्वर
गणेश्वर
धीरेश्वर
जयदत्त
गणपति
विद्यापति

**कर्मादित्यक शिलालेख:-** अब्देनेत्र शशाँक पक्षगादिते श्रीलक्ष्मण क्षमाप्रते
र्मासि श्रावण संज्ञकैं मुनितिथौ स्वात्यां गुरौशोभने।
हावीपट्टन संज्ञकैं सुविदिते हैहट्ट देवी शिवा
कर्मादित्य सुमंत्रिणेह विहिता सौभाग्य देव्याज्ञया।
मिथिलायां हावीडीहेति प्रसिद्धे देवी सिंहासन शिलायामुत्कीर्णमस्तीति।
तथैव तिलकेश्वरशिवमठे कर्मादित्य नाम्नैव कीर्तिशिलायामुत्कीर्ण मास्ति॥

विद्यापतिक पूर्वज मिथिला राज्यक प्रशासनमे सक्रिय भाग लैत छलथिन्ह जकर प्रमाण हमरा लोकनि निम्नलिखित प्रशासनिक शब्दावलीसँ भेटइत अछि। एहिसँ मिथिलाक प्रशासनक विभिन्न विभागक ज्ञान सेहो होइत अछि।

प्रशासनिक शब्दावलीक सूची:-

i) सान्धिविग्रहिक
ii) राजवल्लभ
iii) पाण्डागरिक

iv) महावार्तिक नैबन्धिक
v) महामत्तक
vi) महामत्तक सान्धिविग्रहिक (चण्डेश्वर)
vii) भाण्डागारिक
viii) स्थानांतरिक
ix) मुद्राहस्तक
x) राजपण्डित
xi) सुमंत्रिण

**परिशिष्ट–४**

**शिवसिंह द्वारा विद्यापतिकेँ देल गेल ताम्रपत्रक प्रतिलिपि:-**

*स्वस्ति। गजरथेत्यादि–समस्त प्रक्रिया विराजमान श्रीमद्रामेश्वरी वरलब्ध प्रसाद–भवानी भवभक्ति भावन परायण–रूपनारायण महाराजाधिराज–श्री माधव सिंह देवपादाः समर विजयिनः जरैल तप्पायां विसपीग्रामवास्तव्य सकल लोकान् भूकर्षकाँश्च समादिशंति–मतमस्तु भवतां ग्रामोऽयमस्माभिः सप्त क्रियाभिनव जयदेव महाराज पण्डित ठक्कुर*

*श्री विद्यापतिभ्यः शासनीकृत्य प्रदत्तोऽतोयूयमेतेषां वचन करीयभूय कर्षणादिकं करिष्यथेति लसं २९३ श्रावणशुद्धि सप्तम्यांगुरौ। श्लोकास्तु–अब्दे लक्ष्मण सेन भूपति मते वह्नि(3) ग्रह(९) द्वय(२) ङ्किते।*

*मासिश्रावण संज्ञकेँ मुनि तिथौपक्षेऽवलक्षे गुरौ॥*
*वाग्वत्याः सरितस्तहे गजरथेत्याख्याप्रसिद्धेपुरे।*
*दित्सोत्साहविवृद्दबाहुपुलकः सभ्यायमध्येसभम्॥१॥*

*प्रज्ञावान् प्रचुरोर्वरंपृथुतराभोगं नदी मातृकं*
*सारण्यं ससरोवरंच विसपीनामानमासीमतः।*
*श्री विद्यापतिशर्मणे सुकवये वाणीरसास्वाद विद्*
*वीरः श्री शिवसिंह देव नृपतिर्ग्रामं ददेशासनम्॥२॥*

*येन साहस मयेन शास्त्रिणातुङ्गवाहवर पृष्ठवर्तिना।*
*अश्वपतिबलयोर्बलं जितं गज्जनाधिपतिगौऽभूजाम्॥३॥*

*रौप्य कुंभ इव कज्जल रेखा स्वेत पद्म इव शैवल वल्ली।*
*यस्यकीर्तितवकेतककांत्या म्लानिमेतिविजितो हरिणाङ्क॥४॥*

*द्विषन्नृपति वाहिनी रूधिर वाहिनी कोटिभिः।*
*प्रतापतरूवृद्दये समरमेदिनी प्लाविता॥*
*समस्त हरिदङ्गना चिकुरपाशवासः क्षमं।*
*सितप्रणवपाण्डरं जगतियेन लब्धं यशः॥५॥*

*मतङ्गजरथप्रदः कनकदान कल्पद्रुम*
*स्तुलापुरूषमद्भुतं निजधनैः पितादापितः।*
*अवानिच महात्मना जगतियेन भूमिभुजा*

*परापरपयोनिधि प्रथम मैत्र पात्रं सरः॥६॥*

*नरपतिकुलमान्यः कर्णशिक्षावदान्यः*
*परिचित परमार्थो दानतुष्टार्थिसार्थः।*
*निजचरितपवित्रो देवसिंहस्य पुत्रः*
*सजयति शिवसिंहो वैरिनागेन्द्र सिंहः॥७॥*

*ग्रामेगृहणंत्यमुष्मिन् किमपिनृपतयोहिन्दवोऽन्ये तुरूष्का*
*गोकोलम्वात्म मांसैः सहितमनुदिनं भुज्यते ते स्वधर्मम्।*
*येचैनं ग्रामरत्नं नृपकर रहितं पालयंति प्रतापै–*
*स्तेषां सत्कीर्ति गाथा दिशि दिशि सुचरंगीयतां वन्दिवृन्दै॥८॥*

ल.स. २९३ शाके १३२४ शिवसिंह राजा भेलाह। चारि महिनेक बाद विद्यापतिकेँ विस्फी ग्राम दानक ताम्रपत्र देलन्हि।

१३२६मे हरसिंह देव तिरहूत छोड़ि नेपालक जंगलमे गेलाह। भाला परगन्नामे उमगाममे गुप्त रहबाक हेतु एकटा प्रसिद्ध किला छल। कामेश्वर पण्डितकेँ बादशाहसँ राज्य भेटलन्हि मुदा सिद्धपुरूष होएबाक कारणे ओ अंगीकार नञि केलन्हि। फिरोजशाह भोगीश्वरकेँ राज देलन्हि। भोगीश्वरसँ भवसिंह राज्य बटलन्हि। १३६०मे भोगीश्वर मरि गेलाह आ गणेश्वर राजा भेलाह। गणेश्वरकेँ भवसिंहक पौत्र (त्रिपुर सिंहक पुत्र) मारि देलकन्हि। हर्षण ठाकुरक पौत्र रत्नाकरक हाथ सेहो एहिमे छल । गणेश्वरक पुत्र वीरसिंह आ कीर्तिसिंह दिल्ली पहुँचलाह आ बादशाहक मदतिसँ कीर्तिसिंह राजा भेलाह। अर्जुन पुरादित्य द्रोणवारक हाथे मारल गेलाह।

शिव सिंह १५वर्षक अवस्थामे पिताक जीवतहि राजा भेला। देवसिंह देवकुली बसौलन्हि (दरभंगा कचहरीसँ सबाकोस दक्षिण)। शिवसिंहपुर (गजरथपुर)क स्थापना शिवसिंह करौलन्हि। देवसिंहक बाद शिवसिंह तीन वर्ष नौ मास राज्य केलन्हि। एकवेर पकड़ाकेँ दिल्ली गेल छलाह। अंतमे यवनसँ पराभूत भए उत्तर पहाड़मे चलि गेलाह। विद्यापति लखिमाकेँ लऽ कऽ द्रोणवार पुरादित्यक ओतए रहे लगलाह। शिवसिंहक मंत्री चन्द्रकरक पुत्र अमृतकर पटना जाए बादशाहसँ अभयदान लऽ कऽ बछौरमे पद्मामे रहए लगलाह। लखिमा १२वर्षक बाद सती भेलीह तकर बाद एक वर्ष पद्मसिंह राज्य केलन्हि आ तकर बाद पद्मसिंहक रानी विश्वास देवी १२वर्ष धरि। भाला परगन्नामे बिसौली गाम विश्वास देवीक नामपर अछि। ***विश्वास देवीक बाद धीर सिंह प्रसिद्ध हृदयनारायण तत्पर राजा भैरव सिंह हरिनारायण–मिथिलामे १४००मीमाँसक जमघट भेल छल–भैरवसिंहक पुत्र हरिनारायण(?)–भैरवसिंह बछौर परगन्नामे वरूआर नामक गाममे अपन राजधानी बनौलन्हि

## परिशिष्ट–५

## राजा संग्राम गुप्त देवक पंचोभ अभिलेख

(मूल हमर **'सिलेक्ट इन्सक्रिपसन्स आफ बिहार'**मे प्रकाशित अछि।)

लहेरियासरायक समीप पंचोभ ग्रामसँ एकटा ताम्रलेख बहुत दिन पूर्वहि बाहर भेल छल जे मिथिलाक इतिहासक दृष्टिकोणसँ महत्वपूर्ण कहल जा सकइयै। एहि अभिलेखमे तिथि नहि अछि परञ्च लिपिक आधारपर एकरा १३म शताब्दीमे

राखल जा सकइयै। इ अभिलेख माण्डलिक राजा संग्रामगुप्तक थिक। एहिमे निम्नलिखित ६राजाक उल्लेख अछि– (संभव जे इ लोकनि उत्तर गुप्त वंशसँ सम्बन्धित होथि।)

i) यज्ञेश गुप्त
ii) दामोदर गुप्त
iii) देवगुप्त
iv) राजादित्य गुप्त
v) कृष्णगुप्त
vi) संग्रामगुप्त

एहिमे उपर्युक्त मात्र तीनटाकेँ राजा कहल गेल छैक। संग्राम गुप्त स्वयं **"परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर महामाण्डलिक"** आदि पदवीसँ विभूषित छथि। इ सभ कोनो सोमवंशी अर्जुनक वंशज कहल गेल छथि। भऽ सकैत अछि जे इ सम्राट हर्षवर्द्धनक राज्यपाल अर्जुन (जे तिरहूतक राज्यपाल छलाह)क वंशज होथि। किछु इतिहासकार एहिमे वर्णित स्थानक मिलान मूंगेर जिलाक जयनगरसँ करैत छथि जे हमरा बुझने अस्वाभाविक अछि आ एहि वंशकेँ पाल अथवा सेनवंशक सामंत माण्डलिक सिद्ध करबाक चेष्टा करैत छथि। इ निर्णय तथ्यपूर्ण नहि बुझना जाइत अछि कारण ताहि दिनमे मिथिलामे कर्णाट वंशक शासन सर्वशक्तिमान छल। दरभंगा (आव मधुबनी जिला)मे सेहो जयनगर नामक एकटा प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान अछि। हमरा बुझने संग्राम देव अवश्ये एहिठाम कर्णाट वंशक महामाण्डलिक रहल होएताह आ पञ्जी प्रबन्धक पहिने इ ताम्रपत्र प्रकाशित भेल होएत कारण एहुमे कोलाञ्च ब्राह्मणकेँ दान देबाक व्यवस्था देखबामे अवइयै। प्रशासनिक शब्दावलीक दृष्टिये सेहो इ अभिलेख महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। प्रशासनिक शब्दावलीक सूची हम मिथिलाक प्रशासनिक इतिहासक क्रममे लिखि चुकल छी तैं एहिठाम दोहराएब उचित नहि बुझना जाइत अछि। संग्राम गुप्तक सम्बन्ध जे मंतव्य पहिलुक विद्वान लोकनि देने छथि से हमरा मान्य नहि अछि आ हमर अपन विचार इ अछि जे इ लोकनि मिथिलाक छलाह आ एहिठामक कोनो शासकक महामाण्डलिक रहल हेताह।

## परिशिष्ट–६

### मिथिलासँ प्राप्त किछु हिन्दू आ मुस्लिम अभिलेख

**(१) अशोकक पंचम स्तंभलेख (रमपुरवा : चम्पारण)**

*१. देवानं पिये पियदसि लाज हेवं आह। सड़डवीसति साभि सितेनमे इमानि पि जातानि अवध्यानिकयानि। सेयथ २. सुके सालिक अलुने चकवाके हँसे नंदीमुखे गेलाहे जतूक अंबाक पिलिक दुग्ले अनठिक मछे वेदवेयके ३. गंगा पुपुटकेँ संकुज मछे कफट सेयके पंन–ससे सिमले संडके ओक पिंडे पलसते सेन कपोते ४. गाम कपोते सबे चतुपदे ये पटिभोगं नो एतिन च खादयाति। अजका नानि एलका च सूकली च गभिनीव ५. पाय–मीना व अवध्य पोतके च कानि आसं मासिके। विधि कुकुटे नो कट विये। तुसे सजी वेनो झापयति विये। ६. दाबे अनठाये व विहिसाये व नो झापयितविये। जीवेन जीवे नो पुसितविये। तीसू चातुं मासु तिस्यं पुनंमासियं ७. तिन्नि–दिवसानि चस्वुदसं पंनडसं पटिपदं धुवाये च अनुपोसथं मछे अवध्ये नोपि*

*विकेतविये। एतानि येव ८. दिवसानि नाग वनसि केवट भोगसि यानि अंनानिपि जीवनिका यानि नोहं तवियानि। अठमि पखाये चावु दसाये ९. पंतऽसाय तिसा ये पुनावसुने तीसु चातुं मासीसु सुदिवसाये गोने नो निलाखेतविये। अजके एलके सूकले १०. एवापि अंने नील्वखियति नो नीलखित विये। तिसाय पुना वसुने चातुं मास– प्रखाय अस्वस गोनस ११. लखने नो कट विये। याव सड़डवीसति वसाभि सितेनमे एताये अंतलिकाये पंन वीसति बन्धन मोखानि कयनि।*

### (२) अशोकक षष्ठम स्तम्भ लेख (रमपुरवा : चम्पारण)

*१. देवानं पिये पियदसि लाज हेवं आह। दुवाऽस वसाभि–सितेन मेघंमलिपि लिखापित लोकस हित सुखाये। से तं अपहट २. तं तं धंम बढ़ि पापोव। हेवं लोकस हित सुखे ति पटिवेखामि अथ इयं नातिसु हेवं पत्या–संनेसु हेवं अपक ठेसु। किंम कानि ३. सुखं आव हामी ति तथा च विदहामि। हेमेव सर्वकायेषु पटिवेखानिं। सर्वपासंग पिमे पूजित विवधाय पूजाय। ए चुइयं। ४. अतन पचूप गमने से मे मोख्यमुते। सड़डवीसति वसाभि सितेनमे इयं धंम लिपि लिखापिति।*

### (३) वैशालीसँ प्राप्त किछु महत्वपूर्ण शिलालेख

*१. ध्रुवस्वामिनीक मुद्रा अभिलेखे महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त पत्नी श्री गोविन्द गुप्त माता श्री ध्रुवस्वामिनी (एहिपर शीघ्रहि हमर लेख प्रकाशित भए रहल अछि।) २. घटोत्कच गुप्तस्य।*

### (४) संघ श्रेणी एवं राजकर्मचारी लोकनिक मुद्रा लेख

*१. कुमारामात्याधिकरणस्य। २.युवराजपादीय कुमारामात्याधिकरण। ३. श्रेष्ठिसार्थवाहकुलिकनिगम। ४.श्रीयुवराजभट्टारकपादीय कुमारामात्यअधिकरणस्य ५. श्रीपरमभट्टारकपादीय कुमारामात्याधिकरण। ६. युवराजभट्टारकपादीय......काधिकरणस्य ७. युवराजभट्टारकपादीय बालाधिकरणस्य ८. श्रीरणभाण्डागाराधिकरणस्य ९. दण्डपाशाधिकरणस्य १०. महाप्रतिहार तरवर विनयशूरस्य ११. महादण्डनायक अग्निगुप्तस्य १२. भट्टास्वपति यज्ञवत्सस्य १३. तीरभुक्त्यौपरिकाधिकरणस्य १४. तीरभुक्तौ विनयस्थितिस्थापकाधिकरणस्य १५. तीर कुमारामात्याधिकरणस्य १६. उदानकूपे परिषदः १७. वैशाल्याधिष्ठानाधिकरण १८. वैशाल्यामरप्रकृतिकुटुम्बिनाम् १९. वैशाल विषयाः २०. श्रेष्ठकुलिकनिगम् २१. वैशाली अनुटकारे सम्यानक २२. सुजातर्षस् २३. आम्रात्केश्वर २४. श्रीविष्णुपाद स्वामीनारायण २५. जयत्यानंतो अभवान साम्बा २६. जितं भगवतोनंतस्यनन्देश्वरी वरस्वामिनः २७. नमः पशुपतेः २८. रविदास २९. भगवतादितस्य ३०. राज्ञोमहाक्षत्रपस्य स्वामीरूद्रासिंहस्य दुहितु राज्ञोमहाक्षत्रपस्य स्वामीरूद्रसेनस्य भगिन्या महा देव्या प्रभुदमायाः। ३१. देयधमोयम् प्रवर महायानायिनः करणिक उच्छाह माणकस्य सुतस्य यदत्रपुण्यं तद्भवत्व चर्योपाध्याय मातापित्रोरात्मनश्च पूर्वगमं कृत्वा सकल सत्वरासे रनुत्तर्ज्ञानावाप्रयैति। ३२. कुमारामात्याधिकरणश्च सर्व्वंग विषये ब्राह्मणाद्यपुरस्सरान् वर्त्तमानांभविनश्च ३३. श्रीसामंत......विषयपतिंसाधिकरणान्......व्यवहारी जनपदान बोधयत्यस्तु ओ विदितम्। ३४. श्री लोकनाथस्य ३५. ल.स. २३९ शोधरवली श्री चण्डेश्वरस्य कीर्त्ति–*

एहिमे लक्ष्मण सम्वत् देल अछि ताहि आधारपर एकरा महामत्तक चण्डेश्वरक अभिलेख मानि सकै छी।

(५) किछु दिन पूर्व मुजफ्फरपुर जिलांतर्गत कटरा थानासँ पाँचम छठम शताब्दीक एकटा ताम्रलेख भेटल अछि जे गुप्तकालीन थिक आओर जाहिमे तीरभुक्तिक उल्लेखक संगहि संग चामुण्डा विषयक उल्लेख सेहो अछि। इ अभिलेख आओर चम्पारणसँ प्राप्त तीन चारिटा ताम्रलेख अप्रकाशित अछि आओर इ पटना प्रमण्डलक विद्वान आयुक्त श्री श्रीधर वासुदेव सोहनीक संग छन्हि। आशा अछि ज ओ शीघ्रे एहि सभ अभिलेखकेँ प्रकाशित करौताह। आब इ ताम्रलेख एपिग्राफिया इण्डिकाक वाल्युम ३५मे प्रकाशित भऽ चुकल अछि। ओहिठाम मोतिहारीसँ प्राप्त दूटा आर अभिलेख प्रकाशित अछि।

(६) गुप्तकालीन एकटा मुद्रा (माटिक) हमरा बेगूसरायमे प्राप्त भेल छल जाहिमे एकपीठपर गुप्ताक्षरमे लेख अछि आओर दोसर पीठपर मिथिलाक्षरमे आओर लं.सं.क उल्लेख सेहो अछि। (मुद्राक गुप्ताक्षर वाला लेख) सुहमाकस्य–सुहमाकस्य (मिथिलाक्षर वाला लेख) सं. ६७ द्यौ पौशदिने नगम केदत्तम् दभम् शाध्येच्यैकेः केशवा पदे इति–इ मुद्रा हमरा लग अछि।

एकर अतिरिक्त बुद्धमंत्र–ये धम्महेतु प्रभवा......आदि लिखल ढ़ेरक ढ़ेर मूर्त्ति मिथिलामे भेटइत अछि।

### (७) पालकालीन मिथिलाक शिलालेख

*(i) भागलपुर कौपरप्लेटमे तीरभुक्ति आओर कक्ष विषयक उल्लेख अछि आओर ओहिमे कहल गेल अछि जे तीरभुक्तिमे हजार शिवमन्दिरक निर्माण भेल छल, (ii) इमादपुर (मुजफ्फरपुर जिलासँ पाप्त) अभिलेख। महिपाल प्रथमक अभिलेख ॐ श्रीमान महिपाल देव राजसम् ४८ ज्येष्ठ दिने सुकलपक्षे २ आलै चकोऽरि माहवसुत साहि देवधर्म्म, (iii) वनगाँव (सहरसा)सँ प्राप्त विग्रहपाल तृतीयक ताम्र अभिलेख इ सभटा अभिलेख हमर **'सेलक्ट इन्सक्रिपसन्स आफ बिहार'**मे छपल अछि।*

***(पाँति २४):*** *काञ्चनपुर समावासीता श्रीमञ्जय स्कन्ध वारात परम सौगतो महाराजाधिराज श्रीमन्नयपालदेव पादानुध्यातः परमेश्वरः परम भट्टारको २५. महाराजाधिराजः श्रीविग्रहपाल देवः कुशली। तीरभुक्तौ हौद्रेय वैषयिक वसुकावर्तात। यथोप्तत्या पंचशत्ति कांशे। २६. समुपगता शेष....३७. शाण्डिल सगोत्राय। ३८. शाण्डिल्यासित देवल प्रवराय नरसिंह स ब्रह्मचारिणे। छन्दोग शाखाध्यायिने। मीमाँसा व्याकरण तर्क विद्याविदे। ३९. कोलाञ्च विर्निगताय। इट्टाहाक वास्तव्याया योग स्वामी पौत्राय। तुंग पुत्राय। श्री घण्टुक शर्मणे। विषुवत संकांत्याम्। विधिवत्। गं। ४०. गायाम् स्नात्वा शासनी कृत्य प्रदतास्माभिः।*

(iv) नौलागढ़ (बेगूसराय)सँ प्राप्त विग्रहपाल तृतीयक अभिलेख सिद्धम्

श्री विग्रहपाल देव राज्ये सम्वत् २४ क्रिमिलिया शौण्डिक महामती दुहित्रा धाम्मजिपल्या आशोककया कारिता॥

### (v) नौलागढ़सँ प्राप्त दोसर अभिलेख

*नमोधर्माय......श्रद्धा कारूण्य संभेदरदान मस्तुम माये पुण्यधारां। भिक्षा भुजामित्यमायधतुमक्ष। वाट (वदि)...आश्रय मन्विता। यद वध (च) स्वाहा (or श्रद्धा) क्रौद्वोचिंता....भा..वमद...दमल व्यवस्थिताह....श्रद्धाया भाव (च)...यद् गृहादि (धै)....याद*

*दक....बिहार...एहि अभिलेखसँ संदिग्ध रूपें इ बुझना जाइत अछि जे पालकालमे मिथिलामे नौलागढ़ अंचलमे कोनो एकटा बौद्ध बिहार अवश्य छल।*

अन्यान्य अभिलेख

पंचोभ ताम्रलेखक किछु अंश

*पांति १. श्री संग्रामगुप्तः २. ॐ स्वस्तिः परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर, परममाहेश्वर, वृषभध्वज, सोमांवयज्ञार्जुन वंशोन्न जयपुर ३. परमेश्वर महामाण्डलिक श्रीराजादित्य गुप्तदेव पादानुध्यात राजपुत श्रीकृष्णगुप्त सुत परमभट्टारक महाराजाधिराज ४. परमेश्वर परममाहेश्वर वृषभध्वज सोमान्वयजार्ज्जुन वंशोद्भव जयपुर परमेश्वर महामाण्डलिक श्रीमत् संग्रामगुप्त देवपाद प्रवर्द्धमान विजयराज्ये ५. सप्तदश सम्वत्सरे कार्तिक कृष्ण नवम्यां तिथौ श्री मज्जयस्कन्धवारात् अयदेव महाराजाधिराज महामाण्डलिक श्रीमत् संग्रामगुप्त देवोविजयी....६.७.महासान्धिविग्रहिक, महाव्यूहपति महाधिकारिक, महामुद्राधिकारिक महामत्तक, महापीलुपति, महासाधनिक, महाक्षपटलिक, महाप्रतिहार, महाधर्माधिकरणिक, महाकरणाध्यक्ष, ८. वार्तिनैबन्धिक, महाकट्टुक, महौत्थिक, तासनिक, महादण्डनायक, महादानिक, महापंचकुलिक, महासामंतराणक, महाश्रेष्ठिदानिक, धूलिदानिक, घट्टपाल, खण्डपाल, नरपति, गुल्मपति, ९. नौ बलव्यापृत गोमहिषवड़बाध्यक्ष राजपादोपजीविनी......११. ............समस्तपीड़ोपकर वर्ज्जितो अचाटभट प्रवेषो महतानुग्रहेण*

एहि अभिलेखमे शासन सम्बन्धी बहुतो एहेन शब्दक उल्लेख भेल अछि जकर विश्लेषण एखनो धरि फरिछाकँ नहि भेल अछि। इ सभ अभिलेख हमर *Selected Inscriptions of Bihar* मे प्रकाशित अछि।

**आसीक (महिआहीक) पाथर–लेख**

जातो वंशे विल्व पंचाभिधाने धमाध्यक्षो वर्द्धमान भवेशात्। देवास्याग्रे देवयष्टि ध्वजाग्रा रूढ़ँ कृत्वाऽस्थापय द्वैन तेयम्। एहिमे नैयायिक वर्द्धमानक उल्लेख भेल अछि।

**तिलकेश्वरगढ़क अभिलेख**

अब्देनेत्र शशांकपक्ष गणिते श्री लक्ष्मणाक्ष्मपतेर्मासि श्रावण संज्ञकेँ मुनि तिथौ त्वात्यांगुरुउशोभने। हावीपतन संज्ञकेँ सुबिदिते हैहट्टदेवी शिवा कर्मादित्य सुमंत्रिणेह विहिता सौभाग्य देव्याज्ञा–

एहि अभिलेखमे रानी सौभाग्य देवी, मंत्री कर्मादित्यक उल्लेख संगहि हैहट्ट भगवतीक उल्लेख सेहो भेल अछि।

**खोजपुरक अभिलेख**

एक महत्वपूर्ण अभिलेख खोजपुरक दुर्गाक मूर्त्तिपर अछि जाहिमे ल.स.१४७क उल्लेख भेल अछि आ ओर मदनकपुत्र सूर्यकरक नाम सेहो उल्लिखित अछि।

कन्दाहाक अभिलेख

कन्दाहा अभिलेखक उल्लेख पूर्वहि राजनैतिक इतिहासमे भए चुकल अछि। स्मरणीय अछि जे एहि अभिलेखमे **'विल्वपंचकुलोद्धुत्'** शब्द व्यवहृत अछि जे वर्द्धमानक आसीक अभिलेखमे अछि।

**भगीरथपुरक अभिलेख**

*पांति १. स्नुषाहरिनारायण क्षितिपतेर्गतेः क्ष्माभृतां बधूर्नृपतिमण्डली। महितराम भूमीपतेः २. द्विजोत्तम सुखप्रदानृपति कंसनारायण प्रवीरजननीमुदा मठमधीकरत सुन्दरम्। ३. दानैर्य्या दलयाम्बभूवँ जगतां दारिद्रियमत्युत्कटं कीर्त्यायाः सुन्दर तरान् लोकांश्चकारायुतान। ४. किञ्चोच्चैर्व्विनयान्नयाश्च वशतां नीतोयया बान्धवाः सेयं विश्वविलक्षणोज्जवल गुणग्रामा मठं निर्ममे। ५. वेदरन्ध्रहरनेत्र चिन्हिते लक्ष्मणस्य नृपतेर्म्म तेब्दके। विश्वविश्रु तगुणागुणालयं देवतालय मर्मुमुदाऽकरोत। ६. कविता माधव सुकवे: कीतिदेव्या: सुधम्बुधि स्फीता। त्रिभुवन भुवना भोगेः विलसतु कल्पान्त पर्यन्तम्।। ७. देवी देवलयमियममु कारयामास कृच्छे भक्त्या नक्तं दिनमथमति.....क्ता। यैषां शेषे जगति जागतीनाथ नायस्य योषा भूषा भूता विविध विधया रुपनारायणस्य। ८. धन्वा का कीर्तिरष्या कुलधर कविता कीर्तनीयानुमत्या लक्ष्मी: सा कापि लक्ष्मीधरमुपगता साधवारधनाया। सूनुज्जिययान् यदीयो यवनपयि भयाधाकस्तीरभुक्तौ राजा राजाधिराज: समर:.....स: कंसनारायणौ सौ.....श्रीमदनुमतिदेवी नामाङ्गया:-मिथिलाक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहासक दृष्टिकोणसँ इ अभिलेख बड़ड महत्वपूर्ण अछि।*

**श्रीनगर (मधेपुरा)क अभिलेख**

मगरध्वज योगी ७०० इयह अभिलेख एकटा अन्धराठाड़ीमे सेहो अछि।

**वरांटपुर (सहरसा)क अभिलेख**

श्रीमन्माहेश्वरी वरलब्ध सत्क्रिया विराजमान बुद्धेश वंशस्य सदा चन्द्रराज श्रीमत् सर्व्वसिंहदेव विजयी

**लदहोद विष्णुमूर्त्तिक पादुका लेख**

(एखनधरि अप्रकाशित छल) श्रीरामनाथ राजन्यो विष्णु: सेवक सेवक: स्वरेर देव तलयो विष्णुर्नाम करिष्यति।

मिथिलामे एखनो असंख्य लेख सब चारुकात छिड़िआएल पड़ल अछि तैँ प्रत्येक मैथिलक इ कर्तव्य होइछ जे ओ लोकनि एहि दिसि ध्यान दऽ ओकर संग्रह करथि। जे शिलालेख सब राजनैतिक इतिहासवाला खण्डमे छपि चुकल छल से एहिठाम नहि देल गेल अछि।

**१० मिथिलासँ प्राप्त किछु मुस्लिम-अभिलेख**

*(i) महेशवारा (बेगूसराय)सँ प्राप्त १२०१ई. एकटा अरबी शिलालेख १६५५मे प्राप्त भेल जे भण्डारकर शोधरसंस्थान (१९५६)मे प्रकशित भेल अछि। एहिमे भवन बनेबाक उल्लेख अछि। इ लेख बंगाल सुलतान रुकबुद्दीन कैकाउसक समय थिक। **(ii)** तुगलककालीन वेदीवन (चम्पारण) अभिलेख १. तमाम शुद इन हलकात-उल-अक्ताव-उल अकवर २. दर अहाद इसहान शाह-इ-आदिल शाह मुहम्मद ३. बिन तुगलक शाह लजलामुकोहुब दौलतहु ४. अनाम बजैल इज्जुद दौलत वद्दीन ५. काजी-इ-मुहर खासब जिकरुल्लाह बकर ६. वोएन वन्दाह महमुद विनुयुसुफ अलमुलकावा ९. विष्टुम मह-इ-रबिउल अब्वल सनत सब ब अरबीनव सब मयत*

वेदीवन अभिलेख बड़ड महत्वपूर्ण अछि। हिन्दू लोकनि बहुत दिनधरि एकरा **'भगवानक चरणापाद'** कहि पूजा करइत रहथि। इ शिलालेख महमुद तुगलक कालक

थिक (हिजरी ७४७-१३४६ ई.) एहिसँ निश्चित रुपे प्रतीत होइछ जे १३४६मे चम्पारण धरि तुगलक शासनक प्रमाण भेटइयै।

**दरभंगासँ प्राप्त मुहम्मद तुगलकक अभिलेख**

कल्ललाह ओतलमनजा विलहसनत फलहु अश्र अम्सलह बिन मस्जिद अलमुजाहिद फी साबीलिल्लाह मुहम्मद बिन अस-सुल्लान अस सइद इस शहीद इल गाजी गियासुद्दुनिया वद्दीन अनरुल्लाह बुरहानहु इज सोयलत अन तारिख-इ-बेन एही फकुल हवाल मस्जिद अल अक्स फिसानत इ सित ब इशरीन बसबा मयात अल हिजारिया उन नबुब: ७२६-इ अभिलेख मुल्ला तकियाक बयाजमे सुरक्षित अछि आओर पटनाक मासिर पत्रिका मे छपल छल (१९४६ ई.मे)। अभिलेखसँ इ प्रतीत होइछ जे महम्मद तुगलकक आदेशानुसार दरभंगामे एकटा विशाल मस्जिद हिजरी ७२६मे बनल छल। हरिसिंहदेव पराजित भऽ चुकल छलाह। तुगलक-कालीन दूटा सिक्का सेहो भेटल अछि जाहिपर तुगलकपुर उर्फ तिरहुत लिखल अछि।

**दरभंगासँ प्राप्त इब्राहिमशाह शार्कीक अभिलेख**

कलन नबिया सल्लालाटु अलैहावसल्लम मम बिन मस्जिद अल्लाह बिनल्लाह लहु वैतन फिल जन्नत ही विन हजल मस्जिद फी जमनल इमाम नायव-उलखलीफा अमीरुल मुमीनीन अबुल फतह इब्राहिम शाह अस सुलतान खलदह खिलाफत तहु सनत खस व समन मयत ८०५-इ. अभिलेख बहुत महत्त्वपूर्ण अछि कारण (८०५-१४०२-३इ.) इब्राहिमशाहक लेख मिथिलाक केन्द्रमे भेटल अछि आओर एहिसँ प्रमाणित होइछ जे शर्की लोकनि दरभंगापर अधिकार प्राप्त कएने छलाह-ओहि वर्ष दरभंगा बाटे इब्राहिमशाह बंगाल जाइत छलाह आओर हुनक उद्देश्य छल शिवसिहकेँ परास्त करब कारण शिवसिंह बंगालक राजा गणेशक साहाय्य कऽ रहल छलथिन्ह। एहि सम्बन्धमे प्रो. अस्करीक लेख *Bengal Past and Present* मे छपल अछि।

**बंगाल सुलतान नसीर शाहक अभिलेख**
(बेगूसराय-मटिहानीसँ प्राप्त)

बिसमिल्लाह इर रहमान दूर रहिम नसरुन मीनल्लाह ब फथुन करीब। हजल मस्जिद अल जमायउल मुअज्जम नसीरशाह अस सुलतान खल्ल दल्लह वो मुलकहु व सलन्तहु।

इ ओहि नसीरशाहक अभिलेख थिक जे मिथिलाक ओइनवार वंशक अन्तिम शासककेँ पराजित कएने छलाह।

इहो अभिलेख आव **"परसियन आ अरेबिक इन्सक्रिपसन्स आफ बिहार"**मे छपल अछि।

## परिशिष्ट–७

१२३४-३६ इ.क मध्य तिव्वतसँ एक यात्री आएल छलाह जनिक भारतीय नाम धर्मस्वामी छलन्हि। ओ तिरहुतमे कर्णाट राजा रामसिंहदेवसँ भेंट कएने छलाह आओर रामसिंहदेवक कालीन मिथिलाक बहुत सुन्दर वर्णन एहिमे अछि। **'धर्मस्वामीक जीवनी'**क सम्पादन प्रसिद्ध रूसी विद्वान डा. जी. रोयरिक कहने छथि आओर एकर

प्रकाशन पटना स्थित काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थानसँ भेल अछि। हम ओहि पोथीमेसँ किछु ओहन अंश एहिठाम दऽ रहल छी जाहिसँ तत्कालीन मिथिलापर प्रकाश पड़ैछ:

*P. 58.- In this Country (Tirhut) there was a town called PA.-TA, which had some 600,000 houses and was surrounded by seven walls…..outside of the town walls stood the Raja's palace which had eleven large gates and was surrounded by twentyone ditches filled with water and rows of trees. There were three gates facing each direction, East, West and South, and two gates facing North………guards were stationed, more than ten archers at each bridge. These protective measures were due to the fear of the Turushkas…….who during the year had led an army but failed to reach it. It was also said that there were three men experts in swordsmanship. The Raja owned a she-elephant. P. 60– Ma-hes* (महिंसक उल्लेख)*–non-Budddhist kingdom of Tirhut. P. 61-uninhabited border of Vaisali. There exists a miraculous stone image of the Arya Tara with her head and body turned towards the left, foot placed flat, and the right foot turned side ways the right head in the varmudra and the left hand holding the symbol by the Three Jewels in front of the heart…….they were told that the inhabitants were in a state of great commotion and panickstriken because of rumours of Turushka troops. P. 61- When they had reached the Vaisali, all the inhabitants had fled at dawn from fear of the Turushka soldiery …….the soldiery left for western India P.98- According to Dharmaswami one pana equalled to eighty Cowries……At that time he was in possession of an extraordinary manuscript.*

*P. 99-….the owner of the house stole the book-fell ill in Trihut (on his return Journey)- The tantric treated me-and I did not die…..The Tantric appears to have been a manifestation of the four. Armed Protector.*

*P.100……he was told that the Raja of the Pata city was coming to the street corner, The Raja was accompanied by a crowd of drummers and dancers with banners, buntings, brandishing fans and sounding conches and various musical instruments All the house tops and street corners were ever hung with silk trappings. The Raja named Ramasimha was coming riding on a she elephant, sitting on a throne adorned with precious stones and furnished with an ornamented curtain. The Dharmaswamin received an invitation from the Minisiter who said "please come! If you do not come in person the Raja will punish you. The Raja comes to the street corner only once a year, and there is a pageant. The minister sent a sedan chair (Doli) for the Dharamaswamin, who went to meet the Raja. The Dharamaswamin greeted the Raja in Sanskrit slokas and the Raja was very much pleased and presented the Dharamswamin with some gold, a roll of cloth, numerous medicines, rice, and many excellent offerings and reauested Dharamswamin*

*to become his chaplain but Dharamswamin replied that it was improper for him, a Buddhist, to become the Guru of a non-Buddhist. The Raja accepted it, and said "well stay here for some days". The Dharamswamin said that the Raja honourd him with mumerous requisites, P.101-Among the large gathering of people in the town of PA-TA in Tirhut, Dharamswamin met with some Nepalese whom he had met previously.*

एहि पोथीसँ मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनपर बड़ड प्रकाश पड़इत अछि। एहि पोथीमे जे **'वैवर्त लिपि'**क उल्लेख अछि सैह आधुनिक मैथिलीक लिपि थिक।

शिल्पशास्त्र, चिकित्सा, दर्शन, व्याकरण, न्याय, मण्डल इत्यादिक अध्ययन ओहि युगमे होइत छल।

कालिदास सम्बन्धी किंवदन्ती एहि पोथीमे अछि आओर चन्द्रकीर्ति आओर चन्द्रगोमिनक शास्त्रार्थक चर्चा सेहो। पटकैँ डा. अल्तेकर सिमराँगढ़ मानने छथि जे हमरो मान्य अछि। एहि आधारपर आब जँ ओतए उत्खनन होअए तँ बड़ड लाभदायक होएत।

तिरहुतमे तान्त्रिक चर्च अछि। एक चरित्रहीन एवं हठी स्त्रीक उल्लेख सेहो अछि।

एहिसँ लक्ष्मणसेन सम्वत् सम्बन्धी अध्ययनमे साहाय्य भेटइत अछि। मिथिलामे कुसियारक खेती खूब होइत छल। काली मंदिरक समक्ष बलिदानक प्रथा छल। छूआछूतक प्रथा छल आओर अछूत लोकनि अपन कान नहि छेदबइत छलाह। अछूतसँ देखला वा छूअल अन्न पैघ वर्णक लोक नहि खाइत छलाह। पान खेबाक प्रथा छल आओर मैथिल लोकनि ताम्बुल विन्यासमे प्रवीण छलाह। खुरचन डोकाक चून बनइत छल आओर ओहिमे कैक प्रकारक सुगन्धित मशाला सेहो मिलाओल जाइत छल। भीजल कपड़ामे पान लगाकैँ राखल जाइत छल। दाँत रंगबाक हेतु सुरतीक व्यवहार होइत छल। टाकाक प्रचलन छल आओर एक पण ७०कौड़ीक बराबर होइत छल।

## परिशिष्ट–८

### प्राकृतपैंगलम् आ मैथिली

मैथिली भाषा आओर साहित्यक स्थान भारतीय भाषा मध्य महत्वपूर्ण छैक। कलकत्ताक मैथिली संघ द्वारा प्रकाशित विद्यापति-पर्व अंकक १९६१क अंकमे हमर एक निबन्ध प्रकाशित भेल अछि; प्राक् विद्यापति कालीन मैथिली। जाहिमे हम मैथिलीक प्राचीनतापर अपन विचार संक्षेपमे रखने छी तैं ओकरा एतए दोहराएब उचित नहि बुझना जाइत अछि। मैथिली लिपिक प्राचीनताक सबसँ पैघ प्रमाण इएह जे **'ललित विस्तर'**मे एकर उल्लेख अछि; आदित्यसेन (सातम शताब्द)क अभिलेख एहि लिपिमे अछि, धर्मस्वामीन एकर उल्लेख वैवर्त लिपिक नामे कएने छथि; ल. स. ६९क एक माटिक मुद्रापर मिथिलाक्षर लिखल भेटल अछि; खोजपुर (दरभंगा)सँ ल. सं. १४७क। एकर अतिरिक्त मिथिलासँ जतेक अभिलेख आओर सिक्का लेख भेटल अछि सब मैथिली लिपिमे अछि- तैँ एकर वैज्ञानिक अध्ययनक आवश्यकता। मित्रवर आचार्य परमानन्द शास्त्री मैथिली लिपिक वैज्ञानिक अध्ययन मिथिलामिहिरक पृष्ठक माध्यमसँ प्रस्तुत कएने छथि जे स्तुत्य अछि। अकबरकालीन मिथिलाक्षरक एक

अभिलेख एखन हालहिमे गोड्डा (संताल परगना)क एक मन्दिरसँ प्राप्त भेल अछि आओर ओकर प्रतिलिपि काशीप्रसाद जायवाल संस्थान, पटनामे सुरक्षित अछि।

लिपिक संगहि मैथिली भाषा सेहो बड्ड प्रचीन अछि आओर सिद्ध लोकनिक भाषा एकर सबसँ पैघ प्रमारण थिक। तिब्बती बौद्धधर्मक प्रसिद्ध रूसी विद्वान वसिलज्यु *(Wassilijeu)* अपन एक लेखमे एकठाम लिखने छथि जे सिद्ध कवि लोकनि अपन-अपन मातृभाषामे गीत लिखने छलाह। साहित्य निश्चित रुपेँ ज्योतिरीश्वरक पूर्वहि एक निश्चित शैलीपर पहुँच चुकल छल अन्यथा लोरिक सन वीरकाव्य अथवा वर्णरत्नाकर सन् महान् ग्रन्थक रचना तँ हठात् नहिए भऽ गेल। डा. जयकान्त मिश्रक *History of Maithili Literature* क प्रथम भागमे बहुतो एहेन विद्वान आओर ग्रंथ अछि जकर उल्लेख नहि भेल अछि आओर जे मूल रूपसँ मैथिलीक अंग थिक। हमरा विश्वास अछि जे ओ अपन भविष्यक संस्करणमे एहि सबहक अपना पोथीमे अवश्य स्थान देथिन्ह। **'प्राकृत-पैंगलम्'**क उल्लेख डा. मिश्र कतहु नहि कएने छथि आ ने कृष्णदत्त मैथिलक। (कृष्णदत्त मैथिलपर देखु हमर लेख जे *Journal of the Bihar Research Society* मे छपल अछि।) बंगला भाषाक सुप्रसिद्ध विद्वान आओर प्रसिद्ध भाषा विद्वान डा. श्रीकुमार बनर्जी *History of Maithili Literature* क आलोचना करैत सेहो अइकमीक उल्लेख कएने छथि (द्रष्टव्य *Jouranl of the Asiatic Society of Bengal XVI Letters-p.* २६१)। प्राकृतपैंगलमक संबन्धमे इ स्मरण राखब आवश्यक जे एकर भाषा प्राय: ओएह थिक जे विद्यापतिक कीर्तिलता आओर कीर्तिपताकाक भाषा अछि तथा एहि ग्रंथक रचनामे (गीत सभहिक संग्रह पूर्वी भारतमे भेल छल।) महामंत्री चण्डेश्वरक प्रशस्तिमे बनाओल दूटा गीत सेहो अछि आओर एकर बनौनिहार छलाह चण्डेश्वरक अधीनस्थ सामन्त **'हरिब्रह्म'। 'प्राकृतपैंगलम'**मे कतोक शताब्दक भाषाक परिचय भेटइत अछि आओर ओहिमे जतवा जे प्रयोग भेल। अछि से मूलत: मैथिली प्रयोगसँ मिलैत-जुलैत अछि। **'सिद्धगान'**पर जतेक लोक सब माथापच्ची कएने छथि ततवे जँ **प्राकृतपैंगलम**मे एहुखन कएल जाए तँ मैथिलीक बड्ड उपकार होएत। डा. सुभ्रद झा कबीरकेँ मैथिल सिद्ध करबाक बीड़ा तँ उठौलन्हि (देखु *Journal of the Bihar University*) (हुनक लेख) मुदा **'प्राकृत-पैंगलम्'** जे शुद्ध मैथिलीक वस्तु थिक, ताहिपर कोनो विशिष्ट ध्यान नहि देलन्हि। एकर प्रमाण एहिसँ बुझना जाइत अछि जे ओ अपन प्रसिद्ध पोथी *Formation of Maithili Language* मे एहि ग्रन्थक बड्ड कम चर्च कएने छथि।

डा. सुभद्र झाक पोथीसँ किछु अंश हम पाठकक हेतु उद्धृत् कऽ रहल छी:

पृ.41. *The Prakritpainglam gives an example to several metres and verses which may be said to have been composed in proto-Maithili..... there is nothing in them that may prevent them being called Maithili of an early period…..*

पृ.42. *The language of the Charyas Sarvananda, Prakritpainglam, Kirtilata and Kirtipataka represent Maithili of the oldest period in as much as it preserves some of the Apabhramsa characteristics'.*

पोथीक दाम ततेक छन्हि जे केयो साधारण मैथिल पाठक एकरा कीनिकए नहि पढ़ि सकैछ। एतबा कहितो इ प्राकृतपैंगलमपर विशेष ध्यान नहि देने छथि। एहि पोथीक आलोचना जे हालहिमे छपल अछि लण्डनमे से उत्साहवर्द्धक नहि कहल जा सकैछ। भाषा आओर अन्यान्य समस्याक अध्ययनक हेतु आओर देखू राहूलजीक

हिन्दी काव्य-धारा जाहिमे एहि सभ वस्तुक विशद् विश्लेषण भेल अछि। **'प्राकृतपैंगलम'**मे मिथिलाक इतिहासक सम्बन्धी सेहो बहुत सटीक बात सब लिखल अछि (देखू-हमरे लेख- *Prakrtapainglam–an important source for the study of the History of Mithila*) । **'प्राकृत-पैंगलम'**क दूटा संस्करण हमरा बूझल अछि**–** (i) सी. एम. घोष द्वारा सम्पादित एवं विव्लियोथिका इन्डिका सीरीज, कलकत्तासँ प्रकाशित १९०२ई.मे प्राकृत-पैंगलम् आओर (ii) एम्हर हालहिमे हिन्दीमे एकर एक संस्करण दिल्लीसँ प्रकाशित भेल अछि।

एहि सम्बन्धमे हरिवंश कोछड़क **'अपभ्रंश साहित्य'**क अध्ययन आवश्यक बुझना जाइत अछि। **'प्राकृतपैंगलम्'**पर प्रो. एस. एन, घोषालक बहुतो लेख अंग्रेजीमे भारतवर्षक विभिन्न शोधपत्रिकामे प्रकाशित भेल छन्हि। एहिठाम **'प्राकृतपैंगलम्'**सँ हम थोड़ेक ओहन शब्दक संचय कएने छी जकर रूप शुद्ध मैथिलीक अछि एहि हेतु जे केओ १४म शताब्दक मैथिली शब्द देखए चाहथि से डा. उमेश मिश्रक लेख *JBORS-XIV* पृष्ठ २६६-२७३मे देखि सकइत छथि। हम अपन **'प्राकृत-विद्यापति'** वाला लेखक इ एकटा पद सेहो प्राकृतपैंगलमसँ देने छी जाहिसँ सिद्ध होइछ जे इ मैथिली थिक। स्थानाभावक कारण एकर विश्लेषण एहिठाम संभव नहि।

## परिशिष्ट–९

**मिथिलाक प्राचीन सीमा जनबार श्रोत**

(i) मिथिलास्थ: योगीन्द्र: सम्यग् ध्यात्वा ब्रवीन मुनीन्। यस्मिन देशे मृग: कृष्णस्तस्मिन् धर्मान् निबोधयत् (याज्ञवल्क्यस्मृति-आचार १२)

(ii) डा. उमेश मिश्र द्वारा सम्पादित विद्याकरसहस्त्रक पृ.१४७मे लिखल अछि: जाता स यत्र सीता सरिदम यत्रपुण्या। यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगरनदी भैरवौ यत्र लिङ्गम्। मीमांसा-न्याय-वेदाध्ययन- पटुतरैः पण्डितैपण्डिताया भूदेवो यत्र भूपो यजनवसुमती सास्तिमे तीरभुक्तिः

(iii) त्रिकाण्डशेषकोष
*(a)* गण्डकी तीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे: विदेहभू: समाख्याता तीर-भुक्तमिधो मनुः। (आओर देखु-शक्तिसंगमसूत्र)
*(b)* प्राग्ज्योतिष: कामरुपे तीरभुक्तिस्तु लिच्छविः (पृष्ठ ५६)

(iv) काठकसंहिता**-** *xiii*,४- इन्द्रो वै वृत्रमहस्तं हस्तस्सप्तभिर्भोगै: पर्यहंस्तस्य मूर्ध्नो वैदेहीरुदायंस्ता: प्राचीरायंस्तस्माताः पुरस्य जघन्यमृषयं वैदेहमनुद्यान्तममन्यतेममिदानी मालभेय तेन त्वा इतो मुच्येयेति

(v) वायुपुराण (८८-३०६)
मिथिर्नाम महावीर्यो येनासौ मिथिलाऽभवत्

(vi) शब्दकल्पद्रुम-७२३-विदेहा मिथिला प्रोक्ता

(vii) लिङ्गपुराण-तीर-भुक्ति प्रदेशे तु हलावत्ते हलेश्वर:।

(viii) चन्दा झा-गंगा बहति जनिक दक्षिण दिसि पूर्व कौशिकी धारा पश्चिम बहति गणडकी उत्तरहिमवत बलविस्तारा कमला त्रियुगा अमृता धेमुड़ा वागमती कृतसारा मध्य वहत लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा

(ix) राजनैतिक इतिहासक पाद टिप्पणी मे बहुत किछु लिखल जा चुकल अछि आओर देखू-*IHQ -XXXV.No.*२.

(x) प्रवचनो सारोद्धार आओर विविध तीर्थकल्पमे विदेह जनपदक राजधानी मिथिला कहल गेल अछि। एकर सीमा पूर्वसँ पश्चिम १८० मील आओर उत्तरसँ दक्षिण १२५कहल गेल अछि। निरयावलियाओमे मिथिलाक राजधानी वैशाली कहल गेल अछि।